बीजक कबीर साहब ।

(कबीरसाहबकीकथा, मूल रमैनी तथा बघेलवंशागम निर्देश)

साकेतवासी श्रीमन्महाराजाधिराज श्रीमहाराज **श्रीविश्वनाथ सिंहजूदेव**
बहादुर कृत पाखण्डखण्डनी टीका सहित ।

जिसको

बघेल कुल तिलक श्री १०८ श्रीमहाराजाधिराज रीवाँधिपति
बान्धवेश श्री सीतारामकृपापात्राधिकारी **श्री सर**

वेङ्कटरमण रामानुजप्रसादसिंहजूदेव

बहादुरकी आज्ञानुसार,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयाध्यक्ष

खेमराज श्रीकृष्णदासने

स्वामि युगलानन्द कबीर पंथी भारत पथिक द्वारा शुद्धकराय,
मुद्रितकर प्रसिद्ध किया ।

बंबई.

संवत् १९६१, शके १८२६.

कबीर साहब.

श्रीमहाराजाधिराज सर् वेङ्कटरमण रामानुजप्रसादसिंहजूदेव बहादुर
(जी. सी. एस्. आई.) रीवाँनरेश.

श्रीमान् गो ब्राह्मण प्रतिपालक, बघेलकुलतिलक, अवनीश, बान्धवेश, रीवाँधिपति, प्रजाप्रिय, धर्मपरायण, सिद्धि श्रीमन्महाराजाधिराज श्री १०८ श्रीमहाराज श्रीसीताराम कृपापात्राधिकारी श्रीसर्वेङ्कटरमण रामानुज प्रसाद सिंहजू देव बहादुर (जी. सी. एस. आई.) के कर कमलोंमें—

श्रीमानकी मुझ अकिञ्चनपर पूर्ण कृपा है। श्रीमान् सच्चे देशहितैषी, धर्महितैषी, जातिहितैषी, और हिन्दीहितैषी हैं। श्रीमान्का सनातन धर्म पर अनुराग वंशपरम्परासे चला आता है। श्रीमान्के पूर्वजोंमें अच्छे २ कवि, अच्छे २ शासक, और अच्छे २ धर्मनिष्ठ होगये हैं। इसप्रकारके अनेक सद्गुणोंसे मुग्ध होकर श्रीमान्के पितामह श्रीसाकेतवासी श्रीमन् महाराजाधिराज श्रीमहाराज श्रीविश्वनाथ सिंहजू देव बहादुर विरचित श्री कबीर साहबके बीजककी पाखण्डखण्डनी टीका जो श्रीमान्कीही आज्ञासे छापी गयी है. श्रीमान्हीके करकमलोंमें अत्यन्त नम्रतासे परम सम्मान पूर्वक अर्पण करता हूँ। अर्पण क्या करताहूँ आपकीही वस्तु आपकी सेवामें रखकर कृपाकी अभिलाषा करताहूँ।

श्रीमान्का विनयावनतसेवक—खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयाध्यक्ष—बंबई.

भूमिका।
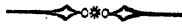
इस ग्रन्थके प्रथम कबीरकसौटी, सत्यकबीरकी साखी और कबीर उपासना पद्धति नामक पुस्तकें छप चुकी हैं, । सत्य कबीरकी साखीकी भूमिकाकी प्रतिज्ञानुसार बीजककी टीकाओंको छापना आरंभ किया है ।

बीजककी कईटीकाओंमें यह टीका परम प्रसिद्ध और वैष्णवमात्रको मान्य है । मान्य क्यों नहो जबकि साकेतविहारी भगवान् रामचन्द्रजीके अनन्य उपासक, वेद, शास्त्रके पूर्ण ज्ञाता, संगीत आदि विद्या कुशल श्रीमन्महाराजाधिराज बाँधवेश, रीवाँधिपति साकेतनिवासी श्रीमहाराज विश्वनाथ सिंहजूदेव बहादुरने स्वयम् इसकी टीका की है । इस परभी सोनामें सुगन्ध यह है कि, यह टीका भी स्वयम् कबीर साहबकी आज्ञासे हुई है और श्री कबीर साहबने इसे पसन्द भी कियाहै जिसका विस्तृत विवरण इस पुस्तकके आदि मंगलकी टीकामें मिलेगा ।

जब कि समयके फेरसे भारत वर्षसे वीरता, लक्ष्मी और विद्या तीनोंनें भारतपर कोप कर सात समुद्र पार जा बसनेकी प्रतिज्ञाली है तब भी पवित्र बघेलवँशीय बाँधवेश, रीवाँधिपतिके वंशमें धर्मके संपूर्ण स्वरूपसें विराजनेके कारण तीनोंही एक स्थानमें पाये जाते हैं ।

जिसका कुछ वर्णन इसी पुस्तकके अन्तमें छपे हुए बघेल बंशागमनिर्देश नामक पुस्तकके बाँचनेसे ज्ञात होगा ।

उसी पवित्र वंशके वर्तमान नृप श्रीमान् गोब्राह्मण प्रतिपालक, बघेल कुल तिलक, अवनीश, बान्धवेश, रीवाँनरेश, प्रजाप्रिय, सिद्धि श्री मन्महाराजाधिराज श्री १०८ श्रीमहाराज श्रीसीताराम कृपा पात्राधिकारी सर वेङ्कटरमण रामानुजप्रसाद सिंह जू देव बहादुर जी. सी. एस. आई-की आज्ञानुसार यह पुस्तक छापी गयी है । इतनीही नहीं आपने अपने पूर्वजोंकी बनायी. हुई सर्व

पुस्तकोंके छापने की आज्ञा दीहै । केवल आज्ञाही नहीं दी है द्रव्यकी सहायता देकरभी आपने यश लूटा आप वीरता के साथ २ पूर्ण विद्वान है; आप पूर्ण रसिक और सत्य शौर्य्यधारी हैं; आप न्याय और सुविचारके स्वरूप हैं आप स्वयम् सर्व गुण सम्पन्न कवि हैं यही कारण है कि, आप गुणियों और कवियोंके पूर्ण परीक्षक हैं ।

आपकी आज्ञा की हुई साकेतवासी श्री१०८श्रीमन्महाराजाधिराज बाँधवेश, रीवाँधिपति, श्रीमहाराज रघुराज सिंहजूदेव बहादुरकी बहुतसी पुस्तकें हमारे यहां छप चुकीहैं और यह अबकी बीजक। इसी प्रकार से और भी पुस्तकें क्रमशः प्रकाशित होती जावेंगी ।

इस पुस्तकको अवलोकन करनेवाले सर्व सज्जनोंसे निवेदन है कि यदि आपके पास कबीरसाहबकी पुस्तकें हों तो अवश्य कृपाकर भेजदीजिये जिससे हमारे यहाँ आयी हुई अनेक पुस्तकें शुद्ध होकर छप जावें ।

इस पुस्तकका कबीरपंथके ग्रन्थोंके जीर्णोद्धारक, कबीर मनूशूरके अनुवादक, मूल बीजक,शब्द कुञ्जी और साखी आदि अनेक ग्रन्थोंके संशोधक और वेदान्तके अनेक पुस्तकोंके संशोधक कबीरोपासनापद्धतिके कर्ता स्वामी युगलानन्द कबीरपंथी भारतपथिक रसीदपुर (शिवहर) निवासीद्वारा संशोधन कराकर छापा है ।

सर्व सज्जनोंका कृपाकांक्षी—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

बीजककी-अनुक्रमणिका।

इति रमैनी ।

अथ शब्द ।

इति शब्द ॥

अथ चौंतीसी ॥ ४२१ ॥

॥ इति चौतीसीं ॥

॥ अथ बिप्रमतीसी ॥

॥ अथ कहरा ॥

॥ इति कहरा ॥

॥ अथ वसंत ॥

* यह दूसरी पुस्तकों की४१वीं साखी है किन्तु इस टीकामें नहीं लीहै मैंनें नोटमें दै दियाहै।

* नोट—यह साखी इस टीकामें छोड दी है.

मुआ है मरे जाहुगे मुये की बाजी ढोल ।

सुपन सनेही जग भया, सहि दानी रहिगो बोल ॥

* इस पुस्तकमें यह साखी छोड दीहै ।

* यह साखी इसमें नहीं है।

१ इस साखी तक तो साखियोंका कर्म निकटही निकट मिलता जुलता आया है पूर्ण साहबकी टीकाके साथ, किन्तु यहांसे आगे बहुत गड बड होगया है ।

विषय.	पृष्ठ.

फुटकर शब्द।

(टीकान्तर्गत)

पंचदेह निर्णय।

चौका विधानका शब्द।

इति अनुक्रमणिका।

गुरुवे नमः।

अथ श्रीकबीरजी की कथा।

दोहा-अब कबीरजी की कथा, श्रोता सुनहु विशाल ॥
जो हिंदू अरु तुर्क को, उपदेश्यो सब काल ॥ १ ॥

हरि विमुखी सब धर्मिन काहीं। कह्यो अधर्म अखंड सदाहीं ॥
योग यज्ञ तप दान अचारा। राम भजन बिन कह्यो असारा ॥
कह्यों रमैनी साखी जेती। अटपट अर्थ शास्त्रमय तेती ॥
जो बीजकको ग्रंथ बनायो। तासु तिलक मो पितु निरमायो ॥
आगे कहिहौं मति अनुसारा। पूरुव पूरुष बंश विस्तारा ॥
श्री कबीरजी को इतिहासू। पूर्व पूरुष मम वर्णन तासू ॥
निज कुल वर्णत लागति लाजू। जनि हैं अस सब सुमति समाजू ॥
निजकुलको महत्व प्रगटायो। गाथा सकल मृषा मुख गायो ॥
पै श्रोता सब यदुपति दासा। ताते लागति कछु नहिं त्रासा ॥
सहि लेहैं सब मोरि ढिठाई। मैं न मृषा प्रभुता कछु गाई ॥
जस कबीर वर्ण्यो निजग्रंथा। वर्णौं निजकुल सोई पंथा ॥
और कबीर कथा सुखदाई। प्रियादास नाभा जस गाई ॥

दोहा-सोई मैं वर्णन करौं, संक्षेपहु विस्तार ॥
प्रथमहि जन्म कबीर को, श्रोता सुनहु उदार ॥ २ ॥

रामानंद रहे जग स्वामी। ध्यावत निशि दिन अंतर्यामी ॥
तिनके ढिग विधवा इक नारी। सेवा करै बड़ो श्रमधारी ॥
प्रभु यक दिन रह ध्यान लगाई। विधवा तिय तिनके ढिग आई ॥
प्रभुहिं कियो वंदन बिन दोषा। प्रभु कह पुत्रवती भरि घोषा ॥
तब तिय अपनो नाम बखाना। यह विपरीत दियो बरदाना ॥
स्वामी कह्यो निकासि मुख आयो। पुत्रवती हरि तोहिं बनायो ॥
ह्वै है पुत्र कलंक न लागी। तब सुत ह्वै है हरि अनुरागी ॥

तब तिय कर फुलका परि आयो। कछु दिनमें ताते सुत जायो ॥
जनत पुत्र नभ बजे नगारा। तदपि जननि उर सोच अपारा ॥
सो सुत लै तिय फेंक्यो दूरी। कढ़ी जोलाहिन तहँ यक रूरी ॥
सो बालकहि अनाथ निहारी। गोद राखि निज भवन सिधारी ॥
लालन पालन किय बहुभाँती। सेयो सुतहि नारि दिन राती ॥

दोहा-कछुक सयान कबीर जब, भये भई नभवानि ॥
सो प्रियदास कवित्तको,इक तुक कह्यो बखानि ॥ ३ ॥
(भई नभवानी देह तिलक रमानी करो
करो गुरु रामानंद गरे माला धारिये)

पुनि कबीर बोल्यो अस वानी। मोहिं मलेच्छ लियो गुरु जानी ॥
रामानंद मंत्र नहिं दैहैं। पै उपाय हम कछु रचि लैहैं ॥
अस कहि गंगा तीरे आयो। सीढी तर निज वेष छुपायो ॥
मज्जन हित रामानँद आये। तेहि अँगुरी निज चरण चपाये ॥
रोय उठ्यो तहँ तुरत कबीरा। रामानंद कह्यो मतिधीरा ॥
राम राम कहु रोवे नाहीं। गुन्यो कबीर मंत्र सोइ काहीं ॥
रामानंदी तिलकहि धार्‌यो। माल पहिरि मुख राम उचार्‌यो ॥
मातपिता मान्यो बौराना। रामानंदहि वचन बखाना ॥
याको प्रभु किमि वैकलवायो। राम कहत सब काज भुलायो ॥
रामानंद कबीर बोलायो। ताके बिच परदा बँधवायो ॥
कहौ मंत्र तोको कब दीन्हो। कह्यो कबीर जौन बिधि कीन्हो ॥
रामनाम सब शास्त्रन सारा। वार तीनि मोहिं कियो उचारा ॥

दोहा-रामानंद कबीरको, गुनि अनन्य हरिदासु ॥
परदा टारिसु मिलत भे, दृगन बहावत आँसु ॥ ४ ॥

सुरति राम नामहि महँ लागी। कछु गृहकाज करहिं बड़भागी ॥
लै विकनन पट नाहि बजारै। जो माँगै ताही देडारै ॥
परखे रहैं मातु पितु ताके। गनैं न कछु दुख क्षुधा तृषाके ॥

आवते कबीर लजाहीं। छूंछे हाथ कौन विधि जाहीं ॥
परचो सोच तब हरिको भारी। मम जनके पितु मातु दुखारी ॥
धरि व्यापारी रूप मुरारी। भरि बैलन बहु चाउर चारी ॥
आय कबीर भवन महँडारे। कह्यो पठायो पूत तिहारे ॥
माता कह्यो कहां सुत मोरा। कोहुकी वस्तु लेत नाहिं छोरा ॥
तब कबीर घरमें व्यापारी। डारि अन्न गे अनत सिधारी ॥
जब कबीर गे भवन सिधारी। देखि अन्न हरि कृपा विचारी ॥
साधु तुरंत बोलाय लुटायो। यक दिनको घर नाहिं धरायो ॥
तुरत टोरि निज तानो बानो। राम भरोसा को उर आनो ॥

दोहा-तब काशीके विप्र सब, बैठ कबीरहिं घेरि ॥
मुडिअनको रोटी दियो, हमहिं बैठ मुख फेरि ॥५॥

कह्यो कबीर न करौ सँदेहू। मोहिं बजार भर गवननदेहू ॥
भागि गये कबीर मिसि येही। प्रभु कबीर हित भे संदेही ॥
आये धरि कबीरको रूपा। सबको भोजन दियो अनूपा ॥
यथा योग दै सबन बिदाई। पुनि लिय अपनो वेष छिपाई ॥
तब कबीरको बढ्यो प्रभाऊ। मानै रंकहु राजा राऊ ॥
श्रोता सुनहु पुरान प्रमाना। रामभक्ति है धर्म प्रधाना ॥
राम विमुख जो कोउ जग होई। मूल सकल पापनको सोई ॥
लखि कबीर अति निज प्रभुताई। गुन्यौ उपद्रव ताहि महाई ॥
मेटन हेतु महा प्रभुताई। गणिका द्वार गये प्रगटाई ॥
दै धन गणिकाको गहि हाथा। चले बजार बजारहि साथा ॥
यह लखि भये संत जन शोकी। लहे अनंद असंत अशोकी ॥
इक दिन गये भूप दरबारा। उठ्यो न राजा तुच्छविचारा ॥

दोहा-तब कबीर मनमें गुन्यो, भयो अनादर मोर।
आदर और अनादरौ, सहि जातौ है थोर ॥ ६ ॥

रहे भरे जल घट बहुतेरे। ढरकायो तिनको कर फेरें ॥
राजा पूछ्यो का यह कीजै। तब कबीर बोल्यो सुनि लीजै ॥

श्रीजगदीश पुरी यहि काला । गई आगि लागि पाकहि शाला ॥
पुरी पठायो तुरत सवारा । पुरी लोग सब कियो उचारा ॥
जो कबीर वह दिन न बुझावत । तौ सिगरी नगरी जरि जावत ॥
यह सुनि भूपति बहुतं डेराना । रानी सों अस वचन बखाना ॥
है कबीर मूरति भगवाना । याको हम कीन्हो आपमाना ॥
ताते अब अस करहु विधाना । पैदल तेहिं ढिग करहिं पयाना ॥
त्राहि त्राहि कहि चरणन गिरहीं । जो वह कहै तबै घर फिरहीं ॥
अस विचारि राजा अरु रानी । राज विभव तहँ तजि डर मानी ॥
पैदर चले सुलाज विहाई । सचिव प्रजा सबै लिय पछि आई ॥

दोहा-राजा रानीकी विनय, सुनि कबीर मतिधीर ॥
बहत नीर दृग पीर विन, कियो धीर युत भीर ॥ ७ ॥
तहँ कवित्त प्रियदास यह, कीन्हो सुभग बखान ॥
सो मैं इत लिखि देतहौं, श्रोता सुनहु सुजान ॥ ८ ॥

कवित्त-कही राजा रानी सो जो बात यह सांच भई आंच लागी हियें अब कहो कहा कीजिये । चलेही बनत चले शीश तृण बोझ भारी गरे सो कुल्हारी बांधि तिया संग भीजिये ॥ निकसे बजार ह्वैकै डारि दई लोक लाज कियो मैं अकाज छिन छिन तन छीजिये । दूरि ते कबीर देखि ह्वै गये अधीर महा आये उठि आगे कह्यो डारि मति रीझिये ॥ १ ॥

रह्यो सिकंदर शाह सुजाना । सुनेहु कबीर प्रभाव महाना ॥
तब लिखि पठयो येक खलीता । सुनियत तुम्हैं कबीर पुनीता ॥
न्याय व्याकरण शास्त्र अनंता । करै एक जेहि संमत संता ॥
हिंदू मुसलमान दोउ दीना । निज निज मत देखो सुख भीना ॥
ऐसो शास्त्र देहु पठवाई । तो हम जानै अजमत भाई ॥
तब कबीर लिखि उतर पठायो । सहस शकट कागज पठवायो ॥
ऐसो सुनि कबीर खत शाहा । अति विस्मित ह्वैकै मनमाहा ॥
सहस शकट भरि कागज़ कोरा । पठयो दूत कबिरकी वोरा ॥
सहस शकट कागज़ जब आयो । तब कबीर अति आनँद पायो ॥

सबके ऊपर शकट यक माहीं। लिख्यो राम अक्षर द्वै काहीं ॥
सहसहु शकट साहढिग भेजा। प्रगटयो राम नाम कर तेजा ॥
सकल शास्त्र सब कागज़ माहीं। लिखिगे आपहि ते श्रम नाहीं ॥

दोहा–हिंदू और मलेच्छहू, चहैं जो मतके ग्रंथ ॥
सो तेहि ते निकसन लगे, और सकल सतपंथ॥ ९ ॥

जानि प्रभाव सिकंदर शाहा। काशीको आयो सउछाहा ॥
तब सह पंडित चलि फिरियादा। छूटी दोउ दीन मर्यादा ॥
यक जोलहा चेटक पढ़ि आयो। करि जादू विश्वास बढ़ायो ॥
तब कबीरको शाह बोलायो। जब कबीर दरबारहि आयो ॥
काजी कह करु साह सलामा। तब कबीर बोल्यो सुखधामा ॥
जानहिं राम सलाम न जानै। सुनत शाह कियं कोप महानै ॥
दियो हुकुम करियो नहिं देरी। गंगा बोरहु भरि पग बेरी ॥
सुनि अनुचर पग पाइ जँजीरे। बोरयो गंगा माहँ कबीरे ॥
रहिगै बेरी नीर गँभीरा। गंग तीर भो ठाढ़ कबीरा ॥
पुनि लकरी पट अंगणि बांधी। आगि लगायो कोठरि धांधी ॥
भयो भस्म तनुको सब मैला। निकस्यो कंचनरूप उतैला ॥
पुनि इक मत्त मतंग बोलायो। कचरावन हित सौ हँधवायो ॥

दोहा–गजको सिंह स्वरूपसो, देखो परो कबीर ॥
भग्यो चिकारत नाग तब, भरयो महा भय भीर ॥ १० ॥

बादशाह अस देखि प्रभाऊ। पकरयो आय कबीरहि पाऊ ॥
देख्यों करामात मैं तेरी। अब रक्षा करु जगते मेरी ॥
मोसे भयो बडो अपराधा। दीन्हो रामदासको बाधा ॥
देशगाउँ धन जो कहि दीजै। सो याही क्षण प्रभु लैलीजै ॥
कह्यो कबीर रामको चाहैं। ग्राम दामसों काम कहा हैं ॥
तबै विरोधी पंडित जेते। विरचे यह उपाइ तहँ तेते ॥
श्रीवैष्णव दश पांच बनाई। दियो सकल देशन गोहराई ॥
यह कबीरको नेवतो जानो। सबकबीर घर करो पयानो ॥

यह सुनि साधु विप्र समुदाई । लियो कबीरहि को समुहाई ॥
लखन विप्र साधु जुरि आए । तब कबीर मन माहँ डेराए ॥
अपनो भवनत्यागि द्रुत भाग्यो । रघुपतिको यह नीक न लाग्यो ॥
धरि कबीरको रूप तुरंतै । शत शत मुद्रा दिय प्रति संतै ॥

दोहा-साधुनको सत्कार करि, विदा कियो रघुनाथ ॥
उदर पूर पूजन दियो, सबको गहि गहिहाथ ॥११॥

सब देशन विख्यात भो नामा । कह कबीर अनुकंपा रामा ॥
येहू विधि पंडित जब हारे । तब गोरखको तुरत हँकारे ॥
गोरख आय गयो जब कासी । लखि कबीरको भयो हुलासी ॥
कूप उपर रचि पांचहि सूता । बैठ्यो ताहि प्रभाव अकूता ॥
तुरत कबीरहि लियो बोलाई । मोसो करहु विवाद बनाई ॥
अन्तरिक्ष तब बैठ कबीरा । देखत गोरख भयो अधीरा ॥
तेहि दिन गवन्यो गोरख हारी । आयो भोरहि सिंह सवारी ॥
कह्यो कबीरहिसों गोहराई । आवै वाद करै मन जाई ॥
तब मृगको रचि सिंह कबीरा । आयो चलो चलावत धीरा ॥
तब गोरख कह सुनहुँ कबीरा । गंगामें डूबै दोउ वीरा ॥
को काको हेरै यहि काला । कूदे गोरख प्रथम उताला ॥
तब गोरख गूलर ह्वै गयऊ । जानि कबीर पकरि तेहि लयऊ ॥

दोहा-गोरख सुनहुँ कबीर कह, प्रगटो अबहुं तुरंत ।
नातो कर मलि डारि हौं, दोषदेहिंगेसंत ॥ १२ ॥

तब प्रसन्न गोरख प्रगटाना । तेहि कबीर अस वचन बखाना ॥
मैं अब छिपहुँ हेरि तुम लेहू । कह गोरख छिपु विनु संदेहू ॥
तब डूब्यो मधि गंग कबीरा । ह्वै गो तुरत गंगको नीरा ॥
तब गोरख करि योग प्रभाऊ । जान्यो सकल कबीर दुराऊ ॥
दोऊ सिद्ध फेरि प्रगटाने । गोरख वंदन किय हुलसाने ॥
कह्यो सत्य साहब तुम रूपा । संत शिरोमणि शुद्ध अनूपा ॥
एक समय कबीर लै माता । चले जात कोउ देश विख्याता ॥

तहँ इक मारग मोहर थैली। परी रही अतिशय तहँ मैली ॥
माता थैली दौरि उठाई। तब वार्यो कबीर तहँ जाई ॥
परधन ले न मातु दे डारी। परधन दुइ मुहँकी तरवारी ॥
बैठ वृक्षतर देखु तमासा। यह करि है केतनको नासा ॥
माता पूत बैठ तरु छांहीं। चारि सिपाही कढ़े तहाँहीं ॥

दोहा-थैली चारि निहारिकै, हर्षित लियो उठाइ ॥
चलत भये तेहि पंथको, लिय कबीर पछिआइ ॥१३॥

जाय सिपाही इक पुरमाहीं। डेरा किये वणिक घर माहीं ॥
सो हैं कियो कबीरहु डेरा। एक सिपाही यक कहँ टेरा ॥
डेरामें तुम दोउ रहि जाहू। द्वै जन जाहिं करन निरवाहू ॥
अस कहि द्वै जन गये सिधाई। लियो हाटमहँ कछुक मिठाई ॥
बैठि कुवाँ लागे जब खाने। तब आपुसमहँ संमत ठाने ॥
माहुर भरैं मिठाई माँहीं। जामें द्वै खातै मरिजाँहीं ॥
नातो हिस्सा ह्वैहैं चारी। हम तुम होहिं उभय हिसदारी ॥
अस विचारि भरि माहुर दीन्हे। उत विचारि डेरा दोउ कीन्हे ॥
जब वै आइ खाइ इत सोवैं। तिनके तुरत प्राण हम खोवैं ॥
इतनेमें दोउ लियो मिठाई। आय गए डेरै श्रमछाई ॥
कह्यो दुहुँनसों खाहु मिठाई। इन कह थके अहैं हम भाई ॥
अस कहि दोउ सिपाही सोये। श्वास बन्नत तिनको तहँ जोये ॥

दोहा-तबै मिठाई खायकै, दोहुनके गलमाहिं ॥
मारि कटारी पार किय, दोऊ मरे तहाँहिं ॥ १४ ॥

कछुक कालमहँ विष तहँ लाग्यो। ते दोऊ तुरतै तनु त्याग्यो ॥
भोर वणिकलखि शोणितधारा। कोतवालके जाय पुकारा ॥
कोतवाल तहिं दोष लगायो। ताकी संपति सकल लुटायो ॥
मोहर और वणिक धन जेतो। गयो भूप भंडारहि तेतो ॥
कह कबीर लखु मातु तमाशा। ये मोहर दोउ और विनाशा ॥
माता कह्यो सुवन चलु अनतै। कह कबीर लखु और इगनतै ॥

थैली परी रही जेहिं ठौरा । सो थल रहै भूपको औरा ॥
सो पठयो तुरंत असवारा । कह्यो देउ धन अहै हमारा ॥
जेहिं वह नगर कह्यो सो राजा । हम न देब विनसमर दराजा ॥
यह सुनि भूप तुरत चढ़ि आयो । उभय भूप अति युद्ध मचायो ॥
दोऊ लरि मरिगये तहांही । तब कबीर कह माता काहीं ॥
जो चाहै आपन कल्याना । तौ परधन नहिं लेय सुजाना ॥

दोहा-जो परधन लेतो जननि, तासु हाल यह होय ॥
लगति न हाथ बराटिका, नाहक कलह उदोय॥ १९ ॥
येक अप्सरा आयकै, मोहन चह्यो कबीर ॥
ताहि मातु कहि किय बिदा, करी न मनसिज पीर १६

कबित्त ।

येक समै जाय जगदीश पुरी वास कीन्हो भयो तहँ संतन समागम सोहावनो ।
कोई संत बोल्यो कियो काशीमें चरित्र केते इते कीन्हौ काहे नहिं महिमा देखावनो ॥
ताही समय कौतुक कबीर कीन्हो रघुराज देखि सब संतनको मंडल भो पावनो ।
एक रूप हाथ चौर हांकते जगतनाथै एक रूप साधुन समाज प्रगटावनो ॥ १ ॥

पुनि जगदीश पुरी ते सोई । चल्यो कबीर महामुद मोई ॥
बांधव गढ मम दुर्ग महाना । शिवसंहिता जासु परमाना ॥
सतयुग वरुणाचल कहवायो । कलि बांधवगढ नाम कहायो ॥
पूरुव पुरुष रहे जे मोरा । रहे ते सब गुजरातहि ठोरा ॥
तेऊ पाइ कबीर निदेशा । विंध्य पृष्ठ आये यहि देशा ॥
तब ते बांधवगढै भुवालै । कीन्हों नृप वघेल निज आलै ॥
आगे तासु कथा मैं गैहौं । सब श्रोतनको सविधि सुनैहौं ॥
विरसिंहदेव वघेल भुवाला । सुनि कबीर आवनको हाला ॥
चहुँकित दूत दियो बैठाई । दियो कबीरहि खबरि जनाई ॥
और पंथ है नहिं कढि जाई । सावधान रहियो सब भाई ॥
गुणि विरसिंहदेव अभिलाषा । ताको शिष्य करन चित राखा ॥
बांधवगढै कबीर सिधारे । राजा आगू लेन पधारे ॥

दोहा-सादर ल्याइ कबीर को, करि उत्सव हर्षाइ ॥
शिष्य भये परिवारयुत, भवभय दियो मिटाइ॥ १७ ॥
भक्तमालकी यह कथा, किय संक्षेप बखान ॥
अब कबीर इतिहासको, विस्तर सुनहु सुजान ॥ १८ ॥

देश गहोरा युत परिवारा । भयो शिष्य विरसिंह भुवारा ॥
कछुक काल लगि नृप ढिग माहीं । वस्यो कबीर सुमिरि हरि काहीं ॥
येक समय विरसिंह नरेशै । दियो बोलाई कबीर निदेशै ॥
देहैं तोहिं कछू हम ज्ञाना । ताते कर अस भूप विधाना ॥
यक ब्राह्मणी रचै यक धोती । वरष दिवसमहँ अतिहि उदोती ॥
लेइ पाणिमहँ टोरि कपासू । सूत भूमि परशैनहिं तासू ॥
सो धोतीलै आवहु राजा । तब है है तुरंत कृतकाजा ॥
सुनि विरसिंह तुरंत सुखारी । गो ब्राह्मणीसमीप सिधारी ॥
धोती माग्यो तब द्विज नारी । सुनु महीप सो गिरा उचारी ॥
धोती वर्ष मयंत बनाऊं । जगन्नाथको जाय चढ़ाऊं ॥
लेहु महीश शीश बरु मोरा । धोती लेब उचित नहिं तोरा ॥
राजा फिरि कबीर ढिग आयो । सकल ब्राह्मणी वचन सुनायो ॥

दोहा-कह कबीर जगन्नाथको, धोती देइ चढ़ाइ ॥
प्रतीहार करि साथ नृप, तियको दियो पठाइ ॥१९ ॥

जाय ब्राह्मणी वसन चढायो । प्रभु ढिग ते तुरंत फिरि आयो ॥
कियो ब्रह्मणी धरन तहांहीं । स्वप्न कह्यो नाथ तेहिं काहीं ॥
मांग्यो हम बांधवगढ़ काहीं । काहे दिह्यो मोहिं लै नाहीं ॥
जाय कबीरै देइ चढ़ाई । तब जैहै पूरण फल पाई ॥
द्विज तिय फिरि बांधवगढ़ आई । दियो कबीरहि वसन चढ़ाई ॥
वसन पहिरि जब बैठि कबीरा । तब आयो विरसिंह मवीरा ॥
महिते यक कर ऊंच निहारा । तब कीन्हो अस वचन उचारा ॥
जो हरिको हरि लोकहु काहीं । दीजै म्वहिं देखाइ सुखमाहीं ॥
तौ प्रतीति मोरे परि जाई । ये तो सत्य कबीरै आई ॥

तब रानहि कबीर बैठायो। ध्यानावस्थित ताहि करायों ॥
योग मार्ग ते तेहि लै गयऊ। हरि हरि लोक देखावत भयऊ ॥
तब विरसिंह भूप विश्वासे। लहन विज्ञानहि हिये हुलासे ॥

दोहा-श्रीकबीरजी तहँ कियो, सुभग ज्ञान उपदेश ॥
मिटे सकल संसारके, ताके काय कलेश ॥ २० ॥

कह कबीर लै चलहु शिकारा। भूप कियो तेहिं नाग सवारा ॥
गजके ऊपर हाथ सवाऊ। बैठ कबीर लखे सब काऊ ॥
बांधवगढ़के पूरुब ओरा। सदल तृषित भो नृप तेहि ठोरा ॥
कह्यो कबीरै गुरु भगवाना। जल बिन जात सबैके प्राना ॥
तब कबीर परभाव देखायो। तुरत सकल तरु सफल बनायो ॥
प्रगटी वापी निर्मल नीरा। तहँ अंतर्हित भयो कबीरा ॥
अब बघेल वंशावलि जोई। श्रीकबीर विरचित है सोई ॥
अरु आगम निदेशहू ग्रंथा। तामें है बघेल सतपंथा ॥
उक्ति कबीरहि की लै नीकी। बर्णों मोरि उक्ति नहिं ठीकी ॥
यदपि वंश महिमा निजवरणत। उपजति लाज तदपि अतिसुखरत ॥
तेहि अनुसर वरणों कर जोरी। श्रोता दियो मोहिं नहिं खोरी ॥
करि दरशन जगदीश कबीरा। उत्तर दिशा चल्यो मतिधीरा ॥

दोहा-बांधवदुर्ग बघेलको, ताढिग जबहिं कबीर ॥
आए तब नृप रामसिंह, आनँद युत मतिधीर ॥२१॥
लै आगे ल्याए तुरत, बांधवदुर्ग लेवाइ ॥
अति सत्कार कियो तहाँ, मानि रूप यदुराइ ॥ २२ ॥
पुनि कबीर स्थानमें, भूपति गये अकेल ॥
तब कबीर नृपसों कह्यो, मोहिं गुरु कियो बघेल॥२३॥
तेरे पूरुबके पुरुष, कियो गुरू जस मोहिं ॥
मैं लै आयो हंस द्वै, सकल सुनाऊं तोहिं ॥ २४ ॥

वाराणसी जन्म मैं लीन्हो। जगन्नाथ दरशन मन दीन्हो ॥
तहँ समुद्रको करि मर्यादा। गमन्यो गुजरातै अविषादा ॥

तहँ को भूप पुत्र ते हीना। विनती कियो मोहिं अति दीना ॥
मैं वरदान दियो नृप काहीं। द्वै सुत ह्वैहैं तुव तिय माहीं ॥
मोर अंश ते जो यक होई। वदन बाघ देखी सब कोई ॥
तब सुलंक नृप आनँद पायो। द्वै सुत निज तिय महँ जनमायो ॥
व्याघ्रदेव भो जेठ व्याघ्रमुख। अनुज तासु भो सुंदर हरदुख ॥
व्याघ्रवदन लखि पंडित आये। जानि अशुभ वनमहँ फिकवाये ॥
तब कबीर धरि पंडित वेशा। जाइ भूपको दियो निदेशा ॥
ल्याबहु व्याघ्रवदन सुत काहीं। ताते चलिहै वंश सदाहीं ॥
भूप सुलंकदेव विन शंका। ल्यायो तुरत सुतहि अकलंका ॥
व्याघ्रदेव तेहि नाम सुहंसा। तिनते चल्यो बघेलहि वंसा ॥

दोहा–तब कबीर अस वर दियो, जगमें सहित प्रसंश ॥
अचल राज बांधौ रही, चली बयालिस वंश ॥ २५ ॥

व्याघ्रदेवके सुत नहिं रहेऊ। सो कबीरसों निज दुख कहेऊ ॥
तब कबीर किय मनमहँ ध्याना। कियो तुरत गिरिनार पयाना ॥
चंद्र बिजय नृप रह्यो तहाँहीं। रानी इंदुमती रति छाहीं ॥
तेहि पूरुब कबीर उपदेशा। दंपति किय हरिपुरहि प्रवेशा ॥
सो कबीर हरिलोक सिधारी। दंपति काहिं योग मति धारी ॥
ल्यायो द्रुत गुजरातहि देशा। कीन्हो व्याघ्रदेव सुतवेशा ॥
दियो नाम जैसिद्ध प्रसिद्धा। पूरित वृद्ध ऋद्धि अरु सिद्धा ॥
युवा बैस जैसिद्धहि आई। निशिमहँ चिंता भई महाई ॥
केहि विधि नाम चलै चहुँओरा। क्षत्रीधर्म विजय वरजोरा ॥
व्याघ्रदेवसों कह्यो प्रभाता। सो कह पितामहै कहु बाता ॥
तबै सुलंक देव ढिग जाई। निज मनकी शंका सब गाई ॥
सो सादर शासन तेहि दीन्हों। लै कछु सैन्य पयानो कीन्हों ॥

दोहा–गढा देशमहँ सो वस्यौ, भूप नर्मदा तीर ॥
कर्णदेवताके भयो, तासु सरिस रणधीर ॥ २६ ॥

गंगापार झौंडिया खेरा । बैसनको तहँ रहै बसेरा ॥
तहँ कीन्हो विवाह सुत केरा । डार्‌यो चित्रकूट पुनि डेरा ॥
बीती तहाँ बहुत दिन राती । व्याघ्रदेवके भयो पनाती ॥
बहुत काल जब बीतत भयऊ । तब जयसिंह छोंडि तनु दयऊ ॥
कर्ण देव तब भयो नरेशा । तासु पुत्र केशरी सुवेशा ॥
भयो केशरीसिंह जुमाना । तब कालिंजर कियो पयाना ॥
कालिंजर भूपति चंदेला । तासों कियो केशरी मेला ॥
लै चँदेल चतुरंग महाना । कीन्हो देश गहोरा थाना ॥
बहुत काल लगि वसे गहोरा । चल्यो केशरी उत्तर ओरा ॥
रह नवाब राजा तहँ भारी । कीन्हैं अमल केशरी सारी ॥
सुनि नवाब दल ले चढि आयो । सुनि केशरी निसान बजायो ॥
मार्‌यौ तहाँ महा संग्रामा । विजय लह्यो केशरी ललामा ॥

दोहा–पुनि नवाब तहँ आइक, कियो केसरी मेल ॥
अर्ध राज्य देवे लग्यो, सो न लयो गुणिखेल ॥ २७ ॥

पुनि नवाब केशरी बघेला । गोरखपुर पर कीन्हों हेला ॥
तब नवाब अति प्रीति देखायो । गोरखपुर महँ तेहि बैठायो ॥
कहत भयो रक्षहु अब मोहीं । मह दल कोश लाज है तोहीं ॥
गोरखपुर वस केशरि भूपा । प्रगटायो यक पुत्र अनूपा ॥
इत नृप कर्ण देव मतिधीरा । चित्रकूटमहँ तज्यो शरीरा ॥
पुत्र केशरी को जो भयऊ । तेहिमल्लार नाम अस भयऊ ॥
सुत मलारके शारंग देवा । शारँगके भीमल हरि सेवा ॥
भीमल देव प्रचंड प्रतापी । अतिसुंदर हरि नामहि जापी ॥
भीमलदेव पुत्र जो भयऊ । ब्रह्मदेव तेहिं नामहि ठयऊ ॥
सो मगहरमहँ कीन्हो थाना । तहाँ वसत बहुकाल बिताना ॥
ब्रह्मदेव लै कटक महाई । मिले गहरवाननसों आई ॥
पुनि सिरनेतनदेश सिधारा । कीन्हो व्याह उछाह अपारा ॥

दोहा–तहँ कोउ भूपति बंधु इक, कीन्हे रहै विरोध ॥
ताहि पकरि ल्यायो सदल, करि चहुँ दिशि अवरोध २८

ब्रह्मदेवके भो सिध देवा। नरहरि देव तासु सुत भवा ॥
नरहरिके भइ भेदसुधन्या। व्याहीसो शिरनेतन कन्या ॥
नरहरि वस्यो कछुक दिनकाशी। भेदचल्यो लै दल अरि नाशी ॥
भयो शालिवाहन सुभेद सुत। विरसिंहदेव तासु सुत नृप नुत ॥
भो विरसिंह महान भुवाला। वस्यो प्रयाग आइ तेहि काला ॥
लियो अमल सब देशन काहीं। लाख सवार रहैं सँगमाहीं ॥
वीरभानु सुत भो पुनि ताके। राजाराम भये तुम जाके ॥
जबै प्रयाग देश चहुँओरा। अमल्यो विरसिंह निजभुज जोरा॥
तबै प्रजा किय जाय पुकारा। दिल्ली शाह हिंमाऊद्वारा ॥
आयो कोउ कबीर बघेला। लाख सवार चलै बगमेला ॥
अमल कियो सो मुलुक तुम्हारा। सो सुनि शाह तुरंतसिधारा ॥
चित्रकूट आयो जब शाहा। चलन लग्यो विरसिंह नरनाहा ॥

दोहा–वीरभानु तब आयकै, वारन कियो बुझाइ ॥
तुम न जाहु म्लेच्छहि मिलै, ऐहै सो इतधाय ॥ २९ ॥

तब पुत्रहि विरसिंह बुझाई। चल्यो तुरंत निशान बजाई ॥
चित्रकूट विरसिंह सिधारा। सुनत शाह आगू पगधारा ॥
दोउदल भये बरोबर जबहीं। सादर शाह बोलायो तबहीं ॥
जब भूपति गो शाह समीपा। बिहँसि शाह कह सुनहु महीपा ॥
कवन हेतु परजन दुखदीन्हो। काहे मुलुक हमारो लीन्हो ॥
तब विरसिंह बोल्यो मुसकाई। कोहूसों किय नहीं लराई ॥
जे हमहीं मारे तेहि मारे। अमल्यो तिनके देश अपारे ॥
कह्यो शाह कहँ सुवन तुम्हारा। वीरभानु कहँ भूप हँकारा ॥
वीरभानु तब वाजि उड़ाई। पर्योशाह हौदामहँ जाई ॥
शाह उतर हाथीतें आयो। वीरभानु गोदहि बैठायो ॥

बैठो तख्त माँह जब शाहा । वीरभानु कहँ बहुत सराहा ॥
पुनि विरसिंहहि कह दिल्लीशा । अब हम तुमको देत अशीशा ॥

दोहा–बारहिं राजा करि स्ववश, करहु राज्य चहुँओर ।
बांधवगढ़ निज बसनको, लीजै नृपशिरमोर ॥ ३० ॥

असकहि लिखित दियो दिल्लीशा । चल्यो तबै विरसिंह महीशा ॥
दिल्लीपति प्रयाग लै आयो । करि मेहमानी भवन पठायो ॥
लै दल पुनि विरसिंह भुवारा । दक्षिण चल्यो सहित परिवारा ॥
आयो तमस नदीके तीरा । तब लाडिल परिहार सुवीरा ॥
नरो शैल महँ दुर्ग बनाई । बसत रहै सो बली महाई ॥
सो मारग महँ कियो लड़ाई । तासु नरो गढ़ लियो छँड़ाई ॥
नरो जीति विरसिंह भुवाला । बाँधा नगर रह्यो तेहि काला ॥
तहाँ कछुक दिन कियो निवासा । पुनि गवनतमो दक्षिण आसा ॥
रहे रत्नपुर करचुलि राजा । तुव पितुकेर कियो तहँ काजा ॥
सोदायज महँ बाँधव दीन्ह्यो । तहँ विरसिंह वास चलि कीन्ह्यो ॥
वीरभानुको दै पुनि राजू । आय प्रयाग बस्यो कृतकाजू ॥
कह्यो तोरि वंशावलि ऐसी । जानी रही मोरि यह जैसी ॥

दोहा–सुनि अपनी वंशावली, बहुरि कह्यो शिरनाइ ॥
अब भविष्य यहि वंशकी, दीजै कथा सुनाइ ॥ ३१ ॥

बांधव दुर्ग वसीकी नाहीं । राज्य चली यहि भाँति सदाहीं ॥
आगे कैसो ह्वैहै बंशा । यह सिगरो अब करहु प्रशंशा ॥
तब कबीर बोले मुसुकाई । राजाराम सुनहु चित लाई ॥
तुम्हरे दशये वंशहि माहीं । लेहौ तुमही जन्म तहाँहीं ॥
सुत समेत बांधबगढ ऐहौ । बीजक ग्रंथ मोर तहँ पैहौ ॥
ताको अर्थ समर्थन करिहौ । संत समाजनको सुखभरिहौ ॥
बीरभद्र तुम्हरो सुत होई । करिहै राज्य सदा सुख मोई ॥
संवत अष्टादश नवषटमें । ऐहौ बांधव गढ़ अटपटमें ॥
तबते ताहि विशेष बसैहौ । अपनो विमल महलरचवैहौ ॥

और भविष्य कबीर [illegible] गायो। वर्णत तेहि मैं पार न पायो ॥
यक कबीर [illegible] आगम निर्देशा। मम शासित वर्णित युगलेशा ॥
तामें सकल अहै विस्तारा। जानिलेहु सब संत उदारा ॥

दोहा–और कबीर कथा अमित, वरणि लहौं किमिपार ॥
संक्षेपैते इत लिख्यो, कीन्ह्यो नहिं विस्तार ॥ ३२ ॥

यथा बघेलवंशकी गाथा। वर्ण्यो भूत भविष्यहु नाथा ॥
तैसेहि अबलौं प्रगट देखाती। पलहू बढै न पल घटि जाती ॥
मगहर गे यक समय कबीरा। लीला कीन्ही तजन शरीरा ॥
अतिशय पुष्प तुरंत मँगाई। तामें निजतनु दियो दुराई ॥
सबके देखत तज्यो शरीरा। हिंदू यमनहुकी भै भीरा ॥
हिंदू यमन शिष्य रहे दोउ। आपुस में भाषे सब कोउ ॥
यमन कह्यो माटी हम देहैं। हिंदू कहैं अनलमें लेहैं ॥
तब दोउ जाय पुष्पकँह टारयो। नाहिं कबीर शरीर निहारयो ॥
आधे आधे लै दोउ सुमना। दाह्यो हिंदू गाड़यो यमना ॥
भये कबीर प्रगट मथुरामें। विचरन लगे सकल वसुधामें ॥
यहि विधि अहैं अनेकनगाथा। सति कबीर है वपु जगनाथा ॥
यह लीला करि सकल कबीरा। आयो बांधव पुनि मतिधीरा ॥

दोहा–अबलों गुहा कबीरकी, बांधवदुर्ग मँझार ॥
जगन्नाथको पंथ सो, पावत नहिं कोउ पार ॥ ३३ ॥

इति श्रीभक्तमालान्तर्गत श्रीकबीरजीकी कथा स्वामी युगलानन्द कबीरपंथी भारतपथिकद्वारा संशोधित समाप्ता।

शब्द एकसौ चौदह ॥ ११४ ॥

सार शब्द से बांचि हो मानहु एतबारा हो ।
आदि पुरुष यक बृक्ष है निरंजन डारा हो ॥
त्रिदेवा शाखा भये पत्ती संसारा हो ।
ब्रह्मा वेद सही किये शिव योग पसारा हो ॥
विष्णु माया उतपति किया उरला व्यवहारा हो ।
तीन लोक दशहूं दिशा यम रोकिन द्वारा हो ॥
कीर है सब जीयरा लिय विषका चारा हो ।
ज्योति स्वरूपी हाकिमा जिन अमल पसारा हो ॥
कर्मकी बंसी लायके पकरचो जग सारा हो ।
अमल मिटाऊं तासुका पठऊं भव पारा हो ॥
कह कबीरं निर्भय करों परखो टकसारा हो ।

शब्द एक सौ पन्द्रह ॥ ११५ ॥

सन्तो ऐसी भूल जगमाहीं जाते जिव मिथ्या में जाहीं ॥
पहिले भूले ब्रह्म अखण्डित झाईं आपुहि मानी ।
झाईं मानत इच्छा कीन्हा इच्छाते अभिमानी ॥
अभिमानी करता है बैठे नाना पंथ चलाया ।
वही भूल में सब जग भूले भूलक मर्म नहिं पाया ॥
लख चौरासी भूल ते कहिये भूलहि जग विटमाया ।
जो है सनातन सो भूला अब सोइ भूलहि खाय ॥
भूल मिटै गुरु मिलै पारखी पारख देइ लखाई ।
कहहि कबीर भूल की औषध पारख सब की भाई ॥११५॥

इति ।

(श्रीनाभाजीके भक्तमालसे टीकासहित)

॥ मूल ॥ कबीर कानि राखी नहीं वर्णाश्रमषटदरशनी॥ भक्तिविमुखजोधर्म सोअधर्मकरिगायो । योगयज्ञव्रतदानभजनविनतुच्छदिखायो ॥ हिंदूतुरकप्रमानर-मैंनी सबदीसाषी । पक्षपातनहिं वचनसबहिंकेहितकीभाषी॥ आरूढ़दशाह्वैजगतपर मुखदेखीनाहिंनभनी । कबीरकानिराखीनहींवर्णाश्रमषटदरशनी ॥ ६० ॥

टीका ॥ अतिहीगँभीरमतिसरसकबीरहियोलियोभक्तिभावजातिपाँतिसबटारिये॥ भईनभवाणीदेहतिलक खानीकरौकरौगुरुरामानंद गरेमालधारिये । देखैनहींमुखमे रोजांनिकैमलेच्छमोको जातन्हानगंगाकहीमगतनडारिये । रजनीकेशेशमयआवेश-सोंचलतआपपरै पगरामकहैंमंत्रसोंविचारिये ॥ २६५ ॥ कीनीवहीबातमालाति-लकबनाइगातमानिउतपातमातशोर कियोभारिये । पहुँचीपुकाररामानंदजूकेपास-आइकही कोऊपूँछेंतुमनामलैउचारिये । लावोजूपकरिवाकोकबहमकियोशिष्यला-येकरिपरदामें पूछीकहिडारिये। रामनाममंत्रयहीलिख्योसबतंत्रनिमें खोलिपटमिले सांचोमतउरधारिये ॥ २६६ ॥

बुनैतानोहियराममड़रानोकही कैसेकैबखानोवहीरीतिकछुन्यारिये । उतनोही-करै तामेंतनुनिरवाहहोइभोइगइऔरैबातभक्तिलागिप्यारिये । ठाढ़ेमंडीमांझपटबे-चनलैजनकोऊआयोमोकोदेहुदेहमेरीहैउघारिये । लग्योदेनआधोफारिआधोसों न कामहोयदियो सबलबोजोपैयहीउरधारिये ॥ २६७ ॥ तियासुतमातमगदेखेभूंखे आवैं कब दबिरहेहाटनमेंलावैकहाधामको । सांचोभक्तिभावजानीनिपट सुजानवेतो कृपाकेनिधानगृहशोचपरेउश्यामको । बालदलैधाये दिनतीनियोंबितायेजब आये धीरडारिदईलहेउहैपरामको । माताकरैशोरकोऊहाकिममरोरिबांधै डारोबिनजाने सुतनहींलेतदामको ॥ २६८ ॥ गयेजनदोइ चारिढूँढिकेलिवाइलायेआयेघरसुनी बात जानिप्रभूपरिको । रहेसुखपाइकृपाकरीरघुराइदईक्षणमेंलुटाइसबबोलिभक्तभी-रको । दयोछोंड़ितानोबानोसुखसरसानोहियेकियेरोषधायेसुनिविप्रतजिधीरको । क्योंरेतेजुलाहेधनपायोनाबुलायेहमैं शूद्रनिकोदियोजावोकहैयोंकबीरको ॥२६९॥

क्योंजुउठिजाउँकछुचोरीधनलाउँनितहरिगुणगाउँकोंउराहमेंनमारी है । उनको लैमानकियोयाहीमेंअमान भयो जोपैजाइमाँगा हमैंतौहीतौजियारीहै । घरमेंतोना-हींमंडीजाँउतुमरहौबैठे नीठिके छूड़ायोपैड़ोछिपैव्याधिटारीहै । आयेप्रभुआपद्रव्य लायेसमाधान कियोलियोसुखहोयभक्तिकीरीतिउजारीहै ॥ २७० ॥ ब्राह्मणकोरू पधरिआयेछिपिबैठेजहांकाहेकोमरतभूखैजानोजु कबीरके । कोऊ जाइद्वारनाहिदे-

तहैअढ़ाईसेरवेरजिनिलावोचलेजावोयोंबहीरके । आयेघरमांझदेखिनिपटमगनभये नयेनयेकौतुकसौंकेसेरहैंधीरके । वारमुखीलईसंगममानोवाहीरंगरंगेजानोयहबातकरीउरअतिभीरके ॥ २७१ ॥ संतदेखिदुरेसुखभयोईअसंतनिकेतबतौविचारिमन मांझ औरआयोहे । बैटीनृपसभातहांगयेपैनमानकियो कियोएकचीजउठिजलढरकायो है । राजाजियशोचपरयोकह्योकहाकह्योतबजगन्नाथपंडापाँवजरतबचायोहै । सुनिअचरजभारेनृपनेपठायेनरलायेसुधिकहीअजूसांचहीसुनायो है ॥ २७२ ॥

कहीराजारानीसोंजुबातवहसांचभईआंचलागीहियेअबकहौकहा कीजिये । चलेहीबनतिचलेशीशतृणबोझभारीगरेसोंकुल्हारीबांधीतियासंगभीजिये । निकसेबजारह्वैकेडारिदईलोकलाजकियो मैं अकाजछिनछिनतनुछीजिये । दूरितेंकबीरदेखिह्वैगयोअधीरमहाआयोउठिभागेकह्योडारिमतिरीझिये ॥ २७३ ॥ देखिकैप्रभावफेरिउपज्योअभावद्विजआयोबादशाहजूसिकंदरसोनामहै । विमुखसमूहसंगमाताहूमिलाइलईनाइकैपुकारे जूदुखायोसबगाँवहै । लावोरेपकरिवाकोदेखौरेमकरकैसोअकरमिटाऊंगाढ़ेजकरतनावहै । आनिठाढ़ेकियेकाजीकहतसलामकरौजानैनसलामजामेंरामगाढ़ेपावहै ॥ २७४ ॥ बांधिकैजँजीरगंगातीरमांझबोरिदियोजियौतीर ठाढ़ेकहैयंत्रमंत्रआवहीं । लकरीनमांझडारिअगिनिप्रजारिदईनईमानोंभई देहकंचनलजावहीं । विफलउपाइभयेतऊनहींआइनयेतबमतवारो हाथीआनीकेझुकावहीं । आवतनढिगऔंचिघारिहारिभाजिजाइआयआपसिंहरूपबैठेशोभागावहीं ॥ २७५ ॥

देख्यौबादशाहिभावकूदिपरेगहेपाव देखिकरामातिमातभयेसब लोक हैं । प्रभुपैबचाइलीसैहमैंनगजबकीलीजैसोईभावैगांवदेश ना भोग हैं । चाहैंएकरामजाकोजपैआठौयामऔरदामसोंनकामजामेंभरेकोटिरोग हैं । आयेघरजीतिसाधुमिलेकरिमीतिजिन्हैं हरिकी प्रतीतिवेईगायबेकेयोगहैं ॥ २७६ ॥ होइकैखिसानेद्विज निजचारिविप्रनके मूड़निमुड़ाइभेषसुंदरबनाये हैं । दूरिदूरिगावनमेंनामनिकोपूछिपूछि नामजोकबीरजूकोझूठैंन्योतिआये हैं ॥ आयेसबसाधुसुनिये तौदूरिगयेकहूंचहूं दिशिसंतनिकेफिरैंहरिधाये हैं । इनहीकोरूपधरिन्यारेन्यारेठौरबैठेएऊमिलिगयेनीकेपोखिकैरिझायेहैं ॥२७७॥ आईअप्सराछरिबेकेलियेबैसकिये हियेदेखिगाढ़ोफिरिगईनहींलागी है । चतुर्भुजरूपप्रभुआनिकैप्रगटकियोलियोफलनैननिकोबड़ोबड़भागी है । शीशधरैंहाथनसाथमेरेधामआवो गावोगुणरहोजोलौंतेरीमतिपागी है । मगमेंहैजाइभक्तिभावकोदिखाइबहु फूलनिमँगाइपौढ़िमिल्योहारिरागी है ॥ २७८ ॥

इति ।

मूल रमैनी प्रारम्भ ।

(अक्षर खण्डकी रमैनी)

प्रथमशब्दहैशुन्याकार ॥ परा[1]अव्यक्त सोकहै विचार॥अंतः करणउदयजबहोय ॥ प[2]श्यंतिअर्धमात्रासोय ॥ स[3]्वरसोकंठ म[4]ध्यमाजान ॥ चौं[5]तिसअक्षरमुखस्थान ॥ अ[6]नवनिबानीतेहि- केमांहि ॥ विनजानेनरभटकाखांहि ॥ बानी अक्षर स्वर सम[7]ु- दाय ॥ अ[8]र्धपश्यंतिजातनशाय ॥ शुन्याकारसोप्रथमारहै ॥ अक्षरब्रह्मसनातनकहै ॥ निर्वृ[9]ति ॥ प्र[10]वृतिहैशब्दाकार ॥ प्र[11]णवजानेइहैविचार ॥ साक्षी ॥ अं[12]कुलाहटकेशब्दजो, भई चारसोभेष ॥ बहुबानीबहुरूपकै पृथकपृथकसबदेश ॥ १ ॥

रमैनी॥अनवनिबानीचारप्रकार ॥ १ काल २ संधि ३ झांई ४ औ सार॥ हेतुशब्दबूझियेजोय ॥ जानिय य[13]थारथ द्वारासोय॥ भ्र[14]मिकझांईसंधिकऔकाल ॥ सारशब्दकाटेभ्रमजाल ॥ द्वारा[15] चारअर्थपरमान ॥ प[16]दारथ व्यं[17]गार्थपहिचान भा[18]वार्थ १९ ध्वन्यार्थचार ॥ द्वाराशब्दकोइलखेविचार ॥ प[20]रा पराइति मुखसोजान ॥ मोरे सोरहकला निदान॥ साक्षी ॥ विन- जानेसोरहकला, शब्दीशब्द कौआयें[21] ॥ शब्द सुधारष-

१ इसका स्थान नाभी ॥ २ इसका स्थान हृदय ॥ ३ सोलह स्वर अ आ इत्यादि ॥ ४ इसका स्थान कंठ ॥ ५ व्यंजन ॥ ६ नाना प्रकारकी ॥ ७ एकट्ठा ॥ ८ पश्यंति होय फिर परा अवस्था को प्राप्त होता है ॥ ९ लय॥ १० उत्तपत्ति ॥ ११ ओंकार ॥ १२ उबिआहठ ॥ १३ सच्चा ॥ १४ भरमाने ॥ १५ मार्ग, रस्ता ॥ १६ पद, अर्थ, शब्दका जो अर्थ, शब्दार्थ॥ १७ व्यंग, अर्थ, व्यंग भाव से जो कहा जावे ॥ १८ मतलब' आशय वाला जो अर्थ १९ ध्वनिमात्र ॥ २० परा और अपरा दो विद्या कोई शब्द परा विद्या को वर्णन करता है कोई अपरा को ॥ २१ भटकता है ॥

हिचानिये, कौनकहावौआय ॥२॥ रमैनी ॥ अक्षरवेदपुराणब खान ॥ धरमकरमतीरथअनुमान ॥ अक्षरपूजासेवाजाप॥और महातमजेतेथाप॥यहीकहावतअक्षरकाल॥जाएगडीउरहोयके भाले[२२] ॥ ओंहं सोहं आतमराम ॥ मायामंत्रादिकसब काम ॥ येसबअक्षर संधिकहै ॥ जेहिमानिंशिवासर जिव रहै ॥ निरगुणअलखअकहनिर्वाण ॥ मनबुधि इन्द्रिय जायनजान ॥ बिधिनिषेघजहं [२३]बनितादोय ॥ कहैंकबीरपदझांईसोय ॥ साक्षी ॥ प्रथमेझांई झांकते, पैठासंधिककाल ॥ पुनिझांईकी झांईरही, गुरुबिन सकेकोटाल ॥ ३ ॥ रमैनी ॥ प्रथमही संभैव[२४]शब्द अमान ॥ शब्दी[२५]शब्दकियोअनुमान ॥ मानमहा तममानभुलान ॥ मानत मानत बावनठान ॥ फेरा फिरतभयो भ्रमजाल ॥ देहादिकजगभये बिशाल ॥ देहभईतेदेहिकहोय ॥ जगतभईतेकर्ता कोय ॥ कर्ता [२६]कारणकर्महिलाग ॥ घरघर लोगकियो अनुराग ॥ [२७]छौ दरशनवर्ण[२८]श्रमचार ॥ [२९]नौ छौ भए पाखंडबेकार ॥ कोई [३१]त्यागी [३२]अनुरागीकोय ॥ विधिनिषेधमावधियादोय ॥ कलपेउग्रंथपुराणअनेक ॥ भरभिरहै सबबिनाबिवेक ॥ साक्षी ॥ भरभिरहासब शब्दमें, सब्दीशब्दनजान ॥ गुरुकृपानिजपरखबल, परखोधोखाज्ञान ॥ ४ ॥

२२ तीर ॥ २३ जगत को निषेधकर और ब्रह्मका प्रतिपादन करना यह है स्त्री जिसका ॥ २४ होताभया ॥ २५ शब्दका मालिक शब्द कहने वाला ॥ २६ हेतु॥२७१योगी२ जंगम३ सेवड़ा ४ सन्यासी५दर्वेश ६ छठांकहिये ब्राह्मण छ घर छ है भेश ॥ २८ ब्राह्मण १ क्षत्री २ वैश्य ३ शूद्र ४ वर्ण और ब्रह्मचर्य्य १ गृहस्थ २ बाणप्रस्थ ३ सन्यास ४ आश्रम ॥ २९–३०= छ्यानवेपाखण्ड ३१ विरक्त ॥ ३२ गृहस्थ ॥

रमैनी ॥ धोखाप्रथमपरखियेभाई ॥ नामजातिकुलकर्मबड़ाई क्षिति[33]जल पा[34]वक म[35]रुतअकाश ॥ तामहपंच[36] विषयपरकाश॥ तत्व पांचमेंश्वासासार ॥ प्राणअपानसमान उ[37]दार ॥ और-ध्यानबावनसंचार ॥ निजानिज थ[38]लानिज कारजकार ॥ इंग-ला पिंगलाऔ सुखमनी ॥ इकइस सहस्र छौसत सोगनी ॥ निगम[39] अ[40]गम सो सदा बतावे ॥ श्वासासारसरोदा गावे ॥ साक्षी ॥ धोखा [41]अंधेरी पायके, याविधिभयाशरीर ॥ कल्पेउकारताएक पुनि, बढ़ीकर्मकी [42]पीर ॥ ५ ॥ रमैनी ॥ योग्य जप तपध्यानअलेख ॥ तीरथ फिरतधरेबहुभेख ॥ योगी जंगमासिद्धउदास ॥ घरको त्यागि फिरेबनबास ॥ क[43]न्द मू[44]ल फ[45]ल करतअहार ॥ कोइकोइ जटाधरे शिरभार ॥ मन-मलीन मुखलायेधूर ॥ आगे पीछेअग्निऔ सू[46]र ॥ नग्नहोयनर खो[47]रि नाफिरे ॥ पीतरपाथरमेंशिरधरे ॥ साक्षी ॥ कालशब्द-केसोरते, हो[48]रपरीसंसार ॥ देखा देखीभागिया, कोईनकरे विचार ॥ ६ ॥ रमैनी ॥ जब पु[49]निआयखसी यह बा[50]नि ॥ तबपुनिचित्तमाकियो अनुमानि ॥ महीं ब्रह्म कर्त्ताजगकेर ॥

॥ ३४ अग्नि ३३ पृथ्वी ३५ वायु ॥ ३६ शब्द आकाश का विषय स्पर्श वायुका ॥ रूप अग्नि का रसजलका गंध पृथ्वीका ३७ उदान ॥ ३८ स्थान॥ ३९ शास्त्र ॥ ४० वेद ॥ ४१ अविद्या अज्ञानता ॥ ४२ दुख ॥ ४३ जो पृथ्वी के नीचे होता है जैसे आलू शकरंद केसउर फर इत्यादि ॥ ४४ जो मूल से होता है अर्थात काठ फोड कर जो निकलता है जैसे कट हल; गूलर इत्यादि ॥ ४५ जो फूल से पैदा है जैसे आंब (केरी) अमरूद (जामफल) इत्यादि ॥ ४६ सूर्य्य ॥ ४७ बेशर्म ॥ ४८ शोर हल्ला ॥ ४९ फिर ॥ शब्द ॥ ५० ॥

परेसोजालजगतकेफेर ॥ [५१]पांच तीनगुणजगउपजाया ॥ सोमायामैंब्रह्मनिकाया ॥ उपजे खपेजगविस्तारा ॥ मैंसाक्षीसब जाननिहारा॥ मोकहू जानिसकेनहिंकोय ॥ जोपैविधिहरिशंकरहोय ॥ अस सन्धिककीपरी बिकार । बिनुगुरुकृपानहोयउवार ॥ मग्न ब्रह्मसंधिककेज्ञान ॥ असजानिअबभयाभ्रमहान ॥ साक्षी ॥ [५२]संधिशब्दहैभर्ममो, भूलिरहा [५३]कितलोग । परखेउधोखाभे[५४]वँनहिं, अंतहोतबड़ [५५]सोग ॥ ७ ॥ रमैनी ॥ जोकोइ संधिकधोखाजान ॥ सोपुनिउलटि कियोअनुमान ॥ मनबुद्धिइन्द्रियजायनजान । नि[५६]र्वचनीसोसदाअमान ॥ [५७]अकल [५८]अनीह [५९]अबाध [६०]अभेद ॥ नेतिनेतिकैगाबेवेद ॥ सोहं [६१]वृत्ति अखण्डितरहै ॥ एकदोयअबकोतहांकहै ॥ जानिपरी तब [६२]नित्याकार ॥ झांईं सो भ्रममहाबेकार ॥ साक्षी ॥ संभव शब्दअमानजो, झांईंप्रथम बेकार ॥ परखेउ धोखाभेवनिज, गुरुकी दयाउवार ॥८॥ रमैनी ॥ पहिले एकशब्दसमुदाय ॥ बाबनरूपधरेछितराय ॥ इच्छा नारिधरेतेहिभेश॥ तातेब्रह्मा विष्णुमहेश ॥ चारिउ उरपुरबावनजागे ॥ पंच अठरहकंठहिलागे ॥ तालू पंचशून्यसोआय ॥ दश्शरसनाके पूतकहाय॥पांचअधर अधरहीमारहै॥शुन्नेकंठसमोधेवहै॥ ओठकंठलेप्रगटे ठौर ॥ बोलनलागे औरकेऔर ॥ साक्षी ॥ एकशब्द समुदायजो, जामेचार प्रकार ॥ कालशब्द सं-

५१ पांचतत्व ॥ देखो रमैनी ३ । १० इत्यादि ॥ ५३ कहां ॥ ५४ भेद ॥ ५५ शोक दुख, ॥ ५६ कहने में जो नहीं आवे ॥ ५७ कला अंश रहित ॥ ५८ इच्छा रहित ५९ बाद रहित ॥ ६० भेंद रहित ॥ ६१ लगन, ख्याल, सुरत ॥ ६२ सत्य रूप ॥

घिशब्द, झांईऔपुनि सार ॥ ९ ॥ रमैनी ॥ पांच[63] तीनि[64] नौ[65] छौ[66] औचार[67] ॥और अठारह[68] करेपुकार ॥ कर्मधर्मतीरथ-केभाव ॥ ईसवकालशब्दकेदाव ॥ सोहंआत्माब्रह्मलखाव ॥ तत्वमसी मृत्युंजयभाव[69] ॥ पंचकोश नवकोश[70] [71] वखान ॥ सत्य-झूठ मेंकरे अनुमान ॥ ईश्वरसाक्षी जाननिहार ॥ येसवसंधि-ककहैविचार॥कारजकारणजहांनहोय॥मिथ्याकोमिथ्याकहि-सोय ॥ बैन चैननहिंमौनरहाय ॥ ईसबझांईदीनभुलाय॥कोइ काहूका कहानमान॥जोजेहिभावेतहंअरुझान[73] ॥ परेजीवतेहि यमकेधार॥जौलौंपावेशब्दनसार॥जीव दुसह[74] दुखदेखिदयाल॥ तवप्रेरीप्रभुपरखरि साल ॥ साक्षी ॥ परखायेप्रभु एक[75] को, जामे चारप्रकार ॥ काल संधि झांई लखी लखी शब्द मत सार ॥ १० ॥ रमैनी ॥ प्रथमेएकशब्दआरूढ ॥ तेहितकि कर्मकरेवहुमूढ़ ॥ ब्रह्मभरमहोयसब [जग] में पैठा ॥ निरम-लहोयफिरेवहुऐंठा ॥ भरमसनातन गावे पांच[76] ॥ अटकि रहैन-रभवकी खांच[77] ॥ आगेपीछेदहिनेबांये ॥ भरमरहाहैचहुदिशि छाये ॥ उठीभर्मनरफिरेउदास ॥ घरकोत्यागिकियोवनवास ॥

६३ पांच तत्व ६४ तीनगुण ॥ ६५ नौ व्याकरण ॥ ६६ छौ शास्त्र ॥ ६७ चार वेद ऋगवेद १ यजुर्वेद २ सामवेद ३ अथर्बवेद ६८ अठारह पुराण॥ १मा -कंडे पुराण २ मत्स्य पुराण ३ भागवत ४ भविष्यत पुराण ५ ब्रह्म वैं वर्तक ६ ब्रह्माण्ड पुराण ७ ब्रह्मपुराण ८ विष्णुपुराण १० वाराहपुराण ११ वायुपुराण अग्निपुराण १३ नारद पुराण १४ पद्म पुराण १५ कूर्म पुराण १६ स्कंद पुरा ण १७ लिंग पुराण १८ गरुड़ पुराण ॥ ६९ नाम वायु ७० अन्नमय, प्राणम य, मनोमय, ज्ञानमय, विज्ञानमय (आनंदमय)७१ उपरोक्त ५ और शब्दमय १ प्रकाशमय २ आकाशमय ३ आनंदमय ४ देखो बीजक के ५० वीं साखी का टीका पृष्ठ ३६१ और कबीर मंशूर बड़ा पृष्ठ ६९६ ॥ ७२ बाणी ॥

७३ फंस गया ॥ ७४ कठिन ॥ ७५ शब्द ॥ ७६ पांचतत्व ७७ कीचड़ पंक, कांदो ॥ ७८ निराकार ॥

भरमबढ़ीशिरकेशबढावे ॥ तकेगगन कोइ बांह उठावे ॥ देता री करनाशाग है ॥ भरमिकगुरू बतावे लहै ॥ भरम बढ़ी अरु घूमन लागे ॥ विनु गुरु पारख कहु को जागे ॥ साक्षी ॥ कहैं कबीर पुकारके, गहहुशरणतजिमान ॥ परखावे गुरभरमको, वानि खानिसहिदान ॥ ११ ॥ रमैनी भरमजीव परमातममाया॥भरमदेहऔ भरम निर्[80]काया ॥ अनहदनाद औ ज्योति प्रकास ॥ आदिअन्तलौभरमहि भास ॥ इत उत करे भरम निर्[79]मान ॥भरम मान औभरमअमान॥कोहं जगतकहांसे भया॥ ईसबभरम अतीनिरमया ॥ प्र[80]लय चारि भ्रमपुण्य औ पाप ॥ मन्त्रजापपूजाभ्रमथाप ॥ साक्षी ॥ बाट बाट सब भर्म है, माया रचीबनाय ॥ भेद बिना भरमें सकल,गुरु बिन कहांलखाय ॥ १२ (बापपूत दोउ भरमहै, मायारची बनाय ॥ भेद बिनाभरमे सकल, गुरु बिनकहाँलखाय) ॥ साक्षी ॥ बापपूत दोऊ भरम, आंधकोश नवपांच ॥ बिन गुरु भरम नछूटे, कैसे आवैसांच ॥ १३॥ रमैनी ॥ क[82]लमा बां[83]ग निर्[84]माज गुजारे॥भरमभई अल्लाहपुकारै ॥ अजबभरम एकभईतमासा॥ [85]लॉ मुकाम बे[86]चूननिबासा ॥ बे[87]नमूनवहसब केपारा॥ आ[88]खिरताको करे दि[89]दारा ॥ रग[90]डेनाक मेंसजिदअचेत ॥ निंदे बुं[91]त

७९ स्थित ॥ ८० नित्य प्रलय १ नैमित्तिक प्रलय २ महाप्रलय ३ आत्यंतिक प्रलय ४ ॥ ८१ अधामात्री ॥ मुसलमानो का गुरु मन्त्र ला एला इलिल्लाह मुहम्मदुर्रसू लिल्लाह ॥ ८२ अजान जो निमाज पढ़ने के थोड़ेही पहले निमाज के समय सूचन करने को कलमा श० पुकारते हैं ॥ ८४ जो खुदा के प्रार्थना पांच समय दिन और रात्री पढ़ते हैं पश्चिम मुह होकर ॥ ८५ स्थान रहित ॥ ८६ निराकार ॥ ८७ अद्वितीय ॥ ८८ क्यामतके दिन,सृष्टि के अंत में जब खुदा सबका न्याय करेगा ॥ ८९ दर्शन ॥ ९० मुसलमानों के नेमाज पढ़ने की जगह ॥ ९१प्रतिमापूजक ॥

परस्ततोहिहेत ॥ बावन[92] तीस[93] बरन निरमान ॥ हिन्दू तुरक[94] दाऊभरमान ॥ साक्षी ॥ भरमिरहेसब भरममहं, हिंदू-तुरुकबखांन ॥ कहहिंकबीरपुकारके, बिनुगुरुकोपहिचान ॥ १४ ॥ रमैनी ॥ भरमत भरमतसबै भरमाने ॥ रामसनेही बिरलेजाने ॥ तिरदेवा सबखोजतहारे ॥ सुरनरमुनिनहिपा-वतपारे ॥ थकितभयातबकहाबेअन्ता ॥ बिरहिनि[95]नारिरही बिनु कन्ता[96] ॥ कोटिनतरक करें मनमाही ॥ दिलकी दुबिधा कतहुंनजाही ॥ कोई नख शिखजटा बढ़ावै ॥ भरमिभरमि-सबजहँतहँधावैं ॥ बाटनसूझै भईअँधेरी ॥ होयरहीबानी की चेरी ॥ नाना पन्थ बरनिनहिंजाई ॥ (जातिकर्म गुन नाम्र बड़ाई) जाति वरणकुलनामवड़ाई ॥ रैन दिवसवे ठाँढेरहहीं वृक्ष पहारकाहेंनाहितरहीं ॥ साक्षी ॥ खँ[97]समनचीन्हे बावरी, परपूरुषलौलीन ॥ कहंहिकबीर पुकारके परीनबानीचीन ॥ १५ ॥ रमैनी ॥ कैनरसकी मतवालीनारि ॥ कुंटनीसिखो-जे लँगवारि[101] ॥ कुटनीआंखिन कोंजर[102]दियऊ । लागि[103]वतावन ऊपरपीयऊ ॥ काजरलेकेह्वैगईअंधी ॥ समुझनपरीबातँकी संधी[104] ॥ बाजेकुटनीमारे भँटकी[105] ॥ ई सब छिनरोतामहँअ-टकी ॥ विरहिनिहोय के देहसुखावै ॥ कोई शिरमह केशव-ढ़ावै ॥ मानि मानि सब कीन्ह सिंगारा ॥ बिनपियपरसैस-बैअंगारा ॥ साक्षी ॥ अटकीनारिछिनारि सब, हर-दम कुटनीद्वार ॥ खसम न चीन्हेबावरी, घरघरफिरतखु-

९२ संस्कृत वर्णमाला के ५२ अक्षर ॥ ९३ मुसलमानीवर्णमाला के ३० अक्षर ॥ ९४ मुसलमान ॥ ९५ वियोगिन ॥ ९६ पिया मालिक ॥ ९७ खड़े ॥ ९८ मालिक ॥ ९९ बाणी ॥ १०० गुरुआ लोग ॥ १०१ आशना, जार ॥ १०२ झूंठा उपदेश ॥ १०३ उपदेश करने लगी ॥ १०४ मिलावट ॥ १०५ इशारा ॥

वार ॥ १६ ॥ रमैनी ॥ नवदरवाजाभरमविलास ॥ भरमहि-वावनवहेवतास ॥ कैनउजबावनभूतसमान[106] ॥ कहं लगिगनों सो प्रथमउड़ान ॥ माया ब्रह्मजीवअनुमान ॥ मानतही मालिक बौरान ॥ अकबकभूतवके परचंड ॥ व्यापि रहा सकलो ब्रह्मंड ॥ ई भर्म भूत की अकथकहानी ॥ [107]गौत्योजीवजहांन-हिंपानी ॥ तनकतनकपरदौरे बौरा ॥ जहांजायेतहंपावेन-ठौरा ॥ साक्षी ॥ योगी रोगीभक्तबावरा, ज्ञानीफिरे [108]निखट्टू ॥ संसारीको [109]चैन नहींहै, ज्योंसरांयकाटट्टू ॥ १७ रमैनी ॥ इतउंत[110]दौरेसबसंसार ॥ छुटेनभरमकियाउपचार ॥ जरेजीवकोबहुरिजरावै ॥ काटे ऊपर लोनलगावै ॥ योगी ऐसी हालबनाई ॥ [111]उलटी वत्ती नाक चलाई ॥ कोइविभूति-मृगछालाडारे ॥ अगमपन्थकी राहनिहारे ॥ काहूको जलमां-झसुतावे ॥ कहंरतहीं सबरैनगंवावै ॥ भगती नारी कीन शृंगार ॥ बिन प्रिया परचै सबै अंगार ॥ एकगर्भ ज्ञानअनु-मान ॥ नारि पुरुषकाभेदनजान ॥ संसारीकहूंकलनाहिंपावे ॥ [112]कहंरतजगमेंजिवगंवावे ॥ चारिदिशामें मंत्री[113]झारे ॥ लियेपलीतामुलनाहारे ॥ जरैनभूतबड़ो वरि[114]यारा ॥ काजी पण्डित [पचिपचि] पढ़िपढ़ि हारा ॥ इन दोनोंपरएकै भूत ॥ झारेंगे क्यामाकी चूत ॥ साक्षी ॥ भूतनउतरे भूतसों, सन्तो करोविचार ॥ कहैंकवीरपुकारिके, बिनुगुरु नहिंनिस्तार ॥ साक्षी॥परमप्रकाश [115]भासजो, होत [116]प्रौढविशेष॥ तद प्रकाश

१०६ अक्षर १०७ डुबाया ॥१०८ उदास ॥ १०९ सुख ॥ ११० यहां ववां ॥ १११ नेती धोती बाहर कराता है ॥११२ हाय २ करते २॥ ११३ पंडित लोग ॥ ११४ मजबूत बलीबलवान ॥ ११५ अभ्यास ॥ ११६ दृढ़ ॥

संभव भई, महाकाश सो शेष १९ ॥ साक्षी ॥ झांईसंभवबुद्धि ले, करीकल्पना अनेक ॥ सोपरकाशक जानिये, ईश्वरसाक्षी एक ॥ साक्षी ॥ बिषमभईशंकल्प जब, तदाकारसोरूप ॥ महा अंधरीकालसो, परेअविद्या रूप ॥ साक्षी ॥ महातत्व त्रीगुणपांच तत्व,[117]समष्ठि[118]व्यष्ठि परमान ॥ दोय प्रकार होयप्रगटे, [119]खंड[120]अखंडसोजान ॥ २२ ॥ रमैनी ॥ सदा अस्ति[121]भासे निजभास ॥ सोईकहियेपरम प्रकाश ॥ परमप्रकाशले झांई होय ॥ महदअकाश होयबरते सोय॥बरतेबर्त मानपरचंड॥[122]भासक तुरियातीतअखंड ॥ कालसंधिहोये उश्वास ॥ आगे पीछे अनवनि भास ॥ विविधि भावना कल्पित रूप ॥ परकाशी सोसाक्षि अनूप ॥ शून्य अज्ञान सुषुप्तिहोय ॥ अकुलाहट ते नादै सोय ॥ (शून्य ज्ञान सुषुती होय ॥ अकुलाहटसे नादी सोय) ॥ नादवेद अकर्षण जान ॥ तेजनीर प्रगटे तेहिआन ॥ पानी पवन गांठि परिजाय ॥ देही देह धरे जग आय ॥ सो कौआर शब्द परचंड ॥ बहुव्यवहार खण्डब्रह्मण्ड ॥ साक्षी ॥ जतन भये निज अर्थ को, जेहि छूटे दुख [123]भूरि ॥ धूर परी जब आंखमें, सूझे किमि निजमूर ॥ २३ ॥ रमैनी ॥ पांजी परख जबै फारिआवै ॥ तुरतहि सबै विकार नशावै ॥ शब्द सुधारि के रहे अकरम ॥ स्वाती भक्ति के खोटे भरम ॥ काल जाल जो लखि नहिं आवै ॥ तौलौ निजपद नहीं पावै ॥ झांई संधि काल पहिचान ॥ शार शब्द बिनु गुरु नहिं-जान ॥ परखे रूप अवस्था जाए ॥ आन विचार न ताहि समाए॥ [124]झांई सांधि शब्दले परखे जोय॥ संशय वाकेरहै न कोय॥

११७ समूह जैसे बन ॥ ११८ एक जैसे एक वृक्ष ॥ ११९ अंस ॥ १२० पूर्ण ॥ १२१ सत्य ॥ १२२ अध्यास का करानें वाला ॥ १२३ ढेर समूह ॥ १२४ वेदांत ॥

साक्षी ॥ धन्य धन्य तरण तरण, जिन परखा संसार ॥ वंदी छोरकबीरसों, परगटगुरू विचार ॥ २४ ॥ रमैनी ॥ शब्द सांधि ले ज्ञानी मूढ ॥ देह करमजगत आरूढ़ ॥ [125]नौंद्रसंधिलै सपना होय ॥ झांई शून्य सुषोपति सोय ॥ ज्ञान प्रकाशक साक्षी संधि ॥ तुरियातीत अभास अवंधि ॥ झांई ले वरते वर्तमान ॥ सो जो तहां परे पहिचान ॥ काल अस्थिति के भासनशाए ॥ परख प्रकाश लक्ष विलगाए ॥ बिलगेलक्ष अपन [126]पौ जान ॥ आपु अपन पौ भेद न आन ॥ साक्षी ॥ आप अपन पौ भेद बिनु, उलटिपलटि अरझाय ॥ गुरु बिन मिटै न दुगदुगी, अनवनियतभनशाय ॥ २५ ॥ रमैनी ॥ निज प्रकाश झांई जो जान ॥ महा संधि माकाश बखान ॥ सो ई [127]पांजी ल बुद्धि विशेष॥प्रकाशक तुरियातीत अरुशेष॥ विविध भावना बुधि [128]अनुरूप ॥ विद्यामाया सोई स्वरूप ॥ सो संकल्प बसे जिव आप ॥ [129]फुरी अविद्या बहु संताप ॥ त्री गुण पांच तत्व विस्तार ॥ तीन लोक तेहि के मंझार ॥ अदबुदकला बरनि नाहिं जाई ॥ उपजे [131]खपे तेहिमाहि समाई ॥ निज झांई जो जानी जाए ॥ सोच मोह संदेह नशाए ॥ अन जाने को एही रीति ॥ नाना भांति करे परतीति ॥ सकल जगत जाल अरुझान ॥ बिरला और कियो अनुमान ॥ कर्ता ब्रह्म भजे दुःख जाए ॥ कोई आपै आप कहाए ॥ पूरण सम्भव दूसरनाहिं ॥ बंधन मोक्ष न एको आहिं ॥ फल आश्रित स्वर्गहिके भोग ॥ कर्म सुकर्म लहै संयोग ॥ करम हीन [132]वाना भगवान॥[133]सूत [134]कुसूत लियो पहिचान ॥ भांतिन भांतिन

१२५ अंतर का जो शब्द ॥ १२६ दाव, स्वरूप ॥ १२७ फरि औंता ॥ १२८ अनुसार मुताबिक ॥ १२९ स्फुण हुआ ॥ १३० नाना रंगका आश्चर्यमय ॥ १३१ नाश होता है ॥ १३२ भेष ॥ १३३ भला ॥ १३४ बुरा ॥

पहिरे चीर॥युग युग नाचे दास [१३५]कबीर ॥ २१ ॥ रमैनी ॥भासे
जीवरूप सो एक ॥ तेही भास के रूप अनेक ॥ कोई [१३६]मगन
रूप लौलीन ॥ कोइ [१३७]अरूप ईश्वर मन दीन ॥ कोई कहै कर्म-
[१३८]रूप है सोय ॥ शब्द [१३९]निरूपन करे पुनि कोय ॥ [१४०]समय रूप
कोई भगवान ॥ कर्त्ता न्यारा [१४१]कोइ अनुमान ॥ कोई कहै
[१४२]ईश्वर ज्योतिहिं जान ॥ आतम को कोई [१४३]स्वतः बखान ॥
कोई कहै सब [१४४]पुनि सबते न्यारा ॥ आपै राम विश्व विस्ता-
रा ॥ शब्द [१४५]भाव कोई अनुमान ॥ अद्वै रूप [१४६]भई पहिचान ॥
[१४७]दुगदुग रही को बोलै बात ॥ बोलतही सब तत्व नशात ॥
बोल [१४८]अबोल लखे पुनि कोय ॥ भास जीव नाहिं परखै सोय
॥ साक्षी ॥ निज [१४९]अध्यास झांई अहै, सोसंधिक भौभास ॥
प्रथम अनुहारी कल्पना, सदा करे परकास ॥ २६ ॥ रमैनी॥
लख चौराशी योनि जेते ॥ देही बुद्धि जानिये तेते ॥ जहं
जेहि भास सोई सोइ रूप ॥ निश्चै किया परा भवकूपं ॥ नाना
भांति विषय रस लीन ॥ अरुझि २ जिव मिथ्या दीन ॥
[१५०]दांवा [१५१]विषय जरै सब लोय ॥ बांचा चहै गहै पुनि सोय ॥दृढ
विश्वास [१५२]भरोसा राम ॥ कबहू तो वे आवैं काम ॥ [१५३]विषय
विकार मांझ संग्राम ॥ राम खटोला किया अराम ॥ घायल
बिना तीर तरवार ॥ सोइ [१५४]अभरणे जेहि रीझे भरतार ॥

१३५ भक्त लोग ॥ १३६ सगुण उपासक ॥ १३७ निर्गुण उपासक ॥
१३८ पूर्व मीमांसक ॥ १३९व्याकरणी ॥ १४० वैशेषिक ॥ (काळ वादी)
१४१ तर्क वादी नैयाइक ॥ १४२ योगी (पातांजळ) १४३ सांख्यक ॥
१४४ वेदांती ॥ १४५ बोलता ॥ १४६अद्भुत रूप ॥ १४७ शंका ॥
१४८ विज्ञानी ॥ १४९ कल्पना ॥ १५० उसके बुद्धि का जो विषय ॥
१५१ अग्नि ॥१५२ आशा ॥ १५३॥ क्षोभ, ऐब ॥ १५४ गहना ॥

कामिनी पहिर पिया सों रांची[155] ॥ कहैं[156] कवीर भव बूड़त बांची ॥ २३ ॥ रमैनी ॥ भव बूड़त बेड़ा[157] भगवान ॥ चढे धाये लागी लौ ज्ञान ॥ थाह न पावे कहे अथाह ॥ डोलत करत तराहि तराह ॥ सूझ परे नाहिं वार न पार ॥ कहै अपार रहै[158] मंझधार ॥ मांझधारमें किया विवेक॥कहां के दूजा कहांके एक ॥ बेरा आपु आपु अवधार ॥ आपै उतरन चाहेपार ॥ बिन जाने जाने है और॥आपै राम रमैसब ठौर॥ वार पार ना जाने जोर ॥ कहै कवीर पार है ठौर ॥ २४ ॥ रमैनी ॥ अक्षर खानी अक्षर वानी ॥अक्षर ते अक्षरउतपानी अक्षर करता आदि प्रकास ॥ ताते अक्षर जगत विलास ॥ अक्षर ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ अक्षर रज सत तम उपदेश ॥ छिति जलपावक मरुत अकाश॥ये सब अक्षर मो परकाश॥ दश औतार सो अक्षर माया ॥ अक्षरनिर्गुणब्रह्मानिकाया ॥ अक्षर काल संधि अरु झांई ॥ अक्षर[159] दाहिने अक्षर[160] बांई ॥ अक्षर आगे करे पुकार ॥ अँटके नर नाहिं उतरे पार ॥ गुरुकृपा निज[161] उदय[162]विचार ॥ जानिपरी तव गुरुमत-सार ॥ साक्षी ॥ जहां ओसको लेश नही, बूडे सकल जहांन ॥ गुरु कृपानिज परखबल, तव ताको पहि-चान ॥ २७ ॥ रमैनी ॥ अक्षर काया अक्षर माया ॥ अक्षर सतगुरु भेद बताया ॥ अक्षर यन्त्र मन्त्र अरु पूजा ॥ अक्षर ध्यान धरावत दूजा ॥ अक्षर पढि २ जगत भुलान ॥ अक्षर बिनु नाहिं पावै ज्ञान ॥ विन अक्षर नाहिं पावे गती[163] ॥ अक्षर

१५५ लगी ॥ १५६ गुरू ॥ १५७ नाव किश्ती ॥ १५८ बीच धारमें ॥ १५९ दक्षिण पंथ ॥१६०वाममार्ग ॥ १६१ अपना॥१६२प्रकाश॥ १६३ मुक्ति ॥

बिन नहिं पावे रती[१६४] ॥ अक्षर भए अनेक उपाय ॥ अक्षर सुनि २ शून्य समाय ॥ अक्षर से भव आवै जाय ॥ अक्षर काल सबनको खाय ॥ अक्षर सबका भाषे लेखा ॥ अक्षर उत्पति प्रलय विशेखा ॥ अक्षरकी पावै सहिदानी[१६५] ॥ कहैं कबीर तब उतरे प्रानी ॥ साखी ॥ परखावे गुरुकृपा करि, अक्षर की सहिदानि ॥ निज बल उदय विचारते, तब होवे भ्रम हानि ॥ २८ ॥ रमैनी ॥ बावन के बहु बने तरंग ॥ ताते भासत नाना रंग ॥ उपजे औ पालै अनुसरे ॥ बावन अक्षर आखिर करे ॥ राम कृष्ण दोउ लहर अपार ॥ जेहिपद गहि नर उतरे पार ॥ महादेव लोमश नहिं बांचे ॥ अक्षर त्रास सबै मुनि नाचे ॥ ब्रह्मा विष्णु नाचै अधिकाई ॥ जाको धर्म जगत सब गाई ॥ नाचै गण गंधर्व मुनि देवा ॥ नाचे सनकादिक बहु भेवा ॥ अक्षर त्रास[१६६] सबन को होई ॥ साधक सिद्ध बचे नहिं कोई ॥ अक्षर त्रास लखे नहिं कोई ॥ आदि भूल बंछे सब लोई ॥ अक्षर सागर अक्षर नाव ॥ करणधार अक्षर समुदाव ॥ अक्षर सबका भेद बखान ॥ बिन अक्षर नहिं अक्षर जान ॥ अक्षर आसते फंदा परे॥ अक्षर लखे ते फंदा टरे॥ गुरु शिष अक्षर लखेलखावे ॥ चौराशी फंदा मुक्तावै ॥ विनु गुरु अक्षर कौन छोडावे ॥ अक्षर जाल ते कौन बचावै ॥ संचित[१६७] क्रिया उदय जब होय ॥ मानुष जन्म पावे तब सोय ॥ गुरुपारख बल उदय विचार ॥ परख लेहु जगत गुरुमुख सार ॥ अस्ति हंसप्रकाश अपार॥

१६४ प्रवृत्ति ॥ १६५ चिह्न, पारख, पहिचान, ॥ १६६ भय ॥ १६७ जन्मांतरोंमें संचित किया हुआ कर्म ॥

गुरुमुख सुख निज अति दातार २७ ॥ साक्षी ॥ अक्षर है तिहु भर्मका, विनु अक्षर नहिं जान॥गुरु कृपानिज बुद्धिबल, तब होवे पहिचान २९ ॥ साक्षी ॥ जँहवां[१६८] से सब प्रगटे, सो हम समझत नांहि ॥ यह अज्ञान है मानुषा, सो गुरु ब्रह्म कहि ताहि ॥ ३० ॥ साक्षी ॥ ब्रह्म विचारे ब्रह्मको, पारख गुरु प्रसाद[१६९] ॥ रहित[१७०] रहै पद परखिके, जिव से होय अवाद[१७१] ॥ ३१ ॥ मूल रमैनी सम्पूर्णा ॥ कठिन शब्द जेते रहे, टिप्पणी करि बनाय ॥ बाकी अब कछु होय जो दीजो संत जनाय ॥ १ ॥ गुरुथल हाता[१७२] जानिये, शिवहर[१७३] जन्म स्थान॥ युगलानन्द मम नाम है, जानो संत सुजान ॥ २ ॥

१६८ जहांसे ॥ १६९ दया, कृपा ॥ १७० अलग ॥ १७१ वाद रहित ॥ १७२ जिला सारन डा० घ० कुचाहकोटके इलाकेमें और हथुआसे पांच कोस उत्तर पर है ॥ १७४ बिहार प्रान्तके मुजफ्फरपुर जिलेमें राजस्थान है ।

इति श्रीमूलरमैनी प्रसिद्ध अक्षरखण्डकी रमैनी स्वामी युगलानन्द कबीरपंथी भारतपथिद्वारा संशोधिता समाप्ता ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेंकटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालय—बम्बई.

बीजक कबीरदास ।

अथ आदिमंगल ।

दोहा-प्रथमै समरथ आप रहे, दूजा रहा न कोइ ॥
दूजा केहि बिधि ऊपजा, पूछत हौं गुरु सोइ ॥ १ ॥
तबसतगुरु मुखबोलिया, सुकृतसुनोसुजान ॥
आदि अन्त की पारचै, तोसों कहौं बखान ॥ २ ॥
प्रथमसुरति समरथ कियो, घटमें सहजउचार ॥
ताते जामन दीनिया , सात करी विस्तार ॥ ३ ॥
दूजे घट इच्छा भई, चितमनसातो कीन्ह ॥
सातरूप निरमाइया, अविगत काहु न चीन्ह ॥ ४ ॥
तबसमरथ के श्रवणते, मूलसुरति भै सार ॥
शब्द कला तातेभई, पाँच ब्रह्म अनुहार ॥ ५ ॥
पाँचौ पाँचै अंड धरि, एक एकमा कीन्ह ॥
दुइ इच्छा तहँ गुप्तहैं, सो सुकृत चितचीन्ह ॥ ६ ॥

योगमया यकु कारणे, ऊजे अक्षर कीन्ह ॥
याअविगतिसमरथकरी, ताहिगुप्तकरिदीन्ह ॥ ७ ॥
श्वासा सोहं ऊपजे, कीन अमी बंधान ॥
आठ अंश निरमाइया, चीन्हौ संत सुजान ॥ ८ ॥
तेज अंड आचिंत्यका, दीन्हो सकल पसार ॥
अंड शिखा पर बैठिकै, अधर दीप निरधार ॥ ९ ॥
ते अचिन्त के प्रेमते, उपजे अक्षर सार ॥
चारि अंश निरमाइया, चारि वेद विस्तार ॥१०॥
तब अक्षरका दीनिया, नींद मोह अलसान ॥
वेसमरथअविगतिकरी, मर्मकोइनहिंजान ॥११॥
जब अक्षरके नींदगै, दबी सुरति निरबान ॥
श्यामवरण यकअंड है, सो जलमें उतरान ॥१२॥
अक्षर घटमें ऊपजे, व्याकुल संशय शूल ॥
किन अंडा निरमाइया, कहा अंडका मूल ॥१३॥
तेहि अंडके मुक्खपर, लगी शब्दकी छाप ॥
अक्षर दृष्टिसे फूटिया, दशद्वारे कढ़ि बाप ॥१४॥
तेहिते ज्योति निरञ्जनौ, प्रकटे रूप निधान ॥
काल अपरबल बीरभा, तीनिलोक परधान ॥१५॥
ताते तीनों देव भे, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥
चारिखानितिनसिरजिया, मायाके उपदेश ॥१६॥
चारि वेद षट शास्त्रऊ, औ दशअष्ट पुरान ॥
आशादै जग बाँधिया, तीनों लोक भुलान ॥१७॥

लख चौरासी धारमा, तहँ जीवदिय बास ॥
चौदह यम रखवारिया, चारिवेद विश्वास ॥१८॥
आपु आपु सुख सबरमै, एक अंडके माहिं ॥
उत्पतिपरलयदुःखसुख, फिरिआवहिंफिरिजाहिं १९
तेहि पाछे हम आइया, सत्य शब्दके हेत ॥
आदि अन्तकी उतपती, सो तुमसों कहिदेत ॥२०॥
सात सुरति सबमूलहै, प्रलयहु इनहीं माहिं ॥
इनहीं मासे ऊपजे, इनहीं माहँ समाहिं ॥२१॥
सोई ख्याल समरत्थकर, रहे सो अछप छपाइ॥
सोई संधिलै आइया, सोवत जगहिं जगाइ॥२२॥
सात सुरतिके बाहिरे, सोरह संखके पार ॥
तहँ समरथको बैठका, हंसन केर अधार ॥२३॥
घर घर हम सबसों कही, शब्द न सुनैं हमार ॥
ते भवसागर डूबहीं, लख चौरासी धार ॥२४॥
मंगल उत्पत्ति आदिका, सुनियो संत सुजान ॥
कह कबीर गुरु जाग्रत, समरथका फुरमान ॥२५॥

वस्तुनिर्देशात्मक मंगल।

दोहा-प्रथमै समरथ आपरहे, दूजा रहा न कोय ॥
दूजा केहिविधि ऊपजा, पूंछतहौं गुरुसोय ॥१॥

कबीरजीकी वाणीके अर्थ करिवेकी मोमें सामर्थ्य नहींरही परंतु साहब यह बिचारिकै कि कबीरजीके बीजकको पाखण्ड अर्थलगाइकै जीवबिगरे जायँहैं सो

साहब तो परमदयालु हैं उन को करुणाभई तब कबीरजीको भेज्यो याकहिकै कि आगे हम तुमको भेज्यो हतो सो तुम ग्रन्थबनाइकै बहुत जीवनको उपदेशकरिकै उद्धार कियो सो अब तिहारे ग्रन्थको पाखंड अर्थकरिकै पाखंडी ह्वै कै जीव बिगरे जायँहैं औ बहुत बिगरिगये सो तुमजाइकै जौन अर्थ तुम बीजकमें राख्योहै सो अर्थ विश्वनाथ सों बनवावो जाते सो अर्थ समुझिकै जीव हमारे पास आवैं सो कबीरजी आयकै मोसों कह्यो कि तुम बीजकको अर्थ बनावो हम तुमको बतावेंगे सो उनके हुकुमते मैं बीजकको अर्थ बनाऊंहौं बतावने वाले श्रीकबीरहीजी हैं मोमें ताक़त नहींहै जो मैं बनायसकौं और नाभाजी भक्तमालमें लिख्योहै कि "कबीर कानि राखी नहीं बरणाश्रम षटदरशनी" सो इहां कबीरजी को सिद्धात मत मैं कहौंगो औ सर्वसिद्धांतग्रंथ जो मैं बनायोहै तामें सबको सिद्धांत यथार्थ राख्योहै सो यहां बीजकके तिलक में साहबको औ कबीरजीको हुकुम यहीहै कि एक सिद्धांत रहै जो सबतेपरेहै और सिद्धांत सबखंडन ह्वैजायँ सो सबके सिद्धांतनको खण्ड़न करिकै एक सिद्धात मैं बर्णन करौहौं सो सुनिकै साहब के हुकुमी जानिकै साधुलोग पंडितलोग और और मत वाले जेहैं ते मेरे ऊपर खफा न होयँ प्रसन्न रहैं ना समुझिपरै तौ प्रसन्नहोइकै गुरूसों पूंछिलेइँ अब अर्थ लिखैहैं ।

अर्थ—प्रथम समरथ जे श्रीरामचन्द्रहैं ते आपही हैं दूसरा कोई नहीं रह्यो जो कहौ उनके लोक में तौ हंस हंसिनी सब बर्णन करैहैं उनके पार्षद सबहैं ताको बर्णन निर्भय ज्ञानमें विस्तारते हैं सो इहां संक्षेप तें सूचित किये देई हैं ॥ "सत्य पुरुष निर्भय निरबाना । निर्भय हंस तहँ निर्भयज्ञाना ॥ " इत्यादिक बहुत वर्णन निर्भयज्ञानमें कबीरजी कियोहै तुम एकही कैसे कहौ हौ सो सत्यहै उहांके जीव सनातन पार्षद बने रहैहैं औ साहब औ साहबको लोक सनातन बनो रहैहै परंतु उहांके पार्षदजीव और उहांकी सब बस्तु साहबहीके रूपहै औ सब चिन्मयहै सो वेद कहैहैं ॥ श्लोक॥"सच्चिदानन्दो भगवान् सच्चिदानन्दात्मिकास्यव्यक्तिः॥"औ वह अयोध्या नगरी ब्रह्मके परेहै ब्रह्म वाको प्रकाशहै औ रघुनाथजी के समीप के जे पार्षद हैं ते साहबके स्वरूपहैं तामें प्रमाण ॥ " अयोध्याचपरंब्रह्म सरयू सगुणःपुमान् ॥ तन्निवासीजगन्नाथः सत्यंसत्यंवदाम्यहम् ॥१॥ अयोध्यानगरीनित्यासच्चिदानन्दरूपिणी ॥

यदंशांशेनगोलोकः वैकुण्ठस्थःप्रतिष्ठितः ॥ २ ॥" इति वासिष्ठसंहितायाम् ॥ "देवानांपूरयोध्यातस्यांहिरण्मयः कोशः स्वर्गेलोकाज्योतिषावृतः" इतिश्रुतेः ॥ सो इहां कहैहैं कि प्रथमतौ समर्थ साहब वह लोक में आपही आपहै दूजा कोई नहीं रह्यो दूजा जो रह्यो सो तौ साहबके लोकको प्रकाश चैतन्याकाशमें रह्योहै सो कबीरजीते धर्मदास कहै हैं कि हे गुरूजी मैं तुमसे पूछौंहौं कि साहबके लोकको प्रकाश चैतन्याकाशमें जो समष्टि जीव वह दूजारह्यो सो केहिविधिते उपज्यो संसारी भयो काहेते कि साहबतो दयालुहैं जीवों को संसारते छुड़ाइदेइहैं जीवोंको संसारी नहीं करिदेइहैं औ वह समष्टि जीवके तब मनादिक नहीं रहे शुद्धरह्योहै उपजिबे की सामर्थ्य नहीं रहीहै औ साहब सामर्थ्य दैकै जीवको संसारी करबही नकरैंगे सो दूसरा जो है समष्टिजीव सो उपजिकै व्यष्टिरूप संसारी केहि बिधिते भयो औ जीवके अपने ते उपजिबे की सामर्थ्य नहींरही तामेंप्रमाण ॥ "कर्तृत्वंकरणत्वंचप्रभुभावश्चेतनाधृतिः ॥ तत्प्रसादादिमेसंतिनसंतियदुपेक्षयाइतिपयंगश्रुतेः" १ ॥

दोहा–तबसतगुरुमुखबोलिया, सुकृत सुनोसुजान ॥
आदि अन्तकी पारचै, तोसोंकहौं बखान ॥ २ ॥

गुरू साहबको कहै हैं काहेते सबते श्रेष्ठहैं औ जे यथार्थ उपदेश करै हैं तिनको सतगुरु कहै हैं औ जे अयथार्थ उपदेश करै हैं तिनको गुरुवालोग कहैहैं सो यह बीजक ग्रन्थकी औ अनुभवातीत प्रदर्शनी यहटीका की यह सैली है। तब सतगुरु जे कबीरजी हैं ते मुखते बोले कि हेसुजान हेसुकृत जीव समष्टिते व्यष्टि जेहि प्रकार भये हैं सो सुनो मैं तुमसों आदि अन्तकी परचै कहौ हौं जेहिते तुम जानिलेउ ॥ २ ॥

उत्पत्ति ।

दोहा–प्रथम सुरति समरथ कियो, घटमें सहज उचार ॥
ताते जामन दीनिया, सातकरी बिस्तार ॥ ३ ॥

प्रथम समर्थजे साहब श्रीरामचन्द्रहैं साकेत निवासी दयालु जिनके, लोकके प्रकाशमें समष्टिरूपते यह जीव है ते श्रीरामचन्द्र परमदयालु यह जीवको देखिकै कि कछू बस्तुको याको ज्ञान नहीं है जब यह जीवपर साहबकी दयाभई तब सुरतिमात्र दैकै अपने जानिबेको वाको समर्थ करतभये कि जब याके सुरतिहोयगी तब मोकोजानैगो मैं हंसस्वरूप दैकै अपनेलोक लैआऊंगो । जहां मनमायां कालकीगतिनहींहै तहां सुखपावैगो अबैतो याको सुखको ज्ञानही नहीं है । यह करुणा करिकै वह समष्टिरूप जीवके घटमें सहजही सुरति को उच्चारकरत भये कहे अंकुर करतभये । सो साहबतो अपने जानिबेको सुरतिदियो कि मोंकोजानै औ यह जीव वही सुरति को पाइकै औ मनादिकन को कारण इनके रहबई करै औ शुद्ध रहै दूधरहै जीव अपनी शुद्धता रूप दूधमें जगत्को कारण बनोई रहै तामें वही सुरति को जामन दैदियो सो बिनशिगयो सो वह सुरति पाइकै साहबकेपास तो न गयो जीव बिनशिकै इच्छादिक जे सात तिनको बिस्तार करत भयो। औ यह चैतन्य जीवको सुरति दैकै साहब चैतन्य करैहै। साहब चैतन्यो को चैतन्यहै तामें प्रमाण श्लोक॥ "नित्योनित्यश्चेतनश्चेतनानां॥ द्रव्यंकर्मचकालश्चस्वभावोजीव एवच।यदनुग्रहतःसंतिनसंति यदुपेक्षया इति भागवते॥"औ इच्छादिकन को कौन सात बिस्तार करतभयो सो आगेकैहैं ॥२॥

दोहा– दूजेघटइच्छाभई, चितमन सातौकीन्ह ॥
सातरूपनि रमाइया, अबिगतकाहुनचीन्ह ॥ ४ ॥

जब याको साहब सुरति दीन तब जीवके जगत को कारणमें रामाज्ञान बनोईरहै तेहिते सुरति साहबमें न लगायो जगत् मुख लगायो । जब सुरति जगत् मुखलाग्यो तबप्रथम जगत्को कारण पुष्टभयो विनाशिगयो तेहिते दूसर इच्छा रूप अंकुरभयो तीसर चित्तभयो चौथमनभयो पांचौंबुद्धिभई छठौं अहंकार भयो सातौं अहंब्रह्म कहेअनुभवते भयोजो ब्रह्म ताकोमान्यो कि मैंहींब्रह्महौं सो शुद्धते अशुद्ध ह्वैकै सातबिस्तार करिकै समष्टिरूपजो जीव सो अहंब्रह्मास्मिमान्यो तब याको अनुभव ब्रह्ममाया सबलित भयो, ताहीद्वारा जगत् उत्पन्न भयो, ताहीद्वारा यंहजीवौ उत्पन्नभयो अर्थात् समष्टिरूप जीवको अनुमान जो ब्रह्म सो

इच्छा कियो एकते अनेकंह्वोऊं सो वा अनुमान ब्रह्मसमष्टिजीवकोहै यहिहेतु तें वहसमष्टिजीव एकतेअनेकह्वैगयो । औ फिरि वहसमष्टिरूपजीवको जो अनुमान ब्रह्मसो बिचाऱ्यो कि ई जे अशुद्धरूपजीवात्मा तिनमें प्रवेश कैकै नामरूपकरो याही अर्थमें प्रमाणश्लोक ॥ "सदेवसौम्येदमग्रआसीदेकमेवाद्वितीयं तदैक्षतबहुस्यां अनेनजीवेनात्मनानुप्रविश्यनामरूपेव्याकरवाणिइत्यादिश्रुतयः॥" जो कहो वा सत ब्रह्मजीवको अनुमानकैसेकहैाहीं ब्रह्महीसबभयो ऐसोकाहेनहींकहौहोतौ ॥ "यतो वाचोनिवर्त्तन्तेअप्राप्यमनसासह ॥" इत्यादिक श्रुतिनकरिकैमनबचनकेपरेहैं सत्-नाम कहनोवामें नहीं संभवितहै काहेते वो निर्विकारहै सविकार ह्वैकै एकतें अनेक ह्वैजैबो नहीं सम्भवै या हेतुते यह समष्टि जीवही अपनो अनुमान रूप धोखा ब्रह्मठाटकैकै माया सबलित ह्वैकै तद द्वारा जगत् उत्पन्नकैकै तदद्वारा आपो उत्पन्नह्वैकै समष्टिते व्यष्टिह्वैगये । अविगाति समर्थ जे साहब हैं तिनको ना चीन्हत भये। यह संक्षेप सूक्ष्मरीतिते जो उत्पत्ति भई सो कहिदियो। औ जब जीव साहब के जानिबे को समर्थ भयो तब जैसी उत्पत्ति भई है सो कहैहैं साहब जो सुरति दियो सोतौ अपने में लगायबेको दियो यह संसार में लगायो परंतु जो संसारते खैंचिकै अजहूं सुरति सम्हारै साहब मेलगावै तो साहब के हजूर आठौपहर बनोरहै अर्थात् साहबै सर्वत्र देखपरै संसारदेखिही ना परै तामें प्रमाण कबीर जी को साखी ॥ सुरति फँसी संसार में, तेहिसे परिगा-दूर सुरति बांधि स्थिर करै, आठौपहर हजूर ॥ १ ॥ आगे जौनीतरह ते उत्प-त्ति भई साहबको त्यागि संसारीभयो सुरति पाय काजकरिबेको समर्थभयो तबहूं साहब सारशब्दको उपदेश दियोहै ताको साहबमुख अर्थ ना समुझिकै संसारमुख अर्थ समुझिकै ब्रह्मकी कल्पना कैकै संसार को उत्पन्न कैकै संसारी भयो है यह जीव सो आगे कहैहैं ॥ ४ ॥

दोहा–तब समरथके श्रवणते, मूल सुरति भइसार ॥
शब्द कला ताते भई, पांच ब्रह्म अनुहार ॥ ५ ॥

साहब को दियो सुरति पाइकै समरथ भयो जो समष्टि जीव ताके श्रवण में मूलसुरति जो साहब अपने जानिबे को दियो है सो सार भई कहे रामनाम

रूपते प्रकटभई साररामनामको कहैहैं तामेंप्रमाणसाखी कबीरजीकी ॥ रामैना-भअहैनिजसारू । औसबझूंठसकलसंसारू ॥ १ ॥ साहब जो सुरति दियोहै सो वह सुरतिके चैतन्यताते नामसुन्यो अर्थात् साहबजो याको गोहरायो कि रामनाम-को जपिकै बिचारिकै मोकोजानो तो मैं हंसस्वरूप दैकै अपने पास बुलाइलेउँ सो सुनिकै रामनाममें जगत् मुख अर्थ है ताको ग्रहण कियो औ शब्दमें लगाइ दियो । वही राम नाम लैकै शब्दरूप बाणी उचरीहै सो कबीर जीकी रमैनी में आगे लिख्योहै ॥ " रामनामलै उचरी बाणी " ॥ औ वही रामनाम ते शब्द कलाबाणी होतभई सो पांच ब्रह्म के अनुहार हैं । पांच ब्रह्म कौनहैं ते कहै हैं सोहं, ररंकार, ओंकार, अकार, पराशक्तिरूप र परम श्री कबीर जी के भेदसारग्रन्थ को प्रमाण ॥ " प्रथम शब्द सोहं जो कीन्हा । सबघट माहीं ताकर चीन्हा ॥ ररंकार यक शब्द उचारी । ब्रह्मा विष्णू जपैं त्रिपुरा-री ॥ ओंकार शब्द जो भयऊ । तिनसबही रचना करिलयऊ ॥ शब्दस्वरूप निरंजन जाना । जिनयह कियो सकलबंधाना ॥ शब्दस्वरूपी शक्ति सो बोले । पुरुष अडोल न कबहूं बोलै ॥ ५ ॥

दोहा–पांचौ पांचै अंडधरि, एक एकमा कीन्ह ॥
दुइइच्छा तहँगुप्तहैं, सो सुकृतचितचीन्ह ॥ ६ ॥

ते पचहुंनको पांचअंडकहे पांचस्वरूप बनाइकै एकएकस्वरूपमें एक एक अक्षर राखत भये औ दुइ इच्छाजे प्रथमकहिआयेहैं एक वह इच्छा कारणरूपा जब साहब सुरति दियो है तब जो रहीहै साहब मुख नहीं होनादियो याको बिनाशिकै जगत् मुख कियो औ दूसरी वह सुरति पाइकै जगतमुख होइकै अपने अनुभव ब्रह्मको खड़ाकियो वह ब्रह्म मायासबलित ह्वैगई तौन माया आदिशक्ति गायत्रीरूपा इच्छा । सो ये दोनों इच्छा पचहुंनमें गुप्तहै सो कबीर-जी कहैहैं कि हे सुकृतचित्तमें चीन्हों मैं बर्णन करौहा बिचारिकै देखो ये पच-हुंनमेंदोनों इच्छाहैं कि नहीं ? ये सिगरेब्रह्म जे सारशब्द के जगत्मुख अर्थ ते भये हैं ते माया सबलित हैं कि नहीं ? तुम चीन्हों सो आगे कहै हैं ॥ ६ ॥

दोहा—योग मया यकु कारनो, ऊजो अक्षर कीन्ह ॥
या अविगति समरथकरी, ताहि गुप्त करि दीन्ह॥७॥

कारण रूप सुरति औ योगमाया गायत्री ये जे दुइइच्छा हैं ते वे पांचों ब्रह्मको करती भई सो सर्वत्र तो यह सुनै हैं कि ब्रह्मते सब होइ है औ यहांइनते ब्रह्म होइहै पांचौ, यह बड़ो आश्चर्य है। यह अंबिगति समर्थ जे परमपुरुष श्री रामचन्द्र हैं ते जब सुरति दियो है तब ये सब भये हैं। तिनको गुप्त करि दियो अर्थात् इनहीं पांचौ ब्रह्ममें औ जीवमें नामको अर्थ लगाय दियो है ते पचहुनको बतावैहै ॥ ७ ॥

दोहा—श्वासा सोहं ऊपजे, कीन अमी बंधान ॥
आठ अंश निरमाइया, चीन्हों संत सुजान ॥ ८ ॥

यह सोहंशब्द वह परम पुरुष जो है समष्टिजीव ताके श्वासाते उपज्यो सोई बतावैहै कि, "सोहं कहे सः अहं सो जौह अनुभवगम्यब्रह्मसो मैंहौं" औ वही आदिपुरुष समष्टि जीव श्वासा ते अमीबंधान करतभयो कि इनकी मिठाई पाइकै लोग लोभायजायँ कौन अमी बंधान करत भयो वही श्वासाते आठअंश बनावतभये, कहेआठौ सिद्धि निकासतभये आठौ सिद्धिकेनाम ॥ "अणिमामहिमा चैव गरिमालघिमातथा। प्राप्तिः प्राकाम्यमीशित्ववंवशित्वंचाष्टसिद्धयः ॥" अथवाआठअंश निरमाइया कहे आठ प्रधान ईश्वर प्रकटकियो तेई परम पुरुष समष्टि जीवके मंत्रीभये। तामेंप्रमाण महातंत्रमें महादेवको बाक्य ॥ "कालीचकौशिकीविष्णुः सूर्योहंगणनायकः" ॥ "ब्रह्माचभैइक्योबई छबराइति कीर्तिताः १ यह प्रमाण शतानन्दभाष्य में विस्तार कैकैहै सो हेसंतसुजानौ तुम चीन्हत जाउ वह जोसार शब्द रामनामहै सो साहब समष्टि जीव पुरुषको बतायो सो सुन्यो औ साहबको न जान्यो धोखाब्रह्मरूप आपह्वैकै वाको औरई जगद्रूप अर्थ निकासिलियो। औ वह जो सोहं शब्द प्रकटभयो सो संकर्षणहै काहेते कि, सोहंशब्द जीवमें घटित होइहै कि, वह जीव जोहै सोई बिचारकैरै है कि, सो जोहै ब्रह्म सो अहंकहे मही हौं एक और दूसरो कोई नहीं है।

सो उन्हीं को आदिपुरुष औ बिराट् औ हिरण्यगर्भ कहैहैं औ सहस्रशीर्षापुरुष कहैहै । औ ई समष्टिरूपजीव पुरुषहै सोवही समष्टिरूपते संकर्षण स्थूलरूप धारणकारिकै प्रकट भयो । "सबको आकर्षण करिकै एकहैरहै ताकोसंकर्षण-कही समष्टि जीव" काहेते महाप्रलयमें जबजीव समष्टिजीवैमें रहे हैं औव्यंजन मकार पचीसौबर्णहैं सोजीव बाचकहै ताको अर्थ समष्टिजीवरूप संकर्षण समुझ्यो औ रामनामकी जो मकार है सोतौ बर्णातीतहै पचीसौ बर्ण नहीं है । रामनामके व्यंजन मकार में संकर्षणके अंशी जे हैं लक्ष्मण तिनको अर्थ न समुझ्यो वहांपांच ब्रह्म कहि आये हैं सो इहां एकब्रह्मकी औ रामनामके एकमात्राकी प्राकट्य भई ॥ ८ ॥

दोहा–तेजअण्ड आचिन्त्यका, दीन्होसकलपसार ॥
अण्डशिखापर बैठिकै, अधर दीप निरधार ॥ ९ ॥

अचिन्त्यजो है रामनाम ताकोतेज अंडजोहै रामनामको रेफ तौने रेफको अर्थलैकै सर्वत्र पसराइ दियो अर्थात रेफ अर्धमात्रा को अर्थ पराआद्याशक्ति ब्रह्मस्वरूपासमुझ्यो सोसब जगत्मेंपसराइदियो वहीमाया ते संपूर्ण जगत् होतं भयो सो वह पराआद्या शक्ति अंडजोहै ब्रह्मांड ताकी शिखापर बैठिकै अधरदीप कहे नीचे के ब्रह्मांडनको निरधारकहे प्रकाशकारिकै निर्माण करत भई सो वहीको योगीलोग ब्रह्मांडमें प्राण चढाइकै वही ब्रह्म ज्योति को ध्यानकरैं हैं औ वही ज्योति में जीवको मिलावैहैं । औ रेफ पद वाच्य ते श्री जानकी जी हैं सो अर्थ न समुझ्यो इहां दूसरे ब्रह्मकी प्राकट्य भई ॥ ९ ॥

दोहा–ते अचिन्त्यके प्रेमते, उपज्यो अक्षर सार ॥
चारिअंशनिरमाइया, चारिवेदविस्तार ॥ १० ॥

तौन जो अचिन्त्यरामनाम ताकेप्रेमते कहे जब वामें प्रेमाकियो कि याको समुझै कहा है तब रामनाममें जो है रकार तेहिमें जोहै लघुअकार तौनेके शक्तिहू अक्षर सार जो है, रामनाम सो प्रणवरूपते प्रकटहोतभयो ताहीको शब्दब्रह्मरूप करिकै समुझतभये तौनेप्रणवकीचारि मात्राहै अकार उकार मकार बिंदुते एकएक मात्रा ते एकएक

वेदभये सो चारि वेदहोत भये औ सबते परे जे श्रीरामचन्द्रहैं रकारार्थ तिनको न समुझतभये सो याहीमें एकाक्षरौ ब्रह्मकी औ शब्दहू ब्रह्मकी प्राकट्यभई सो इहां तीसरे ब्रह्मकी प्राकट्यभई १ वहांरकारके अकार को अर्थकरिआयो यहांर-कारार्थ श्रीरामचन्द्रको कहौहौ यहकैसे सोरेफवाच्यते जानकी सो श्रीरामचंद्रते बिलग नहीं होयहै याही अभिप्रायते लघुरकारकी जो अकार तौनेके रेफतेसहितै कह्योहै रकारवाच्य श्रीरामचन्द्र को लिख्यो याही प्रमाणके अनुरोधतें वोहू रकारवाच्य श्रीरामचंद्रको लिखिदियो सीताराम बिलग नहींहोयहैं तामें प्रमाण॥ " अनन्याराघवेणाहं भास्करेण प्रभायथा" वा जानकीको बचनहै ॥ "अनन्याहिं मयासीताभास्करस्यप्रभायथा॥" ये श्रीराम के बचन हैं याही अभिप्राय ते कबीरजी जानकी को बर्णन नहींकियो श्रीरामहीके बणन ते जानकी आईगई काहेतें सीताराम में अभेद है तामें प्रमाण ॥ "रामःसीताजानकीरामचंद्रो नित्याखंडो-येचपश्यंतिधीराः इतिश्रुतिः" ॥ १० ॥

दोहा–तव अक्षरका दीनिया, नींद मोहअलसान ॥
वेसमरथअविगतिकरी, मर्मकोइनाहिंजान ॥ ११ ॥

तब योगमाया, अक्षर कहे जो एकाक्षर ब्रह्म प्रणव तत्प्रातिपाद्य जो ईश्वर प्रकट भयो जो जीव, ताको नींद मोह आलस्य देत भई । औ प्रवण औ वेदनतें पृथ्वी अप तेज वायु आकाशादिक सब जगत् प्रकट भयो । औ ताही प्रवण वेद नते सब जीवनके नामरूप शुभाशुभ कर्मादिक सब बस्तु प्रकट भई अर्थात् वेदही में सब वर्णित है औ सब के नाम रूप वेदही ते निकसे हैं सो प्रणव रकारही ते प्रकट भयोहै औ सब अक्षर प्रकट भयेहैं ताही ते सब वेद भये हैं याही हेतु ते प्रणव औ वेदहू अविगति समर्थ जे श्री रामचन्द्रहैं तिनकी माहिमा करीकहे कही । जो वेद तात्पर्य्य करि कै बतावैहैं तौनेको मर्म कोई न जानत भयो औ प्रणव तात्पर्य करिकै श्रीरामचन्द्रही को कहैं हैं सो अर्थ तापिनिका प्रमाण दै कै लिख्यो है सो मेरे रहस्यत्रय ग्रन्थ में है सो प्रणवअक्षर वेद सब रामनामही ते निकसे हैं सो मेरे मन्त्रार्थमें प्रकटहै ॥ ११ ॥

दोहा—जबअक्षरकेनींदगई, दबीसुरतिनिर्वान ॥
श्यामबरणयकअण्डहै, सोजलमेंउतरान ॥ १२ ॥

योगमाया में सोय रहे अक्षर कहे नाशरहित जे नारायण तिनको जब योगमाया जगायो नींद गई तब उनको निर्वाण सुरति देत भई । काहेते ई जे हैं नारायण तिनको निर्वाण रूप कहे निराकार रूप कैकै अंतर्य्यामी रूपते सबके भीतरदबाइ देत भई अर्थात् चेष्टारहित दिव्यगुणविशिष्ट सर्व्वत्र-व्यापक अंतर्य्यामी तत्त्वरूप जे निर्वाण नारायण तिनको सबके अन्तर दबाइ देत भई कहे सबके अन्तर्य्यामी करि देत भई तेई प्रकट होतभये । श्यामवर्ण अण्ड कहे चतुर्भुज रूप धारण करिकै जल में उतरान कहे जल में रहतभये । सो इनके शरीरमें शरीर जे हैं निराकार नारायण तिनको नित्य सम्बन्ध होतभयो । सो रकारमें जोहै अकार ताको नारायण अर्थ करत भये औ भरतबाची जो है अकार सो अर्थ न समुझत भये यहां चौथे ब्रह्म की प्राकट्य भई ॥ १२ ॥

दोहा—अक्षरघटमेंऊपजै, व्याकुलसंशयशूल ॥
किनअण्डानिरमाइया, कहाअण्डकामूल ॥ १३ ॥

अक्षर जे नारायण हैं तिनके घटते ऊपजे अर्थात् तिनकी नाभि में कमल होइ है तेहिते ब्रह्मा होइहै ते ब्रह्मा सब जगत् करै हैं तब समष्टि जीव शुद्ध ते अशुद्ध ह्वै कै ब्रह्मा ते उत्पन्न ह्वैकै बहुत शरीरधारण करैहैं ते ब्रह्म जब उत्पन्नभये तब व्याकुलभये औ संशय करतभये कि कहां अण्डका मूलहै औ को अंडाको बनायो है औ हम कहांते उत्पन्नभये हैं सो खोज्यो खोजे ना पायो तब तपस्या करत भयो तब नारायण प्रकटभये ते ब्रह्मा ते कह्यो कि तुम जगत् की उत्पत्ति करौ यहकथा पुराणन में प्रसिद्धहै ॥ १३ ॥

दोहा—तेही अण्डके मुख पर, लगी शब्दकी छाप ॥
अक्षरदृष्टिसे फूटिया, दश द्वारे कढ़िबाप ॥ १४ ॥

तैने ब्रह्मरूपी अण्डके मुखपर शब्दकी छाप लगी अर्थात् शब्द ब्रह्म जो वेदसार ताको नारायण बताय दियो । तौने को ब्रह्मा जपत भये तब वाहीते

प्रकटे जे चारोंवेद ते ब्रह्मा के चारिउ मुखते निकसतभये । तौने वेदनको अक्षर जो समष्टि जीव है सो जगतमुख दृष्टि कियो अर्थात् जगत्मुख अर्थ देख्यो तब द्वारे ह्वैके " वह मायाते सबलित जो है ब्रह्म जाको आगे बाप कहि आये हैं जो शुद्धते अशुद्ध जीवन को कैकै उत्पन्न करै है " सो दश द्वारेते कहे दशौ इन्द्रिनते कढ़त भयो । तब इन्द्रिन के विषय ह्वैकै इन्द्री ह्वैकै चिदंश ह्वैकै चिदचिदात्मक जगत् होत भयो अर्थात् वेदन को अर्थ जब जगतमुख देख्यो तब वह जीव चिदचिदात्मक जगत्को धोखा ब्रह्महो देखत भयो । सो जगत् तौ साहब के लोक प्रकाश को शरीरहै, तौने को वेदार्थ करिकै धोखा ब्रह्महो देखत भयो यही धोखा है तात्पर्य कैकै वेद जो साहब को कहै है ताको न जानत भये । लघु रकार की अकार ते नारायण भये तिनते ब्रह्मा की उत्पत्ति भई सो कहि आये । अरु वहि ते जेतो जगत् के उत्पन्न को प्रयोजन रह्यो सो कहि गये । अब फेरि सिंहावलोकन करिकै पंचम ब्रह्म की प्राकट्य कहैहैं ॥ १४॥

दोहा-तेहिते ज्योति निरंजन, प्रकटे रूप निधान ॥
काल अपरबल बीरभा, तीन लोक परधान॥१५॥

तेहिते कहे वही रामनामते व्यञ्जन मकारको जो अर्थकरि आये हैं तामें जो अकार रही है ताको महाविष्णु अर्थ करतभये । जे विरजा के पार पर बैकुण्ठ में रहे हैं । जिनके अंशते रमा वैकुण्ठवासी भगवान् भये हैं । सो अंजन जो अविद्या माया ताते वे रहित हैं काहेते कि, अविद्या माया विरजा-के यही पार भर बनतहै । पै पुराणादिक में सो व्यञ्जन मकार की अकार-को महाविष्णु अर्थ करत भये, औ वह अकार शत्रुघ्नबाचक है सो अर्थ न स-मुझत भये । ते अकाररूप महाविष्णु ते महाकाल अपरबल बीरभा कहे जे-हिते प्रबल बीर कोई नहीं है अथवा अकार जे विष्णुहैं तेई हैं परमबल जि-नके सो तीनलोक में प्रधान होत भयो । इहांपाँचों ब्रह्मकी प्राकट्य ह्वैगई ॥ १५ ॥

दोहा-ताते तीनों देवभे, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥
चारि खानि तिन सिरजिया, मायाके उपदेश॥१६॥

तौने कालते कहे वही कालमें काल पाइकै एकएक ब्रह्माण्डमें तीनतीन देवता ब्रह्मा विष्णु महेश उत्पन्नहोतभये सो कोटिन ब्रह्मांण्डनमें कोटिन ब्रह्मादिक भये ते माया के उपदेश ते कहे मायाको ग्रहणकरिकै संसारमें चारिखानि जे जीव हैं तिन को सिरजिया कहे उत्पत्ति करतभये सो उत्पत्तिको क्रम ब्रह्मोत पहिले कहिआये हैं ॥ १६ ॥

दोहा—चारिवेद षट्शास्त्रऊ, औ दशअष्ट पुरान ॥
आशा दै जग बाँधिया, तीनों लोक भुलान॥१७॥

चारोंवेद, छवोंशास्त्र औ अठारहौ पुराणमें मायाजो है सो औरई और फलकी आशा बताइकै औरई और नाना मतन में लगाइदियो और संपूर्ण जगत् मुख अर्थकरिकै जगतको बांधिलियो । साहबको भुलाय दियो ये सब तात्पर्य कैकै साहबको कहैहैं सोसाहबको न जानन पाये । ताते तीनों लोकके जीव भुलायगये ॥ १७ ॥

दोहा—लखचौरासी धारमा, तहां जीव दियबास ॥
चौदह यम रखवारी, चारिवेद विश्वास ॥ १८ ॥

चौरासीलाख जो योनिहैं सोईहैं धारा ताहीमें जीवको बास देतभये कहेवही चौरासीलाख योनिरूपी धारामें सबजीव बहे जाईहैं अर्थात नानारूप धारण करैहैं सो चारिवेदके विश्वासते कहे चारिवेदके मतते नानामतहोतभये ॥ “ शतिलेत्वंजगन्माता शतिलेत्वंजमात्पिता ॥ ” इत्यादिक नानादेवतनकी उपासनागुरुवालोग बतावत भये । वेद जो तात्पर्य्यकरिकै बतावै है साहब को सो अर्थ न जानतभैये। औ चौदह यम जीवकी रखवारी करत भये यहजीव निकसिकै साहबके पास न जानपाये। चौदह यमके नाममें प्रमाण ज्ञानसागरको॥दुर्गदचित्रगुप्तबरियारा । ईतोयमके हैं सरदारा ॥ मनसा मल्लअपरबल मोहा।कामसैनमकरन्दी सोहा॥चितचंचल औ अंधअचेता।मृतकअंधजोजीतैखेता ॥ सूर सिंह औरो क्रमरेखा । भावीतेजकालकापेखा ॥ अघनिद्रा औ क्रोधितअंधा । जेहिमाजीवजंतुसबबंधा ॥ परमेश्वर परबल धर्मराजा । पाप पुण्यसबते भलछाजा ॥ यह सब यमैं निरंजनकीन्हा । लिखनीकागदरचिकै दीन्हा ॥ १ ॥ ”

अर्थ-"प्रथम दुर्गंद कहैं हैं दुर्गकहावै कि जो कोई पुण्यकरैहै ताको स्वर्गदैके पुण्यभोग करावैहै औ जो पापकरैहै तिनको नरकनमें पापको भुगताइकै किला-रूपी जो है शरीर सो जीवकोदेयहै याते दुर्गंद यम एक १ औ दूसर चित्रगुप्त जे कर्मनके लेखाकरैहै२तीसर मलिनमन ३ औ चौथ मोह४औपांचौ कामं काल-की सेनाका मकरन्दीकहे बसंतते सहित ५ औछठौअंधअचेत जोहै चित्त सो ६ औ सातौंमृत्यु भई जोखेतको जीतैहै कहैसबको मारैहै ७ औ आठोंसूरकहे अंधा अर्थात् अशुभकर्मकी रेखा ८ औ नवों सिंहकहे समर्थ शुभकर्मकी रेखा ९ औ दशौं यमभावी जो कालको पेखाहै कहे जो कर्म होनहारहै सो काल करिकै होइहै अर्थात् कालकी अपेक्षा राखैहै १० औ ग्यारहौं अघकहे पापरूपनिद्रा ११ औबारहौंअंधको देनवारो क्रोध जामें सबजीव जंतु बँधेहैं१२तेरहौं प्रबल परमेश्वर रमाबैकुण्ठवासी विष्णु जेशुभाशुभ फलके दाताहैं १३ औचौदहौं धर्मराज यज्ञपुरुष १४ ये चौदहौं यमनिरंजन(जो आगे कहि आयेहैं विरजापार विष्णु)की सत्ता विना ये सब जड़है कार्य नहीं करि सके हैं वोई लिखनी कागद देहहैं ॥ १८ ॥

दोहा-आपु आपुसुखसब रमै, एकअण्डके माहिं ॥
उत्पातिपरलयदुखसुख, फिरिआवैंफिरिजाहिं॥१६॥

एक अंडजोहै ब्रह्मांड तौनेमें जीव अपने अपने सुखकेलिये सबरमैहैं कोई मानैहै कि हम जीवात्माहैं, कोई मानैहै कि हम ब्रह्महै, कोई मानैहै कि हम ईश्वरहैं, कोई मानेहै कि हम देवताहैं,कोई मानैहै कि हम सेवकहैं,कोई मानेहै कि शरीरभर सबकुछहै, आगेकछू नहीं है सो विषयही सुख करिलेइ, कोई यज्ञादिक करिकै स्वर्गको सुखचाहै है, औकोई यशचाहै है कि अपने स्वस्वरूपको प्राप्तहोयँ तौ हमको अक्षयसुखहोय । सो जिन जिन मतन करिकै जौनजौन स्वस्वरूपई मानैहै तेइनके स्वस्वरूप नहीं है ये अच्छे सुख काहेको पावै तेहिते ईनके जनम मरण न छूटत भये,उत्पत्ति प्रलयमें दुःख सुखको प्राप्तहोई है औफिरि आवै है फिरि जाईहै ककार चकार आदिक जे वर्ण हैं तिनमें बुन्दार्थ चंद्रदेइ तब सानुनासिक ताकी एकमात्रा रामनाममें औरहै सोयाके अर्थ हंसस्वरूपहै सो साहबदेइहै सो नासमु झो प्राकृतनानाजीवरूप आपनेको मानिकै नानामतनमें लागिकै संसारीह्वैगये औ

रामनाममें छामात्राहै तामें प्रमाण ॥ रामनाममहाविन्धे षड्भिर्वस्तुभिरावृतम् ॥ जीवब्रह्ममहानादैस्त्रिभिरन्यंवदामितें ॥ स्वरेणअर्धमात्रेणदिव्ययामाययापिच ॥ इतिमहारामायणे ॥ और रामनामको जो अर्थ भूलिगये हैं तामें प्रमाण सब मुनिन को भ्रमभयो श्रुतिनको प्रमाणदै कोई कहै हमारोमत ठीक है कोई कहै हमारो मत ठीक है । तब सब मुनि वेदन ते पूछचो जाइ । वेदहू विचारेउ कि सबमें तौ हमारही प्रमाण मिलैहै सोबेदहूको भ्रमभयो । तब सबमुनि औ वेद ब्रह्माके पासगये । तबब्रह्मा ते पूंछचो तब ब्रह्मौके भ्रमभयो कि, साँच मत साँच साहब कौन है । सो महादेवजी पार्वती जीते कहै हैं कि, तब सबकोई साहब श्रीरामचन्द्रको ध्यान कियो तब साहब कह्यो कि यह बात सबके आचार्य जे संकर्षण है ते जानैहैं तिनके पास सबको पठै देहु वे समझाय देयँगे । तब ब्रह्मा की आज्ञाते सब संकर्षण रूप शेषके इहांगये सो वेद उहां पूंछचो, संकर्षण ते, तब संकर्षण जी एक सिद्धांत जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनको बतायो है राम नाम को यथार्थ अर्थ तौन सदाशिवसंहिता के ये श्लोक हैं ॥

"रामनाम्नोऽथमुख्याथभगवत्स्वेतप्रतिष्ठितम् ॥ विस्मृतंकंठमणिवद्वेदाश्शृणुततत्त्वतः १ तात्पर्य्यवृत्त्याविज्ञेय बोधयामिविभागतः ॥ रामनाम्निशुचिर्ज्ञेयाः षण्मात्रांतत्त्वबोधकाः २ रामनाम्निस्थितोरेफोजानकीतेनकथ्यते ॥ रकारेणतुविज्ञेयःश्रीरामः पुरुषोत्तमः ३ आकारेणतथाज्ञेयोभरतोविश्वपालकः ॥ व्यंजनेनमकारेण लक्ष्मणोऽत्रनिगद्यते ४ ह्रस्वाकारेणनिगमाःशत्रुघ्नःसमुदाहृतः ॥ मकारार्थोद्विधाज्ञेयःसानुनासिकभेदतः ५ मोच्यतेतेनहंसावैजीवाश्चैतन्याविग्रहाः॥ संसारसागरोत्तीर्णापुनरावृत्तिवर्जिताः ६ दास्याधिकारिणःसर्वेश्रीरामस्यमहात्मनः ॥ एतत्तात्पर्यमुख्यार्थोदन्यार्थोयोनभूपते ७ सोऽनर्थइतिविज्ञयेःसंसारप्राप्तिहेतुकः ॥ इतिसदाशिवसंहितायांविंशाध्यायेवेदान्प्रतिशेषवचनम् ॥ सो जौननाम साहब बतायो ताके औरई औरअर्थकरिकै जीव संसारीह्वैगयेसाहबकोनजान्यो ॥ १९ ॥

दोहा—तेहि पाछे हम आइया, सत्य शब्द के हेत ॥
आदिअन्तकीउतपाति, सोतुमसोंकहिदेत ॥ २० ॥

इहां कबीर जी कहै हैं कि तेहिंपीछे कहे जब संसारकी उत्पत्ति ह्वैगई औ जीव नाना दुःख पावन लगे तब साहिब जे दयालुहैं तिनके दयाभई कि हमतो अपने नामको उपदेशकियो कि हमारे रामनाम को जो यह अर्थ लक्ष्मण जानकी हम भरत शत्रुघ्न हमारे हंसरूप पार्षद तिनको जानिकै हमारेपास आवै औये सबजीव संकर्षण आद्यापराशक्ति शब्दब्रह्म नारायण महाविष्णु जीव इनके पक्षमें रामनामकी छवोमात्रा लगाइकै औरे औरे मतनमें लगिके संसारी ह्वै कै नानादुःख पावन लगे। तब रामनाम को यथार्थ अर्थ बतावनको हमको भेज्यो सो हम सारशब्द जो है रामनाम ताको सत्यकहे सांच जो अर्थहै ताके बतावनके हेतु आये सो आदि अंतकी उत्पत्ति हम तुमसे कहे देयहैं। आदिकौन है जोयह उत्पत्ति ह्वै आई संसारभयो औअंतकौन है जो हम रामनामको सांचअर्थ बतायो सो अर्थ समुझिलेइ साहबके पासजाय वाको संसारको अंत ह्वैजाइ है। फिरि संसारमें नहीं आवैहै। सो यह आदिअंतकी उत्पत्ति हमतुम सों कहिदियो कि यहिभांतिते जगत्की उत्पत्ति होयहै जीवसंसारी होइहैं औयहि भांतिते जब रामनामको सांचअर्थ जानै है तब संसारको अंत ह्वै जाइहै ॥२०॥

दोहा—सात सुरति सब मूलहै, प्रलयहु इनहीं माहिं ॥
इनहीं मासे ऊपजै, इनहीं माहिं समाहिं ॥ २१ ॥

इहांमंगलको उपसंहारकरैहै सबकीमूल सातसुरतिजे प्रथम वर्णन करि आयेहैं सो वेतो सोई सुरति स्थूलरूप सात रूपते प्रकटभईहै सातकौनहै; इच्छा एकयोगमाया एकजगतको अंकुरकारणरूपा औ पांचौब्रह्मरूपा येई सातौसबकेमूलहैं इनहींते उपजैहैं इनहीं ते प्रलय ह्वैजायहै कहे नाशह्वैजायहै औ इनहींमें पुनिसमाइहै सातो सुरतिमें प्रमाण साखी शंकरगुष्टकी ॥ "निरअंजनअक्षर अचित वोहंसोहंजान ॥ औपुनिमूलअँकूरकहि सात सुरति परमान" ॥ २१ ॥

दोहा—सोई ख्याल समरत्थ कर, रहेसो अछप छपाइ ॥
सोई संधिलै आयउ, सोवत जगहि जगाइ ॥ २२ ॥

सो समष्टिजीव अपनेको समर्थ मानिकै साहबको न जानि कै यह ख्याल करतभयो अछपकहे रामनामके अर्थमें साहब न छपे रहे औ सर्वत्र पूर्णरहे सा-

हबके सब सामग्री साहबकोलोक साहिबैको रूपवर्णन करिआये हैं । जो साहबके लोकको प्रकाश सर्वत्रपूर्णरहा तौसाहब पूर्णईरहे सर्वत्र सो जीव रामनाम को और और अर्थ करिकै और और मतनमें लग्यो तेहिते साहब छपायगये साहबको जीव न जानतभये । सो तौनै संधिलैकै मैं आयों कि जीवते "संधि कहे बीच" परिगयो है, रामनाम को सांच अर्थ भूलिगयो सो जौने संसारमें यह सोवै है तौनी जगह में आयो कि मैं याको सोवत ते जगाय देहुं कि, जौने २ मतनमें तुम लगेहौ सो रामनाम को अर्थ नहीं है, येसंसारके देनवारे हैं, तुम संसारी ह्वैगये, सब स्वप्न देखौ हौ, वह अर्थ नाम को मिथ्या है, तुम जागिकै रामनामार्थ जे साहब हैं तिनको जानौ ॥ २२ ॥

दोहा–सात सूरतिके बाहिरे, सोरह संख्यके पार ॥
तहँ समरथको बैठका, हंसनकेर अधार ॥ २३ ॥

साहब कैसेहैं कि सात सूरतिजे कहिआये तिनके बाहिरहैं औ षोड़शकला जीवको छान्दोग्य उपनिषद्में तत्वमसिके पूर्वलिख्योहै सोइहां कहे हैं कि सोरहसंख्यके कहे सोरहसंख्यक जे जीवहैं अर्थात् षोड़शकलात्मक जे समष्टि जीव जे लोकके प्रकाशमें रहैं हैं शुद्धरूप तिन के साहब पार हैं सो जहां सोरह संख्यकहे षोड़शकलात्मक जीवहै तिनके पार वह लोक साहब कोहै तहां समर्थ जे साहबहैं तिनको बैठकाहै कहे वहीलोक में रहैहैं । समर्थ जो कह्यो सो समर्थ साहिबही हैं जीव समर्थ नहीं है उन्हींके किये जीव समर्थ होइहै यह आपको झूठही समर्थ मानिलियो है याही हेतुते जीव संसारी भयो है । सो हंसन के आधार तो परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहीहैं तेहिते जब हंसरूप पावै तब साहब के पास वह लोकमें बसै जाय ॥ २३ ॥

दो०–घरघर हमसबसों कही, शब्द न सुनैं हमार ॥
ते भवसागर डूबहीं, लख चौरासीधार ॥ २४ ॥

सोकबीरजी कहैहैं कि घर २ हम सब सों बातकही हमारो कह्यो सांच शब्द को अर्थ कोई नहीं समुझैहै नासुनै है ते संसाररूपी सागरके चौरासीलाख योनि जो हैं धारा तामें डूबिजायहैं ॥ २४ ॥

दो०—मङ्गलउतपतिआदिका, सुनियो संतसुजान ॥
कह कबीरगुरुजाग्रत, समरथकाफुरमान ॥ २५ ॥

सो आदिकी उत्पत्तिका मङ्गल हमयह कह्योहै सो हेसंतसुजानौ सुनत जाइयो। हम आपनो बनायकै नहीं कह्योहै हम यह मङ्गल गुरुकहे सबते श्रेष्ठ औ तीनों-कालमें जाग्रत कहे ब्रह्ममनमायादिकनकेभ्रमतेरहित ऐसेजे समर्थ सत्यलोकनिवासी श्रीरामचन्द्रहैं तिनको फुरमान कहे उनके हुकुमते मैं कह्यों है औ सबके पर साहबहैं औ साहबकोलोकहै तामेंप्रमाणआदिबाणीकोशब्द ॥ "बलिहारी अपने साहबकी जिन यह जुगुति बनाई। उनकी शोभाकेहि बिधि कहिये मोसों कही न जाई ॥ बिनाज्योतिकी जहँ उजियारी सो दरशे वहदीपा। "निरते हंसकरैंकौतूहलवोहीपुरुषसमीपा ॥ झलकै पदुम नाना विधिवानी माथे छत्रविराजै। कोटिनभानु चन्द्रतारागण एक फुचारियन छाजै ॥ करगहिबिहँसि जबैमुखबोलैतबहंसा सुखपावै। वंशअंश जिन बूझ बिचारी सो जीवनमुकतावै। चौदहलोकवेदकामण्डल तहँलगकालदोहाई। लोक वेद जिन फंदाकाटी ते वह लोक सिधाई ॥ सोतशिकारी[1] चौदहपारथ[2] भिन्नभिन्ननिरतावै। चारिअंशा[3]जीनसमुझि बिचारी सोजीवन मुकतावै ॥ चौदहलोक बसै यम चौदह तहँलगकाल पसारा। ताके आगे ज्योति निरंजन बैठे सुन्नमझारा ॥ सोरहखंड[4] अक्षरभगवाना जिनयह सृष्टिउपाई। अक्षरकला सृष्टिसे उपजी उनही माहँ समाई ॥ सत्रहसंख्यपर[5] अधरदीप जहँ शब्दातीत बिराजै। निरतैसखी बहूबिधि शोभा अनहदबाजाबाजै॥ताकेऊपर परमधामहै मरम न कोईपाया। जोहमकहीनहीं कोउमानै ना कोइ दूसरआया ॥ वेदनसाखी सब जिउअरुझेपरमधामठहराया। फिरि फिरि भटकै आपचतुरह्वै वह घर काहु न पाया ॥ जोकोइहोइ सत्यका किनका सोहमका पतिआई। औरन मिलैकोटि करथाकै बहुरिकालघरजाई॥ सोरहसंख्यकेआगे समरथ जिनजग मोहिं पठवाया। कहैकबीर आदिकीबाणीवेद भेद नहिंपाया" ॥ २५ ॥

---

१ सात सुरति। २ चौदह यम। ३ चारवेद। ४ सोरह कलाजीवकी। ५ सत्रहतत्व सूक्ष्म शरीरके।

अथ षट लिंग वर्णन ।

"उपक्रमोपसंहारावभ्यासोपूर्वता फलम्: ॥ अर्थवादोपपत्तिश्चलिंगंतात्पर्यनिर्णये" उपक्रमउपसंहार अभ्यास अपूर्वता फल अर्थबाद उपपत्ति इहांबस्तु तात्पर्यके बर्णनमें लिंगकहे बोधकहै ॥ उपक्रम उपसंहार को लक्षण यह है "प्रकरणके विषे प्रतिपाद्य जोबस्तु ताको आदिअंतके बिषयजोहै बर्णनसो उपक्रम औ उपसंहार कहावै" १ औ प्रकरणके बिषे प्रतिपाद्य जो है बस्तु ताको फेरि फेरिजोहै वर्णन सोअभ्यास कहावैहै २ औ प्रकरणकेबिषे प्रतिपाद्य जो है बस्तुसो औरै प्रमाणकरिकैबर्णनमें न आवै सोकहावै अपूर्बता ३ प्रकरणके बिषे प्रतिपाद्य जो है बस्तु ताकेज्ञानैकरिकै ताकी जोहै प्राप्ति सो कहावै फल ४ औ प्रकरणमें प्रति पाद्यजोहै बस्तु ताकीजोहै प्रशंसा सो कहावै अर्थबाद ५ औ प्रकरणमें प्रतिपाद्य जो है वस्तु ताकोदृष्टांतकरिकै फेरिजोहै प्रतिपादन सोकहावै उपपत्ति ॥ ६ ॥

इहांकबीरजीके बीजककेप्रकरणकेआदिमें औ आदिमंगल में कहाहै कि शुद्ध जीव साहबके लोकके प्रकाशमें पूर्णरहै है जब साहब सुरति देइहै तब जीव उत्पन्नहोयहै यह जीव शुद्ध है साहब को है मन मायादिक यामें नहीं है ये बीचहीते भयेहैं । मनमायादिकको कारण यामें बनोरह्योहै तातेसाहबमें नालगेसंसारमुख ह्वैगये । जब श्रीरामचन्द्रकीप्राप्ति होई तबहीं शुद्धजीवहोइ । सो साहब हटक्यों सो नामान्यो मन माया ब्रह्म में लागिकै संसारी ह्वै गयो । (जीवरूप यक अंतरबासा । अंतर ज्योति कीनपरकासा १ इच्छारूप नारि अवतरी । तासु- नाम गायत्रीधरी) २ यहउपक्रम वाक्यहै । औ पदन के अंतमें बिरहुलीहै ॥ (बिषहरमंत्र न मानबिरहुली । गाडुरी बोलै और बिरहुली ॥ बिषकी क्यारीबोयो बिरहुली । जन्म जन्म अवतरे बिरहुली ॥ फल यक कनइल डाल बिरहुली । कहैं कबीर सचुपायबिरहुली । जो फलचाखहु मोर बिरहुली १) सोबिरहुली में यहलिख्यो है कि तुम तौ प्रथम शुद्ध रह्यो

१ सर्वज्ञ पुरुषोंके लिखे जितने ग्रन्थ हैं सबमें षट्लिङ्ग अवश्य होतेहैं और यह ग्रन्थ सर्वज्ञ सत्यगुरु कबीरसाहब विरचितहै इस कारण षट्लिंग का स्वरूप प्रदर्शित करते हैं ॥

है तुमहीं मनमायादिकन को बनायकै फँसि गयेहौ यह उपसंहार भयो। औ साखिन के आदिमें यह साखीहै। (जहियाजन्म मुकताहता तहिया हता न कोय। छठीतिहारी हौं जगा तू कहँचलाबिगोय) १ औ एक पोथीके अंतमें यह साखीहै। (जासोंनाताआदिकाबिसरिगयोसोठौर। चौरासीकेबशपरेक-हतऔरकेऔर) १ सोयेहूमेंवहीबातहैऔदूसरी पोथीकेअंतमेंयहसाखीहै॥ (धोखे २ सबजगबीता द्वैतअंगकेसाथ। कहै कबीर पेड़ जोबिगरचो अबका आवैहाथ १) सोयहूमेंवही बातहै। औ अट्ठाइस साखी कौनिऊं पोथीमें औरहैं ताते दुइसाखी अंतकी लिख्यो है यह उपक्रम उपसंहारभयो १। औरप्रकरणमें यहहै कि श्रीरामचन्द्रको जब जीवजानै तबछूटै सोग्रन्थभरे-मेंबारबार यहीउपदेशहै॥ (लखचौरासी जीव योनिमें भटकि भटकि दुखपावै कहैं कबीर जोरामहिजानै सो मोहिंनीकेभावै १ राम बिन नरह्वैहौ कैसा। बा-टमांझ गोबरौरा जैसे २) इत्यादिक बहुतवाक्यहैं याते अभ्यास भयो। औ सगुण जेहैं ईश्वर परमेश्वर अवतार अवतारीसब निर्गुणजोहै ब्रह्मजौन मनबचनकेपरे है ताहूतेपरे नित्यसाकेतरासविहारी रामचन्द्रहैं यह अपूर्वताभई॥ "अवधू छोड़हु मन विस्तारा। सोपदगहौजाहिते सद्गति पारब्रह्मतेन्यारा॥ नहीं महादेव नहीं महम्मद हारिहजरत तवनाहीं। आदम ब्रह्मनहिं तवहोते नहीं धूपनहिं छाहीं॥ असिसिहसपैगम्बर नाहीं सहसअठासीमूनी। चंद्रसूर्यतारागण नाहीं मच्छ कच्छ नहिंदूनी॥ वेदकिताबस्मृतिनाहिंसंयम नाहिं यमनपर-साही। बागनिमाज नहींतवकलमा रामौनहींखोदाही॥ आदिअंतसन मध्य न होते आतश पवन न पानी। लखचौरासी जीव जंतुनहिंसाखी शब्द न बानी॥ कहहिं कबीर सुनौहोअवधू आगेकरहुबिचारा। पूरणब्रह्म कहांते प्रकटेकिरतम किनउपचारा"॥ १॥ यहपद यही बीजकग्रन्थको है सोजहां यापदहै तहांअर्थलिख्यो है सो देखिलीजियो यातें अपूर्वताभई। औ रामनामहीं के जपेते श्रीरामचन्द्रहीके जानेते मनबचनके परे श्रीरामच-न्द्ररूप फल की प्राप्तिहोइहै यह फल है॥ "छच्छाआहि छत्रपति पासा। छकि किनर है छोंड़िसबआसा। मैतोहींक्षणक्षणसमुझाया। खसमछों-ड़िकस आपबँधाया॥ १॥ ररारारिरहाअरुझाई। रामकहेदुखदारिद जाई॥

राकहै सुनैरेभाई । सतगुरुपूंछिकैसेवहुआई ॥२॥" इत्यादिक बहुत वाक्यहैं यहफलहै।औ अर्थवाद कबीरजी तो साहबके पासके हैं उनको संसारका कौन डर है यह प्रशंसा करै है याते अर्थवादभयो ॥ "डरपतअहो यहझूलिबेको राखुयादव राय । कहकबीर सुनु गोपाल बिनती शरण हारितुवपाय" ॥ औ प्रकरणमें प्रतिपाद्य जोहै कि रामनामैकोजानैहै सोई छूटिजायहै औजे नहीं जानै हैं औरऔरेमतनमें लगेहै तेईसंसारी होयहैं यहबात दृष्टांतदैकै रामनामही को दृढ़ कियो है । "राम नाम बिन मिथ्याजन्म गँवाईहो । सेमरसेइसुवाजोजहँड़्यो ऊनपरेपछिताईहो ॥ ज्यों मदिपगांठि अरथैदै घरहुकी अकिलगँवाईहो । स्वादहुउदरभरैजो कैसे वोसहिप्यास न जाईहो" ॥ इत्यादिककहरामें लिख्यो है यह उत्पत्तिभई। येई षट्लिंगहैं जे इनको देखिकै अर्थकरै हैं सो सत्यहै,जे इनको नहीं जानिकै अर्थकरैहैं वहग्रन्थको तात्पर्य औरहै और अर्थ करैहै सो अनर्थहै । जैसे बीजकको कोई निराकार ब्रह्ममें लगावैहै कोई जीवात्मामें लगावै कोई नये नये स्वामिन्द बनाइकै अर्थलगावैहै इत्यादि । वेमनमुखी अपने अपने मनते नाना मतनमें अर्थलगावैहैं ते अनर्थ हैं अर्थनहीं हैं । वेगुरुजे हैं सबते गुरु परमपुरुष श्रीरामचन्द्र तिनके द्रोहीहैं ताते प्रमाण ॥ "गुरुद्रोही औमनमुखी नारिपुरुष अबिचार । तेनरचौरासीभ्रमहिं जबलगिशशिदिनकार" ॥ १ ॥

अरु हम जो बीजकको यह अर्थ करैहैं तामें छइउलिङ्ग श्रीरामचन्द्रमें घटितहैं तेहितेजो अर्थ हम करैहैं अनिर्वचनीय श्रीरामचन्द्रको प्रतिपादन सोई ठीकहै काहे ते कि जहांभरिप्रभुहैं तिनहूंके प्रभुहैं तौनेमें प्रमाण बाल्मीकियको ॥ "सूर्य्यस्यापिभवेत्सूर्योह्यग्नेरग्निःप्रभोःप्रभुः" । अर्थ जोयेईसूर्यमें येईअग्निमेंअर्थलगावै तौ पुनरुक्तिहोयहै काहेते जबबड़ोप्रकाशमान सूर्यको कह्यो तब अग्नि को कहिवे कोहै तातेयहअर्थहै जो कर्मनमें लोकनकी प्रेरणाकरै सोकहावै सूर्य अर्थात् अन्तर्यामी औसबकेआगेरहतभयो यातेअग्निकहावै ब्रह्मसोसूर्यके सूर्यकहै अंतर्यामीके अंतर्यामी औ अग्निकहे ब्रह्मकेब्रह्मअंतर्यामी परिछिन्नहै तातेबड़ो ब्रह्महै जो सर्वत्र पूर्णहै औपरिछिन्नहै ताते बड़ोजाको प्रकाश यह ब्रह्महै जामें सबजीव भरे रहेहैं ऐसोसाहबकोलोकहै सबकोप्रभुपरब्रह्मस्वरूप ताहूकेप्रभुवह लोकके मालिक श्रीरामचन्द्रहैं । वहब्रह्मजोहै सोई मनबचनके परेहै पुनिजाको वो प्रकाशहै ब्रह्मसोलोककैसेमन

बचनमें आवै साहब तौदुहुनका मालिकहै उनकी कहबाई कहाकरै जो कहौ सबके मालिक श्रीरामचन्द्रहैं यह कहतई जाउहौ औकहौ कि मनबचनमें नहीं आवैहैं यहबड़ो आश्चर्य है सो सत्यहै ये कबीरहूजीकहे हैं "किरामो नहीं खोदाई" काहेते रामो नहीं खोदायहौ कहै हैं "रामै नाम अहै निज सारू। औ सब झूठ सकल संसारू" ॥ इत्यादिक बहुत प्रमाणदैकै बीजक भरेगें रामैनामको सिद्धांतकियेहै ताही में याको समाधानहै औताही में कबीरजीको बीजकलागे हैं औरीभांति अर्थ किये नहींलागे है। सोसुनो जो साहबको रामनामहै ताके साधनकीन्हे ते वहमनबचनके परेजोरामनाम ताकोसाहब देइ है सो वह नाम याके बचनमें नहीं आवैहै साहिबै क दीन्हेते पावैहै। जब याको संसार छूटयो तब अपने लोकको साहब हंसस्वरूप देइहै तौनेहंसस्वरूप में टिकिकै साहबकोदेखैहैंनामलेइहैं साहब साहबको नाम साहबको लोक साहबकोदियो हंसस्वरूप या प्राकृत अप्राकृत मन बचनके परे हैं तामेंप्रमाण ॥ "यतोवाचोनिवर्ततेयत्परम्ब्रह्मणःपरम् ॥ अतःश्रीरामनामादिनभवेद्ग्राह्यमिन्द्रियैः" ॥ औ यह रामनामके जपन की बिधिजैसी २ कबीर जी आपने शब्दनमेंकह्योहै तेहिरीतिते जो जपकरै तौ रामनाममन बचनकेपरे जोआपनो स्वरूप सोयाके अंतःकरणमें अस्फूर्तिकरि देयँहैं औ साहब को रूपअस्फूर्ति करिदेयँहैं आर्थात् आपहीअस्फूर्ति ह्वैजायहै तामेंप्रमाण ॥ "नामचिन्तामणीरामश्चैतन्यपरविग्रहः। नित्यशुद्धोनित्ययुक्तोनभिन्नन्नामनामिनः ॥ अतःश्रीरामनामादि नभवेद्ग्राह्यमिन्द्रियैः ॥ स्फुरतिस्वयमेवैतज्जिह्वादौश्रवणेमुखे" ॥२॥ सो यही रामनाम जो मनबचनके परहै ताही को कबीर जानै ॥ "सो जानै जेहिमहीं जनाऊं। बांह पकरि लोकै लै आऊं ॥ सहज जाप धुनि आपैहोई। यह सँधिबूझै बिरला कोई ॥ रग २ बोलै रामजी रोम रोम राकार। सहजै धुनि लागीरहै सोई सुमिरणसार ॥" ओठकंठहालैनहीं जिह्वानाहिंउचार। गुप्तबस्तुको जो लखै सोईहंसहमार ॥ जो हंसरूपमें टिकिकै जपत रहैहैं तौनेमें प्रमाण भक्तमालके टीकामें श्रीप्रियादासजीलिख्योहै ॥ "बिनै तानो बानो हिय राममड़रानो" ॥ श्रीमहाराजाधिराजरामसिंहबाबा पूछ्योहै तब कबीर साहबकह्योहै॥"राअक्षरघट रम्योकबीरा ॥ निजघरमेरोसाधुशरीरा"१ तातेरामनामही को परत्व बजिकमें है मुक्ति रामनामहीमें है और साधनमनहा

है यह कबीरजी बीजकभरेमें कह्यो है । और अर्थ जे करै हैं ते बीजक को अर्थ नहीं जानैहैं काहेते भागूदास बीजक लैभागेहैं सो बघेलवंश विस्तार में कबीरहीं जी कहि दियो है कि अर्थ नहीं जानै हैं तामें प्रमाण ॥ " भागूदासकी खबरिजनाई ॥ लैचरणामृत साधूपियाई ॥ कोउ आयकह कलिअर गयऊ । बीजकग्रन्थचोराइलैगयऊ॥सतगुरु कहँ वहनिगुरापन्थी । काह भयोलै बीजकग्रंथी ॥ चोरी करि वह चोरकहाई काह भयो बड़ भक्त कहाई ॥ बीज मूल हम प्रगट चिन्हाई ॥ बीज न चीन्हो दुर्मति ल्याई ॥ बघेलवंश में प्रगटी हंसा । बीजक ज्ञान को करी प्रशंसा ॥ सबसों पूछी प्रेम हिताई । आप सुरति आपैमें ल्याई ॥ बीजकलाय गुफा में राखी । सत्यै कहौं बचन मैं भाखी "॥ सो और २ अर्थ जे कबीरहा करैं हैं ते भागूदास औ भगूदास के शिष्य प्रशिष्य, ते बीजक को बितंडाबाद अर्थ करिकै कबीरजी के सिद्धांत को अर्थ जो रामनामहै ताते जीवन को बिमुख करिडारयो नरककी राहबताय दियो काहेते दूसरी पोथीतौ रही नहीं वोही पोथी रही तौने को मनमुखी अर्थ करिकै आपाबिगरे औ शिष्यन प्रशिष्यनको बिगारयो जे उनके सत्संग किये ते सब याही ते नाम तोरहै भगवानदास पै भागूदास कबीरजी कह्योहै । औ मैं जो तिलक करौंहौं बीजक को सो एकतो साहबके हुकुमई ते कियो है सो आगेलिखि आये हैं दूसरे तिलक बनाइ बांधौगढ़में आयो तहां बयालिसवंश बिस्तार ग्रंथदेख्यो ताकोप्रमाण तिलकमें लिखिदियोहै पोथी पंद्रहसैयकइसके सालकी धर्मदासके हाथकी लिखीहै औ येहीपोथी में कबीरजी राजारामते आगम कहिदियो है ॥ "तुमसे दशौ बंश जो है हैं । सो तौ शब्द हमारो गहि हैं ॥ परमसनेही अनुभव बानी । कथिहैं शब्द लोक सहिदानी॥२॥तेहिते मैं जो अर्थ करौं हौं सोई कबीर जी का सिद्धांत है" **अनुबन्ध चतुष्टय-अधिकारी** औ यह ग्रंथ में चारि साधन करिकै युक्त जो पुरुष है सो अधिकारी है चारि साधन कौन हैं नित्यानित्य बस्तु विवेक १ औ इहामुत्रार्थफल भोग बिराग २ औ दम शम उपरति तितिक्षा औ श्रद्धा समाधान ई षट्संपत्ति ३ औ मुमुक्षुता ४ नित्यानित्यविवेक का कहावै, जीवात्मा नित्य औ देह इन्द्रिय आदि दैकै जो संसार सो अनित्यहै यहै कहावै नित्यानित्यविवेक औ इहामुत्रार्थ फल-

भोग विराग का कहावै यह लोकके औ परलोकके विषे जेहैं स्त्रक् चन्दन बनिता यह आदि दैकै जेहैं तिनको अनित्यता बुद्धिकैकै तिनते जो है बैराग्य सो इहामुत्रार्थफलभोग बिराग कहावै औ लौकिक व्यापारते मनकै जो है निवृत्ति सो कहावै शम औबाह्य जे इन्द्रियहैं तिनकी श्रीरामचन्द्रके संबंधते व्यतिरिक्त जो विषय है तेहिते निवृत्तिहोब जोहै सो कहावै दम औ श्रीरामचन्द्रको जो ज्ञान है तेहि पूर्वक उपासनाके अर्थ विहितजेहैं नित्यादिक कर्म तिनको जो है त्याग सो कहावै उपरति औ शीत उष्ण आदि दैकै जेहैं द्वन्द तिनको जो है साहब सो कहावै तितिक्षा औ निद्रा आलस्य प्रमाद इनको जो है त्याग तेहि पूर्वक मनकै जोहै स्थिरता सो कहावै समाधान औ गुरु वेदांतवाक्यमें अविचल विश्वास सो कहावै श्रद्धा औ संसारते छूटिबेकी जो है इच्छा सो कहावै मुमुक्षुता ई साधना चतुष्टय जामें होय सो कहावै अधिकारी।

१ **विषय**—औ यह जीव साहबको है औरको नहीं है यह जो है ज्ञान सो यह ग्रंथमें विषय है २ **सम्बन्ध**—औ ग्रन्थको, विषय सो संबंध कौन है तात्पर्य करिकै प्रतिपाद्य प्रतिपादकभाव ॥३॥ **प्रयोजन**—औ यह ग्रंथमें प्रयोजन का है कि मन माया औ अहंब्रह्म जो है ज्ञान तौनेमें बँधा जौहै जीव सो मन माया ब्रह्मते छूटिकै रघुनाथजीको प्राप्त होय सो प्रयोजन ॥ ४ ॥ जीवको मन माया ब्रह्मते छोड़ायकै श्रीरघुनाथजीके पास प्राप्त करिबेको कही, अपनी उक्तिते कही, साहबकी उक्तिते कही, मायाकी उक्तिते कही, जीवकी उक्तिते कही, ब्रह्मकी उक्तिते कबीरजी उपदेश कियो है। औ उत्पत्ति प्रकरण कैयो प्रकारते अपने ग्रंथनमें कबीरजी कह्योहै। सो इहां कबीरजी प्रथम रमैनी में आदिकी उत्पत्ति कहेहैं। जबकुछ नहीं रह्यो है तब वही साहबको-लोक रह्यो है ताहीको परम अयोध्या कहे हैं। औ सत्यलोक सांतानकलोक नापैदलोक आदि दैकै नाना नामहैं तौने लोकमेंजे हंस हंसनी हैं गुल्मलता तृणआदि दैकै तेसब चिन्मय हैं औ परमपुरुष श्रीरामचन्द्र सबके मालिक हैं तामें प्रमाण॥ "राजाधिराजःसर्वेषां रामएवनसंशयः॥ इतिश्रुतेः॥दूसरोप्रमाण॥ "यत्र वृक्षलतागुल्मपत्रपुष्पफलादिकम्॥ यत्किंचित्पाक्षिभृंगादितत्सर्वभातिचिन्मयम्॥" इतिवसिष्ठसंहितायाम्॥कबीरजी कह्यो है॥"सदा बसंतजहँफूलहिंकुंज

सोहावही। अक्षयवृक्षतरसेज सोहंस बिछावहीं॥ धरती आकाशजहांनहीं जग मगै। वहियांदीनदयाल हंसकेसँगलगै॥" तौने श्रीअयोध्याजी को जो है प्रकाश तामें शुद्ध जीव जे हैं तेभरे हैं तिनको साहबको औ साहबके लोकको ज्ञान नहींहै जो साहबको जानै औ साहब के लोक जाय तौ ना उलटि आवै सो साहबको तौ जानै नहींहै याही ते माया उनको धरि लैआवैहै सो प्रथम साहब दयाल उनमें दयाकरिकै आपनी शक्ति दैकै उनके सुरति उत्पत्ति करतभये कि हमको जानै हमारे पास आवै तौ मायातें बचि जाय सो आदिमंगलमें कहि आये हैं जब उनके सुरति भई तब वे धोखा ब्रह्ममें औ माया में लगिकै संसारी भये सो साहब बहुत हटक्यो सो हटको ना मान्यो सो आगे बोलिमें कहैंगे॥ "तू हंसामनमानि कहौ रमैया राम। हटल न मान्यों मोर हो रमैया राम। जसकीन्ह्योतसपायोहो रमैया राम। हमरदोषज निदेहु हो रमैया राम॥" औ साहबके लोकमें मनादिकनको कारण नहींहै, तामें प्रमाण॥ "नयत्रशोकोनजरान मृत्युर्नकालमायाप्रलयादिविभ्रमः॥ रमेतरामेतुसतत्रगत्वास्वरूपतांप्राप्याचिरांनिरंतरम्॥ इति वसिष्ठसंहितायाम्॥१॥ कबीरौ जीकह्यो है॥ "तत्वभिन्ननिहतत्वनिरक्षरमनैप्रेमसेन्यारा। नाद बिंदुअनहदनिरगोचरसत्यशब्दनिरधारा॥" औ साहब को लोक सबके पार है सो मंगल में कहिआये हैं जो साहब को जानै औ साहबके लोक जाइ तौ संसार में ना आवै सो तौनै उत्पत्ति श्रीकबीरजी प्रथम रमैनी में संक्षेप ते कहै हैं औ सबकी उत्पत्ति साहब के लोकके प्रकाश के बहिरेहीते होइहै तामें प्रमाण ज्ञानसागरको॥ "जानैभेद न दूसरकोई। उतपतिसबकीबाहरहोई॥१॥"

अथ बीजक प्रारम्भः।

अथ रमैनीप्रथम ॥ १ ॥ २ ॥

चौ० जीवरूपयकअन्तरवासा। अन्तरज्योतिकीनपरगासा १
इच्छारूपनारि अवतरी। तासु नाम गायत्री धरी २
तेहिनारीकेपुत्रतिनभयऊ। ब्रह्माविष्णुमहेशनामधरेऊ ३
तवब्रह्मापूंछतमहतारी। कोतोरपुरुषकाकरितुमनारी ४
तुमहमहमतुमऔरनकोई। तुममोरपुरुषहमैंतोरिजोई ५
साखी–बाप पूतकी एकै नारी औ एकै माय बिआय ॥
ऐसापूत सपूत न देख्यो जोबापै चीन्है धाय ॥ १ ॥

चौ० जीवरूपयकअंतरवासा। अंतरज्योतिकीनपरगासा १

श्रीरघुनाथजीके लोकको जो है प्रकाश तेहिकै अन्तर जे हैं जीव एक रूपते कहे समष्टिरूप ते बास किये रहे, यहां यह भाव प्रगट है कि, जीवनकी सुरति औरई है और वह (जीव) औरई है सो–अंतरज्योति कहे साहबके लोकको जोहै प्रकाश तेहिकै अंतरकहे भीतरै आपनई प्रकाश करतभये अर्थात् सुरतिकी चैतन्यता पाय मनादिक उत्पन्नकै संसार प्रकटकै संसारी ह्वैगये। साहबको न जानत भये या बात मंगलमें विस्तारते कहिआयेहैं याते इहां प्रसङ्गमात्र सूचित कियो है। जब प्रलयहोयहै तबहूं वही ब्रह्ममें लीन होइ है उहैंते पुनि उत्पत्ति होइहै औ अनुभव धोखा ब्रह्ममें ज्ञान करिकै जे मुक्त-

होयहैं ते सनातनज्योति जोहै अयोध्याजीको प्रकाश वही ब्रह्म जहां पूर्वलीन रहै है तहैं जाय लीनहोयहै औ जे श्रीरामचन्द्रको जानै हैं तेज्योति वह भेदिकै श्रीरामचन्द्रके पास जायहैं तामें प्रमाण ॥ (सिद्धाब्रह्मसुखेमग्नादैत्या-श्चहरिणाहताः ॥ तज्ज्योतिर्भेदनेशक्तारसिकाहरिवेदिनः ॥ तामें कबीरजीको प्रमाण (जैसे माया मन मिल्यो ऐसेरामरमाय । तारामंडलभेदकै तबअमरपुर-जाय) ॥ औ धोखाको अर्थयहहै जो औरेको और देखे सो कौनहै कि, एक जोहै सर्वत्रपूर्ण लोकप्रकाशब्रह्म ताके अंतर कहे भीतर अनुरूप जेजीव ते समष्टिरूपते बास कियेरहे । सो अंतरज्योति प्रकाश कहे जब साहब सुरतिदियो सोई अंतरप्रकाश करतभई तबजीवको जान परनलग्यो चैतन्यता आई तब संकल्प विकल्पकियो कि मैं कौन हौं यही मनकी उत्पत्तिभई सो जीवकोरूपतौ ॥ (बालाग्रशतभागस्य शतधाकल्पितस्यच । भागोजीवःसविज्ञेयः सचानंत्यायकल्पते) ॥ इतिश्रुतेः ॥ तामें कबीरजीको प्रमाण-(बहुत बडा ना तनकसा, तनकी भी है नाहि । औरत मरद न कहिसके, औ रह सबही माँहि ॥)इत्यादिक प्रमाण करिकै वाको स्वरूप तो अणुहै सोतो वाको न देखिपरयो सर्वत्र प्रकाशरूप ब्रह्मदेख्यो सो मान्यो कि महीं ब्रह्महौं यही धोखा ब्रह्महै ।

जीव ब्रह्मविषयक शंकासमाधान॥ जो कहो जीव ब्रह्मतो बने है जीव कहना यहीयाकी भूलहै । जब याको ज्ञानभयो ज्ञानते बिज्ञानभयो अनुभावानन्द प्राप्त भयो जबभर अनुभवानन्द बनोरहै है तबभर याको जीवत्वको लेश बनोरहैहै जब अनुभवानन्दरूप ही ह्वैगयो तबयाको जीवत्व मिटिगयो संसारऊ मिटिगयो एक आपही आप रहतभयो ? तुमकैसे कहौहौ कि " जीवको ब्रह्महोना धोखा-है"। जो ऐसो कहौ तौ सुनौ ! जोपदार्थ बीचकोहोय है सो मिटिजायहै औ जो पदार्थ सनातनहै सो नहीं मिटिजायहैं कैसे जैसे तुमकहौहौ कि जीवत्व बीचहीको है वही ब्रह्म अनेकरूप धारण कैलियो है, एकते अनेक होइगयोहै, जब जीवत्वको भ्रम मिटिगयो तब ब्रह्मही रहिजायहै, जो प्रथम रह्योहै सोईरहि-जायहै । जो पदार्थ बीचको होयहै सो मिटिजायहै। तैसे हमहूं कहैहैं कि आदि में तो जीवरह्यो है सो जब संसार छूटयो तब शुद्धजीवको जीवही रहिजायहै । जोकहो ब्रह्मही जीवह्वैजायहै तौ हम तुमसों या पूछै हैं कि प्रथम तो ब्रह्मही

रहतभयो सो ब्रह्म अकर्ताहै निर्धर्महै, मनमायादिकते रहितहै, देशकाल बस्तु परिच्छेदते शून्यहै सो ऐसे ब्रह्मको जीवत्वको भ्रम कहांतेभयो जो कहो वह ब्रह्म जीवत्वको धारणनहींकियो वाको तो भ्रमही नहींहै काहेते कि ॥ सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म ॥ यह श्रुतिलिखै है वाको भ्रमतो संभवितै नहीं है भ्रमतो जीवनको भयो है, जिनको ब्रह्मको विज्ञानहै, तिन को न जीवत्व है न संसार है। जैसे अज्ञानी जीवनको संसारही देखिपरै है तैसे ज्ञानी जीवनको ब्रह्मही देखिपरै है। तौ सुनौ तुमही दुइजीव कहैहौ एक अज्ञानी जीव एकज्ञानी जीव। सो अज्ञानी जीवको या कह्यो कि संसारही देखाय है सो ब्रह्मके तौ अज्ञान होताहीं नही है, जाते आपको जीवत्व मानिकै संसारीहोय। जो कहो मायाते शबलित ह्वैकै ब्रह्मही जीव होइ संसारी ह्वै जाय है तौ माया को तौ मिथ्या कहौहौं। जायासामाको अर्थः मिथ्यैव। फिर ब्रह्मको तौ ज्ञान-स्वरूप कहि आयेहौं कि ब्रह्मको मायाको स्पर्श नहीं होयहै, ब्रह्म जीव नहीं होइ सकै है, तौ ज्ञानी अज्ञानी जीव औ संसार वह ब्रह्मभ्रम करिकै कैसेभयो। जो कहो जीव औ संसार या हई नहीं है तौ पुराण औ कुरान वेदांतका को उपदेश करै है। तेहिते तुम्हारो समाधान कियो नहीं होयहै। जीव ब्रह्म कबहूं नहीं होइ है। सनातनते जीव भिन्नहै औ ब्रह्मभिन्न। काहेते साहबके लोकप्रकाश ब्रह्ममें अनादिकालतें समष्टिरूप ते जीवरहै है, ताको साहबदयाल दयाकरिकै सुरतिदियो कि, मोमें सुरति लगावै तौ मैं हंसरूप दैकै अपने पास लैआऊं सो अनादि कालते श्रीरामचन्द्रको जनबई न किये या मनादिक-नको कारण उनके रहबही करै, वही सुरतिपायकै संसारी ह्वैगये। जो साहब-को जानते तौ संसारमें ना आवते। जब मनादिक भये तब अनुभव ब्रह्मको उत्पन्नकियो सो यहतो साहबको है सो साहबको ना जान्यो आपहीको ब्रह्म मान्यो यही धोखाहै। और जीव सनातन है सर्वत्रपूर्ण लोकप्रकाशरूप ब्रह्म नहींहोय है वही प्रकाशमें अचल समष्टि रूपते भरो रहैहै तामें प्रमाण ॥ "नित्यःसर्वगतः स्थाणुरचलोयंसनातनः" ॥ इतिगीतायाम् ॥ औ लोकप्रकाश व्यापक ब्रह्मते जीवते भेदहै तामें प्रमाण ॥ "सत्यआत्मासत्योजीवः सत्यं भिदः सत्यंभिदः" ॥ औ अज्ञानहूते ब्रह्ममें लीनहोयहै तबहूंमाया धरिलै आवैहै

तामें प्रमाण ॥ "येन्येऽरविन्दाक्षविमुक्तमानिनस्त्वय्यस्तभावादविशुद्धबुद्धयः ॥ आरुह्यकृच्छ्रेणपरंपदंततः पतंत्यधोनादृतयुष्मदंघ्रयः" ॥ इतिभागवते ॥ तेहिते साहबके लोक प्रकाशमें भरे जे जीवहैं तहैंतेव्यष्टि होतहै औ तहैं समष्टिरूप करि लीनहोतहैं । अनादिकाल यहीक्रमहै । सो जैसोहम वर्णनकरिआये हैं ताही रीतिमें प्रकाशरूप जो ब्रह्महै तामें निर्विकारत्वनिर्धर्मत्वादि जे वेदांतमें विशेषणहैं ब्रह्मके ते बन रहेहैं औरीभांतिनहीं संघटित होयहै औ प्रकाशरूप जो ब्रह्महै सो निर्विकारहै निर्धर्म है अकर्त्ताहै, वाकी करी रक्षा जीवकी नहीं होयहै । दूनोंते परे जे साहबहैं तिनको जोजानैहै, जानिकै उनके लोकको जाय है सो फेरि नहीं आवैहै वे रक्षाकरिलेयहैं काहेते वहां मन मायादिकन की गति नहीं है ॥ तामेंप्रमाण ॥ "यद्गत्वाननिवर्त्ततेतद्धामपरमं मम" ॥ औ जगत्‌की उत्पत्ति जो उपनिषदनमें लिखैहै सो समष्टिरूप जीवही ते लिखैहै सोकहैहैं ॥ "सदेवसौम्येदमग्रआसीदेकमेवाद्वितीयं" ॥ इतिश्रुतेः ॥ एककहे सजातीयभेदशून्य अद्वितीय कहे विजातीयभेदशून्य एवकारते स्वगत भेदशून्य यद्यपि सूक्ष्म भेद वामें बने हैं परन्तु समष्टिरूपकरिकै जीव एकही-रहै है । प्रलयमें अथवा जीवत्व करिकै एक रहैहै यह श्रुति सतनाम कैकै कहैहै ताते अनामा जोब्रह्म है तामें नहीं लगै है औ दूजी श्रुति है ॥ "सऐ-क्षतएकोऽहं बहुस्याम्" ॥ तौने जो है समष्टि जीव सो सुरति पायकै इच्छा करतभो कि, एकते बहुत होउं सो या ब्रह्माख्य जो समष्टि जीव ताहीमें लगैहै औ ब्रह्मपद यह समष्टि जीवहीमें घटित होय है काहेते बृहिवृद्धौ यह धातु है व्यष्टिते समष्टि ह्वैजायहै समष्टिते व्यष्टिहोइजायहै । औ वहजो लोकप्र-काश ब्रह्मएक रस न घटै न बढै तामें एकोऽहंबहुस्याम् या अर्थ नहीं लगै है। औ अनुभव करि आपनेको जो ब्रह्म मान्यो है सो तो धोखैहै नाममिथ्यैहै । सो एकतो समष्टि जीव रूप सगुण ब्रह्म तौन औ एक लोक प्रकाश रूप निर्गुण ब्रह्म तौन ई दूनौते साहब परेहैं । औ मंगलमें पांच ब्रह्मकहिआयेहैं सोनारायणजेहैं साकार ते औ तिनके अंतर्यामिजेहैं निराकारतत्त्वरूप नारायणते ई दूनों जे साकार निराकारहैं तिनते साहब परे है औ निराकार साकार ये दोऊ साहबके शरीरहैं तामें प्रमाण "यामिच्छासिमहाराज तांतनुंप्रविशस्वकाम । वैष्णवींतांमहातेजो यद्वाकाशंसनात

नम् ॥ इतिवाल्मीकीये ॥ औ साहब साकारद्विभुजनराकृतिहै । तामें प्रमाण ॥ स्थूलंचाष्टभुजंप्रोक्तंसूक्ष्मंचैवचतुर्भुजम् । परन्तुद्विभुजंरूपंतस्मादेतत्त्रयंयजेत्॥इतिआनंदसंहितायां ॥ आनन्दोद्विभुजःप्रोक्तोमूर्त्तश्चामूर्त्तएवच । अमूर्त्तस्याश्रयोमूर्त्तःपरमात्मानराकृतिः ॥ इतिआनंदसंहितायां ॥ औ मुसलमाननके जे अच्छे समुझवारेहैंतेसाकारहीमानैहैं, काहेतेकिकुरानमें लिखै है–अल्लाह कहैहै कि "महम्मद मोको एकबार जब लड़काईमेंदेखा है औ एक बार मैंने बुलाया मेरे सामने चलाआया दुइकमानते कम फरक रहिगया" सो महम्मद देखा यातौअल्लाहकेसूरति है यह आयो औ महम्मदकीहदीस "खलकलईनसान"अल्लाहके सूरतहीमें बनायाहै ईनसान अपनी सूरतिका यहिसे यह आयाकि अल्लाह द्विभुजहै । यहिसे या मालूम भया कि अल्लाह कहिकै द्विभुज श्रीरामचन्द्रही वर्णन करैहै । औ जे अल्लाहकी सुरतिकहतेहैं कि नहीं है, कुरानकी जबानी नहीं मानते हैं तिनको काफरकहतेहैं औ वह जो है निर्गुण सगुणके परे साहब नराकृति सो जाके ऊपर कृपा करै है. ताको आपनोहंसरूप आपनीइन्द्री देइहै आपै देखिपरै है तामें प्रमाण ॥ ब्रह्मणैवजिघ्रतिब्रह्मणैव पश्यति ब्रह्मणैवशृणोतिइतिश्रुतेः ॥ औ साहबको रूप साकार निराकारते बिलक्षणहै यातेअरूपीरूप कहैहैं औजेसोयहनामहै तैसोनामनहीं है वहनामविलक्षण मन वचनकेपरे है यातेवाको अनामानामकैहै हैं तामेंप्रमाण । "अनामासोऽप्रसिद्धत्वाद रूपोभूतिवर्जनात् ॥ इतिअग्निपुराणे ॥ अप्राकृतशरीरत्वादरूपीभगवान्विभुः ॥ इतिवायुपुराणे॥ औ साहबके हाथ पांय नहीं हैं निराकार आयो औ चलैहै ग्रहण करिलेइहै याते साकारआयोतामेंप्रमाण॥ "अपाणिपादोजवनोग्रहीत्तापश्यत्यचक्षुःसश्रृणोत्यकर्णः"इतिश्रुतेः ॥सो ऐसे साहबके लोक प्रकाश है ब्रह्मको यह जीवना समुझयो कि साहबको लोकःप्रकाश है मनते अनुभवकारि वह ब्रह्म आपहीको मानतभयो यही धोखा ब्रह्म है । सो जीवपै कहे एकरूपते औ कहेसमष्टिरूप जीवलोक प्रकाशके अंतरमेंबास कियेरहै, सो अंतर ज्योति कहे सुरतिपाय प्रकाशकीन कहे मतादिक उत्पन्न करि समष्टिते व्यष्टि होवेकी इच्छाकरत भये सो आगे कहै हैं ॥ १ ॥

इच्छारूपनारिअवतरी । तासुनामगायत्रीधरी ॥ २ ॥

आपनेको जो धोखाते ब्रह्म मानिलियो समष्टिरूप जीव, ताके जब इच्छाभई सोई मूल प्रकृति माया है तेहिते शबलित ब्रह्म भयो सो इच्छा माया जबप्रकट भई ताको नामगायत्री धरावत भये । गायत्री तो सूर्यमध्यवर्ती जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनको तात्पर्य ते बतावैंहै सो अर्थतो न ग्रहण करत भये सूर्यके मध्यमें साहब है तामें प्रमाण॥"सूर्यमंडलमध्यस्थं रामंसीतासमन्वितम् "॥ सूर्यप्रतिपादक अर्थ ग्रहण करतभये । तेहिते दिन राति संध्या होतभई । औ ब्रह्मादिक देवताभये सो आगे कहैंगे यह संसार मुख अर्थसमुझचो तेहिते गायत्री सबकी उत्पत्ति कर तभई जो कहो काहेते जानो कि गायत्रीके द्वैअर्थ हैं तौ सुनो यहबाणी जोहै सो सार शब्द जो रामनाम ताको लैके प्रथम प्रगटभई है । तामें द्वैअर्थहैं एकसाह ब मुख, एक संसारमुख । ऐसे प्रणव . निगम आगम इनमें द्वै द्वै अर्थहैं, एक साहबमुख एक संसारमुख।काहेते कि रामनाम ते सब निकसेहैं सो जो कारणमें द्वैअर्थभये तौ कार्यमें द्वैअर्थहोवई चाहैं । सो संसारमुख अर्थलैके जीव संसारी होतभये सो यह उत्पत्ति मंगलमें बिस्तारते लिखिआये हैं ताते संक्षेप इहां उत्प त्ति लिख्यो है ॥ २ ॥

तेहिनारीकेपुत्रतीनिभयऊ।ब्रह्माविष्णुमहेशनामधयऊ ॥३॥

तौने गायत्रीरूप नारीके पुत्र ब्रह्मा विष्णु महेश उत्पन्न होत भये तब वह नौ गायत्रीरूप नारी है॥ ३ ॥

तबब्रह्मापूंछतमहतारी । कोतोरपुरुषकेकरतुमनारी ॥ ४ ॥

तासोंब्रह्मा पूंछत भये कि को तोर पुरुष है काकरि तू नारी है औ काके हम पुत्रहैं सो बताउ हम जानो चहैहैं तब वा नारी कहत भई ॥ ४ ॥

तुमहमहमतुमऔरनकोई । तुममोरपुरुषहमैंतोरजोई ॥५॥

प्रथम साहब के लोक प्रकाशमें अनादिकालते साहबते विमुखतारूप जो जगतको कारण तेहिते सहित जीव समष्टिरूप बास कियेरह्यो तिनके ऊपर साहब दया कियो कि " अबोध सुषुप्ति ऐसे में परेहैं इनको सुखको अनुभव

नहीं है " यह जानि साहब बिचारयो कि हम इनको सुरति देयँ जेहिते हमको जानि लेइ तौ मैं हंसरूप दैकै आपने धामको बोलाय लेउँ। सो जब साहब सुरति दियो तब चैतन्यता भई अर्थात् स्मरणभयो यही चित्तकी उत्पत्तिहै। औ वाको रूपतो अणुहै सोतो आपनोदेखैनहीं है संकल्प विकल्प करैहै कि मैंहौं कि नहींहौं, यही मनकीउत्पत्ति है। फिरि विचारयो कि मैं हौं तो, पै कौनहौं आपनो रूपतो देखैनहीं है। फिरि निश्चयकियो कि जोमैं होतो न तो यहसंकल्प विकल्प काको होतो याते मैंहौं यहीं बुद्धि की उत्पत्ति भई। जौने लोक प्रकाशमें अपार है ताको देखि मानत भयो कि सत्चित् आनंद स्वरूप सो महींहौं यही अहंब्रह्मरूप अहङ्कारकी उत्पत्ति है। सो जब समष्टिजीव आपनेको चिद्रूप ब्रह्म मान्यो तब वही पूर्वजगत् कारणरूपा योगमाया अर्थात् साहब ते विमुखतारूपा सो स्थूलरूप ते चिद्रूपा योगमाया लागी। तब आपनेको सच्चिदानंद ब्रह्म मानिकै एकते अनेक होबेकी इच्छाकियो अर्थात् समष्टिते व्यष्टि होबेकी इच्छाकियो। तब साहब जान्यो कि समष्टि जीव आपनेको सच्चिदानन्द ब्रह्म मानि संसारी होनचहै है तब सार शब्द जो रामनाम ताको दियो कि, याकोये अर्थ समुझि हमको जानै तौ हम हंसस्वरूपदै आपने धामको लैआवैं। सो रामनाम को अर्थ साहब मुखतो न समुझ्यो जगत्मुख अर्थ लगाय राम नामकी जे षट्मात्रा हैं तिनते पांच मात्राते पांच ब्रह्म प्रकट कियो छठों मात्राको अर्थ जीव को हंसस्वरूप है सो न जान्यो वाहीको जीवको अर्थ करि समष्टि ते व्यष्टि ह्वैगयो। सो समष्टि ते व्यष्टि होनेवाली जो इच्छाहै सोई गायत्रीरूपा मायाहै तेहि ते ब्रह्मादिक देवता भये। सो प्रथम शुद्ध जीव आपनेको ब्रह्म मानि अशुद्ध ह्वैगये हैं याही हेतु ब्रह्मको कोई जगत्को निमित्त कारण कहैहैं कोईनिमित्त उपादान कारण कहैहैं याही ते वा ब्रह्म अशुद्ध जीवनको बाप है सोतों धोखई है। गायत्री कैसे बतावै कि प्रथम ब्रह्मासों कि तिहारा बाप है। तातें यहकहै हैं कि प्रथम तुमरहे तिनकी इच्छा हमहैं। अबहम तुमकहे हमते तुमभये और तो कोई हुई नहींहै। तुमहीं हमार पुरुषहौ हमैंतुम्हारि जोई हैं अर्थात् जबतुम शुद्धते अशुद्धभयेहौ तब चित अचितरूपा जो माया हमहैं तिनहींते सब लित ह्वै उत्पन्न भयो है तबहूं हम तुम्हारी नारी रही हैं। औ अबहूं सरस्वती आदिक तुमको देयँगे ते हमहीं हैं याते तुमहीं पुरुषहौ हमहीं नारी हैं॥ ९॥

साखी ॥ बाप पूतकी एकैनारी, औ एकै माय बिआय ॥
ऐसा पूत सपूत न देखों, जोबापैचीन्हैंधाय ॥ ६ ॥

बापता धोखाब्रह्महै जाते शुद्धजीवअशुद्धह्वैउत्पन्नभयेहैं ते अशुद्ध जीव पूतहैं सो दोऊमाया सबलित भये ताते बाप पूतकीएकै नारी भई । औ पूर्व जगत् कारण रूपा जो माया है तौनेहींते(अहंब्रह्मास्मि)मान्योहै औ तौनेहींते व्यष्टि जीवनकी उत्पत्तिहूभई है याते दोहुनकी एकै महतारी है।याते एकै माया बियानी है।सो ऐसा पूत सपूत नहीं देखहु है कौनसो बाप जोहै ब्रह्म ताको धायकै कहे बहुत बुद्धि दौरायकै चीन्हैं कि, यह धोखा है । अब जाकी शक्ति करिकै यह जगत् भयोहै जौनी भांतिते सो समेटि कै सिंहावलोकन कैकै पुनि कहैहैं ॥ ६ ॥

इति प्रथम रमैनी समाप्तम् ।

अथदूसरीरमैनी ॥२॥१॥

चौपाई ।

अंतर ज्योति शब्द यक नारी।हरि ब्रह्मा ताके त्रिपुरारी॥१॥
तेतिरियेभगलिंगअनंता । तेउनजानैआदिउअंता ॥ २ ॥
बाखरीएकविधातेकीन्हा । चौदहठहरपाटिसोलीन्हा॥ ३ ॥
हरिहरब्रह्ममहंतौनाऊ । तेपुनितीनिवसावलगाऊ ॥ ४ ॥
तेपुनिरचिनिखंडब्रह्मंडा । छादर्शनछानवेपखंडा ॥ ५ ॥
पेटहिकाहुनवेदपढ़ाया ।सुनतिकरायतुरुकनहिंआया॥ ६ ॥
नारीमोचित गर्भप्रसूती । स्वांगधरै बहुतैकरतूती ॥ ७ ॥
तहियाहमतुमएकैलोहू । एकैप्राणबियायलमोहू ॥ ८ ॥
एकैजनी जनासंसारा । कौनज्ञानते भयोनिनारा ॥ ९ ॥
भाबालकभगद्वारेआया । भगभोगेतपुरुषकहाया ॥ १० ॥

अविगतिकीगतिकाहुनजानी।एकजीभकितकहौंबखानी ११
जोमुखहोइजीभदशलाषा।तौकोइआयमहंतौभाषा ॥१२॥
साखी॥ कहहिंकबीर पुकारिकै, ई लेऊ व्यवहार॥
एक रामनाम जानेविना, भव बूडि मुवा संसार॥१३॥

अंतर ज्योति शब्द यक नारी।हरि ब्रह्मा ताके त्रिपुरारी॥१॥

अन्तरज्योति कहे वह ज्योतिके अन्तरकहेभीतरै नारी जोहै गायत्रीरूपबाणी सो शब्द जो है राम नाम ताको लैकै प्रगट भईहै सो मङ्गलमें कहि आयेहैं। तौने शब्दकी शक्तिते तानारीके हरि ब्रह्मा त्रिपुरारी भये हैं। अर्थात रामनामको जगत् मुख अर्थ लैकै वहै बाणी रूप नारी वेद शास्त्र औ सब संसार प्रगटकियो रामनाममें ये सब भरेहैं सो मैं अपने मंत्रार्थमें लिख्यो है सो राम नाममें जो साहब मुख अर्थहै ताको।छिपाय दियो ॥ १ ॥

तेतिरियेभगलिंगअनंता । तेउनजानैआदिउअंता ॥ २ ॥

तौन जो है तिरिया ताते अनंत भग लिंग होत भये अर्थात् बहुत स्त्री पुरुष भये ते अनेक शास्त्रनमें अनेक वेदनमें बिचार करत २ थकै तबहूं वह राम नामके अर्थको अन्त न पाये ॥ २ ॥

बखरीएकबिधातैंकीन्हा । चौदहठहरपाटिसोलीन्हा ॥३॥

एक बखरी यह ब्रह्मांड ब्रह्मा बनावत भये सो चौदह ठहर कहे चौदह भुवन करिकै पाटि लेते भये ॥ ३ ॥

हरिहरब्रह्ममहंतौनाऊ । तेपुनितीनिबसावलगाऊ ॥ ४ ॥

औ हरि हर ब्रह्मा जौन ब्रह्मांड प्रथम ब्रह्मा बनायो है वोही ब्रह्माण्ड में तीनि गांव बसावत भयें तहांके मालिक होत भये औ जे प्रथम ब्रह्मादिक देवता भये हैं तेई ब्रह्मादिकनके अंगनके देवता होतभये। सो मङ्गलमें लिखिआयेहैं ब्रह्मादिकनकी उत्पत्ति औपुनि भगवान्‌की नाभीमें कमल भयो तेहिते ब्रह्माभयेहैं तिनते उत्पत्ति भई है औ ब्रह्मवैवर्त्तमें प्रथम ब्रह्माकी उत्पत्ति प्रकृति

पुरुषके अंगनते भईहै । औपुनि भगवान्की नाभीमें कमल भयोहै जो मंगल में कहिआये हैं, तेहिते ब्रह्माभये हैं तिनतें उत्पत्ति भई है । औ तौनै बात या रमैनहूं में कहै हैं कि पहिले इच्छा रूपी नारीते ब्रह्मादिक भये । औ पुनि ब्रह्माण्डांतरानुवर्ती ब्रह्मादिकभये ते सतोगुणाभिमानी जे विष्णुते ऊपर देवलोक बसावतभये ते ताके मालिक । और जो गुणाभिमानी जे ब्रह्माते मध्यके लोक बसाये ते तहांके मालिक । औ तमोगुणाभिमानी जे महादेव ते नीचेके लोक बसाये तहांके मालिकं होतभये । सो येतीनौ तीन लोकके मालिक होत भये सोये तीनौं तीन लोकके मालिकै हैं परंतु तौन तौन लोकनकी प्रधानता देखाई है ॥ ४ ॥

तेपुनिरचिंनिखंडब्रह्मंडा । छादर्शनछानवेपखंडा ॥ ५ ॥
पेटहिकाहुनवेदपढ़ाया । सुनतिकरायतुरुकनहिंआया॥६॥

तेतीनौं देवता मिलिकै ब्रह्मांड में छा दर्शन छानबे पाखंड बनावत भये ॥ " योगी जंगम सेवरा संन्यासी दुरवेश । छठयें कहिये ब्राह्मण छाघर छाउप-देश ॥ दशसंन्यासी बारहयोगी चौदहशेष बखाना । बौध अठारहि जंगम अठारहि चोबिस सेवरा जाना ॥" औ प्रथम उत्पत्तिमें कहि आये हैं ब्रह्मा वि-ष्णु महेश ते यह ब्रह्मांडके ऊपर अपने लोक बसाये फिरि एक २ अंशते अनंत कोटि ब्रह्मांडन में बसे जाय ५ औ पेटैते कोऊ वेद नहीं पढ़ि आया कहे गायत्री नहीं पढ़चौ बरुवा नहीं भयो औ न पेटैते सुनति करायकै तुरुक बनिआया है ताते हिन्दू तुरुकको जीव एकईहै सोतो ना जान्यो वेद किताब की वाणी सुनिकै अपने २ कर्मते सब अनेक भेद ह्वैगये वेद किताबको भेद न जान्यो ॥ ६ ॥

नारीमोचित गर्भप्रसूती । स्वांगधरै बहुतैकरतूती ॥ ७ ॥
तहियाहमतुमएकैलोहू । एकैप्राणवियापलमोहू ॥ ८ ॥

गर्भबासमें जबतुम रहेहो तब न हिन्दूए रह्योहै नातुरुकरह्यो न वेद पढ्यो नं तिहारी सुन्नति भई । जब गर्भते निकसे तब कर्म करिकै हिन्दू मुसलमान ह्वैगये । बहै नारी जो है वाणी ताही में चित्त लगायकै कर्म करिकै नाना

स्वाग हिंदू मुसल्मान भये ७ सो कबीरजी कहैहैं कि जैसे हम शुद्धहैं तैसे तुमहूं शुद्ध रहेहौ । जब तुमहीं मन प्रकट कियो है औ इच्छा भई है तब हम तुम एकही लोहू रहे हैं अर्थात् एकई जाति चित्त स्वरूप शुद्ध रहे हैं । सो एक मोह कहे भ्रम जो है मन सो व्याप्त ह्वैकै नाना भांतिन तुमको कराइ दियो कि हम हिंदू हैं हम तुरुकहैं इत्यादिक सबसों ॥ ८ ॥

एकैजनी जनासंसारा । कौनज्ञानते भयोनिनारा ॥ ९ ॥
भावालकभगद्वारेआया । भगभोगेतेपुरुषकहाया ॥ १० ॥
अविगतिकीगतिकाहुनजानी। एकजीभकेतकहौंबखानी ११

एक जनी कहे उत्पत्ति करनहारी माया औ एकै जना कहे उत्पत्ति करनहार मनका अनुभव ब्रह्ममाया सबलित इनहीं ते सब जगत् है तुम कौन ज्ञानते हिंदू तुरुक नाना जाति बनाय लिये निनार निनार ९ जब भगके द्वारे आया तब बालक कहाया औ जब भोगन लग्यो तब पुरुष कहाया १० अविगति जो है धोखा ब्रह्म ताकी गति कोई नहीं जानै है मैं एक जीभते केतो बखानिकै कहौं ॥ ११ ॥

जौमुखहोइजीभदशलाषा । तौकोइआयमहंतौभाषा॥१२॥

जो एक मुखमें लाख जीभ होय तौ कोई कहे महन्त वही ब्रह्मको भाषै अर्थात् न भाषै यह याकुअर्थ है काहेते कि वाके तौ कुछ रूप रेखा हई नहीं है धोखही है अथवा महंत जे ब्रह्मादिक अपने २ लोकके मालिक जिन जगतकी उत्पत्ति कियो है तिनके करतव्यताको जो काहूके दशलाख जीभ होय कहै तौ का कहिसकै अर्थात् नहीं कहिसकै ॥ १२ ॥

साखी ॥ कहहिंकबीर पुकारिके, ई लयऊ ब्यवहार ॥
रामनाम जानेबिना; भव बूड़ि मुवा संसार॥१३॥

कबीरजी पुकारिकै कहैहैं कि या जो उत्पत्ति वर्णन करिआये सो सब लय कहे नाशमानहै । औ ऊ कहे वह धोखा ब्रह्मको जो वर्णन करि आये सो व्यवहा-

रै मात्रहै अर्थात् समुझेते धोखांहीहै कुछ वस्तु नहीं है सो एक विना रामनामके जाने कहे साहबको जो बतावैहै रामनाम सो अर्थ बिनजाने मायाको बतायो जो है राम नाममें संसार औ ब्रह्माको अर्थ तौनहै भव कहे भयरूप समुद्र तौनेमें संसार बूडि मुवा इहां लक्षणा है संसार बूड़ि मुवाकहे संसारि जीव बूड़ि मुये ॥ १२ ॥

इतिदूजीरमैनीसमाप्तम् ।

अथ तीसरी रमैनी ।

चौपाई ।

प्रथम अरंभ कौनके भाऊ। दूसर प्रकट कीन सोठाऊ ॥१॥
प्रकटेब्रह्म विष्णु शिव शक्ती।प्रथमैभक्ति कीन जिव उक्ती॥२॥
प्रकटेपवन पानी औ छाया।बहुविस्तारकै प्रकटी माया ३॥
प्रकटे अंड पिंड ब्रह्मंडा।पृथिवी प्रकटकीन नवखंडा॥४॥
प्रकटे सिध साधक संन्यासी। ये सब लागिरहे अविनासी॥५॥
प्रकटे सुरनर मुनिसबझारी। तेऊ खोजि परे सबहारी॥६॥

साखी ॥ जीउ सीउ सब प्रकटे, वे ठाकुर सब दास ॥
कबिर और जानैनहीं, एक रामनामकी आस॥७॥

प्रथम अरंभ कौनके भाऊ। दूसर प्रकटकीनसोठाऊ॥ १॥
प्रकटेब्रह्मविष्णुशिवशक्ती। प्रथमैभक्तिकीनजिवउक्ती ॥२॥

प्रथमअरंभ कौनके भाऊकहे भयो औ दूसर कौन प्रकटकियो जाते ये सब व्यवहारहैं १ प्रथम अनुमान समष्टिजीवकियो मनके अनुभव ते ब्रह्म भयो औ बाणीभई ताते ब्रह्मा विष्णु महेशादिक देवता प्रकटभये उनकी सब

शक्ति प्रकटभई औप्रथम ही जीव जोहै सो अपनी उक्तिकरिकै उक्तदेवतनकी भक्तिकरत भयो अर्थात् नाना उपासना बांधिलेतभये ॥ २ ॥

प्रकटेपवनपानीऔछाया । बहुविस्तारकैप्रकटीमाया ॥३॥
प्रकटेअंडापिंडब्रह्मण्डा । पृथिवीप्रकटकीननवखण्डा ॥ ४ ॥

वे जे ब्रह्मादिकहैं ते अपनो अपनो ब्रह्माण्ड करतब करतभये तेहिसे पवन पानी औछाया बहुतबिस्तारकैकै मायाप्रकटभई । औचारि जे खानिहैं अंडज पिंडज स्वेदज उद्भिज्ज प्रकट भये जे ब्रह्मांडमें हैं औ नवखण्ड पृथ्वी प्रकट भई ॥ ३ ॥ ४ ॥

प्रकटेसिधसाधकसंन्यासी । ईसबलागिरहेअबिनासी॥५॥
प्रकटेसुरनरमुनिसबझारी । तेऊखोजिपरे सबहारी ॥ ६ ॥

औ सिद्धसाधक संन्यासी प्रकटहोतभये ये संपूणजे हैं ते अबिनाशीमें लागिरहे हैं अर्थात् अबिनाशीको खोजैहैं ॥ ५ ॥ औसुरनरमुनिसब झारिकै प्रकटहोत भये तेऊ अबिनाशीको खोजत खोजत हारि परे तिनहूं न पायो ॥ ६ ॥

साखी ॥ जीव सीव सब प्रकटे, वे ठाकुर सबदास ॥
कबिर और जानै नहीं, एकरामनामकी आस॥७॥

जीव औ सीव कहे ईश्वर सो सब प्रकटे सो ईश्वर तो ठाकुर भयो औ सब जीव दासभये । सोकबीरजी कहे हैं कि हमतो दूसरोकाहूको नहीं जानै हैं न अबिनाशी निर्गुण ब्रह्मको जानै, न सगुणईश्वरन को जानै । निर्गुण सगुण के परे जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनके एक रामनामकी हमारे आशाहै कि वही हमारो उद्धार करैगो अथवा कबीर कहे काया के बीर जीव ! और को तैनाजानु एक रामनामही को जानु यही संसार ते छोड़ावैगो ॥

इति तीसरी रमैनी समाप्तम् ।

अथ चौथीरमैनी ।

चौपाई ।

प्रथम चरणगुरुकीन विचारा । करतागावै सिरजनहारा ॥ १ ॥
कर्मै करिकै जग बौराया । शक्ति भक्तिलै बांधिनिमाया ॥ २ ॥
अद्भुतरूप जातिकी बानी । उपजी प्रीति रमैनी ठानी ॥ ३ ॥
गुणिअनगुणीअर्थनहिं आया । बहुतकजनेचीन्हिनहिंपाया ४
जो चीन्है तेहि निर्मल अंगा । अनचीन्हे नल भयेपतंगा ॥ ५ ॥
साखी ॥ चीन्हि चीन्हि कह गावहू, बानी परी न चीन्हि ॥
आदि अंत उत्पति प्रलय, सब आपुहि कहि दीन्हि ॥ ६ ॥

प्रथमचरणगुरुकीनविचारा । करतागावैसिरजनहारा ॥ १ ॥
कर्मै करिकैजगबौराया । शक्तिभक्तिलैबांधिनिमाया ॥ २ ॥

प्रथमचरणकहे जगत्की आदिमें गुरुकहे साहब बिचारकीन कहेसुरति दीन कि हमको जानै, हम हंसरूपदै आपनेधामकोलै आवैं। सो जीवजेह ते वा चैतन्यता पाय जगत्मुख ह्वै जगत् उत्पन्नकरिकै संसारीह्वैगये सो करता तो साहबैहैं जिनकी चैतन्यता पायजीव समष्टिते व्यष्टिभये तौनेसाहबकी करतब्यता तो न जान्योब्रह्मादिक नहीको सिरजनहार मानतभये ॥ १ ॥ तेईब्रह्मादिक नानाकर्मनको प्रतिपादन करिकै जगत् बौरायदियो औशक्ति जो है गायत्री तौने के उपदेशकी बिधिकैकै ताकी भक्ति आपकैकै औजीवनको कराय कै माया में बांधदियो ॥ २ ॥

अद्भुत रूप जातिकीबानी । उपजीप्रीतिरमैनीठानी ॥ ३ ॥
गुणिअनगुणीअर्थनहिंआया । बहुतकजनेचीन्हिनहिंपाया ४

अद्भुत रूप औ नाना जातिकी जोहै कर्म प्रतिपादक ब्रह्मादिकनकी बाणी अर्थात् अद्भुतरूपनके हैं ध्यान जिनमें कहेकाहूके बहुत मूड़ काहूके बहुत हाथ

काहूके बहुतपांय काहूके मूडनहीं (छिन्नमस्ताको ध्यान् लिखै है कि, हाथमें मूँडलीने है गलेमें लोइ चलै है सो मुहेमें परैहै ताको पीये है)। और नाना-भांतिकी जो है कर्म्म-प्रतिपादिका बाणी अर्थात अद्भुत रूपनकाहै ध्यान तिनमें यहिरीति के देवतनकी उपासना करैहै औनाना जातिकीकहे नाना तरहकी है उपासना बर्णन जिनमें ऐसी उनकी बाणीसुनके तिन तिन देवनपर जीवनकी प्रीति उपजतभई। औ रमैनीठानी जो कह्यो सो अपने अपने उपास्य देव तनकी रमनी कहै कथा सो ब्रह्मादिकन की बाणीको आशयलेके बनाय लेते भये ॥ ३ ॥ गुणीजेहै सगुण उपासनावाले तेजीवको स्वस्वरूप दासरूपता खोजनलगे औअनगुणी जेहैं निर्गुणवाले ते जीवको अनुमान जो ब्रह्मत्वरूपता खोजनलगे सो वा वेदतात्पर्य्यार्थ दुइमें कोई नहीं पाये अर्थात् बहुतेरेजनेबहुत-बिचारकियो परंतु न चीन्हपायो ॥ ३ ॥ ४ ॥

जोचीन्है तेहिनिर्मलअंगा । अनचीन्हेनलभयेपतंगा ५

जे यह धोखाको जानैहैं कि यह धोखाहै तिनहीं को जानिये कि इनके पारखहै। यहबात बिनाजाने जगत्के जेजीवहैं ते जैसे दीपकमें पतंग जरिजा-यहै ऐसे वह धोखामेंपरिकै नाना दुःखपावैहै। औ जोकोई साहबको चीन्हैहै जाको नेतिनेति वेदकहैहैं औ पारिख करैहैं ताके निर्मलअंग ह्वैजायहै अर्थात् हंसरूप पावै है। काहेते कि वह साहब तो निर्गुण सगुण मनबचनके परेहै सोजब वाको चीन्ह्यौ तब वाहू मनबचनके पर ह्वै जायहै ॥ ५ ॥

साखी॥चीन्हि चीन्हि कह, गावहू वाणीपरी न चीन्ह ॥
आदिअंत उत्पत्तिप्रलय,सबआपुहिकहिदीन्ह ॥६॥

चीन्हौ चीन्हौ तुमकहा गावहुहौ अर्थात् कहाकहौहौ वहबाणीतो तुमको चीन्हि नहीं परी काहेते बाणी आपही कहतजाय है कि जाकी उत्पत्तिहोयहै ताकी प्रलयभी होय है; जाकी आदि होयहै ताको अंतहू होयहै, तातेजेते पदार्थ जगत्में बाणी आदिदैकैहैं ते मन बचनके परे नहीं हैं । औ जोचीन्हैहै ताको निर्मल अंग ह्वोयजायहै। यहजो कह्यो ताते यहदेखाय दियो कि जब

मनादिक एको नहीं रहिजायहैं, तब मन वचनके परे जो पुरुषहै सो वह मुक्तजीवको हंसरूप देइ है ताको पायकै तेहिहंसरूपके इन्द्रिनते साहबको देखैहैं सो याकोप्रमाण बेदमें है ॥ "मुक्तस्यविग्रहोलाभः" इतिकठशाखायाम् । सो यह बिचारनहीं करै हैं बाणीकेफेरमें ब्रह्महूं भूलिगये सो आगे कहैहैं ॥ ६ ॥

इतिचौथीरमैनीसमाप्तम् ।

अथ पांचवीं रमैनी ।

चौपाई ।

कहँलौंकहौंयुगनकीबाता । भूलेब्रह्म न चीन्हे त्राता ॥ १ ॥
हरिहर ब्रह्माकेमनभाई । बिबि अक्षरलै युगतिबनाई ॥ २ ॥
बिबिअक्षरकाकीनबिधाना।अनहदशब्दज्योतिपरमाना ३॥
अक्षरपढ़िगुनिराहचलाई । सनकसनन्दनकेमनभाई ॥ ४ ॥
वेदकिताबकीन्हबिस्तारा । फैलगैलमनअगमअपारा॥ ५ ॥
चहुंयुगभक्तनबांधलबाटी । समुझिनपरैमोटरीफाटी ॥ ६ ॥
भैभै पृथ्वीचहुंदिशिधावै । सुस्थिरहोयनऔषधपावै ॥ ७ ॥
होयभिस्तजोचितनडोलावै ।खसमैंछाड़िदोजखकोधावै८॥
पूरुब दिशा हंसगति होई । है समीप सँधि बूझै कोई ॥ ९ ॥
भक्तौभक्तिनकीनशृंगारा । बूड़िगयेसबमांझहिंधारा ॥१०॥

साखी ॥ बिनगुरुज्ञानैदुन्दभो, खसमकही मिलिबात ॥
युगयुग कहवैया कहै, काहु न मानीजात ॥११॥

कहँलौंकहौंयुगनकीबाता । भूलेब्रह्म न चीन्है त्राता ॥१॥
हरिहर ब्रह्माकेमनभाई । बिबि अक्षरलै युगतिबनाई ॥ २ ॥

युगनकी बातमैंकहांलोंकहौं मनबचननके परेजोहै ताकीबाटब्रह्मो भूलिगयेहैं जो बाट पाठहोयहै तोयह अर्थहै औजोत्राता पाठ होयहै तो यहअर्थ है कि सबके त्राताकहे रक्षक जो साहब ताको ब्रह्मा भूलगयेहैं १ जौन रामनामको अर्थ जगत्मुख लैके बाणी औसमष्टि जीव आदि जगत् रच्योहै तौनेयुगतिब्रह्मोविष्णु महेशके मन में भावत भई सो दूनो अक्षर रामनाम को लैकै रचत भये ॥ २ ॥

बिबिअक्षरकाकीनबिधाना।अनहदशब्दज्योतिपरमाना ३॥
अक्षरपढ़िगुनिराहचलाई। सनकसनन्दनकेमनभाई ॥ ४ ॥

ओई जे द्वै अक्षरहैं तिनको बिधान करतभये (और जो बंधान पाठहोई तौ बंधान करतभये)। कहांबिधानकियो कि ज्योतिरूपी जोहै आदिशक्ति रेफरूप अग्निबीज परा जाकोमंगल में पांचब्रह्ममें लिख्यो है ताहीतें अनहद शब्द उठावत भये मनमें जो कुछ कहनेकी बासना आई चित्तमें सो मूलाधारकी जोहै ज्योति तौनेमें मन मिल्यो कहे संकल्पउठ्यो तबवह ज्योति डोली ताते कछु पवनको संचारभयो ताते नादकी भकटता भई तब वह पराबानी उठी सो पश्यंती मध्यमाह्वै त्रिकुटीके ऊपर मकारहै विन्दुरूपसहस्र कमलमें तहां टकारपाय बैखरी ये तीनरूपह्वैकैबाहरको आई। सो जहां अग्निको औपवनको संयोग होयहै तहां जोशब्दहोयहै सो अनहद कहावैहै। सो वह बाणी जो बाहर आई सोसम्पूर्ण अक्षर भै। तौने पढ़ि गुणिकै सनक सनंदन जे जीव हैं तिनके मनमें भावत भई अथवा सनकसनंदनादिक जे ब्रह्माकेपुत्र तिनके मनमें भावत भई सो वहै राह चलावत भये ॥ ३ ॥ ४ ॥

वेदकिताबकीन्हविस्तारा। फैलगैलमनअगमअपारा ॥५॥

तेई अक्षरनको लेकै वेद किताब कुरान पुरान जेहैं तिनको बिस्तार करतभये। सो सबके मनमें फैलगैल कहे फैलजात भई अर्थात् जाकेमनमें जौन गैलनीकी लगी सोचलतभयें। सोवहगैल तोभूलहीगये बहुतगैल ह्वैगई। अपने अपने मतनकी अपनी अपनी गैलकहैहैं कि यही सिद्धांतहै। तिहिते नानासिद्धांत ह्वै गये जोसिद्धांतहै ताको तो पावै नहीं। वेदादिकनको कुरानादिकनको कह-

नलगें कि अगमहै अपारहै काहेतें कि नानामतहैं तिनमेंवेदकुरानको प्रमाण सब मेंहै सो एक सिद्धांतमें निश्चय काहूकी न होत भई अथवा अगम अपार जो धोखा ब्रह्महै सोई सबके सिद्धांतमें फैलगयो कहै ब्रह्महीं रहिगयो अर्थात अपने अपने मतनमें सिद्धांत वही ब्रह्महीको करत भये । सो वह धोखा तो अगम अपारहै काहूको मिलबइ नहीं कियो ॥ ५ ॥

चहुंयुगभक्तनबांधलबाटी । समुझिनपरैमोटरीफाटी ॥ ६ ॥
भैभै पृथ्वीचहुंदिशिधावै । सुस्थिरहोयनऔषधपावै ॥ ७ ॥

चारिहुयुगके नाना देवतनके जेभक्तहैं ते अपनी अपनी राह संसार छुटवेकी बांधत भये तबहूं वह सिद्धांत न समुझि पर्‍यो काहेते कि बहुत राह ह्वैगई रामनामके संसार मुख अर्थमेंहै तो सब मतबनेही हैं परंतु साहबमुख जो अर्थ है रामनामको ताको भूलही गये । भरमकी जो है मोटरी सो फटी कहे पण्डित भये पढ़े भरम नाशकी उपायकरनलगे अर्थात् शास्त्रनके अर्थ बिचार-नलगे यही फटिबो है सो वह राह तो पाई नहीं बहुत राह ह्वैगई तब नाना प्रकारकी शंकाउठी भरम फैलिरह्यो नाना शास्त्रनके सिद्धांतनमें वेदको प्रमाण सबहीमें मिलैहैं काको सांच कहैं काको असांच कहैं ताते शास्त्रनमें एको सि-द्धांत न करिसकें ६ तब जीवजेहैं ते भै भै पृथ्वीमेंचारों ओर भ्रमन लगे खोजनलगे एकहु मतको सिद्धांत नहीं पावैहैं सो यहरोगकी औषध, जो साहब-को जानै है ताही, बिरले संतके पासमें है सो तौ पावत न भये औरे और में लगे ताते स्थिर न होत भये ॥ ६ ॥ ७ ॥

होयभिस्तजोचितनडोलावै । खसमैंछोड़िदोजखकोधावै ८ ॥
पूरुबदिशाहंसगतिहोई । है समीप संधि बूझैकोई ॥ ९ ॥

जो चित्त न डोलावै स्वधर्ममें चलै तौ भिस्त जो स्वर्ग सो होय है अथवा जौ-नें जौने देवतनकी उपासना करैहै तिनके लोकजायहै अथवा यज्ञपुरुषकी आरा-धना करिकै स्वर्गजायहै औ खसम कहे मालिक ऐसे जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनको

भुलाइकै सब जीव दौरै हैं मुक्तकहांते होयँ । दोजख जो नरकहै ताहीमें परैहैं । इहांस्वर्गहूको नरकही मानिकै कहैहैं काहेते कि खसमके भूले जो स्वर्गहू जायगो तौ दुःखही पावैगो आखिर गिरिही परैगो ॥ ८ ॥ पूर्व दिशा कहे सबके पूर्व जब शुद्धजीव रह्योहै कहे जब शुद्धह्वैकै अपनेस्वस्वरूपको चीन्है तब साहब हंसस्वरूप देय है । सो वा साहबको बिचार कर्मके बाहिरहै सो याकी जो संधिहै कहे बिचारहै सो समीपही है । जो अपने स्वरूपको चीन्है तौ साहब हंसरूप देवै करै परन्तु बूझत कोई कोई है ॥ ९ ॥

भक्तौभक्तिनकीनशृँगारा । बूड़िगयेसबमांझहिधारा ॥१०॥

ज्ञान मिश्रावाले जेभक्तहैं ते भक्तिनि जो माया तेहिते शृंगार करतभये कहे बिचार करतभये कि हमहीं ब्रह्महैं । वह मनकी धारामें बूड़िगये । कहां बूड़े ? कि यहसब मिथ्याहै यहकहतकहत एक अनुभव सिद्धांतराख्यो सो अनुभवजीव को है ताते मनते भिन्न नहीं है वही मनकी मांझ धारामें बूड़िगये ॥ अथवा साहबको छोड़िकै जे नाना देवतनके भजन करैहैं ते भक्त भक्तिनि कहावैं हैं ते साहबको तो न जान्यो शृंगार करतभये कहे नानावेष बनावतभये कोई छिद्र-नांकोकी ओर चंदनदियो कोई मृत्तिका दियो कोई राख लगायो इत्यादिक नानावेष बनावत भये ते सब संसाररूपी समुद्रकी मांझ धारामें बूड़िगये॥१०॥

साखी ॥ विनगुरुज्ञानै द्वन्द्वभो, खसमकही मिलिबात ॥
युगयुग कहवैया कहै, काहू न मानीजात ॥११॥

खसम जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं ते मिलिबात कही कहे अपनो रामनाम बतायो तामें द्वैअर्थ रह्यो एकसाहबमुख एकसंसारमुख सो आदिमङ्गल में लिखिआये हैं । सोसबते श्रेष्ठ गुरुसाहब तिनको ज्ञान तो नहीं भयो संसारमुख अर्थ ग्रहण कियो ताते द्वन्दकहे जन्ममरण दुःख सुख स्त्री पुरुष ज्ञान अज्ञान इत्यादिक संसारमें होतभयो सो कबीरजी कहैहैं कि युगयुगमें कहनहार जो मैंहौं कबीर सो कह्यो मेरीकही बात काहूसों नहीं मानी जातहै ॥ ११ ॥

इतिपँचईरमैनीसमाप्तम् ।

अथ छठी रमैनी ।

चौपाई ।

वर्णहुं कौनरूप औ रेखा । दूसर कौन आय जो देखा १
औ ओंकार आदिनहिंवेदा । ताकर कहौंकौन कुलभेदा २
नहिंतारागणनहिंरविचंदा । नहिंकछुहोत पिताके विंदा ३
नहिंजलनहिंथलनहिंथिरपवना।कोधरैनामहुकुमकोबरना४
नहिंकछुहोतदिवसअरुराती । ताकरकहहुकौनकुलजाती५
साखी ॥ शून्यसहज मनस्मृतिते, प्रकटभई यकज्योति ॥
बलिहारी तापुरुष छवि, निरालंब जो होति ६॥

वर्णहुंकौनरूपऔरेखा । दूसरकौन आय जो देखा १
औ ओंकार आदि नहींवेदा । ताकरकहौंकौनकुलभेदा २

वह जो अनिर्वचनीयहै ताको कौनरूप रेखावर्णनकरौं मैंहीं नहीं बर्णन करि सकौंहौं तौ दूसर कौन आयजोदेख्यो ॥ १ ॥ प्रणवको वेदहू नहीं जानेहैं काहेते कि प्रणव एकाक्षरब्रह्मवेदनको आदि है सो तौ प्रणवहू नहीं रह्यो ताहूको आदि है उसको कौन कुल भेद कहौं ॥ २ ॥

नहिंतारागणनहिंरविचंदा । नहिंकछुहोतपिताकोविंदा ३
नहिंजलनहिंथलनहिंथिरपवना।कोधरैनामहुकुमकोबरना४
नहिंकछुहोतदिवसअरुराती । ताकरकहहुंकौनकुलजाती५

न तारागण न सूर्य्य न चंद्रमा न पिताको बिंदु एकौ नहीं रहे जाते सब उत्पत्तिहै ॥३॥ पृथ्वी अप् तेज, वायु आकाश ये एकौ नहीं रहे तहां कौन नाम धरतभये औ काको हुकुम वर्णन करत भये ॥ ४ ॥ औ तहां न दिवस होत भयो न रात्रि होत भई ताकी कौन कुलजाति कहौं ॥ ५ ॥

साखी ॥ शून्यसहजमनस्मृतिते, प्रकटभई यकज्योति ॥ बलिहारी तापुरुषछवि, निरालंब जो होति ॥ ६ ॥

सहज शून्य जो (प्रकाश देखिपरै) ब्रह्मताके मनके स्मरणते एक ज्योति प्रकटहोयहै सो सालंबैहै, योगीजन ब्रह्माण्डमें देखै हैं । औ वह जो अनुभव ब्रह्महै सोऊ सालंबैहै काहेते कि वाहूको मन करिकै अनुभव होयहै सो कबीर-जी कहै हैं कि ये दोऊ सालंबैहै कि तिनकी बलिहारी मैं कहां जाऊं सबके मालिक निरालंब परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनकी छबिकी मैं बलिहारी जाऊँहौं साहब निरालंब काहेतेहैं कि जीवकी जेती सामग्रीहैं मनादिक इंद्रियन-करिकै ज्ञानकरिकै अनुभव करिकै साहब न देखेजायहैं न जाने जायहैं जब आपही अपनो हंसरूप देय हैं तब वह रूप करिकै देखेजायहैं औ आपही ते जानेजाय हैं तामें प्रमाण ॥ (सो जानै जेहि देहु जनाई । जानत तुम्हैं तुम्हैं ह्वैजाई ॥ तुम्हरी कृपा तुम्हैं रघुनन्दन । जानहिं भक्त भक्ति उरचंदन १) अर्थ हे श्रीरामचन्द्र जाको तुमजनाइ देहुहौ सो जानै है । जो कहो हमारहीं जनाये कैसे जानैगो वेदशास्त्रतो सबजनैतेहैं तौ एकबड़ो अवरोधहै जबतुम्हारे जानवेके लिये शमदमादिक कियो हृदय शुद्ध भयो तब आपहीको मानैहै कि, महीं रामहौं सो तुमको कैसे जानिसकै । या हेतुते तुम्हारीकृपै ते तुमको जानैहै अथवा तुमको जानैहै तब तुमही ह्वैकै जानैहै तुम्हारे लोकको जायहै । अर्थात् । जब तुमने वाको हंसरूप दियो तब वह पांचौ शरीर ते भिन्नह्वैकै हंसरूपमें स्थितभयो तुमको जान्यो वह हंसस्वरूप कैसोहै तुम्हारी अनिर्बचनीयासभाक्तिरूप जो चन्दनहै सो वाके उरमें लग्योहै ताकी शीतलता ते वह धोखा ब्रह्मके ज्ञानकी गरमीनहीं आयसकैहै । जिनको कृपाकरिकै तुम हंसरूप देहुहौ सो जानैहै तुमको सो ऐसे जे साहब हैं परमपुरुष निरालंब तिनको कबीरजी कहैहैं कि मैं बलिहारी जाऊँहौं परमपुरुष श्रीरामचन्द्रही हैं तामें प्रमाण ॥ (धर्मात्मासत्यसंधश्चरामोदाशरथिर्यदि । पौरुषेचाप्रतिद्वंद्वःशरैनंजहिरावणिम्)॥ इतिबाल्मीकीये ॥ लक्ष्मण जीने मेघनाद के मारत में शपथ कियो है कि जोपौरुषमें अप्रतिद्वंद्वी श्रीरामहोयँ कहेपुरुषत्वमें वैसो दूसरो न होय तो हमारो

बाण मेघनाद का शिरकाटि लेइ सो मेघनादको शिरकाटि लियो: औ भागवत हूमें हैं ॥ (ध्येयंसदापारिभवघ्नमभीष्टदोहं तीर्थास्पदंशिवविरंचिनुतंशरण्यम् ॥ भृत्यार्तिहंप्रणतपालभवाब्धिपोतंवंदेमहापुरुषतेचरणारविंदम् १) अर्थ हे महापुरुष तिहारेचरणारबिंदकीहम बंदना करैहैं कैसे तिहारे चरणारबिंदहैं कि सब कालमें ध्यानकरिबेके योग्यहैं औ परिभव जो तिरस्कार ताकेनाश करनेवाले हैं अर्थात् जो कोई ध्यानकरै है ताको तिरस्कार लोकमें कोई नहीं करैहै । औ मनोबांछित पूर्ण करनेवाले तीर्थ जे हैं तिनके आश्रय भूत औ शिव विरंचि ते स्तुतिकरेगये शरण्यमकहे रक्षाकरनेमें समर्थ औ दासनके पीडा हरणवाले दीननके पालनवाले औ संसार समुद्रके नौकारूप । तामें प्रमाण कबीरजीको ॥ (साहब कहियेएक को, दूजा कहा न जाय । दूजासाहब जो कहै, बादबितंडै आय) ॥ ६ ॥

इतिछठवीं रमैनी समाप्तम् ।

अथ सातवींरमैनी ।

(जीवमुख)

जहियाहोतपवनहिंपानी । तहियासृष्टिकौनउतपानी ॥१॥
तहिया होत कली नहिं फूला।तहिया होत गर्भ नहिंमूला २
तहिया होत न बिद्या वेदा । तहिया होत शब्द नहिं खेदा ३
तहिया होत पिंड नहिं बासू।नाधर धरणि न गगन अकासू४
तहिया होत गुरू नहिं चेला ।गम्य अगम्य न पंथ दुहेला ५
साखी ॥ अविगति की गति क्याकहौं, जाकेगाँउ न ठाँउ॥
गुण बिहीना पेखना, का कहि लीजै नाँउ ॥६ ॥

जहियाहोतपवननहिंपानी। तहियासृष्टिकौनउतपानी॥१॥
तहियाहोतकलीनाहिंफूला। तहियाहोतगर्भनाहिंमूला॥२॥

जहिया कहे जेहि समय सृष्टि नहीं रही जेहि समय न पवन रह्यो न पानी रह्यो तब सृष्टिको कौन उत्पन्नकियो १ न तब कली रही न फूल रह्यो अर्थात् न बालरह्यो न वृद्धरह्यो न गर्भरह्यो न गर्भको मूलबीज रह्यो॥ २ ॥

तहियाहोतनविद्यावेदा। तहियाहोतशब्दनाहिंखेदा॥ ३ ॥
तहियाहोतपिंडनाहिंवासू। नाधरधरणिनगगनअकासू॥४॥
तहियाहोतगुरूनाहिंचेला। गम्यअगम्यनपंथदुहेला॥ ५ ॥

न वेदरह्यो न चौदहौ बिद्यारहीं न शब्द रह्यो न खेद कहे दुःखरह्यो ३ न पिंडरह्यो न पिंडमें जीवको बासरह्यो न अधरकहे पातालरह्यो ना धरणिरही न आकाश रह्यो ४ न गुरूरह्यो न चेला रह्यो न गम्यकहे सगुणरह्यो न अगम्य कहे निर्गुणरह्यो औ दुहेला कहे दूनोंपंथ नहींरहे॥ ५ ॥

साखी॥ अविगतिकीगतिक्याकहौं, जाकेगाँउनठाँउ॥
गुणविहीना पेखना, काकहिलीजै नाँउ॥ ६ ॥

वह जो अविगतिकहे अव्यक्त जो नहीं प्रकटहोय, धोखा ब्रह्म है निराकार ताकेगाँउ ठाँउ नहीं है वह गुणकरिकै विहीन जो निर्गुणहै ताको पेखना कहे देखिबेको का कहिकै नामलीजै कि यहहै वातो कुछबस्तुही नहीं है॥ ७ ॥

इति सातवीं रमैनीसमाप्तम्।

अथ आठवीं रमैनी।

(वेदांत विचार)

तत्त्वमसी इनके उपदेशा। ईउपनिषद् कहैं सन्देशा॥ १ ॥
ऊनिश्चय उनकेबड़भारी। वाहिकिवर्णकरै अधिकारी॥२॥
परमतत्त्वकानिजपरमाना। सनकादिकनारदसुखमाना॥३॥

याज्ञवल्क्यऔजनकसँबादा । दत्तात्रयी वहै रसस्वादा ॥४॥
वहै वसिष्ठ राममिलि गाई । वहै कृष्णऊधवसमुझाई ॥५॥
वहै बात जो जनक दृढाई । देहै धरे विदेह कहाई ॥ ६ ॥

साखी ॥ कुल अभिमाना खोयकै, जियत मुवा नहिं होय॥
देखत जो नहिं देखिया, अदृष्ट कहावै सोय ॥७॥

तत्त्वमसी इनके उपदेशा । ईउपनिषद कहै संदेशा ॥ १ ॥

तौने धोखा ब्रह्मको जौनी रीतिते गुरुवालोग उपनिषद्को प्रमाणदैकै प्रतिपादन करै हैं सो, औ सांच जो अर्थहै सो कबीरजी दोऊ तात्पर्य्य करिकै देखावै हैं । तत्त्वमसी जो श्रुति उपनिषद्को उपदेश ताको गुरुवालोग संदेश ऐसोकहै हैं संदेश कौन कहावै है कि बातको पूर्बापर नहीं समुझै वाकी कहनूति वासों कहि देइँ जो संदेशको हेतुपूछै कि कौनेहेतुते कह्यो है तो वह कहै हैं कि संदेश कहि दियो यह नहीं जानै हैं कि कौन हेतु ते कह्यो है सो ऐसे गुरुवा लोग श्रुति को तो पूर्वापर जानै नहीं हैं अक्षर मात्रको अर्थ करै हैं कि तत्त्वं ब्रह्मत्व असि तौन ब्रह्मतूही है सो जीवहीको अनुमान तौ ब्रह्महै जीव ब्रह्मकैसेहोयगो ब्रह्मतो ज्ञानस्वरूप है शुद्ध है माया कैसे धरिलावती अज्ञानी कैसेहोतो तौ गुरुवालोग कहैहैं कि वा अतर्क है तर्क न करो सो जीवहीको अनुमान तौ ब्रह्महै जीव ब्रह्मकैसे होयगो । सो श्रुतिको अर्थ यहहै कि पूर्वषोड़श कलात्मकजीवको कहिआये हैं ताहीको कहै हैं कि त्वमसि तौन षोड़श कलात्म जीव है षोड़श कला तोहींमें हैं तू उनते भिन्न है शुद्ध है यह जीवको स्वरूप लखायो सो नहीं समुझै हैं सो या बात मेरे तत्त्वमस्यार्थबादमें विस्तारतेहै ॥ १ ॥

ऊनिश्चयउनकेबड़भारी । वाहिकिबरणकरैअधिकारी॥२॥

ऊ कहे वह जो धोखा ब्रह्महै ताहीकी निश्चय उनकेबड़ीभारीहै वाहीकी बरण कहे वही धोखा ब्रह्मको अधिकारी जे चेलाहैं तिनको बरणकरै है अर्थात

अंगीकार करायदेइ है। परमतत्त्व जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको नहीं जानेहैं जे जाने हैं तिनको कहैहैं ॥ २ ॥

परमतत्वकानिजपरवाना। सनकादिकनारदसुखमाना ३
याज्ञवल्क्यऔजनकसँवादा । दत्तात्रयीवहैरसस्वादा ४

परमतत्त्व जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनको निजते परमानत भये याहीहेतुते सनकादिक औ नारदजेहैं ते सुखजानत भये अर्थात् सुखीहोतभये भाव यहहै कि जे कोई परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको अपने ते परमानैहैं तेई सुखीहोयहैं ३ औफिर कहै हैं याज्ञवल्क्य औ जनकको सम्बाद भयोहै सो याज्ञवल्क्य कह्यो जोपरम तत्त्व श्रीरामचन्द्र सो जनकजी जान्योहै औ वही तत्त्व दत्तात्रयी चौबीसगुरुबनाय संसारते वैराग्यकैकै तात्पर्य्य वृत्तितजान्यो है ॥ ४ ॥

वहैवशिष्ठराममिलिगाई । वहैकृष्णऊधवसमुझाई ॥ ५ ॥
वहैवात जो जनकदृढ़ाई । देहै धरे विदेह कहाई ॥ ६ ॥

वही परमतत्त्व जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको मिलिकै गायकहे कहिकै वशिष्ठजी जान्यो है औ वही परमतत्त्व तात्पर्यवृत्ति करिकै कृष्णचन्द्र ऊधवको उपदेश कियोहै ५ वही परमतत्त्व जे श्रीरामचन्द्रहै तिनको दृढ़स्मरण कैकै देहै धरे जनकजी बिदेह कहावत भये इहां द्वैजनक जो कह्यो सो वा वंश में एक जनक नाम करिकै राजा भये हैं तेहिते बिदेह होत आये और एक रघुनाथ जी के श्वसूर श्रृध्वज भये हैं तिनको जनक कहत रहे हैं तिनको कह्या है सो वे और जनक हैं। ये और जनक हैं ॥ ६ ॥

साखी ॥ कुलअभिमानाखोयकै, जियतमुवानाहिंहोय ॥
देखत जोनहिंदेखिया, अदृष्टकहावे सोय ॥ ७ ॥

ऐसे जे परमतत्त्व श्रीरामचन्द्र हैं तिनको जानि आपनो कुलाभिमान खोयकै कहे त्यागिकै जियतै मुवा असनाभये अर्थात् हंसस्वरूप में टिकिकै पांचौ शरीर ते भिन्न ना भये। देखत जो ना देखै सो अदृष्टि कहावै सो परमतत्त्व जे श्री-

रामचन्द्र हैं तिनको वेद, पुराण, कुरान, शास्त्र, महात्मा इनकेद्वारा देखतऊहै औ जिनको बर्णन करिआये सनकादिक महात्मन को उद्धार ह्वैगयो यहौ ज्ञान-दृष्टि देखतऊ हैं परन्तु ये मूर्ख जीव गुरुवालोग ना जाने तेहिते अदृष्टि कहावै हैं कहै आँधरे कहावै हैं । परमतत्त्व श्रीरामचन्द्रही हैं तामें प्रमाण । (रामएवप रंतत्त्वं श्रीरामोब्रह्मतारकम् ॥ इतिहनुमदुपनिषद्) जो यह कहौ शुकसनकादिक येऊ न जान्यो तौ अब को जानैगो नास्तिकपना आवै बस्तु मिथ्या होय है ताते साधु तौ जानतई हैं जिनको साहब जनाय दियो है कबीरौजी कहै हैं ॥ (ध्रुवप्रह्लादउबारिया सोहरिहमरेसाथ । हमको शंकाकछुनहीं, हमसेवैं रघुनाथ)

इति आठवीं रमैनी समाप्तम् ।

अथ नवीं रमैनी ।

चौपाई ।

बांधे अष्ट कष्ट नौ सुता । यमबांधे अंजनिके पूता ॥ १ ॥
यमकेबाहनबांधिनिजनी । बांधेसृष्टिकहालौंगनी ॥ २ ॥
बांधे देव तेंतीस करोरी । सुमिरतबंदि लोहगैतोरी ॥ ३ ॥
राजासुमिरै तुरियाचढ़ी । पंथीसुमिरि नामलैबढ़ी ॥ ४ ॥
अर्थ बिहीनासुमिरैनारी । परजासुमिरैपुहुमीझारी ॥ ५ ॥
साखी ॥ बँदि मनाय फल पावहीं, बँदि दिया सो देव ॥
कह कबीर ते ऊबरे, निशि दिन नामहिं लेव ॥ ६ ॥

बांधे अष्ट कष्ट नौ सूता । यमबांधे अंजनीके पूता ॥ १ ॥

अष्ट जे अष्टाङ्ग योगहैं औ कष्ट जो बिज्ञानहै तेहिते बांधिगयो धोखा ब्रह्मको बिज्ञानरूपकष्टहै तामें प्रमाण ॥ (अव्यक्ताहिगतिर्दुःखंदेहवद्भिरवाप्यते)॥ इतिगीतायां ॥ श्रेयःश्रुतिंभक्तिमुदस्यते विभो क्लिश्यन्तियेकेवलबोधलब्धये । तें-

षामसौक्लिशलएवशिष्यते नान्यंयथास्थूलतुषावघातिनाम् ॥ इति भागवते) औ नौ सूतकहे सगुना जो नवधा भक्ति है तेहिकरिकै बांधिगयो औ यमकहे दुई बिद्या औ अविद्या तेहिकारिकै अंजनी जो माया ताके पूत जे जीव हैं ते सब बांधि गये ॥ १ ॥

यमकेबाहनबाँधिनिजनी । बाँधेसृष्टिकहांलौंगनी ॥ २ ॥
बाँधे देवतेंतीस करोरी । सुमिरतबंदिलोहगैतोरी ॥ ३ ॥

औ यम जे बिद्या अबिद्या दूनों मायाहैं तिनके सब जीव बाहन भये । काहेतें कि उनहींको ढोवन लगे उनहींकी चाल चलन लगे औ वै जे दूनों मायाहैं ते बांधिनिजनी कहे फेरिफेरि जीवनको उत्पन्न करिकै संसार दैकै बांधि लियो औ शीशमें चढी रहती हैं सो अनादि कालते बँधीजो सृष्टि ताको कहांलौं गनी २ तेंतीसकोटि देवता बांधिगये तिनको सुमिरतमात्रहीमें बंदि कहे लोहेकी बेड़ी में परिके तोरी कहे मारेगये अथवा तेंतीसकोटि देवता बांधिगये तिनके सुमिरतमात्रहीमें बन्दी कहे लोहेकी बेरी में परिके तोरि कहे मारि गये अथवा तेतीस कोटि देवता बांधे गये तिनके सुमिरत मात्रहीबन्दीकहे लोहेकी बेरीमें परिकै तोरिकहे मारेगये अथवा तेतीसकोटि देवता बांधेगये तिनके सुमिरतमात्रमें का बन्दि लोहेकी बेरी जीव तोरिगये ? नहीं तोरिगये ॥ ३ ॥

राजासुमिरै तुरियाचढ़ी । पंथीसुमिरि नामलैबढ़ी ॥ ४ ॥
अर्थबिहीना सुमिरैनारी । परजासुमिरैपुहुमीझारी ॥ ५ ॥

तुरीया अवस्था को नामहै तामें ज्ञानी लोग चढी कहे आरूढ ह्वैकै राजित होयहैं ताहीते राजा कहै हैं ते अहंब्रह्मको सुमिरै हैं औ पंथी जे अनेकपंथ चलावन वालेहैं ते नानामतके पंथमें आरूढ़हैं अपने अपने इष्टदेवनके नामलैकै साधन में बढ़ेहैं सोयहौ बिरही हैं ४ अर्थ बिहीना कहे अर्थ जो है द्रव्य ताको वैराग्य ते त्यागि बनमें बसिकै अपने इष्टदेवनको सुमरै हैं ते औ पर जो ब्रह्म है तामें जो जायोचाहै सारी पुहुमी सहित सुमिरैहै अर्थात् सर्वत्र ब्रह्महीदेखैहै ते ये दोऊ सगुण निर्गुण उपासक नारी जो माया है ताहीको सुमिरैहैं काहेते कि जहांलौं मन जाय है तहां लौं सब माया है ॥ ५ ॥

साखी ॥ बँदिमनायफलपावहीं, बंदिदियासोदेव ॥
कहकबीरतेऊबरे, निशिदिननामहिंलेव ॥ ६ ॥

बंदि कहे विद्या अविद्यारूप जो बेरी ताको जे मनावै हैं ते तौनै फल-पावै हैं अर्थात् जे स्वर्ग्गादिक की चाह करैहैं ते लोहेकी बेरीमें परे । जे अहं-ब्रह्मास्मि मानेते सोने की बेरीमें परे । सो जोने इष्टदेवतनको मनाये सोब-न्दींही फल देतभये अथवा ते फल देवते दियेहै जिन उपासना कियेहै बन्दि-में नाय कहे बन्दिमें डारिदिये हैं तेई फल पावै हैं । अर्थात् स्वर्ग्गादिक जे फलहैं तेसब बंदिमें डारनवारे हैं । सो बंदि डारनवारो जे फलदेय हैं तेकादेव हैं ? नहीं हैं सो कबीरजी कहे हैं कि जे श्रीरामचंद्र को नाम निशिदिन लेयहैं तेई उबरे हैं ॥ ६ ॥

इति नवीं रमैनी समाप्तम् ।

अथदशवीं रमैनी ।

चौपाई ।

राही लै पिपराही बही । करगी आवत काहु न कही ॥ १ ॥
आई करगी भो अजगूता।जन्म जन्म यम पहिरे बूता ॥ २ ॥
बुतापहिरयमकरै पयाना।तीनलोकमें कीन समाना ॥ ३ ॥
बांधे ब्रह्मा विष्णु महेशू । पार्वती सुत बांध गणेशू ॥ ४ ॥
बँधेपवन पावक नभनीरू।चन्द्र सूर्य्य बांधे दोउ बीरू ॥ ५ ॥
सांचमन्त्र बांधेसबझारी । अमृत वस्तु न जानै नारी ॥ ६ ॥
साखी ॥ अमृत वस्तु जानै नहीं, मगन भये कित लोग ॥
कहहिं कबिर कामोनहीं, जीवह मरण न योग ॥ ७ ॥

राही लैपिपराहीबही । करगीआवतकाहुनकही ॥ १ ॥

राहीकहे सुराहके चलनवाले औ पिपराही कहेपीपरकी बनिका की नाई अनेक मति में डोलनवाले जे जीव ते राही जे हैं तिनहूं को लैकै संसारसागर में

बहतभये। करगी बूड़ाकोजलजो छिटकैहै ताको कहैहैं। सो यह माया ब्रह्मको जो धोखारूपबूड़ाहै ताकेआवतमें काहुनकही कियाधोखाब्रह्ममेंनपरोबूड़िजाउगे ॥१॥

आईकरगीभोअजगूता । जन्मजन्मयमपहिरेबूता ॥ २ ॥

जब करगी आई तब अयुक्ति होत भई कैसी भई कि, जन्म जन्म कहे जब जब ब्रह्मांडनकी उत्पत्तिभई तब तब यम पहिरे बूता कहे यमको काल निरंजन जेहैं तिनको बूता कहे पराक्रम काल पहिरत भयो अर्थात् काल तो जड़है निरंजनै को पराक्रम लैकै जीवनको मारैहै ॥ २ ॥

बुतापहिरियमकीनपयाना। तीनिलोकमोकीनसमाना॥३॥
बांधे ब्रह्मा बिष्णु महेशू । पार्वती सुत बांधगणेशू ॥ ४ ॥
बँधेपवनपावकनभनीरू । चंद्रसूर्य बाँधे दोउबीरू ॥ ५ ॥

वही निरंजन को बुताकहे पराक्रम काललैकै पयान कियो सो लव दिन पक्ष मास वर्ष युग कल्परूप करिकै तीनलोकमें समाइ जातभयो ॥ ३ ॥ जौन काल तीनलोकमें समानो ताहीमें ब्रह्मा विष्णु महेश षण्मुख गजमुखादि आयुर्दाय प्रमाण रूपते सब बँधतभये ॥ ४ ॥ अरु ताहीमें पवन औ पावक औ पानी औ चन्द्र सूर्य्य नभ सब बँधत भये ॥ ५ ॥

सांचमंत्र सबबांधे झारी। अमृत वस्तु न जानै नारी ॥६॥

झारादैकै जे साहबके सांचमंत्रहैं तिनहूंको काल बांधिलियो काहेते कि जो साहबके मंत्रको अर्थप्रभाव सोई आवरण है औ साहबको ज्ञानरूप अमृत वस्तु जानि परत भये नारी जो आवरणकैलियो माया तामेंपरे जे जीव ते न जानैं जो जानैंगे तौ हमारेमारे न मरैंगे याही हेतुते बांध्योहै ॥ ६ ॥

साखी ॥ अमृत वस्तु जानै नहीं, मगन भये कित लोग॥
कहैंकबिरकामोनहीं, जीवहमरन न योग ॥ ७ ॥

अमृत बस्तु जो साहब है ताको तो न जान्यो कौने कुत्सित संसारमें तू मगन भयो कौन साहब जो कामोनहीं अर्थात् कामें नहीं है सबहीमें है सो

ऐसो अमृत बस्तु साहब समीपई है वा जीवका जननमरण योगहै अर्थात् नहीं है व्यंग्यते या कहैहैं कि जीव महामूढ़है । काहेते जो साहब को जानि लेइ तो जन्म मरन छूट जाई काहे ते के रक्षक साहबही है । अथवा जिनको सांच मंत्र माने रहे ते तो सब बांधिगये अमृत वस्तु जो रामनामको साहबमुखअर्थ सो जानतही नहींहै याते जनन मरण न छूटतभयो ॥ ७ ॥

अरु जो मथम तुकमें लोइ और दूजे तुकमें जीवहिमरन नहोइ ऐसा पाठ होवे तौ यह अर्थ कि, लोइ कही लपट जाइहै मकाश तौने ही मे सब लीन भये, जो कहो लीन भये जीव न रहिगये तो जीव बनेहैं काहेते कि, जीवको मरन नहीं होइहै । वह ब्रह्मका मैं नहीं ?

इति रमैनी दशवीं समाप्तम् ।

अथ ग्यारहवीं रमैनी ।

गुरुमुख । चौपाई ।

आँधरगुष्टिसृष्टिभैबौरी । तीनिलोकमहँलागिठगौरी ॥ १ ॥
ब्रह्महिं ठग्यो नागसंहारी । देवन सहित ठग्यो त्रिपुरारी ॥ २ ॥
राज ठगौरी विष्णुहिं परी । चौदह भुवन केर चौधरी ॥ ३ ॥
आदि अंतजेहि काहु न जानी । ताको डर तुम काहे मानी ॥ ४ ॥
ऊ उतंग तुम जाति पतंगा । यमघर किहेहु जीव कै संगा ॥ ५ ॥
नीमकीट जस नीमपियारा । विषको अमृत कहै गँवारा ॥ ६ ॥
विषके संग कवन गुण होई । किंचित लाभ मूल गो खोई ॥ ७ ॥
विष अमृतगो एकही सानी । जिन जाना तिनविषकै मानी ८
कहा भये नल सुध बेसूझा । बिनपरचै जग मूढ़ न बूझा ॥ ९ ॥
मतिके हीन कौन गुण कहई । लालच लागे आशा रहई ॥ १० ॥

साखी ॥ मुवा अहै मरिजाहुगे, मुये कि बाजीढोल ॥
स्वप्नसनेही जगभया, सहिदानी रहिगाबोल ॥ ११ ॥

आँधर गुष्टि सृष्टिभै बौरी। तीनिलोकमहँलागिठगौरी॥१॥

साहब कैहहैं कि जे मोको ज्ञानदृष्टि करिकै नहीं देखैहैं ते जे आँधरहैं ते माया औ निराकार धोखा ब्रह्मयाहीकी गोष्ठीजोवार्ता सो करतभये। ताहीमें सारीसृष्टिबौरीह्वै जातभई कोई तौ मैंही ब्रह्महौं यहमानि अपने को मुक्तमानत भये, कोई जीवात्मैको मानै कोई शून्नहिको मानतभये कोई मायामें परि नानादेवतनकी उपासना करि अपनेको भक्तमानत भये। सो यही ठगौरी जो माया है सो तीनोंलोकमें लागतभई सो आगे कहै हैं ॥ १ ॥

ब्रह्महिंठग्योनागसंहारी। देवनसहितठग्योत्रिपुरारी ॥ २ ॥
राजठगौरी विष्णुहिंपरी। चौदहभुवन केर चौधरी ॥ ३ ॥

मायाब्रह्माकोठग्यो ते संसार की उत्पत्ति करनलगे शेषनागको संहारिकै कहेबांधिकै नागकहजाई जो पाठहोय तौ मायाब्रह्मा को ठगिसि औ शेषनाग कहँजाइकै ठगिसि सौ शेषनाग पृथ्वीको भारशीशमें धरतभये। देवन सहित महादेवको ठग्यो ते संसारके संहारमेंलगे। देवता अपने अपने काममें लगे २ औ चौदह भुवन को चौधरी विष्णुको करिकै ठग्यो ते संसारको पालन करनलगे। याहीरीतिते मायाते जेगुणाभिमानी रहे तिनको सबकोठग्यो ॥ ३ ॥

आदिअंतज्यहिकाहुनजानी। ताकोडरतुमकाहेनमानी॥४॥

फिरिकैसीहै माया जाको आदि अंतकोई जनबई न कियो काहेते न जान्यो वा कुछबस्तुही नहीं है भ्रमहीमात्रहै। जेतोपदार्थ देखैहै सुनैहै कहैहै सो सबत्रिगुणमय है। गुण न आत्मईमें है न ब्रह्महीमें है। ताते ये सब मिथ्याहीहैं। औ धोखा ब्रह्ममिथ्याहै कैसे सो कहै हैं। सबको निराकरण करतकरत जो वा रहिजाय है ताही को मानौंहौं कि " सो ब्रह्महमहैं " ताहूको मूलअ-

ज्ञान कहौं सो जब सोऊ न रह्यो तब वह दशामें बिचारिदेखो तुमहीं रहिजाउहौ, तुम्हारोई अनुमान ब्रह्महै, ताते मिथ्याही है । जब तुम्हीं रहि गये तब तुममें तो माया ब्रह्मते छूटनेकी सामर्थ्य है नहीं जो सामर्थ्यहोती तौ पहिलेही ते तुमको काहे को बांधिलेती । याते तुम डेराउहौ कि, हमकैसेकै छूटैंगे । सो यामाया औ धोखाब्रह्मका डर तुम काहेको मानतेहौ । मैं जो अनिर्बचनीयहौं ताके तुम अंशहौ तुमहूं अनिर्बचनीय हौ नाहक धोखा ब्रह्म औ माया को अनुमान कैकै नानादुःख पावतेहौ । तुममाया ब्रह्मको भ्रमत्यागि मेरे अनिर्बचनीय नाम में लगिकै मेरे पासआवो मैं रक्षाकरि लेउँगो । यह मालिक जे श्रीरामचन्द्र हैं ते कहै हैं ॥ ४ ॥

ऊउतंगतुम जातिपतंगा । यमघर किहेहु जीवके संगा॥५॥
नीमकीटजसनीमपियारा । बिषकोअमृतमानगँवारा ॥६॥

वहजोमाया औ धोखा ब्रह्मअग्निरूपताकी उत्तुंगकहे बड़ीऊंची लपटैहैं तुमजातिकेपतंगह्वैकै वामेंकाहेजरिजरिमरौहौ । सोहेजीव नानाबस्तुनकोसंगकरि जाहीमेंमनलगायमरयो औ सोई भयो याहीभांतिजनमिकै मरिकै यमकेपासघरबनायेहौ अर्थात् या संग का प्रभावहै जो यमके यहां घरबनायेहैं ५ जैसेनीमके किरवा को नीमही पियारलगैहै, जो मिष्टान्नौ पावै तौ न खाय, ऐसे बिषरूप जो विषय ताको अमृतमानिगँवार जोजीवहैंसो खायहैं ॥ ६ ॥

बिषकेसंगकौनगुण होई । किंचितलाभमूलगो खोई॥ ७॥
विषअमृतगोएकहिसानी। जिनजानातिनविषकैमानी॥८॥

सोयाबिषरूपी विषयके संगकौनगुणहै क्षणभरेकोसुखहै औ सबकोमूल जो मेरोज्ञानसो नशायगो अनेकजन्म दुःखपावनलग्यो ७ साहब कहै हैं कि और नाना देवतन को जो नामजपिबो औ तिनहीं के लोक में जाय सुख पाइबो या तोबिष है औ मेरे नामको जपिबो मेरे लोकमें जायसुख पाइबो यातो अमृतहै सो ये दूनौं बिष अमृत एकैमें सानिगो कैसे जैसे साहबको नामलीन्हे मुक्त ह्वैजायहै साहबके लोकमें जाय सुखपावै है ऐसे औरहूदेवतनके नामलीन्हेसे

मुक्त ह्वैजायहै औ तिनके लोकमें जाय सुख पावैहै । वास्तव एकही नाम भेद-से और और कहैहै या भांतिते जे ज्ञान राखेहैं तिनके ज्ञानको मेरे अनिर्बचनीय नामरूप धामके जे जनैया हैं तिनके ज्ञानको ते विषयी मानै हैं ॥ ८ ॥

कहाभयेनलसुधवेसूझा । विनपरचै जगमूढ़ न बूझा ॥९॥
मतिकेहीनकौनगुणकहई । लालचलागेआशारहई॥१०॥

ऐसे बे सूझ जीवजिनको नहीं सूझपरैहै ते कहां शुद्धभये, नहीं भये।मैं जो अनिर्ब-चनीय ताकेपरचै बिना जगमें मूढ़जीवो तुम न बूझत भयो सो ऐसे मतिके हीन जे तुम तिनके कौनगुण कहैं लालचईमें लागेरहेहैं काहूको द्रव्यकीआशा काहूको ब्रह्मज्ञानकी आशा काहूको नाना देवतनकी आशा काहूको विषयकी आशा में फिरैहै सांचजोवेद को अर्थ मैं ताको न जानतभये अर्थात् साहबकहैहै कि मोको न जानोगे तो कबहीं बचोगे नहीं, तो वेद पुरान कहैहै कि, सब मरिजाहुगे ॥ ९ ॥ १० ॥

साखी ॥ मुवा अहै मरिजाहुगे, मुयेकी बाजी ढोल ॥
स्वप्नसनेही जगभया, सहिदानीरहिगाबोल ११॥

साहबकहैहै कि हेजीवौ मुवाजोधोखा ब्रह्म नानादेवतातिनमें जो लागौगे तोमरिजाहुगे अथात् जनमतैमरत रहौगे यातुम्हारे मुयेकी ढोल जो वेदपुराणहै सो बाजैहै कहे कहैहैं । तब तुम्हारा इष्टदेवन को स्नेह औ सबसुख जगत्को स्वप्न ऐसा ह्वैजायगा ये सब मुयेहैं ये वेदपुराण तात्पर्य्यंते डंका दैकेकहैहैं अथवा-जोगुरुवालोग ब्रह्मको नाना देवतनमें लगावै है सो सबसंसारमें मुये की ढोल बा-जैहै । मरिजाहुगे जो यामें लगौगे तो तुम्हारी सहिदानी बोलरहिजायगा । बोल कहाहै जे तुम अपने इष्टदेवनके ग्रन्थबनाय जावगे तेई रहिजायँगे कि फलानेकेबना-ये ग्रन्थहै कालपाय वोहूं न रहिजायँगे अथवा सहिदानी बोल रहिजायगा कौन जौन मेरे रामनामको संसारमुख अर्थ करि संसारी भयोहौ सोइजगत्की सहिदा-नी भेरोनाम रहिजायगो ताहीको फेरि संसारमुख अर्थकारि संसारी होउगे जब नाममें मोको जानोगे तबहीं मुक्त होउगे ॥ ११ ॥

इतिग्यारहवीं रमैनी समाप्तम् ।

अथ बारहवीं रमैनी ।

चौपाई ।

माटिक कोट पषाणकताला । सोई बनसोई रखवाला १
सो बनदेखत जीवडेराना । ब्राह्मण विष्णुएक करिजाना २
जोरि किसान किसानी करई । उपजै खेत बीज नहिंपरई ३
त्यागि देहु नर झेलिक झेला । बूड़े दोऊ गुरु अरु चेला ४
तीसर बूड़े पारथ भाई । जिन बन दाह्यो दवा लगाई ॥ ५ ॥
भूंकि भूंकि कूकुर मरिगयऊ । काज न एकस्यारसोंभयऊ ६

साखी ॥ मूसबिलारी एकसँग, कहु कैसे रहिजाय ।
यक अचरज देखौ संतौ, हस्ती सिंहहिखाय ॥ ७ ॥

माटिककोटपषाणकताला । सोईबनसोईरखवाला ॥ १ ॥

माटीका कोट यहशरीरहै मनरूप पाषाणका तालाहै कठिनभ्रमजौनेते माया औ धोखा ब्रह्ममें लग्योहै सोई भ्रमके बनको नानाबाणीमाया ताको रक्षक सोई भ्रमही है जबभ्रम मिटै तब माया धोखाब्रह्म तबहींमिटै संसारताला खुलै तबमैं सर्वत्र देखपरों ॥ १ ॥

सोबनदेखतजीवडेराना । ब्राह्मणविष्णुएककरिजाना ॥ २ ॥

तीन जो भ्रमको वनहै संसार नानाशास्त्र तिनके द्वारा देखिकेडरानजाय नाना मतनमें तुम सब नहिंपारपाये कि कौनमतलैकै संसार पारहोई ये शास्त्र एक मतनहीं कहैहैं तब डेराय ब्राह्मण भये ॥ ब्रह्मजानातिब्राह्मणः ॥ सब ब्रह्मको जानतभये: वैष्णवजेहैं ते एक व्यापक तुमसब विष्णुही को मानतभये व्याप्य पदार्थ न मानतभये सो हेजीवो! जो व्याप्य पदार्थ न होयगो तो व्यापक कामें होयगो ताते एक मानिबो धोखई है । अथवा ब्राह्मण जेहैं ब्रह्मज्ञानी ते एक

ब्रह्महीमाने औ वैष्णव जेहैं विष्णुके दास तौनेके एकै मानतभये कि दास भाव करत करत जब अंतःकरण शुद्धहोइगो तब अभेदई भावहोइगो आपही विष्णु मानेगो काहेते कि देव ह्वैकै देवताकी पूजा करिबेको होइ है यह शास्त्रमें लिखा है ताते हम विष्णुही ह्वैजाइँगे तौने दृष्टांत देइहैं कि वहै तौ बनैहै वहै रखवार तौ कैसे पूरपरै माया ब्रह्म ईश्वर ई सब मनके कल्पित हैं मनै है औ यही मनको रक्षक मानै अथवा ब्रह्मज्ञान को रक्षक मानै है सो वही तौ भ्रम है औ वही को रक्षक मानै है सो कैसे पूरपरैगो ॥ २ ॥

जोरिकिसानकिसानीकरई । उपजैखेतबीजनाहिंपरई ॥३॥

जैसे सिगरी सामग्री जोरि किसान किसानी करै है जौनबीजखेतमें बोवैहै सोई उपजैहै । तैसे हेजीवो तुमसब नानाबाणीको बिस्तार करि नानामतनमें लाग्यो सोईफल भयो मेरो जो रामनाम बीज सोतौखेतमें परबई न कियेमेरो-ज्ञानफल कहांतेहोय तुम्हारे खेतमेंनानामतनको फल संसार उपज्यो ॥ ३ ॥

छांड़िदेहुनरझेलिकझेला । बूड़ेदोऊगुरू अरु चेला ॥ ४ ॥
तीसरबूड़े पारथ भाई । जिनवन दाह्यो दवालगाई ॥ ५ ॥

सो हे नरौ! झेली का झेला तुमछांड़ि देहु। धोखा ब्रह्ममें लागिकै तुममाया को झेला चाहौहौ, माया तुमहींको झेलैहै या नहींजानौहौ कि, धोखा ब्रह्ममाया सबलितहै ताही मायाकी धारमें गुरु जे तुमको उपदेश किये ते औ तुमदोऊ बूड़े ४ पृथु बिस्तारे धातुहै अपने ज्ञान दवाग्निको बिस्तार कैकै अपने सेवकन केजे बनरूप कर्म जारि अपनेलोकनको लैगये ऐसे जे इष्टदेवता जिनको गुरुवा लोग उपदेश करैहैं सो हे भाई तीसर तेऊ मायाकी धारमें बूड़े काहेते महामलयमें वोऊ नहीं रहिजायँगे ॥ ५ ॥

भूंकिभूंकिककूरमरिगयऊ । काजनएकस्यारसोंभयऊ॥६॥

हे नरौ! जैसे कूकुर शीशाके महलमें अपनारूप देखि भूंकि भूंकि मरिजायहै तैसै तुह्मारोई अनुभव जो धोखा ब्रह्म तामें लगि भूंकि भूंकिकहे शास्त्रार्थ करिकरि

जन्मत मरतरहौहो अथवा अहंब्रह्म अहंब्रह्म अहंमीश्वरः अहंभोगी अहंसिद्धः अहंबलवान् अहंसुखी इहै भूंकैहै तामें प्रमाण॥ (ईश्वरोऽहमहंभोगी सिद्धोऽहंबलवान्सुखी) ॥ इत्यादिक स्यार जो बाणी ताते एकौकाज नहींभयो अर्थात् जौनी बाणीकेदेखाये प्रतिबिंबदेख्यो अनुभव ब्रह्ममान्यो तौनेकेकाज न भयो जनन मरण न छूट्यो अथवा हे जीवो ! तुम जे कूकुरहौ ते स्यार शिवा भवानी रुद्राणी अमरमें लिखेहैं सो हे जीवो !सोई स्यार रूपजो बाणीहै ताको देखिदेखि भूंकतेहौ कहे पढ़तेहौ वा स्यार रूपबाणीके धरिबेकोतौ भूंकिभूंकि तुमहीं मरिगये स्यारते कार्य न भयो अर्थात् स्याररूप जोबाणी सोतुम्हारीधरी न धरिगई वाको तात्पर्य्यार्थको न जानतभये वृत्तितौनहीं राखेहौ अपने जानपनीको घमण्डराखौ हौ तातेमायाते न छूटे ॥ ६ ॥

साखी ॥ मूस बिलारीएकसँग, कहु कैसे रहिजाय ॥
यक अचरज देखौ संतौ, हस्तीसिंहैखाय ॥७॥

हे नरो! मूस जे तुमहौ तिनको बिळारी जो मायाहै सो कैसे न खाय एक संग तोरहौहौ सो कैसे बिनाखाये रहिजाय सो हेसंतो एकआश्चर्य्य और देखो तुम जे जीवहौ तेतौ सिंहहौ तिनको जो हाथी धोखाब्रह्महै सो खायलेयहै । जो मोको तुमजानौ तौ तुम सिंहही बनेहौ तुमसब धोखा मिटावन वारेहौ हाथीके खानेवारेहौ । साहब स्वामी है जीवदासहै । सो हमारा सिंहरूपी ताको अति जो है धोका ब्रह्मसो हमारे सिंहरूपी जो ज्ञान ताकौ खाय है यह बडा आश्चर्य्य है ।

इति बारहवीं रमैनी समाप्तम् ।

अथ तेरहवीं रमैनी ।

गुरुमुख । चौपाई ।

नाहिंपरतीतिजोयहिसंसारा।द्रव्यकचोटकठिनकोमारा ॥१॥
सोतो शेषै जाय लुकाई । काहूके परतीति न आई॥२॥
चले लोक सब मूलगँवाई। यमकी बाढ़िकाटिनाहिंजाई॥३॥

आजुकाजाजियकालिहअकाजा।चलेलादिदिग्गंतरराजा॥४॥
सहज विचारत मूल गँवाई । लाभतेहानि होय रे भाई॥५॥
ओछी मती चन्द्रगो अथई। त्रिकुटीसंगमस्वामी बसई॥६॥
तबहींविष्णु कहासमुझाई । मैथुनाष्ट तुमजीतहु जाई ॥७॥
तबसनकादिकतत्त्वविचारा।ज्योंधनपावहिरंकअपारा ॥८॥
भोमर्य्याद बहुत सुखलागा। यहिलेखे सबसंशयभागा॥९॥
देखत उत्पति लागु न बारा। एकमरै यककरै विचारा॥१०॥
मुये गये की काहु न कही। झूटी आश लागिजबरही॥११॥

साखी ॥ जरत जरत से बाचहू, काहेन करहु गोहारि ॥
विषविषयाँकेखायहु, रातदिवसमिलिझारि॥१२॥

नहिंपरतीतिजोयहिसंसारा।द्रव्यकचोटकठिनकोमारा ॥१॥

साहब कहैहैं यह तो उपदेश हमकरते हैं तुमसबको परतीति जो नहीं आई सोयहि संसारमें पृथ्वी १ अप २ तेज ३ वायु ४ आकाश ५ दिशा ६ काल७मन८आत्माको धोका ब्रह्म९ई नवौ द्रव्यकी चोट कठिन कौन मारचो तुमको जाते तुम या मारचोकि शरीर मैंहींहौं देवता मैंहींहूं ब्रह्ममैंहींहौं सो तुम भूलगये नवौ द्रव्य मेराही शरीर है ताको न जान्यो तुम । तामें प्रमाण ॥ (खंवायुमग्निंसलिलंमहींच ज्योतींषिसत्वानिदिशोद्रुमादीन् ॥ सरित्समुद्राश्चहरेः शरीरं यत्किंचभूतंप्रणमेदनन्यः) ॥ इतिभागवते ॥ (यआत्मनितिष्ठन्यमौत्मानवेदयस्यात्माशरीरमितिश्रुतिः ॥ १ ॥)

सोतो शेषै जाय लुकाई। काहूके परतीति न आई ॥ २ ॥

साहेब कहैहै हे जीवौ ! चित् अचित् जगतरूप जो मेरो शरीर तामें तुम द्रव्यबुद्धि किये हौ सो त्यागिदेहु । यह मेराही शरीर कैकै देखौ तो नित्यहै

नहींतो शेषहोतहोत सब लुकाय जायहै एक एक में लीनह्वैजायहैं कहीं लोप ह्वै जाय है कहीं अलोप ह्वै जायहै निषेध करत करत तुमहीं रहिजाउहौ कि मैं रहिजाउँहौं तब मैं तुमको हंसरूपदै आपने धामको लैआवो हौं सो या जगतमरेही शरीरहै या परतीतितुमको काहूको न आई द्रव्यही बुद्धि मानते भये ॥ २ ॥

चलेलोगसब मूलगँवाई । यमकीवाढ़िकाटिनाहिंजाई ॥३॥

सबको मूल जो मेरो रामनाम ताको गँवाय कहेभूलिकै हे जीवो! तुम सब नानापन्थमें चलेहौ परन्तु यमकहे दोऊविद्या अविद्यारूप जो घोरनदी तिनकीबाढ़िजोहै धारा सो न काटीजायगी अर्थात् न पैरी जायगी । वाही में बूड़िजावोगे । अथवा यम जो है काल रूप ब्रह्म ताकी बाढ़ि जो बाणी जो एकते अनेक भई है सो हे जीवो तुम्हारी काटी न काटिजायगी जो काटि पाठहोय तौयह अर्थ है विद्या अविद्याकी दुइ नदी बाढ़ी तुम्हारे हिय में सो तुम्हारी काटि न काटिजायगी अर्थात् वाहीमें परेरहौगे अथवा चौदेहौ जे यमबर्णन करिआये है तिनकीबाढ़िबढ़ी है सो तुम बिना मेरी कृपा न छूटौगे । सो तुम्हारी काटी न कटैगी बिनामोकोजाने ॥ ३ ॥

आजुकाजजियकालिहअकाज। । चलेलादिदिग्गंतरराजा४

हेजीवौ ! अनिर्बचनीय जो मेरो नाम ताको जोआजु समुझौ तौ कार्य्य होयगो तिहारो औ जोकालिह कहे शरीर छूटेमें समुझो चाहौतौ अकाजहै नाजानै कौनी योनिमें परौ फिरि समुझौ धौं ना समुझौ । सो हे जीवो तुमतो राजा हौ मन मायादिक ये तुम्हारे ही बनाये हैं सोतौ तुम भूलिगये । चले लादि कहेविद्याअविद्याके जे नानाकर्म तिनको अंगीकार करि अर्थात् वहै बोझाअपनेमाथे में धरि दिगंतरमें जाय नानाशरीर धारण करत हौ सो अबहूं मोको जानि तुम सब यहदुःख त्यागो यह मायारूप धोखावालेनको उपदेश दियो अब सहजसमाधिवालेनको कहै हैं ॥ ४ ॥

---

१ देखो मंगल में १८ वीं साखीकी टीका ।

सहज विचारत मूलगँवाई । लाभतेहानिहोयरेभाई ॥ ५ ॥

सहजकहे सोहंसअहं यह प्रतिश्वास बिचारतबिचारत सबको मूल जोमेरो नाम ताको गँवाय दियो अर्थात् भुलायदियो सो हे जीवौ ! तुमको तौ धोखा ब्रह्मकी लाभभई परन्तु यह लाभते मेरे जाननेवाला जो ज्ञान ताकी हे भाइयो ! हानिह्वैगई अर्थात् नहा प्राप्तभई ॥ ५ ॥ अवयोगिनको कहै हैं ।

ओछीमती चन्द्रगो अथई । त्रिकुटीसंगमस्वामीबसई॥६॥
तवहींविष्णुकहासमुझाई । मैथुनाष्टतुमजीतहुजाई ॥ ७ ॥

वीर्यकी उलटी गतिकरतकरत ओछीमतिकहे बुद्धयादिकसूक्ष्म ह्वै थिरह्वैगई तब चन्द्ररूप जो वीर्य्य सो अथैगयो अर्थात् उलटी गतिह्वैगई तब दूनौंनेत्रको उलटिकै ध्यानलगाय प्राणके साथ वीर्यको चढ़ाय त्रिकुटीमें जहां इड़ा पिंगला गंगा यमुना सरस्वतीको सङ्गमम स्वामीबसैहै जहां पहुंचौहो तब लक्ष्मीनारा- यण तुमसों कहै हैं कि अब ऊपर गैवगुफा में जायकै आठौप्रकारके मैथुन जीति लेहु अबै एकही प्रकार जीत्यो है तब तुम उहां जाउहौ सोआगे कहैहैं ॥ ६ । ७ ॥

तवसनकादिकतत्त्वविचारा । जैसेरंकधनपावअपारा ॥८॥
भोमर्य्यादबहुतसुखलागा । याहिलेखेसबसंशयभागा ॥९॥

सो जबगैवगुफामें ध्यान लग्यो ज्योति में मिल्यो तब सनकादिक कहे शुद्ध जीवसो अपनेको अशुद्धमानिकै यही मरणतत्त्वविचारै है की, हम मुक्तह्वै गये कहौ हे जीवौ ! तुम सब वाहीको सुखदतत्त्व बिचारौहौ कैसे जैसेरंक अपारधन पायकै परमतत्त्व मानै है ८ भोमर्य्याद ब्रह्म जो ज्योति तामें जब आत्माको मिलायो ज्योतिही ह्वैगयो यहीं तक मर्य्यादाहै या मान्यौ तब तुमको बहुत सुख लागतभयो अर्थात् वाहीमें मग्नहोइ जातेभये सो तुम्हारे लेखे तो सब संशय भागिगई परंतु संशय नहीं गई सो आगे कहैहैं ॥ ९ ॥

देखतउतपतिलागु न वारा । एकमरैयककरैविचारा ॥१०॥

हे जीवौ ! तुम या देखतहौ कि जो समाधि उतरी तो मनादिक उत्पन्नहोत बारनहीं लगैहै तौ संसार कबै छूट्यो औ येहू देखतहौ कि एकैमरैहैं तिनको लायआय गैबगुफा जरिगई औ फिर वही गैबगुफामें प्राणचढ़ाय मुक्तिको बिचारैहै अर्थात् मुक्तिचाहौहौ सो हे जीवौ तुम सब बिचारौ ! तौ जो समाधि सुख नित्य हो तो तौ कैसे मिटिजातो ताते नित्य नहीं है ॥१०॥

मुयेगयेकी काहु न कही । झूंठीआशलागिजगरही ॥ ११ ॥

तुह्मारे गुरुवा लोगमरे मारिकै कहांगये कौनी गतिको प्राप्त भये या निकासकी बात तो काहू न कह्यो सो तौ तुम सबनबिचारयो धोखा ब्रह्महोवेकी जो झूटी आशा ताहीमें तुमसबलागिरेहेहौ मोको न जानतभये ॥ ११ ॥

साखी ॥ जरतजरतसेबाँचहु, काहे न करहुगोहारि ॥
विषविषयाकैखायहु, रातिदिवसमिलि झारि॥१२॥

प्रथम तो हेजीवौ ! नानायोनि नरकगर्भ बासके जठराग्निमें जरत जरतसे बचेहु अर्थात् मोसों नानाप्रार्थना करि गर्भबास ते निकसे सो गर्भबास को दुःख तौ तुमको भूलिगयो । औ जौन मोसों करार कियेरहौ सोऊ भूलिगयो बिषरूपा जो बिषयताही को रातिवदिन खायहु अर्थात झारि बिषयही भोगकीन्हों मेरी शरण को काहे न गोहरायो । जे मेरी शरणको गोहरावै हैं तेईबचै हैं सो हे जीवौ ! जब मेरी शरणको गोहरावोगे तबहीं बचोगे मेरी या प्रतिज्ञाहै जो कोई मेरी शरणको गोहरावैहै ताको मैं बचायही लेउहौं । गोहारिको अर्थ यहहै कि कोई हमारी रक्षाकरै सो साहब शरणगयेरक्षा करतही हैं तामेंप्रमाण ॥ (सकृदेवप्रपन्नाय तवास्मीतिचयाचते । अभयंसर्वभूतेभ्योददाम्येतद्व्रतम्मम) ॥ १ ॥ इतिबाल्मीकीये ॥ १२ ॥

इति तेरहवींरमैनी समाप्तम् ।

---

१ नाना प्रकारके कर्म, उपासना और ज्ञान की जौ कल्पना सोई कल्पना विषय ।

अथ चौदहवींरमैनी।

गुरुमुख। चौपाई।

बड़सो पापीआयगुमानी। पाखँडरूपछलोनरजानी॥ १॥
वामनरूप छल्योवालिराजा। ब्राह्मणकीन कौनसोकाजा॥२॥
ब्रह्मणही सबकीन्होंचोरी। ब्राह्मणहीको लागी खोरी॥ ३॥
ब्राह्मण कीन्होग्रंथ पुराना। कैसेहुकैमोहिं मानुषजाना॥४॥
यकसे ब्रह्मै पंथ चलाया। यकसेहंस गोपालहिगाया॥ ५॥
यकसे शंभू पंथ चलाया। यकसे भूतप्रेत मनलाया॥ ६॥
यकसे पूजा जौन विचारा। यकसेनिहुरिनेमाजगुजारा॥७॥
कोइ काहूकोहटा न माना। झूठा खसमकबीरन जाना ८॥
तनमनभाजिरहु मेरे भक्ता। सत्यकबीर सत्यहै वक्ता॥९॥
आपुहिदेवआपुही पाती। आपुहिकुलआपुहिहैजाती॥१०॥
सर्वभूतसंसार निवासी। आपुहिकुसुमआपुसुखरासी॥११॥
कहतेमोहिंभये युगचारी। काके आगे कहौं पुकारी॥१२॥

साखी॥ सांचो कोई न मानई, झूटाके सँगजाय॥
झूठेझूठा मिलिरहा, अहमक खेहाखाय॥१३॥

बड़ोसोपापीआयगुमानी। पाखँडरूपछलोनरजानी॥ १॥
वावनरूपछल्योवालिराजा। ब्राह्मणकीनकौनकरकाजा॥२॥

साहब कहैहैं तै बड़ोपापी है बड़ोगुमानी है काहते कि मैं येतो समझाऊंहौं तैं नहीं समझैहै सो मैंजान्यो पाखंडरूप, जो धोखा ब्रह्मताते हेनर! तुमछलेगये और जिनको छल्यो तिनको कहैहैं १ वहीमाया सबलित ब्रह्म बामनरूप करिकै

बलिराजाको छल्यो है सो या ब्राह्मण जोमाया सबलित ब्रह्म सो कौनको काजकीन्हों है अर्थात् नहीं कीन्हों है ॥ २ ॥

ब्राह्मणहीसबकीन्होंचोरी । ब्राह्मणहीकोलागीखोरी ॥ ३ ॥

वहीब्रह्म सबकी चोरीकियो है काहेते कि मायातो जड़है यह चैतन्यहै ब्रह्महीं माया सबलितह्वै मायहूको कर्ताके मेरेसांचेज्ञानको संसारमें शंकादिक पदार्थ बनाइ चोराइराख्योहै सो जब व्यापकरूप ते सबपदार्थ ब्रह्महीठहरचो औब्रह्महीके संयोगते मायाकर्ता भई है तब ब्रह्महीको खोरिलगी कि वही सब करैहै ॥ ३ ॥

ब्रह्महिकीन्होंग्रंथपुराना । कैसहुकैमोहिंमानुषजाना ॥ ४ ॥

वहीमाया सबलित जो ब्रह्महै ताहीते सब वेदपुराण निकसेहैं ताहीते नानामतभये कोई निराकार ब्रह्महीं कोई चतुर्भुज कोई अष्टभुज इत्यादि मानतभये । तुम सब बसहु जो निर्गुण के सगुणपरे वेदपुराणको तात्पर्यताको जानिकै ऐसो मेरो मनुष्य रूप कैसहुकैकहै जसतसकै कोई बिरलेसंत जानै हैं और नहीं जानै हैं अथवा मोको सब बातके जनैया श्रीरामचन्द्रको सांच मनुष्यरूप है तामें प्रमाण ॥ (आत्मानंमानुषंमन्ये रामंदशरथात्मजम्) ॥ इति और जे नानापंथ वेदतेनिकसे तिनको आगे कहैं (दशतिसर्पानितिदशः गरुड़ः सरथोयस्यसः दशरथः विष्णुः सएव आत्मजोयस्यसः दशरथात्मजः तं) ॥ ४ ॥

यकसेब्रह्महिपन्थचलाया । यकसेहंसगोपालहिगाया ॥५ ॥

यकसे कहे एकजो माया सबलित ब्रह्म ताही को प्रतिपादन करत ब्रह्मैनाना शास्त्रके नानापंथ चलावतभये । औ यकसे कहै एक जो माया सबलित ब्रह्मताहीको बिचारकरत हंसजो जीव सो गोपालहि गावतभये अर्थात् गोजोइंद्रिताको पालनवारो जो मनताहीको गावतभये अर्थात् मनमुखी पंथ चलावत भये औ ब्रह्माने वेदकह्योहै वेदते सबमत निकसेहैं जीवनको जोजुदेकरि कै कह्यो सोमेरे सम्मुखको जो अर्थ है ताको छपाय दीन्हों वेद अर्थ नानादेवतन यज्ञादिमें लगायदीन्हे ॥ ५ ॥

यकसे शम्भूपंथचलाया । यकसे भूतप्रेत मनलाया ॥ ६ ॥
यकसेपूजाजौनविचारा । यकसेनिहुरिनेवाजगुजारा ॥७ ॥

यकसेकहे एकजो माया सबलित ब्रह्मताहीको प्रतिपादन करत वेदको अर्थ बदलिकै महादेवजीको तामसमत चलावतभये औ यकसे कहेएक जो-माया सबलित ब्रह्मताहीको प्रतिपादनकरत जीवनको मन भूत प्रेतदेव सब लगायदेतेभये अर्थात् माया में अरुझाय देतेभये ६ यकसे कहे एक जो माया सबलित ब्रह्म ताके ज्ञानहेतु निहुरिकै मुसल्मानलोग नेवाज गुजारतभये ॥७॥

कोउकाहूको हटा न माना । झूठाखसमकबीरनजाना॥८॥
तनमन भजिरहुमेरेभक्ता । सत्य कबीर सत्यहैवक्ता ॥ ९ ॥

कोऊ काहूको हटको न मानतभये झूठाजो धोखा ब्रह्म ताही को दृढ़करिकै कायाके बीरजे जीव ते नाना देवतनसोते खसम जानतभये । कोई महीं ब्रह्महौं या मानतभये। खसम जो परमपुरुष मैंहौंताको तुमसब न जानतभये ८॥ तनमनते मोहींमें लगो तबही तिहारो उबारहोइगो सोहे कबीर जीवो एकतो तुम सत्यहौ औ एक जो तिहारे समुझावन वाला वक्ता मैं सो सत्यहौं और सबझूठे हैं वही ब्रह्म चारों ओर ह्वैगयो है यह द्वैमत देखायो तामें प्रमाण (सत्यमात्मा सत्यजीवो सत्यंभिदः) ॥ ९ ॥

आपुहिदेवआपुहीपाती । आपुहिकुलआपुहिहैजाती॥१०॥
सर्वभूतसंसारनिवासी । आपुहिखसमआपुसुखरासी॥११॥
कहतेमोहिंभयेयुगचारी । काकेआगेकहौंपुकारी ॥ १२ ॥

औवंही माया सबलित ब्रह्म आपुही देवता ह्वैगयोहै आपुही फूलपातीहैं आपुही पूजा करनवालो है आपहीकुल जातिहै १० सोयाभांतिते वहीब्रह्म सर्व-भूतमें निवासी ह्वैकै आपुही खसमह्वै रह्योहै औ जामें पुरुषके सुखको सांचहै ऐसी सुखराशी नारिह्वै रह्योहै ११ सो यह बात चारों युगमोंको कहतभयो काके आगे पुकारिकै कहा कोई समुझै या धोखा ब्रह्मको नहीं देखोपरै ॥१२॥

साखी ॥ सांचेकोइ न मानई, झूठाकेसँगजाय ॥
झूठे झूठा मिलिरहा, अहमक खेहाखाय ॥ १३ ॥

सांचो मैं सांचे तुम जीव यह मततो कोई नहीं मानैहै झूंठाजो वहब्रह्मताके संगसब जायहैं अर्थात् वहीको सर्वस्वमानै है सो झूंठावह ब्रह्मऔझूंठाज्ञानवाला जोजीव सोमिलिकै अहमक खेहा खायहै अर्थात् मरयो तब राख खायहै जनम मरण नहीं छूटै है ॥ १३ ॥

इति चौदहवींरमैनी समाप्तम् ।

अथ पंद्रहवींरमैनी ।

चौपाई ।

उनई बदरिया परिगै सांझा।अगुवा भूले बनखँड मांझा॥१॥
पियअनतैधनअनतैरहई । चौपरि कामरि माथे गहई ॥२॥
साखी ॥ फुलवा भार न लैसकै, कहै सखिन सों रोइ ॥
ज्यों ज्यों भीजै कामरी, त्यों त्यों भारी होइ॥३॥

उँनईबदरियापरिगैसाँझा । अगुवाभलेबनखँडमाँझा ॥ १ ॥

भ्रमकी बदरी ओनई परिगै साँझा कहे जगत्में अँधियारी ह्वै गई साहबको ज्ञानरूपी रबिमूंदिगयो न समुझि परत भयो तब बनखंड जो चारिउ वेद तामें अगुवा जे ब्रह्मादिक सब मुनि ते भूलिगये । कोई भैरव कोई भवानीको कोई गणेशको इत्यादि नानादेवतनकी उपासना करतेभये । औशास्त्रहुमें नानामत होतगये कोई कर्मको, कोई ब्रह्मको, कोई प्रकृतिपुरुषको, कोई ईश्वरको, कोईकालको, कोई शब्दको, कोईब्रह्मांडमें ज्योतिको, प्रधानमानतभये । औ तिनहूमें एकएक मतनमें अनेक मतहोतभये औमुसल्मानहूंके मजहबमें तिहत्तरि फिरके होत भये एकमें तो मुक्ति होतीहै औरनमें नहीं होती । सो जो जौने फिरकेमें

पराई सोताहीको मुक्तिआश्रय मानेहै सो या एक सिद्धांत ब्रह्माके पुत्र वेदन तें पूछ्यो वेदब्रह्माते पूछ्यो तबब्रह्मै को भ्रम भयो तब आकाशवाणी सुनि के संभ्रमपूर्वक सबको शेष के पास पठयो सो शेषजी जौन वेदको तात्पर्य्य सिद्धांत सबको समुझायेहै सो आदिमंगलमें लिखि आयेहैं औमेरे बनायेरामायणके अंतहूमें लिख्योहै सो या हेतुते कबीरजी कहैहैं कि अगुवा जेब्रह्मा तिनहीको भ्रमभयो है ॥ १ ॥

पियअनतै धनअनतैरहई । चौपरिकामरिमाथेगहई ॥ २ ॥

पियतो साहबहै औपियके मिलनवारो जोजीवनको ज्ञान सोई धनहै सो दोउ अनतही रहैहैं कोई बिरले संत पावैहैं । चौपरिजो चारों वेद तिनकी कामरि ऐसी भारी शीशपर धरे अपने अपने मनको अर्थ करैहैं वेदको सिद्धांत नहीं पावैहैं । अथवा चौपरि जो चारो खानिकजीव ते कर्मरूप जोहै कामरि ताको कांधेपैधरेहैं ॥ २ ॥

साखी ॥ फुलवाभार न लै सकै, कहै सखीसोंरोय ॥
ज्योंज्योंभीजैकामरी, त्योंत्यों भारीहोय ॥ ३ ॥

जीवजेहैं ते अल्प हैं कर्म्मकांडरूप जोफूल ताही को भार नहीं सहिसकै अर्थात् सोई नहीं समुझिपरै ब्रह्मविचार कैसे समुझिपरे सो वेदरूप कामरि कांधेधरे जब ब्रह्मविचार करनलगे निषेध करतकरत तब विचारमें ब्रह्म न आयो तबसखी जे जीवहैं तिनते रोइकै कहतेहैं नेति नेति यतनै नहीं है अबै और कछुहै नहीं समुझिपरै यही रोइबोहै सो सो गुरुआलोगहैं तिनसे पूछ्यो कि, जोतुमने बतायोकि, ब्रह्महै सो हमको समझ न परी तब उन गुरुवालोगन ज्यों ज्यों वेदरूप कामरीभीजैहै कहे बिचारत जाइहैं त्यों त्यों भारीहोतजायहै । सो कामरीमें दोय अर्थ दोयहै एक कर्मविचाररूपहै एक ब्रह्मविचाररूपहै सो दोनोंको तारनाही पावैहै ज्यों ज्यों विचारत जाई है त्यों त्यों कठिनई होते जाइहै अर्थात् गहिरो अर्थ होतजायहै सो कैसे समुझिपरै वातो वेदार्थमें विचार करै है ब्रह्मरूप कामरी सो तो धोखाब्रह्म कुछ बस्तुही नहीं है ॥ ३ ॥

इति पंद्रहवींरमैनीसमाप्तम् ।

अथ सोरहवींरमैनी ।

चोपाई ।

चलतचलतअतिचरणपिराने। हारिपरेतहँअतिखिसिआने १
गणगन्धर्बमुनिअंतनपाया । हारिअलोपजगधंधे लाया २
गहनी बंधन बांध न सूझा। थाकि परे तब कछू न बूझा ॥३॥
भूलिपरे जिय अधिक डेराई। रजनी अंधकूप है जाई ॥ ४ ॥
मायामोह उहां भरि भूरी । दादुर दामिनि पवनहु पूरी ॥५॥
बरसै तपै अखण्डित धारा। रैनिभयावनि कछुन अहारा॥६॥
साखी ॥ सबैलोग जहँडाइया, औ अंधा सभै भुलान ॥
कहाकोइ नहिं मानही, सब एकैमाहँ समान ॥ ७ ॥

चलतचलतअतिचरणपिराने। हारिपरेतहँ अतिखिसियाने १

नाना मतमें लगे जीव तिनकेचरण ब्रह्मके खोजहीमें पिरान लगे अर्थात थकिआये मतिनहीं पहुंचै एकहू शास्त्रके बिचारके पार न गये तामें प्रमाण ॥ (इन्द्रादयोपियस्यांतंनययुः शब्दवारिधेः । प्रक्रियांतस्यकृत्स्नस्यक्षमोवक्तुंनरः कथम्) ॥ तब खिसि आइकै यह कहते (भये अतिरेसयान पाठ होय तौ अर्थ कि बड़ेसयानो रहे तेऊ हारिगे) ॥ १ ॥

गणगंधर्वमुनिअंतनपाया। हरिअलोपजगधंधेलाया ॥२॥

जौने ब्रह्मको अंतगन्धर्व औ मुनिनके गण नहीं पायो ताको हमकैसे जानिसकैं। जो ब्रह्मको साकारकहै हैं तौमध्यम प्रमाणमें आयजाय है, अनित्य होयहै। औ जो ब्रह्मको निराकारकहै है तौजगत्की कर्तृत्व कैसे होयगो यही संदेह मेरे सिद्धांत न भयो। कबीरजी कहै हैं कि, कैसे होयगी सन्देहमें परे जैसे हरि हैं तैसै बिनासद्गुरुके बताये तोजानतही नहीं है, यहिते हरि अलोप

कहे हरि अप्रकट भये तिनके बिना जाने जगत्के धन्धेमें जीव सब अपनो मन लगायराख्यो ॥ २ ॥

गहनी बंधन बांधनसूझा। थाकिपरेतबकछूनबूझा ॥ ३ ॥

गहनी बंधन जो मायासबलित ब्रह्म जौन बांधिकै संसारमें डारि देनवारो ऐसो जो ब्रह्म ताको बांधजीवनको न सूझिपर्‍यो कौन बांध कि जो कोई मोहिमेंलगैहै तौमैं बांधिकै संसारमें डारिदेउँ हौं या मायासबलित ब्रह्मको बांध ना सूझि पर्‍यो जो कहो काहेते बांधबांध्यो है तो जगत्की उत्पत्ति वही ब्रह्मते होय है वा ब्रह्म जगत्को रहिबोई चाहैहै याही ते जो कोई वामें लगै है ताको साहबको ज्ञान भुलायकै संसारहीमें राखैहै सो कबीरजी कहै हैं कि जब वही संसार में थकिपरे तब कछु न बूझत भये अर्थात् अनेक मतनको बिचारैहै पै सिद्धांत न पावतभये साहबको ज्ञान भूलिगये ॥ ३ ॥

भूलिपरे तब अधिक डेराइ। रजनी अंधकूपह्वैजाइ ॥ ४ ॥
मायामोह उहांभरिभूरी। दादुरदामिनिपवनहुपूरी ॥ ५ ॥
बरसैतपैअखंडितधारा। रैनिभयावनिकछुनअहारा ॥ ६ ॥

सोजब साहबको ज्ञानभूले संसारमेंपरे तबअधिकडर आवत भयो काहेते कि मूलाज्ञानरूप रजनीकी बड़ी अँधियारीहोत भई कछू न सूझिपर्‍यो काहेते कि अहंब्रह्मास्मिमानिकै लीन ह्वैकै वही संसारमें पर्‍यो जहां मायामोह भूरिभरे हैं तब तो माया कारणरूपारहीहै अब कार्यरूपाभईबहुत मोहादिकहोतभयेतामें परे जैसेदादुर बोलैहैं अर्थकछू नहींहै तैसे उनको वेदकोपढ़िबो है अर्थनहीं जानैहैं जो काहूकेकहे कछूज्ञानभयो तबदामिनीकैसी दमकह्वैजाय है कछु हृदय में नहीं ठहराय है औ पवनहु पूरी जो कह्यो सो पवन चढ़ायकै योगकरियै तौ श्रम करैहै कि कोई खेचरी आदिक मुद्राकरि अखंडधारा अमृतवर्षाई नागिनी उठाइ समाधिकरैहै औ कोई तपै अखंडित धाराकहे पांचहजार कुंभक करिकै ज्वाला उठाइ तौनेते नागिनीको जगाय प्राणचढ़ायसमाधिकरैहै तहौं-भयावनिरैनि जोमूला ज्ञानकी अँधियारी ताहीमें पर्‍यो अर्थात् जबतक ज्योति

देख्यो तबतक तो उजियारी जब ज्योतिमें लीनह्वैगयो तब सुषुप्ति ऐसेमें परचो रह्यो यही भयावनि रैनिहै भयावनिको हेतु यह है कि माणके उतरिबेकी अवधि बनीहै ॥ ४ । ५ ॥ ६ ॥

साखी ॥ सभैलोगजहँडाइया, औ अन्धासभैभुलान ॥
कहाकोइनहिमानही, सबएकैमाहँसमान ॥ ७ ॥

और जे मायाते सभयरहे डेराते रहे ते लोग जहँडाइया कहे बहेकिकै औ-रई और मतनमें लगिगये औ जेअज्ञान आंधेररहैं ते संसारहीमें परे संसार छूटिबेको उपावैना किये भूलिही गये सो कबीरजी कहैहैं कि मेरो कहा कोई नहीं मानैहै सब जे जीव हैं ते एक जो मायाब्रह्म ताहीमें सब समाते भये इत्यर्थ औ साहबको बिनाजाने ब्रह्महूमें लीनह्वै संसारहीमें आवैहै वाको प्रमाण पीछे लिखिआयेहैं ॥ ७ ॥

इति सोलहवीं रमैनी समाप्तम् ।

अथ सत्रहवीं रमैनी ।

चौपाई ।

जसजिवआपुमिलैअसकोई । बहुतधर्मसुखहृदयाहोई ॥ १ ॥
जासों बातरामकी कही । प्रीति न काहूसोंनिर्वही ॥ २ ॥
एकैभाव सकलजगदेखी । बाहरपरैसोहोयबिबेकी ॥ ३ ॥
विषयमोहकेफंदछोड़ाई । जहांजायतहँकाटुकसाई ॥ ४ ॥
आय कसाई छूरी हाथा । कैसहु आवै काटोंमाथा ॥ ५ ॥
मानुष बड़े बडे ह्वैआये । एकै पण्डित सबै पढ़ाये ॥ ६ ॥
पढ़नापढ़हुधरहुजिनगोई । नाहिंतोनिश्चयजाहुबिगोई ॥ ७ ॥
साखी ॥ सुमिरन करहु सुरामको, औ छांड़हु दुखकी आस ॥
तरऊपर धरि चापिहैं जसकोल्हूकोटिपचास ॥ ८ ॥

जसजिव आपुमिलै असकोई । बहुतधर्मसुखहृदयाहोई॥१॥
जासोंबात रामकीकही । प्रीति न काहूसों निर्वही ॥ २ ॥

जैसो आपु होइ तैसो जबताको मिलै तबहीं धर्मबढै है औ हृदयमें बड़ो सुखहोयहै तामें प्रमाण गोसाईंजीको ॥ दोहा ॥ इष्टमिलै अरु मन मिलै, मिलै भजनरसरीति ॥ तुलसिदास तासों मिलै, हठिकै उपजै प्रीति १ सो औरी-भांति सुखनहींहोयहै १ काहे ते कि जासों कहे जौने जीवनसों रामकी बात मैं कहौहौं कि तैं रामचन्द्रकोहै तिनको अपनो साहब मानु नाना ईश्वर जो तैंने माने हैं सो येसब मायाके जालमें परेहैं तोको कहा उबारैंगे सो कबीरजी कहैहैं कि या मेरी बातपै काहू जीवनकी प्रीति न निबहतभई अर्थात् जो मेरीबात प्रीतिते सुनै साहब को जानै जपने अपने मतमें आरूढ़ह्वै बादसोकरैहै बस्तुनहीं ग्रहणकरै है ॥ २ ॥

एकैभाव सकलजगदेखी । बाहेरपरैं सोहोय विवेकी ॥ ३ ॥
विषयमोहकेफंदछोड़ाई । जहां जाय तहँकाटुकसाई॥ ४ ॥

एकैभाव सकल जगदेखी कहे जे एक ब्रह्मभाव जगत्को देखै हैं तेहिते बा-हेर अपनेको दासमानि सब में चिद्रूपको जो जानै है । सोई बिवेकी होयहै सोऐसे विवेकिनके पासतो नहीं जायहै २ नाना बिषयके मोहके फंद छोड़ायकै अर्थात संसारते वैराग्य करिकै अधिकारीहूह्वैकै जहांजहांजायहैं तहांतहां कसाई जे गुरुवा लोग ते गलाकाटैहैं अर्थात् साहबको ज्ञानकाटि धोखा ब्रह्ममें लगाय देयँ हैं । सो याको गलाकाट्यो गलाकाटे फेरिजन्महोयहै याते गुरुवालोगनको कसाई कह्यो । ऐसे याहूको जनन मरण होय है । व्यंग्य यहहै कि जे जीव साहब को त्यागि औरै औरमें लगै हैं ते पशुहैं उनको ऐसही गलाकाट्यो जायहै ॥४ ॥

कसाई तो शरीरको गलाकाटैहैं और–

आय कसाई छूरी हाथा । कैसहु आवै काटों माथा ॥ ५ ॥

---

१ स्वार्थी गुरुवालोग जिनको संसारी सुख और क्षणिक मान बड़ाईके अतिरिक्त सत्यका ज्ञानही नहीं है। २ गुरुवालोगोंके नानाप्रकारसे जीवोंको ठगनेके उपाय।

मानुष बड़े बड़े ह्वै आये । एकै पण्डित सबै पढ़ाये ॥ ६ ॥

कसाई जे गुरुवालोग तिनकी बनाई पोथी सोई छूरीहाथमें लीन्हे यह ताके हैं कि कैसेहुकै कौन्यो मतको आवै तौ ठगिकै अपनेमतमें कैलेइँ माथ काटिलै कहेमूंड़िडारै चेलाकारिलेयँ । सो साहबको छोड़ाइ और आरम लगाबनवारो हैं सो गुरू कसाई है । यहो द्वैत ज्ञानवाले गुरुवालोग जीवनको गलाकाटैं हैं जो संसारमें रहतो तो कबहूं दैवयोगते साधु सङ्गभयो उद्धारहू होतो सो तौने धोखा ब्रह्ममें लगायदियो जहांते उद्धार नहीं है वहां काहेको कोई साहबको बतावैंगे ॥ ५ ॥ मनुष्य जे बड़ेबड़े ज्ञानीलोग हैं ते यही पढ़ावतभये कि एक वही ब्रह्महै जीवनहींहै और कोई या पढ़ाया कि एकजीवही सांच है और सब असांचहै ॥ ६ ॥

पढ़नापढ़हुधरहुजनिगोई । नाहिंतौनिश्चय जाउबिगोई ॥७॥

जौनपढ़ना तुम गुरुवालोगनतेपढ़्योहै सोअबजनिगोइराखो औ जो गोइराखोगे तौ कुमतिहीमें परेरहौगे जो गोइ न राखोगे तो संतलोग समुझायकै भ्रम काटिडारैंगे कैसे कि जो एकब्रह्म होतो तौ भ्रम कौनको होतो औ जो एक जीवही साहब होतो तौ बँधिकैसे जातो सोमायातो बांधनवालीहै औजीव-बंधनवारोहै औ साहब छुड़ावनवालोहै यह बिचारि साहबको जानो साहब छुड़ायलेइँगे नहीं निश्चय बिगोइ जाहुगे अर्थात् कुमतिमें लागि कै बिगरिजाहुगे ॥ ७ ॥

साखी॥सुमिरनकरहुसुरामको, औछांड़हुदुखकीआस ॥
तरऊपरधरिचापिहै, जसकोल्हूकोटिपचास ॥ ८॥

सो परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनको सुमिरनकरौ धोखा ब्रह्म औमाया इनकी दुःखरूप जो आश सो छांड़ो जो न छांड़ोगे तौ तरे तो मायारूप कोल्हू ऊपर ब्रह्मरूपजाठमें तुमको पेरिडारैगो पचासकोटिकोल्हूकह्यो सोअगणितब्रह्मांडहैं तामेंडारिकै ॥ ८ ॥

इतिसत्रहवींरमैनीसमाप्तम् ।

अथ अठारहवींरमैनी।

चौपाई।

अद्भुत पंथ बरणिनहिं जाई। भूले रामभूलिदुनिआई॥१॥
जो चेतौतौ चेतुरे भाई। नहिंतो जिय जरि मूलै जाई॥२॥
शब्द न मानै कथै विज्ञाना। तातेयम दीन्ह्यो है थाना॥३॥
संशय साउज बसै शरीरा।ते खायल अनबेधल हीरा॥४॥

साखी॥ संशय साउज देह में, संगहि खेल जुआरि॥
ऐसा घायल बापुरा, जीवन मारै झारि॥ ५॥

अद्भुत पंथ बरणि नहिं जाई।भूलेराम भूलिदुनिआई॥१॥
जो चेतौ तौ चेतुरे भाई। नहिंतो जियजरिमूलेजाई॥२॥

अद्भुत पंथ जो ब्रह्म ताको वर्णतकोईने अंतनहींपायो रामजे साहबहैं तिनके भूलेकहे बिना जानेते सब दुनिया धोखा ब्रह्म मायामेंभूलिगई १ हे भाइउ चेतौतौ चेतौ नहीं तौ मायाब्रह्मकी आगिमें जरिकै मूलतेजाउगे। यह कबीर-जीकहे हैं। नहीं तौ यम जीव लैजाइ जो यहपाठहोयतौ यहअर्थहै कि चेतौतौ चेतौ नहीं तौ यम लैजायके नरकमें डारिदेंइंगे॥ २॥

शब्द न मानैकथै विज्ञाना। तातेयमदीन्ह्योहैथाना॥ ३॥
संशय साउज वसै शरीरा। तेखायलअनबेधलहीरा॥४॥

बिज्ञानहूको सार जाते सबशब्द निकसे हैं ऐसो जोरामनाम ताको तौ मानै-नहीं है और और मतिमें लगिकै विज्ञान कथै है ताते यमराज जो जैसो कर्मकरैहै ताको तैसो नरक स्वर्गकोथान देयहैं ३ संशयरूपी साउज जो मन सो शरीररूपी बनमें बासिके अनबेधलकहे जाकोयश रामनाममें नहींहै ऐसो जो हीराजीव ताको खायगयो कौनीरीतिते खायो सो आगे कहै हैं॥ ४॥

साखी ॥ संशयसाउजदेहमें, संगहिखेलैजुआरि ॥
ऐसाघायलबापुरा, जीवनमारैझारि ॥ ५ ॥

जैसे शिकारी बाघको मारैहै जो बाघ घायलभयो तौ शिकारीको धरिडारैहै तैसे संशयसाउज जो ब्यांघ्ररूप मन सो देहरूपी बनमें बसैहै ताके संग जीव जुआं खेलै है जब मनोबासनाछेकी उपायकियो तब वही वाको घायल ह्वैबोहै सो ब्याघ्ररूप जो मन है सो घायलह्वैकै बापुरे जे सबजीव हैं तिनको झार दैके मारैहै अर्थात् सबको वही माया धोखा ब्रह्ममें लगायदियो औ जोयह पाठहोय कि (ऐसा घायल बापुरा सब जीवनमारै झारि) तो यह अर्थहै कि ऐसा घायलकहे घाती जो मन सो बापुरेजीवनकोझारादैकैमारैहै जननमरणदेइहै ॥ ५ ॥

इति अठारहवींरमैनीसमाप्तम् ।

अथ उन्नीसवीं रमैनी ।

चौपाई ।

अनहदअनुभवकीकरिआशा।देखौ यहबिपरीततमाशा॥१॥
यहै तमाशा देखहु भाई । जहँहैशून्यतहांचलिजाई ॥ २ ॥
शून्यहिबांछा शून्यहि गयऊ । हाथाछोड़ि बेहाथाभयऊ॥३॥
संशय साउज सब संसारा । कालअहेरी सांझसकारा ॥४॥
साखी ॥ सुमिरन करहु सो रामको, काल गहेहै केश ॥
नाजानौं कब मारि है, क्याघर क्यापरदेश॥५॥

अनहदअनुभवकीकरिआशा।।देखौयह बिपरीततमाशा १

अनहद शब्द सुनतसुनत जौने ब्रह्मको अनुभव होइहै ताको तू बिचारैहै कि ब्रह्म मैंहीहौं या नहीं जानैहै कि अनहद मेरे शरीरहीकोहै वह ब्रह्म मेरही अनुभवहै यह बड़ो तमाशाहैताही की आशाकरै है यह बड़ी बिपरीत है ॥ १ ॥

यहैतमाशादेखहुभाई । जहँहैशून्यतहांचलिजाई ॥ २ ॥
शून्यहिवांछाशून्यहिगयऊ । हाथाछोड़िवेहाथाभयऊ ॥ ३ ॥

सो हे भाइयो! हे जीवो ! यह तमाशा तुमहूं अनेकन जन्मते देखतैआयेहौ परन्तु जहां शून्यहै तहां जाइकै मुक्ति ह्वैवो चाहौहौ तुम या नहीं बिचारौहौ कि शून्य जो धोखा ब्रह्म तामें जो हम जायँगे तौ हमारी मुक्तिकी बांछहु शून्य ह्वैजायगी अर्थात् मुक्ति न होयगी सो या बड़ो आश्चर्यहै आपनेते झूठेमें बांधिकै साहब को हाथ छोड़िकै बेहाथ भयऊ कहे धोखा ब्रह्मके हाथमें ह्वैजाउ हौ अथवा कबीरजी छूटे जीवनते कहैहैं हे भाइयो ! देखौ तो तमाशा ये जीव जहां शून्यहै धोखाहै तहां सब चलेजायँहै जौने ज्ञानमें साहब भरेपूरे हैं तहां नहीं जायँहैं २ । ३ ॥

संशयसाउजसबसंसारा । कालअहेरीसांझसकारा ॥ ४ ॥

संशय कहे मनरूप जो साउज ताहीको सकलकहे सुरति यासंसार ह्वै रह्यो है अर्थात् मनरूप जीव ह्वै रह्यो है संकल्प विकल्प सबकैरहेहैं संशय सब जीव को लग रही है । सो अहेरी जोकाल शिकारी सो सांझ सकारकहे काहू को जन्मतमें मारैहै काहू का मध्य अवस्थामें और काहूको आयुर्दायके अंतमें मारैहै ॥ ४ ॥

साखी ॥ सुमिरनकरहुसोरामको, कालगहेहै केश ॥
नाजानोंकबमारिहै, क्याघरक्यापरदेश ॥ ५ ॥

सो कबीरजी कहैहैं कि परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनको सुमिरण करहु शिकारी जो कालहै सो केश करमें गहेहै या नहीं जानौहौ धौं कब मारै या घरमें या परदेशमें अर्थात् साहबकेबिना स्मरण घरमेंरहोगे तौ न बचोगे जो बनमें जाउगे तोहू न बचौगे ॥ ५ ॥

इति उन्नीसवींरमैनी समाप्तम् ।

अथ बीसवीं रमनी ।

चौपाई ।

अबकहुरामनामअविनासी। हरितजिजियराकतहुँनजासी १
जहांजाहु तहँ होहुपतगा। अबजनिजरहुसमुझिविषसंगा २
रामनामलौलायसोलीन्हा । भृङ्गीकीट समुझि मनदीन्हा ३
भोअतिगरुवा दुखकै भारी। करुजिययतनसोदेखुबिचारी४
मनकीबातहैलहरिबिकारा । त्वहिंनहिं सूझै वार न पारा ५
साखी ॥ इच्छाको भवसागरै, वोहित राम अधार ॥
कहैंकबिरहरिशरणगहु, गोवछखुरविस्तार ॥६॥

अबकहुरामनामअविनासी। हरितजिजियराकतहुंनजासी १

अबिनाशी जो रामनाम ताको अबहूं कहु । हरिकहे भक्तन के आरति हारणहारे जे साहब हैं तिनको छोड़ि हे जीव औरेमतनमें कतहुंनना आर्थात्चितचित्तते विग्रहकरि सर्वत्रसाहिबैकोदेखु ॥ १ ॥

जहांजाहुतहँहोहुपतंगा । अवजनिजरहुसमुझिविषसंगा २

जौनेन मतमें जाहुहौ तहां पतंगहीसे जारिजाउहौ सो ते गुरुवन को संगजो बिषाग्नि ताको समुझि अबजनि जरहु अर्थात् जो इनको संगकरहुगे तौ मन इन्द्रियादिकन को बिषय जो सिद्धांत कीन्हहै ताही में तुमहूंको लगाइ देयँगे तौ ससारही में परेरहोगे ताते इनको संगत्यागि रामनाम जपौ जो कहौ कौनीरीतिते जपै रामनामतौ मन वचनके परेहै सो आगे कहैहैं ॥ २ ॥

रामनामलौलायसोलीन्हा । भृंगीकीटसमुझिमनदीन्हा ३

रामनाममें सो लौ लगाय लीनहै कौनजौन भृङ्गी औ कीट की ऐसीगति समुझिकै अपने मनदीन्हहै अर्थात् जैसे कीटभृङ्गी को देखत देखत वाको शब्द

सुनत सुनत वाको डेरात डेरात तदाकारह्वै भृङ्गीहीरूप ह्वै जाय है तैसे रामनाम जपतजाइहै, वाको सुनतजाइहै, जगत्मुख अर्थते डेरातजायहै; औ साहबमुख अर्थमें साहबकी रूप औ अपनो हंसस्वरूप बिचारत निज हंसरूप में तदाकार ह्वैजायहै, मनादिक मिटिजायहै शुद्ध रहिजाय है सो अपनेरूप पायजायहै। तब मन वचनके परे जो रामनाम सो आपनेते अस्फूर्त्तिहोइ है तामें लौलगायकै जैसे कीटभृङ्गी बनिकै औरे कीटको भृङ्गी बनावैहै तैसे यही जीव उपदेश करिकै औरेहूको हंसरूप बनावै है। सो जो भृङ्गीको शब्द कीट न ग्रहणकरै तौ कीटही रहिजाय ऐसे जो रामनामको जीव ना ग्रहणकरै तौ असारही रहिजायहै तामें प्रमाण अनुरागसागरको॥ (ज्यों भृङ्गी कीटके पासा। कीटहिगहि गुरुगमि परगासा॥ बिरला कीट होय सुखदाई। प्रथम अवाज गहै चितलाई॥ कोइ दूजे कोइ तीजे मानै। तन मन रहित शब्दहित जानै॥ तबलैगे भृङ्गी निजगेहा। स्वाती दैकर निज समदेहा)॥ ३॥

भोअतिगरुवादुखकैभारी। करुजिययतनजोदेखुविचारी४
मनकीवातहैलहरिविकारा। त्वहिंनाहिंसूझैवारनपारा॥५॥

यह संसार भारी दुःखकरिकै अति गरुवा बोझाहै जीव तू बिचारि देखु जौ तोको बोझालगै तौ रामनामको यतन करु॥४॥ मनकी बातकहे मनते गुरुवनको धोखा ब्रह्म तेहिते उठी जो काररूप लहरि माया ताको कौनो मन कहिकै तोको वारपार नहीं सूझै है॥ ५॥

साखी॥ इच्छाकेभवसागरै, वोहितरामअधार॥
कहैकबीरहरिशरणगहु, गोवछखुरबिस्तार॥६॥

यह जो समष्टि जीवको इच्छारूप भवसागर तामें वोहित जो नौका रामनाम सोई आधार है और नहीं है सो कबीरजी कहै हैं हरि जे साहबहैं तिनकी शरणगहु यह भवसागर गऊके बछवाके खुरके सम उतरि जायगो यामें संदेह नहीं है॥ ६॥

इति बीसवीं रमैनी समाप्ता।

अथ इक्कीसवीं रमैनी ।

चौपाई ।

बहुतदुखै है दुखकी खानी । तबबचिहौजबरामहिजानी १
रामहि जानियुक्ति जोचलई । युक्तिहिते फंदा नाहिं परई २
युक्तिहि युक्ति चलत संसारा । निश्चयकहा न मानुहमारा ३
कनक कामिनी घोरपटोरा । संपत्ति बहुत रहै दिनथोरा ४
थोरेहि संपतिगो बौराई । धरमरायकी खबरि न पाई ५
देखित्रासमुखगोकुम्हिलाई । अमृत धोखे गो विष खाई ६
साखी ॥ मैं सिरजों मैं मारहूं, मैं जारौं मैं खाउँ ॥
जलथलमैंहींरमिरह्यो,मोरानिरंजननाउँ ॥ ७ ॥

बहुतदुखैहैदुखकीखानी । तबबचिहौजबरामहिजानी ॥१॥
रामहिजानियुक्तिजोचलई । युक्तिहितेफंदानहिपरई ॥ २ ॥
युक्तिहियुक्तिचलतसंसारा । निश्चयकहानमानुहमारा॥३॥

यह दुःखकी खानि जो संसारसो बहुतदुःखैहै अर्थात् बहुतदुःख देइहै तुम तबहीं यातेबचौगे जब सबकेमालिक रक्षक जे श्रीरामचन्द्र तिनकोजानौगे आनउपाय न बचौगे ॥१॥ काहेते जे श्रीरामचंद्र को जानिकै युक्ति सहित चलैहै तेई वही युक्तिहीते संसारके फंदामें नहीं परैहैं सो कबीरजी कहैहैं सो युक्ति आगे लिखैंगे॥२॥ यासंसार केवल अपनी अपनी युक्तिहीते चलै है कबीरजी कहैहैं मैं जो निश्चय बात कहौहौं कि, रामनामहीते तेरो उद्धार होयगो याकी युक्ति कोई नहीं मानैहै अपनेही मनकी युक्ति चलैहै ॥ ३ ॥

कनककामिनी घोरपटोरा । संपतिबहुत रहैदिनथोरा ॥४॥
थोरेहि संपति गो बौराई । धर्मराजकी खबरि न पाई ॥५॥

कनक जोहै कामिनी जोहै घोड़े जेहैं हाथी जेहैं पटंबर जेहैं ये संपति तो बहुतहै परंतु इनके भोग करिबेको दिनतो थोरही है अर्थात् आयुर्दाय थोरी है सोतौ भोगमें बितावै है साहबको कब जानैगो ॥ ४ ॥ सो तै तो थोरी संपत्तिमें बौराय गयो धर्मराज की खबरि तै नहीं पाई कि, जब मोको ले जाइँगे तब सारी संपत्ति ह्वियई परीरहि जायगी तब कौन भोगकरैगो बिचारि साहब को जानो ॥ ५ ॥

देखित्रासमुखगोकुम्हिलाई । अमृतधोखेगोबिषखाई ॥६॥

औ दैवयोगजो कदाचित् तुम्है धर्मराजको त्रासदेखिकै मुख जब कुम्हिलायगयो कहे संसारते बैराग्यभई तब गुरुवालोगनके निकटजाइ अपनो स्वरूप समुझौ कि, मैं अमृतहौं मन मायादिक ते भिन्नहौं सो बातती तू सांचबिचारी ऐसहीहै परंतु भगवत् अंशत्व तेरे स्वरूपमें है सो गुरुवालोग नहीं बतायो औरहीमें लगाय दियो सो अपनो स्वरूप समुझबो जो अमृत ताही के धोखे ते अहं ब्रह्मास्मि बिषखायगयो भगवत्दास आपनेको न मान्यो साहबको न जान्यो सर्बत्र मैहीहौं या मानि कहनलाग्यो ॥ ६ ॥

साखी ॥ मैंसिरजौं मैंमारहूं, मैं जारौं मैं खाउँ ॥
जलथल मैंहींरमिरह्यों, मोरनिरंजननाउँ ॥ ७ ॥

औ मैंहीं जगत् को सिरजौ हौं मैंहीं मारौहौं मैंहीं जारौहौं जौने अग्नितें जारौहौं ताको मैंहीं खाउँहौं औ जलथलमें मैंहीं रमि रह्योहौं मोर निरंजन नाउँ है कैवल्य महींहौं औ अंजन जो माया ताते सबलित ह्वैकै मैंहीं सबकरौहौं॥७॥

इति इक्कीसवीं रमैनीसमाप्ता ।

बाईसवीं रमैनी ।

चौपाई ।

अलखनिरंजन लखैनकोई । जेहिके बँधे बँधा सब कोई॥१॥
जेहि झूठो सो बँधोअयाना । झूठी बात सांच कै माना॥२॥

धंधा बँधा कीन्ह व्यवहारा । कर्म विवर्जित वसै निनारा ॥ ३ ॥
षटआश्रमषटदरशनकीन्हा । षटरसवस्तुखोटसबचीन्हा ४
चारि वृक्ष छाशाख बखानै । विद्याअगणितगनै न जानै ॥ ५ ॥
औरौ आगम करै विचारा। तेहिनहिंसूझै वार न पारा ॥ ६ ॥
जप तीरथ व्रत पूजे भूता । दान पुण्य औ किये वहूता ॥ ७ ॥
साखी ॥ मंदिर तो है नेहको, मति कोइ पैठै धाइ ॥
जोकोइपैठै धाइकै, बिन शिर सेंतीजाइ ॥ ८ ॥

अलखनिरंजनलखैनकोई । जेहिकेबँधे बँधासवकोई ॥ १ ॥
जेहिझूठो सो बँधो अयाना । झूठीवातसांचकैमाना ॥ २ ॥
धंधाबँधाकीन्ह व्यवहारा । कर्मविवर्जितबसैनिनारा ॥ ३ ॥

कबीरजी कहैहैं कि, हे जीव! तूतो आपनेको निरंजन मान्यो सो निरंजन तो अलखहै वाको कोईनहीं लखैहै जाके बँधतेकहे मायामें सब कोई बँधे हैं ॥ १ ॥ हे अजानौ ! जौने झूठे सो तुम बँधे हौ सो झूठही है तुम सांच मानोहौ सो न मानो ॥ २ ॥ धन्धा जो साहबकीसेवा ताको बँधाकहे बांधनवारे तौनेको व्यवहार तुम कीन अर्थात् व्यवहार मानि कर्मते वर्जित ब्रह्म सबते न्यारही रहै है या परमार्थ तुमलोग कहौहौ औ वाहीमें आरूढ़ होतहौ साहबको नहीं जानौहौ ॥ ३ ॥

षटआश्रमषटदरशनकीन्हा । षटरसवस्तुखोटसबचीन्हा४
चारिवृक्षछाशाखवखानै । विद्याअगणितगनैनजानै ॥ ५ ॥

षटरसनको खोटमानि त्यागन करिकै औ षटआश्रम करिकै षट दर्शन करिकै वही धोखा ब्रह्महीको सिद्धांत मानते भये ॥ ४ ॥ पुनि चारि वेद छवोशास्त्र अगणित विद्या वाच्यार्थ करिकै धोखा ब्रह्मको कहैहैं ताको तो तुम ग्रहणकियो तात्पर्य वृत्ति ते जो साहबको कहैहै सो तुम न जानत भये ॥ ५ ॥

औरो आगम करेविचारा। त्यहिनहिंसूझैवारनपारा॥ ६ ॥
जपतीरथ ब्रत पूजेभूता। दान पुण्य औ कियेबहूता ॥ ७ ॥

अरु औरौ आगम जेहैं ज्योतिष यंत्र मंत्र आदिदैकै तेऊ तात्पर्य वृत्तिते जौने साहबको कहैहैं ताको वारपार तो तुमको न सूझिपरचो वाच्यार्थ प्रतिपाद्य जो धोखा ब्रह्म और और देवता ताही में लागत भये॥ ६॥ सो यहिप्रकार नाना मतन करिकै मानते भये कोई नाना देवतन के जपकिये कोई तीर्थ किये कोई ब्रत किये कोई भूतनकी पूजाकिये कोई दानकिये कोई पुण्य जो यज्ञादिक कर्म ते किये ॥ ७ ॥

साखी ॥ मंदिरतोहै नेहको, मतिकोइ पैठेधाई ॥
जोकोइपैठैधाइके, बिनुशिरसेंती जाई ॥ ८ ॥

सो यह सब मतमा एक नानादेवता धोखा ब्रह्म इनमें जो प्रीति है सो नेहको मंदिरहै तामें तू धायकै मतिपैठै जो इनमें धायकै पैठैगो तौ विनु शिरकहे सबकेशिरे जे साहब तिनके बिना सैंतिही जाईगो कछुहाथ न लगैगो तेरेसाधन मुक्तिदेनवाले न होवेंगे संसारही देनवाले होइँगे अथवा तुह्मारोमाथा काटो जायगो वृथा मरिजाउगे ॥ ८ ॥

इति बाईसवींरमैनी समाप्ता।

अथ तेईसवीं रमैनी।

चौपाई।

अलपसौख्यदुखआदिहुअंता। मन भुलानमैगर मैमंता॥ १॥
सुख विसराय मुक्तिकहँपावै। परिहरिसांचझूंठनिजधावै॥ २॥
अनल ज्योति डाहै यकसंगा। नयन नेह जसजरै पतंगा॥ ३॥
करु बिचारज्यहिसबदुखजाई। परिहरिझूठा केरि सगाई॥ ४॥
लालच लागे जन्म सिराई। जरामरणनियरायलआई॥ ५॥

साखी ॥ भ्रमको बांधल ई जगत, यहिबिधि आवैजाई ॥
मानुष जन्महि पाइनर, काहे को जहँडाइ ॥ ६ ॥

अलपसौख्यदुखआदिहुअंता । मनभुलानमैगरमैंमंता ॥ १ ॥
सुखबिसरायमुक्तिकहँपावै।परिहरिसांचझूंठनिजधावै ॥ २॥
अनलज्योति डाहै यकसंगा।नयननेह जसजरैपतंगा॥३॥

जौने संसारमें अल्प तो सुखहै औ आदिहूमें अंतहूमें दुःखहै ऐसे संसारमें मैगर मैंमंताकहे मतवारो हाथी जो मन सोभुलाईकै मैंमंताकहे मेंहीं ब्रह्महौं या मानिलियो अथवा मैंहीं देहहौं या मानिलियो॥ १ ॥सुखरूप जे साहब हैं तिनको बिसराइ कै कबीरजी कहैहैं कि मुक्ति कहां पावै सांचको छोड़िकै झूठ जो धोखा ब्रह्महै तामें तो धावैहै यह जीव कैसे सुखपावै ॥ २ ॥ अनलज्योतिजो ब्रह्महै सो एकसंग सब ज्ञानिनको दाहैहै अग्नि ब्रह्मको नाम है 'अज्ञात्वादग्निनामासौ' ॥ कैसेदाहैहै जैसे नयननेह कहे देखनके लालचलगे दीपककीज्योतिमें पतंगजरैहैं ॥ ३ ॥

करुबिचारज्यहिसबदुखजाई।परिहरिझूठाकेरिसगाई॥ ४ ॥
लालचलागेजन्मसिराई।जरामरण नियरायलआई॥ ५ ॥

झूठ जो या धोखा ब्रह्महै औ अपनो कलेवर तौने की सगाई त्यागिकै परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनको बिचारकरु जाते तेरे सब दुःख जाँई ॥४॥ धोखा ब्रह्मके लालच में लगे कि, हमारी मुक्ति होयगी हमको विषयही ते सुख होयगो याहीमें लगेलगे जन्मसिरायगयो जरा जो बुढ़ाई औ मरण सो नियराय आयो ॥ ५ ॥

साखी ॥ भ्रमको बांधल ई जगत, यहि बिधिआवैजाय ॥
मानुषजन्महि पायनर, काहेकोजहँडाय॥ ६ ॥

यही रीतिते भ्रमको बांधा या जगत है वही ब्रह्मते आवै है कहे उत्पन्न होइहै औ जाइहै कहे लीन होइ है 'मानुष जन्महि पायनर काहेको जहँडाय'

कहे काहे जड़वत् होयहै मनुष्य जन्म याते कह्यो अथवा जहँडाय कहे काहे भूले जाते हैं कि, मनुष्य के मानुष्यै होय हैं हाथीके हाथी होय हैं कछू हाथी के मनुष्य नहीं होयहैं ऐसे जो तैं निराकार ब्रह्मको हो तो तोहूं निराकार होतो सो तैं मनुष्य है ताते मनुष्यरूपजे श्रीरामचन्द्रहैं तिनही को है ॥ ६ ॥

इति तेईसवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ चौवीसवीं रमैनी ।

चौपाई ।

चंद्रचकोर कसिबातजनाई । मानुषबुद्धिदीन पलटाई॥१॥
चारि अवस्था सपनो कहई । झूठे फूरे जानत रहई ॥२॥
मिथ्याबात न जानै कोई।यहिविधि सिगरे गये बिगोई॥३॥
आगेदै दै सबन गँवावा । मानुष बुद्धि न सपनेहु पावा॥४॥
चौंतिस अक्षरसों निकलैं जोई।पापपुण्य जानैगा सोई॥५॥
साखी । सोइकहते सोइ होउगे,निकलि न बाहरआउ ॥
होहुजूरठाढ़ो कहौं, धोखे न जन्म गँवाउ ॥ ६ ॥

चन्द्रचकोरकसिबातजनाई । मानुषबुद्धिदीनपलटाई॥१॥

साहब कहैहैं कि,हे जीवो!तुमको गुरुवालोग चन्द्रचकोर कैसो दृष्टांत जनायकै नानाईश्वरमें लगायदियो कैसे जैसे चन्द्रमा को ताकत ताकत चकोर चन्द्ररूपैहै या बुद्धिमानैहै तब चकोरको अग्निकी गरमी नहीं लगैहै अग्नि खायजायहै तैसेअपनोस्वरूप जो ब्रह्म ताको जबजानिलेहुगे तबतुमको दुःखसुख न जानिपरैगो कोई यह कहैहैं कि,जैसे चन्द्रमा चकोरमें नेहकरैहै ऐसे तुम ईश्वरनमें प्रीतिकरौगे तौ दुःखसुख न जानिपरैगो यह जो तुम्हारी मनुष्यबुद्धि कि, मैं हंसस्वरूपहौं द्विभुजहौं द्विभुजई को होउँगो सो पलटायकै ब्रह्ममें लगायदियें नानादेवतनमें लगायदिये ॥ १ ॥

चारि अवस्था सपनो कहई । झूठेफूरे जानत रहई ॥ २ ॥
मिथ्यावातनजानैकोई । यहिविधिसिगरेगयेविगोई ॥ ३ ॥

चारिअवस्थाजेहैं जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तुरिया ते सपनकहाती हैं तो झूठी फुरि जानत रहे हैं॥२॥वह कैवल्य जो है पँचईं अवस्था तद्रूप ह्वै जाइबो कि, मैंहीं ब्रह्महौं सोमिथ्याहै यहबात कोई नहीं जानै है यहीविधि सिगरे जीव विगरिगये कहे बिगोइगये ॥ ३ ॥

आगे दैदै सवन गँवावा । मानुषवुद्धि न सपनेहुपावा॥ ४ ॥
चौंतिसअक्षरसोंनिकलैजोई । पापपुण्य जानैगासोई॥ ५ ॥

वहीधोखा ब्रह्मके आगे और कुछ नहीं रह्यो आदिकी उत्पत्ति वहीतेहै यही बात आगे दैदै कहे विचारि कै सिगरे जे ऋषिमुनि हैं ते आजअपने स्वस्वरूपको गँवावतभये मनुष्यरूपजो मैं तिन के जाननेवाली बुद्धि सपन्यो न पावतभये ॥ ४ ॥ चौंतिसअक्षरके जो निकरैगा सोई पापपुण्यजानैगा मैं साहबको हौं और मैं लागेंहौं सो पापई करौंहौं या बातमेरो अनिर्वचनीय निर्वाण जो नाम है ताको जपिकै जानैगो औ अपनो स्वस्वरूप जानैगो ॥ ५ ॥

साखी ॥ सोइकहते सोइ होउगे, निकलि न वाहेरआउ ॥
हो हुजूरठाढ़ो कहौं, धोखे न जन्म गँवाउ ॥ ६ ॥

जोपदार्थ देखोगे जो सुनौगे जो कहौगे जो स्मरण करौगे संसारमें सोई होउगे वही धोखामें लागिकै पुनिसंसारी होउगे वा में ते निकारिकै बाहर न होउगे काहेते कि, वहतो अकर्त्ताहै तुम्हारी रक्षाकौन करैगो सो साहब कहै हैं कि, सर्वत्र पूर्णहौं तेरे हुजूर ठाढ़ कहतई हौं कि, तैं मेरो है तू काहे धोखा ब्रह्म में ईश्वरनमें जगत्के नाना पदार्थमें लागिकै जन्मगँवाये देतहै ॥ ६ ॥

इति चौबीसवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ पचीसवीं रमैनी ।

चौपाई ।

चौंतिस अक्षरकोयहीबिशेखा । सहसौ नामयहीमें देखा १
भूलिभटकि नर फिरिघरआवैं । होतज्ञान सोसबन गवाँवैं२
खोजहिंब्रह्मविष्णु शिवशक्ती । अनंतलोगखोजहिंबहुभक्ती३
खोजहिंगणगँधर्वमुनिदेवा । अनंतलोकखोजहिंबहुसेवा ४

साखी ॥ यतीसती सबखोजहीं, मनै न मानै हारि ॥
बड़ेबड़े बीरबाचें नहीं, कहहिं कबीरपुकारि ॥ ५॥

चौंतिसअक्षरकोयहीबिशेखा । सहसौनामयहीमेंदेखा ॥१॥
भूलिभटकिनरफिरिघरआवै । होतज्ञानसोसबनगवाँवै ॥२॥

चौतिस अक्षर को विशेष धोखई है काहते हजारनाम यही चौतिस अक्षैरमें देखैहैं अर्थात जे भरि वचनमें आवै है ते माया ब्रह्मरूप धोखईहै मिथ्याही सो चौतिसै अक्षरके भीतर सबहै अनिर्वचनीयपदार्थ तोको कैसे मिले॥ १॥चौतिस अक्षरको बिस्तार जो निगम अगम तामें साहब को ज्ञानभूलि भटकिकै जब-पार नहीं पावै है तब फिरि थकिकै आपने घटमें आय या कहै है कि एकयेहूनहीं है वेदहू तौ नेतिनेतिकहै हैं तब अपनो स्वरूपमें आयो सो साहबके ज्ञान होतही गुरुवा लोग भटकाइकै अज्ञानमें डारि दिये जौन यह बिचारकियो कि ये सब अनिर्बचनीय नहीं हैं सो गँवायँदियो अनिर्बचनीय धोखाब्रह्महीको मानतभये ॥ २ ॥

खोजहिंब्रह्मविष्णुशिवशक्ती । अनतलोकखोजहिंबहुभक्ती३
खोजहिंगणगँधर्वमुनिदेवा । अनतलोकखोजहिंबहुसेवा ४

अनंत जे लोकहैं तिनमें अनंत जे ब्रह्मा बिष्णु महेश शक्ति तिनकी भक्ति करिकै वही ब्रह्माण्डनमें अनिर्वचनीय को खोजन लगे अरु वही को अनंत लोकमें बहुत सेवाकरि गंधर्ब मुनि देबता खोजनलगे ॥ ३ ॥ ४ ॥

साखी ॥ यती सती सबखोजहीं, मनै न मानैहारि ॥
बड़े बड़े बीरबाचैंनहीं, कहहिकबीरपुकारि ॥ ५ ॥

औ यती सती सब मनमें हारि ना मानिकै वही अनिर्वचनीय जो मायाब्रह्म ताहीको खोजैहै सो कबीरजी कहै हैं कि, मैं पुकारिकै कहौंहौं या माया ब्रह्मके धोखाते बड़े बड़े बीर नहीं बाचे है जे कोई बिरले संत साहबको जानै हैं तेई बाचे हैं तामें प्रमाण कबीरजीको ॥ (रसना रामगुण रमिरमि पीजै । गुणातीत निर्मूलक लीजै । निरगुण ब्रह्मजपौ रे भाई । जेहि सुमिरत सुधिबुधि सब पाई ॥ विषतजिराम न जपसि अभागे । काबूड़ेलालचकेलागे ॥ ते सब तरे रामरस स्वादी । कह कबीर बूड़े बकवादी) ॥ ५ ॥

इति पचीसवीं रमैनी समाप्तम् ।

अथ छब्बीसवीं रमैनी ।

चौपाई ।

आपुहि करता भे करतारा । बहुविधि बासनगढ़ै कुम्हारा १
विधनासबैकीनयक ठाऊं । अनेक यतनकै बनकबनाऊं २
जठरअग्निमहँदियपरजाली । तामें आपुभये प्रतिपाली ३
बहुत यतनकै बाहर आया । तब शिवशक्ती नामधराया ४
घरको सुत जो होय अयाना । ताके संग न जायसयाना ५
सांचीबात कहौं मैं अपनी । भया देवाना और कि सपनी ६
गुप्त प्रगट है एकै मुद्रा । काको कहिये ब्राह्मण शुद्रा ॥ ७ ॥
झूठ गर्व भूलै मति कोई । हिन्दू तुरुक झूंठ कुल दोई ॥ ८ ॥

साखी ॥ जिनयह चित्र बनाइया, सांचा सूत्रधारि ॥
कहही कबिरते जन भले, चित्रवंतहिंलेहिविचारि॥६॥

आपुहिकरताभेकरतारा। बहुविधिबासनगढ़ैकुम्हारा ॥१॥
विधनासबैकीनयकठाऊं। अनेकयतनकैबनकबनाऊं॥२॥

बिधि जे ब्रह्मा हैं ते अपनेको कर्ता मानि सब साजुजोरि अनेक यतन कै जगत् बनावतभये जैसे कुम्हार दण्ड चक्र सब साज जोरिकै बासन गढ़ै है सो करतार जो अपनेको कर्त्ता मान्यो सो वाकी अज्ञानताहि काहेते कबीरजी कहै हैं कि सबसाजु आगेही उत्पन्न ह्वैरही है कौन नईसाज बनाइ करतार अपनेको कर्तामानै साजुतो सब आगेकी उत्पन्न भई है सो कहै हैं ॥ १ ॥ २ ॥

जठरअग्निमहँदियपरजाली। तामेंआपुभयेप्रतिपाली॥३॥
बहुतयतनकैबाहरआया। तबशिवशक्तीनामधराया ॥४॥

जब महाप्रलय होइ जाइहै तबजौनकालरहिजायहै सोकाल सदा शिवरूपहै ताके जठरमें कहे पेटमें अग्नि जो लोकप्रकाश ब्रह्म तामें समष्टि जीवपर जालिदिये पराशक्ति को जाल लगाइ दिये अर्थात् अग्नि जो लोकप्रकाश ब्रह्म सो मही हौ यह मानि माया सबलित होतभयो तामें तौने माया के प्रतिपाली आपै ही होतभये अर्थात् जीवनके मानेमात्र मायाहै ॥ ३ ॥ सो माया सबलित जो ब्रह्म समष्टि जीवरूप सो अनेक यत्न कहे रामनामको संसारमुख अर्थ करि पांचौ ब्रह्म आदि सब बस्तु उत्पन्नकै समष्टिते व्यष्टिह्वैकै जगत् उत्पन्न कियो ताको शिव शक्त्यात्मक नाम धरावतभये ॥ ४ ॥

घरकोसुतजोहोयअयाना। ताकेसंग न जाहिसयाना॥५॥

सोकबीरजी कहैहैं कि, हे जीवो! येब्रह्मादिकतुम्हारही सुत हैं तुमहीं समष्टि ते व्यष्टि भयेहौ कि, जो घरकोपूत अयान होइ है ताकेसंग सयान नहीं जायहै

ऐसेही ब्रह्मादिक जे अनेकमत करिकै आपनेको कर्त्ता मानि लिये हैं तिनके संग तुम न लागौ अर्थात् अनेक मतनमें तुम न परौ तुम साहब को जानो ॥ ५ ॥

साँचीबातकहौंमैंअपनी । भयादेवानाऔरकिसपनी ॥ ६ ॥

सो कबीरजी कहै हैं कि, सांचीबात मैं अपनी कहौहौं अपनी कौनकी मैं नाना मतनको छांड़ि साहबको जान्यो है सोतुम नहीं बूझौहौ और की सपनी कहे स्वप्नवत् झूठी नानामतनकी बाणीमें देवाना कहे बिकल ह्वै रहेहौ हे जीवो ! सो नातामत त्यागि साहबको जानो कहे और की पुनि जो या पाठहोय ताको अर्थ या है साँचोबात अपनी मैं कहताहूं जोमेरे मतमें साहबको जानता है सोई साँचहै यासुनि पुनि और का जा भया सोई दिवाना ॥ ६ ॥

गुप्त प्रगट है एकै मुद्रा । काकोकहिये ब्राह्मणशुद्रा ॥ ७ ॥
झूठगर्व भूलै मतिकोई । हिंदू तुरुक झूठ कुल दोई ॥ ८ ॥

सो हेजीवौ! गुप्तकहे जब समष्टिमें रहे हौ तबहूं औ जबप्रगट कहे व्यष्टिमें रहेहौ तबहूं एकही मुद्रारहेहौ अर्थात साहिबै के रहे हौ तुम जे नाना मतनमें परि नाना साहब मानि ब्राह्मण शूद्रकहतेहौ सो झूठेहौ जीवत्व तो एकही है ॥ ७ ॥ मैं हिंदूहौं मैं तुरुकहौं यह झूठो गर्वकरिकै मति कोई भूलौ विचारिकै देखौ तौ हिंदू तुरुक कुल ये दोऊ झूठे हैं तुमतौ साहबके हौ ॥ ८ ॥

साखी ॥ जिन यह चित्र बनाइया, साचा सो सूत्रधार ॥
कहहिकबिरतेइजनभले,चित्रवंतहिलेहिविचार ॥९॥

जिन यह नाना चित्र बनाइया कहे जिन यह जीवको मन नाना शरीर जगत्में बनायो है तौने को सूत्रधारी साहब साँचो है जौन सबको सुरतिदियो है सो कबीरजी कहहै चित्रवंत जो या मन नानादेह देनेवालो याको जो कोई बिचारिलियो कि या मिथ्याहै औ साँच साहब को जानिलियो ते जन भले हैं ॥९॥

इति छब्बीसवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ सत्ताईसवीं रमैनी ।

चौपाई ।

ब्रह्मा को दीन्हो ब्रह्मण्डा । सात द्वीप पुहुमी नौखण्डा ॥१॥
सत्य सत्यकै विष्णुदृढाई । तीनिलोकमहँ राखिनिजाई ॥२॥
लिंग रूप तव शंकरकीन्हा । धरतीकीलि रसातलदीन्हा ॥३॥
तब अष्टंगीरची कुमारी । तीनिलोक मोहनिसवझारी ॥४॥
द्वितीयानामपार्वतीभयऊ । तपकरता शंकर को दयऊ ॥५॥
एकै पुरुष एक है नारी । ताते रचिनि खानि भौ चारी ॥६॥
शर्मन वर्मन देवो दासा । रजगुण [illegible] धरनिअकासा ॥७॥
साखी ॥ एक अंडॐकारते, सब जग भयो पसार ॥
कहकबीरसबनारिरामकी, अविचलपुरुषभतार ॥८॥

ब्रह्माकोदीन्होंब्रह्मण्डा । सातद्वीपपुहुमीनौखण्डा ॥ १ ॥
सत्यसत्यकैविष्णुदृढाई । तीनिलोकमहँराखिनिजाई ॥ २ ॥

अष्टांगकौन हैं ॥ (भूमिरापोनलोवायुःखंमनोबुद्धिरेवच ॥ अहंकारइतीयंमेभिन्नामकृतिरष्टधा) ॥ ऐसी जो इच्छारूपी नारिअष्टांगीसो ब्रह्माको ब्रह्मांड देतभई औ सात द्वीप नवौखण्ड पृथ्वी विष्णुको देकै तीनिलोकमें राखिनि कहे व्यापक करिदेतभई औ बिष्णुको नाम सत्य धगावतभई सो आठ नाममें प्रसिद्धहै ॥ "हरिः सत्योजनार्दनः" ॥ सो जब ब्रह्मा बिष्णु दोऊ अपने अपनेको मालिक मानि लरे तब महादेवजी कह्यो कि, हम लिंग बढ़ावै हैं जोई अंत लै आवै सोई बड़ो ॥ १ ॥ २ ॥

लिंगरूपतवशंकरकीन्हा । धरतीकीलरसातलदीन्हा ॥३॥

तब महादेवजी सातलोक नीचे के सात ऊंचके तामेंकीलवत् लिंग बढ़ावत भये ब्रह्मा विष्णु दोऊकोपठयो कि, जाय अंतलैआवो सोविष्णु जायकै या कह्यो

कि, हम अंत नहीं पाये ब्रह्माकह्यो हम अंत लै आये सुरभीके दूधते नहवाय केतकीके फूलतेपूज्यो है सोसुरभी औ केतकी साखीहैं तब महादेवतीनोंको झूठा- जानि तीनोंको शापदियो ब्रह्माको कह्यो लोकमें अपूज्यहोउ सुरभीको कह्यो तुम्हारोमुख अशुद्धहोइ केतकीको कह्यो हमपर न चढ़ो औ विष्णुको प्रसन्न ह्वैकै या कह्यो कि, तीन लोकमें पूज्य होउ तुम सत्य कह्योहै यह पुराणमें कथा प्रसिद्धहै ॥ ३ ॥

तबअष्टंगीरचोकुमारी । तीनिलोकमोहनिसवझारी ॥ ४ ॥
द्वितियानामपार्वतिभयऊ । तपकरताशंकरकोदयऊ ॥ ५ ॥

तबअष्टंगी जो कारणरूपाशक्ति सोमसन्न ह्वैकै तीनि लोककी मोहनहारी कुमारी सती रचिकै तपकरता जेदक्षैहं तिनकेद्वारामहादेवजीको देतभई तौनेही को दूसरो पार्वती नाम भयो ॥ ४ ॥ ५ ॥

एकैपुरुषएकहै नारी । ताते रचिनि खानि भै चारी ॥ ६ ॥
शर्मनबर्मनदेवोदासा । रजगुणतमगुणधरणिअकासा ॥ ७ ॥

एकै पुरुष जोहै ब्रह्म अरु एकै नारी जोहै माया ताते चारिखानिके जीव उत्पत्ति होतभये अंडज पिंडज स्वेदज उद्भिज॥ ६ ॥ औ शर्मन बर्मन देवो दासा कहे शर्मन ब्राह्मण बर्मन क्षत्री देवो वैश्य दासा शूद्र अथवा शर्मन कहे श्रोता बर्मन कहेवक्ता अरुदेवता औ उनकेदास रजोगुणी तमोगुणी औधरती औआ- काश होतभये ॥ ६ ॥ ७ ॥

साखी ॥ यकअंड ॐकारते, सब जग भयो पसार ॥
कह कबीर सबनारिरामकी, अविचलपुरुषभतार ८

मंगलमें पांच ब्रह्म पांच अंडमें राख्यो है या कहि आये हैं सो तामें शब्द ब्रह्मरूप जोहै अंडमणव ता प्रतिपाद्य जो ब्रह्म सोमायासबलितह्वै इच्छा आदि अष्टांगी उत्पन्नकै जगत् पैदाकियो है सो कबीरजी कहै हैं कि, धोखा वही है प्रणवप्रतिपाद्य श्रीरामचन्द्रही हैं काहेते रामनामहीके जगतमुख अर्थते

प्रणव प्रगटभयो है ताते प्रणवप्रतिपाद्य श्रीरामचन्द्रही हैं यह रामनामको साहबमुख अर्थ रामतापिनीमें प्रसिद्धहै ताते हेजीवो! तुमसब रामचन्द्रहीकी नारिहौ अविचल कहे न चलायमान निर्विकार सदा एकरस ऐसे भतार कहे स्वामी तुम्हारे श्रीरामचन्द्रही हैं जीव चित्‌शक्ति माया अष्टांगीआदि अचित् शक्ति ई दूनों शक्ति उनहींकी हैं याते पति श्रीरामचन्द्रही हैं इहां कबीरजी मायामें सब परे हैं या देखाय साहबको लखायो इहां सब जीवनको या देखायो कबीरजी कि, तुम रामकी नारीहौ और पुरुषकरौगी तौ मारी जाउगी ॥ ८ ॥

इति सत्ताईसवीं रमैनी समाप्तम् ।

अथ अट्ठाईसवींरमैनी ।

चौपाई ।

अस जोलहाकामर्म न जाना। जिनजगआइपसारलताना १
महि अकाश दुइ गाड़बनाई। चन्द्र सूर्य दुइ नरा भराई॥२॥
सहस तार लै पूरिन पूरी । अजहूं बिनै कठिनहैदूरी॥ ३ ॥
कहहिं कबीर कर्म सों जोरी। सूतकुसूत बिनै भलकोरी ॥ ४ ॥

अस जोलहाकामर्मनजाना । जिनजगआयपसारलताना १
महिअकाशदुइगाड़बनाई । चंद्र सूर्य दुइनरा भराई २

यहि भांतिको जोलहा जो मनहै जौन जगत्‌में तानपसारयो है कहे बाणी पसारयोहै ताकोमर्म कोई न जानतभयो भतारश्री रामचन्द्रको भूलिगये धोखा-ब्रह्म नानापाति खोजनलग्यो १ महि औ आकाशकहे अधः ऊर्ध्व दुइगड़वा बनावतभये तामें चन्द्र सूर्य इडा पिंगलाहै तिनकर नराभरावत भये ॥ २ ॥

सहसतारलै पूरिनपूरी । अजहूं बिनैकठिनहै दूरी ॥ ३ ॥
कहहिंकबीरकर्मसोंजोरी । सूतकुसूत बिनैभलकोरी ॥ ४ ॥

अरु तार जोहै प्रणव ताको हजारन दोनों कुम्भकमें जपत भये अजहूंलों बाहीमें लगेहैं औ यहकहैहैं कि, काठिन दूरिहै ॥ ३ ॥ कबीरजी कहैहैं जब तानाको-ताग टूटिजाइहै तब कोरी भिजै कै जोरिदेइहै ऐसे वह साधक अभ्यासरूप कर्मते जोरिदेइहै सोकर्म को लाठिनमें बांधिकै सूतजो है जीव कुसूत जोहै वाणी ताको जोलहा जो मनहै सो विनयहै अथवा विद्या अविद्या सूतकुसूत विनय है जब बस्तु तय्यार होइजायहै तब जोलहाको बिनिबो छूटे है सो धोखा ब्रह्ममें लागि अनादिकालते बिनतई है जब साहबको जानै तब साधनरूप कर्मकरिवो छूटिजाइ हंसरूप साहबदेइ जरामरणमिटिजाइ ॥ ४ ॥

इति अट्ठाईसवीं रमैनी समाप्तम् ।

अथ उनतीसवीं रमैनी ।

चौपाई ।

वज्रहु ते तृण क्षणमें होई । तृणते वज्रकरै पुनि सोई ॥ १ ॥
निः[illegible] रू जानि परिहरई । कर्मकबांधल लालच करई ॥ २ ॥
कर्मधर्मबुधिमतिपरिहरिया । झूठानाम सांचलै धरिया ॥ ३ ॥
रजगति त्रिविधकीनपरकाशा । कर्म धर्म बुधिकेर विनाशा ॥ ४ ॥
रविकेउदय ताराभो छीना । चरवेहर दोनों में लीना ॥ ५ ॥
विषकेखाये विष नहिं जावै । गारुड़सो जो मरतजिआवै ॥ ६ ॥

साखी ॥ अलखजोलागी पलकमों, पलकाहिमोंडसिजाय ॥
विषहर मन्त्र न मानही, गारुड़ काह कराय ॥ ७ ॥

वज्रहुते तृण क्षणमें होई । तृणते वज्रकरै पुनि सोई ॥ १ ॥
निझरूनरूजानिपरिहरई । कर्मकबांधललालचकरई ॥ २ ॥

बज्रहुते तृण क्षणमें करिदेइहै अरु तृणते बज्रकरिदेइहै ऐसेपरमपुरुष श्रीरामचन्द्रको जानो ॥ १॥ निझरूनरूकहे जिनको मायाब्रह्मको धोखा निझरि गयो कहे मिटिगयो ऐसे जे नर हैं ते पूरा गुरुपाइकै परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र तिनको जानिकै संपूर्ण जगत्के कर्म त्यागिदेइँ हैं औ जे कर्ममें बँधे हैं ते अनेक लालचकरै हैं कोई द्रव्यादिक की कोई ब्रह्ममिलन की कोईईश्वरनकी ॥ २ ॥

कर्मधर्मबुधिमतिपरिहरिया । झूठानामसांचलैधरिया ॥३॥
रजुगतित्रिविधिकीनपरकाशा । कर्मधर्मबुधिकेरविनाशा ४॥

साहबके मिलनवारो जो कर्मधर्म बुधिहै ताको त्यागिदेतभये झूठझूठे जे देवताहै तिनको नाम सांचमानिकैजपतभये ॥ ३॥ गुरुवालोग रजोगुणी तमोगुणी सतोगुणी तीनप्रकारके मत प्रकाशकैकै साहबके मिलनवारो जो कर्म धर्म बुधि है ताको नाशकरि देत भये ॥ ४ ॥

रविकेउदयतारा भोछीना । चरवेहरदोनों में लीना ॥ ५ ॥
विषकेखायेविषनहिंजावै । गारुड़सोजोमरताजिआवै ॥६॥

हे जीवो ! गुरुवालोग तुमको उपदेश देयँ हैं जैसे सूर्यके उदय भो ताराको तेजक्षीण ह्वैजायहै ऐसे जबज्ञानभयो जीवत्वमिट्यो तब चर औ वेहर जो अचर ये दोनोंमें लीन ह्वै जाय है चरअचर ब्रह्मरूपते आपनेनको मानैहै ॥ ५ ॥सो साहब कहै हैं कि हेजीवो! ऐसो उपदेश जो गुरुवालोग तुम्हैं दियो सो ठीकनहीं है काहेते कि संसार बिष उतारिबेको तुम धोखा ब्रह्ममें लगैहौ सो बिषके खाये बिष नहीं जाइहै यह धोखाब्रह्म बिषरूपैहै संसार देनवारोहै गारुड़ सो कहावैहै जो मरतमें जिआइलेइ सोमेरोज्ञान धोखा ब्रह्मबिषते बचाई कालते बचाइलेइ ताको जानो ॥ ६ ॥

साखी ॥ अलखजोलागीपलकमों,पलकहिमोंडसिजाय ॥
विषहरमंत्र न मानही, गारुड़ काह कराय ॥ ७ ॥

अलख जो वह ब्रह्महै सो सबके पलकमें लाग्योहै अर्थात्पलपलमें ध्यानकरैहै औ एक पलही में डसिजायहै अर्थात् जो गुरुवनके मुंहते कढ़्यो सो पलै में वा ज्ञान लगिजायहै सो साहब कहै हैं कि तैं मेरोहै मेरी तरफ आउ यहि विषको हरनवारो जो ज्ञान ताको तो मानतही नहीं है मैं जो गारुड़ सो काहकरौं॥७॥

इति उनतीसवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ तीसवीं रमैनी ।

चौपाई ।

औ भूले षटदरशन भाई । पाखँडवेष रहा लपटाई ॥ १ ॥
जीवसीवका आयन सौना।चारो बद्ध चतुरगण मौना ॥२॥
जैनी धर्मकमर्म न जाना । पातीतोरि देव घर आना ॥३॥
दवना मरुवा चंपा फूला। मानोंजीव कोटि समतूला ॥४॥
औ पृथिवी को रोम उचारै । देखत जन्म आपनो हारै॥५॥
मन्मथ बिन्दुकरै असरारा।कलपैबिन्दुखसै नाहिंद्वारा॥६॥
ताकर हाल होय अघकूचा।छादरशनमें जैन बिगूचा ॥७॥
साखी ॥ ज्ञान अमर पद बाहिरे, नियरे ते है दूरि ॥
जो जानै तेहि निकटहै, रह्यो सकल घटपूरि ॥ ८ ॥

औभूले षट दरशन भाई । पाखँडवेषरहा लपटाई ॥ १ ॥
जीवसीवकाआयनसौना । चारोबद्धचतुरगुण मौना ॥ २ ॥

पाखण्ड वेष जो धोखा ब्रह्म सो सर्वत्र लपटाइ रह्योहै ताहीमें षट्दर्शन जेहैं तेऊ भूलिगये ॥१॥ यह जो धोखा ब्रह्मको ज्ञानहै सो जीव जोहै ताको सीव जो कल्याणहै सो नशावनवारोहै औचारों प्रकारके जीव जे हैं तेऊ बद्धहैं जे चतुर हैं तेगुणमौनाकहे गुणातीत हैं परंतु वोऊ धोखा ब्रह्मही में हैं ॥ २ ॥

जैनी धर्मक मर्म न जाना। पातीतोरि देवघर आना ॥३॥
दवना मरुवा चंपा फूला। मानोंजीवकोटि समतूला ॥४॥

अरुजैनी जे नास्तिकहैं ते धर्मको मर्म नहीं जान्यो काहेते कि बांधे तो मुँहै पट्टीरहैहैं कि कहूं किरवा न घुसिजाय जीवको बचावैहैं कि हिंसा हम न करैंगे सो जिन वृक्षनमें जीव हैं तिनकी पातीको तोरिकै पाषाण जे पारसनाथ देवहैं तिनमें चढ़ावै हैं ॥ ३ ॥ दवना औ मरुवा औचंपाके फूलको तोरिकै कोटिन जेजीवहैं तेसूँघिकै अघायहैं तिनको तोरि तोरिकै पारसनाथकी मूर्तिमें चढ़ावै हैं सो अरे मूढ़ो! प्रत्यक्ष जे जीव वृक्षहैं तिनका पत्रको तोरिकै जड़ जो पाषाणहै तामें काहेको चढ़ावोहौ तुम तो प्रत्यक्ष प्रमाण मानोहौ कर्म किये फल होय है यह मानतही नहीं हौ पाषाणपूजे कहा फल होइगो ॥ ४ ॥

औ पृथिवीकोरोमउचारै। देखत जन्मआपनोहारै ॥ ५ ॥
मन्मथ विंदु करै असरारा। कलपैबिन्दुखसैनाहिंद्वारा॥६॥
ताकरहालहोयअघकूचा। छादरशनमेंजैनबिगूचा ॥ ७ ॥

औ पृथ्वी के रोमाजेहैं वृक्ष तिनको चेलनते उखरावै हैं औ शिष्यनकी स्त्रिनको देखिकै भोगकरिकै अपनो जन्म हारिदेइहैं कहे नरकको जायँहैं ॥ ५ ॥ साधन करिकै मन्मथ के बिन्दुको असरारा कहे सरलकरै हैं औ कन्यनते भगिनी नाते औ उनकी स्त्रिनते भोग करै हैं तब वह बिन्दु ऊपरते नीचेकोकलपतहै कहे बढ़तहै औ पुनि नीचेते मेरु दंडह्वैकै ऊपरको चढ़ाइ लैजाइहै ॥ ६ ॥ सोजे जैनधर्मी हैं छः दर्शन में बिगूचा कहे भूलि गयेहैं तिनकी औ जिनको कहिआये हैं बीर्य बढ़ावन वारे तिनको हाल अघ कूचा कहे नरकनमें कूचे जाहि हैं ॥ ७ ॥

साखी ॥ ज्ञान अमरपद बाहिरे, नियरेतेहै दूरि ॥
जो जानै तेहि निकटहै, रह्योसकलघटपूरि ॥ ८ ॥

अमरपद कहे आत्माको जो स्वस्वरूपहै सो साहबकोअंशहै दासहै सोई अमरहै ताको ज्ञान नियरेते दूरिहै औबाहिरेहै इहा नियरेते दूरि कह्यो तातें अपनेको ज्ञाननहीं है औ बाहिरे है कहे बहुत दूरि देखि परैहै परन्तु जो सतगुरु भेद बतावै है तौ ज्ञान होइहै आत्माके स्वरूपको जानैहै ताको साहब निकटही है काहे घटघटमें तौ पूर्ण है तौ आत्माके निकटहै ॥ ८ ॥

इति तीसवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ इकतीसवीं रमैनी ।

चौपाई ।

स्मृतिआहि गुणनकोचीन्हा।पापपुण्यको मारगलीन्हा१॥
स्मृति वेद पढ़ैअसरारा । पाखंड रूप करै अहँकारा॥ २ ॥
पढ़ै वेद औ करै बड़ाई । संशय गाँठिअजहुंनहिंजाई ॥ ३ ॥
पढ़िकैशास्त्रजीवबधकरई । मूड़ काटि अगमनकै धरई॥४॥
साखी ॥ कह कबीर पाखण्डते, बहुतक जीव सताय ॥
अनुभवभाव न दर्शई, जियत न आपुलखाय॥५॥

स्मृति आहिगुणनकोचीन्हा । पापपुण्यकोमारगलीन्हा १॥
स्मृतिवेदपढ़ै असरारा । पाखँडरूप करै अहंकारा ॥ २ ॥

स्मृति गुणनको चीन्हा आहि कहे तीनोंगुण स्मृति में देखिपरै है काहेतें कि पाप पुण्यको मार्ग चीन्हे हैं अर्थात् पापपुण्यके मार्ग वाहीते जानिपरैहैं ॥ १ ॥ रारा जो जीव स्मृति वेदका असपढ़ताहै पाखण्डरूप ह्वैकै या अहंकार करैहै जानिबेकेलिये नहीं पढ़ैहै अर्थात् हमविद्यामें जीतै कोई विद्यामानजानि हमैं मानै चेलाहोइ इत्यादिकछू आपनै न पढ़ै है ॥ २ ॥

पढ़ै वेद औ करै बड़ाई । संशय गांठि अजहुंनहिंजाई ॥३॥
पढ़िकैवेदजीववध करई । मूड़काटिअगमनकै धरई॥ ४ ॥

वेद पढ़ैहै सब देवतनकी बड़ाईकहे स्तुति करैहै अथवा अपनीबड़ाई करैहै कि मैं महापण्डितहौं संशयकी गांठिजो परिगई है सो अजहूं नहीं जाईहै वेदांत शास्त्र आदि पढ़ैहै आत्मा सर्वत्रहै या कहैहै पै चैतन्य जो जीवहै ताको मूड़ कपटिकै पाषाण की मूर्त्तिहै ताके आगू धरैहै ॥ ३ । ४ ॥

साखी ॥ कहकबीर पाखण्डते, बहुतक जीव सताय ॥
अनुभवभाव न दर्शई, जियत न आपुलखाय ॥५॥

कबीरजी कहैहैं कि यहिपाखण्डते बहुत जीवनको सतावत भये उनको अनुभवको भाव नहीं दरशैहै कि जैसे हममारैहैं तैसे येऊ हमको मारैंगे जब भरिजिएहैं तबभर अपनी इच्छानहींकरै हैं जेहिते बचैं ॥ ५ ॥

इति इकतीसवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ बत्तीसवीं रमैनी ।

चौपाई ।

अंध सो दर्पण वेद पुराना ।दरवी कहा महारस जाना॥१॥
जसखर चन्दनलादेभारा।परिमलबास न जानगँवारा॥२॥
कहकबीरखोजैअसमाना।सोनमिलाजोजायअभिमाना३॥

जैसे आँधरको दर्पण वह आपनो मुख कहादेखै औदरवी जो करछुलीहैसो पाकके रसको कहाजानै ॥१॥ औगदहा चन्दनकोलादे चन्दनकी सुबास कहाजानै तैसे गँवारजेहैं ते बेदपुराणको तात्पर्यार्थजे साहबहैं तिनको कहाजानैं जो गरवीपाठहोय तो या अर्थहै अहंकारी लोगमधुर रसको काजानैं २ सोकबीरजी कहैहैं कि आसमान जो निराकार धोखाब्रह्मताको खोजै हैं सोवातो झूठईहै सो पुरुष याको न मिला जाके उपदेशते अहंब्रह्म को अभिमान जाय औ साहब को जानिलेय ॥ ३ ॥

इति बत्तीसवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ तेंतीसवीं रमैनी ।

चौपाई ।

वेदकी पुत्री स्मृति भाई । सो जेवरि कर लेतै आई ॥१॥
आपुहि बरी आपु गरबंधा । झूठी मोह कालको धंधा॥२॥
बँधवतबंध छोड़िना जाई । विषयस्वरूपभूलिदुनिआई ३
हमरेलखतसकलजगलूटा । दासकबीर रामकहिछूटा॥४॥
साखी ॥ रामहि राम पुकारते, जीभ परिगोरोस ॥
सूधाजल पीवैनहीं, खोदिपियनकी होस ॥ ५ ॥

वेदकी पुत्री स्मृति भाई । सो जेवरि कर लेतै आई॥ १ ॥

यहांकर्मकाण्ड उपासनाकाण्ड ज्ञानकाण्ड ये तीनोंकी कठिनतादेखाइ तात्पर्य वृत्तितेछुड़ाइ साहबमें लगावैहै । कबीरजी कहै हैं कि हेभाइउजौनीस्मृतिको कर्म प्रतिपादक अर्थकरि कर्मरूप जेवरीमें तुम बाँधिगयेहौ स्मार्त्त भयेहौ सो स्मृति वेदकी पुत्री है तौने वेदहीको अर्थ तुम नहीं जानतेहौ धौं वाको तात्पर्य कर्म के छुड़ाइबेमें है धौंकर्मके बांधिबेमें है तौ स्मृतिको अर्थ कबजानोगे ? सो वेदको तात्पर्य तौ कर्मते छड़ायबेहीमेंहै कैसे जैसजीवनकी मांसमें आसक्ति स्वभावईतें है वैसे छोड़ावै तौ न छूटै ताते वेद नियम बतावै है कि मांसखाय तौयज्ञमें खाय ताते या आयो कि जब बहुत श्रमकरि बहुत द्रव्यलगाय यज्ञकरैगो तब थोड़ामांस बिनास्वादका पावैगो तामें या बिचारैगोकि या थोड़मांसबिना स्वाद-के खाये यामें कहाहै या बिचारि मांसछोड़ि देयगो याभांति कर्मकांडको तात्पर्य निवृत्तिहीमेंहै औ स्मृति नाना देवतनकीउपासना कहैहैं सो उन पूजनकी यंत्र मंत्रकी पुरश्चरणकी बिधि कठिनहै जोकरतमें सिद्धिभयो तौ उनके लोकको गयो जो कछू बीच परिगयो तौ बैकलाइकै मरिजाइ है या भांति उपासना काण्डको तात्पर्य निवृत्तिहीमें है औ स्मृतिज्ञानकाण्डजोकहै हैं सो मनको साधन

कठिन है काहेते कि जो अहंब्रह्मास्मि मान सर्ब कर्मनको त्यागिदियो औ दूसरी बुद्धि न गईतौ पतितह्वै जाय है । तामें **एक इतिहासहै** ।एकराजाके गोहत्यालगी सो हत्याआई तब राजाकह्यो कि सर्वत्र ब्रह्मही है हमहूं ब्रह्महैं हमको हत्याकाहेको लगैगी हाथके देवता इन्द्रहैं सो इन्द्रही को लगैगी इत्यादिक जवाब देतभयो तब वहहत्या राजाकी बेटीके पासगई सो वो शृंगारकरि रानीके पलंगमें परिरही तहां राजाआये कन्याको परी देखी तब कह्योकि तू कहापरीहै तब कन्याकह्यो जैसेरानी तैसे मैं ब्रह्मतो एकही है तब राजा उलटिचले हत्या राजाके शिरमें चढ़िबैठी । या भांति ज्ञानकाण्डहूको तात्पर्य निवृत्तिहीमें है कि जौनसरल उपाय वेद तात्पर्य कैकै बतावैहै कि मनादिकन को छोड़िकै रामनामकोजपै साहबको ह्वैजाय तौमुक्ति ह्वैजाय तामें प्रमाण ॥ (द्वापरान्ते नारदोब्रह्माणंप्रतिजगाम कथंनु भगवन् गांपर्य्यटन्कलिंसंतरेयामिति । सहोवाच भगवत आपुरुषस्यनारायणस्यनाम्नेति नारदःपुनःपप्रच्छभगवतःकिंतन्नामेतिसहोवाच हरेरामहरेरामरामरामहरेहरे श्रुतिः ॥)आदिपुरुष भगवान् नारायणके नामहैं उद्धार करनवारे सो नारायणनाम सुनावहू कियो औ पूछ्यो कि कौननामहैं तब रामनामको बतायो तेहिते उद्धारकर्त्तारामनामही है पुनि स्मृतिहू कहैहै ॥ "सप्तकोटिमहामंत्राश्चित्तविभ्रमकारकाः । एकएवपरोमंत्रोरामइत्यक्षरद्वयम्॥" ताते वेदको तात्पर्य कर्मकांड उपासनाकांड ज्ञानकांड तीनोंके त्यागमेंहै साहबकेमिलायबेमेंहैतामें प्रमाण ॥"सर्वेवेदायत्पदःमामनंति इतिश्रुतेः"॥ औ कबीरजीहू कह्यो है कि वेदकोअर्थ उलटिकैकहे तात्पर्यते समुझैतोतौने अर्थ वेदके सांचेहैं अपरोक्ष अर्थतौझूठो है तामें प्रमाण "दौड़धूप सबछोड़ो सखिया, छोड़ो कथापुरान । उलटि वेदका भेदलखौ, गहि सारशब्द गुरुज्ञान॥" दूजोप्रमाण॥ आसन पवन किये दृढ़रहुरे । मनको मैल छांड़िदेबौरे ॥ काशृंगीमूड़ा चमकाये। क्या बिभूति सब अंगलगाये ॥ क्याहिंदूक्या मूसलमान । जाको साबित रहै इमान॥क्याजो पढ़ियावेदपुरान । सोब्राह्मणबूझैब्रह्मज्ञान ॥ कहैकबीर कछुआननकीजे । राम नामजपिलाहालीजे ॥" सोस्मृतिमें जोतुमको नानाअर्थ भासमान होय है सोई बंधनरूपजेवरि करमें लैतै आई है सो वा जेवरि तुम्हारही बरी है ॥ १ ॥

आपुहि बरी आपुगरबंधा । झूठामोह कालकोधंधा ॥ २ ॥

सो आपही स्मृतिको कर्म प्रतिपादनकारि कर्मरूप रसरीबरिकै आपही गरबांधत भयो अर्थात् कर्म करनलग्यो झूठाजोमोहहै तामें परिकै कालको धन्धाबनावतभयो अर्थात नानादेहधरतभयो कालमारतभयो साहबको जो तात्पर्य ते स्मृति बतावै है ताको ना संबुझावत भयो ॥ २ ॥

बँधवतबंधछोड़िनाजाई । विषयस्वरूपभूलिदुनिआई ॥३॥
हमरेदेखत सबजगलूटा । दासकबीर रामकहि छूटा ॥४॥

सो बांध तो बांध्यो पै वह बंधते छोडयो नहीं छूटैहै विषयमें सब दुनियां भूलिगई मांस खाइबे को चाह्यो तौ छागरमारि बलिदानदै खाइलियो औसुरापानहू करिबेको चाह्यो औ वेश्या राखिबो चाह्यो तौ बाममार्गलियो इत्यादिक अर्थ करिकै ॥ ३ ॥ सो कबीरजी कहै हैं कि हमारे देखत देखत यहमाया संपूर्ण जगको लूटिलियो सो मैंतौ रामै कहिकै छूटिगयो सो मैं सबको बताऊं हौं सो दुष्टजीव नहीं मानै ॥ ४ ॥

साखी ॥ रामहिंराम पुकारते, जीभपरिगोरोस ॥
सूधाजलपीवैनहीं, खोदिपियनकीहोस ॥५॥

मोको रामैराम पुकारत पुकारत कि राममें लगौ जीभमें रोस परिगयो केह ठहर परिगयो पै जीव न मानत भये सो सूधा जल तो पीवै नहीं है कि सीधे रामकैहै तरिजाय वही धोखा ब्रह्ममें लगाइकै नानामत दक्षिण बामादिक करिकै खोदिकै जलपियन की हवस करैहै कहे आशा करैहै सो ये तो सब धोखाई है मुक्तिकैसे होयगी सीधे रामजपि स्वामी सेवक भावकरि संसार सागरते उतरि कांहे नहीं जायहे ॥ ५ ॥

इति तेतीसवीं रमैनी समाप्त ।

अथ चौंतीसवीं रमैनी ।

चौपाई ।

पढ़िपढ़िपंडितकरिचतुराई । निजमुक्तिहिंमोहिंकहहुबुझाई १
कहँबसै पुरुषकवनसोगाऊँ।सोम्वहिंपण्डितसुनावहुनाऊँ २
चारिवेद ब्रह्मा निज ठाना । मुक्तिक मर्म उन्हौं नहिंजाना ३
दानपुण्यउनवहुतबखाना । अपनेमरनकिखबरिनजाना ४
एकनाम है अगम गँभीरा।तहँवाँ अस्थिर दास कबीरा ५

साखी ॥ चींटी जहां न चढ़ि सकै, राई नहिं ठहराय ॥
आवागमन कि गमनहीं तहँसकलौ जगजाय॥६॥

पढ़िपढ़िपंडितकरिचतुराई । निजमुक्तिहिमोहिंकहहुबुझाई १
कहँबसैपुरुषकवनसोगाऊँ । सोम्वहिं पंडितसुनावहुनाऊँ २

हे पण्डितौ ! पढ़ि पढ़ि के चतुराई करौहौ सो अपनी मुक्तिौ समुझाइ कहौ कहां ते तिहारी मुक्तिहोइहै जौने को मुक्ति माने हौ सो ब्रह्म धोखाहै ॥ १ ॥ अरु वह ब्रह्मलोक प्रकाशहै सो जाकेलोक को प्रकाशहै सो वह पुरुष कहां बसैहै ताको गाउँ कौन है सो मोको बतावो अरु वाको नाउँ बताओ वह कौनहै ? ॥ २ ॥

चारिवेदब्रह्मानिजठाना । मुक्तिकमर्मउन्हौंनहिंजाना ॥३॥

चारिवेद को हम कियो है औ हमहीं जानैहैं हमहीं पढ़ैहैं यह ब्रह्मा मानत भये पै वेदको तात्पर्य्यार्थ मुक्तिको मरम वोऊ न जानत भये काहेते कि जो जानते तो रजोगुणी अभिमानी ह्वैकै जगत्की उत्पत्ति कांहेको करते ब्रह्माहूको भ्रम भयोहै सो प्रमाण मंगलमें कहिआये हैं तौ पण्डित कहाजानै

यही धोखामें पण्डित लोग लगावतभये कि वह जो ब्रह्म सर्वत्र पूर्ण है सो तुहीं है अहंब्रह्मास्मि यह भावना करु सो वातो जीवहीको अनुभवहै जीव ब्रह्म कैसे होइगो अरु पण्डित कहा बतावै वाको तौ अनामाकहैहैं अरु वाको बस्तु गाउँ कहां बतावैं वाको तो देशकाल बस्तुके रहित कहे हैं सो जाके नाम रूप नहीं है देशकाल बस्तुते रहितईहै सो वहहै कि नहीं है जो कहो अनुभवमें तौ आवैहै तौतौ अनुभवौ तौ जीवहीको है जो यह विचारिबो धोखाई भयो तौ जीवब्रह्म कैसे होईगो ॥ ३ ॥

दानपुण्यउनवहुतवखाना।अपनेमरनकीखबरिनजाना॥४॥
एक नामहैअगमगँभीरा। तहवांअस्थिरदासकवीरा ॥ ५ ॥

अरुकर्मकांडवारे दानपुण्य बहुतबखान्योहै पै अपनेमारिबेकी खबारे नहीं जान्यौं कि यहकाल बहुतदान पुण्यवारेनको खाइ लियेहै हमकैसेबचैंगे ॥ ४ ॥ जौने नाममेंलगे जन्म मरणनहीं होइहै औअगमहै कहे जेसंतलोगहैं तेईपावैं हैं अरु गँभीरपद है कहेगहिर अर्थ है सो कबीरजी कहै हैं कि तौने नाममें मैं स्थिरहौं ॥ ५ ॥

साखी ॥ चीटी जहां न चढिसकै, राई नाहिं ठहराय ॥
आवागमन कि गमनहीं,तहँ सकलौजगजाय ॥६॥

वो ब्रह्म कैसो है कि चींटी जो बाणी है सो नहीं पहुँचै औ राई जो बुद्धि है सो नहीं ठहराय अर्थात् मन बचन के परे है औ आवागमनकी गमनहीं है अर्थात् न वहांते कोई आवै है न यहां ते कोई जाय है अर्थात मिथ्याहै तहां सिगरो जग जायहै ॥ ६ ॥

इति चौंतीसवीं रमैनी समाप्ता ।

ब्राह्मण क्षत्री वैश्य उपदेशपावै है कहो मुक्तिकेहिकी भई है काहेते वाकोतात्पर्य तौ यहहै कि जबसाहब को स्वरूप अरु आपनो स्वस्वरूप जानै तौ मुक्तिहोइ सो साहेबको स्वरूपऔ आपनो स्वरूपतो जानतई नहीं है मुक्ति कैसे पावै ॥ ३ ॥

और के छुये लेतहौ सींचा।तुमते कहौ कौनहै नीचा॥ ४॥
यहगुणगर्व करौ अधिकाई।अतिकेगर्व न होइभलाई॥ ५ ॥
जासु नाम है गर्व प्रहारी । सोकसगर्वहिसकैसहारी ॥ ६ ॥

औरको छुबौहौ तौ गंगाजल सींचौहौ कि पवित्रह्वैजाय सोकहो तुमते कौननीचहै ॥ ४ ॥ मलमूत्रादिक तुमहू में भरे हैं औ अपने गुणको गर्व अधिक तुम करतेहौ सो अतिगर्ब किये भलाई नहीं होइहै काहेते कि ॥५॥ जाको नाम गर्व प्रहारी है सोकैसे गर्वको सहारि सकै वह जो परमपुरुषहै सो गर्व प्रहारीहै तिहारोगर्व कैसे सहैगो ॥ ६ ॥

साखी ॥ कुल मर्यादा खोइकै, खोजिनि पदनिर्वान ॥
अंकुर बीज नशाइकै, भये विदेही थान ॥ ७ ॥

जेकर्मको त्यागकियेहैं तिनको गांठिहूको धर्मगयो आपनीकुलमर्यादा तो पहिले खोइदियो है औ निर्वानं पदको खोजत भये अंकुर जो है सुरतिबीज जो है शुद्धजीवआत्माबीजजो है साहेब ताको नशायके बिदेहीजोहै ब्रह्म निराकार ताहीके थानभये कहे आपनेको ब्रह्म मानतभये सो जाको अनुभवहै ब्रह्म ताको तौ भूलिही गये बिनाअंकुरपाले कैसे होइगो अर्थात् धोखेहीमें परेरहि गये वामें कुछनहीं मिलै है तामें प्रमाण कबीरजी को (अंकुर बीज जहां नहीं, नहीं तत्त्व परकाश । तहांजाय का लेउगे, छोड़हु झूठी आश ॥) अर्थात् चेष्टारहित ब्रह्मको खोजतभये सो वातो कुछु वस्तुही नहीं है मिलिबोई कहां कैर ॥ ७ ॥

इति पैंतीसवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ छत्तीसवीं रमैनी।

चौपाई।

ज्ञानीचतुर विचक्षण लोई। एकसयान सयान न होई ॥१॥
दुसरसयानको मर्मनजाना।उत्पतिपरलयरैनिविहाना ॥२॥
वाणिजएकसवनमिलिठाना। नेमधर्म संयम भगवाना ॥३॥
हरि अस ठाकुरते जिनजाई। बालनभिस्तगांवदुलहाई ॥४॥
साखी॥ तेनर मरिकै कहँ गये, जिन दीन्हो गुरु छोट॥
राम नाम निज जानिकै, छोड़हु वस्तू खोट ॥५॥

ज्ञानीचतुरविचक्षण लोई।एक सयानसयाननहोई॥ १ ॥
दुसरसयानकोमर्मनजाना। उत्पतिपरलैरैनिविहाना ॥ २॥

ज्ञानीजे हैं चतुरजे हैं विचक्षणजेहैं तिनहींलौ जे ई लोगहैं अर्थात् सूक्ष्म ते सूक्ष्म ताहूतेसूक्ष्मलौबिचारनवारे जे अद्वैतबादी सबलोगहैं ते एक जो ब्रह्म ताहीमें सयानजो भये कि, मैंहीं ब्रह्महौं यही मानतभये तौ वे सयान नहीं हैं॥ १॥दूसर सयानजे द्वैतवादी हैं जे साहबको औ आपनेहीको मानै हैं ताको तौ मरमई नहीं जानै हैं भूलिकै उत्पति परलै कहे संसारकी जो उत्पत्ति प्रलय होतरहै है ताहीमें रैनि बिहाना कहे दिनराति जनमतमरतरै हैं ॥ २ ॥

वाणिजएकसवनमिलिठाना। नेमधर्मसंयमभगवाना ॥३॥
हरिअसठाकुरते जिनजाई। वालनभिस्तगाँवदुलहाई ॥४॥

एक वणिज तब मिलि ठानतभये नेम धर्म संयम इत्यादिक जे सब साधनहैं तिनहींको भगकहे ऐश्वर्य्य मानिकै तिनमें सब लागतभये॥ ३॥हरिकहे आरतके हरनहारे जे साहबहैं तिनते जिन जाइकहे जेजेफरकह्वैगयेहैं ते बालनकहे बालककी ऐसीहैं बुद्धि जिनकी ऐसे जेजीवहैं ते भिस्तगाँव दुलहाई कहे भिस्त जोस्वर्गहै

ताहीको दुइआहाइकै गावनभये अर्थात् संयम नेमकरि स्वर्ग में जाइ अप्सरन तें भोगकरै यही गावतभये ॥ ४ ॥

साखी ॥ ते नर मरिकै कहँगये, जिन्हदीन्होंगुरुछोट ॥
राम नामनिज जानिकै, छोड़हु वस्तू खोट ॥ ५ ॥

जिनको गुरुछोट दियोहै अर्थात् थोरे अक्षरको मंत्रदियो औ जो घोट पाठहोइ तो यह अर्थहै कि, गुरू उनको मूड़घोटि दियो अर्थात् मूड़ मूड़िदियो अथवा ज्ञानप्यालाको घोटादैदियो पियाय दियो ते नर नैहैं हिंदू मुसलमान तेमरिकै कहांगये अर्थात् कहूं नहीं गये संसारहीमें परे हैं सो अपनो जो रामनाम ताको जानिकै खोट बस्तुजो नाना देवतनकी उपासना धोखाब्रह्म स्वर्गकी चाह ताको छाड़ो अंतमें उबार रामनामही करैगो तामें प्रमाण ॥ (मनरे जबते राम कह्योरे । फिरिकहिबे को कछुनरह्योरे ॥ काभोयोग यज्ञजपदाना । जोतें रामनामनहिंजाना ॥१॥ कामक्रोधदोउभारे । गुरुप्रसादसबतारे ॥ कहैकबीरभ्रमनाशी । राजाराम मिले अविनाशी) ॥ ५ ॥

इतिछत्तीसवीं रमैनी समाप्ता ।

अथसैंतीसवींरमैनी ।

चौपाई ।

एक सयान सयान न होई।दुसर सयान न जानै कोई॥१॥
तिसर सयान सयानेखाई । चौथ सयान तहां लै जाई॥२॥
पँचये सयान न जानैकोई। छठयें महँ सब गैल बिगोई॥३॥
सतयेंसयानजोजानौभाई। लोक वेद मो देहु देखाई॥ ४ ॥
साखी ॥ विजक बतावै वित्तको, जोवित गुप्ताहोइ ॥
शब्द बतावै जीवको, बूझै विरला कोइ ॥ ५ ॥

एकसयान सयान न होई। दुसर सयान नजानै कोई ॥ १ ॥
तिसरसयान सयानैखाई । चौथ सयान तहां लै जाइ॥२॥

एक जो ब्रह्म ताहीमें जे सयानैहैं अर्थात् वाही को सांचमानै हैं और सब मिथ्याहै ते सयान नहीं हैं औ दूसरमायामें जेसयान हैं वे कहैंहैं कि, मायाको हम जानै हैं सो माया तौ सतअसत ते विलक्षणैहै ताको कोई जानतही नहींहै कि, कौन वस्तुहै॥१॥अरु तीसर जो जीव तामें जे सयानैहैं कि,जीवातैं सबका मालिकहै या विचारैहैं ऐसे जे गुरुवालोगहैं ते सयान जोजीवहै ताकोखा-इहैं कहे पाखण्डमतमें लगाय नरकमें डारिदेइहैं चौथ जो ईश्वर और सब देवता तामें जे सयान हैं अर्थात् उनकी उपासना जो करै हैं ईश्वर देवता तिनको अपने लोकको लैजाय हैं ॥ २ ॥

पँचयेंसयान न जानैकोई । छठयें महँ सबगयेबिगोई ॥३॥
सतयेंसयान जो जानौभाई । लोक वेद महँदेहुदेखाई॥ ४ ॥

औ पाँचौंइन्द्रिनकी विषय तिनमें जे सयानहैं ते तौ वे कछू जानतही नहीं हैं बद्धही हैं अरु छठौं है मन ताहीते सबैगैल बिगोइगई है॥ ३ ॥सातवें सयान जो साहब ताको जो जानौ तौ हे भाई ! लोक वेदमें मैं देखाय देउँ कि जेते बर्णन करिआये तिनते साहब परे है ॥ ४ ॥

साखी ॥ बिजकबतावै बित्तको, जोबितगुप्ताहोइ ॥
शब्द बतावै जीवको,बूझै बिरला कोइ ॥ ५ ॥

श्री कबीरजी कहैंहैं कि जैसे जौन बित्त गुप्तहोयहै कहे गाड़ा होइ तौने धनको बीजक बतावैहै तैसे सारशब्द जोरामनामबीजक सो साहब मुख अर्थमें जीवको बतावै है कि तू साहब को है तेरोधन साहिबै है सो या बात कोई बिरलासाधु बूझैहै ॥ ५ ॥

इति सैंतीसवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ अड़तीसवींरमैनी ।

चौपाई ।

यहिविधिकहौं कहानहिंमाना।मारगमाहिंपसारिनि ताना १
रातिदिवसमिलिजोरिनिताागा।ओटतकाततभर्म न भागा २
भर्मैं सबघट रह्यो समाई । भर्मछोंड़ि कतहूं नहिं जाई॥३॥
परैनपूरि दिनोंदिन छीना।जहां जाहु तहँ अंगविहीना ॥४॥
जोमतआदिअंतचलिआया।सोमतिउनसबप्रगटसुनाया ५
साखी ॥ वहसँदेश फुरमानिकै, लीन्हो शीशचढ़ाय ॥
संतोहै संतोषसुख, रहहु तौ हृदय जुड़ाय ॥ ६ ॥
यहिविधिकहौंकहानहिंमाना।मारगमाहिंपसारिनिताना १॥

कबीरजी कहैहैं कि सतयुगमें **सत्यसुकृत** नामते, त्रेतामें **मुनीन्द्र** नामतें, द्वापरमें **करुणामय** नामते, कलियुगमें **कबीर** नामते, मैं चारो युगमें जीवनको रामनामको अर्थ साहबमुख समुझायो पै कोई जीव कहा न मान्यो वेदमार्गमें ताना पसारतभये कहे अपने कहे अपने अपने मतमें अर्थ करिलेतभये ॥ १ ॥

रातिदिवसमिलिजोरिनिताागा।ओटतकाततभर्मनभागा२॥

औ रातिउ दिन तागा जोरतभये कहे वेदार्थको अपने अपने मतमें लगावत भये अर्थात् जहां, जहां अर्थ नहीं लगैहै तहांतहां अपने मतमें योजित करतभये औ ओटत कातत कहै शंकासमाधान करत करत भर्म न भाग्यो इहां ताना प्रथम कह्यो ओटब कातब पीछे कह्यो सो प्रथम शंका समाधान करिकै काति ओटि कै ताना तनतभये अर्थ बनावत भये जब बन्यो तब फेरफेर शंका समाधान करि ओटिकाति अर्थको ताना पसारत भये भर्म न भाग्यो एक सिद्धांत न भयो ॥ २ ॥

भर्मैं सबघट रह्योसमाई । भर्मछोड़ि कतहूं नहिं जाई ॥३॥
परैनपूरादिनौदिनछीना। जहां जाहु तहँ अंग विहीना ॥४॥
जोमतआदिअंतचलि आया। सोमतउनसबप्रकटलखाया५

वही भर्म घट घटमें समाइ रह्यो है भर्म छोड़िकै अनत न जात भये वही संशयमें रहिगये॥ ३ ॥पूर नहीं परैहै कहे निश्चय नहीं होइहै दिनौदिन क्षीण होतं जाइहै क्षीणकहां होइहै कि, यह जानैहै कि हमारो अज्ञान दूरिभयो पै जहां जाइहै तहैं निराकार धोखई मिलैहै हाथ कछु नहीं लगैहै ॥४॥ वेदको अर्थ तौ परोक्षहैकहै अप्रगटहै तात्पर्य वृत्तिकरिकै साहबको लखावैहै तौन अनादिमत ताको न समुझतभये वहवेदको अर्थ गुरुवालोग प्रगट करिकै अर्थात् अपरोक्ष जौन आदि अंतते चलो आयो है ताको बक परिगयो ॥ ५ ॥

साखी ॥ वहिसंदेश फुरमानिकै, लीन्हों शीशचढ़ाइ ॥
संतोहै संतोषसुख, रहहुतौहृदय जुड़ाइ ॥ ६ ॥

वही तत्त्वमसि उपनिषत्को संदेश शीश चढ़ाइ लेतेभये वेदनमें वाणीमें तात्पर्य करिकै सांचपदार्थ कह्यो ताको न जानतभये संतपद संतोष सुखहै तौने जो रहौ तौ हृदय जुड़ाइ औरेमें तो तापई होइगो काहेते सबते परे है जाको साहब दूसरो नहीं है ऐसे जे चक्रवर्ती श्रीरामचन्द्रहैं तिनको जबपायो तब उनते कम ब्रह्महोबकी ईश्वरके मिलिबेकी और मायिक जेपदार्थ हैं तिनके मिलिबेकीचाहई न होइगी काहेते कि वहचक्रवर्ती के मिलिबेकेसमसुख नहीं है ब्रह्मानंद विषयानंद आदिकनमें जबलगैगो तबहीं सबते संतोष ह्वै याको मन शांतह्वै जाइगो॥ ६॥

इति अड़तीसवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ उन्तालीसवीं रमैनी ।

चौपाई ।

जिन्हकलिमाकलिमाहँपढ़ाया।कुदरतखोजितिन्हौंनहिंपाया
करिसतकर्म करैं करतूती । वेद किताबभयासबरीती ॥२॥

करमतसो जो गर्भऔतरिया। करमत सोजोनामहिंधरिया ३
करमत सुन्नति और जनेऊ। हिंदू तुरुक न जानै भेऊ॥४॥

साखी ॥ पानीपवन सँजोयकै, रचिया ई उत्पात ॥
शून्यहिंसुरतिसमानिया, कासोकहियेजात ॥५॥

जिन्हकलिमाकलिमाँहपढ़ाया।कुदरतखोजितिन्हौंनाहिंपाया
करिसतकर्मकरैकरतूती। वेदकिताब भया सबरीती ॥ २॥

जिन्ह महम्मद सबको कलियुगमें कलिमा पढ़ायोहै तेऊकह्योहै कि हम अल्लाहके कुदरतिको खोजकहे अंतनहीं पायो ॥ १॥ आपन आपन मतकरिकै करतूति कैकै कर्म करनलगे सो वेदकिताब सबरीति ह्वैजातभये ॥ २ ॥

करमतसोजोगर्भऔतरिया। करमतसोजोनामहिंधरिया ३
करमत सुन्नति और जनेऊ। हिंदू तुरुक न जानैभेऊ ॥४॥

कर्महिंते गर्भमें आय अवतार लेतेभये अरु कर्महीते नामधरतभये ॥ ३ ॥ औ कर्मैते सुन्नति औ जनेऊ चलतभयो ताको भेद हिंदू तुरुक दूनो न जानत भये ॥ ४ ॥

साखी ॥ पानी पवन संजोयकै, रचिया ई उत्पात ॥
शून्यहिंसुरतिसमानिया, कासोकहियेजात ॥५॥

पानी कहेबिंदु अरुपवन ये दूनौके संयोग ते गर्भभयो कहे शरीररूपी उत्पात खड़ाभयो सो कर्म में लगे जन्म मरणादिक येते उत्पात भये पै कर्म न छोड़तभये अरु जिन कर्म छोंड़िबोऊकियो तिनकी सुरति शून्यैमें समाइ जाती भई सो वहांकी बात कासों कही जातहै अर्थात् काहूसों नहीं कहिजायहै नेति-नेतिकहिदेइ हैं अर्थात् उहां तौ शून्यैहै कुछुहाथ न लग्यो ॥ ५ ॥

इति उन्तालीसवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ चालीसवीं रमैनी ।

चौपाई ।

आदम आदि सुद्धि नहिंपावा।मामाहौवा कहँ ते आवा॥ १ ॥
तबहोते न तुरुक औ हिन्दू।मायके रुधिर पिताकेबिन्दू॥२॥
तबनहिंहोते गाय कसाई।कहुबिसमिल्लहकिनफुरमाई॥३॥
तबनारह्योहै कुलऔजाती।दोजकभिस्तकहां उतपाती॥४॥
मनमसलेकीखबरि न जानै।मतिभुलानदुइदीनबखानै॥५॥
साखी ॥ संयोगे का गुनरवै, बिनयोगे गुणजाय ॥
जिह्वास्वादकेकारणे, कीन्हे बहुत उपाय ॥ ६ ॥

आदमआदिसुद्धिनहिंपावा । मामाहौवाकहँते आवा ॥१॥
तबहोते न तुरुक औ हिंदू । मायकेरुधिरपिताकेबिंदू ॥२॥

आदि आदम जे ब्रह्मा ते मामाकहे जगतपिता हौवा नामऐसी जो वाणी ब्रह्माकी नारी सो ब्रह्महू सुधि ना पायो कि कहां ते आई है ॥ १ ॥ तब आदिमें न हिंदूरहे न तुरुकरहे औ मायके रुधिरते पिताके बिंदुते गर्भ होइहै सोऊ नहीं रह्यो ॥ २ ॥

तबनाहिंहोतेगायकसाई । कहुबिसमिल्लहकिनफुरमाई ॥३॥
तबनरह्योहैकुल औजाती । दोजकभिस्तकहांउतपाती॥४॥
मनमसलेकीखबरिनजानै।मतिभुलानदुइदीनबखानै ॥५॥

तब न गाइ रही न कसाई रहे सो जो बिसमिल्ला कहिकैहलाल करै है सो किन फुरमांइहै ॥ ३ ॥ अरु तब न कुलरह्यो औ न जाति रही दोजक भिस्त कहांरह्योहै ॥ ४ ॥ मनके मसलेकी सुधि न जान्यो कि ई मेरेमनैंके बनाये हैं दोनोंदीन । औ अपने आत्माको मत न जान्यो कि यह न हिंदू हैं न मुसलमान है मतिहीन दुइदीन बखानत भये ॥ ५ ॥

साखी । संयोगेका गुणरवै, विनयोगे गुणजाय ॥
जिह्वास्वादके कारणे, कीन्हे बहुत उपाय ॥६॥

जब मनको आत्माको संयोग होइहै तबहीं संकल्प होइहै औ तबहीं गुणहो- यहै अरुजब मनको आत्माको संयोग नहीं होइ है तबगुण जाइहै कहेगुणौ नहीं रहैहै अरुसंकल्पौ नहीं रहैहै सोनर जेहैं ते जिह्वा सुखके कारण औ शिश्न (इन्द्रिय) सुखकेकारण बहुत उपाय करतभये औ मन औ आत्माको संयोग छोड़ावनको उपाय करतभये औ जे मन आत्माको संयोग छोड़्योहै ते आपनें स्वस्वरूप को प्राप्त भये हैं ॥ ६ ॥

इति चालीसवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ इकतालीसवीं रमैनी ।

चौपाई ।

अंबुकिराशिसमुद्रकिखाई।रवि शशिकोटि तेंतिसौभाई॥१॥
भँवरजालमें आसनमाड़ा।चाहतसुखदुखसंग न छाड़ा॥२॥
दुखकामर्म काहुनहिं पाया।वहुतभांतिके जग बौराया॥३॥
आपुहिबाउर आपुसयाना।हृदयावसत रामनहिंजाना॥४॥

साखी ॥ तेई हरि तेइ ठाकुरा, तेई हरिके दास ॥
जामें भया न यामिनी,भामिनिचलीनिरास॥५॥

अम्बुकिराशिसमुद्रकीखाई । रविशशिकोटितेंतिसौ भाई १
भँवरजालमें आसनमाड़ा । चाहतसुखदुखसङ्गनछाड़ा॥२॥

अंबुकहे बिंदु ताकीराशि शरीरहै समुद्र जो है संसारसागर ताकीखाई है अर्थात् संसारहीमें सबशरीरपरेहैं जैसे जलजीव समुद्रमें रहैहै तैसे नाना जीवनकें

शरीर परे रहैहैं औ सूर्य चंद्रमा तेंतीस कोटि देवता ॥ १ ॥ यही संसारसागरके भँवरजालमें परे कबहूं नरकको जायहैं कबहूं स्वर्गको जायहैं याहीभांति सब जीव औ सब देवता चाहत तो सुखको हैं कि हमको सुखहोय पै दुःखरूप जो संसारहै ताको संग नहीं छोड़े हैं ॥ २ ॥

दुखकामर्मकाहुनहिंपाया। बहुतभांतिकेजगबौराया॥ ३॥
आपुहिबाउरआपुसयाना।हृदयाबसतरामनहिंजाना॥ ४॥

वह दुःखरूप जो संसारहै ताको मर्मकोई न जानतभयो बहुत भांति करिके जगमेंसबजीव बौरायगये॥ ३॥सो जीवजेहैं ते आपुहीते बाउर होतभये अरु आपहीते सयान होतभये हृदयमें बसत जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनको न जानतभये अर्थात् जे संसारमें परे हैं ते तौ बाउरई हैं जे आपनेको बहुत ज्ञानी मानै हैं औ सयान मानेहैं तेऊ बाउरै हैं अर्थात् जे औरर ईश्वरनके दासभये औ जे आपहीको ब्रह्म मानत भये कि हमहीं ब्रह्महैं औ आपने आत्मैको मानत भये तिनको साहब को ज्ञान नहीं होयहै याहेतुते दुःखही को सुख मानैहै ॥ ४ ॥

साखी॥ तेई हरितेई ठाकुरा, तेई हरिके दास॥
जामें भया न यामिनी, भामिनिचली निरास॥५॥

तेई जे जीवहैं ते अपने को हरि मानत भये औ आपनेही को ठाकुर मानत भये कि हमहीं जगतकर्ता हैं और आपनेही को हरिके दास मानतभये अर्थात सब आपहीको मानतभये औ यामिनी कहावै है लगनिया वह बस्तु कराइदेइ है सो पूरागुरु कहावै है सो यह जीवको उद्धार कराइदेई है सो जो जो जीव पूरागुरु रामोपासक ना पायो जो समुझाइदेइ कि यह धोखाहै तिन जीवनते भामिनि जो मुक्ति सो निराश ह्वैगई कि ई न मुक्ति होयँगे ॥ ५ ॥

इति इकतालीसवीं रमैनी समाप्त।

अथ बयालीसवीं रमैनी ।

चौपाई ।

जबहमरहल रहानहिंकोई । हमरेमाहँरहलसबकोई ॥ १ ॥
कहहुसोरामकवनतोरसेवा। सोसमुझायकहौमोहिंदेवा ॥२॥
फुरफुरकहउँ मारुसबकोई । झूंठे झूंठा संगति होई ॥ ३ ॥
आंधर कहै सबै हमदेखा।तहँ दिठियारपैठिमुँहपेखा ॥ ४ ॥
यहिविधिकहौमानुजोकोई। जसमुखतसजोहृदयाहोई ॥५॥
कहहिं कबीरहंसमुकुताई । हमरे कहले छुटिहौभाई ॥ ६ ॥

जबहम रहलरहानहिंकोई । हमरेमाहँरहलसबकोई ॥१॥
कहहुसोरामकौनतोरसेवा।सोसमुझायकहौमोहिंदेवा ॥ २ ॥

श्रीकबीरजी कहै हैं कि जबहम साहबके लोकमें रहे हैं तबतुम कोई नहीं रहेहौ तुमसब हमरे साहबके लोकप्रकाशमें रहेहौ ॥१॥ अपनेको रामतौ कहौहौ तुम्हारीसेवाकौनहै कहां वेदपुराणमें लिखोहै कि इनकी सेवा किये मुक्तिहोइगी सो तुमदेवता बने फिरौहौ परन्तु मोको समुझायके कहौतौ कौन मुनि तुम्हारी सेवा कियो है काकी मुक्ति भई है ॥ २ ॥

फुरफुर कहउँमारुसब कोई । झूठेझूठासंगतिहोई ॥ ३ ॥

जो कोई फुरफुर कहैहै तौ सब मारनधावैहै अर्थात् जो कोई कहैहै कि तुम सांचहौ साहबकेहौ तौ मारन धावै है शास्त्रार्थ करि लरै है काहेते लोकमें रीतिहै कि झूंठेकी झूंठेनसो संगतिहोयहै सो सांच जो जीव सो झूंठामन उत्पत्तिकरिकै झूंठा जो धोखाब्रह्म ताहीके संग होत भये ॥ ३ ॥

आंधरकहैसबैहमदेखा । तहँदिठियारपैठिमुंहपेखा ॥ ४ ॥

साहबके ज्ञानते बिहीन जे आंधर हैं ते याकहै हैं कि वेदशास्त्र पुराणमें अर्थ सबहम ब्रह्मरूपई देखाहै जाके देखेते सबको ज्ञान हमको ह्वैगयो तामें

प्रमाण ॥ (येनाश्रुतंश्रुतंभवत्यमतंमतमविज्ञातं विज्ञातं भवति)॥तहां दिठियार जे साहबके देखनवारे ते वोई श्रुतिनमें साहबमुख अर्थ देखैहैं कैसे जैसे येनाश्रुतं श्रुतं कहे जौने रामनामके सुने जो नहीं सुनाहै सोऊसुनै असहोइजाइहै काहेते वेदशास्त्र पुराणादि रामनामहीते निकसे हैं औ जौने रामनामके जानेते यह जो असत्य है सर्वत्र ब्रह्ममानिबो धोखा सो मत होइ जाइहै अर्थात् परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको चितअचित बिग्रही सब को माने है औ मन बचनके परे जे अविज्ञात साहब ते रामनाम साहबमुख अर्थ में व्यंजित होयहै अथवा रामनामको जानिकै साधन किहेते साहब हंसरूप दै तब जाने जाइहै ॥ ४ ॥

यहिबिधिकहौंमानुजोकोई । जसमुखतसजोहृदयाहोई॥५॥
कहहिंकबीरहंसमुसकाई । हमरे कहले छुटिहौ भाई ॥ ६ ॥

सो याभांतिते मैं सब जीवनको समुझाऊंहौं पैकोई बिरला मानैहै कौन मानैहै जौन जस मुखते कैहहै तैसे हृदयते होइहै ॥ ५ ॥ कबीरजी कैहहैं कि मुसकाई मुसकैबँधीं जीवोहमारेही कहेते तुम छूटौगे औरि भांति न छूटौगे मुकुताई पाठहोय तौ याअर्थ मुक्तिहोबेकीहैइच्छाजिनके ॥ ६ ॥

इति बयालीसवीं रमैनी समाप्त ।

अथ तेंतालीसवीं रमैनी ।

चौपाई ।

जिनाजिवकीन्हआपुविश्वासा।नरकगयेतेहिनरकहिवासा १
आवत जात न लागहि वारा।कालअहेरी सांझ सकारा२॥
चौदहिविद्यापाढ़ि समुझावै।अपनेमरनाकि खबरि न पावै३॥
जाने जिवको परा अँदेशा । झूंठ आनिकै कहै संदेशा॥४॥
संगतिछोड़ि करै असरारा । उबहै मोट नरककी धारा॥५॥

साखी ॥ गुरुद्रोही औ मनमुखी, नारी पुरुष विचार ॥
तेनरचौरासीभ्रमहिं, जबलगि शशिदिनकार ॥ ६ ॥

जिनजिवकीन्हआपुविश्वासा। नरकगयेतेहिनरकाहिवासा १

जे नर अपने में विश्वास कियो कि हमारो जीवात्माहि सोई मालिकहै दूसर नहीं है । एकैहै ते नरकी मुक्तिकी बातें कौनकहै वे स्वर्गहू नहीं जायहैं नरकमें जायकै नरकहीमें वास किये रहै हैं काहेते नरकही जायहैं कि इहांतौ तीर्थ व्रत संयम जो स्वर्गजावे को उपायहै तेतौमिथ्यामानिछांड़िदियो जीवात्मैको- मालिकमान्यो दूसरा मालिक न मान्यो जो यमतें रक्षाकरै औ वेद पुराण को मिथ्या मान्यो छूटनको उपाय एकौ न कियो जब यमदूत मोगरालैकै मारन- लगे बांधिकै कांटामें कढ़िलावनलगे तबमूढ़पुकारनलाग्यो गुरुवा लोगनको ते रक्षा न किये औगुरुवालोगनहूंकी वही हवाल देखनलग्यो सो साहबको नाम तो सबछोड़िकै लियेनहीं जो यमते रक्षाकरि वहांको लैजाय इहांस्वर्गजावेवारो- सुकर्म कियो नहीं ये अहमक ऊंटके से पाद जन्म गँवाइ दिये न इतके भये ना उतके भये तामें प्रमाण ॥ "रामनाम जान्योनहीं कहाकियो तुमआय ॥ इतकेभये न उतके रहियाजनमगँवाय" ॥ १ ॥

आवतजातनलागहिवारा । कालअहेरीसांझसकारा ॥ २ ॥
चौदहविद्यापढ़िसमुझावै । अपने मरणकिखबरिनपावै॥ ३ ॥

आवत जात बारनहीं लगैहै कहे पुनिपुनि जन्म लेइ है काल जो अहेरीहै सोसांझ सकार उनहींको खायहै वही बासना उनकी बनीरहैहै फेरि वाही मनमें आरूढ़ह्वै फेरि वही नरकही को जायहै॥ २ ॥ औ चौदहौ विद्या पढ़िकै गुरुवालोग जेहैं ते औरेकोतौ समुझावैं हैं परंतु अपने मरणकी खबरि नहीं पावैहैं ॥ ३ ॥

जानोजियकोपराअंदेशा । झूठ आनिकै कहै सँदेशा ॥ ४ ॥
संगति छोड़ि करै असरारा । उवहै नर्कमोटको भारा ॥ ५ ॥

जे जीवात्महींको जानै हैं साहबको नहीं जानैहैं तिनहीं को अंदेशपरैहै काहेते कि सब झूंठहीहै वही सँदेश कहैहैं जबयमदूत मारनलगे तब वा मारु-दोखि उनको अँदेश परैहै कि हमारी रक्षा कौनकरै है सो या पापिनकी दशा गरुड़ पुराणमेंप्रसिद्धहै ४ साहबके जाननवारे जेसाधुहैं तिनकी संगति छोड़िकै जेअसरारकहे कफराई करैहैं अपने जीवात्मैको मालिक मानैहैं साहबको नहीं जानैहैं उकहे वे जेदुष्टहैं ते बहै मोटनरकको भारा कहे नरकको है भार जामें ऐसी जोमायाकी मोटरी ताहीको बहै कहे ढोवैहैं ॥ ५ ॥

साखी ॥ गुरुद्रोही औ मनमुखी, नारिपुरुषविचार ॥
तेनरचौरासीभ्रमहिं, जब लगिशशिदिनकार ॥ ६ ॥

कबीरजी कहैहैं कि शुकादिक मुनि वेद पुराण साधु औ जे जे साहबके बतावन वारेहैं सो येई गुरुहैं जो कोई इनकी बाणी को मिथ्या मानै है सोई गुरुद्रोही है सो गुरुद्रोही औ मनमुखी कहे अपने मनैते नारिनर बिचारिकै जे एक जीवात्महींको मालिकमानै हैं ते चौरासी लक्ष योनिही में जबलागि सूर्यचन्द्र-मा रहै हैं तबलगि वाहीमें परे रहैहैं ॥ ६ ॥

इति तेंतालीसवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ चौवालीसवीं रमैनी ।

चौपाई

कबहुं न भये संग औ साथा । ऐसो जन्म गँवाये हाथा ॥ १ ॥
बहुरि न ऐसो पैहो थाना । साधुसंगतुमनहिं पहिंचाना ॥ २ ॥
अबतौ होइ नरकमें बासा । निशिदिनपरेलबारके पासा ॥ ३ ॥

साखी ॥ जात सबन कहँ देखिया, कहै कबीर पुकार ॥
चेतवा होहु तौ चेति ले, दिवस परत है धार ॥ ४ ॥

कबहुंन भये संग औ साथा । ऐसो जन्म गँवाये हाथा॥१॥

साहबके जाननवारे जे साधु तिनको सत्संगकबहूं न कियो औ उनके बताये साहबको साथ कबहूं न कियो जेहिते आवागमन रहित होय मनुष्य ऐसोजन्म अपने हाथते गमायदियो ॥ १ ॥

बहुरि न ऐसो पैहौथाना । साधुसंगतुम नहिंपहिचाना॥२॥
अबतोरहोइनरकमेंवासा । निशिदिनपरेलवारकेपासा ॥३॥

ऐसोस्थानकहे मनुष्यदेह तुम फेरि न पावोगे साधुसंग तुम नहीं पहिचान्योहै साधुसंगकरो जो पूरागुरु पाइजाउगे तौ उबार ह्वै जाइगो॥२॥धोखाजो है ब्रह्म औ माया ताके उपदेश करनवारे जे हैं गुरुवालोग लवरा तिनके पास में निशि-दिन परचो है सो बिना पारिख तेरो नरकही मो बासहोइगो ॥ ३ ॥

साखी ॥ जातसबनकहँदेखिया, कहैंकबीरपुकार ॥
चेतवाहोहुतौचेतिले, दिवसपरतहै धार ॥ ४ ॥

दूनों ब्रह्ममायाके धोखा में सब को नरक जातदेखिकै कबीर जी पुकारिकै कहैहैं कि चेतिबे को होइ तो चेतौ नहींतौ दिनकै तिहारे ऊपर धारपरैहै कहे गुरुवालोगनको डाकापरैहै भाव यह है जो गुरुवा लोगन को डाका तुह्मारे ऊपर परैगो औ वह ब्रह्म को उपदेश करैगो औ तुह्मारे वह धोखा दृढ़परिजा-इगो तौ तुम मारेपरोगे कहे जैसे मरा काहूको फेरा नहीं फिरै है तैसे तुमहूं वह धोखाते काहूके फेरे न फिरोगे अर्थात्काहूको कहा न मानोगे तौ संसार-हीमें परेरहोगे बहुत बड़ेबड़े वही धोखाते ब्रह्ममेंपरिकै मरिगये साहबको न जानत भये सो आगेकहैहैं ॥ ४ ॥

इति चौवालीसवीं रमैनी समाप्त ।

अथ पैंतालीसवीं रमैनी ।

चौपाई

हिरणाकुश रावण गये कंसा।कृष्णगयेसुरनर मुनिवंसा॥१॥
ब्रह्मा गये मर्म नहिं जाना। वड़ सबगयोजो रहेसयाना॥२॥
समुझिनपरीरामकीकहानी।निरवक्कदूधकिसरवक्कपानी ३॥
रहिगोपंथ थकितभो पवना।दशौदिशाउजारिभोगवना॥४॥
मीनजाल भो ई संसारा।लोह कि नाव पषाणको भारा॥५॥
खेवै सबै मरम नहिंजाना। तहिवो कहै रहै उतराना॥६॥
साखी ॥ मछरी मुखजस केचुवा, मुसवन मुहँ गिरदान ॥
सर्पनमाहँ गहेजुवा, जाति सबनकी जान ॥ ७ ॥

हिरणाकुशरावणगयेकंसा। कृष्णगयेसुरनरमुनिवंसा॥ १ ॥
ब्रह्मागयेमरमनहिं जाना। वड़सवगये जोरहेसयाना॥ २ ॥

श्रीकबीरजी कहै हैं कि हिरणाकुश रावण कंस मरिजात भये औ इनतीनोंके मरवैया कालस्वरूप जे कृष्ण तेऊ मरजातभये दशौ अवतार निरंजन नारायणै ते होइ हैं या हेतुते मारिजानवारे तीनिकह्यो मारनवारो एकहीकह्यो औ सुर नर मुनि इनके बंशवारे तेऊ मरिगये औ ब्रह्मा आदिक जे बड़बड़ सयानरहैं वेऊ वेदको तात्पर्य न जान्यो मरिगये ॥ १ ॥ २ ॥

समुझिनपरीरामकीकहानी।निरवकदूधकिसरवक्कपानी ३॥
रहिगोपंथथकितभोपवना। दशौदिशाउजारिभोगवना॥४॥

रामकी कहानी कहे रामनामकी कहानि जो चारो बेदकहैहैं सो काहूको न समुझिपरी धौं निरबक दूधहीहै धौं पानिहीपानी है अर्थात् जिनको परमपुरुष श्रीरामचन्द्र को ज्ञानभयो वेदको तात्पर्यबूझ्यो साहबमुख अर्थलगायो सोदूधही

पियतभयो औजो जगत्मुख अर्थमें लग्यो सोपानिहीपानी पियतभयो साहब मुख अर्थ न जान्यो एते सबमरिगये॥ ३॥ अपने अपने पन्थ चलावतभये जब पवन थकितभयो कहे इच्छारहितभई तब दशौदिशा कहे दशौ इन्द्रिनद्वारके जे देवता ते जातरहे तब दश द्वारको जो शरीरगाउँ सो उजारि ह्वैगयो कहे-मरिगये याते या आयो कि जे नानामत चलावै हैं मतयहै रहिजायहै जा शरीरमें मरिकै भये ताहीकी सुधि रहैहै ॥ ४ ॥

मीनजालभोई संसारा । लोहकिनावपषानकोभारा ॥ ५ ॥

याही रीतिते मरत जियत जे मीनरूप जीवहैं तिनको यहि संसारसमुद्र में बाणी जालफंदनको भयो सो जे जालमें फँदे ते तो अविद्याके जालमें फँदेही हैं जे उबरे चाहै हैं तेजड़वत् जोमन पाषाण ताहीको है भार जामें ऐसी जोअविद्या-रूपी लोहेकी नाव तामें चढ़े सोवह बूड़िही जायगी फिरवही संसारमें परे रहैहैं ॥ ५ ॥

खेवै सेवै मर्म नहिं जाना । तहिवो कहै रहै उतराना ॥६॥

सब गुरुवाजन खेवै हैं कहे वही धोखाब्रह्ममें लगावै हैं औ या कहैहैं कि हम मर्मजान्योहै तुम यामें लगौ पारह्वैजाउगे सोवह जो संसारसमुद्र में अविद्या-रूपी नाव मन पाषाण ते भरी बूड़िही जायगी तामें गुरुचेला दोउ बूड़िही जायँगे पार न पावैंगे अर्थात् वेदान्त आदि नाना शास्त्रनमें नाना तर्क उठाय उठाय बिचार करतऊ जायहैं संकल्प बिकल्प नहींछूटै तात्पर्य तो जानै नहीं औ जन्मभरि चेलापूंछतई जाय है परंतु तबहूं यही कहै हैं कि तुम संसार समुद्रमें उतराने हौ कहे उबरेहौ यह नहीं विचारैहैं कि संकल्प बिकल्प छूटबई नहीं कियो संसारते कैसेउबरैंगे ॥ ६ ॥

साखी ॥ मछरीमुखजसकेचुवा, मुसवनमुंहगिरदान ॥
सर्पन माहँ गहेजुवा, जाति सबनकी जान ॥ ७॥

जैसे मछरीके मुखमें केंचुवा मुसवानके मुहँमें गिर्दान अर्थात् जब मूस गिर्दानको रंगदेख्यो तबलालमास अथवा लाल फल जानि धरनधायो जब फूंक

मारयो तब आँधरह्वैगयो गिर्दानहीं मूसकोखायलियो औ सर्प जैसे गहेजुवा कहे छछूंदरको धरहै जो उगिलै तो आँधर ह्वैजायहै खायतो मरिजाय ऐसे सब जीवनकी जातिहै जे कर्मकांडीहैं ते जैसे मछरी केचुवाको जब खायहै तब मुहँमें बंसी चुभिजायहै वाहीमें फँसिजायहै तैसे स्वर्गादिकफल की चाहकरि कर्मकरैहै जनन मरण नहीं छूटैहै काल खायलेइ है औ जे ज्ञानकांडीहैं ते साहबको ज्ञान तो काचोहै अपने शास्त्रबल या कहैहैं कि हम समुझायकै पाखंडमतवारे जे हैं तिनको अपने मतमें लै आवैंगे या बिचारि तिनके यहांगये सो वे धोखा ब्रह्मरूप उपदेश फूंक ऐसा मारयो कि आंधरे ह्वै गये साहब को जौन ज्ञानरहै सो भूलिगये तो उनके खाबेको पै वोई उलटिकै खागये औ उपासना कांडी जे हैं ते अपने अपने इष्टकी उपासना धरयो सोतौ छोड़तहीनहीं बनैहै डरैहै कि देवता खफा न होइ आंधर न करिदेइ जो न छोड़ै तो वाही देवताके लोकगये औ फेरिआये जन्ममरण नहीं छूटैहै जैससांप छछूंदरको धरयो परन्तु न उगिलत बनै न लीलतबनै ताते कबीरजी कहैहैं कि साहबको जानो जनन मरण उनहीं के छुड़ाये छूटैगो ॥ ७ ॥

इति पैंतालीसवींरमैनी समाप्ता ।

अथ छियालीसवीं रमैनी ।

चौपाई ।

विनसै नाग गरुड़ गलिजाई । विनसै कपटी औसतभाई १
विनसैपापपुण्यजिनकीन्हा। विनसैगुणनिर्गुणजिनचीन्हा२
विनसैअग्निपवनअरुपानी । विनसै सृष्टिजहांलौं गानी३
विष्णुलोक विनसै छनमाहीं । हो देखा परलयकी छाहीं ४

साखी ॥ मच्छरूप माया भई, यमरा खेलहि अहेर ॥
हरिहर ब्रह्म न ऊबरे, सुरनर मुनि केहिकेर ॥ ८ ॥

जेभर ब्रह्माण्डके भीतरहैं ते सब नाशमानहैं संसार समुद्रमें ऐसो माया लपेटचो कि यह मत्स्य(जीव)माया ह्वै गई अर्थात् मिलिगई है कहै जीवनको शरीरमें डारिदियो है शरीरही देखपरैहै जीवको खोजनहीं मिलै है भीतर बाहरमनमास आदिक वह जड़ मायहीदेखिपरैहै यमरा जो ढीमर कालहै सो शिकार खेलैहै तातें कोईनहींउबरैहै कोईहालहीमरैहै कोईमहाप्रलयमें मरैहै ॥ १ ॥ ५ ॥

इति छियालीवीं रमैनी समाप्ता।

अथ सैंतालीसवीं रमैनी।

चौपाई।

जरासिंध शिशुपालसँहारा। सहस्र अर्जुनै छल सों मारा१
वड़छल रावणसो गये वीती। लंकारह कंचनकी भीती२
दुर्योधनअभिमानहिंगयऊ। पंडवकेर मरम नहिंपयऊ॥३॥
मायाके डिभगे सबराजा। उत्तम मध्यम बाजनवाजा ४
छांचकवैवितधरणिसमाना। यकौजीवपरतीति न आना ५
कँहलौं कहौं अचेते गयऊ। चेतअचेत झगर यकभयऊ ६

साखी॥ ईमाया जग मोहिनी, मोहिसि सब जगधाइ॥
हरिचन्द्र सतिके कारने, घर २ गये विकाइ॥७॥

ये जे राजा बड़े २ गनाय आये तेसब मारेपरे कोई उत्तम कोई मध्यम कोई निकृष्ट कर्मकरिकै गये सो कहांलौं मैं कहौं चित अचितके झगरा ते कहे चितं जीव अचित माया ई दूनौके संयोग ते सब जीव पृथ्वीमें मिलिगये अपने शुद्ध आत्माको न जानत भये यह माया जोहै जगमोहनी सोसब जगको धायकै मोहिलेतभई हरिश्चन्द्र जेराजाहैं तेसत्यके कारणे विद्यामाया में बँधिकै घर २ बिकाय जातभये पुत्र बिकानो स्त्री बिकानी ॥ १ ॥ ७ ॥

इति सैंतालीसवींरमैनी समाप्ता।

अथ अड़तालीसवीं रमैनी।

चौपाई।

मानिक पुरहिकबीर बसेरी। मदति सुनोशेष तकिकेरी १
ऊजो सुनी जमनपुर धामा। झूसी सुनी पिरनके नामा२
इक्कइसपीर लिखेतेहिठामा। खतमा पढ़ैं पैगमर नामा ३
सुनिबोलमोहिंरहा न जाई। देखि मकरवा रहे लोभाई ४
हबीब और नबीके कामा। जहँलों अमल सो सबेहरामा ५

साखी॥ शेखअकरदी शेख सकरदी, मानहु बचन हमार॥
आदि अंत उत्पति प्रलय, देखो दृष्टि पसार॥६॥

मकट कबीरजी तो यह कहैहैं कि मानिकपुरमें रह्यो तहांसे खतकी मदति सुन्यो कि, जिन पीरनके स्थान ॥ १ ॥ जमनपुरमें सुन्यो ते झूसीपारमें आये तहां मैंहूंगयों ॥ २ ॥ इकैसौ जे पीरहैं तिनकेनामलिखे हैं कि ये सब पैगंबरैकेर फातियां देइहैं औ कलमा पढ़ैहैं ॥ ३ ॥ सो उनके बोलसुनि २ मोपै नहीं रहाजाय है मकरवा देखि २ ये सब भुलायरहे हैं यह जानिकै तहां मैं जाइकै कह्योकि ॥ ४ ॥ हबीकहे देवतनको खाना अथवा हबीब कहे फारसीमें दोस्तकोकहै हैं औजहां भर नामहै नबीके जे तुम लेतेहौ औनबीके जहांभर कामहै जे पीरलोग तुमको उपदेश करतेहैं सो सब हरामहै काहेते अल्लाह तो मनवचनके परेहै ॥ ५ ॥ हे शेख अकरदी हे शेखसकरदी हमारा कहा जो बचनहै सो सब सांच मानो आदि अंतमें जो दृष्टि पसारिकै देखौ तो जहांभर मनबचनमें पदार्थ आवै हैं सो सबमाया को पसारहै अल्लाह नहीं है सो कबीरजी के चौबिसपरचैसे खत केलिखे पीछे शिष्य भये सो सब कथा निर्भय ज्ञानमें बिस्तारते हैं ॥ ६ ॥

इति अड़तालीसवीं रमैनी समाप्ता।

अथ उनचासवीं रमैनी ।

चौपाई ।

दूरकीबात कहौ दुर्वेशा । बादशाह है कौने भेशा ॥ १ ॥
कहां कूच कहँकरै मुकामा।कौनसुरतिकोकरौंसलामा ॥२॥
मैंतोहिं पूंछौं मूसलमाना । लाल जर्दकी नाना बाना ॥३॥
काजीकाज करौ तुमकैसा। घर २ जबै करावो वैसा ॥ ४ ॥
बकरीमुर्गीकिनफुरमाया।किसकेहुकुमततुमछुरीचलाया५॥
दर्द न जानै पीर कहावै । बैता पढ़ि २ जग समुझावै ॥६ ॥
कहकबीरयकसय्यदकहावै।आपुसरीका जगकबुलावै ॥७॥
साखी ॥ दिन भर रोजा धरतहौ, राति हततहौ गाय ॥
यहतौखून वहबंदगी, क्योंकर खुशीखोदाय ॥८॥

और पदको स्पष्टही है ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ दर्दतो तिहारे दिलमें आवती नहीं है गलाकटावतमें अल्लाहको बागीचा खराब करतेहौ अरु बैतैं पढ़ि २ के पीरकहावतेहौ औजगत् को समुझावतेहौ अर्थात् हौ बेपीर पीर-भर कहवावतेहो ॥ ६ ॥ सोकबीरजी कहै हैं कि एक सय्यदजोहै वह पीर गुरुवा सो जैसा आप खुआरहै औ तैसे सबको खुआरकरै है ॥७॥ दिनको तो रोजा धरतें हौ औ बंदगी करतेहौ औ रातिको गाईहततेहौ कहे मारतेहौ सो यह तो खूनकरतेहौ बहुतभारी औ वहबन्दगी बहुतथोरी करतेहौ दिनको न खायो राति-हीको खायो क्योंकर तिहारेऊपर खोदाय खुशी होय ताते यह कि वह तौ साहबको है सो जिनको गला तुम काटतेहौ तिनहीं के हाथ तुम्हारऊ गला वह साहब कटावैंगे ॥ ८ ॥

इति उनचासवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ पचासवीं रमैनी ।

चौपाई ।

कहतेमोहिंभयलयुगचारी।समुझतनाहिंमोहसुतनारी ॥ १ ॥
वंशआगिलागि वंशैजरिया।भ्रमभुलाय नरधंधेपरिया ॥२॥
हस्तीके फंदे हस्ती रहई । मृगी के फंदे मिरगा परई ॥ ३ ॥
लोहै लोह काटजसआना।तियकैतत्त्व तियापहिंचाना॥४॥

साखी ॥ नारि रचंते पुरुष है, पुरुष रचंते नार ॥
पुरुषहिपूरुष जो रचै, तेहि विरलेसंसार ॥ ५ ॥

चारिउ युग मोको समुझावत भयो पै सुत नारीके मोहतेकोई समुझत नहीं है ॥१॥ जैसे बांसकी आगी बांसैको जारिदेइहै तैसे सुतनारीके मोहरूप भ्रममें भुलायकै नरधंधेमें परे जाइ हैं कोई नाना ज्ञान उपासनामें परिकै जरैहै कोई सुतनारीके धंधेमे परिकै जरैहै ॥२॥ जैसे हथिनीके फंदेहाथी रहैहै मृगीके फंदे मृगा परै है कहे फँदिजायहै ऐसे जीवके फंदमें जीवपरैहै । जैसे लोहते लोह कटिजाय है तैसे जीवहीते जीव यहमारो परैहै। तियकी तत्त्व स्त्री पहिचानैं स्त्री जो ऊंटिनी ताकी तत्त्व वही जानैहै । अर्थात् जीवही ते जीव भ्रमिजायहै । काहेतें साहबको तो जानैनहीं जीव जीवही मों विश्वास माने मायामें मिलिकै या जीव मायाही में रह्यो है ताते मायाकेही पदार्थमें बिश्वास मानैहै ॥३॥४॥ नारीतें पुरुष रचिजाइहै कहे मायाते सब पुरुष भये हैं औ पुरुष जोहै शुद्धसमष्टि जीव ताहीते मायाभई है । औ पुरुष जो हैं शुद्धजीव सोपरमपुरुष जे श्रीरामचन्द्रहैं सबके बादशाह तिनमें रचे कहे प्रीतिकरै ऐसो कोई बिरलाहै ॥ ५ ॥

इति पचासवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ इक्यावनवीं रमैनी ।

चौपाई

जाकरनाम अकहुवाभाई । ताकर कही रमैनी गाई ॥ १ ॥
कहैको तात्पर्य है ऐसा । जस पन्थी बोहित चढ़िवैसा ॥ २ ॥
हैकछुरहनिगहनिकीबाता । वैठारहत चला पुनिजाता ॥ ३ ॥
रहैबदननहिंस्वागसुभाऊ । मनस्थिर नहिं बोलै काऊ ॥ ४ ॥

साखी ॥ तनरहते मन जातहै, मनरहते तनजाय ॥
तनमन एकै ह्वैरह्यो, हंस कवीर कहाय ॥ ५ ॥

जाकरनाम अकहुवाभाई । ताकर कहीरमैनी गाई ॥ १ ॥

जाको नाम अकह है ताको तौ हिन्दू मन बचनकेपरे कहते हैं औ मुसल- [illegible]न बेचिगून वेनिमून कहतेहैं । सो हम पूछतेहैं "हिन्दूकहै कि, वह तो निराकार होतो तौकहैहैं कि, वेद मेरी श्वासाहै शरीर न होतो तौ वेद-श्वासा कैसेहोतौ । जोकहोवेद तो मायकहै 'साकारहै तौ' मिथ्याके बताये तुमहीं सांच पदार्थ कैसे जानिहौ । जो कहे साकार तौ मध्यम परमान ठहरा य तौ अनित्य होइहै अकहुवा न होइगो । अरु जो मुसलमान निराकार कहैहैं कि उसके आकार नहीं है तो मूसा पैगंबरको कोहनूरकें पहाड़ में छुँगुनी देखायो सो वह पहाड़ छार ह्वैगयो जो शरीर न होतोतौ छगुनी कैसे देखावतो । कुरानमें लिखैहै कि जिसतरफ़ अपनामुंह फेरै तिसी तरफ़ साहबका मुँहहै, औ सबके हाथके ऊपर अल्लाहको हाथहै, औ अल्लाह महम्मदसों कहतेहैं कि, "जिसका हाथप-करातूने तिसका हाथपकरा मैं।तब सौं इनलीलैंत यहआवताहै" कि, उसके शक-लहै । पै जिस तरहकीशकल सोकोईनहीं कहिसकैहै काहेते कि जो उसके मिसाल दूसरा कोई होय तौ उसकी उपमादैकै समुझाय सक्के सो उसकी शकल तो कोईनहीं समुझाय सक्का है । लेकिन जो कोई उसकी शकल देखा है सोई जानताहै ।

जैसी उसकी शकलहै लेकिन बयान नहीं कर सक्ताहै। औ कुरान खोदाको कलाम कहैवात है जो बदन न होता तौ कलाम कैसे कहते। सो निराकार साकार के परे अकह जो साहब है ताकी रमैनी कहे तिसके रूपादि बर्णनकी कथा जबानमें किस तरहसे कहौ, बचनमें तौ आवै नहीं है। अथवा जाकर नामैंअकहुवाहै ताकोरूप अकहुवा- बनैहै तिसकी कथाकहांकहै। जोवाहूअकहुवा होयगी जो ऐसाभया तौ जानि न परैगो किसूको मिथ्या होयजाइगो। तौनेको कबीरजी कहै हैं कि सबको हमको अकहुवा है कछु उसको साहबको कोई बात अकहुवा नहीं है हमताहीकी कही रमैनीगाइतहै सोजोकछुरमैनीमेंलिख्योहै सो सांचही है॥ १॥

कहै को तात्पर्यहै ऐसा। जस पंथीवोहित चढ़िवैसा॥ २॥
हैकछुरहनिगहनिकी बाता। वैठारहाचलापुनिजाता॥ ३॥

जौनकहि आये तौनेको तात्पर्य ऐसाहै कि पांचशरीरते साहब नहीं मिलैहै काहेते मनबचनके परैहैसाहब है औ जोहमसों साहब कहा कि जीवनको रमैनी उपदेश करौ ताको हेतुयह है साहब बिचारयो कि मनवचकेपरे जो मैंहौं सो विनामेरे बताये जीव मोको न जानैंगे जोकहौ साहबको कापरी है न जानैंगे जीवतौ साहबके दयालुताकी हानिहोइहै याते उपदेशकरै कहै हैं सो जौने अकह रामनाम के जपेते साहब प्रसन्नह्वै हंसरूपदेइहै तौने रामनाम रमैनी ते जानिहै काहेते कि॥ (इच्छाकरभवसागर वोहितरामअधार। कहहिं कविरहारि शरणगहु गोबछखुर बिस्तार)॥ ऐसी साखीरमैनी में लिखी है तेहिते या अर्थ आया कि संसारसागर पारहोवैको एक रामनामही जहाजमानि नामार्थ में जोशरणकीबि- धिहै ताको अनुसंधानकरत रामनामजपै॥२॥ यहरहनि गहनिकैके जैसे वछवा को खुरलोग उतारिजायहै ऐसो संसारसागरमें रामनामको अभ्यासकै तारिजाय हैं कैसे जैसे नावकोचढ़ैया नावमेंबैठोहै पै पारहोत जायहै ऐसे रामनामको जपैया संसारसागरमें बैठो देखो परैहै परन्तु पारको चलो जायहै॥ ३॥

रहैवदननहिंस्वागसुभाऊ। मनंस्थिरनहिंबोलैकाऊ॥ ४॥

इसतरहके जेहैं जिनकेबदनकहे संभाषण करिबे ते जीवनको स्वागकोसुभाऊ कहे ब्रह्मह्वैजावो चतुर्भुजादिकनके लोकमें जाइचतुभुज ह्वैजावौ और नानादेवतन

के लोकजाय तिनके तिनके रूपधरिबो सो मिटिजायहै।संसारतो छूटि ही जायहै सो वे बोलै हैं औ मन स्थिरह्वैगयो है कहेमनको संकल्प बिकलप तो छूटैनहीं है मनते भिन्न ह्वैवो कहा है कि संकल्प बिकलपही मनको स्वरूपहै जब संकल्प बिकलप छूटिगयो तब मनते भिन्न ह्वै गयो सो कैसे मनते भिन्नहोइगो सो साधन आगे कहैहैं ॥४॥

साखी ॥ तनरहते मनजातहै, मन रहते तन जाय ॥
तन मन एक ह्वैरहो, हंस कबीर कहाय ॥ ५ ॥

तनजोहै वा शरीर स्थूल सूक्ष्मकारण महाकारण सोअर्थअनुसंधान करत रामनाम जपत २ तनते जब रहित ह्वैगयो तब मन जातरहै है औ मन जाय है तब चारिउशरीर जात रहैहैं। सो जब तनमन एकह्वैरहै कहे सिगरे तन प्राणमें बंधे हैं सो प्राण औ मनको एकघर करिदेइसोनाम जपिबिधिजानितबसंकल्प बिकलप मनको छूटिजाय है। मनतो संकल्प बिकलपकरूपहै सो जबसंकल्प बिकलपछूट्यो तब मननाश ह्वैगयो। तब चारिउशरीरको हेत जोहै ज्ञान सोऊ जातरहैहै तब चारिउ शरीर भिन्नह्वैजायहै एक शुद्धआत्मा में स्थिर ह्वैरहे हैं मुक्ति ह्वैजाय हैं जैसे पूर्वशुद्ध समष्टिरूप में रह्योहै तैसे सो ह्वैगयो। जैसे समष्टिजीव जब रह्यो है तब जगत् को कारणरह्यो आयो है साहबको न जानिबो रूप ताते संसारही ह्वैगयो है तैसे यह जो शरीरनमें साहबको भजन करिराख्यो सो जब मनादिक याकेछूटि गये शुद्ध ह्वैगयो तब वाही भांति साहब को जानै को कारण रहिगयो। काहेते कि राम नामको अर्थ साहब मुख जानिराख्यो है सो मङ्गल में साहब कहिआये हैं कि जो रामनाम जपिकै मोको जानै तो मैं हंसरूपदै अपने पास बुलायलेऊं।याहीते साहब हंस रूप देइ है तब वह कायाको बीरजीव हंस कहावैहै। कैसे हंस कहावै है कि असारजेहैं चारिउ शरीर औ मन माया रूप पानी ताको छोड़िदियो औ सारजोहै साहबको ज्ञानरूपदूधताकोग्रहणकियो औ अकह रामनाम जो मोती है ताको चुनन लग्यो कहे लेनलग्यो सोकबीरजी लिखबै कियो है शब्दमें (निर्मल नामचुनि चुनि बोले) अरुअकह रामनामई है अरु अकह निर्गुण सगुण के परेहै श्रीरामचन्द्रई हैं तामें

प्रमाण ॥ (रामकेनामतेपिंडब्रह्मांडसब रामकोनाममुनिभर्ममानी । निर्गुण-निरंकार के पार परब्रह्म है तासुको नामरङ्कारजानी । विष्णुपूजाकरै ध्यान-शङ्करधरै भनहि सुबिरंचि बहुबिबिध बानी । कहैकब्बीर कोइ पारपावैनहीं राम को नामहै अकह कहानी) ॥ ५ ॥

इति इक्यावनवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ बावनवीं रमैनी ।

चौपाई ।

ज्यहिकारणशिवअजहुंबियोगी।अङ्गबिभूतिलायभेयोगी १

शेषसहसमुखपार न पावैं । सोअबखसमसहितसमुझावै२॥

ऐसीविधिजोमोकहँध्यावै । छठयें मास दर्श सो पावै॥ ३ ॥

कौनेहु भांति दिखाई देऊ। गुप्ते रहि सुभाव सब लेऊ॥४॥

साखी ॥ कहहिं कबीर पुकारिकै, सबका उहै हवाल ॥
कहाहमार मानै नहीं, किमिछूटे भ्रमजाल॥ ५ ॥

ज्यहिकारणशिवअजहुंबियोगी।अंगबिभूतिलायभेयोगी१॥

शेषसहसमुखपारनपावै।सोअबखसमसहितसमुझावै॥ २ ॥

जाकेकारण शिवअंगमें बिभूतिलगाइकै योगीभयेपरन्तुअजहूंलौं वासों बियोगी हैं काहेते कि जोबियोगी न हो ते तो तमोगुणाभिमानी काहे रहते॥१॥औ शेष सहस मुखते कहिकै पार न पायो तेई दुर्लभ खसम जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं ते हिते सहित जीवनको समुझावैहै काहेते जीवनको हित मानिकै समुझावै है कि मोको जानिकै मेरे पासआवै संसार दुःख न पावै ॥ २ ॥

ऐसीबिधिजो मोकहँध्यावै । छठयें मास दर्शसोपावै ॥ ३ ॥

कौनेहुंभांति दिखाईदेऊ । गुप्तैरहि सुभाव सबलेऊ ॥ ४ ॥

साहब कहा समुझावैहै कि जैसो पूर्व कहिआये हैं (नामार्थमें लिखि आये हैं शरनकी विधि) तैसो अनुसंधान करत रामनाम जपिकै निरंतर जो छठयें मास या होइतौ जो या शरीरते करैहै छामहीनामें दर्शन सो पावैहै याही भांतिसों जो मोको ध्यावै तौ छठयेंमास मेरोदर्शन पावै कहे छठौ जो हंस स्वरूप तामें स्थिर ह्वैजाय ॥ ३ ॥ तौ कौनिउभांतिसों मैं देखाइ देउहौं औ निशिदिन वाके साथ गुप्तरहिकै वाको सब सुभावलेउ औ जो दृढ़होइ तौ राम नाम कासाधक ताको छठो शरीर दैकै वाको प्रत्यक्ष ह्वैजाउ पाछे २ रघुनाथजी नित्य बनेरहत- हैं तामें प्रमाण॥ (रामरामेतिरामेतिरामरामेतिवादिनम् । वत्संगौरिवगौर्य्येच्चर्या- धावंतमनुधावति) ॥ ४ ॥

साखी ॥ कहहिं कबीरपुकारिकै, सबका उहै हवाल ॥
कहा हमरमानै नहीं, किमिछूटै भ्रमजाल ॥ ५ ॥

श्री कबीरजी पुकारिकै कहे हैं कि जिनको शेष शिवादिकने पारनहीं पायो यह भांतिके दुर्लभ जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं ते आजुकाल्हि ऐसे सुलभह्वै गयेहैं कि आपई उपाय बतावै हैं कि जो ऐसो उपायकरैं तो छठयें शरीर में मोको पाइजाइँ ते साहबको कह्यो मैं कतनो समुझावतहौं पै सब बेवकूफ हैं जीवन को हवाछ उहैहै कहे वही मायाके नानामतनमें लगेहैं वहीको बिचार करैहैं जौन धोखाते संसार पायोहै हमारो कहो यतनेहूपै नहीं मानैहै सो ऐसे दुष्ट जीवनको भ्रमजाल कैसेछूटै ॥ ५ ॥

इतिबावनवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ तिरपनवींरमैनी ।

चौपाई ।

महादेव मुनि अंत न पावा । उमासहित उन जन्म गँवावा १
उनते सिद्ध साधु नहिंकोई । मन निश्चल कहु कैसेहोई २॥
जौ लग तन में आहै सोई । तौलग चेत न देखौ कोई ३॥

तबचेतिहौजबतजिहौप्राना। भयाअन्ततबमनपछिताना ४
यतनासुनतानिकटचलिआई।मनकोविकार न छूटैभाई ५॥
साखी ॥ तीनिलोकमों आयकै, छूटि न काहू कि आश॥
यकआंधर जग खाइया,सबजग भया निराश ॥६॥

उनते अधिक सिद्धिकौन साध्योहै जाको मन निश्चल होइ अर्थात् सिद्धिसाधे मन निश्चल नहीं होयहै ॥ २ ॥ जबलग शरीरमें मनहै तबलग चेतन करिकै अथवा महादेव जे हैं औ बड़े बड़े मुनिजहैं ते अंतनहीं पायो जो कोऊ जान्योहै ते वोही साधन तेजान्योहै कहे ज्ञान करिकै वह परम पुरुषको कोईनहीं देखै हैं ॥ ३ ॥ कबीरजी कहैहैं कि तुम तब चेतिहौ जब प्राण छोड़ोगे? तबकहां चेतौगे यह याकु भाव है जब अनतही जाई शरीर पावोगे तब मनको पछितावई रहिजायगो जो भया अयान पाठ होइ तौ यह अर्थहै कि तुम जो अयानेभये साहबको न जान्यो हमारकहा मानवई न कियो तौ अब पछिताना क्याहै पछितातो काहेकोंहै संसार पीर सहो ॥ ४ ॥ यह सब जगत् शास्त्रनम सुनाहै कि मौत निकट चलीआवै है हमहूं मरिजायँगे पै मरघट ज्ञान कथैहै मनको बिकार नहीं छोड़ैहै ॥ ५ ॥ तीनि लोकमें आइकै सब मरिगयो परन्तु काहूकी आशा न छूटतभई एक आंधरजोहै मन सोजगत्को खाइलियो सब जगत परमपुरुषके मिलिबेको निराश ह्वै गयो। इहां आंधर कह्यो सो मन परमपुरुषको कबहूंनहीं देखैहै काहेतेकि साहबमनबचनकेपरे है आपही शक्तिदेइहैजीवको तबहींदेखैहै ॥ ६ ॥

इति तिरपनवीं रमैनी समाप्ता।

अथचौवनवीं रमैनी।

चौपाई।

मरिगयेब्रह्माकाशिकेवासी। शीव सहित मूये अविनासी १
मथुरा मरिगयेकृष्णगुवारा। मरि मरि गये दशौ अवतारा २
मरिमरिगयेभक्तिजिनठानी। सर्गुणमें जिन निर्गुणआनी ३

साखी ॥ नाथ मछंदर ना छुटै, गोरखदत्ता व्यास ॥
कहहिं कबीर पुकारिकै, परेकालकेफाँस ॥ ४ ॥

ब्रह्मा जेहैं काशीके बासी शंभूजेहै तिनते सहित अबिनाशी जे बिष्णु ते मरिगये सो अबिनाशी सबकोइ कहतई है औमरिबोकहै हैं सो उनको तो नाश कबहूं होतही नहीं है महा प्रलयम तिरोधान ह्वै पुनि प्रकटहोइहैं याते अबिनाशी कह्यो है ॥ १ ॥ मथुरा के कृष्ण औ गुवार औ दशौ अवतार तेऊ मरिकहे तिरोधान ह्वै गये कहांगये जहां श्रीरामचन्द्रके आगे हजारन ब्रह्मा विष्णु महेश दशौअवतार ठाढ़े हैं जाको जौने ब्रह्माण्डको हुकुमहोइहै सो तहां अवतारलै पुनि अपने अंशनमें लीनहोइहै तामें प्रमाण शिवसंहिताको अगस्त्यवचन हनुमानमानि ॥ (आसीनंतमनुध्यायेसहस्रस्तंभमंडिते । मंडपेरत्नसंगेचजानक्यासहराघवम् ॥ मत्स्यः कूर्मश्चकृष्णश्चनारसिंहाद्यनेकधा । वैकुण्ठोपिहयग्रीवोहारिः केशववामनौ ॥ यज्ञोनारायणोधर्मपुत्रोनरवरोपिच । देवकीनंदनः कृष्णो वासुदेवोबलोपिच ॥ पृष्णिगर्भोमधून्माथीगोविंदोमाधवोपिच । वासुदेवोपरोनन्तः संकर्षणडरापतिः ॥ एतैरन्यैश्चसंसेव्योरामनाममहेश्वरः । तेषामैश्वर्यदातृत्वं तन्मूलत्वं निरीश्वरः॥ इन्द्रानामास इन्द्राणांपतिः साक्षीगतिः प्रभुः । बिष्णुस्वयं सविष्णूनांपतिर्वेदांतकृद्विभुः॥ब्रह्मासब्रह्मणांकर्त्ताप्रजापातिपतिर्गतिः । रुद्राणांस्थपतीरुद्रोरुद्रकोटिनियामकः॥चन्द्रादित्यसहस्राणिरुद्रकोटिशतानिच । अवतारसहस्राणि शक्तिकोटिशतानिचा ॥ ब्रह्मकोटिसहस्राणिदुर्गाकोटिशतानिच । सर्भायस्यनिषेवंतेसश्रीरामइतीरितः) ॥ २ ॥ औजिनसगुण प्र भक्तिको ठानी है तेऊमरिगये औ जे निर्गुणआन्यो है तेऊमरिगये याते यह आयो कि निर्गुण सगुणवारे भक्त द्वौ मरिगये ॥ ३ ॥ औ मछंदर औ गोरख औ दत्तात्रेय औ ब्यास सोई योगऊ कियो छूटिबेको पै श्रीकबीरजी कहै हैं कि सबकालके फाँसमें परतभये कहे महाप्रळयमेंनाशह्वैगये । महाप्रलय में जबब्रह्मा मरे हैं तब कोई नहीं रहैहैं ॥ ४ ॥

इति चौवनवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ पचपनवीं रमैनी।

चौपाई।

गये राम अरुगये लक्ष्मना। संग न गै सीताअसधना १
जातकौरवनलाग न बारा। गये भोज जिन साजल धारा२
गै पांडवकुन्तीसी रानी।गैसहदेव जिन मति बुधि ठानी३
सर्व सोनेकै लंक उठाई। चलत बार कछु संग न लाई४
कुरियाजासु अंतरिक्ष छाइ। हरिचन्द्र देखिनाहिं जाई ५
मूरुख मानुष अधिक सजोवै।अपना मुवल औरलगिरोवै६
इ न जानै अपनो मरि जैवै। टका दश बिढ़ै और लै खैवै७
साखी॥ अपनी अपनी करि गये, लागिन काहूके साथ॥
अपनी करिगयो रावणा,अपनी दशरथ नाथ॥८॥

गयेराम अरुगये लक्ष्मना। संगनगै सीता असिधना॥ १॥

देवतन मुनिनको कहिआये हैं अब राजनको कहै हैं काहेते कि, आगे दश-अवतार कहिआये हैं इहां पुनि राम कहै है तहां इहां जे जीव राम राजा भये ताको औ लक्ष्मणको महाभारतसभापर्वमें नारद युधिष्ठिरते कह्योहै राजनके गिनतीमें यमकीसभामें। तिनको कहै हैं कि, रामगये लक्ष्मणगये औ संगमें सीता असनारी न जातभई। जो यह अर्थ कोई न मानै तौयह कहै हैं कि, नारायणके अवतार रामचन्द्रहैं तिन्हींको जाइबो कबीरकहै हैं तौ कबीरजी तौ सांचके कहवैया हैं झूठी कैसे कहैंगे सब रामायणम बर्णन है कि मथम जानकी शरीर ते सहितगई हैं पुनि श्रीरामचन्द्र शरीरते सहित जातभये जिनके संग श्रीशक्ति भूशक्ति लीलाशक्ति शरीर सहित चलीजातीहै सो जो कबीरजी व राजा जे भये हैं तिनको जाइबेको न कहते तौ संगमें सिया असि धना न गई यह कैसे लिखते ॥ १ ॥

जातकौरवनलागिनवारा गयेभोजजिनसाजलधारा ॥ २ ॥
गेपांडव कुंतीसी रानी । गेसहदेवजिनमति बुधिठानी ॥३॥
सर्वसोनेकी लंक बनाई । चलत बारकछुसंग न लाई ॥४॥

औ कौरवनको जातबार न लग्यो औराजाभोजगे जिनधारानगरीको बसायोहै कहे साज्यो है भोजके कहेते कलियुगके राजा सब आयगये ॥ २ ॥ औ पांडवानेंहैं औ कुन्ती ऐसी रानी जो हैं औ सहदेव जेहैं ते सब जातभये जेपण्डितहैं तिनहू में अपनीमति कहे बुद्धि अधिक ठानतभये कहे करतभये ॥ ३ ॥ औ सब लंका सोनेकै रावण बनायो पै चलतवार संगमें न गई ॥ ४ ॥

कुरियाजासुअंतरिक्षछाई । सोहरिचंद्रदेखिनहिंजाई ॥ ५ ॥

औ जाकी कुरिया अंतरिक्षमें छाईहै कहे स्वर्गमें महलबनोहै इन्द्रते अधिक सिंहासनमें बैठेहैं ऐसेजेहैं हरिश्चन्द्र राजा तेऊनहीं देखिपरे हैं अर्थात् तेऊ न रहिगये मरिगये भावयह है कि महा प्रलय भये त्रैलोकमें कोई नहीं रहिजाईहै ॥ ५ ॥

मूरुखमानुषअधिक सजोवै । अपनामुवलऔरलगिरोवै ॥ ६ ॥
इ न जानै अपनो मरिजैबै । टका दशवढ़ै औरलैखैबै ॥ ७ ॥

मूरुख जो मनुष्यहै सो संजोवै कहे अधिक सम्यक् प्रकारते जोवै है अर्थात् और को मरिबो कहे आजा मरिगयो बाप मरिगयो इत्यादिक सबको मरिबो देखतई जायहैं औ रोवै हैं अपने मरनकी चिन्तानहीं करैहैं ॥ ६ ॥ या नहीं जानैहैं कि जेतेदिन बीतिगये जेतने मारिगये और मरिही जायँगेय है बिचारै हैं कि और दशटका बढ़ै जाते बहुतदिन बैठेखायँ ॥ ७ ॥

साखी ॥ अपनी२ करिगये, लागिनकाहुकेसाथ ॥
अपनीकरिगयो रावणा, अपनीदशरथनाथ ॥ ८ ॥

जीतिजीति पृथ्वी सबै अपनी अपनी करिकै गये यशी दशरथराजा ते अधिक कोई न भयो जाकी सब प्रशंसा करैहैं उनके सुकृतको यश जगतही में रहिगयो उनके साथ न गयो औ अयशीरावणते अधिक कोई न भयो जाकी सब निन्दाकरै हैं जाके दुष्कृतको अयश जगतहीमें रहिगयो ॥ ८ ॥

इति पचपनवीं रमैनी समाप्त ।

अथ छप्पनवीं रमैनी ।

चौपाई ।

दिनदिन जरै जरलकेपाऊ । गाड़े जाइ न उमगै काऊ ॥ १ ॥
कंधं न देइ मसखरी करई । कहुधौंकौनिभांतिनिस्तरई ॥ २ ॥
अकरमकरै करमको धावै । पढिगुणिवेदजगतसमुझावै ॥ ३ ॥
छूछेपरे अकारथ जाई । कह कबीर चितचेतहु भाई ॥ ३ ॥

दिन दिन जरैजरलकेपाऊ । गाड़ेजाइ न उवरै काऊ ॥ १ ॥

कबीरजी कहैहैं कि जे रोजरोज ज्ञानाग्नि करिकै कर्मकोजारै हैं अपने जीवत्वको जारैहैं कि हम ब्रह्म ह्वैजायँ सो जरल के पाऊ कहे न काहूके कर्मही जरे न कोई ब्रह्महीं भयो । अथवा जरलके पाऊ कहे जारिगये हैं कर्म जाकों अर्थात् कर्मही नहीं है ऐसो जोब्रह्म ताकोको पायो है? अर्थात् कोई नहीं पायो है । जो कहो जड़भरतादिक पायो है तौ वेजो ब्रह्मही ह्वै जाते तौ दूसरो मानिकै रहूगणको कैसे उपदेश करते । कपिलदेव सगरकेलरिकन काहे जारिदेते औ सनकादिक जय बिजयको काहे शापदेते सो तुम ब्रह्म ह्वैबेकी आशा न करो जो संसारमें परे रहोगे तौ कबहूं सत्संग पायकै उद्धारहू होइजाइगो जो ब्रह्मरूपी गाड़ में परोगे तो गड़िजाउगे कबहूं न उमगोगे अर्थात् तिहारो कतहूं उद्धार न होइगो ॥ १ ॥

कंधनदेइ मसखरी करइ । कहुधौंकौनभांतिनिस्तरई ॥ २ ॥

कहो या कौनी भांति ते जीवको निस्तारहोय समीचीनसाधुनको सत्संग तो मिलै नहीं है गुरुवा लोगको सत्संग मिलैहै ते मसखरी करै हैं । मसखरी कौन कहावै जो आपतो जानै औ औरेनको ठगै सो गुरुवालोग आपतो जानै हैं कि या झूठाब्रह्ममें हम लागे हमारे हाथ कछुबस्तु न लागी ब्रह्म न भये परन्तु जोसाहबमें लगैहै जीवतिनकोकांधातानादिये अर्थात् उनको ज्ञान अधिक पुष्ट तो

न किये कि भलेलगेहैं तुम मसखरी किये कि जो तुमहूं अहंब्रह्मास्मि मानौ तौ तुमको अनेक प्रकारकी ऋद्धिसिद्धि प्राप्त होइ है साहब को ज्ञान छाँड़िदेहु या भांति समुझाय नरक में डारिदिये ॥ २ ॥

अकरमकरैकरमकोधावै । पढिगुणवेद जगतसमुझावै ॥ ३ ॥
छूंछे परै अकारथ जाई । कह कबीर चितचेतहु भाई ॥ ४ ॥

कैसेहैं वे गुरुवा लोग करत तो अकरममतहैं कि हमको करमत्यागहै हम संन्यासी हैं हम ज्ञानी हैं औ करम करिबेको धावै हैं औ वेदको पढ़ि गुनिकै जगतको समुझावै हैं कि, निष्कर्महोउ चाहईते सब बिकारहै चाह छोड़िदेउ औ आप मायाके लिये बजारमें झगरैं हैं सो उनके कहे जीवनको कैसे समुझिपरै ॥ ३ ॥ उनको उपदेश अकारथई जायहै औ जो सुनै है सो छूंछई परैहै अर्थात् कछू-वस्तु हाथ नहीं लगे है सो कबीरजी कहै हैं कि, हे भाई ! चित चेत करो जेहिते कनककामिनी रूप मायाते औ धोखाब्रह्मते बचिजाउ ॥ ४ ॥

इति छप्पनवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ सत्तावनवीं रमैनी ।

चौपाई ।

कृतियासूत्रलोक यकअहई । लाख पचासके आगे कहई ॥ १ ॥
विद्या वेद पढै पुनि सोई । वचन कहत परतक्षै होई ॥ २ ॥
पहुँचि बात विद्या के वेता । वाहु के भर्म भये संकेता ॥ ३ ॥
साखी ॥ खग खोजनको तुमपरे, पीछे अगम अपार ॥
विन परचै किमि जानिहौ, झूठाहै हंकार ॥ ४ ॥

कृतियासूत्रलोकयकअहई । लाखपचासकेआगेकहई ॥ १ ॥

कृतिया कहे यह कृत्रिम जो है कर्म अहंब्रह्म मानिबो सो यहलोक में एक सूत्रके बरोबरहै कहेरसरीकेबरोबरहै जीवनके बांधिवेको । मंगलमें कहि

आये हैं कि, ब्रह्ममें अणिमादिकसिद्धि होइ हैं सो वह कृत्यकरिकै कहे ब्रह्मानिकै पचास लाखवर्षके आगेकी कहै हैं सो पचास लाख यह उपलक्षण है अर्थात् भूत भविष्य वर्तमान सब कहै हैं ॥ १ ॥

विद्या वेद पढ़ै पुनि सोई । वचन कहत परतक्षै होई ॥ २ ॥
पहुंचि बात विद्या के वेता । वाहुके भर्मभये सङ्केता ॥ ३ ॥

विद्या जो है वेद जो है सो संपूर्ण पढ़िलेइ अर्थात् आइ जाइ तब जौनबात कहै हैं तौन परतक्ष होइहै कहे बाक्यसिद्धि है जाइ है ॥ २ ॥ वेविद्याके वेत्ता कहे जनय्या जे लोग हैं ते वह बातको पहुंचि कहे पहुंचतभये अणिमादिक सिद्धि होत भई औ ब्रह्मको जानतभये परन्तु साहबको जो है साकेत लोक ताके जानिबेको उनहूंको भ्रमभयो अर्थात् साहबको लोक न जानत भये ॥ ३ ॥

साखी ॥ खगखोजन को तुम परे, पीछे अगमअपार ॥
विन परचै किमिजानिहौ, झूठाहै हङ्कार ॥ ४ ॥

औ खग जो है हंसतिहारो स्वरूप ताके खोजिबेको तुमचल्यो कि, हम अपने आत्माको स्वरूपजानैं सो साहब अगम अपार जो धोखा ब्रह्म सों लग्यो है वाहीको अपनोस्वरूप मानिलियो है जब कुछ संसार तुमको छूट्यो तब अगम अपार जो धोखा ब्रह्म है ताही को अहंब्रह्मास्मि मानिकै बैठचो सो वह अगम है काहूकी गम्य नहीं है अपार है अर्थात् झूठा है । भाव यह है कि, जब साकेत लोक को जानोगे तब साकेतनिवासी जेपरमपुरुष श्रीरामचन्द्र तिनको जानोगे तब वे हंसस्वरूपदै अपने धामको लैजायँगे तबहीं जन्म मरणते रहित होउगे तब हंसस्वरूपपावोगे औरीभांति संसार ते न छूटोगे न सिद्धिमाप्त भये न ब्रह्मभये तामें प्रमाण गोसाई तुलसीदासजी को दोहा ॥ "बारिमथे घृतहोइबरु सिकताते बरु तेल । बिनहरिभजन न भवतरै यह सिद्धांत अपेल) १ औ कबीरहूजी को प्रमाण ॥ "रामबिनानर ह्वैहोकैसा । बाटमाँझ गोबरौरा जैसा" ॥ ४ ॥

इति सत्तावनवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ अट्ठावनवीं रमनी ।

चौपाई ।

तैंसुत मानु हमारी सेवा । तो कहँ राज देहुं हो देवा ॥ १ ॥
गम दुर्गम गढ़देहु छुड़ाई । अवरो बात सुनो कछु आई॥२॥
उतपति परलै देउ देखाई । करहुराज्यसुखविलसहुजाई ३
एको वार न जैहै बाँको । वहुरिजन्मनहिंहोइहैताको॥४॥
जायपाप देहौ सुखधाना । निश्चयवचनकवीरको माना५॥
साखी ॥ साधुसंत तेई जना, जिन माना वचन हमार ॥
आदिअंत उत्पति प्रलय,सब देखा दृष्टिपसार ६

तैं सुत मानु हमारी सेवा । तोको राजिदेहुं हो देवा ॥ १ ॥
गम दुर्गम गढ़देहुँ छड़ाई । अवरो बात सुनोकछुआई ॥२॥

वही लोकके गये जन्म मरण छूटै है सो कबिरजी साहिबैकी उक्ति कहै हैं । साहब कहै हैं हेसुत! हे जीव! तू हमारिही सेवा मानु जिन देवतनको तैं चाहैहै किं मैं इनको दासहौं तिन देवतनकी राज्यमैं तोको देहुँगो अर्थात् मेरोपार्षद जब होयगो तब सबके ऊपर ह्वै जायगो ते देवता तुम्हारही सेवाकरैंगे ॥ १॥ औ गम जो है जगत् दुर्गम जोहै निर्गुण ब्रह्म ये दूनों धोखाजे गढ़हैं ते तोको छोड़ाय देउँगो अर्थात् मायाते रहित तोको करिदेउँगो औ वह धोखा ब्रह्म में न लगन देउँगो जो जीवनको संसारी करिदेइहैं तब सगुण निर्गुणके परे जो और कछुबात है सो मेरेपार्षद कहै हैं सो तैंहूं मेरे नगीच आइकै सुनैगो ॥ २ ॥

उतपातिपरलैदेउँदेखाई । करहुराज्यसुखविलसहुजाई ॥३॥

अरु उत्पात्ति प्रलय जौनीभांति सो मेरे प्रकाशके भीतर समष्टिजीवते होइ है सोमैं उचेत तोको देखाइदेउँगो औजगत्‌मेंआयकै जो मोको जानिकै मेरभक्ति करैहै सोसुखहै सोतैंहूंमेरीभक्तिकरिकै संसाररूपी राज्यमें जाइकै सुखसोंबिलसैगो

तोकोसंसारबाधा न करिसकैगो। जगत्‌रूपी राज्यके विषयानंद ब्रह्मानंद आदिक जे सुखहैं ते सुखनहीं हैं जो कहा साहबके लोक जाइ फेरिकैसै आवैगो उहां गये तो अपुनरावृत्ति कहिआये हैं तोकबीरजी बीरसिंह देवको साहबके लोक लैगये लोक देखाइकै पुनि लैआइकै शिष्य करतभये औ श्रीकृष्णचन्द्र गोपनको आपनो लोक देखाइ पुनि लैआये हैं उनको जगत् बाधानहीं करिसकैहै वे साहब लोकही मेंहैं काहेते कि साहबको लोकप्रकाश सर्वत्र व्यापकहै साहबकी सकल सामग्री साहबके रूपई वर्णन करि आये हैं साहब लोकप्रकाश सर्वत्रपूर्ण है तौसाहबको लोक औ साहब सर्वत्रपूर्णई है। जे साहबको जानै हैं औ जगत्‌उमें हैं तौसाहब के लोकई में बने हैं उनको संसार बाधा नहीं करिसकै ॥ ३ ॥

एकोबार न जैहैवांको। बहुरि जन्म नहिं होइहै ताको॥४॥
जायपायदेहौसुखधाना। निश्चयवचनकबीरकोमाना॥५॥

एकोबार न बाँको जाइगो जन्म मरण तेरोछूटिही जायगो फेरि जन्म मरण न होइगो॥४॥औ संपूर्ण जे पापैंहैं ते जात रहैगें औसुखको धाना कहे समूह तोको देउँगो सोसाहब कहैहैं कि हेजीव!कबीरजीको वचन तुम निश्चय मानिके मेरेपास आवो५

साखी॥ साधुसंत तेईजना, जिन माना वचनहमार॥
आदिअंतउत्पति प्रलय,सबदेखा दृष्टिपसार॥६॥

जे हमारो कह्योबचन प्रमाणमान्योहै तेईसाधुहैं कहेसाधन करण वारे हैं औ तेई संतहैं तिनहींके मनादिक शांत ह्वै गये हैं औ तेई आदिअंत उत्पत्ति प्रलय सब बात दृष्टि पसारिकै देख्यो है अर्थात् सब बातजानि लियोहै ॥ ६ ॥

इति अट्ठावनवीं रमैनी समाप्ता।

अथ उनसठवीं रमैनी।

चौपाई।

चढ़तचढ़ावत भड़हरफोरी। मननाहिंजानै को करिचोरी १
चोर एक मूसल संसारा। बिरलाजन कोई जाननहारा २
स्वर्ग पताल भूमि लै वारी। एकैराम सकल रखवारी ३॥

साखी ॥ पाहन ह्वै ह्वै सवचले, अनभितियन को चित्त ॥
जासा कियो मिताइया, सो धनभे अनहित्त॥४॥

चढ़तचढ़ावतभड़हरफोरी । मननहिंजानैंकोकरिचोरी॥१॥
चोर एकमूसलसंसारा । बिरला जनकोइजाननहारा ॥२॥
स्वर्ग पतालभूमिलैवारी । एकैराम सकल रखवारी॥ ३ ॥

गुरुवालोग आप माण चढ़ावै हैं अरु औरको सिखैसिखै माण चढ़वावै हैं सोयही माण चढ़त चढ़त भड़हर जो ब्रह्म ताको फोरि कै वही धोखा ब्रह्ममें लीनभये मनते । या नहीं जानै हैं कि साहब के ज्ञानकी चोरी को करैहै वही धोखा ब्रह्महो तो करैहै यही नहीं जानै हैं वाहीमें लगे हैं॥१॥सो चोर एक जो धोखाब्रह्महै सोसंसारभरको मूसिलियो अर्थात् ब्रह्महीं के ज्ञानको सबदौरे हैं परमपुरुष को नहीं दौरे हैं तेहितें कोई बिरलाजन परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको जानैहै॥२॥ जेश्रीरामचन्द्र एक स्वर्ग पाताल भूमि को बारिकेसम रखवारी कहे रक्षा करै हैं इहां एकैराम रखवारहै यह जो कह्यो ताते बाँधनवारे धोखा देनवारे बहुतहैं पै बंधनते छोड़ावन वारे एक श्रीरामचन्द्रई हैं दूसरो नहीं है स्वर्गतेऊपरके भूमिते मध्यके पातालते नीचेके लोक सबआये ॥ ३ ॥

साखी ॥ पाहनह्वैह्वै सवचले, अनभितियन को चित्त ॥
जासों कियो मिताइया, सो धनभे अनहित्त॥४॥

अनभितियाको चित्तजो धोखाब्रह्महै तौनेमें लगिकै संपूर्ण जे जीवहैं ते पाहन ह्वैगये कहेजड़वत् ह्वैगये वे धनते छोड़ावनवारे श्रीरामचन्द्रको न जानतभये जौन ब्रह्मते सबजीव मिताई कियो सो अनहितभये कहे संसार में डारनवारो धोखई ठहरयो ॥ ४ ॥

इति उनसठवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ साठवीं रमैनी ।

चौपाई

छाड़हु पतिछाड़हु लवराई।मनअभिमानटूटितबजाई॥१॥
जनचोरी जो भिक्षाखाई।फिरिबिरवा पलुहावन जाई ॥२॥
पुनिसंपति औपतिको धावै।सो बिरवा संसार लै आवै॥३॥
साखी ॥ झुठा झुठेकै डारहूं, मिथ्या यह संसार ॥
तेहिकारण मैं कहतहौं, जासों होय उबार ॥ ४ ॥

छाड़हुपतिछाड़हुलवराई।मनअभिमानटूटितबजाई ॥ १ ॥
जनचोरीजोभिक्षाखाई । फिरिबिरवापलुहावनजाई ॥ २ ॥
पुनिसंपति औपतिकोधावै।सोबिरवासंसारलैआवै ॥ ३ ॥

कबीरजी कहै हैं कि नाना देवता जो पतिमानैहौ सो औ लवराई जो धोखा ब्रह्महै ताको छोड़िदेउ न छोड़ोगे तौपुनिकै जब संसारआवोगे तबतोअभिमान दूरिहोजाय अर्थात नानादेवतनही की सुधिरहिजायगी न धोखा ब्रह्महीकी सुधिरहिजाइगी॥१॥काहे ते कहै हैं कि ब्रह्मको छोड़िदेउ? सोआगे कहै हैं जीव या सनातनको साहबको है सो जे जन साहबते चोराइकै और देवतनते भिक्षा मांगि खायहैं औ फिरि २ बिरवारूप देवतनको पलुहावैकहे प्रश्नकरे जायहैं पुनि उनहीं सों सम्पति कहे नाना ऐश्वर्य होय सिद्धि होइ औ पति कहे राजाहोय इंद्रहोय याको धावै हैं सो वे बिरवारूप जे देवता हैं ते फिरि फिरि संसारमें लै आवै हैं जन्म मरण होय है ॥ २॥ ३ ॥

साखी ॥ झुठाझुठेकैडारहू, मिथ्यायहसंसार ॥
तेहिकारणमैंकहतहौं, जासोंहोयउबार ॥ ४ ॥

सो झूठा जो ब्रह्महै ताको झूठ समुझिलेउ अरु देवता संसार ही में हैं सो यह संसार जोहै ताको मिथ्या मांनिलेउ औसबको कारण जौन सर्वत्रहै जाको

पूर्व काहिआयेहैं कि एकै रामरखवारी करै हैं सो मैंहींहौं तिहारो पति तुम मोमें लगौ जातेतुम्हारो उद्धार ह्वैजाइ तिनको तुमपति मानिराख्योहै ते तुम्हारे पति-नहीं हैं वे बांधने वारे हैं ॥ ४ ॥

इति साठवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ इकसठवीं रमैनी ।

चौपाई ।

धर्मकथा जो कहतै रहई । लवरी नित उठि प्रातै कहई ॥ १ ॥
लवरिबिहानेलवरीसाँझा । यक्कलावरिवसत्हदयामाँझा ॥ २ ॥
रामहुंकेरमर्मनहिं जाना । लै मति ठानी वेद पुराना ॥ ३ ॥
वेदहुकेर कहानहिंकरई । जरतै रहै सुस्त नहिं परई ॥ ४ ॥
साखी ॥ गुणातीतके गावते, आपुहिं गये गमाय ॥
माटीतन माटीमिल्यो, पवनहिं पवन समाय ॥ ५ ॥

धर्मकथाजो कहतैरहई । लवरीनितउठि प्रातैकहई ॥ १ ॥

धर्म की कथा जो कहतई रहै हैं कि स्त्री आपने पतिही को जानै और दूसरेको पतिकरि न जानै परन्तु धर्म कछूजानै नहीं हैं धर्म कहां है कि जीव यह साहबकी शक्तिहै याके पति साहव हैं तामें प्रमाण॥ "अपरेयमितस्त्वन्यांप्रकृतिं-विद्धिमेंपराम्। जीवभूतांमहाबाहो ययेदंधार्य्यतेजगत्" ॥इतिगीतायाम्॥ "वासुदे-वःप्रमाणैकःस्त्रीमायमिदंजगत" ॥दूसर कबीरजीका प्रमाण॥ "दुलहिनगावोमंगल-चार । हमरेघरआयेरामभतार ॥ तनरतिकरि मैं मनरतिकरिहौं पांचौतत्वबराती । रामदेवमोहिंब्याहनऐहैं मैंयौवनमदमाती ॥ सरिरसरोवरवेदीकरिहौंब्रह्मावेदउचा-रा । रामदेवसँगभांवरिलेहौं धनिधनिभागहमारा ॥ सुरतेंतीसौकौतुकआयेमुनिवर-सहसअठाशी । कहेकबीरहमब्याहिचलेहैं पुरुषएकअबिनाशी" ॥ तेसाहबको या जीव नहीं जानै हैं औरऔरमें लगै है बड़े प्रातःकाल उठिकै लवरी कहै है कि हमहीं राम हैं दूसरो नहीं है अथवा जीव जन्म लेइहै सो प्रातःकाल है नब

गर्भ में रह्यो तब साहब ते कह्योहै कि तुम मोको गर्भते छुड़ायो मैं तिहारोभजन करौंगो औ जब गर्भते निकस्यो जन्मलियो तब वहबात लवरी कै डारयो मैं कहा कह्यो है साहब को भजन न कियो कहा करन लग्यो ॥ १ ॥

लवरिविहानेलवरीसाँझा। यकलावरिवसहृदयामाँझा ॥२॥
रामहुंकेर मर्मनहिं जाना। लै मतिठानी वेद पुराना ॥३॥

सो यहितरह ते लवरी बिहाने कहैहै औ साँझके लवरीकैहैहै कहे आपन औ गुरुके औ देवताके ऐक्यता मानै है काहेते तीनि कहैं हैं कि, एक लवरी जो है मायासो हृदयमें बसैहै सोई सब लवरी कहावै है॥२॥सो भला ब्रह्म को मर्म न जानै तो न जानै काहेते कि वहतो धोखा है सो कछू वस्तु होइ तौ जानै परन्तु सांच औ सर्वत्र पूर्ण औ सबते श्रेष्ठ ऐसे जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको जो या मर्म है कि, जो कोई मेरे सन्मुख होइ ताको मैं छुड़ाइ लेउँ या जीव न जानतभये साहब छुड़ाइ लेइहै तामें प्रमाण ॥ "अबही लेउँ छुड़ाय कालते जो घट सुरति सम्हारो"॥ याहीहेतु सुरति दियो है मतिलैकै कहेग्रहण करिकै वेदपुराणके अर्थ ठानै है कहे अपने सिद्धांतनमें लगायदेइ है ॥ ३ ॥

वेदहु केर कहानहिं करई। जरतैरहै सुस्त नहिं परई ॥४॥

सिद्धांततो एकैहोइहै साहबकोसिद्धांत जो तात्पर्यवृत्तिकरिकै यह कहैहै सो भला न जानै मुक्ति न होइ परन्तु वेदमें जो सुकर्म लिखे हैं सो करिकै नरकतें तौ बचै सो वेदहू की कही जो बिधि निषेधहै सोऊ नहीं करैहै ऐसो मूढ़ यह जीव शोकरूपी अग्निमें जरतै रहैहै सुस्त नहीं परै है सुचित्त नहीं होय है अर्थात इहां कुछ छोड़्यो उहां धोखाजोब्रह्महै तहांकुछ न समझ्यो औईश्वर जे हैं तिनहूं को काहू न मान्यो औ सबके रखवार दयालु जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनहूं छोड़्यो तेहिते मूर्ख ऊंटके पाद ह्वै गयो न जमीनको न आसमान को वाको कौन बचावै। जो कहो आत्माको चीन्हिकै बचिजाय तौ जो आत्मामें एती शक्तिहोती तौ बंधनमें न परतो आपही बचिजातो ताते सबके रखवार जे साहबहैं तिनहींके बचाये बचैहै ॥ ४ ॥

साखी ॥ गुणातीतके गावते, आपुहि गये गमाय ॥
मार्टीतन माटीमिल्यो, पवनहि पवन समाय ॥ ५ ॥

गुणातीत जो साहबको लोक ताकेगावते कहे प्रकाशतेजहांसमष्टि जीवरहै है तहां आपुही रामनाम को साहबमुख अर्थ गमाय कै संसारमुख अर्थ करि संसारी ह्वैगयो शरीर धारणकियो पुनि माटीमें माटी मिलिगयो औ पवनमें पवन मिलिगयो अर्थात् ते पुनि जैसेके तैसे ह्व गये औ जो गुणातीतके गावते यह पाठ होइ तौ यह अर्थ है गुणातीत जो है धोखा ब्रह्म ताको गावत गावत साहब को गवांइ जातभये ॥ ५ ॥

इति इकसठवीं रमैनी समाप्त ।

अथ बासठवीं रमैनी ।

चौपाई ।

जोतोहिं कर्त्तावर्णविचारा । जन्मत तीनिदण्ड अनुसारा १
जन्मत शूद्रभये पुनि शूद्रा । कृत्रिमजनेउ घालिजगदुंद्रा २
जोतुमब्राह्मणब्राह्मणीजाये । और राह तुम काहेन आये ३
जो तू तुरुक तुरुकिनी जाया । पेटैकाहेन सुनतिकराया ४
कारी पीरी दूहौ गाई । ताकर दूध देहु बिलगाई ५
छाडुकपटनलअधिकसयानी । कहकबीर भजुशारँगपानी ६

जोतोहिंकर्त्तावर्णविचारा । जन्मततीनिदंडअनुसारा ॥१॥

जेतोको ब्रह्मा बर्णको बिचारकियो कि ये ब्राह्मणहैं क्षत्रीहैं बैश्य हैं शूद्रहैं मुसल्माnहैं सो एतो शरीर के धर्महैं तीनिदण्ड जे हैं संचित क्रियमान प्रारब्ध तिनके कर्मके अनुसारते जन्मनकहे जन्मलेइ हैं ॥ १ ॥

जन्मतशूद्रभयेपुनिशूद्रा। कृत्रिमजनेउघालिजगदुंद्रा ॥२॥
जोतुमब्राह्मणब्राह्मणीजाये। औरराहतुमकाहेनआये ॥३॥

जब प्रथम तेरो जन्म होइहै तबतैं शूद्रई रहै है काहेते कि संस्कार कुल-नहीं रहैहै औ जब मैरहै तब अशुद्धई रहैहै शिखा जनेऊ दूनो आगीमें जरिजाइहैं तबहूं शूद्रै ह्वैजाइहै सो कृत्रिम जनेऊ पहिरिकै तैं जगत्में द्वन्द मचाइ दियेहै कि हम ब्राह्मण हैं ये क्षत्री हैं ये वैश्यहैं ये शूद्रहैं ॥ २ ॥ जोकहौ हम जन्म करिकै ब्राह्मण हैं ब्राह्मणीते उत्पन्न हैं और राह ह्वै काहे आये ब्रह्मांड फोरिकै आवते आंखी के राहह्वै आवते अशुद्ध राहह्वै काहेआये अर्थात् न ब्राह्मणी आपनी शक्तिते उत्पन्न करिसकै औ न तैं आपनी शक्ति ते आइसकै कर्महीते ब्राह्मणी उत्पन्न करै है कर्मही ते तैं आवै है तेहिते जन्म ते तौ शूद्रहौ संस्कारते द्विजभये वेद अभ्यास कियो तब विप्रभये औ जब ब्रह्मको जानैगो तब ब्राह्मण कहावैगो ताते कर्महीते ब्राह्मणत्व तोमें आवै है अहं-ब्रह्म तो धोखही है परब्रह्म जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनहूं को तैं न जान्यो सो तैं ब्राह्मणकैसे होइगो जबतैं साहबको जानैगो तबहीं ब्राह्मणहोइगो ॥ ३ ॥

जोतूतुरुकतुरुकिनीजाया। पेटैकाहेनसुनतिकराया ॥४॥
कारी पीरी दूहौ गाई। ताकर दूध देहु बिलगाई ॥५॥

औ जो तू कहैहै कि हम तुरुकिनी ते उत्पन्नहैं तौ पेटै काहे न सुनति करायो तेहिते तुरुकिनी के पेटते भयेत मुसल्मान नहीं है ॥ ४ ॥ कारीपीरी गाइको दूध मिलाइकै कोई बिलगावै तौ काबिलग होइहै ऐसे आत्मा तौ एक-ही जातिहै हिन्दू तुरुक नहीं ह्वै सकै है ॥ ५ ॥

छांडुकपटनरअधिकसयानी। कहकबीरभजुशारँगपानी६॥

आपनी सयानी अधिककरिकैजोकपट करिराख्यो है सोछोड़ि दे बिचारिकै देखु तैंतो आत्मा न हिंदू है न तुरुकहै तैं जाको अंश है ऐसे शारँगपाणि जे साहबहैं ताको भजु ताकी सेवा करु शारँगपाणी जो कह्यो ताको यह हेतुहै कि धनुषबाण लिये तेरी रक्षा करिबेको तैयार हैं और तू औरै औरैमें लगाहै। जो

साहबमें लगैहै सोई सबते श्रेष्ठ होयहैं तामें प्रमाण॥ (विप्राद्द्विषड्गुणयुतादरविंद नाभपादारविंदविमुखाच्छ्वपचंवरिष्ठम । मन्येतदर्पितमनोवचनेहितार्थप्राणंपुनातिसकुलंनतुभूरिमानः) ॥ १ इतिभागवते ॥ ६ ॥

इति बासठवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ तिरसठवीं रमैनी ।

चौपाई ।

नाना रूप वर्ण यककीन्हा । चारि वर्ण उनकाहु नं चीन्हा १॥
नष्टगये करता नहिं चीन्हा । नष्टगये औरहि मन दीन्हा॥२॥
नष्टगये जिन वेद वखाना । वेद पढ़ा पै भेद न जाना ॥ ३ ॥
विमलषकरैनः ननहिंसूझा।भो अयानतवकछुवनबूझा॥४॥
साखी ॥ नाना नाच नचाइकै, नाचै नटके वेष ॥
घट घट अविनाशी वसै, सुनहु तकी तुम शेष ॥५॥

वर्ण धर्मखंडन करि आये अब सब वर्णको एक मानि जे साहबको भूलैहैं तिनको खंडनकरै हैं ! नानारूप जे जीवहैं तिनको एक वर्ण कहे एक रंग करि देत भयो अहंब्रह्मास्मि करिकै सब मानत भयो कि हमहीं सब हैं दूसरो नहीं है चारिउवर्ण वहीको वर्णन करतभये यह न जानतभये कि यह धोखा ब्रह्मको खाई लेइहै॥ १ ॥ फिरिफिरि सब जीव नष्ट ह्वैगये कहे मरि गये उद्धारकर्त्ता जो साहबहै ताको न चीन्हतभये औ औरहि जो धोखा ब्रह्महै तौनेमें मन दैकै नष्टह्वैगये अर्थात लीन ह्वैगये साहबकोतो जाने नहीं फिर संसारी भये॥ २॥ जे वेदको बखानि२कै पढ़िपढ़िकै औरनको अर्थ सुनावै हैं तेवेदपढ्यो परंतु भेद न जान्यो कहे वेद को तात्पर्य जे साहब हैं तिनको न जान्यो तेहिते नष्ट ह्वैगये सब वेदको भेद साहबै है तामें प्रमाण ॥ (सर्ववेदायत्पदमामनन्ति) ॥ ३ ॥ बिमलष जो साहब मन वचनके परे ताको खंकहे आकाशवत् शून्य ज्ञान करै है कि, वह नहीं है आकाशवत् ब्रह्महीं पूर्ण है सो उनके ज्ञान नेत्र तौ हई नहीं हैं साहब कैसे सूझि

परे जब न सूझि परयो तब अज्ञान ह्वैगये नेतिनेति कहनलगे कि, अकथ है कबीरजीको प्रमाण ॥ "वेदबिचारि भेद जो जानै। सतगुरु मर्मशब्द पहिचानै" ॥ ४ ॥ गुरुवा लोग कहै हैं कि, वही जोहै अविनाशी सो सबके घटघट में सबको नाच नचावै है औनटके वेष आपो नाचै है। सो कबीरजी शेखतकीसों कहै हैं कि, हे शेखतकी ! जो सबको नाचनचावैगो आपनटके वेष नाचैगो सो अविनाशीकैसेहोइगो काहेते कि नटएक वेषलैआयोपुनि वह वेष छोड़िके और वेष लैआयो याही भांति नानावेष नट धारणकरै हैं ते सब अनित्यहैं नाना वेष धरिबो तौ मायाके गुणहैं वह मायाके परे कैसे होइगो औ जब मायाते परे न होइगो तौ अविनाशी कैसे होइगो सो हे शेखतकी तुम सुनो वाहूबिचार करत करत जो शेष रहिजायहै सो तुमहौ बातो तुम्हारहो अनुभवहै अथवा तुम शेषहौ सो कार निराकार के परे जो साहब है ताको तुम शेष हौ कहे अंशहौ ॥ ५ ॥

इति तिरसठवीं रमैनी समाप्ता।

अथ चौंसठवीं रमैनी।

चौपाई।

काया कंचन यतन कराया। बहुत भांतिकै मन पलटाया॥१॥
जो सौबार कहौ समुझाई। तहिबो धराछोड़ि नहिंजाई॥२॥
जनकेकहे जो जन रहिजाई। नवो निद्धि सिद्धी तिनपाई॥३॥
सदाधर्म तेहि हृदयाबसई। राम कसौटी कसते रहई॥४॥
जोरि कसावै अंतै जाई। तौ बाउर आपुहि बौराई॥५॥
साखी ॥ ताते परी कालकी फांसी, करहु आपनो शोच॥
जहां संत तहँ संत सिधावै, मिलि रहे पोचै पोच॥६॥

कबीरजी कहैहैं कि ईजीवनके कायाको हम बहुत यतनकरवाया औ बहुत भांति ते मन पलटाया कि तू धोखा कों त्यागि कंचन आपने स्वरूपको जानो॥१

याबात यद्यपि मैं सौबारसमुझाऊंहौं ताहूपै ऐसो धोखाको धरचो कि छोंड़ि नहींजाय सो जे जन गुरुवाजनके कहेराहिजायहैं धोखाकोनहीं त्यागे हैं ॥ २ ॥ तेनवोनिद्धि पावे हैं औ निर्गुण सगुणके परेमैं जोबातकहौहौं ताकोकहा बूझैं॥ ३ ॥ जेमरोकह्यो बूझैहैं कि हमसाहबकेहैं याधर्मजिनके हृदयमें बसैहै तेसाहबके रूप-कसौटी में आपनो कंचन स्वस्वरूप कसतई रहै हैं औ जेसाहब नहींकसैहैं गुरुवालोगनके कसावैजाइहैं तेवेबाउरऊ निराकार ब्रह्म तामें आपही बौरायजाय हैं जो औरको औरकहै सो बाउर है ॥ ४ ॥ ५ ॥ सो हे जीवो ! तुम साहब के होइकै धोखा में लगे ताहीते कालकी फांसीमें परेहौ सो आपने छूटिबे को शोच करौ देखो तो जहां संत रामोपासकहैं तहं संतजाइहैं आपनोस्वरूपजानि छूटिजाइहैं जे गुरुवालोगनको उपदेश लेइहैं ते जीव पोचै पोच मिलिरहे हैं॥ ६ ॥

इति चौंसठवीं रमैनी समाप्ता ।

अथपैंसठवीं रमैनी ।

चौपाई ।

अपने गुणके औगुण कहहू। यहैअभाग जोतुम न विचारहू १
तुमजियरा बहुतैदुखपाया। जलबनमीनकवनसचुपाया २
चातृकजलहल भरेजोपासा।मेघ न बरसै चलैउदासा॥ ३ ॥
स्वांग धरचोभवसागर आसा।चातृकजलहलआशैपासा ४
रामै नाम अहै निजसारू। औ सब झूठ सकल संसारू ५
किंचित है सपनेनिधिपाई। हियनमाहँ कहँ धरै छिपाई ६ ॥
हरि उतंग तुमजातिपतङ्गा। यमघर कियो जीवको संगा ७
हियनसमायछोड़नहिंपारा।झूठलोभ तैं कछु न बिचारा ८
स्मृति कहाआपु नाहिंमाना। तरिवर छलछागर ह्वैजाना ९
जियदुरमति डोलै संसारा। तेहि नाहिं सूझैवारनपारा १०

साखी ॥ अंधभया सबडोलई, कोइनाहिं करैबिचार ॥
हरिकि भक्तिजानेबिना, भव बूड़िमुआ संसार ११

अपनेगुणकेऔगुणकहहू। यहै अभागजोतुननविचारहू १॥
तुमजियराबहुतैदुखपाया।जलबिनमीनकवनसचुपाया २॥
चातृकजलहलभरे जोपासा । मेघनबरसैचलेउदासा ॥३॥
स्वांगधरचोभवसागरआसा।चातृकजलहलआशैपासा४॥

स्वतःसिद्ध तुम साहबके दासहौ या जोआपनो गुणताकोअवगुण कहौहौ कि हम ब्रह्महैं सो यां नहीं बिचारौहौ कि हमब्रह्महैं कि दासहैं याही तुम्हारी अभागहै दासभूतमेतमान ॥(दासभूताःस्वतःसर्वेह्यात्मानःपरमात्मनः)॥परमात्ममें बहुत दुःख पायो है जो छाया पाठ होय तौ बहुत दुखमें आयो सो जब बिनाकौनौ सचुपायेहौ?नहीं पायो। ऐसे बिनासाहबके जाने सचुनपावोगे?॥१॥२॥ जैसे जब मेघ स्वातीको जलनहीं बरषैहै तब चातृकउदासैरहैहै कहे पियासैरहैहै जो नजीक समुद्रौ भरोहोय तौकहाहोइ ऐसेस्वामी मेघसम रामोपासक पूरागुरु तुमनहीं पायो जो साहबको बताइदेइ ताते तुम उदासईगयो और और में लगावन वारे गुरुवालोग जो उपदेशऊ कियो पै जनन मरण न छूट्यो ॥ ३ ॥ भवसागर ते पारहोबे की आशाकरि स्वांगजो धोखाब्रह्म तौनेकोतुमधरचो कि अहंब्रह्मास्मि मानिसंसारते छूटिजाइँगे सो तुम्हारी आशा चातृककी भई कि स्वातीतौ पायो नहीं जो बहुतजलहै पै बिना स्वाती चातृककी आशा फांसही ह्वैगई अथवा स्वांग धोखा ब्रह्म को जो तुमधरचो है सो साहबकी आशाकहे दिशानहीं है भवसागरहीकी आशाकहे दिशाहै ॥ ४ ॥

रामैनाम अहै निजसारू । औसबझूठ सकलसंसारू ॥ ५॥
किंचितहै सपनेनिधिपाई।हियनमाहँ कहँधरैछिपाई ॥ ६ ॥
हरिउतंगतुमजानि पतंगा । यमघरकियोजीवकोसंगा॥७॥
हियनसमायछोड़नहिंपारा।झूठलोभतैंकछुनविचारा॥ ८ ॥

स्मृतिकहाआपुनहिंमाना।तरिवरछलछागरह्वैजाना ॥ ९ ॥
जियदुरमतिडोलैसंसारा । तेहिनहिंसूझै वारनपारा ॥१०॥

हे जीवो ! तुम यह बिचारत जाउ कि निज कहे आपनो सार रामै नाम को साहब मुख अर्थ समुझिकै संसार ते छूटोगे अर्थात् साहब को स्वरूप औ तुम्हारो स्वरूप राम नामही में है औ सब कहे ब्रह्मई है यह जो मानि राख्यो है सो धोखा है झूठा है औ मायिक जो सकल संसार है सो झूठा है अथवा सकल संसार में और जे मत हैं ते सब झूठे हैं॥५॥अहंब्रह्मास्मि ज्ञान करै है सो सपने कैसी है अर्थात् झूठी है तैंतो किंचित् कहे अणुहै वा बिभु है झूठलोभंत कछु न बिचारा तुम्हारे हिये में ब्रह्म नहीं समाय है कहे तुम्हारो ब्रह्म होइबो नहीं संभवित होइ है याको छोड़िदेव औ वाको पार नहीं है कहे लबरी और न होय है याते झूठ लोभकिये है कि, मैं ब्रह्महोइ जाउँगो सो कछु न बिचारा काहेते अच्छा बिचारनहीं किये है अथवा कछू न बिचारा कहे वा बिचार कछू नहीं है मिथ्याहै॥ ६॥ ७॥ ८॥ जौन स्मृति बतावैहै॥(स्याज्जीवनेच्छायदितेस्वसत्तायांस्पृहायदि । आत्मदास्यंहरेःस्वाम्यंस्वंभावंचसदास्मर॥ १॥) सो तुम स्मृतिको कहा आप कहे आपनो स्वस्वरूप न मान्यो धोखाब्रह्ममें लगिकै अपने को ब्रह्ममानिकै तरिवर जोहै संसार ताको छल जो है धोखा ब्रह्मसोई है छागकहे बकरा ताही ह्वैकै कहे वह ब्रह्महैके तुमजान्यो कि हम चरिलेइँ अर्थात संसारते छूटिजाइँ सो एतो बड़ो संसार रूपी बृक्ष कहा धोखाब्रह्म बकरा चरोचरिजाइ है ॥ ९ ॥ जौन जीमें दुर्मति करिकै संसारमें डोलौहौ कहे फिरौहौ सो अहंब्रह्म माने संसारको वारापार न पावोगे वहतो धोखाहै॥ १०॥

साखी ॥ अंधभयासबडोलई, कोइनकरैबिचार ॥
हरिकिभक्तिजानेबिना,भवबूड़िमुआसंसार॥११॥

श्रीकबीरजी कहे हैं कि मैं येतोसमुझाऊं हौं परंतु सबसंसार की आंखि फूटिगई हैं अंधभया सबडोलैहै कहे फिरैहै यह बिचार कोई नहीं करै है भक्तनको संसार दुःखहरै सो हरि जेहैं सबकेरक्षक परमपुरुष श्रीरामचन्द्र तिनकी अनुरागात्मिका भक्ति बिना जाने भव जोहै धोखाब्रह्म तौनैहै भ्रमको समुद्र ताहीमें संसार बूड़िमुआ कहे संसारी जीव बूड़िमुये ॥ ११ ॥

इति पैंसठवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ छयासठवीं रमनी।

चौपाई।

सोई हितू बंधु मोहिं भावै। जात कुमारग मारग लावै॥१॥
सो सयान मारग रहिजाई। करै खोज कबहूं न भुलाई॥२॥
सो झूठा जो सुतकै तजई। गुरुकी दया रामको भजई॥ ३॥
किंचितहैयाहिजगतभुलाना। धनसुतदेखिभयाअभिमाना ४
साखी॥ जिय जो नेक पयान किये, मंदिर भया उजार॥
मरे जे जियते मरिगये, बाँचे बाँचन हार॥॥५॥

सोई हितु वा बंधु मोको भावैहै जो कुमारगमें जात जे जीव हैं तिनको सुमारगमें लैआवै कहे साहबको बतावै अथवा कुमार्ग में जात जो जीवहैं ताको साहबके सुमार्गमें लगावै॥१॥ अरु से ई जीव सयानहै जो सुमार्गमें आयकै रहिजायहै कहे स्थिर ह्वैजाय है अरु और और मतनको खोज करिकै सबको सिद्धांत साहब हीमें लगाइदेइ सो कबहुं न भुलाइ है ॥ २ ॥ ऐसो गुरुवा झूठा है जो सुतकै कहे, मूड़ मूड़िकै अपना चेला बनाइके तजिदेइ है साहब को नहीं बतावै है औरे और देवतनको सौंपिदेइ है औ जाकीदया ते अर्थात् जाके उपदेशते यह जीव श्रीरामचन्द्र को भजन करै है सोई सांचो गुरु है। भाव यह है कि बिना परमपुरुष श्रीरामचन्द्रजी के जाने यह जीव को शोक नहीं छूटै है जे गुरु साहबको बताइकै संसारते नहीं छुड़ावै हैं औरे और मतन में लगाइकै संसारमेंडारिदेइहैं ते अज्ञान दूरि करनवारे नहीं हैं वे नरक देन वारे हैं औ आप नरक जानवारे हैं तामें प्रमाण ॥ (शिष धनहरै शोकनाहिं हरई। सो गुरु घोरनरकमें परई)॥ औकबीरहूजी लिखि आये हैं ॥(छोड़िदेहु नरझेलिकझेला। बूड़ें दोऊगुरुअरुचेला ॥) हे जीवतू तो अणु हैं एकजो ब्रह्म औजगद्रूप जो है माया तामें भुलाइरह्यो है याही ते तैं जगत्में उत्पन्न भयो है आपने को मालिकमानिधन सुतादिको तोको अभिमान होइ है ॥ ३ । ४ ॥ हे जीव जो नेकहुपयान ते किये

स्थूल शरीर मंदिर उजार होइजाइ है सो बिना परमपुरुष श्रीरामचन्द्रके भजन जे मरे जीवतौ मरिकै चौरासीलाख योनिमें भटकनेलगे औबाचे बाचनहार कहे जे पांचौ शरीर ते बचिकै पार्षदरूप बाचन हार रहे ते बाचे ॥ ५ ॥

इति छचासटवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ सतसठवीं रमैनी ।

गुरुमुख चौपाई ।

देहहलाये भक्ति न होई । स्वांगधरेबहुते नर जोई ॥ १ ॥
धिंगाधिंगी भलो न माना।जोकाहू मोहिं हृदय न जाना २॥
मुखकछुऔरहृदयकछुआना।सपन्यो कबहूं मोहिं नजाना ३
ते दुखपावैं यहि संसारा । जो चेतौ तौ होहु निनारा ॥ ४ ॥
जो नर गुरुकी निन्दा करई । शूकर श्वानजन्मसो धरई ५
साखी॥लखचौरासीयोनिजीव, भटकि भटकि दुखपाव ॥
कह कबीर जो रामहिं जानै,जो मोहिं नीके भाव६

देहहलाये भक्ति न होई । स्वाँगधरे बहुतै नर जोई ॥ १ ॥
धिंगाधिंगीभलो न माना।जोकाहूमोहिंहृदय न जाना॥२॥

देह हलाये कहे पेट हलाय कुंडलनी उठावै है औ स्वांगधरे कहे कोई खाख लगावै है कोई जटा नहीं बढ़ावै है कोई टोपीदे अलफी पहिरि कुबरी लेइ है कोईकोई तिलकै नहीं देय है कोई बेंड़ा तिलक देइ है कोई नाकते तिळक देइ है कोई काठफळ पाषाण आस्थि इत्यादि माळा पहिरै है ऐसे स्वाँगधर नरनको देखेहै सौबिना साहबके जाने भक्तिहोई है ? नहीं होइ है ॥ १॥ धिंगाधिंगीकहे बड़ेबड़े माळपुवा मोहनभोग खाय मोटायकै बडेबड़े धिंगा ह्वै रहे हैं औ बड़ी बड़ी धिंगी ह्वैरही हैं भलो जो साँच मत ताको नहीं माने हैं साहब कहै हैं जो कोई मोको हृदयते नहीं जानै है सो मोको पावै है ? नहीं पावै है॥ २॥

मुखकछुऔरहृदयकछुआना।सपन्योकवहूंमोहिंनजाना॥ ३
तें दुखपावहिं यहिसंसारा । जोचेतौतौहोहुनिनारा ॥ ४ ॥
जोनरगुरुकीनिन्दाकरई । शूकरश्वानजन्मसोधरई ॥ ५ ॥

मुखमें तो और है कि, हम संन्यासी हैं हमसाधु हैं हमब्रह्मचारी हैं औ हृदय में और है धनमिलैको उपाय खोजै हैं तेनर सपन्यो कबहूं मोकोनहीं जानिसकै हैं ॥ ३ ॥ सोऐसे जे प्राणी हैं ते यहिसंसार में दुःख नानाप्रकारके पावै हैं सो हेजीवो ! तुम चेतकरौ तो इनसे न्यारा ह्वैजाउ ॥ ४ ॥ औ जे तात्पर्य्य वृत्तिकारिकै मोको बतावै हैं ऐसे जे गुरु हैं तिनकी जोकोई निन्दाकरै हैं कि, जोई वर्णन करै हैं सो सब मिथ्या है ते मरिकै श्वान अरु शूकरको जन्म धारण करै हैं ॥ ५ ॥

साखी ॥ लखचौरासीयोनिजीव, भटकिभटकिदुखपावै ॥
कहकबीरजोरामहिंजानै, सोमोहिंनीकेभावै ॥ ६ ॥

साहब कहै हैं कि मेरेभक्त कबीर कहैहै कि चौरासी लाख योनिमें जीव यह भटकि भटकि दुःख पावैहै सो तिनमें जोकोई श्रीरामचन्द्रको जानै सोई मोको भावै है । ऐसो प्रकट कबीरबतावै हैं ताहूको और औरमें अर्थकरि और और लगै हैं सो मोको नहीं जानै हैं ॥ ६ ॥

इति सतसठसवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ अड़सठवीं रमैनी ।

चौपाई ।

तेहिवियोगते भये अनाथा।परिनिकुंजबन पावनपाथा ॥ १॥
वेदौ नकलकहै जे जानै । जो समुझै सो भलो न मानै॥२॥
नटवर वन्द खेल जो जानै।ताकर गुण जो ठाकुर मानै॥३॥
उहैजो खेलै सबघटमाहीं। दूसर को लेखा कछु नाहीं॥४॥
भलो पोच जो अवसरआवै । कैसहुकै जन पूरा पावै॥५॥

साखी ॥ जेकरे शरलागै हिये, तव सो जानैगा पीर ॥
लागतौ भागै नहीं, सुखसिंधु निहारु कवीर॥६॥

तेहिवियोगतेभये अनाथा । परिनिकुंजवनपावनपाथा॥१॥
वेदौ नकल कहै जोजानै । जो समुझैसोभलो न मानै ॥२॥

संपूर्ण जे जीव हैं ते परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनहीं के वियोगते अनाथ ह्वैगये। निकुंज बन जो बाणीको जालहै नाना मत जिनमें परिकै एक सिद्धान्त मत परमपुरुष श्रीरामचन्द्रके मिलनके पाथ कहे पंथ न पावत भये ॥ १ ॥ जिनको पूर्व कहिआये कि साहब को नहीं जानै स्वांगभर बनावै हैं तिनको हे जीवो! जो तैं जानै तौ वेदहू वे मतवारेन को नकलई कहै हैं तौ जो साहब को समुझैहै सोऊ उनको नहीं मानै है नकलई मानै हैं ॥ २ ॥

नटवरबंद खेल जो जानै। ताकरगुण जो ठाकुरमानै॥३॥
उहैजो खेलैसबघटमाहीं । दूसरकोलेखा कछुनाहीं ॥४॥
भलोपोच जो अवसर आवै । कैसे कै जनपूरा पावै ॥५॥

अब योगिन को कहैहैं । नट कैसे बंटा जो कोई खेलै जानै है कहै यहजीव आत्माको ब्रह्मांडमें चढ़ाइकै फिरिउतारै जानै है ताको गुण यहहै कि, समाधि लगि जाइहै कहे ब्रह्मरूपह्वैजाइहै सो वही ब्रह्मको जो कोई ठाकुर मानैहै ॥ ३॥ अर्थात् जौनब्रह्ममैं ह्वैगाउहौं तौनै घटमें है दूसरेकी कछुनहीं लगै है अर्थात् दूसरो पदार्थ कछुनहीं है ॥ ४ ॥ सो जे यहमत करैहैं तिनको भलो पोचं- कहे नीको नागा अवसर आवतहै अर्थात् जब जीवमें लीन ह्वै ब्रह्मरूप ह्वैजा- इहै यातो भलो अवसर। औ जब समाधि उतरिगई जैसेकै तैसे ह्वैगई या पाँच- अवसरह्वै सो कैसे कै जन पूरो ज्ञान पावै कि हम पूर्णब्रह्महैं तो सर्वत्र पूर्ण है जो या ब्रह्मह्वैगातो तो समाधिउतरेहूमें वही वृत्ति बनी रहती ॥ ५ ॥

साखी ॥ जेकरे शरलागै हिये, तव सो जानैगा पीर ॥
लागैतौ भागै नहीं,सुखसिंधु निहारु कवीर ॥६॥

जेकरे शरलागैहै सोई बाणलागे की पीर जानै सो जो: कोईसमाधि लगावै है सोई समाधि उतरेको दुःख जानैहै सो समाधि तौ तोर लागैहै ना भागु समाधिहिलगाये रहु सो तेरो भागिबो तौ बनतई नहीं है समाधि उतरही आवैहै याते यह धोखा छोड़िदे कबीरजी कहै हैं सुखसिंधु जे साहबहैं तिनको निहारु जिनको एकबार निहारे समाधि लगी रहैहै अर्थात् जो एकहूबार साहबके सम्मुख भयोहै: सो फिरिनहीं संसार में बच्योहै तामेंप्रमाण ॥(एकोपि कृष्णस्यकृतः प्रणामो दशाश्वमेधावभृथेनतुल्यः ॥ दशाश्वमेधीपुनरेतिजन्मकृष्णप्रणामीनपुनर्भवाय ॥ इति) अथवा जाके बाण लगै है सोई पीर जानै है सो जो साहब में लागे हैं तेई धोखाकी पीर जानै हैं कि हमयोगमें यज्ञादिमें लगि कै नाहक जन्म गँवाये।सो कबीर जी कहै हैं कि साहबको दुर्लभजानि तैं लागु तौभागु न साहब सुखसिंधुहै तिनको तूनिहारु तौ ये सब धोखनकी पीर दूरि करि देयँगे तब अपराध तेरो न गनैंगे । तामें प्रमाण॥"कथंचिदुपकारेणकृतेनैकेनतुष्यति ॥ नस्मरत्यपकाराणांशतमप्यात्मवत्तया" इतिबाल्मीकीये ॥ ६ ॥

इति अड़सठवीं रमनी समाप्ता ।

अथ उनहत्तवीं रमैनी ।

चौपाई ।

ऐसा योग न देखा भाई । भूला फिरै लिये गफिलाई ॥१॥
महादेवको पंथ चलावै । ऐसो बड़ो महंत कहावै ॥ २ ॥
हाट बाट में लावै तारी । कच्चे सिद्धन माया प्यारी ॥ ३ ॥
कबदत्तै मावासी तोरी । कब शुकदेव तोपची जोरी ॥४॥
कब नारदबंदूक चलाया । व्यासदेव कब बंब बजाया ॥५॥
करहिं लड़ाई मतिकेमंदा।ईहैं अतिथि कि तरकशबंदा॥६॥
भयेविरक्त लोभमनठाना । सोना पहिरि लजावै बाना ॥७॥
घोरा घोरी कीन्ह बटोरा । गांवपाय यश चलो करोरा ८॥

साखी ॥ तियसुन्दरी न सोहई, सनकादिक के साथ॥
कबहुंक दाग लगावई, कारी हांडी हाथ ॥ ९ ॥

ऐसा योग न देखाभाई । भूला फिरै लिये गफिलाई ॥१॥
महादेव को पंथ चलावै। ऐसो बड़ो महंत कहावै ॥ २ ॥
हाटबाट में लावै तारी । कच्चे सिद्धन माया प्यारी ॥ ३ ॥
कब दत्तै मावासी तोरी। कब शुकदेव तोपचीजोरी ॥ ४ ॥

श्रीकबीर जी कहैहैं कि ऐसा योग हम नहीं देख्यो है कि साहबको तो जानै नहीं हैं गाफिल ह्वैकै भूले भूले फिरै हैं ॥ १ ॥ अरु महादेव को पंथजो तामस शास्त्रहै सो चलावै हैं औ बड़े महंत कहावै हैं ॥ २ ॥ सबके देखावन को हाट में औ पहारन के बाट में तारी लगायकै बैठै हैं औ सिद्धकहावै हैं औ सबके देखावन को यह कहै हैं कि संन्यासीको धर्मनहीं है कि द्रव्यलेय औ हाथछुवै परंतु जो कोई चढ़ाइकै चलौ जाइहै ताको चिमटाते लैकै कमंडलुमें डारिलेइ हैं सो ऐसे कच्चे सिद्धन को माया बहुत प्यारी लगैहै ॥ ३ ॥ दत्तात्रेय कबै मवासिनको शत्रुन को तौरयोहै औ शुकदेव कबै तोपखाना अपने साथ जोरिकै चलायो है ॥ ४ ॥

कब नारद बंदूक चलाया । ब्यासदेवकबबंबबजाया ॥५॥
करहिंलराई मतिकेमंदा । ईहैंअतिथिकितरकसबंदा ॥६॥
भये विरक्त लोभ मनठाना। सोनापहिरि लजावैंबाना ॥७॥
घोराघोरी कीन्ह बटोरा । गाँवपाययशचलो करोरा ॥८॥

औ नारद मुनि कबै बंदूक चलायो है औ ब्यासदेव कबै नगारादैकै काहूकें ऊपर चढ़ेहैं ॥ ५ ॥ ई संन्यासी बैरागी मतिके मंद लड़ाई करै हैं ई अतिथि हैं कि, तरकस बन्दसावंतहैं?॥६॥ भये तौ बिरक्त संन्यासी परंतु लोभ

कारके रोजगार करै हैं सोना पहिरि कै बानाको लजावै हैं ॥ ७ ॥ औ घोरा घोरी हाथी बहुत आपने संगलेत भये औ काहू राजाते गांव पायो करोरपती है या यश चलायो बड़े ज्ञानीहैं बड़े भक्तहैं या यश चलायो ॥ ८ ॥

साखी ॥ तियसुन्दरी न सोहई, सनकादिक के साथ ॥
कबहुंक दाग लगावई, कारी हांडी हाथ ॥ ९ ॥

लाव लश्कर में स्त्री साथ रहतई है सनकादिक जटाधारे वैष्णवनको कहैहैं अथवा सनकादिक कहे जिनकी पांच वर्षकी अवस्था बनीरहैहै ऐसेब्रह्माकेपुत्र तिनहूको या मजाहोयतोकबीर जी कहै हैं कि संन्यासिनके साथमें सुन्दारीका सोहैहै ? नहीं सोहैहै कबहूं दाग लगावतईहै जैसे कारी हांडी हाथमें लेई तो दाग लागिही जायहै ऐसे जिनके जिनके संगमें स्त्रीरहैहै ते पाखंडिनको दाग लगतै है स्त्रीनते नहीं बचैहैं। नामके तोसंन्यासी बैरागीहैं अखाड़ा गृहस्थी बांधेहैं तहां स्त्री आवई चाहैं सो दाग लगावई चाहैं अथवा ऐसे पाखंडीहैं ते माया रूपई ह्वैरहेहैं तेई मायारूपी सुन्दरी कहे स्त्रीहैं तिनको संग न करै औ जो संग करै तौ दाग लगवई करै सो जीव ते पाखंडिनको संग न करै तामेंप्रमाण ॥ (पुंसांजटाधरणमोजवतां वृथैव मेधाविनामखिलशौचनिराकृतानाम् । तोयप्रदानपितृपिण्डबहिःकृतानां संभाषणादपिनराःनरकंप्रयांति) ॥ इतिविष्णुपुराणे ॥ ९ ॥

इति उनहत्तरवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ सत्तरवीं रमैनी ।

चौपाई ।

बोलानाकासों बोलियेभाई । बोलतही सबतत्त्वनशाई ॥ १ ॥
बोलतबोलत बाढु बिकारा । सोबोलिय जोपरैबिचारा ॥ २ ॥
मिलैजोसंतबचनदुइकहिये । मिलैअसंत मौनह्वै रहिये ॥ ३ ॥
पंडितसों बोलियहितकारी । मूरुखसों रहिये झखमारी ॥ ४ ॥
कह कबीर ई अधघट बोलै । पूरा होय बिचार लैबोलै ॥ ५ ॥

बोलाना कासोंबोलियेभाई । बोलतही सबतत्त्वनशाई॥ १॥
बोलतबोलतबाढु विकारा सोबोलियजो परैबिचारा ॥ २ ॥

बैरागिनकी संन्यासिनकी दशा जैसी ह्वैरही है सो पूर्बकहिआये सो ऐसे पाखँडी संशारमें ह्वै रहेहैं बोलानाकासों बोलिये बोलतहीमें सब तत्त्व नशाइ जाइ है। तत्वकहावैहै यथार्थ सो साहब के जे नामरूप लीला धाम यथार्थ हैं ते नशाइ जाइहै कहे भूलिजाइहैं ॥ १ ॥ बोलत बोलत बिकारई बाढ़है ताते सो बात बोलि-ये जेहिते साहब के नामादिकन को बिचार ठीक परिजाइ कौनी तरहते सांच बिचार ठीक परै सो कहै हैं ॥ २ ॥

मिलैजोसंतबचनदुइकहिये । मिलैअसंतमौनह्वैरहिये ॥३॥
पण्डितसोंबोलियहितकारी । मूरुखसोंरहियेझखमारी॥४॥

जो संत मिलैतो द्वैबचन कहबऊ करिये द्वैबचन कह्योताको भाव यहहै कि थोरई आपने प्रयोजन मात्र बोलिये औ सत्संग करिये काहेते कि उनके सत्संग किये बिचार बाढ़है औ असंत मिलै तो मौन ह्वै रहिये बोलिये न काहेते कि उनके संगते अज्ञान बाढ़ है ॥ ३ ॥ तेहिते पंडितसों बोलिबो हितकारीहै काहेते कि पंडित जेहैं ते सारासारको विचार करिकै सार पदार्थ जे साहबहै तिनको ठीक करिकै असार जोहै धोखा ब्रह्म औ माया ताको छोड़ि दियेहै वे साहबको बतावैगे औ मूरुख सों बोलिबो झकमारीहै काहेते कि जो मूरुख सों बोलै तौ अपने स्मरणकी हानिहोइ है वह तो समुझायेते समुझैगो नहीं तबआपही झक-मारि कै रहिजाइगो पीछे क्रोध होइगो अरु मूरुख नहीं समुझैहै तामेंप्रमाण गोसांई जीको॥ सोरठा ॥ "फलैनफूलैबेत, यदपिसुधाबरषैजलद॥ मूरुखहृदयन-चेत, जोगुरुमिलैंबिरंचिसम" ॥ १ ॥ पानीकोपान भीजै तो बेधैं नहीं । त्यों मूरु-खको ज्ञान बूझावै तौ सूझैनहीं ॥ ४ ॥

कहकबीरई अधवट डोलै । पूराहोय बिचार लैबोलै ॥ ५ ॥

श्रीकबीरजी कहैहैं कि जे सत्संगऊ करै हैं औ मूरुखहू सों बोलै हैं शास्त्रार्थ करै हैं औ और और मतको सिद्धांतको जानो चाहैहैं कि हमारै मत ठीकहै कि औरऊमतठीकहै परमपुरुष श्रीरामचन्द्र सबते परे हैं यह सिद्धांतको निश्चय नहीं है

ते अधघटजैहैं और और मतवारे इनकेसमुझाये नहीं समुझै हैं। औ असंत संगकरिकै बिचारकी हानिहोइहै। कहाहानिहोइहै? कि औरऊको बिचारमन पर न लागै है अपने मतमें भ्रमहोन लगैहै आपनो ठीकनहीं वह ठीकहै जैसे आधी गगरी जलसे भरीहोइ तौ वाकोजल डोलैहै ऐसे साहबमें उनको ज्ञानतो पूरो नहीं ताते डोलैहै औ जो पूरा सो बीचलैकै बोलैहै औरे मश्न सुनिकै वाकोबिचार लैलियो कहे समझि लियो कि यह बोलिबो अधिकारी है हमारो कह्यो समुझैगो तब बोलैहै जैसे भरी गगरी को जल नहीं डोलै है और जल वामें नहीं अमाय है ऐसे वे तौ साहबके ज्ञान म पूर हैं सो उनको ज्ञान डोलै नहीं है अरु और मतनको सिद्धांतके जे ज्ञान हैं ते उनके अंतःकरणमें नहीं समायहैं ॥ ९ ॥

इतिसत्तरवींरमैनी समाप्ता।

अथ इकहत्तरवीं रमैनी।

चौपाई।

सोग वधावासम करिमाना। ताकी वातइन्द्रनहिंजाना॥१॥
जटातोरि पहिरावै सेली। योग युक्तिकै गर्भ दुहेली ॥ २ ॥
आसनउड़ाये कौन वड़ाई। जैसे काग चील्ह मड़राई॥३॥
जैसी भिस्त तैसि है नारी। राजपाट सब गनै उजारी ॥४॥
जैसे नरक तसचंदन माना। जसवाउर तसरहैसयाना ॥५॥
लपसी लौंग गनै यकसारा। खांड़ै परिहरि फांकै छारा॥६॥

साखी ॥ यह विचार ते वाहि गयो, गयो बुद्धि बल चित्त॥
दुइ मिलि एकै है रह्यो, काहि बताऊं हित्त ॥ ७ ॥

सोगवधावा समकरिमाना। ताकीबात इंद्रनहिंजाना ॥१॥
जटातोरि पहिरावै सेली। योगयुक्तिकै गर्भ दुहेली॥ २॥

आसन उड़ाये कौन बड़ाई । जैसे कागचीलहमड़राई॥३॥
जैसीभिस्ति तैसि है नारी । राजपाटसबगनै उजारी ॥४॥

औरै पदको अर्थ स्पष्ट है १।२।३ । अब फिरि साहब के जनैयनको कहैहैं कि भिस्तिकहे स्वर्गको मानैहै तैसेनारीकहे दोजख को मानैहैं अरबीकी किताबनमें भिस्तिको जिन्नत औ दोजखको नारी अर्थकै सम्बन्धते बहुत जगह कह्योहै अथवा नारकहे आगि सोजामें होय ताको नारीकहैहैं अर्थात् नरक और भिस्ति पाठहोय तोजैसे भिस्तिकहे देवालको मानैहैं तैसे नारीको मानैहैं और राजपाट जोहै जगत ताको उजारई गनैहैं कि संसार हई नहींहै चित अचितरूप साहबईके हैं नरक स्वर्गादिक तामें प्रमाण ॥ "नरक स्वर्ग अपबर्ग समाना । जहँ तहँ देखि धरे धनु बाना" ॥ ४ ॥

जैसे नरकतसचंदनमाना । जसबाउर तसरहैसयाना ॥५॥
लपसीलौंगगनैयकसारा । खांड़ै परिहरिफांकैछारा ॥ ६ ॥

जैसे नरककहे बिष्ठाको तैसे चन्दनको मानैहैं औ हैंतो सयान कहे साहब को जानैहैं परन्तु रहतबहुत बाउरही के तरहहैं ॥५॥ औ जे साहबको नहीं जानैहैं आपहीको ब्रह्म मानैहैं तिनकोकहैहैं लपसी लौंगको एकई मानैहैं खांड़ छोड़िकै छारको फांकैहैं अर्थात् ताहूको एकही गनैहैं सर्बत्र एकही ब्रह्म मानैहैं जो कहो समान दृष्टि करतईहैं साहबके गैर जनैयन कहे जाननवारे हैं ये आपहीको ब्रह्म मानैहैं औ खांड़ परिहरिकै छार फांकैहैं ताको भाव यहहै खांड़ साहबजे मिठाई ताके देनेवारे तिनको छांड़ि के छारफांकै हैं जामें सारकछुनहीं है अहंब्रह्मास्मि ज्ञान करैहैं ॥ ६ ॥

साखी ॥ यहिबिचारते बहिगयो, गयीबुद्धिबलचित्त ॥
दुइमिलि एकै ह्वै रह्यो, मैं काहिबताऊंहित्त ॥ ७ ॥

श्रीकबीरजी कहैहै बिचारतबुद्धिको बलजोहै निश्चयकरिकै अहंब्रह्म मानि सो येहू जातरह्यो औ चित्तजोहै सोऊ जातरह्यो मनोनाश बासना क्षय ह्वैगई कछु बासना न रहिगई दुइ जेहैंब्रह्म औ जीव ते मिलिकै एकही ह्वै रहे जैसे

जळ मिलिकै एकै ह्वै जायहै। हितुवा वहकहावै है। जो रक्षा करै ये तो दूनों एकई ह्वै रहे ब्रह्म में लीनहोइ पुनि जब सृष्टिसमय भई तब माया धरिलै आवै है तब तो दूसरो यह मानतै नहीं है मैं काको हितुवां बताऊं जो मायाते रक्षा करिलेइ औ जोसाहब हितुवामानै रक्षकमानै तौ साहब याको हंसस्वरूप दैकै आपनें पास बोलाइलेइ इहांमायाकीगति नहींहै ता पुनिधरिकै जीवको संसारी कैसे करै है?॥७॥

इति इकहत्तरवीं रमैनी समाप्ता।

अथ बहत्तरवीं रमैनी।

चौपाई।

नारि एक संसारै आई। माय न वाके बाप न जाई॥ १॥
गोड़ न मूड़ न प्राणअधारा। तामें भरमि रहा संसारा॥२॥
दिना सातलौं वाकी सही। बुधअधबुधअचरजयककही॥३॥
वाहिकिबन्दनकरसबकोई।बुधअधबुधअचरजबड़होई॥४॥

एक नारि जो यह मायाहै सो संसार में आवतभई न वाके महतारी है औ न वह बापते उत्पन्नहै अर्थात् अनादिहै ॥ १ ॥ अरु न वाके गोड़हैं न मूड़ है न प्राणहै न आधार है अर्थात् निराकारहै भर्मइहै ताहीमें संसार भरमिरह्यो है॥ २॥ औ सातो जे बारहैं दिन तिनमें वही मायाकी सहीहै अर्थात् कालमें वही अमिसीहै औ सातोंबार वोई फिरि फिरि आवैहैं वही मायाको चारोंओर बिस्तारहै बुधजोहै पण्डित निर्गुणवारे जे सारासारकेबिचारकरिकै आपहीको ब्रह्ममानेहैं औ अधबुधजेहैं आधेपण्डित सगुण उपासनावारे सो ये दूनोंमें आश्चर्य्य जोहै माया ताको एक कहैहैं दूनोंमें यह माया बरोबारि व्याप्तहै ॥ ३ ॥ श्रीकबीरजी कहैहैं कि यह बड़ो आश्चर्य्य है तौ कछुनहीं है औ वही मायाकी बन्दना निर्गुणसगुणवारे दोऊकरैहैं जो मन बचनमें आवैहै सोमायाहीहै ॥ ४ ॥

इति बहत्तरवीं रमैनी समाप्ता।

अथ तिहत्तरवीं रमैनी ।

गुरुमुखचौपाई ।

चलीजातिदेखोयकनारी । तरगागरिऊपरपनिहारी ॥ १ ॥
चलीजातिवहबाटैबाटा । सोवनहारकेऊपरखाटा ॥ २ ॥
जाड़नमरैसुपेदीसौरी । खसमनचीन्हैघरणिभैबौरी ॥ ३ ॥
सांझसकारदियालैबारै । खसमछोंड़िसुमिरैलगवारै ॥ ४ ॥
वाहिके सङ्गमें निशिदिनराँची । पिय सों बात कहैनाहिंसाँची
सोवत छाड़िचली पिय अपना।ईदुखअवधौंकहौंक्यहिसना

साखी ॥ अपनीजाँघ उघारिकै, अपनी कही न जाय ॥
की जानै चित आपना, की मेरोजन गाय ॥७॥

चलीजातिदेखीयकनारी । तरगागरिऊपरपनिहारी ॥ १ ॥
चलीजात वहबाटैबाटा । सोवनहार के ऊपर खाटा ॥ २ ॥

सुरतिरूपी जोनारी सोईहै दूतीताकोहम चलीजातदेखाहैहृदयजोगगरी है सो तरेहै औसुरति उठीसाऊपर सुधासरोवर में जल भरनको गई शीशमें पहुंची १॥ वह सुरति जबचलैहै तब षटचक्र बेधिकै राहराह जायहै काहेतेकि नाभीमें मणिपूरक चक्रहै तामें शीशदिये नागिनी बैठीहै सोई षटकहै पलँगहै सो ऊपरहै ताके नीचे सोवनहार जो है आत्मा सोरहैहै तहांते सुरतिउठैहै तहां ज्वाला साथ नागिनी उठावै ताही साथ प्राणजायहै ॥ २ ॥

जाड़नमरैसुपेदी सौरी । खसमनचीन्हैघरणिभैबौरी ॥३॥
सांझसकार दियालैबारै । खसमछोड़ैसुमिरै लगवारै॥४॥

सुपेदी कहे रजाई जोहै यह शरीर सो जाड़नमरै है अर्थात् शीत उष्ण वहीको लगैहै सौरीकहै सुपेदीको सुमिरणकरिकैजाड़नमरैहै अर्थात् जबलग देहा-

भिमानहै तबलग शीतउष्णहैआत्माको नहीं लगैहै साहब कहैहैं। कि वह जोहैं आत्मामेरी घराणि कहे स्त्री अर्थात् जीवरूपा मेरीशक्ति सो मैं जो हौं याको खसमताको नहीं चीन्हैहै त्यहिते बौरीकहे बौरायगई ॥ ३ ॥ साँझ सकार दियालैबारैहै कहे समाधिलगायकै ज्योतिको बारिकै कुंडलिनी उठाइ आत्माको लैजाइकै वही ज्योतिमें मिलाये है औ याको मैं खसमहौं सो मोको छोड़िकै लगवार जोहै धोखा ब्रह्म ताको सुमिरै है ॥ ४ ॥

वहिकेसँगमेंनिशिदिनराँची। पियसोंबातकहैनहिंसाँची ५
सोवतछांड़िचलीपियअपना। ईदुखअवधौंकहवक्यहिसना

सुरतिरूपी नारीजो है दूती ताहीके साथह्वैकै वहीधोखा ब्रह्म में निशिदिन रचिरही है कहे प्रीतिकारिरही है पियजोमैंहौं तासों सांचीबात नहींकहैहै सांची बात कहाहै कि मैं तिहारोहौं यहजो कहै तौ मैं जीवरूपा शक्तिको छोड़ाइलेउँ साहबकी यह प्रतिज्ञा है जो मोको जानै मोकोगोहरावै तौमेंसंसारते छुड़ाइलेउँ तामें प्रमाण॥ "अबहूंलेउँ छुड़ाय काल ते जोवटसुरति सम्हारै" ॥५॥ सो जीवरूपाशक्ति मोको न जान्यो मोको न गोहरायो सोवत रहि गई जागत न भई सोवतमें मोकोछोड़ि स्वप्न देखनवाली संसारीह्वैगई अर्थात मोहरूपी निद्रा जब प्राप्तभई तब संसार में परि कै नाना दुःखपावैहै सो यहदुःख अपनो कासों कहै सांच जो मैं ताको तौ जानै नहीं है अरु और सब स्वप्नते झूठे हैं ॥ ६॥

साखी ॥ अपनीजाँघउघारिकै, अपनी कही न जाइ ॥
कीजानै चितआपना, कीमेरोजनगाइ ॥ ७ ॥

साहब कहै हैं कि यहिभांति मेरी जीवरूपाशक्ति मोकोछोड़ि कै संसारीह्वै गई सो अपनीजंघा जो उघारिहोइ तौ कोई कहां अपनोगिल्ला करै है नहीं करैहै ऐसे मेरी शक्ति यह जीव सो जो और और लगवार जोहैं सो यह दुःख का मोसों कहिजाइहै नहीं कहिजाइहै कि तो मेरो दिल जानैहै याको उद्धार ह्वै जाइ याही चाहौहौं औ कि मेरेजन जेहैं ते मेरो सौशील्य दया वात्सल्यादिक गुणगान करिकै जानै हैं कि साहबमें निर्देह सौशील्यादिक गुणहैं जीवको उद्धार

चाहे हैं और तो अज्ञानी जीव अपनो भूल न जानैंगे याहीजानैंगे कि जोसाहब सबको मालिकहै सब करिबेको समर्थहै ताकी जो इच्छा होती तौ हमसब जीवके बंध ते तामेंप्रमाण॥ "सोपरंतु दुखपावत शिर धुनिधुनिपछिताय। कालहि कर्महि ईश्वरहि मिथ्यादोष लगाय" ॥ ७ ॥

इति तिहत्तरवीं रमैनी समाप्त ।

अथ चौहत्तरवीं रमैनीं ।

चौपाई ।

तहिया गुप्त थूलनाहिं काया।ताके सोग न ताके माया॥१॥
कमल पत्र तरंग यकमाहीं।सङ्गहिरहै लिप्त पै नाहीं ॥२॥
आश ओस अंडन महँ रहइ।अगणित अंड न कोईकहई॥३॥
निराधार आधार लैजानी । रामनाम लैउचरी वानी॥४॥
धर्मकहै सब पानी अहई । जातीके मन वानी रहई॥ ५ ॥
ढोर पतंग सरै घरिआरा।तेहि पानी सब करै अचारा॥६॥
फंद छोड़ि जो बाहर होई । बहुरि पंथनहिं जोहै सोई ॥७॥

साखी ॥ भर्मक बांधल ईजगत, कोइ न किया विचार ॥
हरिकि भक्तिजानेबिना, भवबूड़ि मुवासंसार॥८॥

तहियागुप्त थूलनाहिंकाया । ताकेसोगनताके माया ॥ १ ॥
कमलपत्र तरंगयक माहीं । संगहिरहै लिप्तपै नाहीं ॥ २ ॥
आशओसअंडनमहँरहई । अगणितअंडनकोईकहई ॥ ३ ॥
निराधारआधार लैजानी । रामनाम लैउचरीबानी ॥ ४ ॥

जबजीव भूल्यो है तहिया कहे तब स्थूल शरीर नहीं रह्यो औ गुप्तकहे सूक्ष्म कारण महाकारण येशरीर नहीं रहेहैं औ न तेहिजीवके सोगरह्यो औ न मायारहीहै ॥१॥ जैसेकमल पत्रमेंजल रहैहै पै कमलपत्र म लिप्त नहीं रहै है तैसेयह आत्मामें माया ब्रह्म यद्यपि सब कारण रहै हैं । परन्तु माया ब्रह्ममें आत्मालिप्त न रह्यो ॥ २ ॥ ब्रह्मह्वैबेकी जो आशाहै साईपियासहै सो ओसचाटे कहूं पियास जाइहै ओसके समजोहै ब्रह्मानंद सो जीवरूपजेहैं अंड तिनमें रहैहै अर्थात् कारणरूपते जीवमें बनो रहैहै जब समष्टिजीवरह्योहै तब रहेतौ अगणितहैं अंड परंतु सब मिलि एकई कहावत रह्योहै अगणित कोई नहीं कहत रह्यो ॥ ३ ॥ निराधार जो निराकार ब्रह्महै जामें सबजीव भरेहैं ताको आधारलै जानिये कि साहबके लोक में है अर्थात् साहबके लोकको प्रकाशहै तबतो समष्टिरही याही रामनाम लैकेबाणी उचरीकहे प्रकटभई इहां रामनाम लैके बाणीप्रगटभई ताकोहेतु यहहै कि बाणीमें जगत प्रगटकरिबेकी शक्ति नहीं रही रामनामको जगत् मुख अथ लैकेबाणी उचरीहै पांचोब्रह्म समत जगत् उत्पत्तिकियोहै सोई इहां सिद्धांत करै है ॥ ४ ॥

धर्मकहै सब पानी अहई । जातीके मन बानी रहई ॥ ५ ॥
ढोरपतंगसरै घरिआरा । तेहिपानीसबकरै अचारा ॥ ६ ॥
फन्दछोड़िजो बाहरहोई । बहुरिपन्थ नहिं जोहैसोई ॥ ७ ॥

वेदशास्त्रमें आत्माको धर्म कहै हैं कि आत्माचितहै याते चित धर्म है जैसे जलमें जलमिलै तो एकई होजाइहै ऐसेचिन्मात्र जो ब्रह्महै तामें मिलिकै चित्तजोहै जीव सोएकई ह्वैजाय काहेते कि दुहुनको चितधर्म एकई है औ जातीकहे सब जाति जेजीवहैं ते आपने स्वस्वरूपको चीन्हैं हैं कि मैं साहबको अंशहौं जाति कारिकै वहीहौं कछु स्वरूप करके नहींहौं भेद बनोई है वह सर्वज्ञहै मैं अल्पज्ञहौं वह बिभुहै मैं अणुहौं वहस्वतंत्र है मैं परतंत्र हौं यह जो कहैहैं कि आत्मा ब्रह्मई है सोतौ बाणीको बिस्तारहै सामान्यधर्मलैकै कहैहैं ॥ ५ ॥ ढोर पतंग घरिआर आदिक जामें सरै हैं ताही जलमें सब आचार करै हैं अर्थात् जौनी-

बाणी में सब मरि मरि समाइ है और पुनि वहीते उत्पत्ति होइहै औ जौन सबजीवको फंदायेहै तौनीही बाणीमें कहे सब आचारकरैहैं अथवा वही बाणीको आचरणकरै है आपनेको ब्रह्ममानैहै काहूको आचार ठीक नहीं है ॥ ६ ॥ यह बाणीके फंदते बाहरह्वैके परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनमें जो लागै तो पुनि जगत्के पन्थको न जैहै अर्थात् फिरि न जगत्में आवै ॥ ७ ॥

साखी ॥ भर्मकबांधलईजगत, कोइनाहिंकियाबिचार ॥
हरिकिभक्तिजानेबिना, भवबूड़िमुवासंसार ॥८॥

याहि भांति भर्म जोमाया सबलित ब्रह्म त्यहिकारिकैबंध्यो जो यह संसारहै ताको कोई नहीं बिचार कियो हरि कहे सबके कलेश हरनहारे वेद तात्पर्य्यार्थ जेश्रीरामचन्द्रहैं तिनकी भक्ति के बिनाजाने भर्मके समुद्रमें संसार बूड़ि मुवा कहे संसारीजीव बूड़ि मुयो ॥ ८ ॥

इति चौंहत्तरवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ पचहत्तरवीं रमैनी ।

चौपाई ।

तेहिसाहबके लागोसाथा । दुइ दुखमेटिकै होहुसनाथा ॥ १ ॥
दशरथकुलअवतारिनहिंआया । नहिंलंकाकेरायसताया ॥ २ ॥
नहिं देवकिक गर्भहिआया । नहींयशोदा गोद खेलाया ॥ ३ ॥
पृथ्वीरमनदमननाहिंकारिया । पैठिपतालनहींबलिछलिया ॥ ४ ॥
नहिंबलिरायसोमांड़ीरारी । नाहिंहिरणाकुशवधलपछारी ॥ ५ ॥
बराहरूपधरणीनहिंधरिया । क्षत्रीमारि निक्षत्रनकरिया ॥ ६ ॥
नाहिंगोवर्द्धनकरतेधरिया । नहींग्वालसँगबनबनफिरिया ॥ ७ ॥
गण्डकशालग्रामनशीला । मत्स्यकच्छह्वैनहिंजलहीला ॥ ८ ॥
द्वारावती शरीर न छांड़ा । लै जगनाथ पिंड नहिं गाड़ा ॥ ९ ॥

साखी ॥ कहहिं कबीर पुकारिकै, वा पन्थे मतभूल ॥
जेहिराखे अनुमानकरि, सो थूलनहीं स्थूल॥१०॥

तेहिसाहबकेलागोसाथा । दुइदुखमेटिकैहोहुसनाथा ॥ १ ॥

जिनको पूर्व कहि आयेहैं ते हरि कहे रक्षक मन वचनके परे परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनके साथमें लागो दूनों जे दुःख हैं निर्गुण और सगुण तिनका मेटिकै सनाथ होउकहे नाथ जे साहबहैं तिनते सहित वह साहब कैसोहै कि धोखाब्रह्महै नहीं है औ कौन्यो अवतारमें नहीं है अर्थात् निर्गुण सगुणके परे हित वह साहब कैसो है कि धोखाब्रह्महै नहीं है औ कौन्यो अवतार में नहीं है अर्थात् निर्गुण सगुणके परे है कबहूं जब कौन्योकल्प में बाणनके युद्धकी इच्छा होइहै तब आपही प्रकट ह्वैकै प्रतापी नामको रावणहोइहै तासों बाणनको युद्ध करैहै औ फिर शरीर सहित को चले जाइहै औ बहुधा जे अवतार होइहैं ते नारायणै अवतार लेइहैं ॥ १ ॥

दशरथकुलअवतारिनहिंआया। नहिंलङ्काकेरायसताया॥२॥
नहिंदेवकिकेगर्भहिआया । नहींयशोदागोदखेलाया ॥ ३ ॥
पृथ्वीरमनदमननहिंकरिया।पैठिपतालनहींबलिछलिया ४

श्रीकबीर जी कहे हैं कि, वे श्रीरामचन्द्र कौन्यो अवतार में नहीं हैं दशरथ के इहां अवतार नहीं लियो दशरथ के इहां अवतारलै नारायणै रावणको मारे हैं ॥ २ ॥ अरु वे साहब देवकी के गर्भ में नहीं आयो अरु वाको यशोदा गोदमें नहीं खेलायो ॥ ३ ॥ अरु वे साहब पृथ्वी रमण ह्वै कै म्लेच्छनको दमन अर्थात् बामन रूप नहीं धर्यो ॥ ४ ॥

नहिंबलिरायसोंमाड़ीरारी।नहिंहिरणाकुशबधलपछारी ५॥
बराहरूपधरणीनहिंधरिया । क्षत्रीमारिनिक्षत्रनकरिया॥६॥
नहिंगोवर्द्धनकरगहिधरिया।नहींग्वालसँगबनबनफिरिया ७

अरु वे साहब बलिरायसों रारि नहींमांड्यो कहे मोहनीअवतारलै देवतनको अमृत पिआय दैत्यनको बारुणीपिआय बलिसों युद्धकरि दैत्यनको विष्णुरूप ह्वै

नहीं मार्‌यो औ हिरण्यकश्यप को पछारिकै नहीं बाध्यो कहेनहीं बध्यो अर्थात् नृसिंह रूप नहीं धर्‌यो ॥ ५ ॥ अरु वे साहब बाराहरूप धरिकै डाढ़में धरणी नहींधर्‌यो औ क्षत्रिनको मारिकै निक्षत्र नहीं कियो अर्थात परशुरामको अवतार नहीं लियो ॥ ६ ॥ अरु वे साहब करते गोवर्द्धनको नहीं धर्‌यो अर्थात गोविंदरूप नहीं धर्‌यो औ न ग्वालके सङ्ग बन बनमें फिर्‌यो है याते हलधर रूपनहीं धर्‌यो ॥ ७ ॥

गंडकशालग्रामनशीला । मत्स्यकच्छह्वैनहिंजलहीला ॥ ८ ॥
द्वारावतीशरीरनछाड़ा । लैजगन्नाथपिण्डनहिंगाड़ा ॥ ९ ॥

अरु वे साहब गण्डक म शालग्राम का शिला नहीं भये औ न मत्स्य कच्छ ह्वैके जलमें परे हैं ॥ ८ ॥ अरु वे साहब द्वारावती में शरीर नहींछोड़ोहै अर्थात कालस्वरूप नहीं धारण कियो जौनजौन फिरि द्वारावताम छोड्यो है औ जगन्नाथ के उदर म ब्रह्म जो इधा में तेजराख्यो है सो वे साहब को तेज नहीं है यहि तरहते सगुण जे नारायण हैं औ सब अवतार हैं ते वे नहीं हैं ॥ ९ ॥

साखी ॥ कहँहिंकबीर पुकारिकै, वा पंथेमति भूल ॥
ज्यहिराखे अनुमानकरि, सो थूलनहींअस्थूल ॥ १० ॥

श्रीकबीरजी पुकारिकै कहै हैं कि, वा पंथेमतिभूलकहे न जाउ ज्यहि राखे अनुमानकरि कहे अनुमानकरि राख्यो है ब्रह्मको सोऊ वे साहब नहीं हैं औ स्थूलनहीं स्थूलकहे न थूलहोइ सो स्थूल कहावै अर्थात् निराकार नहीं है ताते सगुण निर्गुण साकार निकारके परे श्रीरामचन्द्र हैं यह बतायो दशरथके इहां नारायण अवतारलेइ हैं तिनको रामनाम होइ है तिनहीं रामरूपते सगुण निर्गुणके परे हैं ॥ १० ॥

इति पचहत्तरवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ छिहत्तरवीं रमैनी।

चौपाई।

मायामोह कठिनसंसारा। यहैबिचार न काहु विचारा॥१॥
मायामोह कठिनहै फंदा। होय विवेकी सो जन वंदा॥२॥
रामनाम लै बेराधारा। सो तैं लै संसारहि पारा॥३॥
साखी॥ रामनाम अति दुर्लभै अवरे से नहिंकाम॥
आदि अंत औ युगयुगै रामहिंते संग्राम॥४॥

मायामोह कठिनसंसारा। यहै बिचारनकाहुविचारा॥१॥

मायामोह रूपते संसारको देखै है कहे नानापदार्थ भिन्नदेखै है याहीतें संसार कठिन है यामें व्यङ्ग यह है कि, जो संसारकोभगवतचिदचिद् विग्रह-रूप करिके देखै तो संसार उतारिजायबे को सरलै है सो यह बिचार कोई न विचारय॥१॥

मायामोह कठिनहै फंदा। होय विवेकी सोजनबंदा॥२॥

अरु कह संसारमें मायामोहरूप कठिन फन्दा है जो संसारमें सब भिन्न भिन्न पदार्थ देखै है तौने संसार कोई भगवतचिदचिद विग्रहरूप देखै औ बिवेकी होइ सोई जन साहबको बन्दा है॥२॥

राम नामलै बेरा धारा। सो तैं लै संसारहि पारा॥३॥

औ रामनाम जो है बेरा ताको आधारलैकै जो कोई साहबको जान्यो है ताको उबार ह्वैगयो है सो तैंहूं रामनामजोहै बेरा ताको आधारले कहे रामनाममें आरूढ़हो साहबको जानु तौ तैं संसार समुद्रको पार ह्वैजाय॥३॥

साखी॥ रामनाम अति दुर्लभै, अवरेसे नाहिं काम॥
आदि अंत औ युग युगै, रामहिंते संग्राम॥४॥

श्रीकबीरजी कहै हैं कि यह रामनाम अतिदुलभहै मोकोऔरे से काम नहीं

है आदि अन्तमें औ युगयुगमें मोसों रामैते संग्राम कहाहै कि शास्त्रार्थ करिकै रामनाम में जो जगतमुख अर्थहै ताकोखण्डन करिकै अतिदुर्लभ जो साहब मुख अर्थ ताकोग्रहणकरौंहौं अर्थात् जबजगत्की उत्पत्ति नहीं भईहै तब औ युगयुगन में कहे मध्यमें अन्तम कहे जब मुक्तह्वैगयो तबहूं रामनामहीते संग्रामकियो है अर्थात् रामनामको बिचार करत रहौहौं ॥ ४ ॥

इति छिहत्तरवीं रमैनी समाप्ता।

अथ सतहत्तरवीं रमैनी।

चौपाई।

एकैकाल सकल संसारा। एकै नामहै जगत पियारा ॥१॥
तियापुरुषकछुकथो न जाई। सर्वरूप जग रहा समाई॥२॥
रूपअरूपजाय नहिंबोली।हलुकागरुआजाय न तोली॥३॥
भूखनतृषाधूप नहिंछाहीं। दुखसुखरहित रहैत्यहिमाहीं॥४॥
साखी॥ अपरम परम रूपमगुरंगी, नहिंत्यहि संख्याआहि॥
कहहिं कबीर पुकारिकै, अद्भुत कहिये ताहि ॥५॥

एकै काल सकल संसारा।एकै नामहै जगतपियारा ॥ १ ॥

एक जोहै लोकप्रकाश ब्रह्म ताको अनुभव करिकै जोब्राह्मण मानिलेइहै सोई माया सबलित ह्वैबोहै सोई काल सकल संसारमें है सो जगत् को पियार एक जोहै रामनाम ताको बिनाजाने याही ते जन्ममरण होइहै ॥ १ ॥

तियापुरुषकछुकथौनजाई। सर्वरूप जग रहा समाई ॥२॥
रूपअरूपजायनहिंबोली।हलुकागरुआजायनतोली ॥३॥
भूखनतृषाधूपनहिंछाहीं। दुखसुखरहितरहैत्यहिमाहीं ॥४॥

वह माया सबलित ब्रह्मको स्त्री न कहिसकै न पुरुषकहिसकै सर्वरूप ह्वैकै संसार में समाइ रह्यो है॥२॥ वाको न रूप कहिसकै औ न वह हलका गरुआ

तौलि जाइहै कि हलुकै गरूहै अर्थात् अहंब्रह्म मानिबो तो धोखाहै जो कछु-होइ तोकहिजाइ औतोलि जाइ ॥३॥ जौनेलोकमें न भूखह न तृषाहै न धूपहै न छाहीं है न दुःखहै न सुखहै तौने साहबके लोकमें प्रकाशरूप ब्रह्मरहैहै॥४॥

साखी ॥ अपरमपरस्वरूपमगुरंगी, नहिंतेहिसंख्याआहि ॥
कहहिंकबीर पुकारिकै, अद्भुत कहिये ताहि ॥५॥

वह साहबको लोक परमरूपहै ताको प्रकाश जो है वह ब्रह्म सो परमपुरुष है कहे परम नहीं है तौनेको आपनेहीको मानिबो जो है कि वह ब्रह्महमहीं हैं सो धोखाहै तौनेके मगमरगे जीवहैं तिनकी संख्या नहीं है अर्थात् वही प्रका-शमें भरेरहे जे समष्टि जीवह ते व्याष्ट ह्वगये हैं तिनकी संख्या नहीं है सो कबीर जी पुकारिकै कहै हैं कि आपही कल्पना करिकै वह प्रकाश रूप ब्रह्म कोमान्यो कि वह ब्रह्महैं हौं सो वह तो लोकप्रकाशहै हे जीव! वहप्रकाशब्रह्म नहीं ह्वसकैहै यही धोखाम जीव बूड़ो जाइ है यह बड़ो आश्चर्य हैं औ जोयह पाठहोइ ॥ अपरमपारे परमगुरु ज्ञानरूप बहुआहि ॥ तौ यह अर्थ है अपरम जोहै प्रकाशरूप ब्रह्म ताहू के पारजोहै परमलोक जाको प्रकाश वह ब्रह्महै ताको परमश्रेष्ठकहेमालिक जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं तिनको न जान्यो वहजो है प्रकाशब्रह्म ताको जोज्ञान कियो कि ब्रह्ममहौं वहै जो है धोखा ब्रह्म तेहिते बहुआहि कहे जीव बहुत ह्वैगये काहेते कि ज्ञानबहुतहै ज्ञानीज्ञान करिकै ब्रह्म मानै हैं औ योगी जेहैं ते ज्योतिरूप में आत्माको मिलाइकै ब्रह्म मानै हैं इत्यादिक नानारूप करिकै ऐक्यमानै हैं औ और सगुण उपासनावारे कोई चतुर्भुज कोई अष्टभुज कोई देवी कोई गणेश कोई सूर्य इत्यादिकनमें ऐक्य-मानै हैं ज्ञानकरिकै तेहिते ज्ञाननाना हैं औ साहब तो मनबचनके परे वह लोक में एकही बनो है ॥ ५ ॥

इति सतहत्तरवीं रमैनी समाप्त ।

अथ अठहत्तरवीं रमैनी।

चौपाई।

मानुष मन्म चूकेजगमाझी। यहितनकेर बहुतहैं साझी॥१॥
तातजननिकहै हमरोवाला।स्वारथलागि कीन्हप्रतिपाला२
कामिनिकहै मोर पिय आही।बाघिनिरूप गरासै चाही॥३॥
पुत्र कलत्र रहैं लवलाये। जंबुक नाईं रह मुँहवाये ॥ ४ ॥
काकगीध दोउ मरण विचारैं। शूकरश्वान दोउ पंथनिहारैं५
धरती कहै मोहिं मिलिजाई । पवन कहै मैं लेब उड़ाई॥६॥
अग्नि कहै मैं ई तन जारों।सो न कहै जो जरत उबारों॥७॥
ज्यहि घर को घरकहै गवांरे। सो वैरी है गले तुह्मारे॥८॥
सो तन तुम आपनकै जानी।विषयस्वरूप भुले अज्ञानी॥९॥

साखी॥ यतने तनके साझिया, जन्मोभरि दुखपाय॥
चेतत नाहीं बावरे, मोर मोर गोहराय॥१०॥

मानुष जन्म चुकेजगमाझी। यहितनकेरबहुतहैसाझी॥१॥
तातजननिकहैहमरोवाला। स्वारथलागिकीन्हप्रतिपाला२
कामिनिकहैमोरपियआही। बाघिनिरूपगरासैचाही॥३॥

हे जीव! तैं मानुष जन्मजगत्के बीच में पायक चूकिगयो साहब को भजन न कियो या तनके साझिया बहुत हैं॥ १॥ औमाता पिता कहै हैं हमारो पुत्रह आपने अर्थ में लगिकै प्रतिपालकरै है॥ २॥ औ कामिनि जो परस्त्री है सो कहै है हमारो बड़ो प्यारो पति है बाघिनिरूप रति समय में गरासिबोई चाहै है अथवा वाके संगते मूड़हू काटो जायहै॥ ३॥

पुत्र कलत्र रहैं लवलाये । जम्बुकनाईं रहमुहबाये ॥ ४ ॥
कागगीधदोउमरणविचारै । शूकरश्वानदोउपंथनिहारै ॥५॥
धरतीकहै मोहिंमिलि जाई । पवन कहै मैंलेव उड़ाई ॥ ६ ॥
अगिनिकहै मैं ई तन जारों । सोनकहै जोजरतउबारों ॥७॥

पुत्र कलत्र जो घरकी स्त्री को लालच लगाये रहै हैं धनलेबे की औ वाको उनकी चिंता म मांससुखान जात है जैसे सियार मांस खाबेको मुंहफारे रहै है तैसे वोऊहैं ॥४॥ औकाग जेहैं गीधजे हैं शूकर जेहैं श्वान जेहैं ते मरनको पंथ तेरो निहारै हैं या बिचारै हैं कि जो मरै तौ हम मांसखायँ॥५॥औधरती कहै है कि मोहीं में मिलिजाइ पवन कहै है कि याकी खाक मैं उड़ाय लैजाउँ॥६॥औ अग्नि चाहै है कि याके तनको जारिडारों सो या बात कोई नहीं कहै है जाते जरत में उबार होइ बचिजाय ॥ ७ ॥

जेहिघरको घरकैहै गवारे । सो वैरी है गले तुह्मारे ॥ ८ ॥
सोतनतुमआपन कै जानी विषयस्वरूपभुलेअज्ञानी ॥९ ॥

साखी । यतने तनके साझिया, जन्मो भरिदुखपाय ॥
चेतत नाहीं बावरे मोर, मोर गोहराय ॥ १० ॥

जेहि घरको शरीरको तू कहै है कि मेरो है सोघरशरीर तेरेगले की बेरीकहे फांसीहै अथवा बैरी है यमके यहां गलाकटावैगें ॥८॥ हे अज्ञानी ! तैनेशरीरको तू आपनो मानिकै विषयनमें परिकैभूलि गयो है ॥९॥ सो यतने जेतने कहिआये ते यहि तनके साझी हैं तिन तेजन्म भरि तैं दुःखपायकै हेबावरे ! कहे मूढ मोरमोर तैं गोहरावै है कि यातनमेरो है अजहूं चेतनहीं करै है कि यातनैमोका फांसेहै ॥ १० ॥

इति अठहत्तरवीं रमैनी समाप्त ।

अथ उन्नासिवीं रमैनी ।

चौपाई ।

बढ़वतबाढ़ि घटावत छोटी । परखतखर परखावतखोटी १
केतिक कहौं कहांलों कही । औरौ कहौं परै जो सही॥२॥
कहे बिनामोहिं रहो न जाई। बेरहि लैलै कूकुर खाई ॥ ३॥
साखी ॥ खाते खाते युगगया, अजहुं न चेतो जाय ॥
कहहिं कबीर पुकारि कै, जीव अचेतै जाय॥ ४॥

बढ़वतबाढ़िघटावतछोटी।परखतखरपरखावतखोटी ॥१॥
केतिककहौं कहांलों कही । औरौ कहौं परै जो सही ॥२॥
कहे बिना मोहिं रहो न जाई । बेरहिलैलै कूकुरखाई ॥३॥

यह माया को प्रपंच जोहै सो बढ़ावत जाइतो बढ़तई जाय है रंकते इंद्रहू ह्वैजाय तऊ चाह बढ़तई जायहै औ जो घटावैलगै तो घटिही जाइहै औ नाना-मतमें लगि मनमुखी बिचारैहै तब तो खर कहे सांचैहै औ जब काहू साधुते परखायो तब झूठहींह्वै जायहै ॥ १ ॥ औमैं केतिको बातकह्यो परन्तु पाथरकै-सो पानी बहि जाइहै बेधै तौ हईनहीं है मैं कहांलों कहों औ औरऊ कहों जो सहीपरै कहे जो तोको सांच जानिपरै ॥२ ॥ हे जीव!तेरे ये दुःखदेखिकै मोको दयाहोइहै ताते बिनाकहे मोसों नहीं रहिजाइहै जौने बेरा रामनाम संसार सागर-के उतरिबे को मैं बताइदेउँहौं तौने बेराको कूकुर जे तामस शास्त्रवारे गुरुवालोग ते खाई जाइहै कहे मेरोकहो तामें नहीं लगन देइहैं औरे औरे मतमें लगाइ देइहैं जो यहपाठ होई "बिरहिनि लैलैकूकुर खाइ" तौ यह अर्थ है कि बिरहिन जेलोगहैं जिनको साहबकी अप्राप्ति है तिनको गुरुवालोग खाइ जाइहैं अथवा बीर जे साहबहैं तिनते हीनजे प्राणी हैं तिनको कूकुर खाइहैं ॥ ३ ॥

साखी ॥ खाते खाते युगगया, अजहुं न चेतो जाय ॥
कहँहिंकबीर पुकारिकै, जीव अचेतै जाय ॥ ४ ॥

सो कबीरजी पुकारिकै कहैहैं कि खातखात केतन्यो युग बीति गये याहीते जन्म मरण याको नहीं छूटैहै अज्ञान नहीं जाइ है सो अबहूं नही चेतकरैहै सो यहजीव अचेतै कहे बिना साहब के चेतकिये अर्थात् बिना साहबके ज्ञाने नरकको चलोजाइहै ॥ ४ ॥

इति उन्नासिवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ असिवीं रमैनी ।

चौपाई ।

बहुतकसाहसकरिजियअपना । सोसाहेबसों भेटनसपना १
खराखोट जिननहिंपरखाया । चहतलाभसोंमूर गमाया २
समुझिनपरै पातरी मोटी ।आछीगाढ़ी सब भो खोटी॥३॥
कहँहिंकबीरकेहिदेहौंखोरी । जबचलिहौ झिनआशातोरी४

बहुतकसाहसकरिजियअपना।सोसाहेबसोंभेटनसपना॥१॥
खराखोटजिननहिंपरखाया। चहतलाभसोंमूरगमाया ॥२॥

हे जीव ! आपही ते तुम ज्ञानयोग वैराग्य तपस्यामें साहसकरिकै बहुतक्लेश सह्यो परन्तु इनते तेहि साहबसों भेट सपनहू नहींहै जौन छड़ावन वारोहै॥१॥ जिनजीव गुरुवा लोगनकेसमुझाये नानामतमें लागि कहूं सांच साधूते खराखोट नहीं परखाये तेजीव चाहत तो मुक्तिको लाभहैं परन्तु जिनसुकर्मनते अंतःकरण शुद्धिद्वारा सांचे साधुको ज्ञान बतायो ठहरै सोऊ सो मूर गमाय दियो ॥ २ ॥

समुझि न परैपातरीमोटी । आछीगाढ़ी सबभो खोटी॥३॥
कहकबीरकेहिदेहौंखोरी । जबचालिहौंझिनआशातोरी॥४॥

सोजिन मूरगमाय दियो तिनको पातरी कहे अरु मोटीकहे बिभुनहीं समुझि परै है काहेते ओछी जामतिहै तामें निश्चयरूप गांठी नहीं परैहै कि यतनोई

विचारहै नेति नेति कहैहै याते सब खोटही ह्वैगयो ॥ ३ ॥ श्रीकबीरजी कहै हैं सांचो जो है साहब रक्षकताको न जान्यो झिनकहे झीन आशा जो है कि हमब्रह्म ह्वै जायँ तौनेको तोरि ब्रह्ममें लीनहोउगे फिरि संसार परोगे तब काकों खोरी देहुगो तुमहीं ब्रह्महौ ॥ ४ ॥

इति असिवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ इक्यासिवीं रमैनी ।

चौपाई ।

देवचरित्र सुनौ रे भाई । सो तो ब्रह्मा धिया नशाई ॥१॥
ऊजेसुनी मँदोदरि तारा।ज्यहिघर जेठ सदा लगवारा॥२॥
सुरपतिजाइअहल्यहिछलिया। सुरगुरुघरणिचंद्रमाहरिया३
कह कवीर हरिके गुणगाया । कुंतीकर्ण कुंवारेहि जाया ४

देवचरित्र सुनौरे भाई । सोतो ब्रह्माधिया नशाई ॥ १ ॥
ऊजेसुनीमँदोदरि तारा। ज्यहिघर जेठसदा लगवारा ॥२॥

बड़बड़े जीव मायामें परिकै भूलिगयेहैं छोटे जीवनको कहा कहियेहे भाइउ! देवचरित्र सुनौ ब्रह्मा अपनी कन्यासंग भूलि गये ॥ १ ॥ ऊजे मन्दोदरी ताराजेहैं तिनके घरमेंजेठही लगवारहोत आयोहै जो कहो सुग्रीव बिभीषणको कहतेहौ तौ तिनके घर न कहते तिनके कहते औ ई लहुरे हैं वेजेठकहे हैं सो ब्रह्माके हवाले कह्यो ब्रह्माके पुत्र आपुसैमें काज करतभये सो पुलस्त्य जेठे हैं ते लहुरे भाईकी कन्याको बिवाहे या मन्दोदरीके घरको हवाल भयो औ ऋक्षराजस्त्री भये तिन्हैं सूर्य औ इन्द्रगहे तिनते सुग्रीव औ बालिभये सो प्रथम सूर्य ग्रहण कीन्हो सो उनकी स्त्री भई औ सूर्यते जेठइन्द्रहैं तेऊपीछे ग्रहणकियो ताराके घरको हवाल भयो सो तारा मन्दोदरीके घर जेठही लगवार होत आयो है जो लहुर पाठहोइ तौ सुग्रीव बिभीषण बने हैं सो यहां नहीं है ॥ २ ॥

सुरपतिजाइअहल्याछलिया। सुरगुरुघरणिचंद्रमाहरिया ३
कहकबीरहरिके गुणगाया। कुंतीकर्णकुवारेहिजाया ॥४॥

सुरपतिअहल्याको गमनकरतभयो औ सुरगुरु जे बृहस्पति हैं तिनकी स्त्रीको चन्द्रमा गमन करतभयो ॥ ३ ॥ औ कुन्ती जो हैं सो कुंवारेहिमां कर्णको उत्पन्न कियो है सो कर्म तो या डौलके हैं जो नीचहू नहीं करै है परन्तु कबीरजी कहै हैं कि हरिके गुण गावतभये ताते इनहूंकी सज्जनहीं में गिनती भई ऐसहुमें हरिरक्षाकैलियो सो हे जीव! तैं केता अपराध कियो ॥ ४ ॥

इति इक्यासिवीं रमैनी समाप्तं।

अथ बयासिवीं रमैनी।

चौपाई।

सुखकवृक्षयकजक्तउपाया। समुझिनपरीविषयकछुमाया १
छौक्षत्री पत्री युग चारी। फल द्वै पापपुण्य अधिकारी २
स्वादअनंतकछुबर्णिनजाहीं। कर चरित्र सो तेही माहीं ३
नटवरसाजसाजिया साजी। सो खेलै सो देखै बाजी ४
मोहा बपुरा युक्ति न देखा। शिवशक्तीविरंचिनहिंपेखा ५

साखी ॥ परदेपरदे चलिगया, समुझि परी नहिं बानि ॥
जो जानै सो बाचिहै, होत सकल की हानि ॥६॥

सुखकवृक्षयकजक्तउपाया। समुझिनपरीविषयकछुमाया १
छौक्षत्रीपत्री युगचारी। फलद्वै पाप पुण्यअधिकारी ॥ २ ॥
स्वादअनन्तकछुबर्णिनजाही। करचरित्रसो तेहीमाही॥३॥

साहबको बिसरायकै सूखा जो बृक्षहै यह संसार माया कहे पावत भयो बिषय बिषरूप माया न समुझिपरी संसारीह्वैगयो ॥ १ ॥ शरीर धारणकै छा उरमिनको

धारण करनेवाला जो जीव क्षत्री सो पत्री कहे पक्षी है जौने वृक्षचारिउ युगमें पक्षीह्वै गयो अथवा क्षयमान जे नवगुण हैं तिनको धारणकीन्हे जो जीव सोई पत्री कहे पक्षी है नवगुण कौन हैं सुखदुःख इच्छा प्रयत्न राग द्वेषधर्माधर्म भावना यहितरहको जीव जो है पक्षी सो पापपुण्य फल ताको खाइबेको चारिउयुग अधिकारीहै ॥ २ ॥ तिन फलनमें बहुतस्वादहै कछु कहो नहीं जायहै तेहिवृक्ष में जीवरूप पक्षी चरित्रकरै है सो आगे कहै हैं ॥ ३ ॥

नटवरसाजसाजिया साजी । सो खेलैसो देखै बाजी ॥४॥
मोहावपुरायुक्तिन देखा । शिवशक्ती बिरंचिनहिंपेखा ॥५॥

नटके बेटा कैसी साज साजि कहे नानारूप धारण करिकै आवैजाय है जो वाजीगर जौने खेलखेलै है तौने देखै है अर्थात् जे ब्रह्ममें लगेते ब्रह्महो देखै हैं जे जीवात्मामे लगेहैं ते जीवात्मैको देखैहैं इत्यादि जो जौने मतमेंहैं सो ताही में लगोहै सांच बताये लरैधावै है काहे ते उनकी वासना अनेक जन्म ते वही है ॥ ४ ॥ गुरुवाकारिकै मोहा जो बपुराजीव है सो साहबके जानिबे की युक्ति न देखत भयो शिवशक्त्यात्मक जगत् पूर्ब कहिआये हैं सो या शिवशक्ति बिरंचि मायारूप या बात न जानतभये ॥ ५ ॥

साखी ॥ परदे परदे चलिगया, समुझि परी नहिंवानि ॥
जो जानै सो बाचि है, होत सकलकी हानि ॥ ६ ॥

परदे परदे कहे बिना साहबके जाने संसारमें जीव चलिगया कहे संसारमें जातरहा बाणी जोहै वेद शास्त्र सो तात्पर्य करिकै साहबको बतावैहै सो जीव-को न समुझिपरचो जो कोई वेदशास्त्रादि में तात्पर्य करिकै परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्रको जानै सोई बाचैहै अपरोक्ष अर्थ जगतमुख जानिकै सबकी हानि होतही जाय है ॥ ६ ॥

इति बयासिवीं रमैनी समाप्त ।

अथ तिरासवीं रमैनी ।

चौपाई ।

क्षत्री करै क्षत्रियाधर्मा । वाके बढ़ै सवाई कर्मा ॥ १ ॥
जिन अवधू गुरुज्ञान लखाया।ताकरमन तहँई लै धाया॥२॥
क्षत्री सो कुटुम्ब सों जूझै । पांचौमेंटि एककरि बूझै ॥३॥
जीवहिमारि जीव प्रतिपालै।देखतजन्म आपनो घालै॥४॥
हालै करै निशाने घाऊ । जूझिपरे तहँ मनमत राऊ ॥५॥
साखी ॥ मनमत मरै न जीवई, जीवही मरण न होइ ॥
शून्य सनेही रामबिन, चले अपनपौ खोइ ॥ ६ ॥

क्षत्री करै क्षत्रिया धर्मा । वाकेबढ़ै सवाई कर्मा ॥ १ ॥
जिनअवधूगुरुज्ञानलखाया । ताकरमनतहँईलैधाया ॥२॥
क्षत्री सो कुटुम्बसों जूझै ।पांचों मेटिकल करिबूझै ॥३॥

जैसे क्षत्रिय क्षत्रियाधर्मकरेहैं तो वाके सवाई कर्मबढ़ेहैं रणमें पैठिकै शत्रुन· को मारिकै शूरतारूप कर्मबढ़ेहैं ऐसेजीव यह क्षत्रिय हैं क्षत्रिय जे साहबहैं तिनकी जातिहै सो संसाररणमें पैठिकैमन माया धोखाज्ञानई शत्रुमारि साहबके मिलनरूप शूरताबढ़ै है ॥ १ ॥ जे अबधूकहे बधू जो माया त्यहिते रहित रामोपासक जेसाधुते गुण जे साहबहैं तिनको ज्ञान जाको लखायो है ताको मनतहँई लय भयो मनोनाश बासना क्षयह्वैगई जब मनोनाश भयो तब धाया कहे हंसरूप में स्थितह्वै साहबके पास को धावत भयो ॥ २ ॥ क्षत्रियसोहै जो कुटुम्बसों जूझै कुटुम्ब याकेकोहै पांचौशरीरतिनको मेटिकै एक जो है हंसस्वरूप त्यहिकरिकै साहबकोबूझै ॥ ३ ॥

जीवहिमारिजीवप्रतिपालै । देखतजन्मआपनोघालै ॥४॥
हालै करै निशाने घाऊ । जूझिपरे तहँ मनमतराऊ ॥ ५॥

जीवहि मारिकै कहे जो औरै औरै को जीव ह्वै रह्योहै आपने को ब्रह्ममानै है

आपनेको औरै औरै देवताके दास मानै है यहनामामिटाइदेइऔ यह जीवका जीव नामामिटाइदेइ औ हंसरूप में स्थितह्वैकै जीवको नाम रामदास धरावै तबहीं यहजीवको मतिपाळ होइहै आपने देखतै जन्म मरणको लैहै कहे छोड़िदेइ है ॥४॥ सो जो कोई या भांति साधन करै सो हाळै निशानेमें घाउकरै अर्थात् मनोनाश बासक्षय हाळै ह्वै जाइहै औ जेमनमतराउह अपने मनमतमें अपनेको राजामानै हैं जूझिकै संसारमें परे अर्थात् कोई आपनेनको ब्रह्ममानै है कोई आत्मैंको माळिकमानैहै ते जैसे मिथ्या वासुदेव अपनेको कृष्णमानि जूझिपरचो ऐसे येऊ मनमाया करिकै मारे जाय हैं ॥ ५ ॥

साखी ॥ मनमतमरैनजीवई, जीवहिमरण न होय ॥
शून्यसनेहीरामविन, चलेअपनपौखोय ॥ ६ ॥

मनमती न मरै है न जियै है काहेते जीवहि मरण न होय जीवको जीवत्वनहीं जाइ है जिअब तो तब कहिये जब साहबको जानिकै साहबके लोकहि में जन्म मरण छूटि जाय मरिबो तब कहिये जब ब्रह्ममें लीनहोय जीवत्व छूटिजाइ जनन मरण न होइ सो शून्य जे हैं वे धोखा तिनके सनेही जे मनमती हैं ते मरै हैं न जिये हैं जीवको तत्त्व नहीं जाइ है जीव सनातनको है तामें प्रमाण ॥ (ममैवांशोजीवलोकेजीवभूतः सनातनः) ॥ ६ ॥

इति तिरासिवीं रमैनी समाप्ता ।

अथ चौरासिवीं रमैनी ।

चौपाई ।

जोजिय अपनेदुखै सँभारू ।सोदुःखव्यापिरहोसंसारू॥ १॥
माया मोह वंध सब लोई । अल्पै लाभ मूलगो खोई॥२॥
मोर तोर में सबै विगूता । जननीउदर गर्भमहँसूता ॥ ३॥
ई बहुरूप खेलै बहु बूता । जनभौंरा असगये बहूता ॥४॥
उपजैखपै योनिफिरि आवै।सुखक लेशसपनेहुंनहिंपावै॥५॥

दुःख सँताप कष्ट बहुपावै । सो न मिला जो जरत बुझावै६
मोर तोर में जर जग सारा।धिग जीवन झूंठो संसारा ॥७॥
झूंठे मोह रहा जगलागी ।इनतेभागि बहुरि पुनिआगी॥८॥
जेहित के राखे सबलोई ।सो सो सयान बाचे नहिं कोई॥९॥
साखी ॥ आपु आपु चैते नहीं, औ कहौतौ रिसिहा होइ ॥
कहकबीरसपनेजगै, निरस्ति अस्तिनाहिं कोइ ॥१०॥

जोजियअपनेदुखैसँभारू । सोदुखब्यापिरहोसंसारू ॥ १॥
मायामोह बंध सबलोई । अल्पै लाभ मूलगो खोई ॥ २॥
मोरतोरमें सबै बिगूता । जननी उदर गभमहँसूता ॥ ३ ॥
ई बहुरूप खेलै बहु बूता । जनभौंराअसगये बहूता ॥ ४॥

हे जीव ! जौन दुःखयह संसारमें व्यापिरह्यो है तौने अपने दुःखकों सँभारु अर्थात तौने दुःखसे निकसु ॥ १ ॥ मायामोहमें सब बँधेहैं सो अल्पतो लाभ है अर्थात् विषय सुखतो थोरही है तिन सबकेमूल संपूर्ण दुःख के मेटनवारे जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं ते खोइजाइ हैं कहे बिसरि जाय हैं ॥ २ ॥ मोर तोर याही में सब जीव बिगूता कहे अरुझि रहै है याहीते जननीके उदरमें सदा सूतत है अर्थात् गर्भवास नहीं मिटै है ॥ ३ ॥ जैसे भौंरा फूलनमें रस लेनको जाइ है संध्या ह्वै गई तब कमल संपुटित ह्वैगयो तब फँसिगयो तैसे ये जीव बहुरूपते बहुत पराक्रम करिकै खेलखेलै हैं कहे विषय रसलेनको जाय ही मायामें फँसिजाय हैं ॥ ४ ॥

उपजैखपैयोनिफिरिआवै।सुखकलेशसपनेहुंनहिंपावै ॥५॥
दुःखसँतापकष्ट बहुपावै। सो न मिला जो जरतबुझावै॥६॥

उपजै है औ खपैकहे मरै है पुनि पुनि योनिमें फिरि आवै है सुखको लेश सपन्यो नहीं पावै है ॥ ५ ॥ दुःख संताप कष्ट बहुतपावै है जो आगीते जरत

बुझावै सो गुरुनहीं मिलै है इहांदुःखसंताप कष्ट तीनबार जो कह्यो तामें कुछ भेद है दुःख वह कहावै है जो काहूहमारे होइहै औ जो रोगादिकन करिकैहोइ है सो संकष्टकहावै है औ जो कोई हानिते होइहै सो संताप कहावै है ॥ ६ ॥

मोरतोरमें जरजग सारा । धिगजीवन झूंठो संसारा ॥७॥
झूंठेमोहरहाजगलागी । इनतेभागि बहुरि पुनिआगी ॥८॥
जेहितकै राखे सबलोई । सो सयान बाचे नहिं कोई ॥९॥

औ तोर मोर करिकै सब संसार जर जाइ हैं यहसंसार साहब को चिद्रूप करिकै नहीं देखै वे यह संसारको संसाररूप करिकै देखै हैं यही झूठो है सो ऐसे झूठे संसारमें जीवनको जीबेको धिक्कार है ॥ ७ ॥ मायाको जो मोहहै सो सब संसारमें लगिरह्यो है सो झूंठो है इनते जो कोई भागिबेऊ कियो तौ फेरि वही झूठे ब्रह्माग्निमें जरै है ॥ ८ ॥ जेजे सबलोई कहें लोगन को हितकै राखै हैं ते सयान काळसे कोई नहीं बचै हैं तू कैसे बचैगो ॥ ९ ॥

साखी ॥ आपुआपु चेतैनहीं, औ कहौतौ रिसिहा होइ ॥
कहकबीरसपनेजगै, निरास्तिअस्तिनाहिंकोइ ॥१०॥

आपु आपुकहे आपने स्वरूपको नहीं चेतै है कि मैं परमपुरुष श्रीरामचन्द्र-केहौं सो मैं जो समुझाऊंहौं तौ रिसहा होइ है सो कबीरजी कहै हैं कि जो-सपने जागै सपन कहा है देहको अभिमानी मनमुखी ह्वै जागे कहे अपने मनते यह बिचारिलेइ कि मैं जाग्यो मैं ब्रह्म ह्वै गयो अथवा आपनेको जान्यो मैंहीं सबको मालिकहौं और कोई दूसरो छोड़ावनवारो नहीं है म अपने क। जान्यो सो छूटिगयो सो कोई साहबको न मान्यो सो निरस्तिकहे नास्तिक है । सो अस्तिकहे आस्तिक न होइहै सो कहा जागैहै नहीं जागै है अर्थात् वह ज्ञानतो धोखाहै संसार समुद्र ते तेरी रक्षाकहा करैगो ताते वहसाहबको समु-झिजाते तेरोसंसार समुद्रते उबार करिदेइ ॥ १० ॥

इति चौरासिवीं रमैनी सम्पूर्णा ।

इति ।
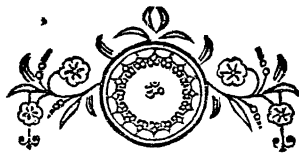
अथ शब्दःप्रारभ्यते ।

पहलाशब्द ॥ १ ॥

संतौ भक्ति सतौगुरु आनी ।
नारीएक पुरुषदुइ जाये बूझोपंडितज्ञानी ॥ १ ॥
पाहनफोरिगंगयक निकरी चहुंदिशि पानीपानी ।
तेहिपानी दुइपर्वतबूड़े दरियालहरि समानी ॥ २ ॥
उड़िमक्खी तरुवरके लागी बोलै एकैवानी ।
वहिमक्खीके मक्खानाहीं गर्भरहा बिनपानी ॥ ३ ॥
नारीसकल पुरुषवहिखायी ताते रहेउ अकेला ।
कहै कवीर जो अबकी समुझै सोईगुरु हमचेला ॥ ४ ॥

सन्तौभक्तिसतोगुरुआनी ।
नारीएकपुरुषदुइजाये बूझोपण्डितज्ञानी ॥ १ ॥

हे सन्तो ! हे जीवौ ! तुमतो शांतरूपहौ । गुरुजे हैं सबते श्रेष्ठ परम पुरुष श्रीरामचन्द्र तिनकी सतोकहे सातो जे भक्ति हैं ते आनी कहे आनई हैं अर्थात सगुण निर्गुणके परे मनबचनके परे है कौन सातभक्ति हैं ते कहे हैं " शांत " प्रथम ताकर द्वैभेद १ सूक्ष्मा २ सामान्या । सो शांतिके सूक्ष्माके सामान्याके जुदे जुदे लक्षण हैं ताते तीनि भक्ती ये हैं । औ १ दास्य २ सख्य ३ वात्सल्य ४ शृङ्गार चारि येमिलाय सातभक्ति भई । सोई जे हैं सा तौ रसहैं ते मन बचन में नहीं आवै हैं जब भासिहोइहैं तबहीं जानिपरैहै कि ऐसे हैं ।

सो या भांति साहबकी जे सातौभक्तिहैं ते गुप्तह्वै गईं काहेते कोऊ न जानत-भयो सो कहै हैं नारी जोहै कारणरूपा माया सोद्वैपुरुषको प्रकटकियो एकजीव दूसरो ईश्वर सो पांच ब्रह्मईश्वर प्रकट भयेहैं सो आदि मंगलमें कहिआयेहैं। जनीप्रादुर्भावे धातुहै या जायोको अर्थ प्रकटकरबोई है औ मायाते जीव ईश्वर प्रकटभये हैं तामें प्रमाण ॥ (मायाख्यायाःकामधेनोर्वत्सोजीवेश्वरावुभाविति जीवेशावाभासेनकरोति मायाचाविद्याचेतिश्रुतेः) ॥ सो हे पण्डित ज्ञानी ! तुम बूझौ तौ सारासारके बिचार करनवारे सांचहौ यहवाणी जो है सोई तुम को भरमाइ दियो है ॥ १ ॥

पाहनफोरिगंगयकनिकरी, चहुंदिशिपानी पानी ।
तेहि पानी दुइपर्वत बूड़े, दरिया लहरि समानी ॥२॥

पाहन कहिये कठिनको सो कठिन मनहै ताको फोरिकै गंगा निकसी नाना पदार्थनमें जो राग होइ है सोई गंगाहै सो वही रागरूपा मायामें परिकै जीव संसारमें रागकरि बूडिगये। औ ईश्वर उत्पत्ति प्रलय करिकै दोनों जीव ईश्वर जे हैं तेई दुइभारी पर्वत हैं ते बूड़िगये। औ दरिया जो धोखा ब्रह्महै तामें रागरूपी जो है गंगा ताकी जो लहरि है सो समाइ जातीभई अर्थात् सब धोखहीमें राग करत भये, सांच वस्तुमें जिनजाना तेई बाचे अथवा वही रागगंगा लहरि संसा-रसागरमें समाइजाती भई । सबजीव ईश्वर संसारमें रागद्वेषकरिकै बूड़िगये । अथवा वहै जो बाणीगंगा सो पाहन जो मनहै तौनेको फोरिकै निकरी है सो चारिउ ओर पानीपानी ह्वै रही है तौने पानी दुइ पर्बत बूडे एक जीव एक ईश्वर औ गङ्गा समुद्रमें समानी हैं इहां बाणीरूप गङ्गाको पर्यवसान दरिया जो ब्रह्महै ताही में होतभयो ॥ २ ॥

उड़ि मक्खी तरुवर को लागी, बोलै एकै बानी ।
वहि मक्खी के मक्खा नाहीं, गर्भ रहा विनपानी ॥ ३ ॥

मक्खीजे हैं जीव ते तरुवर जो है देह तामें उड़िकै आपने आपने बासननते लागतभये अर्थात् प्रलय जबभई तबभई तब वही ब्रह्ममें लीनभये, पुनि जबसृष्टिभई तब पुनि शरीर पावत भये ॥ अथवा मक्खी जेहैं जीव ते संसार

वृक्षमें लागतभये ते सब एकबाणी बोलै हैं कि, "एक ब्रह्मही है दूसरो नहीं है" साहबको नहीं जानै है सो वहीमक्खी जो जीवहै ताकेमक्खा नहीं है कहेप्रथम जीव जो हिरण्यगर्भ समष्टि जीवहै ताके पति नहीं है परन्तु बिना पानी गर्भर-हतईभयो जीवते संसारप्रकटै यह आपहीते नामको जगत् मुख अर्थ करिकै संसारी ह्वैगयो साहब तौ याको उद्धार करिबो रमानाम दियो ताकि मेरेनाम मेरो अर्थ जानिकै मेरेपास आवै संसार न होइ ॥ ३ ॥

नारीसकल पुरुषहि खायी, ताते रही अकेला।
कहै कबीर जौ अबकी समुझै, सोइ गुरु हम चेला ॥ ४ ॥

नारी जो है वहै कारणरूपा माया, सो सबजीव ईश्वर जेपुरुषहैं तिनको खाइ-लियो, कहे आपने पेटमें डारिलियो; अर्थात् उन के काहूके ज्ञान न रहिगयो, आपनोचेरो बनाइ लियो । तेहिते हे संतौ ! हे:जीवो ! तुमतो शुद्धहौ, इनको छोड़िदेउ, तब साहब जे हैं तेई छोड़ाइ लेइंगे । अकेलारहो अकेल कहे जे सबके साहब परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं तिनके ह्वैकैरहौ, जोजीव ईश्वरको सङ्ग करौगे तो तुमहूंको माया धरिलेइगी । श्रीकबीरजी कहै हैं कि जो अबकी समुझै कहे यह मानुष शरीर पाइकै समुझै सोई गुरु है तौने जीवको हमचेला ह्वैजाइँ अर्थात् ताके हम सेवक ह्वै जाइँ । जो जो हमसों पूछै. सो सब वाको बताइ देइँ कछू गोप्य न राखैं । अथवा सो हम पूछिलेइं कि ऐसे भ्रमजालमें परिकै कौनीभांति ते छूटचो । सो कबीरजी तो कबहूं बँधिकैछूटे नहीं हैं तातें कबीर जी कहै हैं कि जो अबकी या समुझि लेइ तौ हम पूछि लेइँ बँधिकै छूटै कैसे सुख होइ ॥ ४ ॥

इति पहिलाशब्दसमाप्त ।

---

१ हम कहिये अहंकार अर्थात् कबीर साहब कहते हैं जो अबकी समुझे अर्थात् जो मानुष शरीर में समुझे वह गुरुहै । और अभिमानी माया में बद्ध चेलाहै ।

अथ दूसरा शब्द ॥ २ ॥

संतौ जागत नींद न कीजै ।
काल न खाय कल्प नाहिं ब्यापै देहजरानाहिं छीजै ॥ १ ॥
उलटी गङ्ग समुद्रहि सोखै शशि औ सूरगरासै ।
नवग्रह मारि रोगियाबैठे जलमें बिंब प्रकासै ॥ २ ॥
बिनुचरणन को दशदिशि धावै बिन लोचन जगसूझै ।
ससा सो उलटि सिंह को ग्रासै ई अचरज कोऊ बूझै ॥ ३ ॥
औंधे घड़ा नहीं जल डूबै सूधेसों घट भरिया ।
जेहिकारण नर भिन्न भिन्न करु गुरुप्रसादते तरिया ॥ ४ ॥
पैठि गुफामें सब जग देखै बाहर कछुव न सूझै ।
उलटाबाण पारथिव लागै शूराहोय सो बूझै ॥ ५ ॥
गायन कहै कबहुं नहिंगावै अनबोला नितगावै ।
नटवर बाजीपेखनी पेखै अनहदहेतु बढ़ावै ॥ ६ ॥
कथनी बदनी निजुकै जोहैं ईसब अकथकहानी ।
धरती उलटि अकाशहि बेधै ई पुरुषहि की बानी ॥ ७ ॥
विना पियाला अमृतअचवै नदी नीरभरि राखै ।
कहै कबीर सो युग युगजीवै राम सुधारस चाखै ॥ ८ ॥

संतो जागत नींद न कीजै ।
काल न खाय कल्प नाहिं ब्यापै देह जरानहिंछीजै ॥ १ ॥

हे संतौ ! हे जीवौ ! तुमतो चैतन्यरूप हौ तुम काहेको सोवौहौ अर्थात् काहे जड़ भ्रममें परेहो मायादिक तो जड़ हैं औ तिहारो अनुभव जो ब्रह्महै सोऊ जड़ है । काहेते कि, तिहारो मन तो जड़है ताहीकी कल्पना ब्रह्महै ।

जो कहो "मनको बिषय ब्रह्म है" यह तो कोई वेदांतमें नहीं है तो जहां भर मन बचनमें आवै तहांभर अज्ञान कल्पितहै। औ "अहंब्रह्मास्मि" (मैं ब्रह्महौं) मानिबो तो मूलाज्ञानमें है। यह वेदांतको सिद्धांतहै जैसे, धूरि धूम बादर घटादिकके आकाशही रहिजायहै। कबीरजी कहैहैं कि, तैसे तीनों अवस्थामें तुमहीं रहिजाउहौ। जहांभर ब्रह्म कहैहैं औ विचारकरैहैं सोमन बचनमें आइ-जाइहै ताते, मनही को कल्पितहै; ताते वोऊजड़है, सो तुम नहींहौ। तुमतौ चैतन्यहौ। तिहारेरूपको कालनहीं खाय है। औ कौनौ कल्पना नहीं व्यापै है अर्थात कौनौ तुम्हारे स्वरूप में कल्पना नहीं उठै है। औ तेरो जोस्वरूपहै याते परमपुरुष श्रीरामचन्द्रके समीप रहैहै। सो रूप जरा जो बुढ़ाई है ताते नहीं छीजै है अर्थात कबहूं बुढाई नहीं होइहै सदा किशोर बनोरहै है॥ १॥

उलटी गंग समुद्रहि सोखै शशि औ सूर गरासै॥
नवग्रहमारि रोगिया वैठे जलमें बिम्ब प्रकासै॥ २॥

रागरूपी जोहै गङ्गा सो संसारमुख ब्रह्ममुख ह्वैरहीहै। सो जो उलटै साह-बमुख होइ साहबमें जीव अनुरागकरै तो समुद्रजोहै संसारसागर औधोखा ब्रह्मसागर ये दुहुनको सोखिलेइ। औ शशि जो है जीवात्मा मानिबो कि एक आत्मही है; दूसरो पदार्थ नहीं है यहज्ञान; औ सूर जो है नाना निरंजनादिक ईश्वरनके दास मानिबेको ज्ञान; तौनेको गरासिलेइहै। औ यहसांचो साहब कोहै जान याको देइहैं संसारवालो जो रोगहै सो पारखहीते जायहै। सो नव-ग्रह जब निबल होइहै तब रोगहोइहै। सो नवग्रह नवद्रव्यहैं। **नवद्रव्यके नाम** १ पृथ्वी २ अप् ३ तेज ४ वायु ५ आकाश ६ काल ७ आत्मादिक ८ दिशा ९ मन तिनकोमारिकै कहे मिथ्या मानिकै औ आपनी आत्माको साहब को दास मानिकबैठे, तब रागरूपी जलमें बिंब जो है शुद्ध साहब को अंश याको स्वरूप, जाको प्रतिबिंब धोखा ब्रह्महै औ संसारहै तौन प्रकाशै कहे अपने स्वस्वरूपको जानै॥ २॥

बिन चरणनको दशादिशि धावै बिन लोचन जग सूझै॥
ससा सो उलटि सिंहको ग्रासै ई अचरज कोउ बूझै॥ ३॥

तब बिना चरणनको कहे संसारमुख चलिबो ब्रह्ममुखचलिबो याको छूटिगयो। अर्थात् येई चरणहैं तिनते हीन ह्वै गयो । तब नवधाभक्तिको छोड़िकै दश कहे दशौ जो साहबकी "अनुरागात्मिका" भक्तिहैं तोनेके दिशाको धावै है। अथवा नवद्वारको छोड़िकै दशौ द्वारको जो है मकरतार साहब के इहांकी डोरि लगी है तहांको धावै है । औ शरीरनको जे प्राकृत नयन हैं ते याके न रहिगये । साहब को दियो जो याको हंसस्वरूप है तौने के नेत्रकरिकै साहब को चिदचिद् रूप यह संसार सो सूझि परन लग्यो कहे बूझिपरनलग्यो । तब अरेमूढ़ ! भ्रमरूपजो है ससा खरहा अहंब्रह्म विचार सो, तैं जो है समर्थ सिंह ताको ग्रासे है । सो वहतो धोखाहै वही भर्म भूलि गयो । सो हेजीवो ! यह अचरज कोऊ बूझौ । औ जौनज्ञान मैं कहि आयों तौनकरि साहबमें लगो । जो कबहूं न होइ नई बात होय सो यह आश्चर्य है । ससा सिंहको कबहूं नहीं खाइहै जीव ब्रह्म कबहूं नहीं होयहै सो तुम कबहूं ब्रह्म न होउगे । वह ब्रह्म तुम्हारई अनुभवहै ताही में तुम भुलाने हौ ॥ ३ ॥

औंधे घड़ा नहीं जल भरिया सूधे सों घट भरिया ॥
जेहि कारण नर भिन्नभिन्न करु गुरुप्रसादते तरिया ॥ ४ ॥

औंधा घड़ा जो जल में डारि दीजै तौ नहीं डूबैहै, जलनहीं भरि आवैहै । सो तैं जो साहबको पीठिदैकै ब्रह्ममें औ संसार में लगै सो तौ धोखाहै। जैसे सूधे घटमें जलभरि आवै है तैसे तैंहूं साहबकी ओर मुखकरु, जब साहब तेरेऊपर प्रसन्नहोइगो तबहीं तैं ज्ञान भक्ति करिकै पूरा होइगो । जाकारण नर भिन्न भिन्न करैहै कहे भिन्न भिन्न पदार्थ मानैहै औ सब पदार्थ साहबको चिदचिद् रूपकरिकै नहीं देखै है। सो यह भ्रम समुद्र गुरु सबते श्रेष्ठ अंधकारको दूरिकरनवारे परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनके प्रसादते तरोगे । अथवा साहबके बतावनवारे अंधकारके दूरि करनवारे जब गुरुमिलैंगे तब तिनके प्रसादते तरोगे ॥ ४ ॥

पैठि गुफामों सब जग देखै बाहर कछुव न सूझै ॥
उलटा बाण पारथिव लागै शूरा होय सो बूझै ॥ ५ ॥

दुर्लभ मनुष्य शरीररूपी जो गुफाहै तौनेमें पैठिकै कहेशरीर पाइकै चिदचित

साहबको रूप सब संसार याको सूझिपरै औसाहबके रूपते बाहिरे औकुछ वस्तु न सूझिपरै । सुरतिरूपी जो बाणहै सो **जगतमुख ब्रह्ममुख ईश्वरमुख जीवात्मामुख** ह्वै रहाहै सो उलटा कहे उलटिकै पार्थिवकहे राजा जे परम-पुरुष श्रीरामचन्द्रहैं तिनमें लगावै । यहबात जो कोई शूरा होइ कहे **ब्रह्मज्ञा-न ईश्वरज्ञान जीवात्मज्ञान** की एक आत्मै सत्यहै तिनको जीति लेइ सो बूझै तबहीं जन्ममरण याको छूटै है ॥ ५ ॥

गायन कहै कबहुं नहिं गावै अनबोला नितगावै ॥
नटवर बाजी पेखनी पेखै अनहद हेतु बढ़ावै ॥ ६ ॥

गायन जोहै बाणी वेदशास्त्र पुराण सो तात्पर्य करिकै अनिर्वचनीय साहबको कहै हैं तौनेको तौ कबहूं नहीं गावैहै और अनबोला जो निराकार धोखा ब्रह्महै जो कबहूं बोलतै नहीं है, सो कैसे पूरपरै । कौनीतरहते अनबोलाको गावै हैं सो आगे कहै हैं । वह जो धोखा ब्रह्मको देखनोहै सो नटवत् बाजी है कहे झूंठै है उहां कछु नहीं देखि परै है जो कहो अनहदको हेतु तो बढ़ावैहै कहे दशौधुनि अनहद की तौ सुनि परै है ॥ ६ ॥

कथनीवदनी निजुकै जोहै ई सब अकथ कहानी ॥
धरती उलटि अकाशहि बेधै ई पुरुषहिकी बानी ॥ ७ ॥

सोई तो सब कथनी बदनीहै । जो बिचारिकै देखौ तौ अनहद आदिदैकै ई सब अकथ कहानी हैं। साहबके जाननवारे पूरेसंतनके कहिबे लायक नहीं है, झूंठहैं कछु इनमें है नहीं । सबमनके अनुभवहैं । पुरुषजेहैं तिनकी यह बानीकहे स्वभावहै । धरती जो जड़मायाहै ताको उलटिदेइहै, वाको मुख मुरकाई देइहै वासों आप फिरि आवैहै । औ आकाश जोब्रह्महै ताको बेधैकहे ब्रह्मके पार जाय है ताम प्रमाण ॥ "सिद्धाब्रह्मसुखेमग्ना दैत्याश्चहरिणाहताः । तज्ज्योतिर्भेदनेश-क्तारसिकाहरिवेदिनः ॥ " औकुपुरुषजे हैं ते संसारमें लगै हैं कि, धोखाब्रह्ममें-लगैहैं उनकी बानीकहे यहै स्वभावहै ॥ ७ ॥

बिना पियाला अमृत अचवै नदी नीर भरि राखै ॥
कहै कबीर सो युगयुग जीवै राम सुधा रस चाखै ॥ ८ ॥

स्थूल सूक्ष्मादिक जे पांचों शरीरहैं तेईपियालाहैं । स्थूलसूक्ष्म कारण करिकै विषयानंद पिये हैं । औ महाकारण कैवल्य ते ब्रह्मानंदपियेहैं । पांचौ शरीर पियाला ते निकसिकै जे पुरुष साहबको दियो जो हंसस्वरूपहै तामें स्थित ह्वैकै साहबको प्रेमरूपी जो अमृतहै ताको अँचवै हैं जाते जन्म मरण न होई। तिन को जगत्के रागरूपी नीरकारिकै भरी जो नदी है जाको आगे वर्णनकरिआयेहैं "नदियानीर नरकभरि आई" सो तिनको राखै कहे छारई हैं अर्थात् झूरहीहैं । अथवा संसारमें जो रागकियेहैं सो नरक भरीहैं ताको निकारिकै रसरूपी भक्ति जो साहबकी नीर ताको भरिराखै । सो कबीरजी कहै हैं कि, सोई युगयुग जीवैहै, कहे वहीको जनन मरण नहीं होय, जो या भांति परमपुरुष जेश्रीराम-चंद्रहैं तिनके प्रेमरूपी सुधारसको चाखैहै ॥ ८ ॥

इति दूसराशब्द समाप्त ।

अथ तीसरा शब्द ॥ ३ ॥

संतौ घरमें झगराभारी ।

रातिदिवस मिली उठिउठि लागैं पांचढोटायकनारी ॥१॥
न्यारोन्यारो भोजन चाहैं पांचौ अधिक सवादी ।
कोइकाहूको हटा न मानै आपुहिआपुमुरादी ॥ २ ॥
दुर्मति केरदोहागिनि मेटै ढोटैचाप चपेरै ।
कहकबीरसोई जन मेरा घर की रारि निबेरै ॥ ३ ॥

सन्तोघरमें झगराभारी ।
रातिदिवसमिलि उठिउठिलागैं पांचढोटायकनारी ॥ १ ॥

आगे या कहिआयेहैं कि बिना पियाला अमृत अचैवेहैं औ जे नहीं अचैवेहैं तिनको कहै हैं । हेसंतौ ! हे जीवौ ! या घर जो शरीरहै तामें भारी झगरा मच्यो है । पांचौ ढोटा जे पांचौ तत्त्वहैं औ नारी जो मायाहै सोउठि उठिलागैहैं कहे झगराकैरहैं । यहै उपाधिराति दिन जीवको लगिरहैहै ॥ १ ॥

न्यारो न्यारो भोजन चाहैं पांचौ अधिक सवादी।
कोउ काहूको हटा न मानै आपुहि आपु मुरादी ॥ २॥

अपने अपने न्यारे न्यारे भोजन चाहे हैं पांचौं बड़े सवादी हैं। आकाश श्रोत्रइन्द्रियप्रधानहै सोशब्द चाहै है। वायु त्वचा इन्द्रिय प्रधान सो स्पर्शको चाहै हैं। तेज चक्षुइंद्रिय प्रधानहै सो रूपको चाहैहै। जल रसनेंद्रिय प्रधानहै सो रसको चाहै है धरती घ्राणेंद्रिय प्रधानहै सो गंधको चाहैहै औ माया जीवहीको ग्रासन चहैहै। कोईकाहूको हटको नहीं मानैहै आपही आप मालिक ह्वैरहेहैं। आपुही आपु आपनी मुरादिकहे वांछापूरकैरहैं ॥ २ ॥

दुर्मतिकेर दोहागिनिमेटै ढोटै चापचपेरै।
कहकबीरसोई जनमेरा घरकीरारिनिबेरै ॥३॥

दुर्मति जेहैं गुरुवालोग (जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको छोंड़ि आत्मही को सत्य मानै हैं औ या कहैहैं कि, सबसुख करिलेउं वहां कछु नहीं है ऐसे जेनास्तिकहैं) तिनकी दोहागिनिकहे नहींग्रहणलायक वाणी तिनको मेटिकै कहे छोड़िकै; ढोटाजेहैं पांचौ तत्त्व तिनको जोहै चाप कहे दबाउब ताको आपै चपेरै कहे दबाइलेइ। अर्थात् वे न दबावन पावैं। आपने आपने विषयनमें मनको खैंचि लैजाइहै तहां मन न जानपावै। सो कबीरजी कहै हैं कि,जोपारि- ख करिकै शरीर जो घर है तौनेमें जो पांचों इन्द्रिनको झगड़ा है ताको निबेरै कहे सब तत्त्व जे पृथ्वी आदिक हैं तिनमें लीन जे पांचों इंद्रिय हैं तिनकी जे बिषय हैं तिनको निबेराकरै कि, भगवत्की अचिद् विग्रहहै। पृथ्वी आदिक तत्त्वरूप करिकै जो देखै है; इन्द्रियरूप करिकै जो देखै औ विषयरूप करिकै जो देखैहै सो न देखै। औ यह मानै कि, मैं जोहौं जीवात्मा तौनेकी एकौ नहींहैं; काहेते कि, मैं चिदचित् विग्रहहौं, ये जड़ विग्रहहैं, इनते भिन्नहौं सो ये जेहैं जड़ ते आत्मैकी चैतन्यता पाइकै आपुसमें लड़ैहैं। सो इनते जब

---

१ दुर्मत अर्थात् दुष्ट बुद्धिवाले पुरुषजिनको परमार्थका तो ज्ञान है ही नहीं परन्तु देखादेखी वेष धारनकर अथवा कुलाभिमानसे गुरु बने बैठे हैं ऐसे जे झूठे गुरुलोग हैं उनको गुरुवाकहते हैं उन्हींको दुर्मत कहते हैं।

आत्मा भिन्नह्वैजाइगो तब सब शरीरै एकौ कार्य करनको समर्थ न होइगो । कैसे, जैसे जीवं इनते अपनेको जुदो मानैगो हंसस्वरूपमें स्थित होइगो सो इनहींको चपाइ लेइगो घरकी रारिनिबारि जायगी । सो इसतरहते जो कोई अपने स्वरूपको जानि घरकी रारिनिबेरै परमपुरुष श्रीरामचन्द्रमें लगै सोई जन मेरो है ॥ ३ ॥

इति तीसराशब्द समाप्त ।

अथ चौथाशब्द ॥ ४ ॥

संतौ देखत जग बौराना ।

साँच कहौं तौ मारन धावैं झूठे जग पतियाना ॥ १ ॥
नेमी देखे धर्मी देखे प्रात करहि असनाना ।
आतम मारि पषाणहिं पूजैं उनमें कछू न ज्ञाना ॥ २ ॥
बहुतक देखे पीर औलिया पढ़ैं किताब कुराना ।
कै मुरीद तदबीर बतावैं उनमें उहै जो ज्ञाना ॥ ३ ॥
आसन मारि डिंभ[1] धरिबैठे मनमें बहुत गुमाना ।
पीतर पाथर पूजन लागे तीरथ गर्व भुलाना ॥ ४ ॥
माला पहिरे टोपी दीन्हे छाप तिलक अनुमाना ।
साखी शब्दै गावत भूले आतम खबरि न जाना ॥ ५ ॥
हिंदू कहै मोहिं राम पियारा तुरुक कहै रहिमाना ।
आपुसमें दोउ लरिलरि मूये मर्म न काहु जाना ॥ ६ ॥
घरघर मंत्रजे देत फिरतहैं महिमाके अभिमाना ।
गुरुवा सहित शिष्य सब बूड़े अंतकाल पछिताना ॥७ ॥

---

१ डिंभ दम्भका अ । भ्रंशहै ।

कहै कवीर सुनो होसंतो ई सब भर्म भुलाना ।
केतिक कहौं कहा नहिं मानै आपहि आप समाना ॥८॥

सन्तो देखत जग बौराना ।
सांच कहौं तौ मारन धावै झूठे जग पतियाना ॥ १ ॥

हे संतो ! यह जगत् देखत देखत बौराई गयो । यह जानै है कि, यह कल्पना मनहीकी है । एकनको दुःखपावत देखै है, एकनको भूतहोतदेखै है, एकनको रोगग्रसित देखै है, एकनको घोड़े हाथी चढ़े देखै है, एकनको राजा होतदेखै है औ एकनको मरतदेखै है । आपहू मरघट ज्ञान कथै है कि, ऐसे ही हमहूं मरिजाइँगे । सो यहै देखत देखतहू भुलाइ जाइहैं । परम परपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको भजन नहीं करै है, जाते संसारते छूटै । जो सांचबताऊं हौं कि, सांच जे परम परपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं, जो चित् अचित्में व्यापक हैं, सब ठौर बने हैं, तिनमें लगौ जाते उबार है तौ मारन धावै है । औ झूठे जे माया ब्रह्म हैं तिनके विस्तारके जे नाना मत हैं तिनमें जो कोई लगावै है तौ तिनको सांच मानिकै पतियात जाय ह ॥ १ ॥

नेमी देखे धर्म्मी देखे प्रात करहिं असनाना ।
आतम मारि पषाणहिं पूजैं उनमें कछू न ज्ञाना ॥ २ ॥

बहुत नेमी धर्मी देखे हैं, बहुत प्रातःस्नान करनवालेनको देखे हैं, स्वर्ग को जाय हैं । औ आत्माको मारिकै कहे भगवान्‌को मंदिर शरीरमें साक्षात सबके हृदयमें भगवान् अंतर्यामी रूपते बसे हैं, तौने शरीरको फोरिकै, मेढ़ा महिषादिकनको मूड़लैकै, पीतरपाथर आदिक जे देवीकी मूर्ति हैं तिनमें चढ़ावै हैं । औ सबके उद्धार ह्वैबेको बतावै हैं, तौ इनमें कौन ज्ञान है ? कछू ज्ञान नहीं है काहेते कि साहबको सर्वत्र नहीं जानै हैं ॥ २ ॥

बहुतक देखे पीर औलिया पढ़ैं किताब कुराना ।
कारि मुरीद तदवीर बतावैं उनमें यहै जो ज्ञाना ॥ ३ ॥

औ बहुते पीर औलियनको देखे किताब कुरानके पढ़नवाले ते जीवनको मुरीद कहे शिष्य करिकै मुरगी बकरीके हलालकरै कि तदबीर बतावैं हैं औ आपौ हलाल करै हैं ॥ ३ ॥

आसनमारि डिंभ धारि बैठे उनमें बहुत गुमाना ।
पीतर पाथर पूजन लागे तीरथ गर्व भुलाना ॥ ४ ॥

औ कोई चौरासी आसन कैकै माण चढ़ायकै डिंभधारि बैठे हैं कि, हमारे बरोबारि कोई सिद्ध नहीं है यही मनमें गुमान करै हैं । यह योगिनको कह्यो । औ कोई पीतरकी मुर्ति कोई पाथरकी मुर्त्तिपूजै हैं औ सर्व भूतमें व्यापक जो भगवान् तिन भूतनको द्रोहकरै हैं ते अज्ञानी हैं साहबको नहीं जानै हैं । तामें प्रमाण ॥ " अहमुच्चा वचैर्द्रव्यैः क्रिययोत्पन्नयानघे ॥ नैवतुष्येऽर्चितोर्च्चायां भूतग्रामावमानिनः ॥ १ ॥ यस्यात्मबुद्धिः कुणपेत्रिधातुके स्वधीः कलत्रादिषु-भौम इज्यधीः ॥ यत्तीर्थबुद्धिः सलिलेनकर्हिचिज्जनेष्वभिज्ञेपुसएवगो खरइतिभा-गवते ॥ " औ कोई तीर्थनमें लागै है । सो इनहीके गर्व में सब भुलाने हैं कि, हम मुक्त ह्वै जायँगे ॥ ४ ॥

माला पहिरे टोपी दीन्हे छाप तिलक अनुमाना ।
साखी शब्दै गावत भूले आतम खबरि न जाना ॥ ५ ॥

अब कबीरपंथिनको नानापंथिनको कहै हैं कि, माला पहिरे हैं टोपी दीन्हे हैं औ नाकतेलैकै अछिद्र ऊर्ध्व तिलक दीन्हे हैं ताहीके अनुसार छाप पाये हैं या कहै हैं हमको गद्दीकी छाप भई है हम महन्त हैं पान पायोहै औ साखी शब्द गावतहैं पै वाको अर्थ भूले हैं साखी शब्दमें जो साहबको रूप बतावैहैं जीवात्माको सो नहीं जानै ॥ ५ ॥

हिंदू कहै मोहिं राम पियारा तुरुक कहे रहिमाना ।
आपसमें दोउ लरि लरि मूये मर्म कोइ नहिं जाना ॥ ६ ॥

सो हिन्दूतो कहैहैं कि, वेद शास्त्रमें रामही पियारा है औ मुसलमान कहैहैं कि, रहिमानही पियाराहै । यहद्विविधा लगायराख्यो है या न जानतभये कि,

एकही हैं । आपसमें लड़िलड़िकै मरिगये मर्म कोई न जानतभये की जो है राम है, वही रहिमान है । साहब एकई है, दूसरो नहीं है सब नाम 'कारको हैं तामें प्रमाण ॥ "सर्वाणिनामानियमाविशंतिइतिश्रुतिः" सो ॥ सब 'रत-वाहीमें घटित होयहैं ॥ ६ ॥

घरघर मंत्र जे देत फिरतहैं महिमाके अभिमाना ।
गुरुवा सहित शिष्य सब बूड़े अन्त काल पछिताना ७॥

घरघर जे मंत्र देतफिरतहैं अपनी महिमाके अभिमानते कि, हम सिद्ध हैं योगी हैं पीरहैं औलिया हैं ऐसेजे गुरुवा हैं । ते यही अभिमानते सबकी रक्षा करनंवारे जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनको भुलाइकै, सब जीवनको और औरं में लगाइ देइहैं औ कहै हैं कि, हम उद्धारकै देइहैं । गुरुवा सहित सब शिष्य बूड़िजाइँगे औ जब यमकेर मोंगरा लगैगो तब पछितायगो कि, हमपरम पुरुष श्रीरामचन्द्रको भजन न कियो जे सबके रक्षक हैं ॥ ७ ॥

कहहि कवीर सुनोहो संतो ई सबभर्म भुलाना ॥
केतिक कहौं कहा नाहिं मानै आपहि आप समाना[1]॥८॥

सो कबीरजी कहै हैं कि, हे संतो तुम सुनो ये सब भर्मईमें भुलान रहै हैं मैं चारौ युगमें केतनौ समुझाऊंहों पै मानै नहीं हैं । यद्यपि माया ब्रह्मकी एती सामर्थ्य नहीं है कि, यह जीवको धरिलैजाय काहेते कि, वह जीवहीको अनु-मानहै । सो यह आपनेनते आप यही भर्ममें समाइगयो है कि, मैं ब्रह्महौं । आप आपहीते यह माया ब्रह्मसों आपस मानलियो है अर्थात् संगति कैलियो है तेहिते संसारी ह्वै गयो ॥ ८ ॥

इति चौथाशब्द समाप्त ।

---

१ इस चरणका पाठ दाना पुरकी पंक्तिमें ऐसा है । "केतिक कहौं कहा नहिं मानै सहजे सहज समाना"

औ वर्ग मुरीद को आपो

अथ पांचवां शब्द ॥ ५ ॥

संतो अचरज यक भो भाई ।
यह कहौं तोको पतिआई ॥ १ ॥
एकै पुरुष एक है नारी ताकर करहु विचारा ।
एकै अंड सकल चौरासी भर्म भुला संसारा ॥ २ ॥
एकै नारी जाल पसारा जग में भया अँदेशा ।
खोजत काहू अंत न पाया ब्रह्मा विष्णु महेशा ॥ ३ ॥
नागफांस लीन्हे घट भीतर मूसि सकल जगखाई ।
ज्ञान खड्ग विन सव जगजूझै पकरि काहु नहिं पाई॥४॥
आपुहि मूल फूल फुलवारी आपुहि चुनिचुनि खाई ।
कहैं कवीर तेई जन उवरेजेहिं गुरु लियो जगाई ॥ ५ ॥

संतो अचरज यक भो भाई। यह कहौं तो को[1] पतिआई १
एकै पुरुष एकहै नारी ताकर करहु विचारा ।
एकै अण्ड सकल चौरासी भर्म भुला संसारा ॥ २ ॥
एकै नारी जाल पसारा जगमें भया अँदेशा ।
खोजत काहू अंत न पाया ब्रह्मा विष्णु महेशा ॥ ३ ॥

हे संतो ! शुद्धजीवो ! भाई एक बड़ो आश्चर्य भयो जो मैं वाको कहौं तौ को पतिआय ॥ १ ॥ एकै पुरुषहै एकै नारीहै कहे वही जीवात्मा पुरुषौ है नारिउ है ताको विचारकरो वा कौनहै ? एकै अंडमा कहे एक ही प्रणवमें उत्पन्न चौरासीलाख योनि तामें परिकै यह जीव संसारके भर्ममें भुलायरह्यो है अथवा एकही अंड कहे ब्रह्मांडहिमें ॥ २ ॥

---

१ कौन ।

यह जीव शरीर धरयो तब एकै नारी जो बाणी सो नानाप्रकार की जो है कल्पना सोई है जाल ताको पसारि देत भई । तब जगमें नाना प्रकारको अँदेशा होत भयो कहे नानाप्रकारके मतन करिकै जगत्के कारणको खोजत-भये परन्तु ब्रह्मा विष्णु महेश हू भी अन्त न पावतभये; थकिकै नेतिनेतित कहि दियो आत्माको विचार न कियो कि कौनकोहै ॥ ३ ॥

नागफाँस लीन्हे घट भीतर मूसि सकल जग खाई ।
ज्ञान खड्ग विन सबजग जूझै पकरि काहु नहिंपाई४॥

सो ये कैसे अन्त पावै नागफांस कहे त्रिगुणकी फांसी लिये घटके भीतर माया बनीरहै है सोई सब संसारको मूसिकै खाई लेइहै । मूसिकै खाइ जो कह्यो सो वेतौ नाना मतनमें परे यहजानै हैं कि, यही सत्यहै परन्तु माया जो है सो परमपुरुषको जानिबो मूसि लियो कहे चोराइलियो । परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनको औ अपने आत्माको जानिबो कि, साहबकोहौं मैं औ मायादिकन को मिथ्या मानिबो यह जो ज्ञानखड्ग है ताके बिना सब जग जूझो जाइहै । वह मायाको कोई पकरि न पायो अर्थात् यथार्थ मायाही कोई न जान्यो, तब साहबको अपनो स्वरूप को जानै ॥ ४ ॥

आपुहि मूल फूल फुलवारी आपुहि चुनि चुनि खाई।
कहहि कबीर तेई जन उवरे ज्यहि गुरु लियो जगाई॥५॥

आपहि वह मायामूल अविद्याहै जगत्के नानापदार्थ करत भई कहे कारण अविद्याभई। औ आपहीफुलवारी कहे कार्य अविद्या ह्वैकै जगत्के नानापदार्थ भई औ आपही कालरूपह्वैके चुनि चुनि खाइहै । सो कबीरजीकहै हैं स्वप्न जो माया तेनिते जगाय साहब को बताइदियो है जाको सद्गुरु तेई जन उबरै हैं ।

१—नाग फांस कहिये वाणीको क्यों कि जैसे नागकी दो जिह्वा होती है वैसे ही वाणी के दो अर्थ होते हैं संसार मुख अर्थ से नरक में पडता है और गुरुमुख अर्थसे मोक्ष पद को प्राप्त होताहै । २ क्या।

अर्थात् जो साहबको जानै हैं औ अपने स्वरूपको जानै हैं कि, मैं साहबकोहौं ताको माया स्वप्नवत्है। अथवा गुरुजे सबते श्रेष्ठ श्रीरामचन्द्रहैं तेई जिनको मोह निशामें सोवत जगाइदियो है अर्थात् हंसरूप दैके अपने पास बोलाइलियो है तेई जन उबरे हैं कहे बचे हैं ॥ ४ ॥

इति पांचवांशब्द समाप्त।

अथ छठाशब्द ॥ ६ ॥

संतो अचरज यक भारी । पुत्र धरल महातारी ॥ १ ॥
पिताके संग हि भई बावरी कन्या रहल कुमारी।
खसमहिं छोंड़ि ससुर सँग गवनी सो किन लेहु बिचारी॥२॥
भाई संग सासुरी गवनी सासु सौतिया दीन्हा।
ननँद भौज परपंच रंच्योहै मोर नाम कहिलीन्हा ॥ ३ ॥
समधीके सँग नाहीं आई सहज भई वरबारी।
कहहि कबीर सुनो हो संतो पुरुष जन्म भो नारी ॥ ४ ॥

संतो अचरज यक भो भारी। पुत्र धरल महतारी ॥ १ ॥
पिताके संगहि भई बावरी कन्या रहल कुमारी।
खसमहिं छोंड़िससुरसँग गवनी सो किन लेहु बिचारी ॥२॥

हे सन्तो! एकबड़ो आश्चर्य भयो पुत्र जो यह जीवहै ताकी महतारी जो मायाहै सो धरतभई ॥ १ ॥ अरु पिता जो ब्रह्म है ताके संग बावरी ह्वै जातभई, कहे जारपुरुष बनावतभई। अर्थात् माया सबलित ब्रह्म भयो औ कन्या जो बुद्धि है सो पतिको निश्चय कहूं न करतभई । बिचारै करत रहिगई। कुँवारिही रहतभई अर्थात् सब मतनमें खोजतभई परन्तु निश्चय न होतभई ॥ पहिले पिता जो ब्रह्महै ताको खसम बनायो, पुनि तौने खसमको छोड़िकै ससुर जो है मन, कहे मनैको अनुभव ब्रह्महै ताके सँग गवनत भई। सो हे

जीवो ! अपनेते काहे नहीं बिचारिलेउ हो कि माया हमारे मन में पैठिकै और औरमें बुद्धि निश्चय करावै है ॥ २ ॥

भाई के संग सासुर आई सासु सौतिया दीन्हा ।
ननँद भौज परपंच रच्योहै मोरनाम कहि लीन्हा ॥ ३ ॥

प्रथम याको भयभई तब या बिचार कियो कि "द्वितीयाद्वै भयं भवति" ॥ तबहीं माया लगी याते भाई भयो । मायाको भय सोई भाई के साथ नाना मतवारे जे गुरुवालोग तिनको जो मन है सोई सासुर है तहां आई औ तिन गुरुवनकी बाणी जोहै सोई सासुहै काहेते ब्रह्मकी उत्पत्ति बाणीहीसे होतीहै सो गुरुवनकी बाणी रूप जो मायाकी सासु ताकी सवति जो दीक्षारूप सो मायाको देतभई। सो मायाते दैवयोग छूटि उजाय परन्तु दीक्षासवतिते नहीं छूटै है । सो मायाकी सवतिदीक्षा काहेतेभई,माया तो ब्रह्मकी स्त्री है सो ताही ब्रह्म को दीक्षाहू लगावै है सो ज्ञान विद्यारूप है सो ब्रह्मके साथही भई, ब्रह्मकी बहिनिभई, मायाकी ननँद कहाई तौन अविद्या ब्रह्मको पति बनायो सो भौजी आप भई सो ये दोऊ भौजी नँनद मिलिकै परपंच रच्योहै अरु जीव कहै है मेरो नाम कह दियो है कि, जीवही सब करै है ॥ ३ ॥

समधीके सँग नाहीं आई सहज भई घरवारी ।
कहै कबीर सुनो हो सन्तो पुरुष जन्मभोनारी ॥ ४ ॥

मायाकी कन्या बुद्धि कहि आये सो बुद्धि कुँवारहीमें नानाजीवनको जारपति बनायो सब जीव साहबके अंशहैं ताते सब जीवनके बाप साहब ठहरे सो मायाके समधी भये । तिनके घरवारी कहे आपही सब जीवनके बिवाहलेत भई अर्थात् बशकर लेत भई । सो कबीरजी कहै हैं कि, हे संतो जीव ! जो पुरुष है सो माया के साथनारी ह्वैगयो ॥ ४ ॥

इति छठाशब्द समाप्त ।

अथ सातवां शब्द ॥ ७ ॥

संतो कहौ तो को पतिआई । झूठा कहत सांच बनिआई १
लौकै रतन अवेध अमौलिक नाहिं गाहक नाहिं सांई ।
चिमिकि चिमिकि चमकै दृग दुहुं दिशि अरब रहा छरिआई
आपहि गुरू कृपा कछु कीन्हो निर्गुण अलख लखाई ।
सहज समाधि उनमुनी जागै सहज मिलै रघुराई ॥ ३ ॥
जहँ जहँ देखौ तहँ तहँ सोई मन माणिक वेध्यो हीरा ।
परम तत्त्व यह गुरुते पायो कह उपदेश कबीरा ॥ ४ ॥

सन्तो कहौ तो को पतिआई।झूठा कहत सांच बनि आई १

हे संतो ! झूठा जो ब्रह्महै ताको कहत कहत जीवन सांचबनि आई वही ब्रह्मको सांच मानलियेहै अब जो मैं सांच साहबको बताऊंहौं तो को पतिआय अर्थात् कोई नहीं पतिआय है ब्रह्महीमें लगे हैं ॥ १ ॥

लौकै रतन अवेध अमौलिक नाहिं गाहक नहिं साँई ।
चिमिकि चिमाकि चमकै दृग दुहुं दिशि अरब रहा छरिआई

लौ लगनको कहै हैं सो वा ब्रह्म माही हौं या जो लौ कहेलगन ताही ज्ञानको रतनकै अबाधित अमोलिक मानि जामें गाहक औ साई नहीं है (अर्थात् दूसरा तो हई नहीं है गाहक साई कहांते होय) सो वही ज्ञानको ब्रह्म मानि लियो है । तौने ब्रह्म उनके दृगन में चमकि चमकि चमकैहै, सर्वत्र देखो परै है । जोकहो लोक प्रकाश ब्रह्महीं देखो परै है सोनहीं अरु जो या हठ है कि, सर्वत्र ब्रह्महीं है सोईजो बरहा है सो छरिआई रह्योहै सर्वत्र ब्रह्महीं देखायहै जैसे बरहामें जलबढ़े सर्वत्र फैलिजाय है ऐसे अहंब्रह्मास्मि जो या ज्ञान सो जब बढ्यो तब याको हठहीरूप ब्रह्मदेखो परैहै ॥ २ ॥

आपुहिं गुरू कृपा कछु कीन्हो, निर्गुण अलख लखाई ।
सहज समाधि उनमुनी जागै,सहज मिलै रघुराई ॥ ३ ॥

सो गुरुजेहैं सद्गुरुते जब आपही कृपाकरैहैं तब निर्गुण जो ब्रह्महै ताको अलख लखावै हैं कि वे कछुवस्तुही नहीं हैं अर्थात् अलख हैं धोखाहै साहब कब मिलै जब सहज समाधि उनमुनी मुद्रा करि जो सर्वत्र ब्रह्म देखैहै तौन उनमुनी रूप निद्राते जागै अर्थात सहजही समाधिकै चित् अचित्‌रूप विग्रह या जगत साहबको है यादेखै तौ सहजहीमें परम परपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं ते मिलैं ॥ ३ ॥

जहँजहँदेखौतहँतहँसोई, मन माणिक वेध्यो हीरा ।
परम तत्त्व यह गुरुते पायो, कह उपदेश कवीरा ॥४॥

अशोधित अमौलिक आगे कहिआये ताको तो नेतिनेति कहै हैं वामें काहूको मनहीं नहीं वेध्यो अर्थात् धोखही है अब साधुनको मन जो माणिक है अनुराग पूर्वक लागे सो साहब जे हीरा हैं तिनमें बेध्यो है । ऐसे जेसाहब चित्‌अचितरूप जहांजहां देखौहौ तहांतहां सोई है यह कबीरजी कहै हैं कि यह परम तत्त्वको उपदेश मैं गुरुते पायोहै ॥ ४ ॥

इति सातवां शब्द समाप्त ।

अथ आठवां शब्द ॥ ८ ॥

अवताराविचार ।

संतौ आवै जायसो माया ।

है प्रतिपाल काल नाहिं वाके ना कहुं गया न आया ॥१॥
क्या मकसूद मच्छ कच्छ होना शंखासुर न संहारा ।
अहै दयालु द्रोह नाहिं वाके कहहु कौनको मारा ॥ २ ॥
वे कर्त्ता न वराह कहावैं धरणि धरै नाहिं भारा ।

ई सब काम साहबके नाहीं झूंठ कहै संसारा ॥ ३ ॥
खंभ फारि जो बाहर होई ताहि पतिज सबकोई ।
हिरणाकुश नख उदर विदारे सो नहिं कर्त्ता होई ॥ ४ ॥
बावन रूप न बलिको यांचे जो यांचै सो माया ।
बिना विवेक सकल जग जहड़े माया जग भरमाया ॥५॥
परशुराम क्षत्री नहिं मारा ई छल माया कीन्हा ।
सतगुरु भक्ति भेद नहिं जानै जीव अमिथ्या दीन्हा ॥ ६ ॥
सिरजनहार न व्याही सीता जल पषाण नहिं बंधा ।
वे रघुनाथ एककै सुमिरे जो सुमिरै सो अंधा ॥ ७ ॥
गोपी ग्वाल गोकुल नहिं आये करते कंस न मारा ।
है मिहरबान सबनको साहब नाहिं जीता नाहिं हारा ॥ ८ ॥
वे कर्त्ता नहिं बौद्धकहावैं नहीं असुरको मारा ।
ज्ञान हीन कर्त्ता कै भरमें माया जग संहारा ॥ ९ ॥
वे कर्त्ता नहिं भये कलंकी नहीं कालिंगहि मारा ।
ई छल बल मायै कीन्हा यतिन सतिन सब टारा ॥ १० ॥
दश अवतार ईश्वरी माया कर्त्ताकै जिन पूजा ।
कहै कबीर सुनो हो संतौ उपजै खपै सो दूजा ॥ ११ ॥

अवतार विचार ।

अबतक सबके गुरुश्रेष्ठ परम परपुरुष श्रीरामचन्द्रको वर्णन करिआये तिनके द्वारमें नारायणादिक मत्स्यादिक रहेआवैहैं ते अमायिकहैं काहेते कि आवै जायनहीं हैं तिनहीको परात्पर ब्रह्म करिकै वर्णतहैं तामें प्रमाण ॥ (पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदुच्यते । पूर्णस्यपूर्णमादायपूर्णमेवावशिष्यते इतिश्रुतेः) ॥ " औ ई माया ते परे हैं औ बहुधा निरंजनादिक जे नारायणहैं जिनको पांच

ब्रह्ममें कहिआयेहै ते, उनकी उपासना करिकै उनको आपनेते अभेद मानि कै उनकी शक्तिको प्राप्ति ह्वैकै जगत्के कार्य सब करैहैं । औ जब मत्स्यादिक अवतारलेइ हैं तब जे साकेत मत्स्यादिक हैं तिनकी अभेद भावना करिकै उतने अवतारकी शक्ति पाइकै आपही मत्स्यादिक होइहैं ये सब साकेतमें जे नारायणादिक सबहैं तिनके उपासक हैं उपासनामें देवको औ अपनो अभेद मानिबो लिख्यो है ॥ " देवोभूत्वादेवंयजेत् " ॥ तेहिते उनकी शक्तिते ये सबअवतार लेइहैं । जोकहो यामें कहा प्रमाणहै कि, येसब उनहींके उपासकहैं । तो रामनामके साहब मुखअर्थमें मकार स्वतःसिद्ध सानुनासिक है ताको जो है मात्रा तौनेमें साहबके जे सब पार्षद हैं तिनको वर्णन करिआये हैं । ये सब नारायणादिक रामनामहीकी उपासनाकरै हैं सो जाकी जाकी उपासना कीन चाहे हैं ताकी ताकी उपासना रामनामहींमें ह्वै जायहै रामनामकी ये सब उपासनाकरै हैं तामें प्रमाण ॥ " नारायणःस्वयंभूश्चशिवश्चेन्द्रादयस्तथा । सनकाद्याश्च योगीन्द्रानारदाद्यामहर्षयः ॥ सिद्धाः शेषादयश्चैवलोमशाद्यामुनीश्वराः । लक्ष्म्यादिशक्तयःसर्वाःनित्यमुक्ताश्चसर्वदा ॥ मुमुक्षवश्च मुक्ताश्चऋषयश्चशुकादयः । तत्प्रभावंपरंमत्वामंत्रराजमुपासते ॥ इतिवसिष्ठसंहितायाम् ॥ " जो कहो ये सब रामनाममें साहबमुख अर्थ तौ जान्यो मायिक काहेभयो ? तौ बिना माया सबलित भये जगत्के कार्य नहीं ह्वै सकै हैं तेहिते ये सब माया सबलित ह्वैकै कार्यकरै हैं । परन्तु जैसे इतर जीवनके जन्म मरण होइहैं तैसे इन के नहीं होइहैं । जब महाप्रलयभई तब सबजीव साहब के लोक प्रकाशमें समष्टिरूप रहै हैं जब उत्पत्तिभई तबफिरि कर्मकरिकै उत्पत्तिहोइहै । औ ये सब नारायणादिकनकी उत्पत्ति प्रलय नहीं होइ है । काहेते कि ईश्वरहैं, जब महाप्रलयभई तब जे साकेत लोकमें नारायणादिकहैं ते, इनके अंशीहैं उपास्यहैं तहां लीन ह्वैकै रहेजाइहैं । उत्पत्ति समयमें समष्टि जीव व्यष्टि होन चाहैहैं तब राम नाममें जगत् मुख अर्थको भावना करै है, तब साकेतनिवासी जे नारायण हैं तिन्हैं तिनके अंशई सब पांच ब्रह्मरूपते प्रकट होइहैं । साकेतमें जे नारायणादिकहैं ते अमायिकहैं, औ तिनके अंश नारायणादिक मत्स्यादिक अवतार लैकै आवै जाय हैं ते माया सबलित हैं । सो ये सब

मत्स्यादि अवतारनको मायिक कहिकै कबीरजी साहब को परत्वदेखावैहैं कि साहब सबते भिन्नहैं ॥

संतौ आवै जाय सो माया ।
है प्रतिपाल काल नहिंवाकें नाहिं कहुं गया न आया ॥१॥

हे संतौ! आवैजायहै सो तो मायाको धर्म है।जे साहब परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं ते सबको प्रतिपालही भर करै हैं कहे उद्धार ई भर करैहैं औ काम नहींकरै हैं । उनके कालनहीं है अर्थात् प्रलय आदिक नहीं होइहै । अथवा जो कोई वे साहब को जानै है ताको कालको भय छूटिजायहै वे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र ना कहीं गये हैं न आये हैं ॥ १ ॥

क्या मकसूद मच्छ कच्छ होना शंखासुर न सँहारा ।
अहैदयालु द्रोह नहिं वाके कहौ कौनको मारा ॥ २ ॥
वे कर्त्ता न वराह कहावैं धरणि धरै नहिं भारा ।
ई सब काम साहबके नाहीं झूठ कहै संसारा ॥ ३ ॥

अरु वे उद्धारकर्त्ता परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्रको क्या मकसूद कहे क्या मकसद है अर्थात् क्या प्रयोजनहै, मच्छ कच्छ होनेका । वे शंखासुरको नहीं संहारयोहै शंखासुर उपलक्षण याते जिनको जिनको मारयो है अवतारते सब आइगये । अरु सो दयालु हैं सबकी रक्षाकरै हैं उनके द्रोह नहीं है कहौ कौनको मारयो है ॥ २ ॥ अरु वे उद्धारकर्त्ता साहब वाराह नहीं भये औ न पृथ्वीको भारा धरयो सो जौन सबकोई कहै हैं कि, ई सब काम साहबहीके हैं सो ये काम साहब के नहीं हैं यह संसार झूठई कहैहै सो साहबको बिना जाने कहै हैं ॥ ३ ॥

खम्भ फारि जो बाहरहोई ताहि पतिज सब कोई ।
हिरणकशिपु नख उदर बिदारे सो नहिं कर्त्ता होई॥४॥

बावनरूप न बलिको यांचे जो यांचे सो माया ।
बिना बिवेक सकल जग जहड़े माया जग भरमाया५

औ खम्भ फारिकै बाहर है कै नरसिंह रूप ह्वै नखते हिरणकशिपुके उदरको बिदारयो है तौनेन व्यापक ब्रह्म को सबकोई पतियायहै सो वे उद्धारकर्त्ता परमपुरुष श्रीरामचन्द्र नहीं हैं । यह सब माया कियो है ॥ ४ ॥ औ बावनरूप ह्वै वे साहब बलिको नहीं यांच्यो है । मांगिबो पाइबो तो सब माया है सब जगत् के जीव बिना बिवेक जहडे कहे भुलाय गये हैं । सब जीवनको माया भरमाइ लियो है ॥ ५ ॥

परशुराम क्षत्री नहिं मारा ई छल मायहि कीन्हा ।
सतगुरु भक्ति भेद नहिं जानै जीव अमिथ्या दीन्हा॥६॥

अरु वे उद्धारकर्त्ता परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्र परशुराम ह्वै क्षत्रिन को नहीं मारयो है यह सब मायाही कियोहै । सतगुरु कहे सैकरन जे गुरुवा हैं ते साहबके भक्तिके भेदको जानै नहीं हैं । जीव को ये जे नारायण हैं औ सब जे अवतारहैं तिनही को अमिथ्या कहे मिथ्या नहीं सांच कहिकै कि, वे सांच साहब येई हैं तिनही की जीवन को दीक्षा देइ है । सो मिथ्या है ॥ ६ ॥

सिरजनहार न ब्याही सीता जल पषाण नहिं बंधा ।
वे रघुनाथ एकके सुमिरे जो सुमिरै सो अंधा ॥७॥

औ वे सिरजनहार कहे जाके सुरतिदियो ते, ब्रह्मा विष्णु महेश आदिक अवतार लेइहैं औ जगत्की उत्पत्ति होइहै सो सीता को नहीं बिवाह्यो, औ सेतु नहीं बांध्यो । सो वे निर्विकार उद्धारकर्त्ता रघुनाथको औ ये सब अवतारनको एक करिकै सबकोई सुमिरै हैं । सो जो एक करिकै सुमिरै हैं ते अंधे हैं । काहेते कि, वे तौ रघुनाथ हैं । रघु कहिये सब जीव को तिनके नाथ हैं वे काहेको काहू के मारनको अवतार लेइँगे । वे निर्विकार औ ये माया सबलित ह्वैकै सब अवतार लेइ हैं । जो कोई आवैजाय है सो मायिकहै सो वे निर्विकार साहब औ सविकार ये सब अवतार एक कैसे होइँगे । आ

रघु जीवको कहै हैं ते रघुशब्दकै (व्युत्पत्तीरंवतेलोकाल्लोकांतरं गच्छंति रघवो-जीवास्तेषांनाथः) अर्थ लोकते और लोक जाय ते जीवरघु हैं तिनके नाथजे हैं तेई रघुनाथ हैं ॥ ७ ॥

गोपी ग्वाल गोकुल नहिं आये करते कंस न मारा।
है मेहरवान सबनको साहब नहिं जीता नहिं हारा ॥ ८ ॥

औ गोपी ग्वाल गोकुल में कबहूं नहीं आये हैं वे उद्धारकर्त्ता साहब कंसको करते नहीं मारयो औ न मथुरागये काहेते कि ब्रह्म वैवर्त्तमें लिखाहै। (वृन्दावनं-परित्यज्ययादमेकंनगच्छति) ॥ वे साहब तो सबके ऊपर मेहरबानी करनवारे हैं वे न काहूसों जीते हैं न हारे हैं न काहूको मारे हैं अर्थात् युद्धई नहीं कियो वेतौ रासई करत रहे हैं ॥ ८ ॥

वे कर्त्ता नहिं बौद्ध कहावैं नहीं असुरको मारा।
ज्ञानहीन कर्त्ता भरमे माया जग संहारा ॥ ९ ॥
वेकर्त्ता नहिं भये कलकी नहीं कलिंगहि मारा।
ई छल बल सब मायै कीन्हा यतिन सतिन सब टारा १०

अरु बौद्धरूप ह्वैकै दैत्यनको नास्तिक मतसिखै दैत्यनको संहार कराइ डारयो है सो सबमाया कियो है वे मुक्तिकर्त्ता साहब नहीं कियो । काहेते कि वे मुक्तिकर्त्ता साहब देवको निन्दा करिकै इनको अज्ञानी कैसे करैंगे। सो ज्ञानहीन जे हैं भर्में, ते यह कहै हैं कि, यह सब उद्धार कर्त्ता जो है सोई सब करै है सो कर्त्ता नहीं करै है यहमाया सब जगत्को संहारकरै है ॥ ९ ॥ अरु वे उद्धारकर्त्ता परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र कलकी अवतार नहींलियो औ न कलिंग देशी जे म्लेक्ष हैं तिनको मारयो है यह छलबल सबमायै कियो है। यतिनको जो है सत्य सबताको टारिदियो है अर्थात् यती जे रहे संन्यासी गोरखादिक तिनकर सत्य जो है साहबको जाननवारो मत तौनेको टारिदियों योगादिकनमें लगाइदिको ॥ १० ॥

दश अवतार ईश्वरी माया कर्त्ता कै जिन पूजा।
कहहिं कबीर सुनौ हो सन्तौ उपजै खपै सो दूजा॥११॥

नारायणै माया करिकै अवतार लेइ है ते सब ईश्वरीमाया है कहे ईश्वर रूपहीमाया है तिनको जिन पूजाकहे रामचन्द्र मानि कै न पूजो वैसेपूजो तो पूजो ईश्वरमानिकै न पूजो। सो कबीरजी कहै हैं कि हेसंतौ! जो उपजै हैं औ खपै हैं सो साहबते दूजो पुरुष हैं; वे उद्धारकर्त्ता परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र साकेत ते कबहूं नहीं आवै जाय हैं तामें प्रमाण॥ (पूर्णः पूर्णतमः श्रीमान्सच्चिदानन्दविग्रहः। अयोध्यांकापिसंत्यज्यसक्वचिन्नैवगच्छति॥ इतिवशिष्ठसंहितायाम्॥ साकेतेनित्यमाधुर्य्येधाम्निस्वेराजतेसदा। शिवसंहितायाम्)॥ जो कहा इनहूको तौ कौन्यो कल्प में अवतारलिख्यो है सोई कबहूं आवै जाय नहीं है साकेतही में बनेरहे हैं। जब कबहूं बाणयुद्धकी इच्छा चलै है तब यह अयोध्या साकेतई प्रकटहोइ है। अरु उहांके सब परिकार जमके तस प्रकटहोइ हैं। यह ब्राह्मण्डमें तहां जैसे साकेतमें विहारकरै हैं तैसे विहार करै हैं। याहीहेतुते ज्ञानी अज्ञानी जड़ चेतनकीटपतंगादिको मुक्ति करिदियो सोश्रुतिमेंलिखैहै॥ (ऋतेज्ञानान्नमुक्तिः) बिनाज्ञानमुक्ति नहींहोइ है सो जोवह साकेतकेशव न होते तौ मुक्ति कैसे होती। जो कहो यह ब्रह्माण्ड वह साकेतई ह्वै गयो तौ साकेतको आइबो तौ आयौ तौ सुनौ वह साकेत औ यह अयोध्या एकई है, इहां साकेत आवै जाय नहीं है जैसे साहब सर्वत्रपूर्ण हैं, तैसे साकेत तो साहबके रूपई है सो वहो सर्वत्रपूर्ण है (अयोध्याचपरंब्रह्म) इत्यादिक प्रमाणते। जब परमपर पुरुष श्रीरामचन्द्र को प्रकट बिहार करनको होइहै तब प्रकटह्वै जाइहैं औ जब गुप्तबिहार करनको होइहै तब गुप्त ह्वैजाइ हैं। तब साकेत जोप्रकट औ गुप्त ह्वैजाइहै कैसे? जैसे श्रीकबीरजीको जब प्रकट उपदेश करनकी इच्छाहोइहै तब प्रकटहोइ उपदेशकरै हैं, औ सब कोई देखैहैं। औ जब गुप्तउपदेश करन होइहै तब गुप्त उपदेशकरै हैं। जाको उपदेशकरै हैं सोई जानैहै। वे साकेत निवासी श्रीरामचंद्र जैसे सर्वत्रपूर्ण हैं तैसे उनको लोकऊ सर्वत्रपूर्ण है। जोकहो उनके नामादिक तौ अनिर्बचनीय हैं वे कैसे प्रकट बचन में आवैंगे तौ, नारायण जे रामावतार लेइ हैं तेई हैं तिनके नामादिक तिनते उनके नामादिक व्यंजित-

होइहैं, सो पीछेलिखिआये हैं । जबउद्धारकर्त्ता साहब प्रकटहोइ हैं तबँ जे देखन वारे सुननवारे हंसरूप में स्थितहैं तेई वहीरूपते देखैहैं सुनै हैं सच्चिदानन्दात्मको (भगवान् सच्चिदानन्दात्मिका अस्यव्यक्तिः) यह श्रुति करिकै एकरूपताकहि आये हैं । याहीते लोकहूको ब्यापक कह्यो । औ नारायण जो रामावतारलै अशोकबाटिकामें लीलाकियो सो बर्णनकरि मन वचनके परे जे साहबहैं तिनके लीलाको ब्यंजितकरै हैं । सो ब्यंजित तो करै हैं परन्तु मनबचनके परे जेसाहबहैं तिनके नामरूप लीलाधाम मनबचनके परे साकल्य करिकैब्यंजितऊ नहीं करिसकै हैं । सो यह बातजो कोई साहब करिकै हंसरूपपायें हैं सोसाहबके मनकारिकै साहबको नामादिक जानै है। औ जपै है औ साहबके दियें रूपकी आंखीते साहबको देखै है । तामें वेदसारोपनिषत् को प्रमाण ॥ २७॥ (जनकोहवैदेहो याज्ञवल्क्यमुपसृत्यपप्रच्छकोहवैमहान्पुरुषोयंज्ञात्वेहविमुक्तोभवतीति ॥ १ ॥ सहोवाचकौशल्योरघुनाथएवमहापुरुषः तस्यनामरूपधामलीला मनो वचनाद्यविषयाः सपुनरुवाचेदृशं कथमहं शक्नुयांविज्ञातुंज्ञापकाज्ञानादितिसपुनः प्रतिवक्ति अथैते श्लोकाभवंति ॥ विरजायाः परेपारेलोकोवैकुण्ठसंज्ञितः ॥ तन्मध्येराजतेयोध्या सच्चिदानन्दरूपिणी ॥ ३ ॥ तत्रलोकेचतुर्बाहू रामोनारायणः प्रभुः ॥ अयोध्यायांयदाचास्य अवतारोभवेदिह ॥ ४ ॥ तदास्ति रामनामेदमवताररविधौविभोः ॥ तन्नाम्नोनामरहितस्याम्ना तं नाम तस्यहि ॥ ५ ॥ दशकंठबधाद्यादिलीलाविष्णोः प्रकीर्त्तिताः ॥ सकदाचिच्च कल्पेस्मिँल्लोकेसाकेतसंज्ञिते ॥ ६ ॥ पुष्पयुद्धंरघूत्तंसः करोति सखिभिः सह॥ ७॥कस्मिन्कल्पेतुरामोसौ बाणजन्येच्छया विभुः ॥ तैरेवसखिभिः सार्द्धमाविर्भूय रघूद्वहः ॥ ८ ॥ रावणादिवधेलीला यथाविष्णुः करोतिसः ॥ तथायमपितत्रैवकरोतिविविधाः क्रियाः ॥ ९ ॥ क्रियाश्च वर्णयित्वाथ विष्णुलीलाविधानतः ॥ लीलानिर्वचनीयत्वंततोभवतिसूचितम् ॥ १० ॥ किंचायोध्यापुरीनामसाकेतइतिसोच्यते ॥ इमामयोध्यामाख्याय सायोध्यावर्ण्यतेपुनः ॥ ११ ॥ अनिर्वाच्यत्वमेतस्याव्यक्तमेवानुभूयते ॥ रामावतारमाधत्तेविष्णुः साकेतसंज्ञिते ॥ १२ ॥ तद्रूपंवर्णयित्वानिर्वचनीयप्रभोः पुनः ॥ रूपमाख्यायतेविद्भिर्महतः पुरुषस्य हि ॥ १३ ॥ इत्यथर्वणवेदेवेदसारोपनिषदिप्रथमखण्डे) श्रीकबीरजीका यहीमतहै कि, साकेतछोड़िकहूं नहींजायहै नित्यबिहारी हैं ॥ ११ ॥

इति आठवांशब्द समाप्त ।

अथ नवमशब्द ॥ ९ ॥

संतौ बोले ते जग मारै।

अन बोलते कैसे बनिहै शब्दै कोइ न बिचारै ॥ १ ॥
पहिले जन्म पूतको भयऊ बाप जनमियाँ पाछे।
बाप पूतकी एकै माया ई अचरज को काछे ॥ २ ॥
उंदुर राजा टीका बैठे बिषहर करै खवासी।
श्वान बापुरा धरनि ठाकुरो बिल्ली घरमें दासी ॥ ३ ॥
कागज कार कारकुड़ आगे बैल करै पटवारी।
कहहि कबीर सुनौ हो संतौ भैंसें न्याउ निवारी ॥ ४ ॥

संतौ बोले ते जग मारै।

अनबोलेते कैसे बनिहै शब्दै कोइ न बिचारै ॥ १ ॥
पहिले जन्म पूतको भयऊ बाप जनमिया पाछे।
बाप पूतकी एकै माया ई अचरज को काछे ॥ २ ॥

हे संतौ! जो बोलौहौ कहे जोमैं बताऊंहौं सोतो मानै नहीं है बोलते जगमारैहै कहे शास्त्रार्थकैरैहै औ जो न बोलौ तो बनैकैसे शब्दको कोई नहीं बिचारै ॥ १ ॥ अरु पहिले पूतजो जीव है ताको जन्म ह्वैलेइहै तब पिता जोहै जीवको अनुमान ब्रह्म ताको जन्म होइहै। पिताजीवको काहेते कह्यो कि, जब शुद्ध जीव एकते अनेक ब्रह्महीं द्वारभयोहै वह माया सबलित ब्रह्मपूतैहै औ जीव मायाहीमें पर्योहै दोनों माया सबलितहैं सो बापजोहै जीव औ पूतजोहै ब्रह्म तिनकी महतारी एक मायाही है अर्थात यहीते अनादिकालते दोनों प्रकटहैं वहीमें पैरैहैं। सो तैं बिचारु तौ यह अचरजको काछेहै अर्थात् तैंहीं अपने अज्ञानते यह अचरज काछे है औ नानारूप धरैहै ॥ २ ॥

उंदुर राजा टीकाबैठे बिषहर करै खवासी ।
श्वान बापुरा धरनिठाकुरा बिल्ली घरमें दासी॥ ३ ॥

उंदुर जोहे मूस सो तौ राजा भयो टीकामें बैठ्यो औ बिषहर सर्प सो खवासी करैहै औ श्वान बापुरा जो है सोधरनि ठाकुरा कहे बस्तु लैके ढांकिके धरे है कहे भंडारीहै औ बिल्ली घरमें दासी है सो खानवालिनि है । अर्थात् उंदुरकहे वह साहबको ज्ञान जाको दूरकै दियो है । उंदुरमूसको संस्कृतमें कहै हैं सो उंदर कहे मूसतो जीवहै सो उंदुर शरीरको आपनो मानिलियो है सोई राजाभयो अरु वाको खानबालो जोहै सर्पसो कालहै । सो खवास भयो कहे क्षण पल घरी पहर वाको खात बीती तो होतजायहै सो खवास ह्वैकै यहकाल वाकी आयुर्दायको खातई जायहै । औ नाना प्रकार की जो बिषयहैं तेई बीरा है ताको खवावत जायहै । अरु श्वानकहे वह स्वानुभवानन्द जोहै सो बापुरा जो जीव ताकोधरिकै ढांकि लियो है कहे साहबको ज्ञान नहीं होन देईहै औ बिल्ली जो है षट् दर्शनकी बाणी सोघरमें दासी ह्वैरही है कहे नाना मतन में लगावैहै साहबकी भक्ति रस जो है सोई है गोरस ताको खाइ लेइ है ॥ ३ ॥

कागज कार कारकुड आगे बैल करै पटवारी ।
कहहि कबीर सुनो हो सन्तो भैंसै न्याउ निबारी॥४ ॥

कागज कार कहे लिखो कागज कार कुड जो बैलहै ताको आगे धरो है । सोई बैल पटवारी करैहै । सो कारो कागज कहे लिखो काजग जो गुरुवा लोगनकी बनाई पोथी तिनको आगेधरिकै बैलजे गुरुवा लोगन के चेलाहैं ते पटवारी करै हैं । अर्थात् कायानगरी के बसैया जे मन बुद्धि चित्त अहंकार पृथ्वी अप् तेज वायु आकाश दशौ इन्द्रिय तिनको बिचारिकै कि, कौन काकेआधीनहै ज्ञानरूपी द्रव्य तहसील करैहै । वा पटवारीकैकै द्रव्य राजाके इहां लेजाइहै । या ज्ञानरूपी द्रव्य आत्मा में राख्यो आइ अर्थात् काया नगरीके बसैया सब जीवात्मैते चैतन्यहैं याते आत्मै मालिकहै । यह निश्चयकियो । सो कबीरजी कहै हैं हे संतो ! तुम सुनो इहां भैंसा जो है सोई न्याउ निबारैहै, इहां भैंसाकहे गुरुवालोग जो हैं सोआपचहलामें परेहैं औ चहलामें परोजो

जीव ताहीको मालिक बतावै हैं । और चेला जे हैं तिनहूं को मायाके चहलामें डारैहैं ऐसो न्याउ निबारैहैं । भाव यहहै कि, भैंसा यमकी असवारी है सो यमही पुर को लैजाइगो । तहां जब यमके लट्ठा लगैंगे तब गुरुवाई निकसि आवैगी ॥ ४ ॥

इति नवमशब्द समाप्त ।

अथ दशवां शब्द ॥ १० ॥

(मजहब)

सन्तो राह दुनों हम डीठा ।
हिन्दू तुरुक हटा नहिं मानैं स्वाद सबनको मीठा ॥ १ ॥
हिन्दू व्रत एकादाशि साधैं दूध सिंघाड़ा सेती ।
अनको त्यागैं मन नहिं हटकैं पारन करे सगोती ॥ २ ॥
तुरुक रोजा नमाज गुजारैं बिसमिल वाँग पुकारैं ।
उनकी भिश्त कहांते होइ है सांझै मुर्गी मारै ॥ ३ ॥
हिन्दूकि दया मेहर तुरुकनकी दूनों घटसों त्यागी ।
वै हलाल वै झटका मारैं आगि दुनों घर लागी ॥ ४ ॥
हिन्दू तुरुक कि एक राहहै सद्गुरु इहै बताई ।
कहहि कबीर सुनौ हो संतो राम न कहेउ खोदाई ॥ ५ ॥

संतो राह दुनों हम डीठा ।
हिन्दू तुरुक हटा नहिं मानैं स्वाद सबन को मीठा ॥ १ ॥

हे संतो! हम दूनोंकी राह डीठा कहे देखी दूनोंकी एकई राह है सो हमारो हटको कोई नहीं मानै है । हम सबको समुझावते हैं कि विषयनको छोड़िकै देखो तो दूनोंकी राह एकई है सो दूनों दीनको विषयनको स्वाद मीठो लग्यो है यहीके मिलनकी उपाय करै हैं साहबको नहीं खोजै हैं ॥ १ ॥

हिन्दू व्रत एकादशि साधैं दूध सिंघाड़ा सेती ।
अनको त्यागैं मन नहिं हटकैं पार न करैं सगोती ॥ २ ॥
तुरुक रोजा नमाज गुजारैं बिसमिल बाँग पुकारैं ।
उनकी भिश्त कहांते होइहै सांझै मुर्गीमारैं ॥ ३ ॥

हिन्दू जे हैं ते अन्नको त्यागिकै एकादशी व्रत साधै हैं कहे उपासे रहै हैं औ फलाहार करैं हैं । औ बिहान भये नानाप्रकारके व्यंजन बनाइकै सगे जे हैं गोतीभाई तिनको लैकै पारण करै हैं औ मनको नहीं हटकै हैं कहेदशौ इन्द्रिय ग्यारहौं मनको नहीं हटकै हैं अर्थात् यह एकादशी नहीं करै हैं । अथवा जैसे सगोतीमें कहे सगाई में अर्थात् जैसे बिवाहमें जाफतमें खाय हैं तैसे पारण करै हैं ॥२॥ औ मुसलमान रोजा रहै हैं औ नमाज गुजारैंहैं औ बिसमिल्लाको बांग दैकै पुकारें हैं औ सांझको मुर्गा मारिकै पोलाव बनाइ खाय हैं सो कहोतो उनकी भिश्त कैसे होइगी ॥ ३ ॥

हिन्दू कि दया मेहर तुरुकनकी दूनों घट सों त्यागी ।
वे हलाल वे झटका मारैं आगि दुनों घर लागी ॥ ४ ॥

हिन्दूकी दया तुरुककी मिहर है जो हिन्दू दया करत तौ यम ते छूटत अरु जो मुसल्मान मिहर करत तौ यमते छूटत । सो ये दोऊ दया औ मिहर-को आपने घटते त्यागि दियो है मुसल्मान कहैं हैं कि गळेकी रगसेभी अल्लाह नगीचैहै औ घट घट में मौजूदहै औ गला काटतई हैं सो गौ सेइकै गला काटते हैं औ हिन्दू कहैं हैं कि ब्रह्मसर्वत्र पूर्ण है औ झटका मारैं हैं कहे मूड़ काटिडारैं हैं सोऊ ब्रह्म की ही गलाकाटै हैं या प्रकार ते कबीर जी कहै हैं कि दूनों घरमें आंगिलगी है यह अज्ञानरूपी आगि दूनों को बुद्धिको दाहे डारै है ॥ ४ ॥

हिंदू तुरुक कि एक राह है सतगुरु इहै बताई ।
कहहि कबीर सुनो हो संतो राम न कहौ खोदाई ॥ ५ ॥

हिन्दू मुसलमानकी एकै राहहै राम न कह्यो खोदाइ कह्यो खुदा न कह्यो राम कह्यो । नाम सब वही बादशाहके हैं सो वह बादशाहको हिन्दू तुरुककी

एतीबड़ी गुस्ताखी कब नीक लँगेगी। अथवा हिन्दू तुरुक की एक राहहै कहे एक रामनाम लियेते उद्धार होइहै सो कर्मते निवृत्त ह्वैके न हिंदू राम कहैं न मुसल्मान खोदा कहैं आपने आपने कर्म में सब लगे हैं तेहिते माया कैसे छूटै। अथवा न नारायणराम कह्यो कि तुम झटका मारौ न खोदा इकह्यो कि तुम हलाल करौ ये दोऊ अपने अज्ञानते बनाइ लियो है ॥ ५ ॥

इति दशवां शब्द समाप्त।

अथ ग्यारहवां शब्द ॥ ११ ॥

(ब्राह्मण)

संतो पांडे निपुण कसाई।
बकरा मारि भैंसाको धावै दिलमें दर्द न आई ॥ १ ॥
करि स्नान तिलक करि बैठे विधिसों देवि पुजाई।
आतम राम पलकमो विनशे रुधिरकी नदी वहाई ॥ २ ॥
अतिपुनीत ऊंचेकुल कहिये सभा माहिं अधिकाई।
इनते दीक्षा सबकोइ मांगै हँसि आवै मोहिं भाई ॥ ३ ॥
पाप कटनको कथा सुनावैं कर्म करावैं नीचा।
बूड़त दोउ परस्पर देखा गहे हाथ यम घींचा ॥ ४ ॥
गाय वधै तेहि तुरुका कहिये उनते वै का छोटे।
कहहि कबीर सुनोहो संतो कलिके ब्राह्मण खोटे ॥ ५ ॥

संतो पांड़े निपुण कसाई।
बकरा मारि भैंसाको धावै दिलमें दर्द न आई ॥ १ ॥
करि स्नान तिलक करि बैठे विधिसों देवि पुजाई।
आतमराम पलकमो विनशे रुधिरकी नदी बहाई ॥ २ ॥

हेसंतो ! पांड़े निपुण कसाई हैं काहेते कि, कसाई अबिधिते मारै है वह बिधिते मारै है याते निपुण है । बकराको मारिके भैंसाके बलिदान दीबेको धावै है ॥ १ ॥ स्नान करिके रक्तचंदनके बड़बड़ तिलक देके बैठे है औ बिधिसों देवीको पुजावै है अरु यह कहै है अंतर्यामी सर्वत्र है, औ बकरा भैंसाको मूड़काटि डारै है, रुधिरकी नदी बहनलगै है तबवह आतमरामजो है जीव (कहे आत्माजो है शरीरतेहि बिषे है आरामजाको) सो बिनशि जायहै कहे शरीरते जुदा ह्वैजाय है ॥ २ ॥

अति पुनीत ऊंचे कुल कहिये सभा माहँ अधिकाई ।
इनते दीक्षा सब कोउ मांगै हँसि आवै मोहिं भाई ॥३॥

सो ऐसे ऐसे दुष्ट कसाइनको अति पुनीत ऊंचे कुलके कहै हैं । अरुसभामें उनहींकी अधिकाई है कहे शास्त्रार्थ करिके सभामें आपनिन अधिकाई राखै है । तेहिते सबकोई दीक्षामांगै हैं कि, हमको दीक्षादै संसारते उबारिलेउ । सो यह देखिकै मोको हँसी आवै है कि, आपई नरकमें जाइ है तौ और को नरकते कैसे उबारि है अर्थात् तोहूंको वही नरकमें डारिदेई है ॥ ३ ॥

पाप कटन को कथा सुनावै कर्म करावै नीचा ।
बूड़त दोउ परस्पर देखा गहे हाथ यम घींचा ॥ ४ ॥

वोई गुरुवालोग पापकाटनको तो कथा सुनावै हैं रामायणादिक औ वहीं कथामें वर्णन है कि, रघुनाथजी शिकार खेलै हैं । सो गुरुवालोग कहै हैं कि तुमहूंशिकारखेलो । यहनहीं जानै हैं कि रघुनाथजी तिर्य्यग्योनि वालेन परदया करी कि, ई ज्ञानभक्ति बैराग्यकैसे करैंगे याते मारिकै मुक्तिकरिदेइ हैं और हम इनको मारैंगें तो पाप ते हमई दोऊ नरकै जायँगे । याहीते दोऊगुरू चेलाको परस्परनरकमें बूड़त देख्यो है तिनको नरकमें डारिबेको यमघींचही धरै हैं । नरकमें डारिदेहिंगे तब नरकमें गुहमूत्र खाइगो औ मारो जाइगो । औ जो जीवनको मारिकै मांस खायो है तेई वाके मांसको खायँगे। औ अपने २ सींगन ते खुरनते मारैंगे । याते मांस खायो है वै जीवतही मांस खायँगे । इहांते जो जीवन को वह मारचो तिनको क्षणइमात्रको क्लेश है औ उहां वे जीव

वाको बारंबार मारैंगे। मरणको क्लेश क्षणमें होइगो औ यातना शरीर लाखनवर्ष न छूटैगो या कथा गरुड़ पुराणादिक में प्रसिद्ध है ॥ ४ ॥

गाय वधै तेहि तुरुका कहिये उनते वैका छोटा।
कहहि कबीर सुनो हो संतो कलिके ब्राह्मण खोटा॥५॥

जे गायको मारै हैं ते मुसल्मान कहावै हैं सो इनते वै का छोटे हैं। तुरुक गायमारै हैं अरु वै भेड़ा भैंसा मारै हैं। आत्मातो सब एक हीहै। सो कबीरजी कहै हैं कि, हेसंतो! कलिके ब्राह्मण बहुत खोट हैं काहे ते कि, जे शास्त्र को नहीं समुझैं तेतो मूढ़ही हैं, वे खोटकर्म कराई चाहैं परन्तु जे शास्त्रको समुझै हैं तिनहूंको समुझाइकै खोटकर्ममें लगाइ देइ हैं अपनी पाण्डित्यके बलते। ब्राह्मण जो कह्यो ताको या अर्थ है सबको यही समुझावै है को काको मारै है सर्वत्रतो एकई ब्रह्म है औ कोई या समुझावै है कि बलिदानदै देवीको प्रसन्नकरो तुमको ब्रह्मज्ञान दै ब्रह्मबनाइ देइगी ॥ ५ ॥

इति ग्यारहवां शब्द समाप्त।

अथ बारहवां शब्द ॥ १२ ॥

संतो मतेमात जनरंगी।

पीवत प्याला प्रेमसुधारस मतवाले सतसंगी ॥ १ ॥
अर्धऊर्ध्वलै भाठी रोपी ब्रह्म अगिनि उदगारी।
मूंदे मदन कर्म काटि कसमल संतत चुवे अगारी ॥ २ ॥
गोरख दत्त वशिष्ठ व्यासकवि नारद शुक मुनि जोरी।
सभा बैठि शंभू सनकादिक तहँ फिरि अधर कटोरी ॥ ३ ॥
अंबरीषऔ याग जनक जड़ शेष सहस मुख पाना।
कहँलों गनों अनंत कोटि लै अमहल महल दिवाना॥ ४ ॥

ध्रुव प्रह्लाद विभीषण माते माती शिवकी नारी ।
सगुण ब्रह्म माते वृन्दावन अजहुं न छूटी खुमारी ॥ ५ ॥
सुर नर मुनि जेते पीर औलिया जिन रे पिया तिनजाना।
कहै कबीर गूंगेकी शक्कर क्यों कर करै बखाना ॥ ६ ॥

संतो मते मात जन रंगी ।
पीवत प्याला प्रेम सुधारस मतवाले सतसंगी ॥ १ ॥

संतो मतेकहे संतनके जेमतहैं जिनमें रंगेजे जनहैं तेईमात कहे मातिरहे हैं । "रंगच्छतीतिरंगः रंगोस्यास्तिगुरुत्वेनेतिरंगी" रकार बीजको जो कोई प्राप्त होइ है सो रंग कहावैसो रकार बीज रामोपासकनके होइहै।ते रामोपासक जाके गुरुहोइ सोकहावैरंगी। अथवा सुरति कमल बैठे जे परम गुरुहैं ते रकार बीजको उच्चार करै हैं,सो रकार बीजको जो कोई वहां जाइकै सुने सो रंगीहै।सोई रंगी संतनके मतमें माते है । औ कबीरऊ रकारई बीजको जपत रहैहैं सोबंशावलीमें लिख्यो है।श्रीराजारामसिंह बाबाकबीरजीते पूछ्यो कि आपका कौन सिद्धांतहै तब कबीरजी कह्यो ॥ " रा अक्षर वट रम्यो कबीरा।निज घर मेरो साधु शरीरा "॥ सो पीछे लिखिआये हैं । अरु सुधाको मादकधर्म है सो श्रीरामचन्द्र के प्रेमरूपी प्यालामें भरयो जो है सुधारसरूपा भक्ति ताको जे पानकरै हैं तिनके सत्संगी जे हैं तेऊ मतवाले ह्वैजायहैं कहेपरम सिद्धांतवालो जो मत है तेहि तें युक्त ह्वैजाइहैं । अथवा रसरूपा भक्तिको नशा चढ़ोरहै दिनराति अर्थात् रस आनन्दको कहै हैं सो आनन्दमें निमग्नरहै हैं तामें प्रमाण ॥ " रसोवैसःरसंह्येवायंलब्ध्वानन्दीभवति ॥ " इतिश्रुतेः इहां सुधारस को कह्यो ताको हेतु यह है कि जे सुधारसको पीते हैं तेई जनन मरण छोड़िकै अमर होयहैं औरनको जनन मरण नहीं छूटै है अरु वह रसरूपा भक्ति मधि उत्पत्ति भयो है ताको रूपक करिके समुझावै हैं ॥ १ ॥

अर्ध ऊर्ध्व लै भाठी रोपी ब्रह्मअगिनि उदगारी ।
मूंदे मदन कर्म काटि कसमल सतत चुवै अगारी ॥ २ ॥

उहां समेटिकै कहिआयेहैं अबइहां रसरूपा भक्तिको मदको रूपककरिकै कहै हैं। अध कहे नीचेके लोक ऊर्ध्वकहे ऊंचेके लोक पर्य्यंत जो सारासारको विचार (सारकहे चित् अचित्‌रूप साहबको या जगत् मानिबो औ असार कहें नानात्व जगत् मानिबो या जो विचार) सोई भाठी रोपतभये। औ तेहितें भयो जो यथार्थज्ञान कि, सब सच्चिदानन्द स्वरूपहै काहेते चितौ अचित साहबको रूपहै याहिहेतु ते सोई ब्रह्म अग्नि उदगारीकहे बारत भये। महुवा नरमें धरैहै इहांमदन जोमनोज तौनैजोहै शरीरनर अर्थात् वीर्य्यते शरीर होइहै सो अंतःकरण में मूंदे। जे साहबकी अनेक प्रकारकी जो लीला तिनके जे ज्ञान ध्यान तेई महुवादिक द्रव्यहैं, तिन्हैं जोकर्मनकी बरोबरि मानिबो जो या भ्रम सोई जो कर्मरूप कसमल ताको काटिडारयो, तब निश्चयात्मक बुद्धिजे पात्र तामें रसरूपाभक्ति रूपजो अगारी सो निरंतर चुवनलागी ॥ २ ॥

गोरख दत्त बशिष्ठ व्यास कवि नारद शुकमुनि जोरी।
सभा बैठि शंभू सनकादिक तहँ फिरि अधर कटोरी ॥३॥

गोरख दत्तात्रय बशिष्ठ व्यास कबि कहेशुक्र नारद शुकमुनि कहे शुक्राचार्य तेई सब जोरि जोरि इकट्ठाकरि धरतभये। औ सभाके बैठैया जे हैं शंभु सनकादिक तहां रसरूपा भक्ति जो सुधा रस तेहि करिके भरी जो है प्रेम रूपी कटोरी सो तिनके अधरहैं कहे मनकरिके न कोई धरिसकैहै अर्थात् न मनमें आवै न बचनमें आवै वाके पानकरतमें छकि सब जायहैं। रसवाच्यमें नहीं आवैहै यहसर्वत्र ग्रंथनमें प्रसिद्धहै ॥ ३ ॥

अंबरीष औ याज्ञ जनक जड़ शेष सहस मुख पाना।
कहँलों गनों अनंत कोटिलै अमहल महल देवाना ॥ ४॥

अंबरीष औ याज्ञवल्क्य औ जड़भरत औ शेषकहे संकर्षण औ सहसमुख कहे शेषनाग ते पान करतभये। सो कहांलों मैं गनों परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र के जे अमहल महल अनंत कोटि हैं ताहीमें लीनभये औ दिवाना होतभये कहे मत्तहोतभये। इहां अमहलमहल जोकह्यो सोऊ जे अयोध्याजीके महलहैं अमहलहैं कहे महल नहीं हैं अर्थात् प्राकृत पांचभौतिक नहीं हैं। अरु महल

जो कह्यो ताते आनन्दरूप वे महल वर्त्तमान बने हैं । अमहल कह्यो याते निर्गुणधर्म आयो औ महलकह्यो याते सगुणधर्म आयो । सगुणनिर्गुण में नहीं होयहै । निर्गुण सगुणमें नहीं होयहै उन में दोनों धर्म बने हैं ताते वे निर्गुण सगुणके परे विलक्षण महलमें हैं। तिनमें जायके दिवाने भये । माया ब्रह्ममें जो दिवानेरहे सो छोड़ि दिये । अमहलमें दिवाना ह्वै गये महलन में साहबकी अनेक प्रकारकी लीलनको ध्यान कैकै हंसरूप में स्थित ह्वैकै रसरूपाभक्ति पानकैकै छकिरहे । रसरूपाभक्ति शांतशतक के तीसरे खंड में औ रामायणादिकमें हमलिखेन है सो देखिलेहु ॥ ४ ॥

ध्रुव प्रह्लाद विभीषण माते माती शिवकी नारी ।
सगुण ब्रह्म माते वृन्दावन अजहुं न छूटि खुमारी॥५॥

औ ध्रुव प्रह्लाद विभीषण औ पार्वती मतिगई औ सगुण ब्रह्म जे साक्षात नारायण श्रीकृष्ण हैं तेऊ वृन्दाबन में मतिगये । अबहूं भरखुमारी नहीं छूटी को भाव यहहै कि, जिनके शरीर छूटे तेतो साकेतहीमें जाय दिवानेभये कहे प्रेम में छके । ओ जिनके शरीर बनेहैं तिनहूंकी खुमारी नहीं छुटी कहे अबहूं भर श्रीरामचन्द्रहीकी उपासना करेहैं तामें प्रमाण ॥ (पूजितोनंदगोपाद्यैःश्रीकृष्णेनापिपूजितः । भद्रयामहिषीभिश्चपूजितोरघुपुङ्गवः ॥) यह ब्रह्मवैवर्त्त को प्रमाण है जौने को प्रमाण सब आचार्य दियो है ॥ ५ ॥

सुर नर मुनि जेते पीर औलिया जिनरे पिया तिन जाना।
कहै कबीर गूंगे को शक्कर क्यों करि करे बखाना ॥ ६ ॥

औ सुर नर मुनि जेते पीर औलिया हैं तिन में जे श्रीरामचन्द्र की उपासना कियेहैं तेई रसभरी प्रेमकटोरी पियो है औ तेई मन बचनके परेहैं । जे साहबके नामरूप लीलाधाम तिनको जान्यो है । सो जिनजान्यो है तिनको वर्णन करिबेको वह गूंगे को शक्कर है काहेत वह मन बचनकेपर है, नब वहीभांति उहोह्वै जाय तब वाको स्वाद पावै । काहू सों वाको कोई बखान नहीं करि सकैहै। सो कबीरजी कहैहैं । जो कोई कहै यहअर्थ नहीं है वह प्रेमको पियाला जो कबीरजी ब्रह्मको कहिआयेहैं वहीको पीपीके सब मतवार ह्वैगये हैं,सांचपदार्थ

नहींजान्यो, तौ हम यहकहै हैं कि, जिनको कबीरजी आगे वर्णन करिआयेहैं तेई नहीं जान्यो तौ तुमहीं कैसेजान्यो ? जो कहोहम अपने गुरुवनके बताये जान्यो तो गुरुवनको कह्यो बाणीको कह्यो तो तुमही झूंठकहौहो । जो कहो पारिख करिकेजान्यो तो पारिखकियेे तौ मन बचनके परे औ निर्गुण सगुणके परे जे शुद्ध जीवात्मा सदा रघुनाथजीके निकटवर्त्तीति औरश्रीरामचन्द्र येई आवैहैं वेद शास्त्रमें प्रमाण मिलै हैं तुमपारिखकहिके मनबचनके परेकौन पदार्थ-राख्यो है । जोकहो हमजीवात्माको मानै हैं औ कोई ब्रह्मको मानैहैं तौ आत्मा औ ब्रह्म येहू नामहै बचनमें आयगयो । औ तुम जो बिचारकरौहो सो मन में आयगयो । जो कहो तुमहीं कैसे श्रीरामचन्द्रको मनबचनके परे कहौहौ वोऊतो मन बचनमें आय जायहैं; तौ हम पूर्व लिखिआये हैं कि, नारायण राम अवतार लेईहैं तिनके नामरूप लीला धामके वर्णन करिके, वे जे परमपरपुरुषश्रीरामचन्द्रहैं तिनको सपरिकर लक्षितकरै हैं । वे मन बचनके परेहैं औ यहूआगे लिखिआये हैं कि ॥ (ऐसी भांति जो मोकहँ ध्यावै । छठयें मास दरशै सो पावै) ॥ सो अपनी इन्द्रियहै आपैदेखेपरे हैं जो कोई उनके प्रसन्नकारिबेको उपायकरै है सो साहिबैके जनाये जानै है । तामें प्रमाण कबीरजी की साखी सागरकी **चौपाई** ॥ (जानैसो जोमहीं जनाऊं । बांह पकारिलेके लैआऊं)॥ बीजकोमेंलिखी है साखी ॥ (बहुबंधनतेबांधिया एकबिचाराजीव । काबलछूटै आपनो जो न छुड़ावैपीव) ॥ उनको वर्णन कोई जीवनहीं करिसकै है, तेहिते जो पारिख हम कियो सोई सांचहै जो तुम पारिखकरौहौ सोझूंठहै । तुम श्रीकवीरजीको अर्थजानते नहींहो भ्रममें लगेहो अनामा उनहीं को नामहै अरु वोई हैं तामें प्रमाण ॥ (अनामासोप्रसिद्धत्वादरूपो भूतवर्जनात ॥ इति वायुपुराणे) ॥ ६ ॥

इति बारहवांशब्द समाप्त ।

अथ तेरहवांशब्द ॥ १३ ॥

राम तेरी माया दुन्द मचावै ।
गति मति वाकी समुझिपरै नहिं सुर नर मुनिहिं नचावै॥१॥

का सेमरके शाखा वढ़ाये फूल अनूपम बानी ।
केतिक चात्रिक लागि रहेहैं चाखत रुवा उड़ानी ॥ २ ॥
कहा खजूर बड़ाई तेरी फल कोई नहिं पावै ।
ग्रीषम ऋतु जब आय तुलानी छाया काम न आवै ॥ ३ ॥
अपना चतुर और को सिखवै कामिन कनक सयानी ।
कहै कबीर सुनो हो संतो ! रामचरण रति मानी ॥ ४ ॥

राम तेरी माया दुंदि मचावै ।

गति मति वाकी समुझि परै नहिं सुर नर मुनिहिं नचावै॥१॥

श्रीकबीरजी कहै हैं कि, हे जीवो ! राममें जो तिहारी माया जो कपट सो दुन्दिमचावै है । कैसीमायाहै कि, जाकी गति मति नहीं समुझिपरै, सुरनर मुनि जे हैं तिनहूं को नचावै । अर्थात् उनहूंको लागिहै । सो साहब को न जानिबो रूपकारण जगत्को आदि मंगलमें कहि आये हैं ॥ १ ॥

का सेमरके शाखा वढ़ये फूल अनूपम बानी ।
केतिक चात्रिक लागि रहेहैं चाखत रुवा उड़ानी ॥ २ ॥

सो हेजीवो ! तुम द्वन्द्वमाया को त्यागौ साहबको जानो या संसाररूप सेमरको वृक्ष तामें नाना बासना नाना देवतनकी उपासनारूप शाखा बढ़ाये कहाहै । जैनेवृक्षमें अनुपम कहे साहब के जाननेवारे विशेषकर ज्ञानवारे जो नहीं कह्यो ऐसी गुरुवनकी वाणीसोई फूलहै । ताहीते भयो जो धोखा ब्रह्मको ज्ञान सोई-फलहै । तामे केतको चात्रिकरूप जीवलागि रहेहैं । इहां चात्रिकै कह्यो और पक्षी न कह्यो, सो चात्रिक पियासो रहै है और इनहूंको मुक्तिकी चाह रहैहै । पक्षी रस नहीं पावै है इन मुक्ति नहीं पावै है । चाखतमें रुवा उड़ै है पक्षीके जीभमें लपटिजाय है, जीभहुको रससूखि जायहै । इहां वा ज्ञानको जब अनु-

---

१ क्या ।

भव कियो तब गुरुवालोग बतायो कि तुमहीं ब्रह्महौ,तुम्हारई जीवात्मा मालिकह सबको । राम सबको खाय लेयहै रामको का भजो रामतौ मायिकहै । जो कुछ उनकी श्रीरामचन्द्रमें बासनारही सोऊ छूटिगई । यही गुरुवाहै पक्षी वा रस नहीं पावै है तबखेद होइ है औ या वही ज्ञानमें दृढ़ता करिके उड़त उड़त नरकही में गिरै है नरकमें दुःख पावैहै ॥ २ ॥

कहा खजूर बढ़ाई तेरी फल कोई नहिंपावै ।
ग्रीषम ऋतु जब आय तलानी छाया काम न आवै॥३॥

अब धोखा ज्ञानवालेनको खजूरको दृष्टांतदैके कहै हैं । खजूरकी बड़ाई ले कहा करै फल तो कोई पावतै नहीं है । ग्रीष्मऋतु में छायाकाहूके काम नहीं आवैहै । वाके तरेही रहैहै, आतप तपतै रहै है । ऐसे हे गुरुवा लोगो ! तुम्हारी बड़ी बड़ाई कि, मैंही ब्रह्महौं, मोते बड़ो कोई नहीं है,आत्मै मालिक है। सो न कोई ब्रह्मै भयो ना आत्मै मालिक भयो या फल कोई नहीं पायो । जो कोई तुम्हारे मत में आवै है उनको जनन मरणरूप ग्रीष्म तापनहीं छूटै है या तुम्हारो उपदेश रूप छाया काहूके काम नहीं आवै है ॥ ३ ॥

अपना चतुर औरको सिखवै कामिनि कनक सयानी ।
कहै कबीर सुनो हो सन्तो रामचरण रतिमानी ॥ ४ ॥

गुरुवालोग कनक कामिनीके मिलिबेको आप चतुर ह्वैरहे हैं । कनक सुवर्ण कहावै है सो आत्मा को सुवर्ण जोहै स्वस्वरूप सो मायारूपी कामिनीमें लपटयोहै तेहिते शुद्धनहीं है । अथवा कनक जोहै सुवर्ण सो शुद्धहै औ सुवर्णके जेहैं भेद कुण्डलादिक भूषण तिनके भेद मिथ्याहैं । ऐसे और सबको मिथ्या-मानिके एकब्रह्म हीको मानिबो । औ कामिनीमें सयानी कहे ज्ञान करिकै बिचारै है कि, कामिनी माया हई नहीं है, मिथ्या है । यही सयानी कहे ज्ञान आपऊ सिखै है औ औरहूको सिखावै है परन्तु जननमरण होतई जायहै माया नहीं छूटै है सो कबीरजी कहै हैं कि, हेसंतो ! याहीते मैं ये बखेड़नको छोड़ि-के परमपरपुरुष जे श्रीरामचद्र हैं तिनके चरणनमें रतिमान्यो है । इहां संतनको

साखी देकै जो कह्यो ताकोहेतु यहहै कि, संत समुझैंगे कि, सांच कहैं हैं कि, झूठ कहैं हैं । अथवा हे जीवो ! मेरो सिखावन सुनो—श्रीरामचन्द्रके चरणमें रतिमानिके जैसे, सब भयो है, नानामत कियो है, तैसे, एकबार मेरो वचन सुनि रामचरणमें रतिमानिके संत होउ । व्यंग्य यहहै कि, जो संतहोउगे तो जननमरणते रहित ह्वैजाउगे औरी भांति न छूटौगे । अथवा अपना चतुर और को सिखवै कहे अपनो चतुर नहीं है मायाही मैं परे हैं और और को कनक कामिनीमें सयानी कहे बिचारकरावै है कि, कनक कामिनीरूप मायाको बिचारकै देख्यो या मिथ्या है । सो जो आप चतुर नहीं भये कनककामिनी नहीं त्यागे तो उनके उपदेशते कनककामिनी माया कब त्यागैंगे ॥ ४ ॥

इति तेरहवां शब्द समाप्त ।

अथ चौदहवांशब्द ॥ १४ ॥

रामरा संशय गांठि न छूटै । ताते पकरि पकरि यमलूटै ॥ १ ॥
ह्वै मसकीन कुलीन कहावो तुम योगी संन्यासी
ज्ञानी गुणी शूर कवि दाता ई मति काहु न नासी ॥ २ ॥
स्मृति वेद पुराण पढै सब अनुभवभाव न दरशै ।
लोह हिरण्य होय धौं कैसे जो नहि पारस परशै ॥ ३ ॥
जियत न तरे मुये का तरिहौ जियतै जो न तरै ।
गहि परतीति कीन जिन जासों सोई तहैं मरै ॥ ४ ॥
जो कछु कियो ज्ञान अज्ञाना सोई समुझु सयाना ।
कहै कबीर तासों का कहिये देखत दृष्टि भुलाना ॥ ५ ॥

रामरा संशय गांठि न छूटै । ताते पकरि पकरि यमलूटै १

है मसकीन कुलीन कहावौ तुम योगी संन्यासी।
ज्ञानी गुणी शूर कवि दाता ई मति काहु न नासी॥२॥

रामराकहे रकार जिनको मराहै अर्थात् रकार बीजको जिन को अभावहै, रामोपासक नहीं हैं, तिनकी संशयकी गांठिनहींछूटै है, तेहितेपकरिपकरिके यम लूटिलेइहैं अर्थात् याकोमारिकै नरकमें डारिदेइँ हैं! फिरिफिरि शरीर पावै है फिरिलुटि जायहै मारो जायहै॥ १ ॥ मसकीन कहे गरीब फकीर हैकै कुलीन कहावै है कहे भये तौ फकीर परन्तु कुलाभिमान नहीं छूटै है कहै हैं कि, हम-फलाने गद्दीके मुरीदहैं। सो तुम योगी हौ संन्यासी हौ ज्ञानी हौ गुणी हौ शूर हौ कविहौ दाताहौ इत्यादिक जो भेदकी मति हैं सो कोई न नाशकियो काहेते कि, हे संतो! ये परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्रके अंश हैं सो यह कोई नहीं जान है औ यह जगत् चित् अचित् बिग्रहकरिकै साहबको रूपहै भेदकी बुद्धि लगाइ राख्यो है ॥ २ ॥

स्मृति वेद पुराण पढै सब अनुभव भाव न दरशै।
लोह हिरण्य होय धौं कैसे जो नहिं पारस परशै॥३॥

स्मृति वेद पुराण सबै पढ़े हैं परंतु परमपरपुरुष जेश्रीरामचन्द्रहैं सबके तात्पर्य तिनको अनुभव काहूको नहीं दरशै है। जो पारसको स्पर्श न होय तौ लोह हिरण्य कहे सोन कैसेहोय न होय। तैसे स्मृति वेदपुराणनको तात्पर्य श्रीराम-चन्द्रहैं तिनके चरणको जोलौं न परशै तौलौं मुक्ति नहीं होयहै पार्षद रूपता वाको प्राप्ति नहीं होयहै ॥ ३ ॥

जियत न तरै मुयेका तरिहौ जियतै जो न तरै।
गहि परतीति कीन जिनजासों सोई तहैं मरै॥४॥
जो कछु कियो ज्ञान अज्ञाना सोई समुझि सयाना।
कहै कबीर तासों का कहिये देखत दृष्टि भुलाना॥५॥

सो जियतमें जो न तुम तरोगे तौ मुयेकैसे तरौगे। सो हे जीवो! जियतै काहेनहीं तरिजाउहौ। जासों कहे जौने साहबसों जाके स्पर्शकिये जीव शुद्ध

ह्वै जायहै तौने साहबसों जो कोई (जहैं साहबको मत गहिकै) परतीति कहे बिश्वासकीनहै सो जानतहै कहे संसारहीमें अमर ह्वै गयो ह्वै ॥ ४ ॥ सो कबीरजी कहैं हैं कि, ये जीव ज्ञान करैं हैं कि अज्ञान करै हैं ताहीको सब कुछ मानिकै आपने को सयान मानैहै तिनसों कहा कहिये जो अपनी दृष्टिते देखत देखत भुलायदियो । स्मृतिवेद पुराण चक्रवर्ती परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहीको कहैं हैं, उनहींके भक्त हनुमान् बिभीषणादिक अमर भयेहैं, सो देखतेहैं औ यह नहीं समुझैहैं कि, सबके मालिक बादशाह श्रीरामचद्र हैं, इनहींके छोडाये छूटैंगे औरके छोडाये न छूटैंगे ॥ ५ ॥

इति चौदहवां शब्द समाप्त ।

अथ पन्द्रहवां शब्द ॥ १५ ॥

रामरा चली बिनावन माहो । घर छोड़ेजात जोलाहो ॥ १ ॥
गज नौ गज दश गज उनइसकी पुरिया एक तनाई ।
सात सूत नौ गाड़ बहत्तरि पाट लागु अधिकाई ॥ २ ॥
तापट तूल न गजन अमाई पैसन सेर अढ़ाई ।
तामें घटै बढ़ै रतिओ नहिं कर कच कर घरहाई ॥ ३ ॥
नित उठि वैठ खसम सों वरवस तापर लाग तिहाई ।
भीनी पुरिया काम न आवै जोलहा चला रिसाई ॥ ४ ॥
कहै कवीर सुनोहो संतो जिन्ह यह सृष्टि उपाई ।
छाड़ि पसार रामभजु बौरे भवसागर कठिनाई ॥ ५ ॥

रामरा चली बिनावन माहो । घर छोड़ जात जोलाहो ॥ १ ॥

रामरा कहे रा जिनको मराहै अर्थात् रकार बीजको जिनके अभावहै साहबको नहीं जानें । ऐसेजे समष्टिजीव तिनके इहां माजो है कारणरूपा माया सोबिनावनको कहे बिनवावनको चली अर्थात् जगत् बनवाइबेको चली । इहां

बिनबो न कह्यो बिनवाइबो कह्यो सोबिना चैतन्य ब्रह्म औजीवके लपेटे याको बनायो नहीं बनै है काहेते कि, यह जड़है अर्थात ब्रह्म जीवको संयोग करिके बनवानको चली । ब्रह्मजीवके पाससों जोलाहा जो यह जीवहै सो घरको छोड़ेदेयहै अर्थात् यहशुद्ध जीवात्मा आपनो जो घरहै साहबके लोकको प्रकाश जहांशुद्ध रहैहै तौनै घरको छांड़िकै, माया के लपेटमें परिके, आपने बंधनको आपने मन करिके संसाररूपी पटको बनावैहै ॥ १ ॥

गज नौ गज दश गज उनइसकी पुरिया एक तनाई ।
सात सूत नौ गाड़ बहत्तर पाट लागु अधिकाई ॥ २ ॥

प्रथम एकगजकी कल्पनारूप पुरिया तनावत भई प्रथम जीव बाणी प्रणवरूप एक गजकी पुरिया अनुमान ब्रह्म बनायो अर्थात् मन भयो । पुनि नौ गजकी पुरिया तनावत भई सो नवौ व्याकरण बनावत भई । अर्थात नवौ व्याकरणमें शब्द ब्रह्मको वर्णन ह सो शब्द बनावत भई । पुनि दश गज की पुरिया तनावत भई, सो चारवेद औ छः शास्त्र ई दशगजकी पुरिया तनावतभयी सो अठारहौं पुराण उनीसौं महाभारत ये उनइसगजकी पुरिया बनावत भयो ॥ २ ॥ पुनि सात सूत कहे सप्तावरण १ पृथ्वी २ अप् ३ तेज ४ बायु ५ आकाश ६ अहंकार ७ महत्तत्त्व अथवा सात सूत १ जाग्रत् २ महाजाग्रत् ३ बीजजाग्रत् ४ स्वप्नजाग्रत् ५ स्वप्न ५ सुषुप्ति ६ औ७ महासुषुप्ति ये सात अज्ञान भूमिका बनावतभयो पुनि नवगाड़ कहे नवद्वार बनावत भयो बहत्तर पाटकहे बहत्तर कोठा अथवा बहत्तर हजारनस बनावत भयो ॥ २ ॥

ता पट तूल न गजन अमाई पसन सर अढ़ाई ।
तामें घटै बढ़ै रतिवो नहिं कर कच कर घरहाई ॥ ३ ॥

तापट कहे तौन जो है शरीर संसाररूपी पट तामें जब अहंब्रह्म भ्रमरूप तूलरह्यो तबतो गजमें नहीं अमातरह्यो कहे अप्रमेय रह्यो है । औ सेरकहे सिंहरूप रह्योहै संसारको नाशकै देनवारो रह्योहै । सो संसारी ह्वैके जैसे सूतपैसा को अढ़ाईसेर बिकाय है तैसे यह जीवात्मा बिषयरूप पैसाको चाहिके अढ़ाई सेरह्वैगयो । एकै पृथ्वीको विषय सुख चाहैहैं एकै यज्ञादिक करिकेस्वर्ग-

को विषय सुख चाहै हैं, आधेमुमुक्षू ह्वैके ईश्वरन के लोकको सुख चाहै हैं, औ ब्रह्ममें लीनह्वैबो चाहै हैं, इनमें पूरीविषय भोगनहीं है, याते आधाकह्यो अहंब्रह्म तूलते नाना शरीर भ्रमरूप सूत निकस्यो एकते बहुत ह्वैगयो। जोपट संसारमें बिनिगयो सो पट जो है संसार सो रत्तीभर न घटैहै न बढ़ैहै घरहाई जोहैं जीवैकीनारीमायासो यहीजींवको कच आपने करमें करिलियोहै अर्थात् यहजीवकी चूँदीगहि लियोहै मायाको भोक्ताजीवहै यातेजीवहीकी स्त्री माया है ॥ ३ ॥

नित उठि बेठ खसमसों बरबस तापर लागु तिहाई।
भीनी पुरिया काम न आवै जोलहा चला रिसाई ॥४॥

खसम जो जीवहै तासो नित उठिउठिके बरबस कहे जबरदस्ती बेठ कहें बेगारि लेयहै सोएकतो संसारमें माया बेगारिलेयहै दूसरो जोभागनते यह संसारउठो तो आतमा को तिहाईलगी कहे त्रिकुटीमें धोखा ब्रह्मको ध्यान लगायो। जोनेमें बिनिजायहै तौन पुरिया कहावैहै। सो जब भीजिजायहै तब नहीं काम आवैहै। ऐसे यह संसार पुरिया है नाना पदार्थ ते जो है राग तेहिकारिकै जब शरिर भीज्यो तब यह संसारको असार जानिके कहे संसार कुछ कामको न जानिके जोलाहा जोहै जीव सो रिसाय चल्यो, धोखाब्रह्ममें लगतभयो; सोऊ ब्रह्मतो तांहीको अनुभव है वहअनुभव ब्रह्ममें कछु न पावतभयो ॥ ४ ॥

कहै कबीर सुनो हो संतो जिन यह सृष्टि उपाई।
छाडि पसार राम भजु बौरे भवसागर कठिनाई ॥ ५॥

सो कबीरजी कहैहैं कि, जामें तुम लग्यो है सोतो तिहारोई मन को अनुभवहै अरु यह संसारऊको तुम्हारो मनही रच्यो है सो जिन सृष्टिवाली उपाय कियोहै तेहि माया ब्रह्मते छोड़ि पसार परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र को भजन करु, काहेते कि, यह भवसानर परमकठिनहै उनहींके भजन किये छूटैगो, औरीभांति न छूटैगो, और तो सब याही में परेहैं अथवा यहकाठिन भवसागरमें आयके श्रीरामचन्द्रही को भजन करि मनते छूटैगो ॥ ५ ॥

इति पन्द्रहवां शब्द समाप्त।

अथ सोलहवां शब्द ॥ १६ ॥

रामरा झीझी जंतर वाजै । कर चरण विहूना राजै ॥ १ ॥
कर विन वाजै श्रवण सुनै विन श्रवणै श्रोता सोई ।
पाटन स्ववश सभाविनु अवसर बूझौ मुनि जन लोई ॥ २ ॥
इन्द्रिय विनु भोग स्वाद जिह्वा विनु अक्षय पिंड विहूना ।
जागत चोर मँदिर तहँ मूसै खसम अछत घर सूना ॥ ३ ॥
बीज विन अंकुर पेड़ विनु तरुवर विनु फूले फल फलिया ।
बांझ की कोखि पुत्र अवतरिया विन पग तरुवर चढ़िया ॥ ४ ॥
मसि विनु द्वाइत कलम विनु कागज विनु अक्षर सुधि होई ।
सुधि विनु सहज ज्ञान विन ज्ञाता कहै कबीर जन सोई ॥ ५ ॥

पूर्व मायाको बर्णनकरिआये तौनी मायाते छूटिके जौने उपाय ते साहब को पावै है सो उपाय कहै हैं ॥

रामरा झीझी जंतर वाजै । कर चरण विहूना राजै ॥ १ ॥

हे जीव! राम कहे रकार तोको मरौहै अर्थात् रकार बीज को तोको अभाव है याहीते तैं अपने को ब्रह्म मानिके संसारी ह्वै गयोहै । झीझीकहावै झिंझिया जो कुवार शुक्लचतुर्दशीको अनेक छिद्रकै जो मटुकी होयहै ताके मध्यमें दीप बारिके धरैहै सो झिझियानांव ढेढियाको कवि संप्रदायहूमेंहै ॥ (रंध्र जाल मग ह्वै कढ़ै तिय तन दीपति पुंज । झिझियाके सो घट भयो दिनहूमें बनकुंज) ॥ (सारीमूलामलसी फलकांति झरोखन की झझरी झिझियासी) सोझिझिया रूप-नव दुवारको । अथवा रोम रोम में छिद्र है जामें वोई छिद्रन ह्वै पसीना निकसैहै यहिप्रकारको झींझी जोहै शरीर तौनेजन्तरबाजै है कहे ताहीको यह सोहं शब्दहै काहेते कि, श्वासा कहैहैं सोवहीश्वासके कहेते करचरण बिहून जो निराकार ब्रह्महै सो तेरे आगेराजै कहे शोभित होन लग्यो । अथवा आंखिन के आगे नाचन लग्यो, सर्वत्र ब्रह्महो देखि परनलग्यो । अथवा तैंहीं करचरण

बिहून कहे निराकार ब्रह्म ह्वैके नाचन लग्यो । अथवा राजै कहे शोभित भयो सो तुम तो शरीरते भिन्नहो जैसे ढेढिया ते दीप भिन्न रहै है । वह सोहं शब्द तो शरीरको है वाको कहे तुम काहे धोखा में परेहौ । तुम निर्गुण सगुणके परे जो है साहब ताके हौ तिनमें लगौ । निर्गुण सगुणके परे कैसे साहबहैं सो कहै हैं ॥ १ ॥

कर बिनु बाजै श्रवण सुनै बिन श्रवणै श्रोतासोइ ।
पाटन स्ववश सभा बिनु अवसर बूझौ मुनिजन लोई ॥२॥

साहब के लोकके जेबाजाहैं ते बिन कर बाजैं हैं काहेते कि वहां के जे बाजा हैं ते पांचभौतिक नहीं हैं, औ उहांके जे बासी हैं तिनके शरीर पांचभौतिक नहींहैं अर्थात् मनबचन के परेहौ औ प्राकृतजे हैं प्रकृति संबंधी पदार्थ साकार औ अप्राकृत जो हैं निराकार ब्रह्म लोक प्रकाश ताहूते बिलक्षण है । कर बिना कह्यो याते साकारौ नहीं है औ सो बाजै है याते निराकारौ नहीं ह। औ सोई श्रोता जे हैं लोकवासी ते श्रवनते सुनै हैं औ श्रवण नहीं हैं याते साकारौ नहीं है औ श्रवणते सुनै है याते निराकारौ नहीं है । मायाब्रह्म जीव को जो अरुझा लाग्येहै सो जीव साहबको स्मरण करै ताके पाटन कहे पटाइ-लीबे को साहब स्ववशहैं अथवा नौकर जाको राखैहैं ताको पट्टा लिखि देइहैं सो पाटा कहावै है सो इहां पाटन बहु बचन है सो जीव उनके शरण जायहैं तिनको पाटन के लिखि दीबे में अपनायलीबे में स्ववश हैं तामें प्रमाण॥ (सकृदेवप्रपन्नायतवास्मीतिचयाचते । अभयंसर्वभूतेभ्योददाम्येतद्व्रतम्मम) ॥ औ बिना अवसर कहे बिना काल उनकी सभा लागी रहैहै वहां कालकी गति नहीं है औ बाजन सदाबाजैहैं अर्थात् सदा रास उहां होता रहैहै । सो हे मनन शील मुनिलोगो! तुम उनहीं को समुझौ औ उनहींको मनन करो वहधोखा ब्रह्मे के मनन कीन्हेते तुम्हारो जनन मरण न छूटेगो ॥ २ ॥

इन्द्रि बिनु भोग स्वाद जिह्वा बिनु अक्षय पिण्ड बिहूना ।
जागत चोर मँदीर तहँ मूसे खसम अछत घरसूना ॥ ३ ॥

तुम वह साहब को कैसे समुझौ इंद्रिय बिना ह्वैके साहब के लोक को जोहै भोग सुख है ताको लेऊ औ बिना जिह्वा ह्वैके अनिर्बचनीय जो राम नामहै ताको स्वादलेऊ। औ पिंड बिहूनाकहे पांचौ शरीरते बिहीन ह्वैके कहे पांचौ शरीरनको छोड़िकेहंसस्वरूपमें स्थित ह्वैके अक्षय कहे अक्षय ह्वै जाऊ। तुम्हारे अंतःकरण रूपीघरको चोरजोहै धोखा ब्रह्म सो मूसि लेय है अर्थात् साहब को ज्ञान चोराये लेयहै तुमहीं अहं ब्रह्म बुद्धि कराये देयहै। काहे ते कि खसम जे हैं साहब ते अछत बने हैं औ तुम अपनो हृदय घरसून करि राख्यो है साहब को नहीं राख्यो अर्थात साहब को नहीं जान्यो ॥ ३ ॥

बीज बिनु अंकुर पेड़ बिनु तरुवर बिन फूलै फल फलिया।
बांझकी कोखि पुत्र अवतरिया बिन पग तरुवर चढ़िया॥४॥

इहां याकु अर्थ है बीज बिना कहूं अंकुर होय हैं ? औ पेड़बिना कहे बिना जर कहूं तरुवरहोय हैं ? औ बिना फूलकहूंफल होय हैं ? अरु बांझके कोखिमें कहूंपुत्रहोइहै ? औबिनापगकोईतरुवरमें चढ़है ? सो बीज तौ वह ब्रह्मको कहौ-हौ सोतो शून्य है, कोईपदार्थनहीं है अंकुर कैसे भयो कहे कैसमाया सबलित ब्रह्म भयो। औ पेड़ जड़ मायाको कहौ सो तो मिथ्या है संसार तरुवर कैसे भयो। औज्ञानरूप जो फूल है ताहूको तो मूलाज्ञान कहौ हौ, सोऊ मिथ्या है, कहो तो मुक्तिरूपी फल कैसे फर्यो। औ मनको तौ जड़ कहौ हौ, ताको अनुभव प्रबोधरूपी पुत्र कैसे भयो। औ आत्मा को तौ अकर्त्ता. कहौ हौ मन बुद्धि चित्तते भिन्न है सो बिना पांव संसार वृक्षको चाढ़िके कैसे चैतन्याकाशको पहुंच्यो ॥ ४ ॥

मसि बिनु द्वाइत कलम बिनु कागद बिनु अक्षर सुधि होई।
सुधि बिनु सहज ज्ञान बिन ज्ञाता कहैं कबीर जन सोई॥५॥

बिना दुआइति मसि कैसे रहैगी अर्थात् मनको तो मिथ्या कहौ हौ मनको अनुभव कैसे रहैगो। वह मिथ्याई होयगो। औ बिना कागज कलम कहा करैगी अर्थात् देहेन्द्रियादि अंतः करण तो मिथ्ये कहौ हौ ज्ञान केहिके आधारहोयगो जहां बुद्धिरूपी कलमते लिखौगे निश्चय करौगे औ जो यहपाठ होय "बिनअ-

क्षर सुधिहोय" तौ यह अर्थ है कि, जो एक आत्माही को सत्य मानोगे तो साहब को बिना अक्षर कहे बिना अनादि माने सुधि कहे सुरति तुम को कैसे होयगी । औ कौनसुरति देयगो । औ सुधिबिन कहे जो सुधि न भई तो सहज कहे सो हंसो कैसे होयगो । तेहिते बिनाज्ञाता को ज्ञानकरु कहे अबैते अपने को ज्ञाता मानि रहे हैं कि, मैं अपनो बिचारकरत करत औ सबको निषेध करत करत जो पदार्थ रहि जाय है ताहीको मानिलेउंगो कि, यहीतत्व है सो यह भ्रमछांड़ो, तेरेजानेते साहब न जानिपरेंगे साहब मनबचन के परे हैं । सो जौन बिना ज्ञाताको ज्ञान है जो साहब देय हैं काहेते कि, वह ज्ञान काहूको नहीं जानो है जब साहब आपनो रूपदेय हैं, तब वह रूपते जानि परै, साहब हीके रूपको जानोपरै है । वाको ज्ञाता कोई नहीं है । सो ज्ञानकरु अर्थात् रकार ध्वनि श्रवण रूप साधनकरु तब साहबई तोको हंसस्वरूपः दैके आपने नामरूप लीलाधामको स्फुरित करायदेयँगे । तौने हंसस्वरूप की आँखीते श्रवण ते साहब को देखु औ साहबके गुणसुनु । सो कबीरजी कहै हैं कि, यहि तरह ते जाके बिना ज्ञाताको ज्ञान है सोई मेरोजन है । अर्थात् जौनेलोक में हमारी स्थिति है तौनेही लोकको वहजन है बिनाज्ञाताकोज्ञान कौन कहावै है जो साहब देय हैं तामेंप्रमाण ॥ "तेषांसततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम् । ददामि बुद्धियोगं तं येनमामुपयांतिते " ॥ इतिगीतायाम् ॥ ५ ॥

इति सोलहवां शब्द समाप्त ।

अथ सत्रहवां शब्द ॥ १७ ॥

राम गाइ औरन समुझावै हरि जाने बिन बिकल फिरै ॥ १ ॥
जा मुख वेद गायत्री उचरै ता सु वचन संसार तरै ।
जाके पाँव जगत उठि लागै सो ब्राह्मण जिउ बद्ध करै ॥ २ ॥
अपना ऊंच नीच घर भोजन घीण कर्म करि उदर भरै ।
ग्रहण अमावस ढुकि ढुकि माँगै कर दीपकलिये कूपपरै ॥ ३ ॥

एकादशी व्रतौ नाहिं जानै भूत प्रेत हठि हृदय धरै ।
तजि कपूर गांठी विष बांधे ज्ञान गमाये मुग्ुध फिरै ४
छीजै शाहु चोर प्रतिपालै संत जननकी कूटकरै ।
कहै कबीर जिह्वाके लंपट यहि विधि प्राणी नरक परै ५

राम गाइ औरन समुझावै हरि जाने बिन विकल फिरै॥१॥
जा मुख वेद गायत्री उचरै तासु वचन संसार तरै ।
जाके पाँव जगत उठि लागै सो ब्राह्मण जिउ बद्ध करै॥२॥

श्रीरामचन्द्रको गावै हैं औ औरनको समुझावै हैं औ सबके कलेश हरन-वारे जे साहब हैं तिनको नहीं जानै कि, येई क्लेश हारि हैं हरि येई हैं । सो या नाना देवता नाना उपासना खोजत बिकल फिरै हैं॥ १॥अरु जाके मुखते वेद गायत्री जो वचनहैं सो उचरै हैं वहीको तात्पर्यार्थ जे श्रीरामचन्द्रहैं तिन्हैं जानि-संसार तरैहै ताको अर्थ न जानते कि वेदगायत्री तात्पर्यार्थ ते श्रीरामचन्द्र-हीको कहै हैं तामें प्रमाण ॥ "सर्ववेदाः सघोषाश्च सर्ववर्णाः स्वरा अपि । समात्रास्तुविसर्गाश्चसानुस्वाराः पदानिच । गुणसांद्रेमहाविष्णौ महातात्पर्य्य-गौरवात" ॥ इतिमहाभारते ॥ जेब्रह्मादिकमें विष्णु हैं त विष्णुहैं औ महा विष्णु श्रीरामचन्द्रही कहावै हैं तिनको तो नहीं जानै हैं । वेद गायत्री पढ़ै हैं औ वही मुखते हिंसा शिष्यनते प्रतिपादन करै हैं समुझावै हैं । औ आपहू हिंसा करै हैं । तिनहीं के पांय सब जगत् उठिलागै हैं अरु वाहीको कहा सब सुनै हैं ॥ २ ॥

अपना ऊंचनीचघर भोजन घीण कर्म करि उदर भरै ।
ग्रहण अमावस ढुकिढुकिमाँगै करदीपक लियेकूपपरै॥३॥

आपतौ जातिमें ऊंचे हैं परंतु नीचके घर भोजन करै है औ जौन कर्म अपने को उचितनहीं है तौन घिनहा कर्म कैकै पेट भरै है । औ ग्रहणमें अमा-वसमें ढुकिढुकिमाँगै है कि, यहकुदान आन न लैजाय, हमैं लेइँ । औ राम-नाममुंहते कहै हैं सो नाम रूपी दीपक लीन्हे भ्रम कूपमें परे हैं ॥ ३ ॥

एकादशीव्रतौ नहिं जान भूत प्रेत हठि हृदय धरै ।
तजि कपूर गाँठी विष बांधै ज्ञान गमाये मुगुध फिरै॥४॥

औ एकादशीव्रत उपलक्षणै है अर्थात साढ़े अट्ठाईस जे व्रत हैं चौबीस एकादशी औ रामनवमी, कृष्णाष्टमी, बामनद्वादशी, नरसिंहचतुर्दशी और आधाअनन्त । येजे वैष्णवीव्रतहैं तिनको नहीं जानै हैं अर्थात वैष्णवी उपासना नहींकरैं औ मुंहते रामरामकहै हैं । औ भूत प्रेत यक्षिणी आदि जे उपासनाहैं तिनको करै हैं तामें प्रमाण॥ "अंतः शैवाबहि श्शाक्ताः सभामध्येच वैष्णवाः । नानारूपपधराः कौला विचरन्तिमहीतले" ॥ सो रामनाम जो कपूर है ताको छोड़िकै नाना पाखंड मत जो विषयहैं ताको धारण कीन्हे ज्ञान गमायके मूर्खचारों ओर फिरै हैं ॥ ४ ॥

छीजै शाहु चोर प्रतिपालै सन्त जननकी कूटकरै ।
कहै कवीर जिह्वाके लंपट यहि विधि प्राणी नरकपरै॥५॥

तेहिते शाहु जो आत्मा परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्रको अंश सदाको दास या जीवको स्वरूपहैं सो जेहैं ते छीजैहैं । अर्थात् वह ज्ञान वाको भूलिजायहै । गुरुवनके बताये जेनाना पाखंडमत तेई चोरहैं तिनको प्रतिपाल कियो कहेसंग कियो तेईज्ञानको चोरायलेयहैं । औ जे साहबके ज्ञानके बतैया जे संतहैं तिनहींकी कूट करै हैं कि, ये मुड़ियनको मत वेदशास्त्रके बहिरे हैं । सो कबीरजी कहै हैं ऐसे जिह्वाके लंपट प्राणी हैं ते नरकहीमें परै हैं ॥ ५ ॥

इति सत्रहवां शब्द समाप्त ।

अथ अठारहवां शब्द ॥ १८ ॥

राम गुण न्यारो न्यारो न्यारो ।
अबुझा लोग कहांलौं बूझ बूझनहार विचारो ॥ १ ॥
केते रामचन्द्र तपसीसों जिन यह जग विटमाया ।
केते कान्ह भये मुरलीधर तिनभी अंत न पाया ॥ २ ॥

मत्स्य कच्छ बाराह स्वरूपी बामन नाम धराया ।
केते बौद्ध भये निकलंकी तिनभी अंत न पाया ॥ ३ ॥
केतक सिद्ध साधक संन्यासी जिन बनवास बसाया ।
केते मुनि जन गोरख कहिये तिनभी अंत न पाया ॥ ४ ॥
जाकी गति ब्रह्मै नहिं पाई शिवसनकादिक हारे ।
ताके गुण नर कैसेपैहौ कहै कबीर पुकारे ॥ ५ ॥

राम गुण न्यारो न्यारो न्यारो ।
अबुझा लोग कहांलौं बूझैं बूझनहार बिचारो ॥ १ ॥

परमपुरुष पर जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनके गुण न्यारे न्यारे हैं । इहां तीन बार जो कह्यो ताते या आयो कि साहबके गुण, मायाके गुणते जीवात्माके गुणते ब्रह्मके गुण न्यारे हैं । कौनी रीतिसे न्यारे हैं कि, मायाके गुण नाशवान् हैं बिचार किये मिथ्या हैं । औसाहबके गुण नित्यहैं साँचहैं, औ जीवात्माके गुण अणु हैं । औ साहब क गुण विभुहैं औ ब्रह्मनिर्गुणत्वगुणब्रह्ममें है औ साहब निर्गुण सगुणके परे है सो या प्रमाणपीछे लिखिआये हैं ॥ " अपाणिपादोजवनो गृहीता" इत्यादि औब्रह्मसंबंधी अनुभवानंदजीवको होइ है औ साहब अनुभवातीत है याते साहबक गुण सबते न्यारे हैं सो वा बात अबुझा लोग कहांलौं बूझैं, कोई बूझनहार तो बिचारते जाउ ॥ १ ॥

केते रामचन्द्र तपसी सा जिन यह जग बिटमाया ।
कत कान्ह भये मुरलीधर तिनभी अंत न पाया ॥ २ ॥

केतन्यो रामचन्द्र हैं कौन रामचन्द्र ज तपस्वी ब्रह्म हैं तिनसों जगत बिटमाया कहे बनायोहै । अर्थात् जे नारायण रामावतार लेइहैं सो ब्रह्माते कैसे जग बनवायो । सो कथा पुराणन में प्रसिद्धहै कि, कमलमें ब्रह्मा भये, तब आकाशबाणी भई, " तप तप " तब तपस्या कियो, तब नारायण प्रकटभये,

ते ब्रह्माते कह्यो कि, जगत् बनावो, तब बनावतभये। नारायण जे रामावतार लेइ हैं तामें प्रमाण " यदास्वपार्षदौजातौराक्षणप्रवरौमिये । तदानारायणः साक्षाद्रामरूपेणजायते ॥ प्रतापीराघवसखा भ्रात्रावै सहरावणः । राघवेणतदासाक्षात्साकेतादवतीर्यते " ॥ नारायण अंत न पायो ते नारायण रामचन्द्र क्षीरशायी श्वेत द्वीप निवासी बहुतहैं जिनकेगुण को अंतकोई नहीं पावैहैं । अरु जिनके गुण सबके गुणते न्यारे हैं ते श्रीरामचन्द्र एकई हैं । औ केतकान्ह मुरलीधर भये तिन भी अंत नहीं पायो काहेते कि उनके अनंत गुणहैं ॥ २ ॥

मत्स्य कच्छ बाराह स्वरूपी वामन नाम धराया ।
केते बौद्ध भये निकलङ्की तिनभी अंत न पाया ॥ ३ ॥
केतिक सिद्ध साधक संन्यासी जिन वन बास बसाया ।
केते मुनिजन गोरख कहिये तिनभी अंत न पाया ॥ ४ ॥

औ केतन्यो मत्स्य कच्छ बाराह बामन बौद्ध कलकीरूप भये तिनभी अंतनहीं पायो सोई अवतार जो कहिआये तिनमें बामन नरसिंह आदिक अवतार आइगये तेऊ अंतनहीं पायो है॥ ३॥ औ केतन्यो सिद्ध साधक संन्यासी भये जे बनमें बासकरतभये औ केतन्यो मुनि गोरख इंद्रिन के रखवार भये तेऊ ताको अंत नहीं पायो ॥ ४ ॥

जाकीगति ब्रह्मैनहिं पाई शिव सनकादिक हारे ।
ताके गुण नरकैसे पैहौ कहै कबीर पुकारे ॥ ५ ॥

औ जाकी गति ब्रह्मा शिव सनकादिक नहीं पायो काहेते कि, तिनके अनंत गुन हैं सो हे नर! तुमकैसे पावोगे? जे गुरुवनके कहे कहौहौ कि महीं राम हौं सो मिथ्या है वे रामके गुण न तुम्हारे गुरुवा पायो है न तुम पावोगे । व्यंग यहहै कि, ते वे पाखंडी गुरुवनको संगछाँड़िकै रामोपासकनको संगकरौ तब जैसी भजन क्रिया वे करैहैं सो करिके निर्गुण सगुणकेपरे साहबके लोकजाउ, तब तिहारो जनन मरण छूटैगो । ये गुरुवालोग जौनेमें सिद्धांतकरि राखे हैं ते सब याहीकैतिहै निर्गुण सगुणमें है औ परमपुरुष पर साहबको लोक सबके परहै तामें प्रमाण कबीरजीको रेखता झूलनाछंद पिंगलमेंकहे हैं ॥ " चलो

जबलोकको शोकसब त्यागिया हंसको रूपस्तगुरु बनाई । भृंगज्योंकीटको पलटिभृङ्गैकिया आपसमरङ्गदै लैउड़ाई । छोड़ि नासूतमलकूतको पहुंचिया विष्णुकी ठाकुरीदीखजाई । इंद्रकुब्बेरजहँ रंभको नृत्यहै देवतैंतीस कोटिक रहाई॥ १ ॥छोड़िवैकुंठको हंसआगे चला शून्यमें ज्योतिजगमग जगाई।ज्योति परकाशमें निरखि निस्तत्त्वको आपनिर्भयहुआ भयमिटाई । अलखनिर्गुण जेहिवेद स्तुति करैं तीनहूं देवकोहै पिताई।भगवान तिनकेपरे श्वेत मूरतिधरे भागको आन तिनकोरहाई ॥ २ ॥ चारमुक्कामपरखंडसोरहकहैं अंडको छोर ह्यांतेरहाई।अंडकेपरे स्थान आचिंत को निरखिया हंसजब उहांजाई । सहस औद्वादशै रूहहैं सङ्गमें करतकल्लोल अनहद बजाई । तासुके बदनकी कौनमहिमाकहौं भासती देह अति नूरछाई ॥ ३ ॥ महल कंचनबने माणिकतामेंजड़े बैठतहँ कलशआखंड छाजै । आचिंतकेपरे स्थान सोहंगका हंस छत्तीसतहँवां बिराजै । नूरकामहल औ नूरकाभुम्य है तहांआनंद सो द्वन्द्वभाजै । करतकल्लोल बहुभांतिसे संगयक हंससोहंगके जो समाजै ॥ ४ ॥ हंसजब जात षट्चक्रकोबेधिकै सातमुक्काममें नजरफेरा । सोहंगके परे सुरति इच्छाकही सहसबामन जहँहंसहेरा । रूपकी राशितेरूप उनको बना नहीं उपमा इन्दुजीनिबेरा । सुरतिसे भेटिकै शब्दको टेकिचढ़ि देखि मुक्कामअंकूरकेरा ॥ ५ ॥ शून्यकेबीचमें बिमल बैठक जहाँ सहज स्थान है गैब केरा। नवो मुक्कामयहहंसजब पहुंचिया पलकबिलंबह्वाँ कियोडेरा । तहाँसे डोरिमकतारज्यों लागिया ताहिचाढ़िहंसगो दै दरेरा ॥ ६ ॥ भयेआनन्दसे फंदसब छोड़िया पहुंचिया जहाँ सतलोकमेरा । हंसिनीहंस सबगायबज्जायकै साजिकै कलश वहिलेन आये । युगनयुगबीछुरेमिलेतुम आइकै प्रेमकरि अंगसों अँगलगाये । पुरुषनेदर्शजबदीन्हियाहंसको तपनिबहु जनमकी तबनशाये । पलटिकैरूप जबएकसेकीन्हियामनहुं तबभानु षोडशउगाये ॥ ७ ॥ पुहुपकेदीप पीयूष भोजन करैं शब्दकी देहजबहंसपाई । पुहुपके सेहरा हंसऔहंसिनीसच्चिदानन्द शिरछत्रछाई । दिपैंबहुदामिनी दमकबहुभांति की जहाँ घनशब्दको घुमड़लाई । लगेजहँबरषने गरजघनघोरिकै उठततहँ शब्द धुनिअति सोहाई ॥ ८ ॥ सुनैसोइ हंसतहँ यूथकेयूथह्वै एकहीनूरयकरङ्गरागै । करतबीहार मनभामिनी मुक्तिमैं कर्म औ भर्मसबदूरिभागै ॥ रङ्कऔभूप कोइपर-

खि आवैनहीं करत कल्लोलबहु भाँतिपागे । कामऔक्रोध मदलोभ अभिमान सब छाँड़िपाखंड सतशब्दलागे ॥९॥ पुरुषके बदनकी कौनमहिमाकहौं जगत्में ऊपमांयकछुनाहिंपाई । चन्द्रऔसूरगणज्योतिलागैनहीं एकहीनक्खयपरकाशभाई । पानपरवानजिनबंशका पाइया पहुंचियापुरुषकेलोकजाई । कहैंकब्बीर यहिभांति सो पाइहौं सत्यकीराह सोमकट गाई" ॥ १० ॥ औ वहलोकको बर्णन वेदसा- रार्थ जो सदाशिवसंहिता है ताहूमें है । श्रीसौमित्रिरुवाच " महर्लोकः क्षितेरू- र्ध्वमेककोटिप्रमाणतः । कोटिद्वयेनविख्यातोजनलोकोव्यवस्थितः ॥ १ ॥ चतु- ष्कोटि प्रमाणंतु तपोलोकोविराजितः । उपरिष्टात्ततःसत्यमष्टकोटिप्रमाणतः ॥२॥ आयुःप्रमाणंकौमारंकोटिषोडशसंभवम् । तदूर्ध्वोपरिसंख्यातमुमालोकंसुनिष्ठतम् ॥ ३ ॥ शिवलोकंतदूर्ध्वंतु प्रकृत्याच समागतम् । विश्वस्यपुरतोवृत्तिः शिव- स्यपुरतोबहिः ॥ ४ ॥ एतस्माद्बहिरावृत्तिःसप्तावरणसंज्ञका । तदूर्ध्वंसर्वत- त्वानांकार्यकारणमानिनाम् ॥ ५ ॥ निलयंपरमंदिव्यंमहावैष्णवसंज्ञकम् । शुद्ध- स्फटिकसंकाशंनित्यस्वच्छमहोदयम् ॥ ६ ॥ निरामयंनिराँधारंनिरंबुधिसमा- कुलम् । भासमानंस्ववपुषावयस्यैश्चविजृंभितम् ॥ ७ ॥ मणिस्तंभसहस्रैस्तु निर्मितंभवनोत्तमम् । वज्रवैदूर्य्यमाणिक्यग्रथितंरत्नदीपकम् ॥ ८ ॥ हेमप्रासाद मावृत्यतरवःकामजातयः । रत्नकुंडैरसंख्यातनरैर्मलयवासिभिः ॥ स्त्रीरत्नैःपर- माह्लादैःसंगीतध्वनिमोदितैः । स्तुतंचसेवितंरम्यरत्नतोरणमंडितम् ॥ १० ॥ कारुण्यरूपंतन्नीरंगगायस्माद्विनिःसृता । अनंतयोजनोच्छ्रायमनंतयोजनायतम् ॥ ११ ॥ यत्रशेतेमहाविष्णुर्भगवान्जगदीश्वरः । सहस्रमूर्द्धाविश्वात्मा सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ १२ ॥ यन्निमेषाज्जगत्सर्वंलयीभूतंव्यवस्थितम् । इन्द्रकोटिसहस्राणां ब्रह्मणांचसहस्रशः ॥ १३ ॥ उद्भवंतिविनश्यंति कालज्ञानविडंबनैः । यदंशेन- समुद्भूता ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ १४ ॥ कार्य्यकारणसंपन्ना गुणत्रयविभावकाः । यत्रआवर्ततेविश्वं यत्रचैवप्रलीयते ॥ १५ ॥ तद्वेदपरमंधाममदीयंपूर्वसूचितम् । एतद्गुह्यसमाख्यानं ददातु वांछितंहिनः ॥ १६॥ तदूर्ध्वन्तुपरंदिव्यं सत्यमन्यद्- व्यवस्थितम् । न्यासिनांयोगिनांस्थानंभगवद्भावितात्मनाम्॥१७॥ महाशंभुर्मोदतेऽ त्रसर्वशक्तिसमन्वितः । तदूर्ध्वंतुस्वयंभातं गोलोकंप्रकृतेः परम् ॥ १८ ॥" अरुसहस्रशीर्षपुरुष जो लिख्यो है तहैं शुद्धजीव समिटे रहे हैं । वे सम-

छीहै ताके रोमरोममें अनंतकोटि ब्रह्माण्ड हैं। तहैंते अनेक ब्रह्माण्डकी उत्पत्ति होइ हैं औ तहैं महाप्रलयमें लीन होइ हैं औ दूसरे सत्यलोकमें जो महा-शम्भुको वर्णनकियो सो परमगुरुको रूपहै। तामें प्रमाण॥ "वंदेशंभुंजगद्गुरुं" औ गुरुसों औ साहबसों अभेदतामें प्रमाणहै॥ "आचार्यमांविजानीयान्नाव-मन्येतकर्हिचित् इतिभागवते" औ महाशंभुसों औ महाविष्णुसों अभेदहै तामें-प्रमाण "शिवस्यश्रीविष्णोर्यइह गुणनामादिसकलं धिया भिन्नंपश्येत् स ख-लुहरिनामाहितकरः॥ इति स्कंदपुराणे॥" औ नारायण जे वर्णन करिआये तेऊ श्रीरामचन्द्रईके रूपहैं तामे प्रमाण॥ सदाशिवसंहितायाम्॥ "वासुदेवो घनीभूतं तनुतेजो महाशिवः॥" औ गोलोकमें श्रीकृष्णरूपते रघुनाथजी विहारकरै हैं औ गोलोकके मध्यसाकेतमें रामरूपते रघुनाथजी विहारकरै हैं तामेंप्रमाण सदाशिवसंहिताके बिस्तारते बर्णन करिआये कि, पश्चिमद्वार बृन्दाबन है, उत्तरद्वार जनकपुर है, पूर्वद्वार आनंदबन है, दक्षिणद्वार चित्रकूट है ताके-आगे यहलोक है तेहिते इहां प्रयोजनमात्र लिख्यो है॥ "तेषांमध्ये पुरंदिव्यं साकेतमितिसंज्ञकम् इति॥" औ साकेत ऊपर कछु नहीं है औ साकेत औ अयोध्या सत्यासत्य लोक इत्यादिक नाम सब वही लोकके पर्य्यायहैं तामेंप्रमाण॥ "साकेतान्नपरंकिंचित्तदेवहिपरात्परम्॥" औ गोलोकजे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तेईश्री रामचन्द्रईके महत्॥ "सीतारामात्मकं युग्मंप्राविशन्नतिपूर्वकम्॥ १॥" श्रीजानकीजी श्रीरघुनाथजीसों कह्यो कि, बृन्दाबनको बिहार करिये, तब रघुनाथजी कह्यो जब तुम कह्यो तैं एक दूसरा बिहारस्थल बनाइये तब हम वृन्दाबन बनायो, राधि-का तुमभई कृष्णहमभये। सो बिहार करते भये सो हमारई, तुम्हाररूप राधाकृ-ष्णहैं। या कहिकै आकर्षण करिकै बृन्दाबन बोलाइलियो। राधाकृष्ण आइगये तब राधिकाजी जानकीजीमें लीनभई श्रीकृष्णचंद्र रामचंद्रमें लीनभये। अरु पुनि बिहारकियो जब बिहार करिचुके तब जानकी रघुनाथ ते निकसिकै बृन्दा बन समेत राधाकृष्ण चलेगये गोलोकको। सो यह कथा शुकसंहितामें है ताको एक श्लोक लिख्यो है औ विस्तारसे देखिलीजियो। तेई श्रीकृष्णके नखके प्रकाश ब्रह्म है वहीप्रकाशको मुसलमान लामकान कहै हैं। औ जे दशमुकाम रेखतामें कहिआये औ दश वोई मुकाम सदाशिवसंहितामें बर्णन करिआयें

तिनमें पांच मुकाम मुसल्माननके कहै हैं औ पांचमुकाम छोड़िदेइहैं तिनको उनहींमें गतार्थ मानिलेइहैं । मुसलमाननमें वोई पांच मुकामके दुइनामहैं " नासूतको आलम अजसामकहे शरीरधारी । " याते यहलोकके सब आइगये औ मलकूत को " आलम मिसाल फिरिस्तनके दुनियां देवलोक " औ जबरूतको आलम अर्थात् कहे पृथ्वी अप तेज बायु तत्त्वरूपहै " औ लाहूतको आलम कर्ब कहे नूर अर्थात् श्रीकृष्णको मुख्यप्रकाशजोहै ब्रह्म वहीको कही लोकप्रकाश लिख्योहै " औ " हाहूतको मुकाम महम्मदीकहे जहांभर महम्मद पहुंचे है " श्रीकृष्णके लोक अब इनके मंत्रऊ लिखे हैं॥ जिकर नासूत "लाईला हइलाहू" जिकिर मलकूत "इल्लिलाहू" जिकिरजबरूत "अल्लाः अल्लाः" जिकिरलाहूत अल्लाह जिकिरहाहूत "हूंहूं" ॥ सोइनको रातिदिन पांचहज़ारबार जपकरै । जब पांचहज़ारहोय तबध्यानकरै औध्यानमें गड़े औ आपको भूलै फिरिजहानको भूलै पुनि जिकिरि कहे मंत्रको भूलै तब क्रमते मजकूरको पहूंचै अर्थात् अल्लाहीजे श्रीकृष्णचंद्र हंसस्वरूप देइँ तामें स्थित ह्वैके जिनको प्रकाश निराकार जो हैं ऐसेजे श्रीकृष्णहैं तिनकेपास होत उनके बताये मन बचनके परे जे खुद खाबिंद सबके बादशाह जे श्रीरामचंद्र है तिनके पास जाताहै । सो यह मत महम्मदजे साहबके बंदे हैं तिनको साहब भेजा। तब जे साहबके पास पहुंचनवारे रहे तिनको महम्मद भेद बताइदियो। सो बिरले कोई कोई यह भेद जानै हैं जे जानै हैं ते साहबके पासपहुंचै हैं । अब याको क्रम बतावें हैं जौनी भांति साहबके पास पहुंचै तामें प्रमाण॥पीरानपीरसाहबके पासपहुंचे ऐसेजेहैं सलोलके मालिक **पनाह अता** तिनको **कबित्त** ॥ "देह नासूत सुरै मलकूत औ जीव जबरूतकी रूह बखानै । अरबीमें निराकार कहै जेहि लाहुतै मानिकै मंजिल ठानै॥आगे हाहूत लाहूत है जाहूत खुद खाविंद जाहूतमें जानै । सोई श्री रामपनाह सब जगनाह पनाह अता यह गानै॥ १॥दोहा॥तजै कर्मनासूतलहि, निरखै तब मलकूत । पुनि जबरूतौ छोड़िकै, दृष्टि परै लाहूत ॥ २ ॥ इन चारोंतजि आगेही, पनाहअता हाहूत। तहां न मरै न बीछुरै,जात न॰ तहँ यमदूत ॥ ३॥ औ "जुलजलालअव्वल" एकराम मुसलमानोंके कहै हैं किताबनमें प्रसिद्धहै साहब बुजुर्गीका साहब बखशीश का अर्थात् वह सबते बुजुर्गी कहे बड़ाहै उससे बड़ा कोई नहीं

है । औ वही गुनाहका बख्शनेवाला है औरे के छुड़ाये न छूटैगो । जब श्रीरामचन्द्र जीवको छोड़ावैंगे तबहीं छूटैगो । औ खोदाके सौ नाम हैं निन्नानब सगुणनाम हैं, औ मुक्तिको देनवारो निर्गुण अल्लाह नामही है वही खुद खामिंदका नाम है । तौने बात वेद शास्त्रनमें भी सिद्धान्त कियो है । कोई कोई जे साहबके पहुंचे हैं ते वेग्रंथ जानै हैं सो लिख्यो है कि, और देवतनके नामतें अधिक और सब नाम भगवान्‌के हैं औ भगवान्‌के सब नामते अधिक रामनाम है । सो महादेवजी पार्वतीजी ते कह्यो है ॥ "सहस्रनामतत्तुल्यंरामनाम वरानने । सप्तकोटिमहामंत्राश्चित्तविभ्रमकारकाः । एकएव परोमंत्रोरामइत्यक्षरद्वयम् । विष्णोरेकैकनामापि सर्ववेदाधिकंमतम् । तादृङ्नामसहस्रेणरामनामसमंस्मृतम्" ॥ इतिपाद्मे॥ औ गोसाईंजीहू लिख्यो है।"रामसकल नामनते अधिका"॥ सो यही रामनाम तें अल्लाहनाम निकस्यो । "राम नामके मकारको रकार भये आगेका पीछे आया तब अरभया सो अर राके पीछे आया तब "अर राम भयो रलके अभेदसे अल्लाभयो" व्याकरण बर्णबिकार बर्णकार बर्णबिपर्यय पृषोदरादि पाठसे सिद्ध शब्दको साधनके वास्ते प्रसिद्धहै । औ जो सदाशिव संहितामें दशमुकाम लिखि आये हैं औ पहिले रेखतामें लिखि· आये हैं सो कबीरजी पुनि खुद खाविंदको दूसरे रेखतामें वहीबात लिख्यो है "जुलमत नासूत मलकूतमें फिरिस्ते नूर जल्लाल जबरूतमें जी । लाहूतमें नूर जम्माल पहिंचानियै हक मकान हाहूतमें जी ॥ बका बाहूत साहूत मुर्सिद वारहै जोरब्ब राहूतमें जी । कहत कब्बीर अबिगति आहूतमें खुद खाविन्द जाहूत में जी ॥ १ ॥" सो वे जे परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनके गुण सबते न्यारे हैं औ उनको धाम सबते परेहै वाकोकोई अंतनहीं पायो सो तिनके गुण हे जीवो ! तुम कैसे पावोगे ॥ ५ ॥

इति अठारहवां शब्द समाप्त ।

अथ उन्नीसवां शब्द ॥ १९ ॥

एतत राम जपो हो प्राणी तुम बूझो अकथ कहानी ।
जाको भाव होत हरि ऊपर जागत रैनि बिहानी ॥ १ ॥

डाइनि डारे सोनहा डोरे सिंह रहे बन घेरे ।
पांच कुटुंब मिलि जूझन लागे बाजन बाज घनेरे ॥ २ ॥
रोह मृगा संशय बन हाँकै पारथ बाना मेलै ।
सायर जरै सकल बन डाहै मक्ष अहेरा खेलै ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो हो संतो जो यह पद निरधारै ।
जो यहि पदको गाय बिचारै आप तरै अरु तारै ॥ ४ ॥

एतत राम जपोहो प्राणी तुम बूझौ अकथ कहानी ।
जाको भाव होत हरि ऊपर जागत रैनि बिहानी ॥ १ ॥

एतत कहे ई जे निर्गुण सगुणके परे परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं तिनको जपो। कैसे जपो कि, अकथ कहानी कहे मनबचनके परे जाह रामनाम सो बूझ अर्थात् रामनाममें साहबमुख अर्थ बूझिकै जपो । श्रीरघुनाथ जीके ऊपर जाको भाव होय है ताको यहसंसाररूपी जो है निशा बिहानई ह्वै जायहै; सोवततें जागिउठैहै । ताते यह ध्वनित होय है जाको रघुनाथजी के ऊपर भाव नहीं है ताको यह संसार रूपी निशा बनी रहैहै बिहान नहीं होयहै; जागै नहीं है; कहे ज्ञाननहीं होयहै; भ्रमरूपी निशामें सोवते रहे है । यहीसंसारमें जीव कैसे घेरे रहते हैं सो कहै हैं ॥ १ ॥

डाइन डारे सोनहा डोरे सिंह रहे बन घेरे ।
पांच कुटुंब मिलि जूझन लागे बाजन बाज घनेरे ॥२॥

डाइनि जेहैं गुरुवालोग छालाके डारनेवाले जे वाके कानमें अपनी विद्या-डारिदियो । इहां गुरुवालोग डाइनि हैं ने सिंहको मंत्रते बाँधि देयहैं वा बनत्यागि और बननहीं जायहैं । औ सोनहा जोहै सो हंहसमंत्र तौनेमों डोरा बांध्यो अर्थात् यह कह्यो कि; तुहींब्रह्महै और कहां खोजहै, तैंवा है। यह-मंत्रको अर्थबतायो सो सिंह जोहै जीव या सामर्थ है सो उनही बाणीरूप बन-में घेरि रह्यो कहे बँधिरह्यो तबपांचौ जे ज्ञानेन्द्रियहैं पांचौ जे कर्मेंद्रियहैं अथवा

पाचौ जे प्राणहैं प्राण अपान समान उदान व्यान तेई कुटुम्ब हैं तिनमें मिलिकै जूझैलाग पांच कुटुम्ब सिंहके पंचआनन जब सिंहको मारन जाय है तब झुनका बाजा बजावै है तैसे यहां गुरुवालोग अनहद सुननकी युक्ति बतावनलगे सो दशौ अनहदकी धुनि सुननलग्यो तेई बाजा हैं ॥ २ ॥

रोह मृगा संशय वन हांकै पारथ बाना मेलै ।
सायरजरै सकल वन डाहे मच्छ अहेराखेलै ॥ ३ ॥

रोह कौनकहावै कि, जो कमरीमें आगीबारत जायहै झुनका बजावत जायहै तामें मृगा मोहि जायहैं सो वाहीकी छाया में पीछे धनुष बाणकी बांसकी बंदूकादि आयुध लिये खड़ो रहै है शिकारी सोई मारैहै यही रोहहै सो मृगराज जोहै जीव ताको गुरुवालोग जब योगाभ्यास कैकै धोखा ब्रह्मको प्रकाश बतायो तामें-रहिगयो कहे मोहिगयो जो कहौ हाँकि कौन लायो? तौ संशय रूप हँकबैया है जैसे आगी बरत देखिकै वा बाजा सुनिकै टेममें मोहिकै मृग मृगराज जायहै या कैसो बाजा बाजै है या कैसी टेमहै या संशयजो है ज्ञानमिलनकी चाह सो याको हाँकिले आयो ऐसे गुरुवा लोगनकी जोबताई बाणीबनहै जौनअनहद सुनिबेकी युक्ति बतायो तौन अनहदकी धुनिसुनिकै औ जौन ज्योति बतायो सोऊ योगाभ्यास करिकै ज्योतिरूप ब्रह्म देखिकै जीव या संशय कैकै निकट जायहै औ याबिचा-चारै है कि, या ज्योतिरूप ब्रह्ममैहीं हौं कि, मोते भिन्नहै तब शिकारी जैसे ढुको रहैहै ऐसो मूलाज्ञान रूप शिकारी अहं ब्रह्मास्मि वृत्तिरूप बाण मारि वा जीवको अनुभव कराय देयँ कि, महीं ब्रह्महौं वाके जीवत्वको नाश कै देयहै यहीमारिबोहै ॥ औ जैसे बाण लागे मृग राजको अंतःकरण जर उठै है अधिक कोपे है बनमें जोई आगे वृक्ष परैहै तौने पर चोट करैहै, जो मारनवालेको देखै है तो वाहूको धीर खायहै ऐसे जब आपनेको ब्रह्ममान्यो तबसायर जो संसारहै सो जरैहै अर्थात संसार याको मिथ्या जानि परैहै औ बन डाहैहै कहे वा दशामें बाणीरूप बन सोऊ भूलिजायहै । ऐसे बधिक मारयो बधिकको बाघ मारयो वधिकको जबमारिकै दोऊ गलिकै नदी में मिल्यो तब मछरी खायो । अथवा मारिकै दोऊ बहैरहै कीड़ापरे जब बाढ़को जलआयो तबमछरी खायो

ऐसें ब्रह्महु में लीनह्वै अठई अवस्थाको प्राप्तभये तब न जीवत्वरह्यो न मूलाज्ञान रह्यो ऐसैहूभये तथापि साहबको बिना जाने मच्छ जो काल है सो खायलेइहै, फिरि संसारमें परै है तामें प्रमाण॥"येऽन्येरविंदाक्षविमुक्तमानिनस्त्वय्यस्तभावाद विशुद्धबुद्धयः। आरुह्यकृच्छ्रेणपरंपदंततःपतत्यन्त्यधोनादृतयुष्मदंघ्रयः॥"इतिभागवते ॥ कबीरजीकोप्रमाण ॥"कोटि करम कटपलमें, जोरांचै यक नाम । अनेक जन्म जो पुण्य करै, नहीं नाम बिनु धाम ॥ ३ ॥

कहै कबीर सुनो हो संतो, जो यह पद निरधारै ॥
जो यह पदको गाइ बिचारै आपु तरै अरु तारै॥ ४ ॥

सो कबीरजी कहैहैं कि, हेसंतो ! जो यह पदको निराधारै कहे सारासार बिचारकरै औ जौन ब्रह्मपद कहिआये तौनेको गाइ बिचारै कहे माया बिचारैं सो आपु तरैहै और आनहूको तारै है अर्थात् साहबको बा जानै औ औरहूकों जनाइ देइ ॥ ४ ॥

इति उन्नीसवां शब्द समाप्त ।

अथ बीसवां शब्द ॥ २० ॥

कोइ राम रसिक रस पियहुगे। पियहुगे सुख जियहुगे ॥१॥
फल अमृतै बीज नहिं बोकला शुकपक्षी रस खाई ।
चुवै न बुन्द अंग नाहिं भीजै दास भँवर सँगलाई ॥ २ ॥
निगमरसाल चारि फल लागे तामें तीनि समाई ।
एक है दूरि चहै सब कोई यतन यतन कोइ पाई ॥ ३ ॥
गयउ वसंत ग्रीष्म ऋतु आई बहुरि न तरुवर आवै ।
कहै कबीर स्वामी सुख सागर राम मगन ह्वै पावै ॥४॥

कोइ राम रसिक रसपियहुगे सुख जियहुगे॥ १॥
फल अमृतै बीज नाहिं बोकला शुक पक्षी रस खाई।
चुवै न बुंद अंग नाहिं भीजै दास भँवर सग लाई॥ २॥

हे जीवौ ! कोई तुम रामरसिकनते रामरस पिऔगे अथवा रामरसिकह्वैकै रामरस पिऔगे। जो रामरसिकनते रामरस पिऔगे तबहीं सुखते जिऔगे कहे जन्म मरणते छूटोगे अरुआनंदरूप होउगे॥ १॥ वह रामरस कैसोहै अमृतको फलहै कहे वाके खायेते जन्म मरण नहीं होइहै औ तौने फलमें बीज बोकला नहींहैं अर्थात् सगुण निर्गुणरूप बीज बोकला नहींह औ न मीठो फल होइहै ताही फलमें सुवा चोंच चलावैहै यह लोकमें प्रसिद्धहै। यहां शुकाचार्य रामरसको मुक्त ह्वै आस्वादन कियोहै ताते यह व्यंजित भयो कि, रामरसते ब्रह्मानंद कमही है अर्थात् श्रीमद्भागवतमें है॥ "वंदेमहापुरुषतेचरणारविंदम्"॥ ऐसो कहि शुकाचार्य परम परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहीके चरणनको वंदना कियो है औ श्रीरघुनंदनहीके शरण गये हैं। यह वणन श्रीमद्भागवतहीमें है॥ "तन्नाकपालवसुपालकिरीटजुष्टं पादांबुजंरघुपतेःशरणंप्रपद्ये"॥ इतिभागवते॥ औ श्रीरामचन्द्रहीको परतत्त्व तात्पर्यते वर्णन कियोहै सो कोई बिरला संतजन याकोअर्थ जानैहै। औ जो यह पाठहोइ "फल अंकृतै बीजनहिं बोकला" तौयह अर्थहै कि फलकी अंकृति कहे आकृति तोहै परन्तु बीजबोकला जे निर्गुण सगुणहैं ते इनमें नहीं आवैहैं इनते भिन्न है। सो रामरसरूपी फल है तो रस रूपई है परन्तु वाको रसबुन्दहू नहींचुवैहै अर्थात् अंतकबहूं नहींहोइ है अनादि अनंतहै। औ काहूके पांचौ शरीरके अंगनहीं भीजैहैं अर्थात् कोई पांच शरीरते भिन्न नहीं होइहै। जब पार्षदरूप रामोपासक तेई भँवरहैं ते वाके संग लगे रहैं हैं अर्थात् रामरस पान करतई रहै हैं॥ २॥

निगम रसाल चारि फल लागे तामें तीनि समाई।
यक है दूरि चहै सब कोई यतन यतन कोइ पाई॥ ३॥

सो कबीरजी कहै हैं कि, निगम जोहै रसाल कहे आमको वृक्ष तामें चारिफल लागे हैं अर्थ धर्म काम मोक्ष तिनमें तीनिफल तहैं समातहैं कहे नष्टह्वै-

जाइहैं अर्थात् तीनिऊं अनित्यहैं औ एक जो है मोक्ष सोतो बहुत दूरि है यत्नही यत्न करत कोई बिरला पावै है । अर्थात् निगमतौ रसालहै रसमय है तात्पर्य- वृत्तिकरिके साहबईको बतावैहै सो वह तो कोई जानै नहींहै यह कहैहै कि चारिफल लागे हैं ॥ ३ ॥

गयउ बसंत ग्रीष्म ऋतु आई बहुरि न तरुवर आवै ।
कहै कबीर स्वामी सुखसागर राम मगन ह्वै पावै ॥ ४ ॥

अरु जो कोई निगमरूपी वृक्षको मोक्षरूपी फल पायोहै वाको पायो है ताको बसंत ऋतु जाइ रहैहै ग्रीष्म ऋतु ह्वै जाइहै कहे आत्माको स्वस्वरूप भूलि गयो । सुखको आस्वादन न रहिगयो कहनलग्यो कि मैंहीं ब्रह्महौं।ग्रीष्म- ऋतुमें प्रकाश बढ़ै है सोयहौ प्रकाशमें समाइगयो सो फेरि जोचाहै कि, रामोपा, सनारूप ब्रह्मकी भक्तिरूप छायामिलै तौ नहीं मिलै । श्रीकबीरजीकहै हैं कि- सुखसागर स्वामी जे परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं तिनके रामराम रसमें जब मग्नहोय है तबहीं पावै है जीवको स्वरूप ॥ " आत्मदास्यंहरेस्स्वाम्यंस्वभावं चसदास्मर " ॥ औ शुकाचार्य या फलको चाखिनहै तामें प्रमाण ॥ " निग- मकल्पतरोर्गलितंफलंशुकमुखादमृतद्रवसंयुतम् । पिबतभागवतंरसमालयंमुहुरहोर- सिकाभुविभावुकाः " ॥ ५ ॥ इतिभागवते ॥ ४ ॥

इति बीसवां शब्द समाप्त ।

अथ इक्कीसवां शब्द॥२१॥

राम न रमासि कौन दँड लागा।मरि जैहै का करिहै अभागा १
कोइ तीरथ कोई मुण्डित केशा।पाखँड भर्म मंत्र उपदेशा२
विद्या वेद पढ़ि करहंकारा । अंतकाल मुख फांकै क्षारा ३

---

१ क्या ।

दुखित सुखितसबकुटुँब जेंवइवे।मरणबेर यकसरदुखपइवे४
कह कबीर यहकलिहै खोटी।जो रहकररवा निकसललोटी५

राम न रमसि कौन दँड लागा । मरि जैहै का करिहै अभागा

सबको दंड छोड़ाय देनवारे जे सबते परे परमपुरुष श्रीरामचंद्र हैं तिनमें जोतैंनहीं रमैहै सो तोको गुरुवा लोगनको कौन दंड लगौहै यहतो सबयहींके साथी हैं साहबके भुलायदेनवारे हैं जेउपदेश करनवारेगुरुवनके कहे माया ब्रह्म आत्माको ज्ञानरूपी दंडचवावमें जोते परे हैं सो हे अभागा!जबतैंमरिजैहै तबवे गुरुवा तोको न बचासकेंगे तब क्याकरोगे ॥ १ ॥

कोइ तीरथ कोई मुंडितकेशा । पाखँड भर्म मंत्र उपदेशा२

तीर्थनमें जाइकै कोई चहौहौ कि, विना ज्ञानही मुक्तिह्वै जाइहै औकोई मूड़-मुड़ायकै वेषबनाइकै संन्यासीह्वैकै औ अपने आत्माहीको मालिक मानिकै चाहौहौ कि मुक्तह्वैजायँ । औकोई नास्तिकादिकनके जनानापाखंड मतहैं तिनमें लागिके जानौकि मुक्त ह्वैगये औ कोई भ्रमजो धोखाब्रह्महै तामें लागिकै आपने-कोब्रह्म मानिकै जानौहौ कि हममुक्तह्वैगये औकोई और और देवतनके मंत्रउप-देश पायकै जानौहौ कि हममुक्तह्वैगये ॥ २ ॥

विद्या वेद पढ़ि कर हङ्कारा।अंतकाल मुखफांकै क्षारा॥३॥

अरुकोई वेदबाह्य जे नाना विद्या अपने अपने गुरुवनकी भाषा तिनको पढ़िकै औ कोई वेद पढ़िकै वेदमें शास्त्र औ चौंसठ कलादिक सब आइगये अहङ्कारकरोहो कि हम मुक्तह्वैगये सोमुक्ति तो जिनको वेदतात्पर्य करिकै बतावैहै ऐसेजे परमपरपुरुष श्रीरामचंद्रहैं तिनके बिनाजाने न होयगी। होयगो कहां ? कि जबअंतकाल तेरो होइगो तब यही मुखमें क्षार फांकैगो औ पुनिजब पुण्यक्षीणहोइगो तब लोक आवोगे तबहूं मरब करोगे क्षारई फांकौगे ॥ ३ ॥

दुखितसुखितसबकुटुँबजेंवइवे । मरणबेरयकसरदुखपइवे४

दुःखसुखमें सबकुटुम्बनको जेंवावैहै तेमरणसमय कोईकाम नहीं आवैहैं तैं अकेलही दुःखपावैहैं परन्तु सहायतेरी कोई नहीं करिसकै है ॥ ४ ॥

कह कबीर यह कलि है खोटी ।जोह करवा निकसल टोटी५

कलिनाम झगड़ाको है सो कबीरजी कहैहैं यह माया ब्रह्मको झगड़ा बहुत-खोटहै अथवा यह कलिकाल अतिखोटहै । जोवस्तु करवामेंरहैहै सोईटोटीतेनि-कसैहै तैसेजोकर्म यहजीवकरै है सोई दुःखसुख वह जन्मभोगकरै है अरु नाना देवतनकी उपासनाअब करैहै ताहीकी वासना बनीरहै है तेहिते पुनिवोई देवतन में लागै है अरु जो ब्रह्मबिचार अबकरैहै सोई ब्रह्मविचार पुनिजन्मलैकै करैहै अर्थात् बिना परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्रके जाने जन्ममरण नहीं छूटैहै जोबासना अंतःकरणमें बनी रहैहै सोई पुनि होयहै ॥ ५ ॥

इति इक्कीसवां शब्द समाप्त ।

अथ बाईसवां शब्द ॥ २२ ॥

अवधू छोड़ो मन बिस्तारा ।
सो पद गहहु जाहिते सद्गति परब्रह्मते न्यारा ॥ १ ॥
नहीं महादेव नहीं महम्मद हरि हजरत तब नाहीं ।
आदम ब्रह्म नहीं तब होते नहीं धूप नाहिं छाहीं ॥ २ ॥
असी सहस पैगंबर नाहीं सहस अठासी मूनी ।
चन्द्र सूर्य तारागण नाहीं मच्छ कच्छ नाह दूनी ॥ ३ ॥
वेद किताब स्मृति नाहिं संयम नहीं यम न पारसाही ।
बांगनेवाज कलिमा नाहिं होते रामो नहीं खोदाही ॥ ४ ॥
आदि अंत मन मध्य न होते आतश पवन न पानी ।
लखचौरासी जीवजन्तु नहीं साखी शब्द न बानी ॥ ५ ॥
कहै कबीर सुनो हो अवधू आगे करहु विचारा ।
पूरणब्रह्म कहांते प्रकटे किरतमाकिनउपचारा ॥ ६ ॥

हे अवधू जीवौ ! तुम्हारे तो बधू कहे स्त्री नहीं है अर्थात तुमतौ मायाते भिन्नहौ । जेतनो तुम देखोहो सुनोहौ ताको मायामें मिलिकै तुम्हारे मनही बिस्तार कियो है सो यह मनको बिस्तार छोड़ि देउ अरु जिनते सद्गति कहे समीचीन गति है मन बचनके परे धोखा ब्रह्मके पार ऐसो जो लोक प्रकाश ताहूते न्यारे ऐसे साकेतनिवासी परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्र तिनके पदगहौ । कबीरजी कहै हैं कि, हेजीवौ ! बिचार तो करौ (जोजो बात यहि पदमें स्पष्ट वर्णन करिगये ते) ये कोऊ तब नहीं रहे । अरु वासों भिन्न जो तुम कहौ हौ कि, पूर्णब्रह्म है कहे सर्वत्र ब्रह्महो है वासो भिन्नदूसरो नहीं है सो यह धोखा कहांते प्रकट भयो है । औ किरिनम जोमाया है ताको किन उपचार कहे किन आरोपण कियो अर्थात् यह शुद्ध समष्टि जीवको मनहीं किरितम जो माया है ताको आरोपण कियोहै औ मनहीं वह ब्रह्मको अनुमान कियोहै, ताहीको कियो राम खोदाय आदिजे मन बचनमें आवै हैं जे वर्णन करि आये हैं तेई बिस्तार हैं सो पूर्व मंगलमें औ प्रथम रमैनीमें बर्णन करि आयेहैं । औ यहां रामको औ हरिको जो कहै हैं सो नारायण जे रामावतार लेइ हैं तिनको कहै हैं । नहीं यमन परसाही कहे चौदहो यमनके परेजे निरंजन हैं तिनहूंकी साही नहीं रही । परम परपुरुष श्रीरामचन्द्रको नहीं कहै हैं काहेते कि, वेतौ मन बचनके परे हैं सो पूर्वलिखि आये हैं सोबांचि लेहुगे । सोजब मनको त्यागो तब परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्र तिहारो स्वरूपदेइँ तामेंप्रमाण–" मुक्तस्यविग्रहोलाभः" ॥ यह श्रुति तौने स्वरूपते साहबको अनिर्वचनीय रामनामनामादिक तुमको स्फुरित होइँगे । तामें प्रमाण–" वाङ्मनोगोचरातीतः सत्यलोकेश ईश्वरः । तस्यनामादिकं सर्वं रामनाम्ना प्रकाश्यते ॥ " इतिमहारामायणे ॥ ६ ॥

इति बाईसवां शब्द समाप्त ।

अथ तेईसवां शब्द ॥ २३ ॥

अवधू कुदरतिकी गतिन्यारी ।
रङ्क निवाज करै वह राजा भूपति करै भिखारी ॥ १ ॥

येते लवँगहि फल नहिं लागै चंदन फूल न फूलै ।
मच्छ शिकारी रमैजँगलमें सिंह समुद्रहिफूलै ॥ २ ॥
रेड़ा रूख भया मलयागिरि चहुँदिशि फूटी बासा ।
तीनि लोक ब्रह्मांड खण्डमें देखै अंध तमासा ॥ ३ ॥
पंगुल मेरु सुमेरु उलंघै त्रिभुवन मुक्ता डोलै ।
गूंगा ज्ञान विज्ञान प्रकाशै अनहद वाणी वोलै ॥ ४ ॥
बांधि अकाश पाताल पठावै शेष स्वर्गपर राजै ।
कहै कबीर राम हैं राजा जो कछु करैं सो छाजै ॥ ५ ॥

जोपूर्व यह कहि आये कि रामैनहीं खोदाइउ नहीं हैं जिनते समीची गतिहोइ है तिनके पदगहौ ते कौन पुरुष हैं तिनकी सामर्थ्य कहिकै खोलिकै या शब्दमों बतायो है । अब याकी टीका लिखते हैं ।

अवधू कुदरतिकी गति न्यारी

रंक निवाज करै वह राजा भूपति करै भिखारी ॥ १ ॥
येते लवँगहि फल नहिं लागै चंदन फूल न फूलै ।
मच्छ शिकारी रमै जंगलमें सिंह समुद्रहि झूलै ॥ २ ॥

हे अवधू जीवौ ! परम परपुरुष जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनकी कुदरति कहे सामर्थ्य की गति न्यारी है । सुग्रीव जे पुत्रकलत्रते हीन, भिखारीकी नाईं बन बन पहाड़ पहाड़ बागत रहे तिनको निवाजिकै राजा बनाइ दियो । औ सबराजनके जीतनवारे जे क्षत्रिय तिनको मारि कै पृथ्वी भूसुरन दैडारेउ । नारायण के अवतार ऐसे परशुराम तिनको भिखारी करिदियो ॥ १ ॥ लवंगमें फल नहीं लागै सोऊ लागै, चंदनमें फूल नहीं फूलै सोऊ फूलै है जाकी सामर्थ्य ते । सो बालमीकीयमें लिख्यो है जबश्रीरघुनाथजी अयोध्याजी आये हैं तब जे बृक्षफलै फूलैवाले नहीं रहे सूखेरहे तेऊ फलि फूलिआये हैं । औ

मच्छ जो मत्स्योदरी सो शिकारी जो शंतनु ताकेसाथ भय ते रमन लगी। सिंहसमर्थ को कहै हैं सो समर्थ जे बड़े बड़े दानव थलके रहैया ते समुद्रमें बसेजाय ॥ २ ॥

रेड़ा रूख भया मलयागिरि चहुं दिशि फूटी बासा ।
तीनि लोक ब्रह्मांड खंडमें देखै अंध तमासा ॥ ३ ॥

रेड़ा रूख जेहैं,सवरी, वारार,निषादादिक जिनको वेदकाअधिकार नहीं रह्यो, तेऊ चंदनह्वैगये । उनकी बास चारिउदिशा फूटी कहे उनको यश सबकोई गावै है । चंदन औरौ वृक्षनको चंदन करै है ऐसे औरहूको साधु बनावनवारे ये सब भये तामें प्रमाण ॥"नजन्मनूनंमहतोनसौभगं नवाङ्नबुद्धिर्नाकृतिस्तोषहेतुः । तैर्यद्विसृष्टानपिनोवनौकसश्चकारसख्येबतलक्ष्मणाग्रजः " इतिभागवते ॥ औ आँधरेजे हैं धृतराष्ट्र तिनको कृष्णचन्द्र ब्रह्माण्ड भरेको तमाशा जिनकी सामर्थ्येते शरिरहीमें देखायदियो । नारायण औ कृष्णचंद्र साहबकी सामर्थ्यते करै हैं तामेंप्रमाण ॥ " यस्यप्रसादाद्देवेशममसामर्थ्यमीदृशम् । संहरामिक्षणादेवत्रैलोक्यंसचराचरम् ॥ धातासृजतिभूतानि विष्णुर्द्धारयतेजगत्" । इतिसारस्वततंत्रे ॥ कृष्णचंद्रको अवतार विष्णुहीते होइहै सो पुराणनमें प्रसिद्धहै ॥ ३ ॥

पंगुल मेरु सुमेरु उलंघै त्रिभुवन मुक्ताडोलै ।
गूंगा ज्ञान विज्ञान प्रकाशै अनहद बाणी बोलै ॥ ४ ॥

औ जिनके अघटित घटना सामर्थ्यते पंगु जे हैं अरुण ते पृथ्वीकी कीला जे हैं सुमेरु तिसको रोज उलंघै हैं नांघै हैं । अथवा पंगुजो हैं राहु जाके शिरै भरहै गोड़ हाथ नहीं है सोसुमेरु का नाघत रहै है औ मुक्तजे हैं नारद शुक कबीर आदिक जे संसार ते मुक्त ह्वैकै मनादिकन को छोड़िकै साहब के पास गये हैं औ यह शास्त्रमें लिखे है कि, उहांके गयेपुनि नहीं आवै है परन्तु तेऊ साहबकी सामर्थ्यते त्रिभुवनमें डोलै हैं संसारबाधा नहीं करिसकै है । औ जब शुकाचार्य निकसे हैं तब व्यास पछुआन जात रहे हैं तब गूंगे जे वृक्ष हैं तेऊ व्यासको समुझायो है । औ मध्वाचार्य जब भिक्षाटन को निकसे

तब शिष्यनके पढ़ाइबेको बरदाको कह्यो तबबरदा शिष्यनको पढ़ायो है । औ जे साहबकी सामर्थ्यते ऐसी सामर्थ्य उनके दासनके ह्वैगई कि, वोई अनहद वाणीको बोलै हैं जाकी हद नहीं है ॥ ४ ॥

बाँधि अकाश पताल पठावै शेषस्वर्ग परराजै ।
कहै कबीर रामहै राजा जोकुछ करै सो छाजै ॥ ५ ॥

औ आकाश जो है आकाशवत् ब्रह्म तौनेको जोमानै है कि वह ब्रह्म मैंहीं हौं ताको साहब अपनो ज्ञान कराइकै धोखा ज्ञानको बाँधि कै पतालमें पठै देइहै । अर्थात् तेहि जीवको मूलज्ञान निर्मूलई करि देयहै । जैसे लोकमें या बात कहै हैं कि, या खनिकै गाड़देव ऐसे गाड़दियो फिरि वा अज्ञानको अंकुर नहीं होयहै । औ शेष कहे भगवत् शेषजो है जीव सो जे साहबकी सामर्थ्यते स्वर्गादिकन के परे जोहै साहबको लोक तहाँ राजै हैं । "स्वर्गपदको अर्थ जो दुःखते भिन्न स्थान होयहै सो कहावै स्वर्ग" । औ जो लोक प्रकाश ब्रह्म ताहूते परे जो साहब तहाँराजैहै दुःखरहितस्थानको स्वर्ग कहै हैं तामें प्रमाण। "यन्नदुःखेनसंभिन्नं नचग्रस्तमनंतरम् । अभिलाषोपनीतंच तत्पदं स्वःपदास्पदम्" इति॥ सो कबीरजी कहै हैं कि यह अघटित घटना सामर्थ्य परम परपुरुष श्रीरामचन्द्रही हैं वे राजा हैं वे जोकुछकरैं सो सब छाजैहै चाहे रंकको राजा करैं चाहे राजाको रंक करैं चाहे लौंगमें फल लगावैं चाहें चंदनमें फूल फुलाय देयँ चाहे मछरीको बनमें रमावै चाहे सिंहको समुद्र में रमावैं चाहे रेंडारूखको चंदनकरैं. चाहै अंधाको तीनउ लोक देखाय देयँ चाहे पंगुको सुमेरु नँघायदेयँ चाहे गूंगाको ज्ञान कहवायदेइँ.चाहे आकाशको बाँधिकै पातालैपठावैं चाहे पातालवासी जे शेष तिनको स्वर्गपरराखैं, या सामर्थ्य उनमेंहै श्रीरामचंद्र तौराजाहैं तामेंप्रमाण ॥"राजाधिराजस्सर्वेषां रामएवनसंशयः ॥"औ उनहींकी भयते सूर्य चन्द्रमा अवसरमेंउये हैं औमृत्यु जबसमय आवैहै तबखायहै तामें प्रमाण॥ यद्भयाद्वाति वातोयं सूर्यस्तपतियद्भयात् ॥ वर्षतींद्रो दहत्यग्निर्मृत्युश्चरति पंचमः ॥ इतिश्रीमद्भागवते ॥५॥

इति तेईसवां शब्द समाप्त ॥

अथ चौबीसवां शब्द ॥ २४ ॥

अवधू सो योगी गुरु मेरा। जो ई पदको करै निवेरा ॥१॥
तरुवर एक मूल विन ठाढो विन फूले फल लागा।
शाखा पत्र कछू नहिं वाके अष्ट गगन मुख जागा ॥ २ ॥
पौ विनु पत्र करह विनु तुम्वा विनु जिह्वा गुण गावै।
गावनहारके रूप न रेखा सतगुरु होइ लखावै ॥ ३ ॥
पक्षी खोज मीनको मारग कहै कवीर दोउ भारी।
अपरम पार पार पुरुषोत्तम मूरतिकी वलिहारी ॥ ४ ॥

अवधू सो योगी गुरुमेरा। जो ई पदको करै निवेरा ॥१॥
तरुवर एक मूल विन ठाढ़ो विन फूलै फल लागा।
शाखा पत्र कछू नहिं वाके अष्ट गगन मुख जागा ॥ २ ॥

बधू जाके न होइ सो अबधू कहावै सो हे अबधु जीवो! जो यह पदके अर्थको निबेरा करिके जानै सो योगी गुरुकहे श्रेष्ठहै औमेरा है कहे मैं वाको आपनो मानौहौं ॥ १ ॥ एकजो तरुवरहै सो बिन मूल ठाढ़ो है अरु वामें बिनाफूल फल लागो हैं सो यहां तरुवर मनहै सो जड़है अरु आत्मा चैतन्य है शुद्ध है जो कहिये आत्माते उत्पत्तिहै सो जो आत्माते उत्पन्नहोतो तौ आत्मा चतन्य है याते यह चैतन्य हो तो ताते आत्माते नहीं उत्पन्नभयी। यह आपई आत्माते प्रकाशभयो जो बिचारैतौ वाकोमूल भगवत् अज्ञान सत नहीं है बिनामूल ठाढ़ो भयोहै अरु बिना फूलै फल लागोहै कहे जगत् उत्पादक क्रिया मननहीं कियो मिथ्या संकलपमात्रते जगद्रूप फललागवई भयो अरु वाके शाखापत्र कछू नहीं है अर्थात् अंगनहीं है चित्त बुद्धि अहंकार येऊमिथ्याहैं निराकारहैं अरु यह मनैके मुखते आठौ गगन जागतभये। सात सप्तावरणके आकाश अथवा चैतन्याकाश ॥ २ ॥

पौविनुपत्रकरहविनुतुम्बा विनुजिह्वागुणगावै ।
गावनहारकेरूप न रेखा सतगुरुहोइलखावै ॥ ३ ॥

अब श्रीकबीरजी जीवात्मा को वृक्षरूप ह्वैकै बर्णन करैं है पौविनु कहे आत्माको जगत्को अंकुर नहीं है मनके संयोगते दुःख सुखरूप पत्रदुइ लागबेई कियो औ करहूजो कर्म है सो नहीं रह्यो आत्मामें जगत्रूप तुम्बा लागबेई कियो । यह जीवात्माकी दशाकाहेतेभई कि, बिनु जिह्वा जोहै निराकार ब्रह्म ताके जे गुणहैं देश काल बस्तु परिच्छेद ते शून्यत्व सो आपने में लगावन लग्यो । ये गुण मोहीं में हैं मेरोस्वरूप यही है सो जो या आपनेको ब्रह्ममान्यो तौ आत्माके ब्रह्मकेरूपको रेखनहीं है काहेते याको देश बनो है समष्टि जीवलोक प्रकाशमें रहैहैं, औ कालबन्यो है जौनेकालमें समष्टिते व्यष्टि होयहै, औ या देश काल बस्तु परिच्छेदते संहितहै काहेते अणुहै भगवद्दासहै तामें प्रमाण॥ "बालाग्रशत-भागस्यशतधाकल्पितस्यच॥ भागोजीवःसविज्ञेयः सचानंत्यायकल्पते" इतिश्रुतिः अंशोनानाव्यपदेशात्ते ॥ ३ ॥

पक्षी खोज मीनको मारग कहै कबीर दोउ भारी ।
अपरम पार पार पुरुषोत्तम मूरति की बलिहारी ॥४॥

ताते मीनकी नाईं संसारते उलटी गति चलिकै पक्षी जो हंस स्वरूप आपनो ताको खोज कबीरजी कहै हैं ये दोऊ भारी हैं संसारते उलटी गति होइबो यह भारी है, आपनो हंसरूप पाइबो यहू भारी है । सोसंसारते उलटी गति करि हंसरूप पाइकै परमपर जो आत्मारूप पार्षदरूप ताहूते उत्तम जे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र तिनकी बलिहारी जाय । भाव यह है तब तेरो जनन मरण छूटैगो ॥ ४ ॥

इति चौबीसवां शब्द समाप्त ।

अथ पचीसवां शब्द ॥ २५ ॥

अवधू बोत तुराबल राता । नाचै बाजन बाज बराता ॥१॥
मौरके माथे दूलह दीन्हो अकथा जोरि कहाता ।
मड़येके चारन समधी दीन्हो पुत्र बिवाहल माता ॥ २ ॥
दुलहिनि लीपि चौक बैठाये निरभय पद परभाता ।
भातहि उलटि बरातहिं खायो भली बनी कुशलाता ॥३॥
पाणि ग्रहण भये भव मंडौ सुषुमनि सुरति समाता ।
कहै कबीर सुनो हो संतो बूझो पण्डित ज्ञाता ॥ ४ ॥

अवधू बोत तुराबल राता । नाचै बाजन बाज बराता॥१॥

हे जीवौ ! आपतौ अवधू रहेहौ कहे आपके बधू जो है मायासो नहीं रही है परंतु रौरे अब वह तत्त्वमें राते हैं । अथवा हे अवधू ! यह शरीरको राजा है जीव सो अब वह तत्त्वमें राता है । कौन तत्त्वमें राता है ? सोकहै हैं; जहां बाजन नाचै है, बरातबाजै है । सो इहां शरीर बाजनहै सो नाचै है कहे जाग्रत् अवस्थामें स्थूल, स्वप्नअवस्थामें सूक्ष्म, औ सुषुप्ति में कारण, तुरियामें महाकारण, येई नाचै हैं । तिनको जब इकट्ठा कियो अर्थात् एकाग्र मन कियो उन्मनी मुद्राआदिक साधन करिकै तब पचीसौ जे तत्त्व हैं तेई बरात हैं तेई बाजै हैं कहे तिनको जो संघट्ट ह्वैबो है इंद्रियनमें तिनते जो ध्वनि निकसै है तेई दशौ अनहदकी ध्वनि सुनि परती हैं तामेंप्रमाण कबीरहीजीको ॥ "उठतशब्द घनघोर शंखध्वनि अतिघना । तत्त्वोंकी झनकार बजतझीनीझना" ॥ १ ॥

मौरके माथे दूलह दीन्हो अकथा जोर कहाता ।
मड़येके चारन समधी दीन्हो पुत्र बिवाहल माता॥२॥

नाभीमें चक्र है तामें नागिनीको बास है सो चक्रके द्वारमें मुड़दिये परी है । आत्मानीचे है सो वह आत्मा दूलह है ताहीकी नागिनी मौर ह्वै रही

है सो जब पांचहजार कुंभक कियो तब नागिनी जागी सो ऊपर को चढ़ी तब चक्रको द्वार खुलिगयो तब आत्माती दूलहहै सो चढ़िकै और जो नागिनीहै ताके माथेपर गैब गुफामें बैठ्यो जाइ। औ बरातनमें जो नहीं कहिबेलायक झूंठीबात सो गारीमें कहैहैं इहां शरीरमें ब्रह्म ह्वैजैबो अकथहै कहिबे लायक नहीं है। सो कहै हैं कि, हम ब्रह्मह्वैगये। औ मड़ये के चारनको नेग समधी देइहै; इहां मड़येके चारनके नेगनमें समधीही दीन्होहै। मायाको पिता जो मनहै सो एक समधीहै औ मनके समधी साहबहैं काहेते कि, यहजीव भगवद्वात्सल्यको पात्रहै जबयह आत्मा विषयनमें रह्यो है तब बेजाने कबहूं कहतहू सुनतरह्यो जबते ब्रह्माड मड़वामें गयो तबते कबीरजी यहकूट करै हैं कि,मड़येके चारन में समधीको देराख्यो है कहे समधी जो साहब ताको कहिबो सुनिबो मिटिगयो। सो जानैतो यहहै कि, हम मायाते छूटिगये पै नागिनीको जै बुन्दसुधा देइहै तै वर्ष वहां समाधि लागै है सो नागिनी ही वहां गीहरौख है सो पुत्र जो जीवहै सो माता जो माया है ज्योतिरूप आदिशक्ति ताको बिवाहि लेयहै कहे वाहीके संग ज्योतिमें लीनह्वै के वहां रहै है ॥ २ ॥

दुलहिनि लीपि चौक बैठाये निर्भय पद परभाता ।
भातहिं उलटि बरातहिं खायो भली बनी कुशलाता॥३॥

चौक लीपिकै दुलिहिन को बैठावै हैं। यहां दुलहिन जो है माया जो जगत् रूप करिकै नानारूपहै ताको लीपिकै एक करिडारयो कहे एक ब्रह्मही मान भयो ताके ऊपर चौकबैठायो कहे चौक देत भयो। अर्थात् अंतःकरणावच्छि जो चैतन्य सो प्रमातृचैतन्य कहावै है। वृत्त्यवच्छिन्न जो चैतन्य सं प्रमाणचैतन्य कहावै है। बिषयावच्छिन्न चैतन्य प्रमेय चैतन्य कहावै है। स्फूर्त्यवच्छिन्नचैतन्य स्फूर्त चैतन्य कहावै है। सो ये चारों चैतन्यको चौकबैठायो कहे चौक पूर्यो अर्थात् चारो चैतन्यको एक करिकै स्थितकियो बिवाह होत होत भिनसार होइ जायहै तब यह मन भयो कि, हम निर्भय पदको पहुंचिगये प्रभात ह्वैगयो, मोहरात्री ब्यतीत ह्वैगई। नागिनीको जो अमृत सरोवर में अमृत पियावै है सोई भातहै सो नागिनी जब अमृतपियो तब वहै भात बरात जो आगेबर्णनकरि आये पांचतत्त्व पचीसप्रकृति ताकोखा

लियो अर्थात् कुछ सुधि न रहगई । सो कबीरजी कहै हैं कि भली कुशलात बनीहै कि तब तो कुछसुधिहू रही अब कछू सुधिनहीं राहिगई ॥ ३ ॥

पाणि ग्रहण भये भव मंड्यो सुषुमनि सुरति समाता ।
कहै कबीर सुनो हो संतो बूझो पंडित ज्ञाता ॥ ४ ॥

वहां मंडप परे पर पाणिग्रहणहोयहै यहां पाणिग्रहणभयेपर भव मंड्यो अर्थात् जब पाणि ग्रहण मायाको ह्वै चुक्यो कहे नागिनी को जब सुधा पिआइ चुक्यो तब जे मुहँ नागिनीको पानी दियो तैसेहि फल मिल्यो । एक मुंह दियो तौ महीना भरेकी समाधि लगी औ दुइमुंहदियो तौ तीन महीनाकी समाधि लगी औ चारि मुंहदियो तौ छः महीनाकी समाधि लगी. औ पांचमुंहदियो तौ बर्षदिनकी, औछःमुंहदियो तौ तीन वर्षकी, औ सातमुंहदियो तौ बारहवर्षकी, समाधिलगी । और जो हजारनवर्ष समाधि लगावाचाहै तौ और मुंहदेय । सो जब नागिनीको सुधा पिआयो तब जे मुँह दियो तेतनेनदिन भर सुषुमनि सुरति समाता । अर्थात् सुषुम्णामें जीवकी सुरति समाइहै । पुनि जब समाधि उतरी तब फिर भव मंड्यो कहे संसारी भयो अर्थात् पुनि ब्रह्मांड मंड्यो कि, शरीरकी सुधि भई । सो कबीरजी कहै हैं कि, हे संतो ! हे ज्ञाता पंडितौ ! तुम सुनौ तौ बूझौ तौ वे कहां मुक्तभये ? नहीं भये फेरि तौ संसारही में उलटि आवै हैं ॥ ४ ॥

इति पचीसवां शब्द समाप्त ।

अथ छब्बीसवां शब्द ॥ २६ ॥

कोई विरला दोस्त हमारा भाई रे बहुतका कहिये ।
गाठन भजन सवारे सोइ ज्यों राम रखै त्यों रहिये ॥ १ ॥
आसन पवन योग श्रुति संयम ज्योतिष पढ़ि बैलाना ।
छौ दर्शन पाखंड छानबे येकल काहु न जाना ॥ २ ॥

आलम दुनी सकल फिरि आये कलि जीवहि नाहिं आना।
ताही करिकै जगत उठावै मनमें मन न समाना ॥ ३ ॥
कहै कबीर योगी औ जंगम फीकी उनकी आसा।
रामै राम रटै ज्यों चातक निश्चय भगति निवासा ॥ ४ ॥

कोइ बिरला दोस्त हमारा भाईरे बहुत का कहिये ।
गाठन भजन सवारै सोइ ज्यों राम रखै त्यों रहिये ॥१॥

कबीरजी कहै हैं कि, हे भाइउ जीवौ ! और और बहुत मतवारे तौ बहुत जीव हैं तिनको कहा कहिये । रामोपासक हमारो दोस्त जैसे हम गाढ़ भजन करिकै रामचन्द्र को देख रहे हैं ऐसे वह गाढ़ भजन करिकै रामचन्द्र को देख रहै । औ जैसे हम को राम राखै है तैसही रहै हैं ऐसे वहू रहै हैं । क्षणभरि न भूलै ऐसा कोई बिरला है ॥ १ ॥

आसन पवन योग श्रुति संयम ज्योतिष पढ़ि बैलाना ।
छौदर्शन पाखंड छानवे येकल काहु न जाना ॥ २ ॥

अब बहुत मतवारे जे बहुतहैं तिनको कहै हैं कोई आसन दृढ़ करैहै कोई पवन साधैहै कोई योग करैहै कोई वेद पढ़ैहै । कोई संयम करैहै कोई व्रत करैहै कोई ज्योतिष पढ़ै है सो ये सब बैकलाइ गये । जो बैकल होइहै सो झूंठको साँच जानैहै औ साँच को झूंठ मानैहं । सो छःदर्शन छानबे पाखण्डवारे जे ये सबहैं एकल कहे एक स्वामी सबके परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनको न जान्यो अथवा एकलकहे जौने करते मैं उपासना करौहौं सो कोई नहीं जानै है ॥ २ ॥

आलम दुनी सकल फिरि आये कलि जीवहि नहिं आना।
ताही करिकै जगत उठावै मनमें मन न समाना ॥ ३ ॥

आलम कहे दुनियां संसार सो सब जीव दुनियांमें फिरि आये गुरुवा लोगनके यहांपर या कल जौनेकरते मैं उपासना श्रीरामचन्द्रकी करौ हौं सो आपने जियमें न आनत भये जातेसंसार छूटिजाय साहब मिलैं जे नानामत आगेकहिआये ताही

करिकै जगत्को उठावैहै कि, जगत् उठिजाय मरिहि जाइ । सो यह जगत् तो मन रूपही है सो उनके मनमें मनरूप जगत् न समान्यो अर्थात् उनको मिथ्या कियो न करिगयो । अथवा धोखाब्रह्म ताको मन कहे बिचार उनके मनमें समाई रह्योहै ताही करिकै जगत को उठावै है कि, जगत् न रहिजाई सोऊ न उठ्यो ॥ ३ ॥

कहैकबीर योगी औ जङ्गम फीकी उनकी आसा ।
रामै नाम रटै ज्यों चातक निश्चय भक्ति निवासा ॥ ४ ॥

सो कबीरजी कहैहैं कि योगी जंगमन की सबकी आशा फीकी है काहेतें धोखाब्रह्मके ज्ञानते संसार मिथ्यानहीं होइहै । जीवनके ब्रह्महोबेकी आशा फीकी है सो जो रामनाम निशिबासर लेबैहै औ जैसे चातक एक स्वातीही की आशा करै है तैसे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्रकी आशा करैहै ताहीके हृदयमें उनकी भक्तिको निश्चय कै निवासहोइहै भक्तिरसरूपहै याते इनकी आशासरिसैहै अर्थात् सफलैहै औ सोई संसार सागर ते उबरै है सो आगे रमैनीमें कहिआये हैं ॥ "कहै कबीरते ऊबरे जोनिशिबासर नामहिलेव" ॥ ४ ॥

इति छब्बीसवां शब्द समाप्त ।

अथ सत्ताईसवां शब्द ॥ २७ ॥

भाई अद्भुत रूप अनूप कथा है कहौं तो को पतिआई।
जहँजहँ देखों तहँतहँ सोई सब घट रह्यो समाई ॥ १॥
लछि बिनु सुख दरिद्र बिनु दुख है नींद बिना सुख सोवै।
जस बिनु ज्योति रूप बिनु आशिक रतन बिहूना रोवै॥२॥
भ्रम बिनु ज्ञान मनै बिनु निरखे रूप बिना वहु रूपा ।
थितिबिनु सुरति रहस बिनु आनँद ऐसो चरित अनूपा॥३॥
कहै कबीर जगत बिनु माणिक देखो चित अनुमानी ।
परिहरि लाभै लोभ कुटुँब सब भजहु न शारँगपानी॥४॥

भाई अद्भुत रूप अनूप कथा है कहौं तोको पतिआई।
जहँजहँ देखों तहँ तहँ सोई सबघट रह्यो समाई ॥ १ ॥

जाति करिकै सबजीव एकही हैं तातेजीवनको भाई कह्यो कि, हे भाई जीवो ! वे जे हैं परमपुरुष श्रीरामचन्द्र तिनको अद्भुतरूपहै, अरु वहि रूपकी अनूपकथाहै सो मैं जो वाको दृष्टांत दैके समुझाऊंहौं कि,वाको रंग दूर्वा दलकी नाईं है, अरसी कुसुमकी नाईं, नील कमलकी नाईं, तौ येई सबमें भेदपैरै एक एककी तरह नहीं है वहतो मनबचनकें परे है। ऐसेनाम रूप लीला धाम सबहै वाको तौ कैसे समुझाऊं।काहेते जोमैं वाको समुझाइकै कहौं तौ कैसे कहो औ जों कहबऊकरौं तौ कोई पतिआय कैसे। सो यहितरहको जो याको रूपहै सो जहां जहां देखोहौं तहां तहां वहै रूप देखायहै। काहेते कि, सबघटमें समायरह्यो है। यहां सबघटमें समान्यो जोकह्यो ताते चितहू अचितहू में समाइरह्यो यह-आयो जो ब्यंग्य पदार्थहै जीव ब्रह्म माया काल कर्म स्वभाव ताहीको सब देखैहै औ जो व्यापक पदार्थ है ताको कोई नहीं देखैहै। जो चितहू अचितमें जो कहो वही धोखा ब्रह्मको तुमहूं कहतेहौ जो सर्वत्र फैलि रह्यो है तौ वाको कोई-नहीं कहतेहैं; काहेते कि, अद्वैतबादी कहै हैं कि, सब पदार्थ वही ब्रह्महो है वाते भिन्न दूसरो पदार्थ नहींहै औ हम कहैहैं कि, सबपदार्थ चित् अचित् रूपते व्याप्य है औ हमारो साहब सर्वत्र व्यापक है सो जाको बिश्वास होइ ताको वे साहब साकेत निवासी परम पुरुष श्रीरामचन्द्र सहजही प्रकट ह्वै जायहैं। सो जो मैं कहौहौं ताको नहीं प्रतीत करै हैं। चित् जो है जीव औ ब्रह्म ताहूमें श्रीरामचन्द्र व्यापक हैं तामेंप्रमाण ॥ "ओंयोवैश्रीरामचन्द्रोभगवान द्वैतपरमानन्दात्मा यः परंब्रह्मेतिरामतापिन्याम्" ॥ जीवहूमें व्यापकहैं तामें प्रमाण ॥ "यआत्मनितिष्ठन् यआत्मानं वेदयस्यात्माशरीरमिति" ॥ मायादिक सबमें व्यापक हैं तामेंप्रमाण ॥ "यस्यभासासर्वमिदंविभातीतिश्रुतिः" ॥ १ ॥

लछि बिनु सुख दरिद्र बिनु दुख है नींद बिना सुख सोवै।
जस बिनु ज्योति रूप बिन आशिक रतन बिहूना रोवै॥२॥

कैसो साहब सर्वत्र पूर्णहै सो बतावैहैं । लछिबिनु सुखकहे जो पदार्थ प्रत्यक्ष नहीं होइ है तामें सुखनहीं होइहै देखो तो नहीं परै है साहब पै जों कोई स्मरण करै है सर्वत्र ताको सुखहोयहै । साहबको कौनौ बातको दरिद्र नहीं है जो चाहै सो करिडारै समर्थहै परन्तु नानाजीवनको अज्ञानमेंपरेदेखिकै साहिबोको यही दुःख है कि, मेरे अंश जीव माया में परिकै नरक स्वर्ग जाय हैं । काहेते यहदुःखहै कि, साहब अतिदयालुहैं तामेंप्रमाण ॥ " तावत्तिष्ठतिदुःखीवयावद्दुःखं न नाशयेत् । सुखीकृत्यपरान्भक्तान्स्वयम्पश्चात्सुखीभवेत् इति" ॥ ध्वनि यह है कि,साहब दयालु हैं ते सर्वत्र पूर्णहैं यह बिचारिकै कि जीव मोको जहैं स्मरणकरै मैं तहैं उबारिलेउँ । फिरिकैसो साहब है कि, मोहनिद्रा नहीं है सदाजगै है अपने भक्तनकी रक्षाकरिबेको । ऐसेहू साहबके सम्मुख जो जीव नहीं होइहैं तिनकी और सदा सुखमय साहब सोवै है अर्थात् कबहूंनहीं देखैहै । फिरकैसो साहबहै जाकी ज्योति जो ब्रह्म है अर्थात् जाको लोकप्रकाश जो है ब्रह्म सो बिना कौनौ कथै है वा कौनौ लीलैकियो अकथैहैं ऐसे साहबके बिना रूपमें आशिकभये साहबको ज्ञानरत्न विहीना जीवसंसार में जनन मरण पाइपाइ रोवैहै ॥ २ ॥

भ्रम बिनु ज्ञान मनै बिनु निरखै रूप बिना बहुरूपा ।
थिति बिनु सुरति रहस बिनु आनँद ऐसो चरित अनूपा॥३॥
कहै कबीर जगत बिन माणिक देखौ चित अनुमानी ।
परि हरि लाभै लोभ कुटुंब सब भजहु न शारँग पानी॥४॥

फिर कैसोहै साहब भ्रमबिनाहै अर्थात् कबहूं मायासबलित ह्वैकै जगत्मेंही उत्पत्तिकियो । सदा ज्ञान गुण सदा ज्ञान स्वरूप है । तौने साहबको मानै बिना निरखै कहे बिना ह्वैकै हंस स्वरूप पाइकै तैं देखै । कैसे हैं साहब कि, चित् अचित जेरूपहैं तेहि बिनाहैं अर्थात् ये स्पर्श नहीं करिसकै हैं औचित अचित्के शरीरी ह्वै बहुत रूपौ हैं सब उन्हींके रूपहैं । फिरि कैसहैं जब साहब सुरति दीन है तब जीवन की स्थिति भई है । औ सुरति नहीं है साहबकी स्थिति वा लोक में बनी है । औ आनंदजो मनबचनमें आवै है सो नहीं है वहां आनंद बनो

है । ऐसे साहबके अनूप चरित हैं । अर्थात् जो रहस कहिआये सोऊ मन बचनके परे है । सो कबीरजी कहै हैं कि, जोचित्तमें अनुमानकरि देखौ तौ यावत् उपासना औ ज्ञान तुम करौ हौ, जगत् मुक्तिरूप माणिक काहूते न मिलैगी । ऐसी मुक्तिके लाभ को लोभत्यागिकै औ सब कुटुंब जे गुरुवालोग तिनको त्यागिके शारंगपानी कहे धनुषको ेन्हे साहब तिनको काहे नहीं भजौहौ अर्थात भजौ ॥ ३ ॥ ४ ॥

इति सत्ताईसवां शब्द समाप्त ।

अथ अट्ठाईसवां शब्द ॥ २८ ॥

भाई रे गैया एक विरंचि दियोहै भार अभर भो भाई ।
नौ नारीको पानि पियतिहै तृषा तऊ न बुताई ॥ १ ॥
कोठा बहत्तरि औ लौलाये बज्र केवाँर लगाई ।
खूंटा गाड़ि डोरी दृढ़बांधो तेहिवो तोरि पराई ॥ २ ॥
चारि वृक्ष छौ शाखा वाके पत्र अठारह भाई ।
एतिक लै गैया गम कीन्हो गैया अति हरहाई ॥ ३ ॥
ई सातौ अवरण हैं सातौ नौ औ चौदह भाई ।
एतिक गैयै खाइ बढायो गैया तौ न अघाई ॥ ४ ॥
खूंटामें राती है गैया श्वेत सींग हैं भाई ।
अवरण वरण कछू नहिं वाके भक्ष अभक्षै खाई ॥ ५ ॥
ब्रह्मा विष्णु खोज कै आये शिवसनकादिक भाई ।
सिद्ध अनंत वहि खोज परेहैं गैया किनहुं न पाई ॥ ६ ॥
कहै कबीर सुनो हो संतो जो या पद अरथाइ ।
जो या पद को गाइ विचारि है आगे ह्वै तरिजाई ॥ ७ ॥

भाई रे गैया एक विरंचि दियोहै भार अभर भो भाई ।
नौ नारीको पानि पियति है तृषा तऊ न बुताई ॥ १ ॥

हे भाई जीवो! एक बाणीरूप गैया तुमहीं सबको बिरंचि जे ब्रह्माहैं ते दियो है । सो गैयाको जो तात्पर्य दूधहै ताको तुम न पायो गैयाको भारा अभर ह्वैगयो तुम्हरो सँभारो न सँभारिगयो । अर्थात् जोजो बाणीमें बिधि निषेध लिखे हैं सो तुम्हारो कियो एकौ नहीं ह्वै सकैहै । सो ये मायिक विधि निषेध तो तुम्हारे किये ह्वै नहींसकैहै । बाणी जो तात्पर्य वृत्तिते बतावैहै सो तो अमायिकहै कैसे जानौगे? वह गैया कैसी है सो बतावैहैं नौ कहे नवो जे व्याकरण हैं तिनकी जो नारी कहे राहहै तिनकर जो शब्दरूपी जलहै ताको पियै है अर्थात् वोहीके पेटते वेदशास्त्र सब निकसै हैं औ वहीके पेटमें हैं ते शास्त्र वेद वोही नवो व्याकरणके शब्दरूपी जलते शोधे जायहैं । अर्थात वही बाणीमें जल समाइहै परन्तु तृषा तबहूं नहीं बुझाइहै कहे वोही नवो व्याकरण करिकै शोधैहै शास्त्रार्थ करतही जायहै बोध नहीं होइहै कि, शुद्धह्वैगयो पुनि प्रणीतन में आर्ष कहिदेयहै ॥ १ ॥

कोठा बहत्तरि औ लौलाये वज्र केवाँर लगाई ।
खूटा गाड़ि डोरी दृढ़ बांधो तेहिवो तोरि पराई ॥ २ ॥

पातंजल शास्त्रवाले वही गायत्री गैयाको बांधन चह्यो बहत्तरिउ कोठाते लौलगाइकै कहे श्वास खैंचिकै खेचरी मुद्राकरि घेटीके ऊपर बज्र कपाट जो लग्यो है ताको जीभते टारयो तब वहां अमृत श्रवो तब नागिनी उठी श्वासाके साथ ऊपरको चढ़ी ताके साथ आत्मौ खूंटा जो ब्रह्मांडहै ब्रह्मज्योति तहां पहुंच्योजाई सो ज्योतिरूप ब्रह्मखूंटाहै तामें प्रणागिनी जो गैयाहै ताको बांध्यो तेहिवो तोरि पराई कहे जब समाधि उतरी तबफिरि जसकोतस संसारी ह्वै गयो नागिनीशक्ति उतरिआइ पुनि जीवनको संसारमें डारिदियो ॥ २ ॥

चारि वृक्ष छौ शाखा वाके पत्र अठारह भाई ।
एतिक लै गैया गमकीन्हो गैया तउ न अघाई ॥ ३ ॥

पातंजल शास्त्रमें योगक्रियाहै सो कायाते होयहै ताते अलग कह्यो अब सब मेटिकै कहैहैं । चारि वेदजेहैं तेई वृक्षहैं औ छइउ शास्त्रजे हैं तेई शाखाहैं अठारहौपुराण पत्रहैं सो एकलेकहे यहां लगे । गैयागमनकै जातभई कहे प्रवेश कैजातभई सो गैया बड़ी हरहाई है अर्थात् जहां जहां आरोपकियो तौन तौन वह खाय लियो अर्थात् जौन जौन आरोप कियोहै तौन वाके पेटते बाहर नहीं है भीतरहीहै ॥ ३ ॥

ई सातौ अवरणहैं सातौ नौ औ चौदह भाई ।
एतिक गैया खाय बढ़ायो गैया तउ न अघाई ॥ ४ ॥

ई सातौ जे कहिआये छःचक्र औ सातौ सहस्रार जहां ब्रह्मज्योतिमें जीवको मिलावैहै अरु सातौ आवरणजेहैं पृथ्वी अप तेज वायु आकाश अहंकार महत्तत्त्व अथवा सातौ बार काल अरु नौ खंड जे हैं अरु चौदहौ भुवन जे हैं सोई सबनको गैया खाइकै बढ़ाइ डारचो तऊ न अघातभई अर्थात् सब बाणीमय ठहरे ॥ ४ ॥

खूंटा में राती है गैया श्वेत सींग हैं भाई ।
अवरण वरण कछू नहिं वाके भक्ष अभक्षौ खाई ॥ ५ ॥
ब्रह्मा विष्णु खोजकै आये शिव सनकादिक भाई ।
सिद्ध अनंत वहिखोज परे हैं गैया किनहुं न पाई ॥ ६ ॥

सो वह गैया खूंटा जो धोखाब्रह्महै तामें राती है अर्थात् ब्रह्म माया सबलितहै । अरु वहि गैयाके सींग श्वेत हैं कहे सतोगुणी हैं सोई ब्रह्ममें बांधिबो है औ अबरण कहे असत् औ बरण कहे सत् ई वाके कोई नहीं है अर्थात् सत् असत्ते विलक्षणहै अथवा अबरणकहे नहीं है बरण जाके निरक्षर ब्रह्म नाम रूपादिक नहीं है जाके औ वरणकहे अक्षर ब्रह्म जीव ईदोनों नहीं है वाके अर्थात् ईदोनोंतें बिलक्षणहै । औ भक्ष अभक्षौ खाइहै कहे कर्म करावन लायकहै सो करावैहै औ जोकर्म करावन लायक नहीं है सोऊ करावैहै । अर्थात् बिद्यारूपते शुभकर्म करावैहै सो वाको शिव सनकादिक ब्रह्मा बिष्णु महेश

अनन्त सिद्ध खोज मरे पै गैयो कोऊ न खोजे पायो कि, सत् है कि, असत् है तात्पर्यऊ न जाने ॥ ५ ॥ ६ ॥

कहै कबीर सुनो हो संतो जो या पद अरथाई ।
जो या पदको गाइ विचारि हे आगे ह्वै तरिजाइ ॥ ७ ॥

श्री कबीरजी कहै हैं कि, हे संतो! सुनौ जो यह पदको अर्थ है कहे अर्थ विचारि है औ जौन पद हम बर्णन करिआये सब ब्रह्माण्ड सप्तावरण आदिदैकै जेपदहैं कहे स्थान तिनको जोकोई गाइ कहे मायाको रूपही बिचारैगो कि यहां भरतो मायाही है सो मायाके आगे ह्वैकै साहबको लोक बिचारैगो सोई तरैगो ॥ ७ ॥

इति अट्ठाईसवां शब्द समाप्त।

अथ उन्तीसवां शब्द ॥ २९ ॥

भाई रे नयन रसिक जो जागै ।
परब्रह्म अविगत अविनाशी कैसेहु कै मन लागै ॥ १ ॥
अमलीलोग खुमारी तृष्णा कतहुं सँतोष न पावै ।
काम क्रोध दोनों मतवाले माया भरिभरि प्यावै ॥ २ ॥
ब्रह्म कलारचढ़ाइनि भाठी लै इन्द्री रस चाखै ।
सँगहि पोच ह्वै ज्ञान पुकारै चतुर होइ सो नाखै ॥ ३ ॥
संकट शोच पोच या कलिमों बहुतक व्याधि शरीरा ।
जहँवांधीरगँभीर अतिनिर्मल तहँउठि मिलहु कबीरा॥४॥

यहां अब मायाकेपरे जे साहबहैं तिनको बतावै हैं ।

भाई रे नयन रसिक जो जागै ।
परब्रह्म अविगत अविनाशी कैसेकै मन लागै ॥ १ ॥

हे भाइउ ! नयन रसिकजोहै संसारी चर्म चक्षुते भिन्नभिन्नदेखि बिषयरस लेनवारो सो जो जागै कहे मुमुक्षूहोइ तौ ब्रह्मके पार औ अबिगत कहे बिगत नहीं सर्वत्र पूर्ण औ अबिनाशी कहे जाको नाश कबहूं नहीं होइहै ऐसे जे परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनमें कैसैके मन लागै जो कैसेहुके पाठहोय तौ यह अर्थ है जो कैसेहुकै मन लगबो करै तौ बीचमें बहुत अवरोधहैं ॥ १ ॥

अमली लोग खुमारी तृष्णा कतहुं सँतोष न पावै ।
काम क्रोध दोनों मतवाले माया भरिभरि प्यावै ॥ २ ॥

सबलोग अमली हैं विषय छांड़्यो पैतृष्णाकी खुमारी लगी है अरु कहूं संतोषको नहीं पावै है । फिरि काम मत जो कोकशास्त्रादिक क्रोधमत जो मुद्राराक्षसादि ग्रन्थनमें प्रतिपाद्य जे मतहै तेई प्यालाहैं तिनको काम क्रोध रूप जो मद सो माया भरिभरि उन को पिआवै है ॥ २ ॥

ब्रह्मकलार चढ़ाइनि भाठी लैइन्द्री रसचाखै ।
सँगहि पोच होइ ज्ञान पुकारै चतुर होइ सो नाखै॥३॥

प्रथम तों काम क्रोधादिकनते जागन नहीं पावैहै जो कदाचित् जाग्यो तो ब्रह्म जो कलारहै जे अहंब्रह्म बुद्धि करै है गुरुवालोग जे भाटी चढ़ाइन ज्ञान सिखवै लगे कि तुहीं ब्रह्महै ताहीं में इन्द्रिनको लैकरिकै अहंब्रह्मास्मिको रसचाखन लग्यो अर्थात् ब्रह्मानंदको अनुभव करनलग्यो जो मदपियै है ताको ज्ञान भूलि जायहै यहै कहैहै कि मैहीं मालिकहौं सो जो गुरुबालोगन को संगकियो ब्रह्मानंद पानकियो सो मैं साहबकोहौं यहभक्ष भूलिगई वही गुरुवा लोगनको ज्ञानदियो पुकारन लग्यो कि मैहीं ब्रह्महौं।पर जो चतुराहाइ सो बिघ्ननको नाकि जाइहै॥ ३ ॥

संकट शोच पोच या कलिमों बहुतक व्याधि शरीरा ।
जहँवां धीर गँभीर अति निर्मल तहँ उठि मिलहु कबीरा॥४॥

पोचकहे अज्ञानी जे जीवहैं तिनको यहि कलिमें कहे माया ब्रह्मके झगड़ामें बहुतसंकट शोचे औ व्याधिशरीर को है सोजहां अति धीर है कहे चलायमान नहीं है निश्चलपद है औ गंभीर कहे गहिरहै औ निर्मल कहे माया

ब्रह्मको लेश नहीं है सो हे कबीर ! कायाके बीर जीवो ! मायाब्रह्मके तुम परे हौ तहांते उठिकै कहे मायाब्रह्मके विघ्ननते निकासिकै साहबको मिलौ तबहीं तिहारो जनन मरण छूटैगो ॥ ४ ॥

इतिउन्तीसवां शब्द समाप्त ।

अथ तीसवां शब्द ॥ ३० ॥

भाई रे!दुइ जगदीश कहांते आये कहु कौने भरमाया ।
अल्लाः राम करीम केशव हरि हजरत नाम धराया ॥ १ ॥
गहना एक कनक ते गहना तामें भाव न दूजा ।
कहन सुननको दुइ करि थापे यक निमाज यक पूजा॥२॥
वही महादेव वही महम्मद ब्रह्मा आदम कहिये ।
कोइ हिंदू कोइ तुरुक कहावै एक ज़िमीं पर रहिये ॥ ३ ॥
वद किताव पढ़ै वे खुतवा वे मोलना वे पांड़े ।
विगत विगतकै नाम धरायो यक माटी के भांड़े ॥ ४ ॥
कह कवीर वे दूनौं भूले रामहिं किनहुं न पाया ।
वे खसिया वे गाय कटावैं वादै जन्म गँवाया ॥ ५ ॥

अब यहां यह बर्णन करै हैं कि दूसरो जगदीश नहीं है परमपरपुरुष जे श्रीरामचन्द्रहैं तेई जगदीशहैं ॥

भाई रे ! दुइ जगदीश कहांते आये कहु कौने भरमाया ।
अल्लाः राम करीम केशव हरि हजरत नाम धराया ॥ १ ॥
गहना एक कनकते गहना तामें भाव न दूजा ।
कहन सुननको दुइकरि थापे यकनेवाज यकपूजा ॥ २ ॥

श्रीकबीरजी कहै हैं कि, हे भाइउ ! दुइजगदीश कहांते आये तोको कौनें भरमायो है । अल्ला राम करीम केशव हरि हजरत ये तौ सब नामभेद हैं

कहत तो एकही को हैं ॥ १॥ जैसे एक गहना को सुवर्ण ते गहना कहे गहिलेइ कहे सुवर्ण बिचारिलेइ तामें भाव दूजा नहीं है वह सुवर्ण है जैसे कोई चूड़ा कोई बिजायठ इत्यादिक नाम कहै हैं परन्तु है सुवर्णही तैसे कहिबे सुनिबेको दुइ करि थाप्यो ह यक निमाज़ यक पूजा परन्तु है सब साहबकी बंदगीही परम परपुरुष श्रीरामचन्द्रही को सेवै हैं ॥ २ ॥

वही महादेव वही महम्मद ब्रह्मा आदम कहिये।
कोइ हिंदू कोइ तुरुक कहावै एक जिमीं पर रहिये ॥ ३ ॥

वोही परम परपुरुष श्रीरामचन्द्रको महादेव औ महम्मद औ ब्रह्मा औ आदम सब कहिये कहे कहतभये कोई राम कहिकै कोई अल्लाह कहिकै कुरानमें लिखै है कि सब नामनमें अल्लाहनाम ऊपर है औ यहां वेदपुराण में लिखै है कि सबनामनमें रामनाम ऊपरहै तामें प्रमाण ॥ " सर्वेषामपिमंत्राणांरा-ममंत्रफलाधिकम् " ॥ इति ॥ " सहस्रनामतत्तुल्यंरामनमावरानने " ॥ याते सबके मालिक परम पुरुष श्रीरामचन्द्रही जगदीशहैं दूसरो जगदीश नहीं है । उन हींके अल्लाहनामको सब नामनते परे महम्मद कुरानमें लिख्योह औ उनहीं नाम को महादेवने तंत्रमें लिख्योहं औ ब्रह्मा वेदमें कहतभये आदम किताबमें कहत-भये अरु इहांतो एक जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं तिनहीं के जिमींमें कहे जगत्में रहत भये। नामके भेदते कोई हिन्दू कोई मुसलमान कहावै है ॥ ३ ॥

वेद किताब पढ़ैं वे खुतुबा वे मोलना वे पांड़े।
बिगत बिगतके नाम धरायो यक माटी के भाँड़े ॥ ४ ॥

जिनके पोथी जमा होयहैं ते कहावैं खुतुबा वे वेदपुराण जमा कैकै पढ़ैहैं वे किताब जमाकैकै पढै हैं वे पंड़ितकहावै हैं वे मोलना कहावै हैं वेद पढ़िकै पंडित किताब पढ़िकै मोलना कहावैं बिगत बिगत कहे जुदा जुदा नाम धराय लेतें भये हैं एकई माटीकेभांड़े कहे हैं सब पांचभौतिकही हैं ॥ ४ ॥

कह कबीर वे दूनौं भूले रामहिं किन्हुं न पाया।
वे खसिया वे गाय कटावैं बादे जन्म गँवाया ॥ ५ ॥

श्रीकबीरजी कहैहैं कि हिंदूतो बोकरा मारिके मुसल्मान गायमारिकें नानाप्रकारके बाद विवाद करिके अथवा बादेकहे वृथाही दोऊ भूलिके जन्म गँवाइ दियो परमपुरुष पर जे श्रीरामचन्द्र तिनको न पावत भये हिन्दू तुरुककें खुदखाविंद एकई है कोई बिरले जानैहैं ते वहां पहुंचै तामें प्रमाण झूलना ॥ "छोड़ि नासूतमलकूत जबरूत लाहूत हाहूत बाजी । और साहूतराहूत इहांडारिदेकूद आहूत जाहूत जाजी ॥ जायजाहूतमें खुदखाविंद जहँ वही मक्कानसाकेत साजी। कहै कब्बीरह्वां भिस्त दोजख थके वेदकीताबकाहूतकाजी" ॥५॥

इति तीसवां शब्दसमाप्त ।

अथ इकतीसवां शब्द ॥३१॥

हंसा संशय छूरी कुहिया । गैया पियै बछरुवै दुहिया १
घरघर सावज खेलै अहेरा पारथ वोटा लेई ।
पानी माहिं तलफिग भूभुरि धूरि हिलोरा देई ॥ २ ॥
धरती वरसै वादल भीगै भीटभया पैराऊ ।
हंस उड़ाने ताल सुखाने चहले बीधा पाऊ ॥ ३ ॥
जौ लगि कर डोलै पगु चलई तौ लगि आश न कीजै ।
कह कवीर जेहि चलत न दीखै तासुवचन का लीजै॥४॥

हंसा संशय छूरी कुहिया । गैया पियै बछरुवै दुहिया १
घरघर सावज खेलै अहेरा पारथ वोटा लेई ।
पानी माहिं तलफिगै भूभुरि धूरि हिलोरा देई ॥ २ ॥

कबीरजी कहै हैं कि हे हंसा! संशयरूप छूरिते मारिगयो तोको उलटो ज्ञान ह्वै गयो । बछरुवा जो है तेरोस्वरूप और ज्ञानरूप जो है दूध ताको गैया जो माया सो दुहिकै पीलियो ॥ १ ॥ सावज जो या मनहै सो घरघरमें कहे शरीर

शरीरमें शिकारखेलेहै । पारथ कहे शिकारी जो तैं सो वोटालेइहै अर्थात् नाना उपासना नानाज्ञान करत फिरै है पै मन तोको नहीं छोड़े है । साउज ते नहीं बचैहै। वाणी रूप जो है पानी नानाशास्त्र तौनेमें(भूभुरि जोसूर्यनके तापते तपित भूमि होयहै सोभूभुरि कहावै है; ऐसे संसार तापते तपितजो)तेरा अंतःकरण सो तलफिगयो अर्थात् अधिकअधिक शङ्का होतभई तिनते अधिकतप्त भयो शीतल न भयो काहेते कि, धूरि जो सूखा ब्रह्मज्ञान सो हिलोरा देनलग्यो कहेशास्त्रनमें वही धोखा ब्रह्महीं देखपरन लग्यो । शास्त्रनको तात्पर्य साहब तिनको न जान्यो॥२॥

धरती बर्षै बादल भीजै भीट भया पैराऊ ।
हंस उड़ाने ताल सुखाने चहले बीधा पाऊ॥ ३ ॥

बुद्धिजोहै सो धरती है काहेते सब मतनको आधारयहीहै बाणीरूप पानी बरसै है कहे नानामतनको निश्चय कैकै प्रकट करै है । अरु यह बाणी जीवंही ते प्रथम निकसी है सो जीव बादल है सो भीजै कहे वोई मतनको ग्रहणकियो । यह लोकोक्तिहै कि, फलाने फलानेमें भीजिरहे हैं कहे आसक्त ह्वैरहे हैं । भीट चारो वेदहैं मर्यादाते पैराउह्वैगये कहे उनकी थाह कोई न पावतभयो अर्थात् तात्पर्य कारकै जोपरमपुरुष श्रीरामचन्द्रको वर्णनकरेहै सोकोई न पावतभयो । ताल सूखे हंस उड़ैहै यहां हंसउड़े तालसूखे हैं जब हंस उड़ो कहे यहजीव निकसिगयो तबताल जोशरीरहै सोसूखि गयो । तब बासना जेहैं तेई चहला हैं तिनमें पाँउ बँधिरह्यो । जैसे तलाउ जबसूखेउ औ पुनिचौमासेमें जब जल बरस्यो तब जस को तस ह्वैगयो, तैसे बासनामें पाँउफँसिरह्योहै दूसर शरीर जब पायो तब फिर वही शरीरमें तलाउमें हंसजीव बूड़न उतरान लग्यो है । सो भाव यह कि, उड़नको तो करै है पर शरीर तालते अंतै नहीं जाइ सकैहै कोई योनियैमें रहै है ॥ ३ ॥

जौलगि कर डोलै पगचलई तौलगि आश न कीजै ।
कह कवीर जेहि चलत न दीखै तासु वचन का लीजै॥४॥

जबलग पाँउ चलैहै करडोलै है कहे शरीर बनो है तबलगि गुरुवालोगनकी आश न करिये जो आश करैगो तो याहीभांति बँधि रहैगो । सो कबीरजी कहैं

हैं जे गुरुवा लोग नाना पदार्थनमें आश लगाइ देइहैं तिनहींते नहीं चलत बनै है तौ तिनको कह्यो वचन कैसे कीजिये कहे कैसे मानिये ? अर्थात् उनके यहां न जाइये काहेते कि, वे साहबको भुलाईकै और में लगाइ देइँगे । संसार ही में फँसो रहैगो यामें धुनि यहहै कि, जे संसारते छूटेहैं रामोपासकहैं तिनहीं को वचन मानिये तिनहीं के यहां जाइये ॥ ४ ॥

इति इकतीसवां शब्द समाप्त ।

अथ बत्तीसवां शब्द ॥ ३२ ॥

हंसाहो ! चित चेतु सवेरा।इन्ह परपंच करल वहुतेरा ॥१॥
पाखंड रूप रच्यो इन्ह तिरगुण यहि पाखंड भूल संसारा ।
घरकोखसम वधिक भो राजा परजा काधौं करै विचारा॥२॥
भक्ति न जानै भक्त कहावै तजि अमृत विष कैलिय सारा।
आगे बड़े ऐसही भूले तिनहुं न मानल कहा हमारा ॥३॥
कहल हमार गांठी बांधो निशि वासर इहि होहु हुशियारा ।
ये कलिके गुरु वड़ परपंची डारि ठगौरी सब जग मारा॥४॥
वेद किताव दोय फंद पसारा ते फंदे पर आप बिचारा ।
कह कवीर ते हंस न विछुड़े जेहिमें मिल्यो छोड़ावनहारा५

हंसाहो चितचेतु सवेरा । इन्ह परपंच करल वहुतेरा ॥१॥
पाखंडरूप रच्यो इन्ह तिरगुण तेहि पाखंड भूल संसारा ।
घरको खसम वधिक भो राजा परजा काधौं करै विचारा २

हे हंसा जीवौ ! सवेरेते कहे तवहींते चित्तमें चेतकरौ । सवेरेते कह्यो ताको भाव यहहै कि, जब काल नियराइ आवैगो तब कछू न करत बनैगो। तिहारे फांसिबेको यह माया बहुत परपंच कियो है ॥ १ ॥ पहिले पाखंड-

रूप जो वह धोखाब्रह्म है ताको रच्यो तामें मिलिकै तिरगुण जे सत रज तम हैं तिनको तिहारे फांसिबेको मकट कियो। सो तीनों गुणाभिमानी जे तीनों देवता हैं अरु पाखंडरूप जो धोखा ब्रह्म है तामें सब भूलिगये। घरको खसम जब स्त्रीको बधिक कहे दुःख देन लाग्यो मारन लाग्यो तब स्त्री कहा करै। तैसे जो राजा प्रजाको बधिक कहे मारन लाग्यो दुःख देन लाग्यो तब बिचारे प्रजा कहा करैं। सो यह मनतो सबको मालिक ह्वै रह्योहै सो यहीं जो सबको दुःख देन लाग्यो तौ जीव कहाकरै ॥ २ ॥

भक्ति न जानै भक्त कहावै तजि अमृत विष कैलिय सारा।
आगे बड़े ऐसही भूले तिनहुं न मानल कहा हमारा॥ ३॥

भक्तिको तो जानै नहीं हैं भक्त कहावै हैं। अमृत जो है परमपर पुरुष श्रीरामचन्द्रकी भक्ति ताको छोड़िकै बिष जो है और और की भक्ति ताको सारमानि लियोहै सो आगे जे बड़ेबड़े ह्वैगये हैं तेऊ ऐसेही भूलिगये हमारो कह्यो नहीं मान्यो साहबकी भक्ति छोड़िकै और की भक्ति करिके संसारही में परतभये ॥ ३ ॥

कहल हमारा गांठी बँधो निशि वासरहि होहु हुशियारा।
ये कलिके गुरु बड़ परपंची डारि ठगौरी सब जग मारा४

सो हमारो कहो गांठिबांधो। जो अबहूं हमारो कह्यो न मानौगे साहबकी भक्ति न करोगे तौ संसारही में परौगे। कलियुगके जे गुरुवा हैं ते बड़े परपंची हैं सब जगका ठगौरी कहे ठगिकै परमपुरुष पर जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनकी भक्तिकों छोड़ाइकै और और मतनमें डारिदेइहैं। सो निशिबासर हुशियार रहो अर्थात् निशिबासर रामनामको स्मरण करतरहो साहबको जानतरहो गुरुवा लोगनको कहा न मानो ॥ ४ ॥

वेद किताब दोय फंद पसारा ते फंदे पर आप विचारा।
कह कवीर ते हंस न विछुरे जेहि मैं मिलो छोड़ावन हारा५॥

वोई जे गुरुवालोगहैं ते ये वेद किताबको फंदा पसारि कै नाना मत में गुरुआई करतभये। सो वहीफंदमें आप परतभये औ औरहू को वहीफंदमें डारिकै नानाम-

तनमें लगाय देते भये । वेद किताबको तात्पर्य्य न जानतभये । सो कबीरजी कहैंहैं कि, जौने जीवको मैं फंदते छोड़ावनहार मिल्योहौं औ परमपुरुषमें लगाइ दियो ते आजलौं नहीं बिछुरे न बिछुरैंगे।सो तुमहूं पारिखकरिके मेरोकहो मानिकै हे हंसजीवो! तुमहूं फंद छोड़ि परमपुरुष परजेश्रीरामचन्द्र हैं तिनमें लगौ ॥५॥

इति बत्तीसवां शब्द समाप्त ।

अथ तेंतीसवां शब्द ॥ ३३ ॥

हंसा प्यारे सरवर तेजे जाय ।
जेहि सरवर बिच मोतिया चुनते बहु बिधि केलि कराय १
सूखे ताल पुरइनि जल छोड़े कमल गयो कुंभिलाइ ।
कह कबीर जो अबकी बिछुरै बहुरि मिलै कब आइ॥ २ ॥

हे प्यारे हंस ! सरवर जो शरीरहै ता तेजे जाय कहे जिनके शरीर छूटिजायहैं । जौने सरवर शरीरको प्राप्तहोइकै मोतिया चुनैहैं कहे ज्ञान योगादिक साधन करिकै मुक्तिकी चाहकरै हैं औ बहु बिधिकी केलि करै है । जो त्याजे पाठहोय तौ या अर्थ है । हे हंसाजीव ! प्यारो जो सरवर शरीर ताको त्यागे जायहै जौन सरवर शरीरमें नाना देवतनकी उपासनारूप मोती चुने नाना विषयनको भोग कीन्हे सो छोड़ेजायहै ॥ १ ॥ सोशरीररूपी ताल जब सूख्यो कहे रोग करिके ग्रस्तभयो सब पुरइनि जल छोड़ि दियो अर्थात् वह ज्ञान बुद्धि तुम्हारे न रहिगयो । अरु अनुभव तो तुमकरतहो सोई कमलहै सोकुंभिलाइगयो अर्थात् भूलिगयो सो कबीरजी कहै हैं कि, यहि तरहते जो अबकी बिछुरै कहे शरीर छूटिजाय तब पुनि कबै ऐसो शरीर पावैगो । चौरासीलाख योनि भटकैगो तब फेरि कबहूं जैसे तैसे मिलैगो शरीर छूटे ज्ञान योगादिक साधन भूलिजाय हैं । तेहिते मानुष शरीर पायकै साहबको जानै । वह शरीरहू छूटे नहीं भूलै है काहेते कि साहबही अपनो ज्ञान देइहै औ हंसस्वरूप देइहै ॥ २ ॥

इति तेंतीसवां शब्दसमाप्त ।

अथ चौंतीसवां शब्द ॥ ३४ ॥

हरिजन हंस दशा लिये डोलैं। निर्मल नाम चुनी चुनि बोलैं १
मुक्ताहल लिये चोंच लोभावै। मौन रहै की हरि गुण गावै॥२॥
मान सरोवर तटके बासी। राम चरण चित अंत उदासी ॥३॥
काग कुबुद्धि निकट नहिं आवै। प्रति दिन हंसा दर्शन पावै४॥
नीर क्षीरको करै निवेरा। कह कबीर सोई जन मेरा ॥ ५ ॥

जे साहबको नहीं जानै हैं तिनको कहिआये अब जे साहबको जानै तिनकी दशा कहे हैं ॥

हरि जन हंस दशा लिये डोलैं। निर्मल नाम चुनीचुनी बोलैं १

हरिजे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्रहैं तिनके जे जन हैं ते हंस दशा जो है शुद्धजीव पार्षद रूपता तीनी दशाको लिये सर्वत्र डोलै हैं कहे फिरै हैं । यहां हरि जो कह्यो ताको हेतु यह है कि, अपने भक्तनकी सिगरी बाधाहरै सोहरि कहावै है । सो परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र उनकी सिगरी बाधा हरिलेइहैं तब तिनके जन सुख पूर्वक संसारमें फिरै हैं, उनको संसार स्पर्श नहीं करै है । अरु जो नाम माया सबलित है तिनको छोड़िदेइहै औ निर्मल जो नाम राम नामहै मन बचनके परे अमायिक ताको चुनिचुनि कहे साहब मुख अर्थ ग्रहण करिके औ संसारमुख अर्थ छोड़िके बोलै है कहे रामनाम उच्चारण करै हैं । यहां मनबचनके परे जो नाम है ताको कैसे बोलै है ऐसो जो कहो तो ये हंस दशा-लिये डोलै है कहे जब शुद्ध जीव रहिजाय है तब साहब अपनी इन्द्रिय देइहैं तिनते तौने नामको बोले है। जैसे सूमा जरिजायहै तब वाकी ऐंठनभर रहिजा-इहै । तैसे यहशरीरकी आकृतिमात्र रहि जाइहै वह पार्षदही शरीरमें स्थितरहैहैं जब शुद्ध शरीर ह्वै जाइहै तब आपनो पार्षदरूप पावैहै यह आगे लिखि आये हैं॥ १॥

मुक्ताहललिये चोंचलोभावै। मौनरहै की हरिगुणगावै॥२॥

हंस मुक्ताहल चोंच में लिये बच्चनको लोभावै है जौन मांगै है ताके मुंहमें डारिदेइहै । ऐसे साधुनके मुखमें पांचमुक्तिहैं १ सामीप्य २ सारूप्य ३

सायुज्य ४ सालोक्य ५ साष्ट्य तिनते जीवको लोभावै है कहे सब यह जानै है कि इनहींकी दई देनाइहै । जो जौनमुक्तिकी चाहकरिकै उनके समीप जाइहै । ताको श्रीरामनामके उपदेश करिकै तीन भाव बताइकै मुक्ति देइहैं । औ आर मौनही रहै है कि, साहबके गुणगाइकै छके रहैहैं ॥ २ ॥

मान सरोवर तटके वासी। राम चरण चित अंत उदासी॥३॥

हंस जेहैं ते मानसरोवरके तटकेवासी हैं अरु वे साधुकैसे हैं कि मनरूपी जो सरोवरहै ताके तटके बासीहैं कहे मनते भिन्न ह्वै रहैहै जामें हंसकी दशाहै साहबकी दीन ऐसोजो चित्मात्रआपनो स्वरूपहै ताको परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं तिनहींके चरणनमें लगाइ राखैहैं अरुअंत उदासी कहे जो वह धोखा ब्रह्ममें अहं ब्रह्मास्मि मानिकै आत्माको अंत ह्वै जाइहै आपै ब्रह्म मानिलेइहै वहजो है आत्माके अंत ह्वैबेको मन धोखा तेहितें उदासी कहे उदास ह्वै रहैहैं अथवा अंतजो है संसार ताते उदास रहैहैं ॥ ३ ॥

काग कुबुद्धि निकट नहिं आवै। प्रतिदिन हंसा दर्शन पावै४
नीर क्षीरको करै निबेरा। कहं कबीर सोई जन मेरा ॥५॥

तिनके निकट कागरूपी जो कुबुद्धि यह अज्ञान सो निकट नहीं आवै है तौ और मत कैसे आवै सो कबीरजी कहै हैं कि यहि भांतिजो चलै है सो हंसशुद्धजीव प्रतिदिन श्रीरामचन्द्र को दर्शन पावत रहै है सर्वत्र साहबको देखत रहैहै ॥४॥ जैसे हंस नीर क्षीरको निबेरा करै हैं तैसे हंस जे साधु हैं ते असार जो है नाना उपासना नानाज्ञान तामें अमीसी जो वेद शास्त्र पुराणादिकनमें साहबकी उपासना ताको ग्रहण करै हैं औ सब असारको छोड़िदेयहै । सो कबीरजी कहै हैं कि, सोई जन मेरो है अर्थात् जे रामोपासक हैं तेई कबीरपंथी हैं और सब पाखंडी हैं जौने स्वरूपमें हंसदशाहै तौने स्वरूपमें साहबके स्फूर्ति कराय नाम जपैहैं । तामेंप्रमाण ॥ "माळाजपौं न कर जपौं जिह्वा जपौं न राम । मेरासाई मोहिजपै मैं पावों विश्राम्" ॥ ५ ॥

इति चौंतीसवां शब्द समाप्त ।

अथ पैंतीसवां शब्द ॥ ३५ ॥

हरि मोरपीवमैंरामकीबहुरिया।राममोरबड़ामैंतनकीलहुरिया १
हरिमोररहँटामैंरतनपिउरिया।हरिकोनामलैकातलबहुरिया २
छःमासतागवर्षदिनकुकुरी।लोगबोलेभलकातलबपुरी ॥ ३॥
कहै कबीर सूत भल काता।रहँटा न होय मुक्तिको दाता॥४॥

हरि मोरपीवमैंरामकीबहुरिया।राममोरबड़ामैंतनकीलहुरिया १

मोर पीव हरि हैं । पीव कहे वे मोको पियारहैं मैं उनकोऊ पियार हौं । अरुमैं परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्र की बहुरिया कहे नारी हौं । यहां नारी कह्यो सो यह जीव साहबकी चित्‌शक्ति है तामें प्रमाण कबीरजीके **आदि टकसार ग्रन्थ** को ॥ "आतम शक्ति सुबश है नारी । अमर पुरुष जेहि रची धमारी ॥ १ ॥ दूसरो प्रमाण**सायरबीजक**को ॥ " दुलहिनि गाऊ मंगलचार । हमरे घर आये राम भतार ॥ तनरति करि मैं मनरति करिहौं पांचो तत्व बराती । राम देव मोरे व्याहन ऐहैं मैं यौबन मद माती ॥ सरिर सरोवर वेदी करिहौं ब्रह्मा वेद उचारा।राम देव संग भांवरि लेहौं धन २ भाग हमारा ॥ सुर तेंतीसौ कौतुक आये मुनिवर सहस अठाशी । कह कबीर हम व्याह चले हैं पुरुष एक अबिनाशी ॥ २ ॥ अरु श्रीरघुनाथजी मोरबड़ेहैं अरु मैं तनकी लहुरियाहौं, कहे उनके शरीर सर्वत्र व्यापक बिभुहैं औ मैं अणुहौं तामें प्रमाण ॥ अणुमात्रोप्ययंजीवःस्वदेहंव्याप्यतिष्ठति । इतिस्मृतिः ॥ १ ॥

हरिमोररहँटामैंरतनपिउरिया।हरिकोनामलैकातलबहुरिया

अरु हरिजे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं ते मोर रहँटा कहे, चित् अचित्‌रूपतें जगतवोई हैं । अरुमैं रतनपिउरियाहौं यह जगत् जीवंही के वास्ते बन्योहै॥ "जीव सूत ह्वैके लपटि रहे हैं । मैं रतनकी पिउरियाहौं तामे मैं नहीं लपटौहौं। हरिजे श्रीरामचन्द्रहैं तिनको नाम लैकै बहुरिया कहे उलटिकै मैं कात्यो अर्थात् जगत्को जगद्रूप करिकैनहीं देख्यो जगत्को चित् अचितरूप करिकै देख्यो है रामनाममें बहुरिकै साहब मुखअर्थ देख्यो जगत् मुखअर्थ नहीं ग्रहणकियो॥२॥

छः मासताग वर्षदिन कुकुरी । लोग कहल भल कातल वपुरी ३

छः महीनामें एक ताग कात्यो, छःमहीनामें एक ताग और कात्यो तब बर्षदिनमा एक कुकुरीभै दोनों ताग मिलायकै । अर्थात् छः महीनामें अपनौ स्वरूप समुझ्यो कि, मैं साहबकी नारिहौं औ छः महीनामें मैं साहबको स्वरूप समुझ्यो । बर्षदिनमें साहबको मिल्यो सो मैंतो इतनीदेर करिकै मिल्यों साहब तो हजूरहारिहैं ताहूमें लोग कहै हैं कि, बपुरी भलकात्यो जो अनंत-कोटि जन्मते नहींजानैहै सोसाहबको बपु आपनो बपु बर्षै दिनामें समुझ्यो ॥ ३ ॥

कहैं कबीर सूत भल काता । रहँटा न होय मुक्तिको दाता ॥ ४ ॥

श्रीकबीरजी कहै हैं कि, जौने रहँटा जगत्‌ते सूत भल कात्यो है । कर्तवैया कबीरजीको विवेकहै सो रहँटा न होय यह मुक्तिको दाताहै, काहेते कि, जब शुद्ध आत्मा रह्योहै याको परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं न तिनको ज्ञानरह्यो औ न संसारको ज्ञानरह्यो यह शुद्धरूप भरो रह्यो है तामें प्रमाण ॥ "नित्यः सर्वगतस्स्थाणुरचलोयंसनातनः" ॥ इतिगीतायाम् ॥ जब यह याके मन भयो तब संसारको कात्योहै औ संसारमें परिकै दुःख सुख भोग कियो है । औ जब पूरागुरु मिल्योहै तब परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनको पाइकै संसारते छूटिगयोहै औ पुनि संसारमें नहींआयो । सो कबीरजी कहै हैं कि यह रहँटा कहे संसार न होय मुक्तिको दाताहै जो संसार बुद्धि करिकै देखैहै सो संसारमें रहै है औजो संसारको साहबको चित अचित्‌रूप करिकै देखैहै ताको मुक्तिही देइहैं या संसारैमें आये मुक्त भयोहै ॥ ४ ॥

इति पैंतीसवां शब्द समाप्त ।

अथ छत्तीसवां शब्द ॥ ३६ ॥

हरि ठग जगत ठगौरी लाई । हरि वियोग कस जियहु रे भाई १

कोकाको पुरुष कौन काकी नारी । अकथ कथा यम जाल पसारी २

को काको पुत्र कौन काको वापा । कोरे मरै को सहै संतापा ३

ठगि ठगि मूल सबनको लीन्हा । राम ठगौरी बिरलै चीन्हा ४
कहकबीर ठगसो मनमाना । गई ठगौरी ठग पहिंचाना ॥ ५ ॥

हरिठगजगतठगौरीलाई । हरिबियोगकसजियहु रेभाइ ॥ १ ॥

हरिठग कहे हरिरूप द्रव्यके चोरावनहारे गुरुवालोगते जगत् में ठगौरी लगाइकै कहे उपदेश करिकै जीवको ठगि लेइहैं और और में लगाइकै सो हेजीवो ! हरिके बियोगते तुम कैसे जिऔहौ ॥ १ ॥

कोकाकोपुरुषकौनकाकीनारी। अकथकथायमजालपसारी ॥
कोकाकोपुत्रकौनकाकोबापा। कोरमरै कोसहै संतापा ॥ ३ ॥

यहसंसारमें जबसांचे साहबको भूल्यो तबको काको पुरुषहैको किसकी नारी है अकथकथा कहे कहिबेलायक नहीं है काहेते कि जिनकी उपासना करै हैं आपन स्वामीमानैहैं तिनके स्वामी कबहूंहोयहै वोई याकी नारीहोयहै दासहोइहै कबहूं स्त्री पुरुष होयहै पुरुष स्त्रीहोयहै सोयायमकहे दोऊविद्याऽविद्याके जाळपसारयो है ॥ २ ॥ कोकाकोपुत्रहै कोकाकोबापहै कोमरैहै कोसंतापसहैहै तुम को तौ सुखैसुखहै तुमहीं साहबहौ तुमहीं भोगीहौ ॥ ३ ॥

ठगिठगि मूल सबनको लीन्हा। राम ठगौरी बिरलै चीन्हा ४
कह कबीर ठगसो मन माना । गई ठगौरी ठग पहिंचाना ॥ ५ ॥

सो यह समुझाइ समुझाइ सब गुरुवालोग मूलनो है साहबको ज्ञानसो ठगिलेतभये । औजो यहपाठहोइ "ठगिठगि मूँड़ सबनको लीन्हा" तौ यह अर्थ है कि, सबजगंको ठगिठगि मूँड़ि लियो कहे चेलाकरि लियो है । सो यहठगौरी जो रामकैपरीहै कि रामको ज्ञान सब जीवनको गुरुवालोग ठगे लेयहैं । जैसे कोई रुपया को कपड़ाको घोड़ाको ठगै है तैसे गुरुवालोग रामको ठगैहैं तामेंप्रमाण—"शास्त्रंसुबुद्धातत्वेन केचिद्वादबलाज्जनाः । कामद्वेषाभिभूतत्वादहंकारवशंगताः ॥ याथातथ्यंचविज्ञाय शास्त्राणांशास्त्रदस्यवः । ब्रह्मस्तेनानिरारंभादंभमोहवशानुगाः ॥ ४ ॥" सोकबीरजी कहै हैं कि, तुम्हारो मन ठग है जे गुरुवालोग तिनहीं सो मान्योहै ते तुमको ठगिलीन्हे हैं । सोजब तुम ठगको पहिचानि लेउगे कि, ये ठगहैं तब तुम्हारी ठगौरी जातरहैगी ॥ ५ ॥

इति छत्तीसवां शब्द समाप्त ।

अथ सतीसवां शब्द ॥ ३७ ॥

हरिठगठगत सकलजगडोला।गवनकरतमोसौंमुखहुनबोला
बालापनके मीत हमारे । हमैं छोड़ि कहँ चले सकारे॥२॥
तुम अस पुरुष हौं नारि तुम्हारी।तुम्हरिचाल पाहनहुंतेभारी
माटिक देह पवनको शरीरा।हरि ठग ठगतसोडरल कबीरा४

हरिठगठगतसकलजगडोला।गवनकरतमोसोंमुखहुनबोला १

जीव कहे हैं कि, हरिको ठग जो गुरुवाहैं सो ठगहारी करिकै सब जीवन को ठगतकहे हरिते बिमुख करत जगडोलाकहे संसारमें फिरै है । अरु जब गमनकरनलगे यम घेरिलियो तब मोसों मुखहूते न बोले कि, एतेदिन जौने जौनेमें लगेरहे ब्रह्ममें अथवा जीवात्मामें ते न बचायो । यह खबरिकहि समुझाय न दियो कि, हम को धोखा ह्वैगयो तुमहूं धोखामें न परौ ॥ १ ॥

बालापनके मीत हमारे । हमैं छोड़ि कहँ चले सकारे ॥२॥
तुमअसपुरुष हौं नारितुम्हारी।तुम्हारी चालपाहनहुंतेभारी

सो तुम बालापनके हमारे मीतहौ जबभर रह्यो जियो तबभर हमको धोखाही-में लगायेरहे अब हमैं छोड़िकै सकारे कहे हमहींते आगे कहांजाहुगे काहेते कि, तुमतो काहू को रक्षक मान्यो नहीं वही धोखामें लगेरहे, आपही को मालिक मानेरहे, अब तुम्हारी रक्षा कौन करै ? सो जब तुम्हारी कोई न कियो यम लैहीगये तौ जौन ज्ञान हमको दियो है तौनेते हमारी रक्षाकौन करैगो॥२॥ तुम ऐसो हमारे पुरुषहै तुम्हारी हम नारी हैं कांहेते कि, बीजमंत्र हम को उपदेश दियो है सो तुम्हारी चाल पाहनौते भारी है कहे पाहनौ ते जड़ है तेहिते साहबको भुलाइदियो ॥ ३ ॥

माटिकि देह पवनकोशरीरा ।हरिठग ठगतसोडरलकबीरा४

माटीकी यह देह है सो स्थूल शरीर नाशवानहै औ पवनको शरीर सूक्ष्म शरीर है सो मनोमय चंचलहै ज्ञानभये वहौ नाशमानहै तामें स्थित जे कबीर कहे

कायाके वीर जीवहैं ते हारि जे परम पुरुष श्रीरामचन्द्रहैं सबके कलेश हरनवारे तिनको ठग जे गुरुवालोग हैं तिनके ठगतमें कहे रक्षकको छपायदेतमें जीवडरै है कि, हमारी रक्षा अब कौन करैगो, वह ब्रह्म तो धोखई है वा तो गुरुवनहीं-की रक्षा नहीं कियो औ तेई मालिक होतो तौ मायाके बश कैसे हौते औ यम कैसे धरि लैजाते ॥ ४ ॥

इति सैंतीसवां शब्द समाप्त ।

अथ अड़तीसवां शब्द ॥ ३८ ॥

हरि विनु भर्म बिगुर बिन गन्दा ।
जहँ जहँ गये अपन पौ खोये तेहि फन्दे बहु फंदा॥१॥
योगी कहै योग है नीको द्वितिया और न भाई ।
चुण्डित मुण्डित मौन जटा धरि तिनहुं कहां सिधिपाई२
ज्ञानी गुणी शूर कवि दाता ये जो कहहिं बड़ हमहीं।
जहँसे उपजे तहँहिं समाने छूटिगये सब तबहीं ॥ ३ ॥
बायें दहिने तजो विकारै निजुकै हरि पद गहिया ।
कह कबीर गूंगे गुर खाया पूंछे सों का कहिया ॥ ४ ॥

या पदमें जे जीवनको गुरुवा लोगनको उपदेश लग्यो है तिन को कहै हैं औ गुरुवा लोगनको कहैं हैं ॥

हरि विनु भर्म बिगुर बिन गंदा ।
जहँ जहँ गये अपन पौ खोये तेहि फंदे बहु फंदा ॥ १ ॥

मलिन बुद्धि जाकी होइ है ताको गंदा कहै हैं सो गंदा जो यह जीवहै सो बिना जाने भर्मते बिगरि जात भयो ताते चिन्मात्र हरि को अंशजो यहजीव ताकी नीच बुद्धि होइगई । जहांगयो तहां तहां अपनपौ कहे मैं सांचे साह-बको हौं यहज्ञान खोयकै तौने फन्दामें परिकै तौने मतमें लगिकै बहुत फन्द जे चौरासी लाख योनि हैं तिनमें भटकत भये ॥ १ ॥

योगी कहै योग है नीको द्वितिया और न भाई ।
चुंडित मुंडित मौन जटा धरि तिनहुं कहां सिधि पाई२॥
ज्ञानी गुणी शूर कवि दाता ये जो कहहिं बड़ हमहीं ।
जहँसे उपजे तहँहिं समाने छूटिगये सब तबहीं ॥ ३ ॥

जिनको जिनको यह पदमें कहि आये तेते आपने मतको सिद्धांत करतभये कि, हमारही मत सिद्धांतहै । परन्तु रक्षकके विनाजाने जहां ते उपजे तहैं पुनि समाइ जातभये । अर्थात् जा गर्भते आये तौनेही गर्भमें पुनि गये, जननमरण नहीं छूटै है । जब दूसरा अवतार लियो तब जौने जौने मतमें आगे सिद्धांत करिराख्यो तेते मत सब छूटिगये । अथवा जहांते उपजे कहे जौने लोक प्रकाशते उपजे हैं तहैं समाने महाप्रलयमें तब सब बिसारिगयो ॥ ३ ॥

बायें दहिने तजो विकारै निजुकै हरि पद गहिया ।
कह कबीर गूंगे गुरखाया पूंछेसों का कहिया ॥ ४ ॥

सो मंत्र शास्त्रमें जे बाममार्ग दक्षिण मार्ग हैं ते दोऊ बिकारई हैं तिनको दुहुनको छोड़िदेउ औ हरिजे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिहारे रक्षा करनवारे तिनके पदको निजुकै कहे आपन मानिकै गहौ अथवा निजुकै कहे बिशेषिकै तिनके पदको गहौ जो कहो उनको बताइदेउ वे कैसे हैं तौ वे तौ मन बचनके परे हैं उनको कोई कैसे बताइसकै । जो उनको जान्यो है ताको गूंगे कैसो गुर भयो है कछू कहि नहिं सकै है इशारहिते बतावै है । वेदशास्त्रको तात्पर्य कै जो सज्जनलोग साहबको समुझावै हैं सोतात्पर्य वृत्तिहीं करिकै बतावै हैं ऐसे तुमहूं जो भजन करौगे तौ तुमहूँ उनको जानि लेउगे कि ऐसे हैं ॥ ४ ॥

इति अड़तीसवां शब्द समाप्त ।

अथ उनतालीसवां शब्द ॥ ३९ ॥

ऐसे हरिसों जगत लरतुहै । पंडुर कतहूं गरुड़ धरतुहै॥१॥
मूस बिलारी कैसे हेतू । जम्बुककर केहरिसों खेतू ॥ २ ॥

अचरज यक देखा संसारा। सोनहा खेद कुंजर असवारा ॥३॥
कह कबीर सुनो संतो भाइ। यह संधि कोइ बिरलै पाई ॥४॥

ऐसे हरिसों जगत लरतुहै। पंडुर कतहूं गरुड़ धरतुहै ॥१॥

जैसे पूर्ब कहिआये ऐसे रक्षक हरिसों जगत् लरतुहै कहे बिरोध करतुहै। औ जे उनके भक्त उनको बतावै हैं तिनके मतको खंडन करै है। सो हे मूढ़! पंडुरकहे पनिहां पियरसर्प कहूं गरुड़को धरतुहै ? जो "डुंडुभ" पाठहोय तें डुंडुभ पनिहां सर्पका नामहै। सो रामोपासना गरुड़ है सो और मत जे सर्प हैं तिनको कहां खंडनकीन होइहै वही सबको खंडन करनवारो है। जो वाको (रामोपासना को) मत अच्छी तरहते जानो होइ है ॥ १ ॥

मूस बिलारी कैसे हेतू। जंबुक कर केहरि सों खेतू ॥ २ ॥

सो हे जीवो ! तुम्हारो ज्ञानतौ मूस है औ गुरुवालोगनको ज्ञान बिलारीहै। जे और और मतमें लगावै हैं तुमको और और मतमें लगाइकै खाइलेइंगे तिनसों तुमसों कैसे हेतुभयो। जंबुक जो सियार सो केहरि जो सिंह है तासों खेत करै है कहे लरैहै। सो जंबुक अज्ञान है सो सिंहजो तुम्हारो जीव सोलरैहै वह सिंह जीव कैसो है अज्ञान को नाश कै देनवारोहै अर्थात् जब आत्माको ज्ञान होइ है तब अज्ञान नाश ह्वै जाइहै ॥ २ ॥

अचरज यक देखा संसारा। सोनहा खेद कुंजर असवारा ॥३॥
कह कबीर सुनो संतो भाई। यह संधि कोई बिरले पाई ॥४॥

सो हम यह बड़ो आश्चर्य देख्योहै। सोनहा जो कूकुर सो कुंजर के असवारको खेदै है। सो नानामतवारे जे हैं तेई कुत्ते हैं ते कांउं कांउं कहें शास्त्रार्थ करिकै कुंजरके असवार जे हैं रामोपासनाके साधक तिनको खेदैहैं। कहे उनसों वे कछुनहीं पावैहैं। यहां कुंजर मन है ताको परम पुरुष श्रीरामचन्द्र लगाइदियेहैं औ आप असवार हैं ॥ ३ ॥ सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि,

ई संतो भाई ! तुम सुनौ मनते भिन्नह्वैके साहबके मिलबेकी जोहै संधि भेद ताको कोई बिरला पायेहै अर्थात् जबभर मन बनोरहै है तबभर वाको भूलिवेकी संधि बनीही रहै है, मनते भिन्न ह्वैके वाके भजन करिबेको उपायकोई बिरला जानैहै ॥ ४ ॥

इति उनतालीसवां शब्द समाप्त ।

अथ चालीसवां शब्द ॥ ४० ॥

पंडित बाद वदौ सो झूठा ।

रामके कहे जगत गति पावै खांड़ कहे मुख मीठा ॥ १ ॥
पावक कहे पाव जो दाहै जल कहे तृषा बुझाई ।
भोजन कहे भूख जो भाजै तौ दुनियाँ तरिजाई ॥ २ ॥
नरके संग सुवा हरि बोलै हरि प्रताप नाहिं जानै ।
जो कबहूं उड़िजाय जँगलको तौ हरि सुरति न आनै ॥ ३ ॥
बिनु देखे बिनु अरस परस बिनु नाम लिये का होई ।
धनके कहे धनिक जो होतो निधन रहत न कोई ॥ ४ ॥
सांची प्रीति विषय मायासों हरि भगतनकी हांसी ।
कहै कबीर यक राम भजे बिन बांधे यमपुर जासी ॥ ५ ॥

पंडित बाद वदौ सो झूठा ।
रामके कहे जगत गति पावै खांड़ कहे मुख मीठा ॥ १ ॥

सो हे पंडितौ जो बाद बदौहौ सो झूठाहै काहेते कि, पंडिततो वह कहावै है जाके सारासार बिचारिणी बुद्धि होइहै सो सारासार बिचारिणी बुद्धि तौ तिहारे है नहीं पंडित भर कहावोहौ । काहेते कि, सारशब्दको झूठा कहौहौ यह बाद बदिकै रामके कहेते जो गति पावतो तौ खांड़ाकेह मुखमीठ ह्वैजातो ॥ १ ॥

पावक कहे पाव जो दाहै जल कहे तृषा बुझाई ।
भोजन कहे भूख जो भाजै तौ दुनियां तरिजाइ ॥ २ ॥
नरके संग सुवा हरि बोलै हरि प्रताप नहिं जानै ।
जो कबहूं उड़िजाय जंगलको तौ हरि सुरति न आनै ३॥

जो पावकके कहे दाह पावतो तो जीभ जरिजाती, औ जळके कहे तृषा बुझाइ जाती, औ भोजनके कहते भूख भाजिजाती तौ, रामके कहते दुनियौं तरिजाती ॥ २ ॥ नरके पढ़ाये सुवा राम राम कहैहै औ श्रीरामचन्द्रको प्रताप नहीं जानै है, काहेते कि, जब कबहूं जंगलमें उड़िजाय है तब रामकी सुरति नहींकरै है । ऐसे जोतुम रामनाम कहि हरिको प्रताप जाना चाहौगे तो कैसे जानौगे ॥ ३ ॥

विन देखे विनु अरस परस बिनु नाम लिये का होई ।
धनके कहे धनिक जो होतो निर्धन रहत न कोई ॥ ४ ॥

बिना देखे बिना स्पर्श किये नाम लिये कहा होइहै । अर्थात् जो कोई दूर-होइ औ देखै न स्पर्श न होइ औ जो वाको नामलेइ तौ का जानि लेइहै ? नहीं जानै है । धनके कहते कोई धनिक ह्वैजाातो तौ निर्धनी कोई न होतो ऐसे नाम लिये जो मुक्ति होत तौ सब मुक्त होइजात । सो हे पंडितौ तुम ऐसे असंगत दृष्टांतदैकै यहबाद बदौहौ सो झूठहै । काहेते कि, रामनाम तौ मन बचनके परे है औ ये सब बचन में आवै हैं । औ वह राम नाम साहबके दियेते स्फुरित होइहै । यह रामनाम जपते औ ये सब अनित्य ह्वैजाइहैं ॥ ४ ॥

सांची प्रीति विषय मायासों हरिभक्तनकी हासी ।
कह कबीर यक राम भजे बिनु बांधे यमपुर जासी ॥ ५ ॥

सो कबीरजी कहैं हैं कि, हे नास्तिक पण्डितौ ! विषय मायासों सांचीप्रीति करौहौ औ ऐसे ऐसे कुबाद बदिकै हरिभक्तनकी हासी करौहौ; नाम रूप लीळा धामको खण्डन करिकै । सो एक जे परम पुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनके नामके बिना भजन किये बांधे मोगरन की मार सहत यमपुरहीको जाहुगे ।

जे परमपुरुष पर जे श्रीरामचन्द्र तिनते विमुख हैं ते सब लोकनमाँ निन्दित हैं तामें प्रमाण-" यश्चरामंनपश्यत्तुयंचरामोनपश्यति । निंदितस्सर्वलोकेषु स्वात्माप्येनंविगर्हते " ॥ ५ ॥

इति चालीसवां शब्द समाप्त ।

अथ इकतालीसवां शब्द ॥ ४१ ॥

पण्डित देखौ मनमो जानी ।
कहुधौं छूति कहांते उपजी तबहिं छूति तुम मानी ॥ १ ॥
नादे विन्दु रुधिर यक संगे घटहीमें घट सज्जै ।
अष्ट कमलकी पुहुमी आई यह छूति कहां उपज्जै ॥ २ ॥
लखचौरासी बहुत वासना सो सब सरिभो माटी ।
एकै पाट सकल बैठारे सींचि लेत धौं काटी ॥ ३ ॥
छूतिहि जेंवन छूतिहि अचवन छूतिहि जग उपजाया ।
कह कबीर ते छूति विवर्जित जाके संग न माया ॥ ४ ॥

पंडित देखौ मनमो जानी ।
कहुधौं छूति कहांते उपजी तबहिं छूति तुम मानी ॥ १ ॥

हे पण्डित! तुम मनमें जानिकै कहे बिचारिकै देखौतौ औ कहौ तौ यह छूति कहांते उपजी है जो छूति तुम अपने मनमें मान्यो है ॥ १ ॥

नादे बिंदु रुधिर यक संगै घटहीमें घट सज्जै ।
अष्ट कमल की पुहुमी आई यह छूति कहां उपज्जै ॥ २ ॥

नादते पवन बिंदुते बीर्य्य रुधिरके संगते घटहीमें घट सजैहै, बुद्बुदा होइहै सो अष्टदलको कमलहै तामें अटकिकै लरिका होइ है । सो पुष्टपर है सो लरिकौके वाही भांतिको अष्टदल कमलहोइहै तौने अष्टदल कमल कमलके दलदलमें वाको मन फिरत रहै है ताते तैसे नाना कर्म में लगिकै नाना स्वभाव वाके होइ हैं ।

और जहां जहांकी बासना करिकै मरै है तौनी तौनी योनिमें प्राप्त होइ है एकै जीव बासनन करिकै सर्वत्र होइहैं यह छूति कहांते उपजै है ॥ २ ॥

लख चौरासी बहुत बासना सो सब सरिभो माटी।
एकै पाट सकल बैठारे सींचिलेत धौं काटी ॥ ३ ॥

यह जीव बहुत बासननमें परिकै चौरासी लाख योनिनमें भटकैहै शरीर सरिकै माटी ह्वै जायहै एकै पाटमें कहै जगत्में नानां बासना करिकै माया सबको बैठावतभई कहे शरीरधारी सबको करतभई अरु ये शरीर सब माटिही आईं औ माटीमें मिलि जाइँगे औ जीव सबके एकही हैं औ एकही पाटमें बैठे हैं सो वे जलको सींचिकै छूति काटि लेत हैं का जल सींचे छूति मिटि जातहै ? नहीं मिटै ॥ ३ ॥

छूतिहि जेंवन छूतिहिअचवन छूतिहि जग उपजाया।
कह कबीर ते छूति विवर्जित जाके संग न माया ॥ ४ ॥

सो वही छूति जो है बासना सो जब उठी तब जेंवन कियो औ वही बासना उठी तब अँचयो। और कहालौं कहैं वही बासना ते जगत् उपज्यो है। सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि, जाके संग माया नहीं है सोई बासनारूपी छूतिकै विवर्जितहै। सो हे पंडित ! माया को जो तुम छोड़यो नहीं छूति तिहारे भीतर घुसी है ऊपर के छूति माने कहा होइ बड़ी छूतिकियो है बासनैते चित्तकी वृत्ति उठै है तब यह मानै है कि, हम ब्राह्मणहैं क्षत्री हैं वैश्य हैं शूद्रहैं ॥ ४ ॥

इति इकतालीसवां शब्द समाप्त।

अथ बयालीसवां शब्द ॥ ४२ ॥

पंडित शोधि कहहु समुझाई जाते आवागमन नशाई ॥
अर्थ धर्म औ काम मोक्ष फल कौनदिशा बसभाई ॥ १ ॥
उत्तर दक्षिण पूरब पश्चिम स्वर्ग पतालके माहे ।
बिन गोपाल ठौर नहिं कतहूं नरक जात धौं काहे ॥ २ ॥
अन जानेको नरक स्वर्ग है हरि जानेको नाहीं ।
जेहि डरको सब लोग डरतहैं सो डर हमारे नाहीं ॥ ३ ॥
पाप पुण्य की शंका नाहीं स्वर्ग नरक नहिं जाहीं ।
कहै कबीर सुनो हो संतो जहँ पद तहां समाहीं ॥ ४ ॥

वासना मायाके योगते होइहै सो माया जौनी प्रकारते छूटै है सो उपाय कहै हैं अरु आचारको वहां खंडन करिआये सो अब जौनी दशामें अचार नहीं है सो कहै हैं ॥

पण्डित शोधि कहहु समुझाई। जाते आवा गमन नशाई॥
अर्थ धर्म औ काम मोक्ष फल कौन दिशा बस भाई ॥१॥
उत्तर दक्षिण पूरब पश्चिम स्वर्ग पतालके माहे ।
बिन गोपाल ठौर नहिं कतहूं नरक जात धौं काहे ॥ २ ॥

हे पंडित! तुम तो सारासारको बिचार करौहौ सो तुम शोधिकै मोसों समुझाय कहो जाते यह जीवात्माको आवागमन नशाइ । अर्थ धर्म काम मोक्ष ये फल कौनी दिशामें रहै हैं? ॥ १ ॥ उत्तर दक्षिण पूर्व पश्चिम स्वर्ग पाताल यहां सर्वत्र मैं ढूंढ़ि डारयों परन्तु विना गोपाल कहूं ठौर न देख्यों गोपाल कहे गों जो इन्द्रिय जड़ मनादिक तिनके चैतन्य करनवारे जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहै तिनहींको सर्वत्र देखत भयो । विषय इन्द्रिनते देवता मनते मन जीवते जीव परमपुरुष श्रीरामचन्द्रते चैतन्यहै सो जीव उनको चित्त शरीर अरु मायाकाल

कर्म स्वभाव उनको अचित शरीरहै तेहिते विना गोपाळ कहूं ठौर नहीं है । जीव नरक स्वर्ग जायहै सो अब बतावैहैं ॥ २ ॥

अन जानेको नरक स्वर्ग है हरिजानेको नाहीं ।
जेहि डरको सब लोग डरत हैं सो डर हमरे नाहीं॥३॥

श्रीकबीरजी कहै हैं कि अनजानेको नरक स्वर्ग है कहेजो कोई हरिको नहीं जानैहै ताको स्वर्गहै औ नरकहै । औ जो कोई हरिको सर्वत्र जानैहै ताको न नरकहै न स्वर्ग है । जौन डरको सब लोग डरायहैं माया ब्रह्म नरक स्वर्गादिकनको तौन डर उनको नहीं है काहेते वे तो सर्वत्र साहबैको देखैहैं ॥ ३ ॥

पाप पुण्यकी शंका नाहीं स्वर्ग नरक नहिं जाहीं ।
कहै कबीर सुनो हो संतो जहँ पद तहां समाहीं ॥ ४ ॥

औ न उनको पापपुण्य की शंका है काहेते कि, जो कोई बद्ध होइ सो मुक्त होइ, तेहिते न वे बद्धही हैं न मुक्तही हैं तामें प्रमाण श्रीभागवते॥ "बद्धोमुक्तइतिव्याख्या गुणतोमेनवस्तुतः । गुणस्यमायामूलत्वान्नमेमोक्षोनबंधनम्" ॥ हम तो सर्वत्र साहबहीको देखैहैं वे नरक स्वर्गको नहीं जाइहैं सो कबीर जी कहैहैं कि हे संतो! सुनो ऐसी भावना जे नर करै हैं ते नर जहां पद तहां समाहीं कहे परमपुरुष श्रीरामचन्द्रके अंश हैं सो तिनहीं के स्थानमें जाइ हैं ॥ ४ ॥

इति बयालीसवां शब्द समाप्त ।

अथ तेतालीसवाँ शब्द ॥ ४३ ॥

पंडित मिथ्या करौ विचारा । ना हां सृष्टि न सिरजनहारा १
थूल स्थूल पवन नहिं पावक रवि शशि धरणि न नीरा ।
ज्योति स्वरूपी काल न उहँवां बचन न आहि शरीरा॥२॥
कर्म धर्म कछुवो नहिं रहँवां ना कछु मंत्र न पूजा ।
संयम सहित भाव नाहिं एकौ सोतो एक न दूजा ॥ ३ ॥

गोरख राम एकौ नहिं उहँवां ना ह्वां भेद विचारा।
हरि हर ब्रह्म नहीं शिव शक्ती तिरथौ नहीं अचारा॥ ४॥
माय बाप गुरु जाके नाहीं सो दूजा कि अकेला।
कह कबीर जो अबकी समुझै सोई गुरू हम चेला ॥ ५॥

हे पंडित ! तुमतौ वहि ब्रह्मको मिथ्यै बिचार करोहो। जो यहिपदमें बर्णन करिआये सो वहमें एकउ नहीं है वह तो धोखाही है सो कबीरजी कहै हैं कि, जो सो वह आत्माते दूसर है कि अकेल वह ब्रह्मैहै? जो अबकी समुझै कहे यह ज्ञान भये पर समुझै कि, मैं परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको हौं वह ब्रह्म धोखा है सोई गुरुहै। म चेलाहौं काहेते कि, मोहिं तो धोखई नहीं भयो है जो आपनेको ब्रह्ममानिकै औ साहबको समुझै है औ वाको धोखा मानिलेइ सो मेरो गुरूहै औमैं वाको चेलाहौं अर्थात् सोई मोसों अधिक है काहेते कि, वह धोखा में परिकै निकस्यो है यह प्रशंसा कियो ॥ ५ ॥

इति तेतालीसवां शब्द समाप्त।

अथ चवालीसवां शब्द ॥ ४४ ॥

बूझहु पंडित करहु विचारी पुरुष अहै की नारी॥ १॥
ब्राह्मणके घर ब्रह्मणी होती योगीके घर चेली।
कलिमा पढ़ि पढ़ि भई तुरुकिनी कलिमें रहै अकेली॥२॥
वर नहिं वरै व्याह नहिं करई पुत्रजन्म होनिहारी।
कारे मूँड़े यक नहिं छांड़ै अबहूं आदिकुवांरी॥ ३॥
मायिके न रहै जाइ न ससुरे साईं संग न सोवै।
कह कबीर वे युगयुग जीवैं जाति पांति कुल खोवैं॥ ४॥

यह मायाही सब जगतके जीवनको भरमायो है सोई कहै हैं ॥

बूझहु पंडित करहु विचारी पुरुष अहै की नारी ॥ १ ॥
ब्राह्मण केरे ब्रह्मणी होती योगीके वर चेली ।
कलिमा पढ़ि पढ़ि भई तुरुकिनी कलि में रहै अकेली॥२॥

सो हे पंडित! तुम बूझौ औ विचारिकै काम करो यहमाया पुरुषरूपहै कि नारीरूपहै? यहमाया सबको लपेटि लियो है ॥ १ ॥ विद्या माया ब्राह्मणके तौ ब्राह्मणी ह्वैकै बैठी है । ब्राह्मणकहै हैं कि, हम ब्रह्मको जानै हैं ॥ "ब्रह्मजानाति ब्राह्मणः" ॥ अरु घरमें ब्राह्मणी बैठायेरहै हैं, वाको स्त्रीको भाव करै हैं बेटीसों बेटीको भाव, बहिनीसों भगिनीको भाव मानै हैं । सो कहो तो ब्रह्मभाव कबभयो जो कहो जिनके स्त्री नहीं है तिनको तो ब्रह्मभाव ठीकहै तौ उनके ब्रह्म जानपनीरूप ब्राह्मणीकी गरूरी बनी है । संयोगिनके तौ चेली ह्वै बैठी है औ योगिनके योगीरूप ह्वै बैठी है। योगी महामुद्रा साधन करिकै बीर्यकी उलटी गति कैदेइहैं । सो जब वृद्ध भये तब षोड़शी कन्या एक घरमें रातिभरि राखिकै संभोग करिकै उनको वीर्य लिंग द्वारते खैंचिकै कपारमें चढाइ लेइहैं, तब आप तरुणह्वै जाइहैं वहं षोड़शीकन्या मरिजाइहै।एतो बड़ो अनर्थकरै हैं। जे प्राणायाम करिकै प्राणचढाइ लै जाइहैं तिनके कुंडलिनी ह्वै बैठी हैं। औ मुसल्माननके जब बिवाह होइहै तब निगाह सों निकाह कै कलिमापढिकै तुरुकिनी होइहै औ मुसल्मान होइहै । सो ये उपलक्षणहैं अर्थात् ब्राह्मणमें स्त्रीके साथ कर्मरूप ह्वैकै औ योगिनके दशमुद्रा रूपह्वैकै औ मुसल्माननमें निकाह कलमा आदिदैक शरा अरूप ह्वैकै अकेली मायाही रहतभई साहबके काम ये एको नहीं हैं॥ २॥

वर नाहिं वरै व्याह नाहिं करई पुत्र जन्म होनि हारी ।
कारे मूड़े यक नाहिं छांड़ै अवहूं आदि कुवारी ॥ ३ ॥

वर कहे श्रेष्ठ जे हैं साहबके जाननवारे भक्त तिनको नहीं बरचो अर्थात् उनको स्पर्श विद्या अविद्या ये दोनोंका नहीं है । अरु खसम ब्रह्म है सो ब्याह नहीं करैहै काहेते कि, धोखाकी भँवरी नहीं परै । औ मायाको पुत्र जगत् है जाको गर्भ धारण करैहै सो कारे कहे जिन के शिखाहै " हिंदू लोग " औ

मूँड़े कहे जिनके शिखा नहीं है मुसल्मान लोग तिनको एकऊ नहीं छोड़चो । अबहूं भर वह आदिकहे आद्या जो मायाहै सो कुँवारीही बनी है अर्थात् हिंदू मुसल्मानको आपही बशकै लियो है इनके वश नहीं भई ॥ ३ ॥

मायिके न रहै जाइ न ससुरे साईं संग न सोवै ।
कह कबीर वे युग युग जीवैं जाति पांति कुल खोवैं॥४

अरु मायिक जो है शुद्ध आत्मा जाके उत्पत्ति भईहै माया तहां तो रहतही नहीं है वहां तौ जीवके साहबको अज्ञान रूप कारण मात्र रह्योहै । औ सासुर जो है लोक प्रकाश ब्रह्म जहां जीव मान्यो है कि, ब्रह्म मैंही हौं, सो धोखाहै । तहां नहीं जाइहै औ वही साईं कहे पतिहै काहेते कि, वही मायासबलित होइ है तब जगत् होइ है ताके संग नहीं सोवैहै काहेते कि, वहतो धोखई है औ वह माया धोखा है जो कछु वस्तु होइ तब न वाके संग सोवै । श्रीकबीरजी कहै हैं कि, सब जगतको माया लपेटि लियो है । जे जीव साहब औ साहबकी जाति आपको मानै हैं औ अपनी जाति पांति कुल खोवै हैं सोई मायाते बचे हैं औ युग युग जियै हैं और तो सबको माया खाइही लियो है अर्थात् उनहीं को जनन मरण नहीं होयहै ॥ ४ ॥

इति चवालीसवां शब्द समाप्त ।

अथ पैंतालीसवां शब्द ॥ ४५ ॥

कौन मुवा कहु पंडित जना।सो समुझाय कहौ मोहिंसना॥१॥
मूये ब्रह्मा विष्णु महेशा । पार्वती सुत मुये गणेशा ॥ २ ॥
मूये चन्द्र मुये रवि केता।मुये हनुमत जिन्ह बांधी सेता॥३॥
मूये कृष्ण मुये करतारा । यक न मुवा जो सिरजन हारा॥४॥
कहै कबीर मुवा नाहिं सोई । जाको आवा गमन न होई॥५॥

जिनको जिनको यापदमें वर्णन करिआये तेते सब महाप्रलयमें लीन होइहैं। एक कहे सम अधिकते रहित जो साहब नहीं मुवा। औ सिरजनहार जो समष्टि जीव सो नहीं मुवाहै अर्थात् सो रहिजायहै। और कौन नहीं मुवा तिनको कबीरजी बतावै हैं। जीवतो मरै नहीं है शरीरहीमरैहै सो जे जे देवतनको मुवा कहिआये ते जौन रूपते साहबके समीप रहै हैं सो स्वरूप इनको नहीं मुवै है पार्षद शरीरते बनै रहै हैं यहां अपने अंशनते जगत् कार्यकरै है सो पूर्व लिखिआये हैं॥ ५॥

इति पैंतालीसवां शब्द समाप्त।

अथ छियालीसवां शब्द॥ ४६॥

पंडित अचरज यक बड़ होई।
यक मर मुये अन्न नाहिं खाई यक मर सीझ रसोई॥ १॥
करिकै स्नान तिलक करि बैठे नौ गुण कांध जनेऊ।
हांडी हाड़ हाड थारी मुख अब षट कर्म बनेऊ॥ २॥
धरम कथै जहँ जीव बधै तहँ अकरम करे मेरे भाई।
जो तोहरे को ब्राह्मण कहिये तौ केहि कहिये कसाई॥३॥
कहै कबीर सुनो हो संतो भरम भूलि दुनिआई।
अपरम पार पार पुरुषोत्तम यह गति विरलै पाई॥ ४॥

अब जे षट्कर्मी पंडित लोग बलिदान करिकै मांस खाइ हैं तिनको कहै हैं॥

पंडित अचरज यक बड़ होई।
यक मर मुये अन्न नाहिं खाई यक मर सीझ रसोई॥ १॥
करिकै स्नान तिलक करि बैठे नौ गुण कांध जनेऊ।
हांड़ी हाड़ हाड़ थारी मुख अब षट कर्म बनेऊ॥ २॥

हे पंडित! एक बड़ो आश्चर्य होइ है। एक मरै है ताके मरेते कोई अन्न नहीं खायहै अरु वाके छुयेते अशुद्ध है जाइहै, अरु एक जीवको मारि

ले आवे हैं तौने मुर्दाको रसोईमें सिझवे हैं ॥ १ ॥ औ नौ गुणको जनेऊ कांधे में डारिकै स्नान करिकै बड़ो बेदना ऐसो तिलक दैकै बैठे हैं । सो कबीरजी कूटकरै हैं कि, अब षट्कर्म बनि परचो कि, हांडीमें हाड़ है थारीमें हाड़है मुखमें हाड़ है । व षट् कर्म ब्राह्मणके ये हैं । पढ़ै पढ़ावै दान देइ लेइ यज्ञ करै यज्ञ करावै । इहां ये षट्कर्म करै हैं एक हँड़िया दूजे हाड़ तीजे थारी चौथे हाड़ पांचौ मुख छठों हाड़ अब ये अब षट्कर्म बनि परचो ॥ २ ॥

धरम कथै जहँ जीव वधै तहँ अकरम कर मेरे भाई ।
जो तोहरेको ब्राह्मण कहिये तौ केहि कहिय कसाई ॥ ३ ॥
कह कबीर सुनो हो संतो भरम भूलि दुनिआई ।
अपरम पार पार पुरुषोत्तम यह गति विरलै पाई ॥ ४ ॥

जहां धर्मको कथैहै कि, या यज्ञहै, देवपूजन पितर श्राद्धहै याधर्म है तहँ जीवनको मारै है । सो हे भाइउ ! जो करिबेलायक कर्म नहीं है सोऊ करैहैं ऐसे जे तुम्हारे कर्म हैं तिनको तो ब्राह्मण कहैंगे ब्रह्मके जनैया कहैंगे तो कसाई काको कहैंगे ॥ ३ ॥ श्रीकबीरजी कहै हैं कि, ऐसे भ्रममें दुनियाँ भूलि रही है । अपरमकहे परम नहीं ऐसी जो माया है ताते परब्रह्म है ताहूते पार पुरुष समष्टि जीव हैं जाके अनुभवते ब्रह्म भयो है ताहूते उत्तम श्रीरामचन्द्र हैं काहेते कि, वे विभु सर्वज्ञ हैं औ जीव अणु अल्पज्ञहै । ते श्रीरामचन्द्रकी जो यहगति है ज्ञान सो कोई बिरलै पाई है अर्थात् कोई बिरला जान्यौ है कि, सबते पर साहबई है । उनते सम औ अधिक कोई नहीं है । तामेंप्रमाण ॥ “सकारणकारणकारणाधिपोनचास्यकश्चिज्जनितानचाधिपः । नतस्य कार्यकरणंचविद्यतेनतत्समश्चाभ्यधिकश्चदृश्यते ॥ इतिश्वेताश्वतरोपनिषदि ॥ समोनविद्यतेतस्यविशिष्टः कुतएवतु ॥ इति वाल्मीकीये । ” औकबीरजीकोप्रमाण ॥ “साहब कहिये एकको दूजा कहो न जाइ । दूजा साहब जो कहैं, बाद बिडंबन आइ ॥ जनन मरणते रहितहै, मेरा साहब सोय । मैं बलिहारी पीउकी, जिन सिरजा सब कोय ॥ ४ ॥

इति छियालीसवां शब्द समाप्त ।

अथ सैंतालीसवां शब्द ॥ ४७ ॥

पंडित बूझि पियो तुम पानी ।
जा माटीके घरमें बैठे तामें सृष्टि समानी ॥ १ ॥
छपन कोटि यादव जहँ विनशे मुनि जन सहस अठासी ।
परग परग पैगम्बर गाड़े ते सरि माटी मासी ॥ २ ॥
मत्स्य कच्छ घरियार वियाने रुधिर नीर जल भरिया ।
नदिया नीर नरक बहि आवै पशु मानुष सब सरिया॥३॥
हाड़ झरी झरि गूद गली गलि दूध कहांते आवै ।
सो तुम पाँड़े जेंवन बैठे मटिअहि छूति लगावै ॥ ४ ॥
वेद किताब छोड़ि दिहु पांड़े ई सब मनके कर्मा ।
कहै कबीर सुनोहो पांड़े ई सब तुम्हरे धर्मा ॥ ५ ॥

जे दंभ करिकै बड़ो आचार करैहैं जिनको चिदअचित साहब को रूप है यहबुद्धि नहीं है ताको कहे हैं ।

पण्डित बूझि पियो तुम पानी ।
जा माटीके घरमें बैठे तामें सृष्टि समानी ॥ १ ॥
छपन कोटि यादव जहँ विनशे मुनि जन सहस अठासी ।
परग परग पैगम्बर गाड़े ते सरिमाटी मासी ॥ २ ॥

सो हे पंडित! ज्ञानतो तिहारे है नहीं आचारकरौ हो सो तुम कहांको पानी पियौ हौ।भला बूझिकै कह बिचारिकै तौ पानी पियौ। जौने माटीके घरमें अर्थात् पृथ्वीमें तुम बैठेहौ तौनेमें सब सृष्टि समाइरहीहै ॥ १ ॥ औ जौनी पृथ्वीमें छप्पन कोटि यादव औ अठासी हजार मुनि ये उपलक्षण हैं अर्थात सबजीवन- के शरीर वही माटी में मिलि मिलिकै सरिगये अरु परग परगमें पैगम्बर गाड़ेहैं

ते सब सारिके माटी है रहेहैं तेहिते माटी मासी है कहे मांसमें मिलिरही है औ माटी मासी कहे मधुकैटभके मांसकी आई ॥ २ ॥

मत्स्य कच्छ घरियार बियाने रुधिर नीर जल भरिया ।
नदिया नीर नरक बहि आवै पशु मानुष सब सरिया ॥३॥
हाड झरी झरि गूद गली गलि दूध कहांते आवै ।
सो तुम पांडे जेवन बैठे मटिअहि छूति लगावै ॥ ४ ॥

अरु नदियाके जलमें मत्स्य कच्छ घरियार बियाने कहे होयहैं औ रुधिर नीर मल इत्यादिक वही नदियाके जलमें मिलिजाइ है औ पशु मानुष सरिजायहैं; ते वही पानी पियोहौ औ आचार करोहो ॥ ३ ॥ दूधो हाड़ते झरि झरि गूदते गलिगलिकै लोहू भयो वही लोहूते दूध भयो ताहीको लैकै हे पंडित! तुम जेंवन बैठोहौ औ मांटी जो मांसहै ताको छूति लगावोहौ कि,मांसबड़ो अपवित्र है याको जे खाइहैं ते बड़ो निषिद्धकर्म करै हैं सो कहो तो वह दूध मांसते कैसे भिन्नहै ॥ ४ ॥

वेद किताब छोडि दिहु पांडे ई सब मनके कर्मा ।
कहै कबीर सुनोहो पांड़े ई सब तुम्हरे धर्मा ॥ ५ ॥

सो हे पांड़े! शुद्ध अशुद्ध तो वेद किताबते जानेजाइहैं ते वेद किताबको तुम छोड़िदियो ये जे सब कहिआये जे तुम धर्म करौहौ ते तौ सब तुम्हारे मनके कर्म हैं आपने मनहींते ये सब तुम बनाइ लियेहै इनते तुम न निबहौगे।श्रीकबीरजी काकु करैहैं कि हेपांड़े! बिचारिकै देखौ ये सब तुम्हार धर्म हैं? अर्थात् नहींहै तुमतौ साहबकेहौ । अथवा कबीरजी कहै हैं एते सब कर्म करौहौ अपने मनके बनाये औ वेद किताबौंके कहते ये सब तुम्हारे धर्मकहे तुम्हार शरीरमा हैं । तेहिते शरीरते भिन्न ह्वैकै आपने स्वरूपको जानौगे तब आपने सांचे कर्मनको जानौगे यह व्यंग्यहै ॥ ५ ॥

इति सैंतालीसवां शब्द समाप्त ।

---

१ कहीं कहीं मट्टी मांसको भी कहैहै परन्तु यहां तो मिट्टीसे आशय है मनुष्य शरीरते क्योंकि, दम्भ कीरके आपजी चहे कर्म करतैहै लोरे दूसरे पवित्र मनुष्यनते छूत मानतैहै ।

अथ अड़तालीसवां शब्द ॥ ४८ ॥

पंडित देखो हृदय विचारी । कौन पुरुष को नारी ॥ १ ॥
सहज समाना घट घट बोलै वाको चरित अनूपा ।
वाको नाम कहा कहि लीजै ना वहि वरण न रूपा ॥२॥
तैं मैं काह करै नर बौरे क्या तेरा क्या मेरा ।
राम खोदाय शक्ति शिव एकै कहु धौं काहि निवेरा ॥३॥
वेद पुराण कुरान कितेवा नाना भांति वखानी ।
हिंदू तुरुक जैनि औ योगी एकल काहु न जानी ॥ ४ ॥
छः दरशनमें जो परवाना तासु नाम मन माना ।
कह कबीर हमहीं हैं बौरे ई सब खलक सयाना ॥ ५ ॥

पंडित देखो हृदय विचारी । कौन पुरुष को नारी १
सहज समाना घट घट बोलै वाको चरित अनूपा ।
वाको नाम कहा कहि लीजै ना वह वरणनरूपा २॥

हे पंडित! तुमतौ सारासारको बिचार करौ हौ हृदयमें बिचारि कै देखौ तो कौन पुरुषहै कौन नारीहै वह आत्मा तो न पुरुष न नारी है ॥ १ ॥ जो कहो घटघटमें सहज जीव ब्रह्म समाइ रह्योहै वाको चारित्र अनूपहै सोई हमारो स्वरूप है तो वाको नाम कहां कहि लीजै बाको तो न बर्ण है न रूपहै वह तो धोखाहै ॥ २ ॥

तैं मैं काह करै नर बौरे क्या तेरा क्या मेरा ।
राम खोदाय शक्ति शिव एकै कहु धौं काहि निबेरा ३

औ जो तैं मैं कहौहौ कि, तैं मैं आह्यो, मैं तैं आह्यो एकही ब्रह्मतो है तैं मैं कहा करैहै । बिचारिदेखु तौ क्या तेराहै क्या मेराहै सब साहबका तौ

जो तैं साहब होइ तब तेरा होइ। राम खोदाय औ शक्ति शिव जेहैं तिनमें कहुथौं तैं काको निबेरा कियोहै कि,एक यह जगतको मालिकहै । औ वही मैं हौं । अर्थात् इनकी सामर्थ्य तोमें एकऊ नहीं देखिपरैहै ताते इनमें तैं कोई नहीं है ॥ ३ ॥

वेद पुराण कुरान कितेबा नाना भांति बखानी ।
हिंदू तुरक जैनि औ योगी एकल काहु न जानी ॥४॥

वही साहबको नाना नाम लैकै कहैहैं सो वेद पुरान कुरान किताबमें वही साहबको सबते परे नाना भांतिते नाना नामलैकै बर्णन कियो है यही हेतुते हिन्दू तुरुक जैनी योगी एकल कहे एक नामकरिकै कोई नहीं जान्यो कि, एक यही सिद्धांतहै यही सबको मालिकहै । अथवा एकल कहे जौने करते जोने उपायते मै मन वचनके परे साहबको जान्यो है सो कोई नहीं जान्यो ॥ ४ ॥

छः दरशनमें जे परवाना तासु नाम मन माना ।
कह कबीर हमहीं हैं बौरे ई सब खलक सयाना ॥ ५ ॥

छइउ दर्शनमें अरु जेते सब हिन्दू तुरुक आदि वर्णन करि आये तिन सबमें जौन धोखा ब्रह्म को प्रमाण परैहै तौनेही को नाम सबके मनमें मानै है । कहते तौ मन बचनके परे हैं परंतु कोई ब्रह्म कहिकै कोई अल्लाह कहिकै कोई जीवात्मा कहिकै वाहीको सब मानै हैं । सो कबीरजी कहैहैं कि, सब खलक सयाना है काहेते कि, कहते तो यह बात हैं कि, वहतो मन वचनमें आवते नहीं है औ जे मन बचनमें आवै हैं तिनहीं मैं फिरि लागै है ताते हमहीं बौरहाहैं जो ऐसो कहैहैं कि, साहब आपही ते कृपा करिकै अनिर्वचनीय रामनाम स्फुरित करि देइहैं ताहीके मिलनको उपाय बतावै हैं यह काकु करै हैं ॥ ५ ॥

इति अड़तालीसवां शब्द समाप्त ।

अथ उनचासवां शब्द ॥ ४९ ॥

बुझ बुझ पण्डित पद निर्बाना । सांझ परे कहँवां बस भाना १
नीच ऊँच पर्वत ठेला न भीत । बिन गायन तहँवा उठ गीत २

ओस न प्यास मँदिर नाहिं जहँवां । सह स्रो धेनु दुहावै तहँवां ३
नितै अमावस नित संक्रांति । नित नित नवग्रह बैठे पांति ४
मैं तोहिं पूंछौं पण्डित जना । हृदया ग्रहण लागु केहि खना ५
कह कबीर यतनौ नहिं जान । कौन शब्द गुरु लागा कान६

अब योगिनको कहै हैं ।

बुझ बुझ पंडित पद निरवाना । सांझ परे कहँवां वस भाना १
नीच ऊँच पर्वत ठेला न भीत । बिन गायन तहँवां उठ गीत२

हे पंडित! तुम वह निर्वाणपदको बूझोतो जो त्रिकुटीमें ध्यान लगाइकै भानु कहे सूर्य देखोहौं । सो सूर्य सांझपरे कहे जब शरीर छूटिगयो तबकहां बसैहै? ॥ १ ॥ नीचते ऊंचेको कहे कुंडलिनीतें गैबगुफामें जब आतमा जाइहै तौनें पर्बतमें न ठेलाहै न भीतिहै । औ बिना गायन तहंवां गीत उठैहै कहे अनहदकी ध्वनि सुनिपरै है ॥ २ ॥

ओस न प्यास मँदिर नहीं जहँवां । सहस्रो धेनु दुहावै तहँवां ३

ओस जो वहां परे है कहे अमृत जो वहां झरे है ताको पान करिकै न प्यास ह्वै जाइहै कहे पियास नहीं लगैहै । अर्थात् ओसन पियास नहीं जाइहै जो मानि-राखे हैं कि, अमृत पीकै हम अमर ह्वैजाइँगे सो अमर न होउगे । औ जो गैब गुफा पर्वतमें घरमानि राखैहैं सो वहाँतेरो मंदिर कहे घर नहीं है अर्थात् वहां तो शून्यहै तहां सहस्र दलमें धेनु दुहावै है कहे धेनु जोहै गायत्री ताको अर्थ जोहै वहदूध ज्ञान स्वरूप ब्रह्म ताको बिचार करैहै आपने को ब्रह्म मानै हैं जब शरीर सरिजाई तब गैबगुफौ जरिणाइहै औ फिरि शरीर धारणकरै है ॥ ३ ॥

नितै अमावस नित संक्रांति । नित नित नव ग्रह बैठे पांति ४॥

औ तहां नित अमावस रहैहै चन्द्रमा सूर्यनके ओट ह्वैजाइ सो अमावस कहावै है । सो यहांते आतमा जाइकै ब्रह्मज्योतिमें लीन ह्वैजाइहै ताते नित अमावस रहै है औ फिरि जब समाधि उतरी तब शंकामें परिगयो वही वाको

निन संक्रांति है । औ नित नव ग्रह पांति जो है दुवार जामें ऐसो जो है ग्रह शरीर तौने की पांति बैठे है कहे इतना योग साधै है तऊ शरीर धारण करिबो नहीं छूटै है ॥ ४ ॥

मैं तोहिं पूछौं पंडित जना। हृदया ग्रहण लागु क्यहि खना ५
कह कबीर इतनौ नहिं जाना।कौन शब्द गुरु लागा कान ६॥

: हे पंडित ! तुमसों हम पूछै हैं कि, जब समाधि उतारि आवै है तब फिरि माया तुमको ग्रहण करिलेइ है औ निर्वाण पद कहतहीहौ । सो निर्बाण पद जो जाते तौ कैसे उलटि आवते औ कैसे नाना शरीर पावते सो देखतेहौ बूझते नहींहौ,यह अज्ञानरूपी राहुते तुम्हारे ज्ञानरूपी चन्द्रमाको कब ग्रहणकियो॥५॥ श्रीकबीरजी कहै हैं कि, इतनौ नहीं जानतेहौ कि शरीरके साधन यह ज्ञान कियेते शरीर मिलैगो कि छूटैगो अर्थात् शरीरके साधन कियेते शरीरही मिलैगो तेरे कानमें लागिकै गुरुवालोग कौनसो शब्दको उपदेशकियो है जाते परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको भूलि गेय ॥ ६ ॥

इति उनचासवां शब्द समाप्त ।

अथ पचासवां शब्द ॥ ५० ॥

बुझबुझ पंडितबिरवा न होई।अधबस पुरुष अधा बस जोई १
बिरवा एक सकल संसाला।स्वर्ग शीश जर गयल पताला२
बारह पखुरी चौबिस पाता। घन बरोह लागी चहुँ घाता३
फलै न फुलै वाकिहै बानी। रैनिदिवस बिकार चुव पानी॥४॥
कहकबीरकछुअछलोनजहिया।हरिबिरवाप्रतिपालततहिया ५

बुझबुझपंडितबिरवानहोई। अधबसपुरुषअधाबसजोई॥१॥
बिरवा एक सकल संसाला।स्वर्ग शीश जर गयलपताला २

हे पंडित ! यह संसाररूपी वृक्षको जो तैं बूझि राखे है कहे मानि राखे है सो तैं बूझतौ जितने बिचार होइहैं तिनको यह मिथ्याही है । हरिकेचिदअचिद रूपसे सत्यहै। यह संसार वृक्ष आधा पुरुष है आधा प्रकृति है अर्थात् चित् पुरुष जीव औ अचित् मायादिक इनहीते संपूर्ण जगत्है ॥ १ ॥ पुनि कैसोहै संसार-रूपी बिरवा याको स्वर्गशीश कहे ब्रह्मांडको जो खपरा है सो शीश है अरु याकी जर पातालमें गई है ॥ २ ॥

बारह पखुरी चौबिस पात।घन बरोह लागी चहुँ घाता ॥३॥
फलै न फुलै वाकि है बानी।रैनि दिवस बिकार चुव पानी॥४॥

औ बारह महीना जे हैं ते बारे पंखुरी हैं अर्थात् काल औ चौबिस तत्त्व वाके चौबिस पातहैं औ घन कहे नाना कर्मनकी वासना तेई घन बरोह चारों ओर लगीहैं ॥ ३ ॥ या संसाररूपी वृक्ष साहबको ज्ञान रूप फल नहीं फूलै औ साहबको भक्तिरूप फल नहीं लगै है या संसारके बाहर भयेते होयहै औ राति दिन बिकाररूप पानी चुवै है ॥ ४ ॥

कहकबीरकछुअछलोनजाहिया।हरिबिरवाप्रतिपालतताहिया ५

सो कबीरजी कहै हैं कि, जहां हरि परम पुरुष श्रीरामचन्द्र जाके अंतःकर-णमें भागवत धर्म रूपी बिरवनकी बाग प्रतिपालै हैं तिनको यह संसाररूपी बिरवा अच्छो नहीं है । व्यंग यह है कि,माली जो होइहै सो कांटा वाला पेड़ निष्काम अलग कै देइहै इहां हरि संसार रूपी बिरवा अलग कै देइ है भागवत धर्मरूप बिरवा श्रीकबीरजी रेखता में कह्यो ॥ "धर्मकी बाग फुलवारि फूली रही शील संतोष बहुतक सोहाई । भक्तिका फूल कोउ संत माथे धरे ज्ञान मत भेद सतगुरु लखाई ॥ विवेक बिचार सोइ बाग देखन चले प्रेम फल पाइ टोरै चखाइ । पराहै स्वाद जब और भावै नहीं तजैगा प्राणकी बहवाई ॥ ५ ॥

इति पचासवां शब्द समाप्त ।

अथ इक्यावनवां शब्द ॥ ५१ ॥

बुझबुझपण्डितमनाचितलाय।कबहिंभरलबहैकबहिंसुखाय १
खन उबै खन डुबैखन अवगाह।रतन नामिलै पावनहिं थाह२
नदिया नाहिं सरस बहै नीर। मच्छ न मरै केवट रहै तीर ३
कह कबीर यह मनका धोका।बैठा रहै चला चह चोखा४

बुझबुझपंडितमनाचितलाय। कबहिंभरलबहैकबहिंसुखाय १

हे पंडित ! सारासारके बिचार करनवाले ते तो बिवेकी कहावै हैं चित्त लगाइकै यह मनको बूझि, तौ कबहूं भरलकेह कबहूं तो तैं आपनेको मानिलेइहै कि, मैंही ब्रह्महौं आनंदते भरिजायहै औ कबहूं वहज्ञान बहिजायहै तब सुखाइ जाइहै अर्थात् वह आनंद नहीं रहिजाइहै ॥ १ ॥

खन उबै खन डुबै खन अवगाह।रतननमिलैपाव नहिंथाह२
नदिया नाहिं सरस बहै नीर। मच्छ न मरै केवट रहै तीर३

तब क्षणमें संसारते मन ऊबिउठै है कहे बैराग्य ह्वैआवै है औ क्षणमें वही मनरूपी नदी हिलै है बूड़िजाय है अर्थात् संसारके विषयमें बूड़िजाय है । औ क्षणमें अवगाहैहै कहे नानामतमें बिचार करै है कि, संसार छूटिजाय सो मनरूपी नदीकी थाह नहीं पावै है तेहिते रत्न जो है स्वस्वरूप सो नहीं मिलै है विचारही करत रहिजायहै॥२॥सो मनरूपी नदियाहै नहीं जो तैं बिचारकरै तू तो मनके बाहर है परंतु सरस नीर सङ्कल्पबनै है। अब मच्छको मारनवालो केवट ज्ञान तीर में बनै है परंतु काम क्रोधादिक मच्छ तेरे मारे नहीं मरै हैं॥ ३ ॥

कह कबीर यह मनको धोखा। बैठा रहै चला चह चोखा ४

सो कबीरजी कहैहैं कि, नाना मतमें परिकै संसार छूटिबेको नहीं उपाय करौ हौ औ चोखे कहे नीके चला चाहौहौ परंतु हौ बैठे कहे साहबके मिलिबेको उपाय ये एकउ नहीं हैं काहेते कि, पश्चिमको ग्राम नगीचऊ होइ औ तहांजाइबो चाहै औ जसजस पूर्वको मेहनत करिकै मंजिलकरै तौ तस तस दूरिही परतु जाइहै यह संसा मनको धोखा मिथ्याहै सो मनते भिन्न ह्वैकै साहबमें लगै तबहीं साहब मिलैंगे४

इति इक्यावनवां शब्द समाप्त ।

अथ बावनवां शब्द ॥ ५२ ॥

बूझि लीजै ब्रह्मज्ञानी ।
घोरि घोरि वर्षा बरषावै परिया बुंद न पानी ॥ १ ॥
चींटीके पग हस्ती बांधे छेरी बीगे खायो ।
उदधि माहिंते निकासि छांछरी चौड़े गेह करायो ॥ २ ॥
मेढुक सर्प रहै इक संगै बिल्ली श्वान विवाही ।
नित उठि सिंह सियारसों जूझै अद्भुत कथो न जाही ॥ ३ ॥
संशय मिरगा तन वन घेरे पारथ बाना मेलै ।
सायर जरै सकल वन डाहै मच्छ अहेरा खेलै ॥ ४ ॥
कह कबीर यह अद्भुत ज्ञाना को यहि ज्ञानहँ बूझै ।
बिनु पंखै उड़िजाहि अकाशै जीवहि मरण न सूझै ॥ ५ ॥

बूझि लीजै ब्रह्मज्ञानी ।
घोरि घोरि वर्षा बरषावै परिया बुंद न पानी ॥ १ ॥

हे ब्रह्मज्ञानी ! आप बूझिये तौ घोरिघोरि कहे नये नये ग्रन्थन को बनाइकै कहे माया ब्रह्मजीव एकैमें मिलाइडारचो कि, एक ही ब्रह्म है । वही बाणी शिष्यनके श्रवण में बर्षा ऐसो बर्षावोहौ परन्तु तुम्हारे बानीरूप पानी को बुंदहू न उनके पर्‍यो अर्थात् तनकऊ ज्ञान न भयो वे ब्रह्म कबहूं न भयो सो तुम्हारो यह हवाल ह्वैरह्यो है ॥ १ ॥

चींटीके पग हस्ती बांधे छेरी बीगै खायो ।
उदधि माहँते निकासि छांछरी चौड़े गेह करायो ॥ २ ॥

चींटी कहिये बुद्धिको काहेते कि, सूक्ष्म होइ है कुशाग्रवर्त्ती शास्त्रमें कहै हैं ताके पाइमें मतङ्गरूप जोमनहै ताको बांधिदियो मनबड़ाहै। औ दुर्वारमतहै याते हाथी कह्यो

तब छेरी जो है माया सो बीगा जो है जीव ताको खाइ लियो जीवको बीगा काहेते कह्यो कि, जो जीव आपने स्वरूप को जानै तौ छेरी जो है माया ताको नाशकै देइ सो छेरी मायही बीगा जीवको आपने पेटमें डारिलियो । अरु छेरी मायाको कहै हैं तामें प्रमाण ॥ " अजामेकांलोहितशुक्लकृष्णां " इत्यादि । सो लोक प्रकाश जो उदधि तहांते निकरिकै चौड़ी छांछरी जो संसार तामें मच्छरूप जीव घर मायाते बनवायो अर्थात् संसारी ह्वै गयो ॥ २ ॥

मेढुक सर्प रहै इक संगै बिल्ली श्वान बियाही ।
नित उठि सिंह सियारसों जूझै अदभुत कथो न जाही३॥

वह कैसो संसारहै जहां मेढुक (जीव) औ सर्प (काल) एकैसंगरहे हैं । नाना शरीरंनको काल खात जाइहै पुनि पुनि शरीर होत जाइहै । अरु बिल्ली जो है मॉनसी वृत्ति सो श्वान स्वानुभवानन्द ताको बिवाहीगई अर्थात वाही में लगिगई । वृत्तिकोबिल्ली काहेते कह्यो कि, बिल्ली जहां गोरस देखै है तहैं जाइहै औ यह वृत्ति जो है सोऊ जहै रस जो है सुख सो देखैहै तहैं जाइहै । सो स्वानुभवानन्दमें बहुत सुख देख्यो याते वाहीको बिवाहीगई । तब नित-उठिकै सिंह जो ज्ञान सो सियार अज्ञानते मारो जाइहै । जो कहो ज्ञान तो अज्ञानको नाश करनवारो है अज्ञानते ज्ञान कैसे नाश होइहै ? सो वह जो ब्रह्मज्ञान कियो कि, हम ब्रह्म हैं सो अद्भुत है कहिबेलायक नहीं है नेति कहैह अर्थात् कोई जीव ब्रह्म नहीं भयो यह कौनेहू शास्त्र पुराणमें नहीं कह्यो कि, फलानो जीव ब्रह्म ह्वै गयो याही ते मूलाज्ञानमें ठहराये हैं ॥ ३ ॥

संशय मिरगा तन बन घेरे पारथ बाना मेलै ।
सायर जरै सकल बन डाहै मच्छ अहेरा खेलै ॥ ४ ॥

येई दुइतुक अधिकसे जानपरैहैं परन्तु पोथीमें लिखो लख्यो अर्थ करिदियो सो शरीरबनको संशय जो मिरगा है सो घेरे है औ पारथ जे हैं गुरुवा लोग ते संशयरूपी मृगाके मारिबेको बाण जो है नानाप्रकारको उपदेशरूप बाणी ताको मेलैहैं सो उनको बाणीन ते संशय तो नहीं दूरि होइहै । संशय कहा है सो कहै हैं सायर जो है बिवेकसागर सो जरिजाइ है औ नाना शरीर जे

बन हैं ते लाय देइ हैं अर्थात् गुरुवनकी बाणी सुनि सुनिकै शिष्यलोग जब और और जीवनको उपदेश कियो तब उनको सबको साहबको बिवेकजरिजरि-गयो औरेऔरे में लागिगये विवेक करिकै साहबको ज्ञानजो ह्वैबेको रहै सो न भयो तब संसार समुद्रमें मच्छ जोहै काल सो अहेर खेलै है अर्थात् जीवनको खाइ है ॥ ४ ॥

कह कबीर यह अद्भुत ज्ञाना को यहि ज्ञानहि बूझै ।
बिनु पंखे उड़ि जाहि अकाशै जीवहि मरण न सूझै ॥ ५ ॥

श्रीकबीरजी कहै हैं कि, यह संसार अद्भुतहै औ ब्रह्म अद्भुत है इन दूनोंको ज्ञान जिनको है कि, ये धोखा है ऐसो को है ? अर्थात् कोई नहींहै परन्तु जो-कोई बिरला बूझनवारो होइ औ मन माया है दोनों धोखा हैं येई तहैं उड़ै हैं नाना पदार्थनको स्मरण होइहै नाना योनि पावैहै संसारमें तिनको छोड़ि एक परमपुरुष श्रीरामचन्द्रही को ह्वैरहै तौ ब्रह्म जो है आकाश ताते उड़ि कहैं निकसिकै साहबके यहां पहुंचै जाइ जो कहो बिना पखना कैसे उड़ि-जाय । सो यहां उपासना दुइप्रकारकी हैं एक बांदर कैसो बच्चा भजन करैहै कि, बांदरको बच्चा अपनी माताको आपही धरे रहै है सो यहजीव नाना प्रकारकें शास्त्रादिकनते बिचार करिकै औ असांच मत खंडन करिकै आपही अपने साहबको धरे रहै है भ्रम में नहीं परै है । औ दूसरी उपासना बिलारीके बच्चाकीसीहै बिलारीको बच्चा और सबकी आशा तोरे माताकी आशा किये रहैहै सो वह विलारी अपने बच्चाको जहां सुपास देखै है तहां आपही उठाइ लैजाइहै। तैसे यह जीव वेद शास्त्रको छोड़िकै न काहूके मतके खंडन करिबेकी सामर्थ्य है न अपने मतके मंडन करिबेकी सामर्थ्यहै साहबको जानै है कि, मैं साहब का हौं दूसरो मत सुनतही नहीं है सो जब सब पक्ष को छोड़िकै साहब कों ह्वैरह्यो, तब याको साहबही हंसस्वरूप दैकै अपने लोकको उठाइ लैजाइहै ॥ ५ ॥

इति बावनवां शब्द समाप्त ।

अथ तिरपनवां शब्द ॥ ५३ ॥

गुरुमुख ।

वह बिरवा चीन्है जो कोई।जरा मरण रहितै तन होई॥१॥
बिरवा एक सकल संसारा।पेड़ एक फूटल तिनडारा ॥२॥
मध्यकेडार चारि फल लागा।शाखा पत्र गनतको वागा॥३॥
वेलि एक त्रिभुवन लपटानी।बांधेते छूटिहि नाहिं प्रानी॥४॥
कह कबीर हम जात पुकारा।पण्डित होय सो करै विचारा ५

वह बिरवा चीन्है जो कोई।जरा मरण रहितै तन होई॥१॥

जो बिरवाको आगे बर्णनकरै हैं ताको जो कोई चीन्है औ असार मानि लेइ औ सार जो साहबहैं तिनको जानै सोपार्षद स्वरूप ह्वैजाइ औ जन्म मरणते रहित ह्वैजाइ ॥ १ ॥

बिरवा एक सकल संसारा। पेड़ एक फूटल तिन डारा ॥२॥
मध्यके डार चारि फल लागा।शाखा पत्र गनत कोवागा॥३॥

सो एक बिरवा सब संसार है तौने बिरवाको पेड़ कहे मूल विराट् पुरुष है तौनेमें ब्रह्मा विष्णु महेश तीनिडार फूट्यो है ॥ २ ॥ सो मध्यकी डार जे विष्णुहैं तिनमें अर्थ धर्म काम मोक्ष येचारि फल लागत भये चारि फलके दैवैया विष्णुहै। सो जो कोई विष्णुका उपासक होइ सो चारों फलको पावै है। डारन जो डरैया कहे हैं ते शाखा कहावै हैं। सो ब्रह्मा विष्णु महेश जे तीनि डारै हैं तिनते नाना देव नाना मत भये। तेई शाखा हैं। तिनको को गनत बागहै अर्थात् उनको अन्त कोई नहीं पायो औ सतोगुणी रजोगुणी तमोगुणी जे नाना वासना होतभई तेई पत्र हैं ॥ ३ ॥

बेलि एक त्रिभुवन लपटानी।बाँधे ते छूटिहि नाहिं प्रानी॥४॥
कह कबीर हम जात पुकारा।पंडित होय सो करै बिचारा ५॥

वृक्षमें बेलि लपटै है सो यह संसाररूपी वृक्षमें आशारूपी बेलि लपटि गई है तामें बँधिकै प्राणी छूटै नहीं है ॥ ४ ॥ साहब कहै हैं कि. हे कबीर ! कहे जीव तोको संसार जातमें हम पुकारा है रामनामको सो पंडित होइ है बिचार करिलेइ अर्थात् असार जो रामनाममें जगत् मुख अर्थ ताको छांड़ि राममें सार जो मैं ताको जानिकै रामनाम जपिकै मेरे पास आवै ॥ ५ ॥

इति तिरपनवां शब्द समाप्त ।

अथ चौवनवां शब्द ॥ ५४ ॥

सांईके सँग सासुर आई ।

संग न सूती स्वाद न मानी गयो यौवन सपनेकी नाई ॥ १ ॥
जना चारि मिलि लगन शोचाई जना पांचमिलि मंडपछाई ।
सखी सहेली मंगल गावै दुख सुख माथे हरदि चढ़ाई ॥ २ ॥
नाना रूप परी मन भांवरि गांठि जोरि भई पति आई ।
अरघे दैदै चली सुवासिनि चौकहि रांड़ भई सँग सांई ॥३॥
भयो बिवाह चली बिन दूलह बाट जात समधी समुझाई ।
कह कबीर हम गौने जैवै तरब कंतलै तूर बजाई ॥ ४ ॥

यह जीव परमपुरुष श्रीरामचन्द्रकी शक्ति है सो जौनी भांतिते याको आपने स्वरूपको ज्ञान रह्यो है औ फिरि भयो है सो लिखै हैं ॥

सांईके सँग सासुर आई ।

सङ्ग न सूती स्वाद न मानी गयो यौवन सपने की नाई १

परमपुरुष श्रीरामचन्द्रके लोकको प्रकाश जो ब्रह्म है ताको सांई मानिकै ताही सङ्ग सासुर जो यह संसार है तहां आई । सासुर संसार कांहेते ठहरयो कि, अहंब्रह्मबुद्धि संसारहीमें होइहै । जब संसारकेबाहिरे रहै है तबतो याको सुधिही नहीं रहैहै । जब महाप्रलय ह्वै जाइहै तब सत् जो है साहबके लोकको

प्रकाश ब्रह्म ताहीमें सब रहै हैं । जब उत्पत्तिको समय भयो सुरति पायो तब आपनेको लोकप्रकाश ब्रह्म मान्यो तब मनभयो । मनते इच्छाभई । तब यह ब्रह्मकहै हैं कि, मैं जीवात्मामें प्रवेश करिकै नामरूप करि हौं।सो जीवात्मामें प्रवेश करिकै नाम रूप जीवात्माके करतभयो याहीते याको साँई मानिकै चित् शक्ति जीव सासुर जो संसार तहां आवत भयो । सो वह ब्रह्मको खसम मानि लेबो धोखा-है काहेते कि, वह तौ निराकारहै सो वाके संग न सोवत भई,न स्वाद पावत भई नानारूप धरत भई तेई यौवन है जे सपने की नाई जातभये सो जौनी भांति चितशक्ति जीव साईके संग ससुरेमें आई सो लिखेहै अपनेको ब्रह्म मान्यो तब संसार की उत्पत्ति भई तामें प्रमाण कबीरजीके शब्दमंगलको ॥ (सो उत्पत्ति बीजहै, शून्य प्रलय कर ठाउं । तन छूटे कह जाइहौ, अकह बसायो गाउँ ॥ १॥)

जना चार मिलि लगनशोचाई जना पांच मिलि मंडप छाई। सखी सहेली मंगल गावें।दुख सुख माथे हरदि चढ़ाई॥२॥

जना चार कहे मन बुद्धि चित्त अहंकार ये जे अंतःकरण चतुष्टय हैं तेई मिलिकै लग्न शोचावतभे अर्थात् जीवको शरीरकी लग्न लगावतभे। औ जनापांचैं कहें पृथ्वी जल अग्नि वायु आकाश येपांचों तत्त्व मिलिकै मंडप छावत भये अर्थात् शरीर बनावतभये । औ सखी सहेली जे हैं पांच कर्मेन्द्रिय ते मंगल गावैहैं गाइबो कहाहै कि, रूप रस गंध स्पर्श शब्द ये विषयको लेनलगे। और नाना प्रकारकी जे पुण्य पापकी बृत्तिहैं तेई कुवांरी कन्याहैं सो नानाप्रकारके पुण्य पाप कराइ-कै दुःख सुख की हरदी जीवरूप दुलहिनिके माथे चढ़ाबै हैं ॥ २ ॥

नाना रूप परी मन भांवरि गांठी जोरि भई पति आई । अरघै दैदै चली सुवासिनि चौकहि रांड़ भई संग साईं॥३॥

औ नानारूप कहे नाना भांति की जे वासनाहैं तिनहीकी याके मनमें भांवरि परिगई है । औ चित् अचित्की गांठी परिगई ताहीते ब्रह्मको पति आई कहे पति आइ गई है अर्थात ब्रह्मको पति मानिलियो है कि, वह ब्रह्म मैहीं हौं । हेतु यहहै

कि,जब विवाहह्वै जाइहै तब स्त्री अर्द्धांगी ह्वैजाइहै औ सुवासिनि वे कहावै हैं जे या कुलकी कन्या अनत बिवाही रहैहैं सो जब संसारमें जीव ब्रह्म फांसमें फँसिगयो तब सुवासिनि जे हैं साहबके जनैया तिनको ब्रह्मसों विवाह नहीं भयो ते अरथ दैकै कहे उपदेश करिकै वाको लैचले सो यद्यपि याको चौका बनोहीहै मड़ये के तर बैठीही है अर्थात् यद्यपि संसारमें शरीर धारण किये है परंतु तहैं राँड़ ह्वैगई ब्रह्मको पतिमानि राख्येहै। सो बिचारा मरिगयो अर्थात् वाको धोखा-समुझि लियो इहां रांड़ ह्वैबो कहिआये औ सांच साईको संग बनैहै यह जो कह्यो सो साहब सर्वत्र बनैहै वह अहंब्रह्मको बिचार मिटिगयो ॥ ३ ॥

भयो बिवाह चलीविनु दूलह बाट जात समधी समुझाई ॥
कह कबीर हम गौने जैबे तरब कंतलै तूर बजाई ॥ ४ ॥

सोइ सत रहते विवाह भयो कहे इस तरहते संसारी भयो। औ पुनि बिन दूलह चलतभई कहे अहंब्रह्म बुद्धि न रहिगई मुक्ति ह्वैकै चित्शक्ति जीव साह-बके पास जाइबेकी गैल लियो सो वह बाट जातमें समधी जो है शुद्ध समष्टि जीव सो याको समुझावत भयो कि, जैसे हम शुद्ध हैं तैसे तुमहू शुद्ध हौ। अर्थात् जबजीव साहबके लोक प्रकाशको बेधिकै साहबके लोकको चल्यो तब यह समुझत भयो कि, जैसे ये शुद्ध रहे हैं तैसे हमहूं शुद्ध रहेहैं, यह बीचहीमें धोखा भयो है।उनको देखिकै यह ज्ञान भयो यही उनको समुझाइबो है। सो कबीर जो है कायाको बीर जीव सो कहैहै कि, मन बचनके परे जो साहब के ऊपर दूसरो साहब नहीं है जासों हमारो बिवाह ह्वैबेको नहीं है। वह हमारो सदा कौ कंत है। तहां हम गवनजाइहै अर्थात् तहांको हम गवन करैंगे। अरु वाही कंतको लैकै कहे पाइकै तरिजाब। औरे कंतको लैकै न तरैंगे। औ तहैं परम मुक्ति रूपी तूर बजावैंगे। अर्थात् और ईश्वरनमें लागे औ आपनेको ब्रह्म माने मुक्तिरूपी तूर न बाजैगो अर्थात् संसार औ सब उपासना औ ब्रह्म ह्वैजाइबो ये सब तूरिकै साहबके पास जाइकै अर्थात् डंकादैकै जाइगो ॥ ४ ॥

इति चौवनवां शब्द समाप्त।

अथ पचपनवां शब्द ॥ ५५ ॥

नलको ढाढ़स देखो आई । कछु अकथ कथा है भाई ॥ १ ॥
सिंह शार्दुल यक हर जोतिनि सीकस वोइनि धाना ।
वनकी भलुइया चाखुर फेरै छागर भये किसाना ॥ २ ॥
कागा कपरा धोवन लागे वकुला किररै दांता ।
माछी मूड़ मुड़ावन लागी हमहूं जाव वराता ॥ ३ ॥
छेरी वाघहि ब्याह होतहै मंगल गावै गाई ।
वनके रोझ धै दाइज दीन्हो गोह लोकंदे जाई ॥ ४ ॥
कहै कवीर सुनोहो संतो जो यह पद अर्थावै ।
सोई पँडित सोई ज्ञाता सोई भक्त कहावै ॥ ५ ॥

जिनको सद्गुरु मिले तिनको या भांतिउद्धार ह्वै गयो औ जिनको सद्गुरु नहीं मिले जे सद्गुरुको नहीं मान्यो तिनको गुरुवा लोग और और मतमें लगाइदेइ हैं ते साहब को नहीं जानै हैं सो कवीरजी कहै हैं ॥

नलको ढाढ़स देखो आई । कछु अकथ कथाहै भाई ॥ १ ॥

साहब कहते हैं कि, हे भाई! हेसंतौ! ढाढ़सदेखो यहजीव मेरो अंशहै सो मोको नहीं जानै है औरै औरमें लागिकै खराब होइ है नाना दुःखसहै है मोको जानिकै दुःख नहीं त्यागकरै है बड़ो ढाढ़सी है । सो हे भाइउ ! ढाढ़स करिकै जौनेके लिये जामें यह लगै है सो ब्रह्म अकथ कथा है कहिबे लायक नहीं है । वह ब्रह्म विचार झूंठा है वहां कछु माप्ति नहीं है सो अकथ कथा कहै हैं ॥ १ ॥

सिंहशार्दुल यकहरजोनिनि सीकस वोइनि धाना ।
वनकी भलुइया चाखुरफेरै छागरभयेकिसाना ॥ २ ॥

यहां सिंह जो है जीव शार्दूल जो है मन येई दोऊ बैल हैं । कर्म जो हैं सोई हर संसार सीकस भूमि है कहे ऊषर भूमि है । अजा कहावै है माया सोई

छेरी ताको पति बोकरा है सो छागर कहावै । तेई माया में लपटे किसान गुरुवा लोग सो जोतिकै उपदेश रूप धान बोवत भये । औ तौने नवानावके जे भलुइया कहे भुलावनहारे पण्डित तेई चाखुर फेरैं कहे निरावै हैं अर्थात् तातें वृत्ति करिकै वेद जो साहब को बतावै है ताको अर्थ फेरिडारै हैं ॥ २ ॥

कागा कपरा धोवन लागे बकुला किररै दांता ।
माछी मूड़ मुड़ावन लागी हमहूं जाब बराता ॥ ३ ॥

नाना पाखंड मतमें परे ऐसे जे हैं मलिन पाखंडी जीव तेई काग हैं । ते कपरा धोवनलगे कहे सबको उपदेश करै हैं कि, हमारेमत में आवो तौ हम तुम्हारो अंतःकरण शुद्ध करिदेइँ ! औ रूपकपक्षमें जब बरात जाइहै तब सबुनी करिकै लोग जाइहैं ताते यहां सबुनी करिबो लिख्यो । अरु जिनके अंतःकरणरूपी धोवनको वे उपदेशकियो तेई बकुलाभये कहे ऊपरते तो वेष बनाये चन्दन टोपी दिये हैं औ अंतःकरण मलिनहै बिषयमें चित्तलगाये रहै हैं । जहां कोई संत मत कहन लगै है ताको खण्डन करिडारै हैं । दांत किररै हैं कहे कोप करै हैं जैसे बकुला ऊपरते तोस्वच्छ है औ नदी के तीर मछरी खाइबेको बैठे है । भीतर बासना मलीन भरी है; हंस आवै है तिनको डेरवाय कै बैठन नहीं देइहै दांतकिररै है! तैसे बरात जब चलै है तब कारिंदा कामकाजी सफेद कपरा पहिरि दांत किररै हैं कि,यह कामकरो वह कामकरो कहा बैठे हौ यह रिस करै । औ माछी कहे जो माया ते क्षीण ह्वैबेको बिचारकरै हैं, ते माछी कहवावै हैं । अर्थात् मुमुक्षू ते नाना मतके जे गुरुवा लोग हैं तिनके यहां मूड़ मुड़ावै हैं कि, हमहूं बरात जाब कहे हमहूं मुक्त होब । सो वहां मुक्तितो पायो नहि पर गुरुवनकी मीठी बाणी में परिकै आपने को ब्रह्म मानत भये तेहिते स्वस्वरूपको ज्ञान न रहिगयो मायामें फँसिगये औ रूपक पक्षमें दुलहा के संगती जे हैं ते बार बनवावै हैं ॥ ३ ॥

छेरी बाघहि व्याह होत है मंगल गावै गाई ।
वनके रोझ धै दाइज दीन्हो गोह लोकंदै जाई ॥ ४ ॥

अब ब्याहको रूपक कहे हैं । गुरुवा लोग जे हैं तेई पुरोहित हैं उपदेश करन वारे ते छेरी जो है माया ताको औ बाघ जो है जीव ताको ब्याह होतहै अर्थात् जीवको मायामें डारिदेइ हैं । औ छेरी जो है माया ताको बाघ जो है जीव सो खाइलेनवारो है अर्थात् जो जीव आपने स्वरूपको जानै तौ मायाको नाश करिदेई । अरु तहांगायरूपी जो गायत्री है सो मंगल गावै है अर्थात् सब जीवको कर्त्तव्य गायत्री गावै है वेद गायत्री ते कह्यो है औ बन कहे वाणीको रोझ जो है प्रणव ताको दाइज दीन्हो । यहां रोझको प्रणव काहेते कह्यो कि, रोझ गवै कहावै हैं काहेते कि, गोकी सदृश होइ है । सो गैया जो है गायत्री ताके सदृश प्रणवही है अर्थात् वह गायत्री प्रणवही ते निकसी है । प्रणव ब्रह्म है ताको दाइज दीन्हो कहे ब्रह्म मैंहीं हौं । यही प्रणवको अर्थ समुझाइ दीन्हो । कन्याकेसाथ जो डोलहाई जाइ हैं तेलोकंदी कहावै हैं सो यह लोकोक्ति है मिथिलाकैती कहै हैं सो गोह जो है सो लोकंदै जाइ है कहे डोलाके साथ जाइ है । वहां गोह कहे गो जो इंद्रिय हैं जब जीव मायामें लपटै तब और चंचल ह्वैजाइ है नाना शरीररूप डोलामें चढ़ा जीव ताहीके साथ साथ जाइ है ॥ ४ ॥

कहै कबीर सुनौ हो संतो ! जो यह पद अर्थावै ।
सोई पंडित सोई ज्ञाता सोई भक्त कहावै ॥ ५ ॥

सो कबीरजी कहै हैं कि, यह साहबको कह्यो जो यह पद है ताको हे संतौ ! तुम सुनौ इस पदमें जे भ्रम वर्णन कियो तिनको छोड़िकै यह पदको अर्थ सांच जो साहब ताको जानै असांच को छोड़ै सोई पंडित है सोई ज्ञाता है सोई भक्त है ॥ ५ ॥

इति पचपनवां शब्द समाप्त ।

श्रीकबीरजी साहब की उक्तिमें कहैहैं गुरुमुख ।

अथ छप्पनवां शब्द ॥ ५६ ॥

नरको नाहिं परतीति हमारी ।
झूठे बनिज कियो झूठे सन पूजी सबै मिलि हारी ॥ १ ॥
षट दर्शन मिलि पंथ चलायो तिर देवा अधिकारी ।
राजा देश बड़ो परपंची रइअत रहत उजारी ॥ २ ॥
इतते उत औ उतते इत रहु यमकी सांट सँवारी ।
ज्यों कपि डोर बांधि बाजीगर अपने खुशी परारी ॥ ३ ॥
यहै पेठ उत्पत्ति प्रलय को विषया सबै विकारी ।
जैसे श्वान अपावन राजी त्यों लागी संसारी ॥ ४ ॥
कह कबीर यह अद्भुत ज्ञाना मानो वचन हमारो ।
अजहूं लेहु छोड़ाय कालसों जो घट सुरति सँभारो ॥५॥

नरको नाहिं परतीति हमारी ।
झूठे बनिज कियो झूठे सन पूजी सबै मिलि हारी ॥१॥

सबते गुरु परम परपुरुष पर श्रीरामचन्द्र कहै हैं कि, नरको हमारी परतीति नहीं है सब लोग झूठेसों झूठी बनिज करत भये । कहे झूठे ब्रह्ममें जे लगावै हैं ऐसे जे गुरुवा लोगहैं सौदागर तिनसा झूठी बनिज करतभये कहे झूठे ब्रह्म लगावै हैं अर्थात् जो वे उपदेश कियो कि, "तुमहीं ब्रह्महौ" सो झूठा है तासों बनिज करिकै पूजी सब हारिगयो कहे आपनी आत्माको ज्ञान भूलि गयो । कौन ज्ञान भूलिगये कि, यह आत्मा तो मेरो सदाको दास है बद्धहूमें मुक्तहूमें है ताम प्रमाण॥ " दासभूताः स्वतः सर्वे ह्यात्मानः परमात्मनः । नान्यथा लक्षणन्तेषां बंधे मोक्षे तथैव च" ॥ इति पद्मपुराणे ॥ १ ॥ जो कहौ भुलवाइ कौन दियो ? सो आगे इसका समाधान करते हैं ।

षट दर्शन मिलि पंथ चलायो तिर देवा अधिकारी ।
राजा देश बड़ो परपंची रइअत रहत उजारी ॥ २ ॥

औ षट् दर्शन जे हैं ते मिलिकै नानापंथ चलावत भये । कोई योगीह्वैकै योग धारण करन लग्यो, औ कोई अनुभव कथिकै शून्य ज्ञान पंथ चलायो, अरु कोई नाना प्रकार के कर्म करने लगे, औ कोई नाना उपासना करने लग्यो, औ कोई मैं ब्रह्महौं यह कहने लग्यो, औ कोई कर्त्ता न्यारा है यह कहने लग्यो औ कोई मतछोड़िकै आत्मामें स्थित भयो । या ब्रह्मांडमे ब्रह्मा बिष्णु महेश अधिकारी हैं ते सब मतनके अधिष्ठाता हैं या हेतुते सत रज तमते कोई नहीं छूट्यो । औ ओई राजाहै जे हैं ब्रह्मा बिष्णु महेश आ उनको देश जोहै सत रज तम सो बड़ो परपञ्ची है याहीतें रइअत जे और सब जीवहैं तिनके अंतः-करण उजारि रहे हैं जो है भक्ति मोर, जो है ज्ञान मोर, सो उनको अन्तःकरण में नहीं होन पावै है ॥ २ ॥

इतते उत रहु उतते इत रहु यमकी सांट सँवारी ।
ज्यों कपि डोर बांधि बाजीगर अपने खुशी परारी॥३॥

तेहिंते इत उत कहे कहूं स्वर्ग जाइहै, कहूं नरक जाइ है, कहूं आपनें उपास्य देवतनके लोक जाइ फिरि इहां आयकै उनहींकी उपासना करैहै औ पुनि जब उपासना भूलै तब पुनि पापकरिकै नरक जाइहैं तिनके वास्ते यमकी सांठ सँवारी कहे यमके दंडते नहीं बचैहै । जैसे कपि कहे बाँदर को बाजीगर आपनी डोरि ते बांधैहै औ वह बांदर बाजीगरके बश ह्वैगयो तब आपनी खुशी तें वाके बंधनमें परो रहै है नाना नाच नाचै है प्रथम चित् शक्ति में जगत्को कारण रूप बनो रह्यो याही भांति सब जीव माया ब्रह्मके बश ह्वैगयो, तब वही बंधन में अपनीखुशी ते परे रहे हैं; वही ब्रह्मको ज्ञान करे हैं मोको नहीं जानेहैं॥ ३ ॥

यहै पेठ उत्पत्ति प्रलयको विषया सबै विकारी ।
जैसे श्वान अपावन राजी त्यों लागे संसारी ॥ ४ ॥

यहै माया ब्रह्म उत्पत्ति प्रलयको पेठहै । अरु संसारमें जे संपूर्ण बिषय हैं तेई विकार हैं याते मोहिंते व्यतिरिक्त जे पदार्थ संसार में ज्ञान योग वैराग्य

भक्ति आदिक जेहैं ते सब विषय हैं या हेतुते कि, जामें जामें मन लगैहै ते सब मनके विषय हैं । ते सब बिकारई हैं औ जो "यहै पेठ उत्पत्ति प्रलयको सौदा सबै बिकारी" ऐसो पाठ होइ तौ यह अर्थ पेठ नाऊं हाटको यह देश भाषाहै सो अनन्त कोटि ब्रह्माण्डनके उत्पत्ति प्रलय को माया ब्रह्म दोनों तरफकी पेठ कहे बजारहैं । सो यह जगत् शहरहै विषयरूपी सौदा जो है ताके संसारी जीव लगवारे हैं सो जैसे श्वान (कुत्ता) सो अपावन जो हाड़है ताको चाटैहै तब वोही के दांतते लोहू निकसै है सो हाड में लगै है सोऊ चाटतै जायहै, वही में राजी रहैहै; तैसे यह आत्मा अपने भ्रममें पराहै वहीको भ्रम नाना विषयमें सुखरूप देखो परैहै । सो बिषयतो जड़है बिषय में सुख नहीं है याहीको सुख बिषयन में जाइरहैहै आपनोई सुख विषयमें पावै है अरु मानै है कि, मैं बिषयको सुख-पाऊं हौं अरुपर वह ब्रह्मको अनुभव कियो तहां वाके आत्मैको सुख मिलै है; जानै यह है कि, मोको ब्रह्मानन्द भयोहै । काहेते कि, जब भर अहं ब्रह्म बुद्धि रहैहै तबभर तो मूलाज्ञान ठहराइ है जब सबको निराकरण ह्वै गयो एक आत्मा ही को ज्ञान रहिगंयो सो ब्रह्मानंद रूप होइहै तेहिते वहब्रह्मानन्द आत्माहीको आनन्दहै सो जैसे श्वान आपनेही लोहूके स्वादते हाड़को चाटैहै तैसे यहौ आपनो सुख विषय ब्रह्ममें पाइकै भूलि रह्यो संसारी ज्ञान याके लगी रह्यो है ॥ ४ ॥

कह कबीर यह अद्भुत ज्ञाना मानो वचन हमारो ।
अजहूं लेहुं छोड़ाय कालसों जो घट सुरति सँभारो ५

सो हे कबीर कायाके बीर जीवो ! हम तुमसों यह अद्भुत ज्ञान कहैहैं हमारो बचन मानौ जो अपने घटमें सुरति सँभारो औ वह सुरति मोमें लगावो तौ अबहूं कहे माया ब्रह्ममें तुम परेहौ ताहूपर तुमको मैं कालते छोड़ायलेउँ अथवा अजहूं को भाव यह है कि, कालकी दाढ़ में तुम परिचुके हौ सो कालते तुमको छोड़ाइ लेउँगो ॥ ५ ॥

इति छप्पनवां शब्द समाप्त ।

अथ सत्तावनवां शब्द ॥ ५७ ॥

ना हरि भजै न आदत छूटी ।

शब्दै समुझि सुधारत नाहीं अँधरे भये हियोकी फूटी ॥१॥
पानी माहँ पषानकी रेखा ठोंकत उठै भभूका ।
सहस घड़ा नितही जल ढारै फिरि सूखेका सूखा ॥ २ ॥
सेते सेते सेत अंग भो शयन बढ़ी अधिकाई ।
जो सनिपात रोगि अहि मारै सो साधुन सिधि पाई ॥३॥
अनहद कहत कहत जग विनशे अनहद सृष्टि समानी ।
निकट पयाना यमपुर धावै वोलहि एकहि बानी ॥ ४ ॥
सतगुरु मिले वहुत सुख लहिया सतगुरु शब्द सुधारै ।
कह कबीर सो सदा सुखारी जो यहि पदहि विचारै ॥५॥

ना हरि भजै न आदत छूटी ।

शब्दै समुझि सुधारत नाहीं अँधरे भये हियो की फूटी॥१॥

ना तैं हरि भजे है अरु ना तेरी आवागमनकी आदत कहे स्वभाव छूट्यो । यह अर्थ साहबके कहे शंब्दको सुनिकै औ विचारिकै जो आपनो नहीं सुधारैहै सो काहे नहीं सुधारैहै । काहेते कि, साहब कहतई जाइहै कि, जो मो कों अबहूं जीव जानै तौ कालते छोड़ाय लेउँ । ताते आंधर भये हियोकी तिहारी फूटिगई कहे यहै आदत करत करत वृद्धावस्था पहुँची इन्द्रियन जवाब दियो तामें प्रमाण । " नेह गये नैना गये, गये दांत औ कान । प्राण छरीदा रहिगये, तेऊ कहत हैं जान " ॥ अबहूं तौ जानौ भजन करिकै छूटिजाउ॥ १॥

पानीमाहँ पषानकी रेखा ठोंकत उठै भभूका ॥
सहस घड़ा नितही जल ढारै फिरि सूखेका सूखा ॥ २ ॥

हे जीवौ ! तुम बड़े जड़ हौ जैसे पानीमें पाषाणकी रेखा कहे छोटी शर्बती पथरी डारि राखै तो और भभूका आगीकों उठनलगै है । चकमक में ठोंकेते तैसे जस जस साधुलोग उपदेश करत जाइहैं तस तस साहब को भजन तौ नहीं करोहौ और काम क्रोध आदिक जे आगी हैं ते तुमको जोर करत जाइ हैं । अर्थात् जब उपदेश करन लगै है तब अधिक रिस करन लगौहौ, जैसे पाषाणमें नित हजारन घड़ा जल डारे पै पाषाण भीतर सूखै रहै है तैसे केतऊ ज्ञान उपदेश करै परन्तु हे जीवौ । तुम जड़के जड़ही बने रहौहौ ॥२॥

सेते सेते सेत अंगभो शयन बढ़ी अधिकाई ।
जो सन्निपात रोगिअहि मारै सो साधुन सिधि पाई ॥३॥

सेत सेत जो ब्रह्महै तामें लगे लगे तुम भीतर बाहर सपेद ह्वैगये अर्थात बुढ़ाय गये ऊपरौ के रोमा बुढ़ाय गये । ब्रह्ममें सोवत सोवत तोको आपनो स्वरूप भूलिगयो तब शयनमें कहे सो वन अधिकाई बढ़ी कहे अधिक सोवनलगे अर्थात् समाधिकरनलगे । अपनीआत्माको ज्ञान औ साहबको ज्ञान औ जगत् भूलिगयो पिशाचवत् मूकवत जड़वत् उन्मत्तवत् बालवत तेरीदशाह्वैगई । सोई लक्षण सन्निपातमें होइहै सो तोको सन्निपात भयो है । सन्निपातरोग याको मारैहै औ उनको आत्माको ज्ञान भूलि जाइहै । ब्रह्म ह्वैबो साधुलोग सिद्धि पाईहैं कि, हम सिद्धहैं यह मानि ले ही आत्माको ब्रह्म ह्वैबो असिद्धहै सो आगे कहै हैं । " सीते सीते पाठहोइ तौ ज्ञान करत करत कि, संसार ताप हमारो छूटि जाइ शीत अंग ह्वैगये । कहे सन्निपातकी अधिकाई तुम्हारे अङ्गमें बढ़िआई अर्थाव सन्निपात में खबरि देह की भूलि जाइहै । औ रोगियनका मारै है सोई साधुलोग सिद्धिपाई है कि, हमको देहकी खबरि भूलिगई हम सिद्ध ह्वैगये ॥ ३ ॥

अनहद कहत कहत जग विनशे अनहद सृष्टि समानी ॥
निकट पयाना यमपुर धावै बोलहि एकै बानी ॥ ४ ॥

वह जो ब्रह्म है ताकी हद्द नहीं है ताको अनहद कहत कहत कहे नेति नेति कहत २ संसार विनशि गयो । अनहद जो ब्रह्म है तामें सृष्टिके सब

लोग समाइगये औ सृष्टिमें वह अनहदब्रह्म समाइ गयो सो मानत तो यहहै कि, सब ब्रह्महीमें समाईहै कहे ब्रह्मै ह्वै जाइहै परन्तु निकट पयाना यमपुरहीको धाइबो है अर्थात् आपनेको ब्रह्ममानिकै ब्रह्मनहीं होइहै यमपुरही को चलेजायँहैं तेऊ एकही वाणी बोलैहैं कि, एक ब्रह्मही है दूसरा नहीं है। तामें धुनि यहहै कि, अरे मूढ़ एकतो ब्रह्म है नरकै कौन जायहै ॥ ४ ॥

सतगुरु मिले बहुत सुख लहिया सतगुरु शब्द सुधारै।
कह कबीर सो सदा सुखारी जो यहि पदहि बिचारै ॥५॥

हे जीवौ! तुमको सतगुरु मिलै तौ वे राम नाम रूपी पदमें साहब मुख अर्थ बताइ देइं । तौनेको जोतुम बिचारौ तौ बहुत सुख पावो श्रीकबीरजी कहैहैं जे शब्दनको अनर्थ अर्थ बताइकै गुरुवालोगन बिगारि डारचो है ते शब्द सतगुरु सुधारैहैं काहेते अनर्थ अर्थ खंडन कैरिकै वे वेद शास्त्रादिकन के शब्दके तात्पर्यार्थ छोड़ाइकै साहब मुख अर्थ बताइदेइहैं । सो जो वा शब्द जो रामनाम ताको जगत् मुख अर्थ बताइ देइहै सो जो कोई राम नामरूपी पद में साहब मुख अर्थ बिचार सो सदा सुखी रहैहै ॥ ५ ॥

इति सत्तावनवां शब्द समाप्त ।

अथ अट्ठावनवां शब्द ॥ ५८ ॥

नर हर लागी दव बिकार विन ईंधन मिलै न बुझावन हारा।
मैं जानों तोहींते व्यापै जरत सकल संसारा ॥ १ ॥
पानी माहँ अगिनिको अंकुर मिल न बुझावन पानी ।
एक न जरै जरै नौ नारी युक्ति न काहु जानी ॥ २ ॥
शहर जरै पहरू सुख सोवै कहै कुशल घर मेरा ।
कुरिया जरै वस्तु निज उबरै बिकल राम रँग तेरा ॥ ३ ॥
कुबिजा पुरुष गले यक लागी पूजि न मनकी साधा ।
करत बिचार जन्म गो खीसा ई तन रहल असाधा ॥४॥

जानि बूझिं जो कपट करतहै तेहि अस मंद न कोई ।
कह कबीर सब नारि रामकी मोहे और न कोई ॥ ९ ॥

नर हर लागी दव विकार बिन ईंधन मिलै न बुझावन हारा ।
मैं जानों तोहीं ते ब्यापै जरत सकल संसारा ॥ १ ॥

हे नरहर दवलागी कहे तेरे स्वरूप की हरनवारी मायारूपी दवारि लगी है। तैं कैसाहै ? विकार बिन । तौ माया मोको काहेको लगीहै ? तौ विना ईंधन को बुझावनवारो तोको नहीं मिल्यो, जो तोको समुझाइ देई कि, तैं बिन विकारको है जो मिलाहै सो नाना उपासना नाना मत रूप ईंधन डानर बारो मिलाहै । साहबको ज्ञान रूप जल डारै माया रूप दवारि कैसे बुझाइ सो मैं जानौ हौं या मायारूपी दवारि तोहीते उत्पन्न भै अर्थात् मायादिक तोहीं ते भये ताहीमें सब संसार जरो जाइहै ॥ १ ॥

पानी माहँ अगिनिको अंकुर मिलन बुझावन पानी ।
एक न जरै जरै नौ नारी युक्ति न काहू जानी ॥२॥

सो वह मायारूपी अग्निको अंकुर पानीमें है कहे नाना वेद शास्त्रादिक बाणीमें है ते वेद शास्त्रादिकनके अर्थको बदलिकै साहबको छिपाइकै मायारूपी अग्निको प्रकट कियो औ तोकोऔरे औरेमें लगाइ दियो । अर्थात् वे सब मतनको फल ब्रह्मह्वै जाइबो बताइ दियो । वह अग्निको बुझावन को वेद शास्त्रादिकन को जो सांच अर्थहैं जल सो नहीं मिलै है । अथवा जे वेद शास्त्रादिकन के सांच अर्थ मुनि जन लोग बनाइ गये हैं, बशिष्ठ संहिता, शुक संहिता हनुमत्संहिता, अगस्त्यसंहिता, सदाशिवसंहिता, मुन्दरीतंत्रादिक ग्रन्थ औ वेदशिरोपनिषद् विश्वम्भरोपनिषदादिक सांचे मतके कहनवारेते जल नहीं मिलैहै । सो जब वह आगि लगी तब अद्वैत करिकै बहुत समुझावैहै परन्तु एक वह आत्मा नहीं जरै औ साहबमें ने नवधा भक्तिहैं ते नव नारी हैं ते जरैहैं सोयह युक्ति कोई नहीं जान्यो कि आत्मा ब्रह्म नहीं होइहै औ साहब को जानै तौ वे नवधा भक्ति न जरैं ॥ २ ॥

शहर जरे पहरू सुख सोवै कहै कुशल घर मेरा ।
कुरिया जरै वस्तु निज उबरै विकल राम रँगतेरा ॥३॥

औ शहर कहे साहबके मिलिबे के जेते ज्ञानहैं जीवात्मा के ते जरे जाईहैं औ पहरू जो आत्मा सो सुखसों सोवै है कहे साहबके बतावनवारे संतनहीं दुरैहैं जे आपने बाणीरूप जलसों माया ब्रह्म रूपी आगी बुतावै । सोवतै रहैहै औ यह कहै है कि, मैं सच्चिदानन्द हौं. सो मेरोघर जोहै सच्चिदानन्द सो कुशलहै यह नहीं जानै है कि. ये सब तो जरिही गये सो मैंहू जरिजाउँगो।एक माया ब्रह्मरूपी आगिही रहिजायगी । वही आगिमें तेरी कुरिया जोहै स्वस्वरूप ज्ञानकी सोऊ जरिजाइगी । अर्थात् जब ब्रह्मास्मि में सुषुप्ति होयगी तब मैं सच्चिदानन्द रूपहौं यहू ज्ञान न रहिजाइगो । याही ते तैं विकल है सो यह करु जाते तेरी वस्तुजो है साहब में नवधा भक्ति सो उबरै और और रंगमें लगिबो तेरो रंग नहीं है श्रीरामचन्द्रके रंगमें रँग यही तेरो रंग है ॥ ३ ॥

कुबिजा पुरुष गले यक लागी पूजि न मनकी साधा ।
करत विचार जन्मगो खीसा ई तन रहल असाधा ॥ ४ ॥

कुबिजा पुरुष कहे अंगभंग पुरुष जो वह ब्रह्म है नपुंसक ताको एकमानिकै कि, एक ब्रह्महीं है ताकेगले में, हे साहबकी जीवरूपाशक्ति ! तैं लागी सो जैसे नपुंसक पुरुषकेसंग स्त्रीकी साधनहीं पूजै है तैसै वह ब्रह्म में लगे तुम्हारी साध नहीं पूजै है कहे वामें आनंद नहीं मिलैहै । वही ब्रह्मको विचार करत जन्म खीस कहे वृथा जाइ है । तन कहे यह मनुष्य शरीर पाइकै असाध रहै है कहे साहबके मिलनको सुख नहीं पावै है ॥ ४ ॥

जानि बूझि जो कपट करतहै तेहि अस मंद न कोई ।
कह कबीर सब नारि रामकी मोते और न होई ॥ ५ ॥

सो जानि बूझिकै जे लोग कपट करै हैं कहे वह धोखा ब्रह्ममें लगे हैं तिन ऐसो मंद कहे मूढ कोई नहीं है । सो कबीरजी कहै हैं कि, जहांभर चित् शक्ति जीव हैं ते सब श्रीरामचन्द्रकी नारी हैं सो मैं जानौ हौं याते मोते और

पुरुष साहबै है सो जे परम पुरुष श्रीरामचन्द्र को छोड़ि और पुरुष करै हैं ते छिनारि हैं सो जो छिनारि हैं तिनके ऊपर संसार रूपी मार परोई चाहै । तामें व्यंग्य यहहै कि, जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको पति मानैं हैं तेई माया ब्रह्माग्नितें बचै हैं ॥ ५ ॥

इति अट्ठावनवां शब्द समाप्त ।

अथ उनसठवां शब्द ॥ ५९ ॥

माया महा ठगिनि हम जानी ।
तिरगुण फांस लिये कर डोलै बोलै मधुरी वानी ॥१॥
केशवके कमला ह्वै बैठी शिवके भवन भवानी ।
पंडाके मूरति ह्वै बैठी तीरथमें भइ पानी ॥ २ ॥
योगीके योगिनि ह्वै बैठी राजाके घर रानी ।
काहूके हीरा ह्वै बैठी काहूके कौड़ी कानी ॥ ३ ॥
भक्तनके भक्तिनि ह्वै बैठी ब्रह्माके ब्रह्मानी ।
कहै कबीर सुनो हो संतो यह सब अकथ कहानी ॥४॥

माया महा ठगिनि है हम जानी । यह माया माधुरी बानी बोलिकै त्रिगुण फांसते सब जीवनको बांधिलियो । औ सबके घरमें नानारूप करिकै बैठीहै; केशवके कमला ह्वैके बैठी है, औ शिवके भवनभवानी ह्वैकै बैठी है, औ पंडाके मूरति ह्वै बैठी है, औ तीरथमें पानी ह्वै रही है, औ योगीके घरमें योगिनि ह्वै बैठी है, औ राजाके रानी ह्वै बैठीहै, औ काहूके हीरा ह्वै बैठी है, औ काहूके कानी कौड़ी ह्वैकै बैठी है, औ ब्रह्माके ब्रह्मानी ह्वै बैठी है । सो कबीरजी कहै हैं कि, हे संतो ! सुनो यह सब मायाको चरित्र अकथ कहानी कहाँलौं वर्णन करैं यह माया सत् असत्‌ते विलक्षण है कहिबे लायक नहीं है अरु याको अंतनहीं है ॥ १-४ ॥

इति उनसठवां शब्द समाप्त ।

अथ साठवां शब्द ॥ ६० ॥

मायामोहहिमोहितकीन्हा । तातेज्ञानरतनहरिलीन्हा ॥१॥
जीवन ऐसो सपना जैसो जीवन सपन समाना ।
शब्द गुरु उपदेश दियो तैं छांड़्यो परम निधाना ॥ २ ॥
ज्योतिहि देखि पतंग हुलसै पशु नहिं पेखै आगी ।
काम क्रोध नर मुगुध परे हैं कनक कामिनी लागी ॥३॥
सय्यद शेख किताबें निरखै पंडित शास्त्र विचारै ।
सद्गुरुके उपदेश बिना तुम जानिकै जीवहि मारै ॥ ४ ॥
करौ विचार विकार परिहरौ तरन तारनै सोई ।
कहकवीर भगवंत भजन करु द्वितिया और न कोई॥५॥

मायामोहहिमोहितकीन्हा । तातेज्ञानरतन हरिलीन्हा॥१॥

पूर्व जो वर्णन करिआये सो माया जीवको मोहित करत भई । सांचमें असांचकी बुद्धि होय है या मोहको लक्षण है । सो यह आत्मा तो शरीरनते भिन्न सांच है ताको शरीरकी बुद्धि भई कि, शरीर मैं हौं, मनादिक मेरे हैं। यह असांच बुद्धि भई याहीते मायामें परिगयो। तब याको माया मोहते मोहित करिकै परम पुरुष पर श्रीरामचन्द्र हैं तिन को ज्ञान रतन जो रहै कि, मैं उनको अंशहौं, वे बड़े रतन हैं, मैं कनीहौं अल्पज्ञ हौं परन्तु जाति उन हींकी हौं, वे बिभु आनन्द हैं जैसे उनमें मनादिक नहीं हैं तैसे मैं जो उनको जानौं तौ महूँ मनादिक नहीं हौं यह जीवको ज्ञान रत्न माया हरिलीन्हो ॥ १ ॥

जीवन ऐसो सपना जैसो जीवन सपन समाना ।
शब्द गुरु उपदेश दियो तैं छांड़्यो परम निधाना॥२॥

यह जीवन ऐसो है स्वप्न है यहि शरीरते दूसरे शरीरमें गयो तब यह शरीर स्वप्न ह्वै गयो औ वह जीव स्वप्न जे संपूर्ण शरीर हैं तिनमें नहीं समान्यो

वहि शरीर ते भिन्न है काहेते मारिबो जीबो शरीरको धर्म है, सो अपने स्वरूपको नहीं जानै है स्वप्न समान जे शरीर हैं तिनको सांच मानिलियो है । गुरु कहे सबते गुरुपरमपुरुष पर जे श्रीरामचन्द्रहैं ते शब्द जो रामनाम ताको उपदेश दियो कि, तैं मेरो है सो मेरे पास आउ सो तौने शब्दमें परमनिधान कहे तिनके रहिबेको पात्र जो साहब मुख अर्थ है ताको शब्द छोड़ि दियो औ संसार मुख अर्थ करिकै संसारी ह्वैगयो ॥ २ ॥

ज्योतिहि देखि पतंग हूलसै पशु नाहिं पेखै आगी।
कामक्रोध नर मुगुध परेहैं कनक कामिनीलागी ॥३॥

जैसे दीपककी ज्योतिको देखिकै पतंग हूलसै कहे ज्योतिमें मिलिबेको जाय है परंतु वहै पशु जो है अज्ञानी पतंग सो नहीं देखै है कि, या आगी है यामें जरि जै हैं सो वहीं धसिकै जरि जाय है । तैसे काम क्रोधादिकनमें जीव मुगुध परे हैं या नहीं जानै हैं कि, यामें जरि जायँगे ॥ ३ ॥

सय्यद शेख किताव नीरखै पंडित शास्त्र विचारै ।
सद्गुरुके उपदेश विना तुम जानिकै जीवहि मारै ॥ ४ ॥

सो हे सय्यद शेखौ ! तुम किताब देखिकै नाना कर्म करौहौ औ हे पण्डितौ ! तुम नाना शास्त्र पुराण पढ़िकै सुनिकै नाना कर्म करौ हौ । सद्गुरुको उपदेश तौ तुम लियो नहीं असतगुरुन के पास जाइ जाइ उनहीं को उपदेश पाइकै जानि जानिकै तुम अपने जीव को मारौहौ कहे जनन मरण रूप दुःख देउहौ । साहब के जाननवारे जे हैं तिनके पास नहीं जाउहौ जे साहबको बताइदेइँ, औ जन्म मरण तुम्हारो छूटि जाइ या प्रकारते जानिकै आपनी आत्माको मारौ हौ तामें प्रमाण॥ "नृदेहमाद्यं सुलभं सुदुर्लभं लवं सुकल्पं गुरुकर्णधारम् । मयानुकूलेन नभस्वतेरितं पुमान्भवाब्धिं न तरेत्स आत्महा" ॥ इति श्रीभागवते ॥ ४ ॥

करौ विचार विकार परि हरौ तरन तारने सोई ।
**कह कबीर भगवन्त भजन करु द्वितिया और न कोई॥५

सो विचार करौ औ सम्पूर्ण जे विकार तिनको परिहरौ कहे छोड़ो। तरण तारण एक पुरुष पर श्रीरामचन्द्रही हैं । श्री कबीरजी कहे हैं कि, तिनहींको भजन करु, उनते और दूसरो तेरो छोड़ावन वारो नहीं है। इहां तरण तारण दुइ कह्यो, सो तरण जो है मुक्ति ह्वेबेकी इच्छा ताते तारणवारो कोई नहीं है वोई हैं । वही मुक्तिकी इच्छा करिकै कोई ब्रह्मज्ञान कोई आत्मज्ञान कोई दहरो पासनादिक नाना उपासना करिकै तरनको चाहै हैं परन्तु कोई तरै नहीं हैं, जब तरनकी चाह छूटिजाइहै तब मुक्ति होइहै। सो यह तरनकी इच्छाते एक परम पुरुष श्रीरामचन्द्रही तारिदेइहैं । अर्थात उनहींकी दीन मुक्ति दैजाइहै औरकी दीन मुक्ति नहीं दैजाइहै। जबभर तरनकी इच्छा होइहै तबभर मुक्ति नहीं होइहै तामें प्रमाण॥ "भुक्तिमुक्तिस्पृहायावत्पिशाची-हृदिवर्तते। तावद्भक्तिसुखस्पर्शःकथमभ्युदयो भवेत"॥इति भक्तिरसामृतसिन्धौ ॥

इति साठवां शब्द समाप्त।

अथ इकसठवां शब्द ॥ ६१ ॥

मरिहौ रे तन का लै करिहौ। प्राण छुटे बाहर लै धरिहौ॥१॥
काय बिगुरचन अनबनि बाटी। कोइ जारै कोइ गाड़ै माटी॥२॥
हिंदू लै जारै तुरुक लै गाड़ै। ई परपंच दुनौ घर छाड़ै॥ ३॥
कर्म फांस यम जाल पसारा। ज्यों धीमर मछरी गहि मारा॥४॥
राम बिना नर ह्वैहौ कैसा । बाट मांझ गोबरौरा जैसा॥ ५॥
कह कबीर पाछे पछितैहौ। या घरसों जब वा घर जैहौ॥६॥

मरिहौरे तन का लै करिहौ। प्राण छुटे बाहर लै धरिहौ॥१॥
काय बिगुरचन अनबनि बाटी। कोइ जारै कोइ गाड़ै माटी॥२॥

हे जीवो! तुम मरिहौ तौ फिर तन लेहौ तौनेको लैकै का करिहौ । का या तनते कियेहै का वा तनते करिहौ। जबप्राण छूटैगो तब बाहू शरीरको

लैकै बाहरै धरोगे ॥ १ ॥ सो या काया जो है ताको बिगुरचन कहे छूटैमें आनि आनि बाटि है काहेते कोई तो या कायाको जारैहै, औ कोई माटीमें गाड़ैहै, सो जो गाड़ैहै औ जारै है तिनको अब कहै हैं ॥ २ ॥

हिंदू लै जारै तुरुक लै गाड़ै। ई परपंच दुनौ घर छाड़ै॥ ३ ॥
कर्म फांस यम जाल पसारा।ज्यों धीमर मछरी गहि मारा॥४॥
राम बिना नर ह्वैहौ कैसा। बाट मांझ गोवरौरा जैसा ॥ ५ ॥

सो हिंदू जेहैं ते तो जारैहैं औ तुरक जेहैं ते गाड़ैहैं। सो ई दूनौ घरमें जो परपञ्च है ताको तू छाड़ै ॥ ३ ॥ संसारमें यमराज कर्म फांस रूपी जाल पसारिराख्योहै। जाही शरीरमें जीव जायहै तहैं मारि डारैहैं जैसे धीमर जौने डावरमें मछरी जायहै तौनेही डावरते खैंचिकै मारिडारै है। तब शरीरकी नाना बाटि होइहै भस्म होयहै कीरा होयहै विष्ठा होय जायहै ॥ ४ ॥ सो हे जीवो! बिना साहबके जाने तुम कैसे होउगे बाटमें जैसे गोबरौरा जोई आवै जाय सोई कचरि देइहै मरिजायहै ॥ ५ ॥

कह कबीर पाछे पछितैहौ। या घरसों जब वा घर जैहौ॥६॥

सो कबीरजी कहै हैं कि, जब या घरसों वा घर जाउगे अर्थात् जब यह शरीर ते दूसरो शरीर धरैगे, गर्भवास होइगो तब पछिताउगे। गर्भवासमें साहब की सुधि होइहै सो जब गर्भवासको क्लेश होइगो तब कहौगे कि, हे साहब अबकी बार जो छुड़ावो तौ फिर न ऐसे काम करैंगे। सो गर्भ स्तुति श्रीमद्भागवतादिकनमें प्रसिद्ध है। तेहिते यह व्यंग है कि, परम पुरुष पर श्रीरामचन्द्रको जानो ॥ ६ ॥

इति इकसठवां शब्द समाप्त।

अथ बासठवां शब्द ॥ ६२ ॥

माई मैं दूनौं कुल उजियारी।
बारह खसम नैहरे खायो सोरह खायो ससुरारी ॥ १ ॥
सासु ननँदि मिलि पटिया बांधल भसुरा परलो गारी।

जारों मांग मैं तासु नारिकी सरिवर रचल हमारी ॥ २ ॥
जना पांच कोखियामें राखौं औ राखौं दुइ चारी ।
पार परोसिनि करों कलेवा संगहि बुधि महतारी ॥ ३ ॥
सहजै बपुरी सेज बिछायो सूतल पाउँ पसारी ।
आउँ न जाउँ मरों ना जीवों साहब मेट्यो गारी ॥ ४ ॥
एक नाम मैं निजके गहिल्यो तौ छूटल संसारी ।
एक नाम मैं बदिकै लेखौ कहै कबीर पुकारी ॥ ५ ॥

माई मैं दूनौ कुल उजियारी ।
बारह खसम नैहरे खायो सोरह खायो ससुरारी ॥ १ ॥

चित् शक्ति कहै है कि, हे माई! कहे हे माया! मैं दूनौं कुल उजियार करनवारी हौं कहे मोहिंते जीव कुल उजियार हैं। **जीवछः प्रकारके है** १ मुक्त २ मुमुक्षु ३ विषयी ४ बद्ध ५ नित्यबद्ध ६ नित्यमुक्त। औ ब्रह्म कुल उजियारहै सब ईश्वर ब्रह्म कुलहीमें हैं याते ब्रह्मकुल कह्यो । मैहीं अनुभव करौहौं तब ब्रह्म होइहै औ मैहीं सब जीवकी चैतन्यता हौं सो बारह खसमको नैहरमें खायो । ते बारह खसम कौनहैं तिनको कहै हैं—अष्टप्रधान जे हैं काली, कौशिकी, विष्णु, शिव, ब्रह्मा, सूर्य, गणेश, भैरव, औ नवौं परमपुरुष जिनके ई आठौ प्रधान कहे मंत्री हैं । इनको महातंत्रमें वर्णन है । औ पांच ब्रह्म आदि मंगलमें वर्णन करिआये हैं तिन में रेफरूपा जो है सो मंत्ररूप है औ परा शक्ति है ताको शक्तिमान में अंतर्भाव है । औ शब्दब्रह्म प्रणवरूप है सो उपास्य देवता नहीं है, विचार करिबेलायकैहै। तेहिते पांचब्रह्ममें तीनि ब्रह्म उपासना करिबे लायक हैं सो अष्टप्रधान औ नवौं परमपुरुष औ तीनिब्रह्म मिलाइकै बारह उपास्य भये तेई खसम भये तिनको शुद्ध समष्टि जो है सोई नैहर है जहांते व्यष्टि होइहै । सो जहां समष्टि व्यष्टि भयो है तहां मैं इनको खाइलियो है कहे पेटमें डारिलियो है मोहिते भिन्ननहीं है औ जब मैं अहंब्रह्म बुद्धि करिकै ब्रह्ममें

अथ तिरसठवां शब्द ॥ ६३ ॥

मैं कासों कहौं को सुनै को पतिआय।
फुलवाके छुवत भवँर मरिजाय ॥ १ ॥
गगन मँडल विच फुल यक फूला।
तर भो डार उपर भो मूला ॥ २ ॥
जोतिये न वोइये सिंचिये न सोइ।
विन डार विना पात फूल यक होइ ॥३॥
फुल भल फुलल मालिनि भल गूँथल।
फुलवा विनाशि गयल भवँर निरासल ॥४ ॥
कह कवीर सुनो संतो भाई।
पंडित जन फुल रहे लुभाई ॥ ५ ॥

मैंकासों कहौंको सुनै को पतिआय।
फुलवाके छुवत भँवर मारिजाय ॥ १ ॥

कबीरजी कहे हैं कि, मैं जासों कहौं हौं सो तो सुनतई नहीं है औ जो सुन्यो तौ शंका कियो ताको समाधान करिदियो असांच निकारिडारयो सांचेको स्थापित कियो सो यद्यपि वाको जवाब नहीं चलै है तौ यह कहै है कि, यह जोलहाको कह्यो वेद शास्त्र को सार अर्थ विचार कैसे होइगो ताते कोई मोको पतिआय नहीं है येतो सब धोखामें अटके हैं मैं कासों कहौं को सुनै। कौन बात कहा हौं कि, वह धोखा ब्रह्म आकाशको फूल है ताके छुवतमें भवँर जोहै तिहारो जीवात्मा सो मारिजाय हैं कहे तुम नहीं रहिजाउहौ, वही धोखा ब्रह्मई रहिजाइहै वाके आगेकी बात तुमकैसे जानौगे याते तुम परमपुरुष परश्रीरामचन्द्रको जानो। वे जब अपनी इंद्री देइँगे तब वह ब्रह्मके ऊपरकी बात जानि परैगी। जौन हंसशरीर देइहै सो याके नित्य स्वरूपहै सो नित्य स्वरूपत

पाइकै ब्रह्म मायाके परे मन बचन के परे परम पुरुष पर श्रीरामचन्द्र हैं तिनको जानै है। सो मेरो कह्यो कोई नहीं मानै है वही धोखामें लगै है जो धोखाते जगत् होइहै कैसो होइ है कि ॥ १ ॥

गगनमँडल विच फुल यक फूला। तरभो डार उपर भोमूला॥२

गगन मंडल कहे लोक प्रकाश चैतन्याकाशमें एक फूल फूलत भयो कहे वह ब्रह्म माया सबलित होत भयो अर्थात् आकाश फल को मिथ्या कहै हैं सो वह मिथ्याही फूल भ्रमते फूलत भयो। जीवको भ्रम भयो ताके अनुमानते प्रकट ह्वै जात भयो। सो मूल तो वह ब्रह्म है सो ऊपर भयो औ तरे वाकी डारैं फूटत भई चौदहों लोक संसाररूप वृक्ष तयार भयो ॥ २ ॥

जोतिये न बोइये सिंचिये न सोइ।
बिन डार बिना पात फूल यक होइ ॥ ३ ॥
फूल भल फुलल मालिनि भल गूंथल।
फुलवा विनशि गयो भवँर निरासल ॥ ४ ॥

वह न जोति गयो न बोय गयो औ न सींचि गयो बिना डार पातहै ऐसो बिरवा चैतन्याकाश जो लोक प्रकाश है तामें धोखा ब्रह्मरूप फूल फूल्यो, ताहीते संसाररूप बिरवा तैयार भयो ॥ ३ ॥ तब मालिनि जो मायाहै सो भल गूंथत भई कहे फूल ब्रह्मको त्रिगुणात्मिका नाना वाणीसों खूब वर्णन करिकै वहीको आरोप करत भई। तब यहजीव सब छोड़िकै वही ब्रह्ममें नाना वाणी सुनिकै लग्यो सो जब वहां कुछ न पायो वह धोखही ह्वैगयो तब भवँर जो जीव सो निराश ह्वैगयो ॥ ४ ॥

कह कबीर सुनो संतो भाई। पंडित जन फुल रहे लोभाई ५

श्रीकबीर जी कहै हैं कि, हे संतो ! भाइउ सुनो वही ब्रह्मफूलमें पंडितजन जे हैं ते लोभाय रहे हैं। यह बिचार नहीं करैहैं कि, जगत्को तो हम मिथ्यई कहहैं औ वही ब्रह्मते जगत्की उत्पत्ति कहै हैं। सांचते सांच झूंठेते झूंठा होइहै सो वह ब्रह्मरूप फूल जो सांचो होतो तौ वासों झूंठा जगत कैसे उत्पन्न होतो।

औ वही ब्रह्म को निराकार अकर्त्ता निर्धर्मिक कहौ हौं कहो तो वह ब्रह्म को जान्यो कौन ? अरु वाको निर्वस्तु कहौ हौ कि, वह कुछु वस्तुनहीं है? देशकाल वस्तु परिच्छेदते शून्यहै कहो तो वह धोखई रहिगयो कि, कुछु वस्तु रहिगयो ! सो तिहारेही बातमें वह धोखा जान्यो परै है कि, कुछु नहीं है शून्यहै तेहितें परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्रमें लागौ जाते माया ब्रह्मके पार है उनहींके पास पहुंचौजाइ औ आवागमनते रहित ह्वैजाउ ॥ ५ ॥

इति तिरसठ शब्द समाप्त ।

अथ चौंसठवां शब्द ॥ ६४ ॥

जोलहा वीनेहु हो हरिनामा जाकेसुर नरमुनि धरैं ध्याना।
ताना तनैको अउठा लीन्हे चर्खीं चारिहु वेदा
सर खूटी यक राम नरायण पूरण कामहि माना ॥ १ ॥
भवसागर यक कठवत कीन्हों तामें माड़ी सानी
माड़ीको तन माड़ि रहो है माड़ी विरला जाना ।
त्रिभुवन नाथ जो मंजन लागे श्याम मुररिया दीना
चांद सूर्य दुइ गोड़ा कीन्हो मांझ दीप किय ताना ॥ २ ॥
पाई करिकै भरना लीन्हो वे बांधै को रामा
वे ये भरि तिहुं लोकै बांधै कोइ न रहै उवाना ।
तीन लोक एक करिगह कीन्हो दिगमग कीन्हो तानै
आदि पुरुष बैठावन बैठे कविरा ज्योति समाना ॥ ३ ॥

श्रीकबीरजी रामानंदके शिष्य हैं सो अपनी संप्रदाय बतावैहैं ॥

---

१ कबीर साहब रामानन्दके कैसे शिष्यहैं सोजाननेके हेतु—कबीरभानुप्रकाश, कबीर मन्शूर, रामानन्द गुष्टी और आत्मदासजीकृत कबीर सागर देखना चाहिये ।

जोलहा बीनेहु हो हरि नामा। जाके सुर नर मुनि धरैं ध्याना।
ताना तनैको अउठा लीन्हे चर्खी चारिहु वेदा
सरखूटी यक राम नरायण पूरण कामहि माना ॥ १ ॥

श्रीकबीरजी कहैहैं कि, जोलहा जो मैं हौं सो हरिके नामको बिनौ हौं । वे हरि कैसेहैं कि, जिनको सुर नर मुनि ध्यान धरै हैं । कौनी तरहते बिनौहौं सो उपाय कहौहौं । कोरिनके यहां ताना तनिबेको अउठाते नापिलेइहैं औ इहां अउठानो शरीरहै ताको साढ़े तीनिहाथको नापिलियो अथवा अंगुष्ठमात्र लिंगशरिरहै सो मनोमय है ताको मैं हरिनाम बिनिबेको धारणकियो है । नहीं तौ मैं मनके पर रह्यो हौं । औ कोरिनके इहां चर्खीते सूत खैंचिकै कैंड़ा कारि लेइहैं, औ इहां चारो वेद जे हैं तेई चर्खी हैं तिनके तात्पर्यते आत्माको स्वरूप "कि तैं परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्रको है" यहीसूत जीवात्माको निकास्यो । औ कोरिनके इहां सर औ खूटीते तानाको पूरैहैं अरु इहां श्री इहां बैष्णवहै रूपके मंत्र पांवैहै रघुनाथजीको षट्क्षर और नारायणको द्व्यक्षर औ अष्टाक्षर सो सर खूटी• राम औ नारायण ये नामहैं । एकनामको सरबनायो एक नामको खूटी बनायो इनहींको नामलिये हरिनामरूपी कपरा बिनिबे को मैं अधिकारी भयो । यह मैं मान्यो कि, मैं पूरिदेहौं रामनाम दुइ खूंटी हैं नारायण नामसर है ॥ १ ॥

भव सागर यक कठवत कीन्हो तामें माड़ी सानी ।
माड़ीको तन माड़ि रहोहै माड़ो बिरला जाना ।
त्रिभुवन नाथ जो मंजन लागे श्याम मुररिया दीना ।
चाँद सूर्य्य दुइ गोड़ाकीन्हो मांझदीप किय ताना ॥ २ ॥

कोरिनके इहां माड़ी सानी जाइहै तब एक कठौतामें धरै हैं सो इहां भवसागर कठौताहै औ चारों शरीर माड़ी हैं तामें जीव सूतसनो है इहां साधन अवस्थामें चारों शरीरमें वह नामको भावनाकरिकै जो जपिबो है मुमुक्षुदशामें सोई सानिबो है सो नाम उच्चारणकी बिधि कोई बिरला जानै है सो रामानुजाचार्य आपने राममंत्रार्थमें लिख्यो है यह नाम स्मरणको शरीर धारण कियो सो

जब नामस्मरण न कियो सोई शरीर रूपी माड़ी याके माड़ि रह्योहै कहे लपटि रही है औ कोरिनके जब वाको मांजे हैं तब मांडी सम ह्वैजाइहै औ मैल छूटि जाइहै। औ इहां त्रिभुवननाथ जो मनहै सो रेचक कुंभक पूरक जे कूचाहैं तिनमें मांजनलग्यो कहे नामको जपनलग्यो औ जीवको माड़ी जोहै चारो शरीर तिनको सम कै दियो कहे एक करिदियो औ । कोरिनके मांजत में जब तागा टूटि जाइहै तौनेको मुरेरिकै जोरि देइहै सो मुररिया कहावैहै इहां नामके स्मरण में जब बीचपरै है तब कहीं श्याम कहीं गोपाल कहीं कृष्ण इत्यादिक नाम लैकै धागा जोरिदेइहै। औ कोरिनके दुइगोडा कहे दुइ घोरियाके बीचमें ताना तनैहैं औ इहां चांद सूर्य जे इड़ा पिंगला तिनके बीचमें दीप जौ सुषुम्णा नाड़ी है ताको ताना कियो। ताना वाको काहेते कह्यो कि, वह साहबके लोकते लै मूलाधारचक्र लौं रश्मिरूप तनी है जीवही सुषुम्णा नाड़ी ह्वै भक्तन को जी उतरै चढ़ै है ॥२॥

पाई करिकै भरना लीन्हो वे बांधै को रामा
वे ये भरितिहुँ लोकै बांधै कोइ न रहै उबाना ।
तीन लोक यक करिगह कीन्हो दिगमग कीन्हो तानै
आदि पुरुष वैठावन वैठे कविरा ज्योति समाना ॥ ३॥

कोरिनके इहां पाई साफ करिबेको कहै हैं औ कमठिनके बीचते सूत निकासी लेइहै सो भरना कहावै है सो इहां चारो शरीर माडी मांजिकै कहे चारयो शरीर छोड़ायकै जीवको साफ कारि कै कहे सूक्ष्म बिचारते जीव को स्वरूप निकस्यो कि, रामहीको है औरेको नहीं है औ कोरीनके राक्षकी जो कमठी ताके छिद्र ह्वै सब सूतको निकासीलेई है औ दुइ सूत बांधिदेइह सो वे कहावैहैं औ तीनि फेरी कारिकै सूतको गांसि देई है सो तिलोक कहावै है। औ उबान वह कहावैहै जो बाहर सूत रहिजाइहै सो उबान न रहिगयो सो इहां दोनों कुंभकमें राम जे दुइबर्ण हैं रकार मकार तिनको बांधि दियो । बहिरे जब श्वास जाइहै तब जहांते थँभिकै लौटै है सो कुंभक कहावै है तहां रकार जपै है तब सूर्यके प्रकाशको भावनाकरै है औ जब भीतर श्वास जाइहै औ थँभिकै लौटै है तहां मकार जपै है तब चन्द्रमाको प्रकाशको भावना करै है

सो जौन साधारण श्वास चलैहै नासिकाते बारह आंगुर भीतर जायहै बारह आंगुर बाहर जायहै जहां जहांते थँभि थँभिकै लौटै है तहां रकार मकार को जपिकै वे आंगुरनको घटाइ बूझे दूनों कुंभकनको घटावनलगै इसतरहते वे जो हैं श्वास ताके बांधतमें जब श्वासके क्रमते घटाइकै तिहुँलोकै बांधै कहे त्रिकुटीमें बांधिदेइ अर्थात् एक आंगुर भीतर जानपावै न एक आंगुर बाहर जानपावै औ एक आंगुर बीचमें राखै सो यहि तरहते जो कोई करै है सोई उबान नहीं रहै है कहै संकल्प विकल्प मिटि जाइहै जपकरतमें काहेको उबैगो ताको रामनामही तीनों लोक देख परे है वोत बाहर नहीं देखपरै है। जहां कोरी बीननको बैठे है सो कारिगह कहावै है जब कपरा बीनि चुके तब तहां तीनि घरी करिकै कपरा धरि देइहै औ तानाको दिगमग कहे जहां तहां डारिदेइहै इहां तीनि लोकमें फैली जो जीवकी वृत्ति है ताको जहां अपने स्वरूपमें आत्माकी स्थिति है तहां कैवल्यमें राख्यो । तीनि आंगुर श्वासा करिकै जो स्मरण करतरह्यो सो मन पवनको एक घर कै दियो तब संकल्प विकल्प सब मिटिगयो यह ताना शरीरमें तन्यो रह्यो ताको दिगमग कियो कहे पृथ्वीको अंश पृथ्वीमें जलको अंश जलमे तेजको अंश तेजमें वायुको अंश वायुमें आकाशको अंश आकाशमें मिलाइदियो ये पंच भये औ मनको बुद्धिमें बुद्धिको चित्तमें चित्तको अहंकारमें अहंकार को जीवात्मामें मिलाइदियो ये पांचभये ये सबताना दशौ दिशा में फैलाइ दियो तब याको सुधि भूलिगई एक जीवात्माभर रहिगयो औ जब कपरा तैय्यार ह्वैजाइहै तब कोरीके यहां मालिक को पयादा आवै है तब पयादाके साथ मालिकके यहां कपरा कोरी लैजाइहै औ यहां आदिपुरुष जे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्रहैं ते बैठावन देइ हैं कहे याको हंसस्वरूप देइहैं सोई पयादाहै ताके साथ ह्वैकै कहे तामें स्थितह्वैकै कबीर जो मैंहौं सो वह जोहै कैवल्यरूप ताते छूटि कै पार्षदरूप पाइकै परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्रके लोकको प्रकाशरूप जोहै ब्रह्म तौने ज्योतिमें समाइकै कहे वाको भेद परम पुरुष पर श्रीरामचन्द्रके धामको गयो भाव यह है जैसे कोरी थान मालिक के नजर कैदेइहै तैसे अपने आत्माको शुद्ध करिकै परम पुरुष पर श्री रामच-

न्द्रको अरपि दीन्ह्योजाइ ज्योति भेदिकै साहबमें समाइगयो तामें प्रमाण ॥ "तज्ज्योतिर्भेदने सक्ता रसिका हरिवेदिनः॥"इति॥औ श्रीकबीरहूजीको प्रमाण॥ "जैसे माया मन रमै तैसे राम रमाय । तारामंडल भेदिकै तबै अमरपुर जाय"॥ ३॥

इति चौंसठवां शब्द समाप्त ।

अथ पैंसठवां शब्द ॥ ६५ ॥

योगिया फिरिगयोनगरमँझारी।जायसमान पांचजहँनारी १
गये देशांतर कोइ न बतावै।योगिया गुफा बहुरि नहिं आवै२
जरि गो कंथ ध्वजागो टूटी।भजिगो दंड खपरगो फूटी॥३॥
कह कबीर यह कलिहै खोटी।जोरह करवा निकसल टोंटी४

योगियाफिरिगयो नगरमँझारी।जाय समानपांचजहँनारी १

जौने ब्रह्मांडमें पांचनारी जे बयारि हैं नाग कूर्म कृकल देवदत्त धनंजय ई जिनमें समाइहैं ऐसे प्राण अपान व्यान उदान समानते जामें समाइगयेहैं तौन जोहै नगर ब्रह्मांड ताके मांझते योगिया जो है योगी सो फिरिजाइहै कहे फिरिफिरि ब्रह्मांडको प्राण चढ़ाइ लैजाइहै ॥ १ ॥

गये देशांतर कोइ नबतावै।योगिया बहुरि गुफानहिं आवै २
जरिगो कंथ ध्वजागो टूटी।भजिगा दंड खपरगो फूटी॥३॥

जब वह योगी शरीर छोड़्यो तब कोई नहीं बतावै है कि कौन देशांतर को गयो कौने लोकको गयो काहेते कि कौन्यो लोक को तौ मानतै नहीं है तेहिते यही शरीर पुनि पावैहै तब वह योगकी सुधि बिसरि जाइहै पुनि नहीं गुफामें आवैहै कहे पुनि नहीं प्राण चढ़ावत बनै है॥ २॥ कंथजोहै शरीररूपी गुदरी सो जरिगयो तब ध्वजा जो है पवन तौनेकी धारा टूटिगई तब मेरुदंड भंजित ह्वैगयो कहे टूटिगयो औ खप्परजो है ब्रह्मांडकी खपरी सो फूटिगई ॥ ३॥

कह कबीर यह कलिहै खोटी।जोरह करवा निकसलटोंटी४

श्रीकबीरजी कहे हैं कि यह कलि बड़ो खोटहै अथवा यह कलि जो है झगड़ा सो बड़ो खोटहै यह कोई नहीं बिचारै है कि जब शरीरही नहीं गयो

तब ब्रह्मांड कहां रहिगयो जहां ब्रह्मांडमें लीनह्वैकै बनो रह्यो सो यह बात ऐसी है कि, जे ब्रह्मांडमें प्राण चढ़ावै हैं तिनके जब शरीर छूटिजायहैं तब उनक गैवगुफा सब भरिजायँहैं तब गैवगुफा रूपी करवामें जो प्राण चढ़ो रहैहै सो जब दूसर शरीर धरयो तब नासिका जो है टोटी तहांते वहै पवन निकसैहै वही बासना लगी रहैहै तेहिते फिरि गुरुसों पूछिकै अभ्यास करनलगै है ॥ ४ ॥

इति पैंसठवां शब्द समाप्त ।

अथ छाछठवां शब्द ॥ ६६ ॥

योगिया कि नगरी वसै मतिकोइ।जोरेवसै सो योगिया होइ १
वह योगियाको उलटाज्ञाना । काराचोला नाहीं म्याना२॥
प्रकट सो कंथा गुप्ताधारी । तामें मूल सजीवनि भारी॥३॥
वा योगियाकी युगुति जो बूझै।रामरमै सो त्रिभुवन सूझै॥४॥
अमृत वेली क्षण क्षण पीवै। कहकबीर सो युग युग जीवै॥५॥

योगिया कि नगरी वसै मति कोइ।जोरे वसै सो योगिया होइ

योगिया जो है योगी ताकी नगरी जो है ब्रह्मांड गैवगुफा तहां कोई न बसौ अर्थात् हठयोग कोई न करो काहेते कि, जो कोई वह नगरीमें बसै है अर्थात् हठयोग करै है सो योगियै होइहै कहे फिरि फिरि वही बासना करिकै योगिया होइहै योग साधे है जन्म मरण नहीं छूटै है ॥ १ ॥

वह योगिया को उलटा ज्ञाना।कारा चोला नाहीं म्याना २

सो वह योगी को उलटा ज्ञान है कहे उलटे पवन चढ़ावै है अर्थात् या शरीर को वेदांत शास्त्रमें निषेध करै है कि, यही शरीर ते आत्मा भिन्नहै तौनेही शरीरको योगी प्रधान मानै हैं कि यही शरीर ते मुक्त ह्वैजायँगे सो इनको चोला जो है मन जौनेते शरीर पावै है औ मनै गैवगुफामें समाइ जाइ है नाना प्रकारके जे कुत्सित कर्म हैं तिनते मलीन ह्वै रह्यो है याते

ताको काराकह्यो औ म्याना छोटा को फ़ारसी में कहै हैं सो वह मन छोटा नहीं है बड़ो है सब संसार अरु चारों शरीर मनमें भराहै ॥ २ ॥

प्रकट सो कंथा गुप्ताधारी । तामें मूल सजीवनि भारी ॥ ३॥

अरु जो बहुत योग करिकै ब्रह्मांडमें प्राण चढ़ाइकै प्राणको गुप्तकियो है सो प्रकटै है ते वे योगी कंथाजो है शरीर ताको धारण किये रहै हैं बहुत दिन जियै हैं ताको हेतु यहहै कि, मूल सजीवनि अमृतहै सो भारी कहे बहुतहै सो चुवत रहै है जैसे संजीवनी औषधि महाप्रलय भये नहीं रहि जाइहै सो याको वह जियावै है सोऊ नहीं रहिजायहै तैसे जो कोई मूड़ काटि डारचो अथवा कोई शरीर को खाइलियो तब नं वह अमृत रहिजाइ न वे रहिजाइँ ॥ ३ ॥

वा योगिया की युगुति जो बूझै । राम रमै सो त्रिभुवन सूझै४
अमृत वेली क्षण क्षण पीवै। कह कबीर सो युग युग जीवै५

सो ये जो हैं योगी ते युगुति करिकै जियै हैं आखिरमें इनको जन्म मरण नहीं छूटै सो या जोगियाको हठयोग छोड़िकै जो कोई वा योगी की युगुति बूझै जे राजयोग करनवारे हैं सो रामरमै तब वाको त्रिभुवनमें रामई सूझिपरै॥ ४॥ अरु श्री कबीरजी कहै हैं कि, अमृतबेलि जो है रामनाम ताको क्षण क्षण में पिये कहे श्वास श्वास में राम नाम स्मरण करै है सोई हनुमान् बिभीषणा- दिक के तरह युगयुग जियै है औ जनन मरणते रहित ह्वैजाइहै ॥ ५ ॥

इति छाछठवां शब्द समाप्त ।

अथ सरसठवां शब्द ॥ ६७ ॥

जोपै वीजरूप भगवाना । तौ पंडित का बूझौ आना॥१॥
कहँमन कहां बुद्धि ओंकारा।रज सत तम गुण तीनि प्रकारा२
विष अमृत फल फलै अनेका।बहुधा वेद कहै तरबेका ॥३॥
कह कबीर ते मैं का जानो । कोधौं छूटल को अरुझानो॥४॥

जो आगे कहिआये कि जो कोई रामनाम लेइहै सोई जनन मरणते रहित होइहै सो कहै हैं ॥

जोपै बीज रूप भगवाना। तौ पण्डित का बूझौ आना॥१॥
कहँमन कहां बुद्धि ओंकारा।रज सत तम गुण तीनि प्रकारा२

बीज जो है रामनाम सो भगवान्है जनन मरण छोड़ाइ देबेको तौ हे पंडित तुम आनआन जगत् कारण ब्रह्म ईश्वर प्रकृति पुरुष काल शब्द परमाणु इत्यादिक काहे खोजत फिरौ हौ यह नामही जगतमुख अर्थ करि जगत्को कारणहै ॥ १ ॥ सो रामनामै जो सबको बीज ठहरचो तो मनको बुद्धिको प्रणवको कारण कहां रह्यो एते सत रज तम जे गुण हैं तिनके तीनि २ प्रकार ह्वैकै जगत् कियो है प्रथम मन बुद्धि ओंकार कहां रहे कोई नहीं रहे भाव यहहै कि प्रथम साहबको सुरति पायकै रामनाम को जगतमुख अर्थ करिकै जीव समष्टि ते व्यष्टि ह्वैकै संसारी भयो है तवहीं ये सब भये हैं ॥ २ ॥

विष अमृत फल फूल अनेका। बहुधा वेद कहै तरवेका ३

कोई सतोगुणी रजोगुणी तमोगुणी उपासनातें विष अमृत अनेक फल फलत भये कहें नाना दुःख सुख जीव पावत भये कोई ये देवतन की उपासना करिकै उनके लोक जाइकै सुख पायो औ कोई विषय आदिक करिकै दुःख पायो येई वे गुणन में फल फलेहैं सो सबके फल स्तुति बहुधा वेद तारिबे को लिख्योहै ॥ "शीतले त्वं जगन्माता शीतले त्वं जगत्पिता। शीतले त्वं जगद्धात्री शीतलायै नमो नमः" ॥ इत्यादिक सब ॥ ३ ॥

कह कबीरते मैं का जानो। को धौं छूटल को अरुझानो४

सो कबीरजी कहैहैं कि वेद तो फलस्तुतिमें तारिबे को कहै हैं कछू साच नहीं कहैहैं ये सब जीव आपनी आपनी उपासना में लगे कहै हैं कि हम मुक्त ह्वै जाइँगे सो सब उपासना सतोगुण रजोगुण तमोगुण ये तीन गुणमयहैं सो मैं कहाजानों को बद्धहै को छूटहै तुमहीं बिचार करि लेउ कि हमारी उपासना मायाके भीतर है कि माया के बाहिरे है अर्थात वेद में यह दिखायो कि सबको

मूल रकार बीजहै जो सबको परम कारण है सबते पर है सो याही राम नामको जो कोई साहबमुख अर्थ करिकै जपैगो सोई परम पुरुष पर श्रीरामचन्द्र के पास जाइगो और नहीं तरैहैं ॥ ५ ॥

इति सरसठवां शब्द समाप्त ।

अथ अड़सठवां शब्द ॥ ६८ ॥

जो चरखा जरिजाय बढ़ैया ना मरै ।
मैं कातौं सूत हजार चरुखला ना जरै ॥ १ ॥
बाबा ब्याह करायेद अच्छा वर हित काह ।
अच्छा वर जो ना मिलै तुमहीं मोहिं बिवाह ॥ २ ॥
प्रथमै नगर पहुंचतै परिगो शोक सँताप ।
एक अचंभौ हौं देखा बेटी ब्याहै बाप ॥ ३ ॥
समधी के घर समधी आया आये बहूके भाइ ।
गोड़ चुल्हौने दैरहे चरखा दियो डढाइ ॥ ४ ॥
देवलोक मरि जाहिंगे एक न मरै बढ़ाय ।
यह मन रंजन कारने चरखा दियो दृढ़ाय ॥ ५ ॥
कह कबीर संतो सुनो चरखा लखै न कोइ ।
जाको चरखा लखिपरो आवा गमन न होइ ॥ ६ ॥

नाना उपासना में लगे जीव संसारते नहीं छूटैहैं सो काहेते नहीं छूटै हैं सोकहैहैं ॥

जो चरखा जरिजाय बढ़ैया ना मरै ।
मैं कातौं सूत हजार चरुखला ना जरै ॥ १ ॥

बाबा ब्याह करायदे अच्छा वर हित काह ।
अच्छा वर जो ना मिलै तुमहीं मोहिं विवाह ॥ २ ॥

यह स्थूल शरीर चरखाहै सो जरिजायहै कहे छूटि जायहै औ बढ़ैया जो मनहै सो नहीं मरै है वह चरखा शरीर गढ़ि लेइ है कहे बनाइ लेइहै सो जीव कैहहैं कि, मैं हजार सूत कातौहों कहे कर्म छूटनेके लिये बहुत उपाय करौहौं बहुत उपासना बहुत ज्ञान इनहीं शरीरनते करौहौं परन्तु चरखला जे चारो शरीर हैं ते नहीं जरै हैं ॥ १ ॥ जीव गुरुवन के इहां जाइकै कैहहै कि हे बाबा गुरूजी! अच्छा वर हित करनवारो तो है तासों ब्याह कराय देउ अर्थात हित करन वारो जो अच्छी देवताकी उपासना कराइदेइ अरु आछो देवता जो तुम्हैं न मिलै कहे मुक्ति करि देनवारो देवता जो तुम्हैं न मिलै तौ तुमहीं मोको बिवाहौ कहे-ज्ञान उपदेश करिकै अपनो मेरो जो भेद है ताको मेटवाइदेउ ॥ २ ॥

प्रथमै नगर पहुंचते परिगो शोक सँताप ।
एक अचंभौ हौं देखा वेटी ब्याहै वाप ॥ ३ ॥

प्रथम साधन बतायो गुरुवालोग कि, ईश्वरकी उपासना करौ जामें अभेद ज्ञान होय सो प्रथम नगर पहुंचते कहे जब गुरुवा देवताकी उपासना बताइ-दियो ताही प्रथमही शोक संताप परिगयो कहे तौने देवताको बिरह भयो सो जरन लग्यो अरु दूसरो ज्ञान उपदेश जो मांग्यो तामें बड़ो आश्चर्य भयो कि, बेटी बापको बिवाह्यो । जब उन उपदेश कियो कि तुमहीं ब्रह्महौ तुमहीं सर्वत्र पूर्ण हौ सो जीवतौ कबहू ब्रह्म होतई नहीं है सो ब्रह्मतो न भयो औ न वामे ब्रह्मके लक्षण आय भयो कहा कि आपने को ब्रह्म मानि कर्म धर्म सब छोड़ि-दियो सो ज्ञान अज्ञान जीवही को होइ है सो माया जीवहीते भई है सोई बेटी है सो बाप जीवको बिवाहि लियो कहे बांधि लियो ॥ ३ ॥

समधी के घर लमधीआयो आयो बहू को भाइ ।
गोड़ चुल्हौनै दै रहे चरखा दियो डढाइ ॥ ४ ॥

जीवको ब्याही माया जो होइहै सो मनते होइहै सो मन ससुर भयो अरु शुद्धते अशुद्धभयो सो अशुद्ध जीवको बाप शुद्ध जीव ठहरयो सोई समधी ठहरयो तौने जीवके घरमें समधी जो है मन को भाईचित्त सो आयो नाना स्मरण देवायो तबहूं जो माया है ताको भाई काल आयो । चूल्हा जो है तामें दुई पल्ला होइहैं सो पुण्य पाप जेहैं ते दूनों पल्लाहैं तौने चूल्हामें गोड़ दैकै चरखा जो शरीर है तिनको डडाइदीन्ह्यो कहे लाइदियो काहूको पुण्य करायकै काहू को पाप करायकै शरीर खाइलीन्ह्यो ॥ ४ ॥

देवलोक मरि जाहिंगे एक न मरै बढ़ाय ।
यह मन रंजन कारने चरखा दियो दृढ़ाय ॥ ५ ॥
कह कवीर संतौ सुनौ चरखा लखै न कोइ ।
जाको चरखा लखि परो आवा गवन न होइ ॥ ६ ॥

देवलोक को नरलोक को सबको काल खाइलेइहै यह बढ़या जो मनहै सोनहीं मारो मरै है औ जब वह चरखा टूटैहै तब बढ़ही बनाइ देइहै ऐसे वह बढ़ई जो मन सो कालके रंजन करिबे को शरीर रूपी चरखा को दृढ़ करत जाइहै नाना शरीर कालको खवावत जाय है ॥ ५ ॥ श्रीकबीरजी कहै हैं कि, चरखा जे चारो शरीरहैं तिनको कोई नहीं लखै है जाको चारो शरीर लखिपरे अरु पांचौशरीर कैवल्य में प्राप्त भयो कहे केवल चितमात्र रहिगयो तब वह चरखाको गढ़ैया जो मनहै तेहिते जीव भिन्न ह्वैगयो तब अठवों अंश स्वरूप साहब देइहै तामें स्थित ह्वैकै साहबके लोकको जाइहै आवा गमन नहीं होइ है ॥ ६ ॥

इति अरसठवां शब्द समाप्त ।

अथ उनहत्तरवां शब्द ॥ ६९ ॥

यंत्री यंत्र अनूपम बाजै । वाके अष्ट गगन मुख गाजै ॥१॥
तूही गाजै तूही बाजै तुही लिये कर डोलै ।

एक शब्द में राग छत्तिसौ अनहद बाणी बोलै ॥ २ ॥
मुखको नाल श्रवणके तुम्बा सतगुरु साज बनाया ।
जिह्वा तार नासिका चरही माया मोम लगाया ॥ ३ ॥
गगन मँडल मा भा उजियारा उलटा फेर लगाया ।
कहै कबीर जन भये विवेकी जिन यंत्री मन लाया ॥ ४ ॥

यंत्री यंत्र अनूपम बाजे । बाके अष्ट गगन मुख गाजे ॥१॥

यंत्री जो है जीव ताको यंत्र जो शरीर है सो अनूपम बीन बाजै है बीनमें सात स्वर बाजेहैं अरु आठवों जीवके तारमें दीपको स्वर बाजै है औ इहां यह शरीरमें सात चक्रहैं सहस्तारलों तिनके बीच बीचको जो है आकाश ये सात गगन भये अरु आठवों सहस्तार के ऊपर को जो आकाश तामें सुरपति कमलमें बैठो जो गुरुनाम बतावै है सो वह आठवां गगनमें जाइकै गाज्यों कहें रामनाम सुनिकै लेन लग्यो सो इहां सुषुम्णा जो नाड़ी सोई तार है मूलाधार चक्रसुरति कमल येई तुम्बा हैं ॥ १ ॥

**तूही गाजै तूही बाजै तुही लिये करडोलै ।
एक शब्द में राग छत्तिसौ अनहद बाणी बोलै॥२॥**

सो या बीणाको तुही गाजै कहै सुरति कमलमें तुही नाम लेइ है औ तुहीं बाजै कहे तुही सुरति बोलै है औ तुही सुरतिको लैकै डोलै है कहे तुहीं सुषम्णा ह्वै चढ़िजाइहै अर्थात् शरीरको मालिक तुही है औ बीणामें छत्तिस राग बोलै है। औ इहां एक शब्द जो है राम नाम तामें चौंतिस बर्ण औ पैंतीसौनाद औ छत्तिसौबिंदु ई सब हैं बिंदुते आकारादिक स्वर आइगये वही अनहद है कहे वहीको हद नहीं है तौने रामनाम रूपी बाणी सुरति कमलमें गुरु बोलै है सो तहीं जपैहै या अंतर बीणा बतायो सो जानु अब बाहर को बीणा बतावै हैं ॥ २ ॥

मुखको नाल श्रवणके तुम्वा सतगुरु साज बनाया ।
जिह्वा तार नासिका चरही माया मोम लगाया ॥ ३ ॥

बीणाके बीचमें डांड़ीहै यहां मुखै नाल डांड़ा है बीणामें दुइतुम्बा लगैहैं यहां दूनों जे श्रवणहैं तेई तुम्बाहैं बीणाको स्वर मिलावै हैं औ यहां सतगुरु जेहैं ते साज बनाइ जीवनको उपदेश करै हैं औ वहा बीणामें तार लागै है अरु यहां जीभ जो है सोई तार है औ बीणामें चरही कहे सार लागैहै औ यहां नासिका चरही कहे सारहै सारमें मोम जमाया जाइ है यहां माया जो है गुरूकी कृपा माया "दम्भे कृपायां च॥" सोई मोम जमायो जैसे बीणा में जौन स्वर बनावै तौन बाजै है तैसे सुरति कमलते गुरू जो राम नामको उपदेश कियो सोई जीभते जपै है ॥ ३ ॥

गगन मँडल मा भा उजियारा उलटा फेर लगाया ।
कह कबीर जन भये बिवेकी जिन यंत्री मन लाया॥४॥

बीणा जब सुरते बाजै है तब सब रागनको उजियारा ह्वै जाइहै औ आछो लगैहै सबराग जानि जाइहैं और दूसरे पक्षमें जीवको उलटो ज्ञान जगत्मुख ह्वैगयो तैं ब्रह्ममुख ह्वैगयो तैं औ आत्मामुख ह्वैगयो तैं कि महीं ब्रह्महौं ताकों नाना शब्दमें समुझाइकै अठयें गगनमें जीवको साहब मुख करतभये तब जीव-को ज्ञान ह्वैगयो सब धोखा छोड़िकै साहव में लग्यो जगत्मुख रह्यो सो उलटा रह्यो ताको सीधेमें गुरुवालोग फेरि लैआये औ लगायो । पाठ होइतो साहबमें लगावत भये श्रीकबीरजी कहैहैं कि, यंत्री जो है बीणाकार उस्ताद तौनेते जो बीन बजावै मन लगाय सीखैहै तौ वाको सुरनको रागनको वे व्यौरा आइ जाइहैं ऐसे सुरति कमलमें बैठे जे हैं परमगुरु जे राम नामको उपदेश करै हैं तिनसोंजो कोई यंत्री जीवात्मा मन लगावै है सो बिबेकी होइहै कहे जगत् को असांच जानिकै सांच साहव में लगि जाइहै ॥ ४ ॥

इति उनहत्तरवां शब्द समाप्त ।

अथ सत्तरवां शब्द ॥ ७० ॥

जसमास नरकी तसमास पशुकी रुधिररुधिर यकसाराजी ।
पशुकी मास भखै सबकोई नरहि न भखै सियाराजी ॥१॥
ब्रह्मकुलाल मेदिनी भरिया उपाजि विनाशि कित गइयाजी ।
मास मछरिया जोपै खैया जो खेतानि में बोइयाजी ॥ २ ॥
माटीको करि देई देवा जीव काटि काटि दइयाजी ।
जो तेरा है सांचा देवा खेत चरत किन लेइयाजी ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनोहो संतो रामनाम नित लैयाजी ।
जो कछुकियो जिह्वाके स्वारथ वदल परारा दैयाजी ॥४॥

जसमासनरकी तसमासपशुकी रुधिररुधिरयकसाराजी ।
पशुको मास भखै सबकोई नरहि न भखै सियाराजी॥१॥

जस नरकी मास होइ है तस पशुकी मास होइ है अरु रुधिर भी एक तरह होइ है परंतु पशुके मासको जे भक्षण करै हैं ते सियारई हैं सो वे मनुष्यते औ सियारते यतनै भेद है कि, सियार मनुष्यको मांस खाइ है अरु नरपशु की मांस खाइ है मनुष्यको मांस पशु नहीं खाइ है सो कहै हैं कि, रुधिर मांस तो सब एकई तरह है नर की मांस काहे नहीं खाय हैं ॥ १ ॥

ब्रह्म कुलाल मेदिनी भरिया उपाजि विनाशि कित गइयाजी ।
मास मछरिया जोपै खैया जो खेतानि में बोइयाजी ॥ २ ॥

जौनेते सब पृथ्वी जगत् भयो है ऐसो जो है ब्रह्म कुलाल जो कुम्हार औ सर्वत्र जगत में भरे रहा अर्थात् सब वस्तु ब्रह्मई रह्यो तौ यह सब पृथ्वी उपजी औ बिनशिकै कहांगई सो एक ब्रह्महीं सर्व मानिकै जो मास मछरी खाउ कि सब तो एकई है जो मन चलैगो सो करेंगे नरक स्वर्ग कर्म सब

मिथ्या हैं ऐसो जो मानौगे तौ जो खेतमें बोवनको होइ है सो तुम मुर्दे पशु की मासकी मास खाउ हौ अरु वे तुम्हारे जीतही यमपुरमें मांस खाइँगे जो कहौ हम देवताको बलि चढ़ाइकै खाइ हैं तौनेपर कहै हैं ॥ २ ॥

माटीको करि देई देवा जीव काटि कटि देइयाजी ।
जो तेराहै सांचा देवा खेत चरत किन लेइयाजी ॥ ३ ॥

माटिको तौ देवता बनाओहौ उसके आगे जीव काटि काटि कै राखौहौ यह कैसी गाफिली तुमको घेरी है जो माटीको देवता सांच है तो जब बोकरी खेतमें चरती है तब तुम्हारा देवता काहे नहीं खाता क्या देवताको किसीका डर है भाव यह है कि, तुम काहेको हत्यारी लेतेहो अंगुरिआयदेउ जो सांचा होयगो तौ खाइगो तेहिते तुम्हारी देवता मिथ्या है खेतमें चरत बोकरीको न खाइ सकैगो ॥ ३ ॥

कहै कबीर सुनोहो संतौ रामनाम नित लैयाजी ।
जो कछु कियो जिह्वाके स्वारथ बदल पराया दैयाजी४॥

सो कबीरजी कहै हैं कि, जिनके जिनके गलाको तुम काटतेहौ ते सब तुम्हारो नरकमें गला काटेंगे तेहिते रामनामको नितलेउ भाव यह है जब नामापराध छोड़ि रामनाम लेउगे और फिरि पातक न करौगे तबहीं तुम्हारे पातक जाइंगे तामें प्रमाण ॥ " हरिर्हरति पापानि दुष्टचित्तैरपि स्मृतः । यदृच्छयापि संस्पृष्टो दहत्येव हि पावकः ॥ रामेति रामभद्रेति रामचन्द्रेति वा स्मरन्। नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विंदति " ॥ दशनामापराधमें प्रमाण ॥ "संतां निंदा नाम्नः परममपराधं वितनुते यतः ख्यातिं जातं कथमिह सहेद्धेलनमदः । शिवस्य श्रीविष्णोर्य इह गुणनामादिसकलं धिया भिन्नं पश्येत्स खलु हरिनामा हितकरः॥ गुरोरवज्ञा श्रुतिशास्त्रनिंदनं तथार्थवादो हरिनाम कल्पनं । नाम्नो बलाद्यस्य हि पापबुद्धिर्न विद्यते तस्य यमैर्हि विच्युतिः ॥ श्रुत्वापि नाममाहात्म्यं यः प्रीतिरहितोधमः । अहं ममादिपरमो नाम्नि सोप्यपराधकृत, ॥ ४ ॥

इति सत्तरवां शब्द समाप्त ।

अथ इकहत्तरवां शब्द ॥ ७१ ॥

गुरुमुख ।

चातक कहा पुकारै दूरी । सो जल जगत रहा भरपूरी ॥ १ ॥
जेहि जल नाद विन्दुका भेदा। षटकर्मसहितउपान्योवेदा २
जेहि जलजीव सीवकावासा।सोजलधरणिअमरपरकासा ३
जेहि जलउपजेसकलशरीरा।सोजलभेदनजानकवीरा॥ ४ ॥

चातृक कहा पुकारै दूरी। सो जल जगत रहा भरपूरी ॥ १ ॥
जेहि जल नादविन्दुकाभेदा।षटकर्मसहितउपान्यावेदा २॥

सबते गुरु परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र कहैहैं कि, हे चातक दूरि दूरि तैं कहा पुकारै है कि पियासोहौं पियासोहौं जौन स्वातीको जल तैं चाहैहै जाते पियास बंद ह्वैजाइहै सो राम नाम रुपी जल स्वातीको मुख्य मुक्तिको साधन जगत्में पूरि रह्यो है तैं कहां और और मुक्तिको साधनको खोजत फिरैहै ॥ १ ॥ औ जौने रामनामरूपी जलमें नादबिंदु को भेद है अपने षट मात्रनते वेदको उपान्यो कहे उत्पत्ति कियो है ॥ २ ॥

जेहिजलजीवसीवकावासा।सोजलधरणिअमरपरकासा ३॥
जेहिजलउपजेसकलशरीरा।सोजलभेदनजानकवीरा ॥४॥

जौने रामनामरूपी जलमें जीव जेहैं सीव जे नानाईश्वर तिनको बासहै औ सोई रामनामरूपी जब धरणि में जो कोई जपै ताको अमर करै है या प्रकाश कहे जाहिरहै अथवा वा अवनीमें नाशमान नहीं होयहै या जाहिरहै तैं पियासो काहे मरै है ॥ ३ ॥ जेहि राम नामरूपी जलते सकल शरीर उपजै है अर्थात् संसारमुख अर्थते अनन्त ब्रह्मा उपजै हैं रामनामरूपी जलको भेद कबीरा कहे कायाके बीर जे जीव हैं ते नहीं जानै हैं अर्थात् जो रामनाम मोको बतावै है सो जो बिचार करै तौ चिदविग्रह करिकै सर्वत्र महीं देखो परौं तौ मेरी भक्ति जलपान करिकै मुक्ति ह्वैजाइ है। औ संसारताप बुताइ जाइ है ॥ ४ ॥

इति इकहत्तरवां शब्द समाप्त ।

अथ बहत्तरवां शब्द ॥ ७२ ॥

चलहु का टेढ़ो टेढ़ो टेढ़ो ।
दशौ द्वार नरकै में बूड़े तू गंधीको वेढो ॥ १ ॥
फूटे नैन हृदय नाहिं सूझै मति एकौ नाहिं जानी ।
काम क्रोध तृष्णाके मारे बूड़ि मुये विन पानी ॥ २ ॥
जारे देह भसम ह्वैजाई गाड़े माटी खाई ।
शूकर श्वान कागके भोजन तनकी यहै बड़ाई॥३॥
चेति न देखु मुगुध नर बौरे तूते काल न दूरी ।
कोटिन यतन करै वहु तेरे तनकी अवस्था धूरी॥४॥
वालूके घरवामें बैठे चेतत नाहिं अयाना ।
कह कबीर यक राम भजे बिन बूड़े वहुत सयाना ॥ ५ ॥

चलहुका टेढ़ोटेढ़ोटेढ़ो।दशौ द्वार नरकैमें बूड़ेतू गंधीकोबेढ़ो

तीन बार टेढ़ो टेढ़ो टेढ़ो जो कह्यो सो ज्ञानकांड कर्मकांड उपासना कांड ये तीनों मार्ग अथवा सतोगुणी रजोगुणी तमोगुणी ये तीनों कर्मते टेढ़े हैं सो ये मार्ग में कहा चलोहौ दशौ द्वार जे दशौ इन्द्री हैं ते नरकही में लगी हैं कहे बिषयन ही में लगीहैं सो तेरे बिषयकी गन्धि लगी है ताते तैं गन्धी है सो तोहीं ऐसे गन्धी को माया बेढिलियो कहे तेरो ज्ञान छोड़ाइ लियो । अरु जो बेड़ो पाठ होइ तौ यह अर्थहै कि तोहीं ऐसे गंधीको जाके दशौद्वार नरक हीमें बूड़ेहैं ताको बेड़ो नहीं है जाते संसार सागर उतरि जाइ अथवा गन्ध जगत जो है गन्धी शरीर ताको तैं बेड़ो कहे आधार कहा ह्वैरहैहै टेढ़ो टेढ़ो चाल चलिकै यहां कहां तेरो पारकियो होइगो संसार सागरते न होइगो बूड़िही जाइगो ॥ १ ॥

फूटे नैन हृदय नाहिं सूझै मति एकौ नाहिं जानी ।
काम क्रोध तृष्णाके मारे बूड़ि मुये बिन पानी ॥ २ ॥

जारे देह भसम ह्वैजाई गाड़े माटी खाई ।
शूकर श्वान कागके भोजन तनकी यहै बड़ाई ॥ ३ ॥
चेति न देखु मुगुध नर बौरे तूते काल न दूरी ।
कोटिन यतन करै बहुतेरे तनकी अवस्था धूरी ॥ ४ ॥

अरु ये पदनको अर्थ स्पष्ट है इनमें यही बर्णन करैहैं कि मायाकी फौजै तोको लूटिलियो अथवा शरीररूपी बेड़ो तेरो चलायो न चल्यो संसार सागर कामादिक तोको बोरि दियो काल दूरि नहींहै आखिर मरही जाहुगे तनकी अवस्था दूरिही है आखिर धूरिहीं में मिलिजाइगो ॥ ३ ॥ ४ ॥

बालूके घरवामें बैठे चेतन नाहिं अयाना ।
कह कबीर यक राम भजे बिन बूड़े बहुत सयाना ॥ ५ ॥

श्री कबीर जी कहै हैं कि यही शरीररूप बालूके घरमें बैठिकै अरे मूढ़ चेतत नहीं है परम पुरुषपर श्री रामचन्द्रको भजन नहीं करै है न जानै यह शरीर कब गिरिजाइ कहे छूटिजाइ सो बिषय छोड़ि बेगिही भजनकरु वे समर्थ तोको छोड़ाइ लेइंगे साहबके भजन बिना बहुत सयान मतनमें लगिकै बूड़िग-येहैं अर्थात मायाते छोड़ाय लीवे में समर्थ साहबही हैं और कोई न छोड़ाय सकैगो तेहिते परम पुरुषपर श्रीरामचन्द्रको भजन करु वे तोको संसारतें छोड़ायही देइंगे ॥ ५ ॥

इति बहत्तरवां शब्द समाप्त ।

अथ तिहत्तरवां शब्द ॥ ७३ ॥

फिरहु का फूले फूले फूले ।
जो दश मास अधो मुख झूले सो दिन काहेक भूले ॥ १ ॥
ज्यों माखी स्वादै लहि बिहरै शोचि शोचि धन कीन्हा ।
त्यौहीं पीछे लेहु लेहु कर भूत रहनि कछुदीन्हा ॥ २ ॥

देहरीलौं बरनारि संगहै आगे संग सहेला ।
मृतुकथान सँगदियो खटोला फिरि पुनि हंस अकेला॥ ३॥
जारे देह भसम ह्वैजाई गाड़े माटी खाई ।
काचे कुंभ उदक जो भरिया तन कै इहै बड़ाई ॥ ४ ॥
राम न रमसि मोहमें माते परचो कालवश कूवा ।
कह कबीर नर आपु वँधायो ज्यों नलिनीभ्रम सूवा ॥ ५ ॥

फिरहु का फूले फूले फूले ।
जो दश मास अधो मुख झूले सोदिन काहेक भूले॥ १॥

औरे औरे मतनमें लगिकै कहा फूले फूले फिरौहो कि हमहीं मालिक हैं हमहीं मुक्तहैं दश महीना अधोमुख गर्भ में झूलतरहे तहां कह्यो कि हे साहब ! मैं तिहारो भजन करौंगो मोको छोड़ावो । सो दिन कांहेको भूलिगये अब काहे भजन नहीं करौहो निकसतही कहां कहां करनलग्यो । जो कहो जब हम गर्भमें रहे तब हमको साहबै दयालुता करिकै सुरति लगायो अब काहे दयालुता करिकै सुरति नहीं लगावै हैं सो हम कहाकरैं, हमको साहबई भुलाइ दियो । अरेमूढ़ साहबतो गोहरावत जाइहै सब शास्त्र वेदके तात्पर्य करिकै बीजकमें कि जो मोको जानि भजनकरु तो मैं तेरो उद्धार करौंगो सो गर्भबासमें जो तैं भजन करिबेको कौल कियो सो भजन न कियो भुलायदियो तामें प्रमाण कबीरजीके मुक्तिलीला ग्रन्थ को ॥ " गर्भबासमें रह्यो मैं भजिहौं तोहीं । निशिदिन सुमिरौं नाम कष्टसे काढ़ौ मोहीं ॥ यतना कियो करार काढ़ि गुरु बाहर कीना । भूलिगयो निज नाम भयो मायाआधीना " ॥ सो साहबको कौन दोषहै तुहीं कौलते चूकि गयो साहबको भजन न कियो ॥ १ ॥

ज्यों माखी स्वादै लाहि बिहरै शोचि शोचि धनकीन्हा ।
त्योंहीं पीछे लेहु लेहुकर भूत रहनि कछु दीन्हा ॥ २॥

जैसे माखी फूलनके रसके स्वादको पाइकै विहार करै है औ ताहीके सहतको धन जोरि जोरिकै धरै है तैसे तुमहूं विषय भोग करिकै धन जोरि जोरि धरौहौ सो जैसे कोऊ आइकै मछेहनको ढाइकै सहतको लैजाइकै आपुसमें बांटि लेइहै तैसे तोहीं पीछे कहे जब तुम न रहिजाउगे तब तिहारे धनको स्त्री पुत्रादिक लेहु लेहु करिकै बांटि लेइँगे अरु तुमको भूत की रहनि कहे दशदिन भूत कहैंगे मरघटामें बैठावेंगे ॥ २

देहरीलौं वरनारि संगहै आगे संग सहेला।
मृतुकथान सँग दियो खटोला फिरि पुनि हंस अकेला ३
जारे देह भसम ह्वैजाई गाड़े माटी खाई।
काचे कुंभ उदक जो भरिया तनकै इहै बड़ाई ॥ ४ ॥

ये चारो तुकनको अर्थ स्पष्टै है ॥ ४ ॥

राम न रमसि मोहमें माते परयो काल वश कूवा।
कह कबीर नर आपु बँधायो ज्यों नलिनी भ्रम सुवा॥५॥

श्री कबीरजी कहै हैं कि हेजीव! मोहमें माते राममें नहीं रमै है कालके वश ह्वैकै संसार कूपमें परयो है याते बारबार तेरो जन्म मरण होइहै सो तौ अपनेही भ्रमते नानादुःख सहै है जैसे नलिनी को सुवा अपनेही चंगुलते धरि लियो छोड़ै नहीं है मारो जाइहै तैसे तेहू नाना मतनमें लगिकै अरु विषयनमें लगिकै आपहीते यह संसारमें परिकै बँधिगयो संसारको धरेहै भाव यहहै संसार तोको बांधे नहीं है तैं छोड़ि काहे नहीं देइहै अरु जेहि साहबको तैं है जहां एकऊ दुःख नहीं हैं तिनमें काहे नहीं लगै है ॥ ५ ॥

इति तिहत्तरवां शब्द समाप्त।

अथ चौहत्तरवां शब्द ॥ ७४ ॥

योगिया ऐसोहै बद करणी। जाके गगन अकाश न धरणी १
हाथ न वाके पाउँ न वाके रूपनवाके रेखा।
बिना हाट हटवाई लावै करै व्याई लेखा ॥ २ ॥

कर्म न वाके धर्म न वाके योग न वाके युगुती ।
सींगी पत्र कछुव नहिं वाके काहेक मांगै भुगुती ॥ ३ ॥
तैं मोहिं जाना मैं तोहिं जाना मैं तोहिं माहँ समाना ।
उतपतिप्रलय एक नहिं होती तब कहु कौनको ध्याना ॥४॥
योगिया एक आनि किय ठाढो राम रहा भरिपूरी ।
औषधि मूल कछुव नहिं वाके राम सजीवनि मूरी ॥ ५ ॥
नटवत वाजी पेखनी पेखै वाजीगरकी वाजी ।
कहै कबीर सुनोहो सन्तों भई सो राज विराजी ॥ ६ ॥

योगिया ऐसो है बद करणी । जाके गगन अकाश न धरणी १
हाथ न वाके पाउँ न वाके रूप न वाके रेखा ।
विना हाट हटवाई लावे करै बयाई लेखा ॥ २ ॥

योगिया कहे संयोगी याको ब्रह्मसंयोग करिकै जगत् करैहै याते योगिया माया सबलित ब्रह्महै सो वह योगिया की बद करणी है कहे निषिद्ध करणी है जौने चैतन्याकाशमें अहंब्रह्मास्मि बुद्धि करै है तौन चैतन्याकाश मेरे लोकको प्रकाशहै तहां आकाश धरणी एकौ नहीं हैं ॥ १ ॥ वह चैतन्याकाशको जो मानि लियो है कि सो मही हौ ऐसा जो समष्टि जीव चैतन्य ब्रह्मरूप सो वाके न हाथ है न पाउँ है न वाके रूप रेखा है जहां जीव नानाकर्म करै है जगत् अरु वही जगत् कर्मनको फल पावैहै जहां यही लेनदेन ह्वै रह्यो है सो जो है हाट वाके नहीं हैं कहे देश काल वस्तु परिच्छेदतें शून्यहै औ हटवाई लगौतै है माया कहे सबलित ह्वैकै जगत् करतै है अरु बया और को अनाज और और को नापि देइहै अरु ब्रह्म जो है बया सो माया सबलित ह्वैकै ईश्वर रूपते जीवनके किये जे कर्मके फलहैं ते जीवन को देइहै ॥ २ ॥

कर्म न वाके धर्म न वाके योग न वाके युगुती ।
सींगीपत्र कछुव नहिं वाके काहेको मांगै भुगुती ॥३॥

अरु वह ब्रह्मको न कर्म है न धर्म है और न वाके योग युगुती है औ सींगी जो योगी लोग बजावैंहैं सो वाके नहीं है औ योगी तुम्बा लिये रहेहैं अरु वाके पात्र नहीं है। सो कबीरजी कहै हैं कि, वह ब्रह्म तौ न योग करै न वेष बनावै सिद्धांत में तो कछू हई नहीं है सो हे योगिउ ज्ञानिउ वेष बनाइकै जो कहौहौ कि हमहीं ब्रह्महैं तौ मुक्ति कहे ऐश्वर्य काहे मांगौ हौ कि हमहीं जगत् के मालिक औ ब्रह्म ह्वैजाईं; हे गुरु! हमको यह युगुति बताइ देउ औ जो मुक्ति पाठ होइ तौ तुम पहिलेही ते मुक्त बनेरहे गुरुवा लोगनते काहे मुक्ति मांगौहौ कि जामें हम मुक्त ह्वै जाइँ सो युगुति बताइ देउ। जो कहो हम आपने भ्रम निवृत्ति करिबे को मुक्ति को ज्ञान मांगे हैं तौ अरे मूढ़ौ वह ब्रह्मके तो कुछ हई नहीं है वह निर्लेपहै वह ब्रह्म जो तुम होते तो अज्ञानई तुम्हारे कैसे होतो ॥ ३ ॥

तैं मोहिं जाना मैं तोहिं जाना मैं तोहिं माहँ समाना ।
उतपति प्रलय एक नहिं होती तब कहु कौनको ध्याना ४

श्री कबीरजी कहैहैं कि, हे जीव ! ज्ञानजो तैं मानि लियो है अर्थात् ते उपासना करै हैं कि मैं ईश्वरहौं ईश्वर में समानहौं ईश्वर मोहीं में समानहै। तौ उत्पत्ति प्रलय जब कुछु नहीं है तबतो बताउ कौनको ध्यानहै अर्थात् काहूको ध्यान नहीं करत रह्यो भाव यह है कि तब जो ब्रह्महोते तौ संसारी काहे होते ॥ ४ ॥

योगिया एक आनि किय ठाढ़ो राम रहो भरिपूरी।
औषधि मूल कछुव नहिं वाके राम सजीवनि मूरी ॥ ५॥

सो तैंहीं योगिया मायासबलित ब्रह्मको अनुभव करिकै धोखा ब्रह्महीकों साहब मानि ठाढ़कै लीन्हो है। फिरि कैसो है ना कुछु औषधिहै ना वाके मूलहै ताको मानै है परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्रहैं सजीवनि मूरि सर्वत्र पूर्ण ह्वै रहे हैं ताको नहीं जानैहैं सजीवनि मूरि याते कह्यो औ नाना ईश्वर जीवत्व मिटाय देनवारे हैं औ साहब जीवनको जियाय देनवारे हैं अर्थात रूप देनवारे हैं ॥ ५ ॥

नटवत बाजी पेखनी पेखै बाजीगर की बाजी ।
कहै कबीर सुनोहो संतो भई सो राजबिराजी॥ ६ ॥

जौन तू धोखाब्रह्म सर्वत्र पूर्ण मानै है सो तेरी यह पेखनी नटवत बाजी पेखनी है अर्थात् झूठहै बाजीगरकी बाजी है अर्थात् सांच असांच देखावै असांच सांच देखावैहै सो कबीरजी कहै हैं कि हे संतो ! सुनौ उनको राजाबिराजी ह्वै गई कहे सर्वत्र पूर्ण सत्य जे साहबहैं ते उनको नहीं जानिपरैहैं वही धोखाब्रह्म में लगै हैं असत्यही सर्वत्र देखै हैं मनमाया को राज ह्वैरह्यो है साहबको राज्य नहीं है ॥ ६ ॥

इति चौहत्तरवां शब्द समाप्त।

अथ पचहत्तरवां शब्द ॥ ७५ ॥

ऐसो भर्म बिगुरचिन भारी।
वेद किताब दीन औ दोजख को पुरुषा को नारी ॥ १ ॥
माटीको घट साज बनाया नादे बिंदु समाना।
घट बिनशे क्या नाम धरहुगे अहमक खोज भुलाना॥२॥
एकै हाड़ त्वचा मल मुत्रा रुधिर गूद यक मुद्रा।
एक बिंदुते सृष्टि रच्योहै को ब्राह्मणको शुद्रा ॥ ३ ॥
रजगुण ब्रह्म तमोगुण शंकर सतोगुणी हरि सोई।
कहै कबीर राम रमि रहिया हिन्दू तुरुक न कोई ॥ ४ ॥

ऐसो भर्म बिगुरचिन भारी।
वेद किताब दीन औ दोजख को पुरुषा को नारी ॥ १ ॥

ऐसो कहे यहितरहते जैसो आगे कहै हैं तैसो चिन्मात्र जीव को बिगारिबो भर्मते बहुत भारी है काहेते कि भर्म ते दुबिधा कहिकै वह सार पदार्थ को न जान्यो हिन्दू मुसल्मान दोऊ बिगरिगये हिन्दू वेद की राहते नाना मत बनाय लेतभये औ मुसल्मान किताबनकी शरा लैकै नाना मत दूसरो दीनको खड़ा करत भये हिन्दू नरक स्वर्ग मुसल्मान बिहिश्त दोज़ख़ कहतभये जो

वेद किताबके तात्पर्यते देखौ तौ न कोई पुरुष जानिपरै न नारी जानिपरै सो जब पुरुषही नारीको भेद नहीं है तौ हिन्दू मुसलमान कैसे भेद भयो ॥ १ ॥

माटी को घट साज बनाया नादे बिंदु समाना ।
घट बिनशे क्या नाम धरहुगे अहमक खोज भुलाना २
एकै हाड़ त्वचा मल मुत्रा रुधिर गूद यक मुद्रा ।
एक बिंदुते सृष्टि रच्यो है को ब्राह्मण को शुद्रा ॥ ३ ॥

नाभीके तरे जो दश आंगुरकी ज्योतिहै औ नौनेमें जब प्राण बायुको संयोग होइहै तब नाद उठै है तामें बिंदु समाइगयो तब माटीको घट यह पिंडभयो ताहीको नाम धरावैहै जब याको घट बिनशिगयो कहे शरीर छूटिगयो तब याको क्या नाम धरौगे अर्थात् नामरूप याके सब मिथ्या हैं अहमक जो है जीव सो नाम रूपके खोजमें भुलाइ गयो ये सब जीवात्मा के नाम रूप नहीं हैं ॥ २ ॥ सो एकै हाड़ादिकनते औ एकै बिंदुते कहे वीर्य ते सकल सृष्टि भई है काको हिन्दू कहैं काको मुसलमानकहैं काको ब्राह्मण कहैं काको शूद्रकहैं शरीरमें यही साज सबके हैं अरु वेदमें कर्म किताब में शरायंही तें नानाभेद लगे हैं जो बिचारिकै देखो तौ नाम रूपहीको भेद लगि रह्यो है आत्मा तो सबको चितही है औ मांस चाम सबके पांचभौतिकही हैं अब जे गुणाभिमानी हैं तिनको कहै हैं ॥ ३ ॥

रजगुण ब्रह्म तमोगुण शंकर सतोगुणी हरि सोई ।
कहै कबीर राम रमि रहिया हिंदू तुरुक न कोई ॥४॥

वही नाम रूप के भेदते ब्रह्मा रजोगुणी शंकर तमो गुणी विष्णु सतोगुणी भये औ वही नामके भेदते मुसल्मानमें इनहीं को अजाजील मैकाइल इजराईल कबीरजी कहै हैं कि येतो सबनाम रूपके भेदहैं इनको सबको आत्मा एकई है तिनमें अंतर्य्यामी रूपते मनवचनके परे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्रई रमि रहे हैं । जो कहो राम नामौ तौ नाममें आवै है तौ रामको नाम मन वचनमें नहीं आवै है आपही स्फुरित होइहै तेहिते नामत्व नहीं है अरु श्रीरामचन्द्र

निर्गुण सगुणके परे हैं तिनको जानै औ जो आत्मा नाम रूपते भिन्नहै न हिन्दू है न तुरुक है तामें येई राम रमि रहे हैं या हेतुते सबको आत्मा इन्हींको दासहै तेहिते इनहींको जो जाने सोई मुक्त होइहै परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र निर्गुण सगुणके परे हैं तिनहींको राम नाम जाने मुक्ति होइ है तामें प्रमाण ॥ "रामके नामते पिंड ब्रह्मांड सब रामका नाम सुनि भर्म मानी । निर्गुण निराकार के पार परब्रह्महै तासुका नाम रंकार जानी । विष्णु पूजाकरैं ध्यान शंकर धरैं भनैं सुबिरंचि बहु बिबिध बानी । कहै कब्बीर कोइ पार पावै नहीं रामका नाम अकह कहानी" ॥ ४ ॥

इति पचहत्तरवां शब्द समाप्त ।

अथ छिहत्तरवां शब्द ॥ ७६ ॥

अपन पौ आपुही विसरो ।
जैसे शोनहा कांच मँदिरमें भर्मत भूंकि मरो ॥ १ ॥
ज्यों केहरि वपु निरखि कूप जल प्रतिमा देखिपरो ।
ऐसेहि मद गज फटिकशिलापर दशनानि अनिअरो ॥ २ ॥
मर्कट मुठी स्वाद ना विहुरै घर घर नटत फिरो ॥
कह कवीर ललनीके सुवना तोहिं कवने पकरो ॥ ३ ॥

अपन पौ आपुही विसरो ।
जैसे शोनहा कांच मँदिरमें भर्मत भूंकि मरो ॥ १ ॥
ज्यों केहरि वपु निरखि कूप जल प्रतिमा देखिपरो
ऐसेहि मद गज फटिक शिलापर दशनानि आनि अरो २

अपनपौ कहे आपने जे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र हैं तिनको आपही तें यह जीव बिसरि गयो जैसे कूकुर कांचके मंदिरमें आपनो रूप देखि देखि भर्मते भूँकि भूँकि मरैहै ॥ १ ॥ अरु जैसे केहरि कूपके जलमें अपनी प्रतिमा

देखिकै कूदि परैहै अरु ऐसेही प्रतिबिंब देखि स्फटिक शिलामें हाथी दांत टोरि डारैहै ॥ २ ॥

मर्कट मुठी स्वाद न बिहुरै घर घर नटत फिरो
कह कबीर ललनीके सुवना तोहिं कवने पकरो ॥ ३ ॥

अरु जैसे मर्कट मूठीमें जोहै दाना ताके स्वादके लिये फँसि गये बाजी-गरके साथ नाचत बागैहै सो कबीरजी कहै हैं कि जैसे इनके सबके भ्रम होइहै तैसे हे जीव तैंहीं सब कल्पना करिलियो है अपनी कल्पनाते तोहींको भ्रम होइहै नाना उपासना नाना ठाकुर खोजत फिरैहैं । बिचारिकै देख तौ जब तेरे कल्पना नहींरही तबते शुद्ध रहैहै जैसे सुवा ललनीको पकरि लेइहै तैसे तैंहीं ये सब कल्पना करिकै कल्पनामें बँधोहै जैसे सुवा ललनी को जो छोड़ि-देइ तौ वृक्षमें पहुंचै जाइ तैसे तैंहू जो कल्पनाको छोड़िदेइ तौ तोको कौन पकर्योहै।परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र के पास पहुंचै जाइ जब सब कल्पना छोड़ि शुद्ध ह्वै जाइ है तब साहब अपनो बिग्रह देइहै तामें स्थितह्वै साहबके लोकको जाइहै तामें प्रमाण॥ "आदत्ते हरिहस्तेन हरिपादेन गच्छति" इतिस्मृतिः॥ अरु **श्रीकबीरऊ जी को मंगल** प्रमाण ॥ " चलो सखी बैकुण्ठ बिष्णु माया जहां चारिउ मुक्ति निदान परम पद लेतहां ॥ आगे शून्य स्वरूप अलख नहिं लखि परै । तत्त्व निरंजन जान भरम जानि जनि चितधरै ॥ आगे है भगवंत तो अक्षर नाउँहै । तीन मिटावै कोटि बनावै ठाउँहै ॥ आगे सिंधु बलंद महा गहिरो जहां । कोनैया लैजाय उतारै को तहां ॥ कर अजपाकी नाव तो सुरति उतारिहै । लेइहौं अञ्जरनाउँ तो हंस उबारिहै ॥ पार उतर पुरुषोत्तम परख्यो जानहै । तहँवां धाम अखंड तो पद निर्वान है ॥ तहँ नहिं चाहत मुक्ति तो पद डारे फिरै । सुरत सनेही हंस निरंतर उच्चरै ॥ बारह मास बसंत अमर लीला जहां । कहैं कबीर बिचारि अटल ह्वै रहुतहां " ॥ ३ ॥

इति छिहत्तरवां शब्द समाप्त ।

अथ सतहत्तरवां शब्द ॥ ७७ ॥

आपन आश किये बहु तेरा । काहु न मर्म पाव हरि केरा १॥
इन्द्री कहां करै विश्राम । सो कहँ गये जो कहते राम ॥२॥
सो कहँ गये होत अज्ञान।होय मृतक वहि पदहि समान३॥
रामानंद राम रस छाके । कह कबीर हम कहि कहि थाके४॥

आपन आश किये बहुतेरा । काहु न मर्म पाव हरि केरा १॥

आपने स्वरूपके चीन्हिबे की बहुतेरा कहे बहुत आशकिये कि हमारो आत्मै सबको मालिकह यहीके जानेते हम मुक्त ह्वै जाइँगे परन्तु मुक्त न भये अरु हरि जे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र सबके कलेश हरनवारे हैं तिनको मर्म न पायो अर्थात् उनको कोई न चीन्ह्यो ॥ १ ॥

इंद्री कहांकरै विश्राम । सो कहँगये जो कहते राम॥२॥

अरु यह कोई नहीं विचार करै है कि इन्द्री कहा बिश्राम करै है काहेतें कि इन्द्रीके जे देवताहैं तिनते समेत इन्द्रीतो मनते चैतन्य हैं औ मन जीवात्मा ते चैतन्यहै औ जीवात्मा परमपुरुषपर श्रीरामचंद्र के प्रकाशते चैतन्य है सो जे आपनें स्वरूपको बिचार करै हैं कि महीं रामहौं ते वे रामभर कहांगये अर्थात् नहीं गये ब्रह्ममें समान रहे अरु एक एकते चैतन्यहै तामें श्रीगोसाई तुलसीदास को प्रमाण ॥ " बिषय करन सुर जीव समेता । सकल एकते एक सचेता ॥ सबकर परम प्रकाशक जोई । राम अनादि अवधपति सोई ॥ जगत प्रकाश प्रकाशक रामू । मायाधीश ज्ञान गुणधामू " ॥ २ ॥

सो कहँगये होत अज्ञान । होय मृतक याहि पदहि समान॥३॥
रामानंद राम रसछाके । कह कबीर हम कहि कहि थाके॥४॥

जीव ब्रह्ममें समान रह्यो शुद्ध रह्यो जब मनकी उत्पत्ति भई अज्ञान भयो सो कहांगयो अर्थात् तब मृतक ह्वैकै आपने स्वरूपको भुलायकै यहि पदहि कहे यहि संसारमें समान॥ ३ ॥श्रीकबीरजी कहैहैं कि हम चारो युगमें कहि कहि थकिगये

कि रामानंद जेहैं तेई राम के रसमें छके हैं अरु तेई परमपुरुषपर श्रीरामचंद्रके धामको गये हैं और कोई नहीं परम मुक्ति पाई है तुमहूं रामानंद होनजाउ अर्थात् तुमहूं रामहींते आनंद मानतजाउ यह हम चारोंयुग में सबको समुझायो परंतु कोई हमारो कह्यो न मान्यो राममें आनंद कोई न मान्यो सब वही माया ब्रह्ममें लगिकै संसारी होतभयो ॥ ४ ॥

इति सतहत्तरवां शब्द समाप्त ।

अथ अठहत्तरवां शब्द ॥ ७८ ॥

अब हम जाना हो हरि बाजीको खेल ।
डंक बजाय देखाय तमाशा बहुरि सो लेत सकेल ॥ १ ॥
हरि बाजी सुर नर मुनि जहँडे माया चेटक लाया ।
घरमें डारि सबन भरमाया हृदया ज्ञान न आया ॥ २ ॥
बाजी झूँठ बाजीगर सांचा साधुनकी मति ऐसी ।
कह कबीर जिन जैसी समुझी ताकी गति भइ तैसी ॥ ३ ॥

अब हम जाना हो हरि बाजी को खेल ।
डंक बजाय देखाय तमाशा बहुरि सो लेत सकेल ॥ १ ॥

हेहरि ! हे साहब ! संसाररूप बाजीके खेलको हेतु अब हम जान्यो । अब जो कह्यो तामें धुनि यहहै कि, तब यह बिचारत रहे कि साहब तो दयालुहै शुद्धजीवको संसार रचि अशुद्ध काहे करिदिये यह शंका रही सो अब जब छूटी तब साहबको हेतु जान्यो साहब जो सुरति दियो सो आपनेपास लिवाय सुखलिये डङ्का बजाय कहे रामनाम शब्द सुनायकै तमाशा देखाय कहे जगत् मुख अर्थ द्वार संसार तमाशा देखायकै बहुरि सो लेत सकेल कहे जो कोई जीव साहब के सम्मुख भयो ताको साहब मुख अर्थ बताइकै चित अचितरूप विग्रह जगत खायकै संसार सकेलि लेय है अर्थात् संसार देखि नहीं परै ॥ १ ॥

हरिवाजी सुर नर मुनि जहँडे माया चेटक लाया ।
घरमें डारि सबन भरमाया हृदया ज्ञान न आया ॥ २ ॥
बाजी झूंठ बाजीगर साँचा साधुनकी मति ऐसी
कह कबीर जिन जैसी समुझी ताकी गति भइ तैसी ॥ ३ ॥

हरि जे साहब तिनकी बाजी जोसंसार तामें साहबको हेतु न जानिकै सुर-नर मुनि जे हैं ते रामनामको संसार मुख अर्थ करिकै मायाके चेटकमें जहँडि-गये अर्थात् भूलिगये सो माया इनको घर जो संसार तामें डारिकै भरमाय दियो हृदयमें ज्ञान न होतभयो तौन हम जान्यो साहब सुरति दियो तैं अपने पास बोला-वैको सो या जीव आपहीते संसार बाजीरचि भूलिगयो ॥ २ ॥ बाजी जो संसार सो झूठ बाजीगर जो जीव सो सांचहै सो साधनकी मति तो ऐसी है और जे सबहैं बद्धजीव ते जैसे समुझिनि है ताकी तैसी ही गति भई है सो गतिहू सब अनित्य है ॥ ३ ॥

इति अठहत्तरवां शब्द समाप्त ।

अथ उन्नासीवां शब्द ॥ ७९ ॥

कहो हो अम्बर कासों लागा । चेतनहारे चेतु सुभागा ॥ १ ॥
अम्बर मध्ये दीसै तारा । यक चेतै दुजे चेतवनहारा ॥ २ ॥
जेहि खोजै सो उहवां नाहीं । सोतो आहि अमर पद माहीं ॥ ३ ॥
कह कबीर पद बूझै सोई । मुख हृदया जाके यक होई ॥ ४ ॥

कहो हो अम्बर कासों लागा । चेतन हारे चेतु सुभागा ॥ १ ॥
अम्बर मध्ये दीसै तारा । यक चेतै दुजे चेतवनहारा ॥ २ ॥

तैंतों सुभागाहै साहब कोहै तैं काहे मन माया ब्रह्ममें लगिकै अभागा ह्वैरहैहै चेत करनवारे तैं चेत तोकरु अंबर जो है लोक प्रकाश रूप ब्रह्म सो कहां लागाहै अर्थात् वह काको प्रकाशहै वह साहब साहबके लोकको प्रकाशहै चेततों करु ॥ १ ॥ वह अम्बर जोहै लोक प्रकाश ब्रह्म तामें तारा देखाइहै कहे

जबतैं उहां अहं ब्रह्म बुद्धि करै है, तबहीं जगतरूप तारा उत्पत्ति होइहै तौनेही जगत्में एक गुरु होइहै सो चेतावैहै अरु एक शिष्य होइहै सो चेतकरैहै ॥२॥

जेहि खोजै सो उहवां नाहीं । सोतो आहि अमर पद माहीं ४

कह कबीर पद बूझै सोई । मुख हृदया जाके यक होई ५

सो ज्यहि आपने स्वरूपको तें खोजै है कि मैं आपने स्वरूपको जानिकै मुक्त ह्वैजाउँ सो उहां बागुरुवनको ज्ञानमें नहीं है औ न वह लोक प्रकाशमें है काहेते कि जे जे देवतनमें वे लगावैहैं तेई अमर नहीं हैं तो तोको कहां मुक्ति करैंगे अरु महा प्रलयमें जब लोक प्रकाशमें लीन होइहै तब उहींते उत्पत्ति होइहै तेहिते उहीं गये अमर नहीं होइहैं तेहिते यह आयो कि तैंतो अमर नहीं होइहै तेहिते यह आयो कि तैंतो अमर पदमें है साहबको अंशहै साहबको जानिले तौ अमर ह्वैजाइ ॥ ३ ॥ श्रीकबीरजी कहै हैं कि यह अमरपद अपनो स्वरूप कोई बिरला बूझैहै कौन जाके सम अधिक नहींहै ऐसो जो है एक रामनाम सो जाके मुखहृदय में होइहै सोई बूझैहै ॥ ४ ॥

इति उन्नासीवां शब्द समाप्त ।

अथ अस्सीवां शब्द ॥ ८० ॥

बन्दे करिले आप निबेरा ।

आपु जियत लखु आप ठवर करु मुये कहां घर तेरा ॥ १ ॥

यहि अवसर नहिं चेतौ प्राणी अन्त कोई नहिं तेरा ।

कहै कबीर सुनो हो संतो कठिन काल को घेरा ॥ २ ॥

बन्दे करिले आप निबेरा ।

आपु जियत लखु आप ठवर करु मुये कहां घर तेरा ॥ १ ॥

यहि अवसर नहिं चेतौ प्राणी अंत कोई नहिं तेरा ।

कहै कबीर सुनो हो संतौ कठिन काल को घेरा ॥ २ ॥

हे बंदे अपनेमें तो निबेरा करिले अपने जियत अपना ठौर तौ करु मुयेते तेरा घर कहाहै अर्थात् जो सत् असत कर्म करैगो सो सब नरक स्वर्गादिकनमें भोग करैगो तेतो कर्मके घरहैं तेरे घर नहींहै औ जो ज्ञान करिकै आपने को ब्रह्म मानिकै ब्रह्म प्रकाशमें ह्वैकै शुद्ध जीवन कहैगो सो ब्रह्म होनातौ धोखाहै जब फेरि उत्पत्ति समय होइगो तब माया धरिलै आवैगी पुनि संसारी ह्वैजाइगो अरु और और देवतनकी उपासना करिकै उनके लोक जाइ जो तेऊ तेरे घर नहींहैं जब माया धरिलै आवैगी तब संसारी ह्वैजाइगो जब मरैगो औ ये घरनमें जाइगो तब बिचार करनेकी सुधि न रहि जाइगी तेहिते जीतही आपनो घर बिचारु तेरो घर वहहै जहांके गये फिरि न आवै सो तैं साहबको अंशहै सो साहबके पास घर करु कहे ठौर करु जाते फिरि न संसारमें आवै ॥१॥ सो कबीरजी कहैहैं कि हे प्राणिउ यहि अवसरमें कहे मनुष्य शरीर में जो साहबको नहीं जानौहौ तौ हे संतौ ! सुनौ तुमको अंतकालमें यह कठिन जो कालको घेराहै ताते कौन बचावैगो अर्थात् जहां जहां जाहुगे तहां तहांते काल तोको खाइ लेइगो साहब बचावनवारे खड़े हैं ताको प्रमाण आगे लिखिही आये हैं ॥ "अजहूं लेहुं छुड़ाइ कालसों जो घट सुरति सँभारै" सो साहबको जानिकै साहबके पास जाय जनन मरण छूटि जाय ॥ २ ॥

इति अस्सीवां शब्द समाप्त ।

अथ इक्यासीवां शब्द ॥ ८१ ॥

तूतो ररा ममा की भांति हो संत उधारन चूनरी ॥ १॥

बालमीकि बन बोइया चूनिलिया शुकदेव ।
कर्म बेनौरा ह्वैरह्यो सुत काते जयदेव ॥ २ ॥

तीन लोक ताना तनो ब्रह्मा विष्णु महेश ।
नाम लेत मुनि हारिया सुरपति सकल नरेश ॥ ३ ॥

जिन जिह्वा गुण गाइया विन वस्तीका गेह ।
सूने घरका पाहुना तासों लावै नेह ॥ ४ ॥
चारि वेद कैंड़ा कियो निराकार कियरास ।
विनै कवीरा चूनरी पहिरैं हरिके दास ॥ ५ ॥

तूतो ररा ममा की भांतिं हौ संत उधारन चूनरी ॥ १ ॥

जो तुम मनमाया ब्रह्ममें लागि रह्योहै सो तुम इनके नहीं हो तुमतो ररा ममा की भांतिहौ अर्थात् राम जो मैंहौं तिनकी भांतिहौ जैसे मैं विष्णु चैतन्य हौं तैसे तुम अगु चैतन्यहौ मेरे अंशहौ सो मेरो जो रामनामहै ताको उधारन नामकी चुनरी कवीरसंत मेरो बनायो है । यही रकार बीज मों मकारहू है यहि हेतुते साहब रकारहीको कहै हैं अर्थात् जब राम नाममें जपौगे तब यह जानि जाहुगे कि मकार मेरो स्वरूपहै रकार साहबको स्वरूप है औ कबीर संत असार जो है जगतमुख अर्थ ताको त्यागिकै सार जो है साहबमुख अर्थ ताको ग्रहण करिकै चूनरी बनाई है सो कहैहैं ॥ १ ॥

वालमीकि वन वोइया चूनि लिया शुकदेव ।
कर्म वेनौरा ह्वै रह्यो सुत कातै जयदेव ॥ २ ॥

माटीको है बहुत छिद्रहैं याते शरीर बल्मीक कहे बेमौरि है तामें जो रहै सो बाल्मीकि कहावै सो बाल्मीकि आत्मा है सो बाणी रूपी जो वन कहे कपासहै ताको बोवत भयो अर्थात् वहीकी इच्छा शक्ति भई है। औ शुच शोके धातु है तेहिते शुक शब्द होइहै—ताको जो देव होइ सो शुकदेव कहावै है। सो शोच मनके होइ है अर्थात सङ्कल्प बिकल्प मनके होइ है सो शुकदेव मन है । सो आत्माते जो बाणीरूपी कपासके ढेढ़ाको अनुसार भयो ताको चुनि लियो अर्थात् बाणी मनै ते निकसी है अरु जय करिकै क्रीड़ाकरै अथवा जय बिषय क्रीड़ाकरै सो जयदेव कहावै सो सबको जीति लियो है अज्ञान सो मूलाज्ञान जयदेव है तौनेमें कर्म बेनौरा ह्वै रह्यो है। बिद्या अविद्या माया सोई सूत है जाको मूलाज्ञान जो अहंब्रह्म बुद्धितौनहै। जाके ऐसों

जो जीव जयदेव सो कातै है अर्थात् अहंब्रह्म बुद्धि जब समष्टि जीव कियेहै तबहीं मनकी उत्पत्ति भई कर्म भयो है संसार प्रकट भयो है ॥ २ ॥

तीन लोक ताना तनो ब्रह्मा विष्णु महेश ।
नाम लेत मुनि हारिया सुरपति सकल नरेश ॥ ३ ॥

तीनलोक जोहै सोई ताना तन्यो है ताको तीनि खूंटाहैं रजोगुण ब्रह्मा मृत्युलोक के सतोगुण विष्णु आकाशके तमोगुण महेश पातालके। अरु अनेक जे नामहैं अनेक जे मतहैं अनेक जे ज्ञान हैं वेदमें सोई कपरा तयार भयो तिनको नाम लेत मुनि औ इंद्र औ सबराजा हारि गये। वही ब्रह्मरूपी कपराके गठियामें कसे रहिगये वासों निकसिकै मुक्ति न पावत भये अर्थात् मोको न जानत भये ॥ ३॥

बिन जिह्वा गुण गाइया बिन बस्ती का गेह ॥
सूने घर का पाहुना तासों लावै नेह ॥ ४ ॥

कहत का भये कि बिन जिह्वा जो गुण गावै है कहे अजपा जो है सोहं तौने अजपाको साथ गाइकै कहे जपि जपिकै बिन बस्तीको गेह जो है ब्रह्म झूठा तौने कपराके गठिया के भीतर बँधि जातभये कहे यह मानत भये कि हमहीं ब्रह्महैं । सो वह घरतो देशकाल बस्तु परिच्छेदते शून्य है सो जैसे सूनें घरमें पाहुना जाय औ कुछ न पावै तैसे जीव उहां कुछु न पावतभयो येतौ रामनाकको जगत्मुख अर्थ करि सब यह कपरा बिनो अरु श्रीकबीरजी साहबमुख अर्थकरि कौनं कपरा बिनै हैं सो कहे हैं ॥ ४ ॥

चारि वेद कैंड़ा कियो निराकार किय रास ।
बिनै कबीरा चूनरी पहिरैं हरिके दास ॥ ५ ॥

चारिवेद को कैंड़ा करिकै औ निरङ्कारको राशि बनाइकै वही निरङ्कारके भीतरते निकासि लैजाइकै । अर्थात् प्रकाशरूप ब्रह्म कौनको प्रकाशहै ? तब यह बिचारेउ साहबके लोकको प्रकाशहै । लोक कौनको है । यही बिचार करिबो है ब्रह्मते वेदको तात्पर्य निकसिबो है सो चारिउ वेदको कैंड़ा करिकै ब्रह्म जो है राशि तौनेते वेदको तात्पर्य निकासि रामनामकी चूनरी श्रीकबीरजी कहै हैं कि

मैं बिनौहौं। ताको हरिके जानिबेमें दाक्ष कहे दक्ष जे कोई विरले दासहैं ते पहि-रै हैं अर्थात् रामनाम जपिकै साहबको जानै हैं। यहि पदमें बालमीकि को शुकदे-वको जयदेवको जो अर्थ हम कियो है सोई अर्थ है काहे ते कि जेई बालमीकि शुकदेवको अर्थ करै हैं तिनको यह ज्ञान नहीं रह्यो कि तीनि लोक जब ताना तानेगये हैं ब्रह्मा विष्णु महेश खूंटा भये हैं तब बालमीकि शुकदेव जयदेव नहीं रहे हैं ॥ ५ ॥

इति इक्यासीवां शब्द समाप्त ।

अथ बयासीवां शब्द ॥ ८२ ॥

तुम यहि विधि समुझौ लोई । गोरी मुख मंदिर बजोई ॥ १ ॥
एक सगुण षट चक्रहि वेधै विनु बृष कोल्हू मांजै ।
ब्रह्मै पकरि अग्निमें होमै मक्षगगन चढ़ि गाजै ॥ २ ॥
नितै अमावस नितै ग्रहण होइ राहु ग्रास नित दीजै ।
सुरभी भक्षण करै वेदमुख घन बरसै तन छीजै ॥ ३ ॥
पुहुमिक पानी अंबर भरिया यह अचरज का कीजै ।
त्रिकुटि कुँडल मधि मंदिरबाजै औघट अंबर भीजै ॥ ४ ॥
कहै कबीर सुनोहो संतो योगिन सिद्धि पियारी ।
सदा रहै सुख संयम अपने बसुधा आदि कुंवारी ॥ ५ ॥

तुम यहिविधि समुझौ लोई। गोरी मुख मंदिर बजोई ॥ १
एक सगुण षट चक्रहि वेधै विनु बृष कोल्हू मांजै ।
ब्रह्मै पकरि अग्निमें होमै मक्ष गगन चढ़ि गाजै ॥ २ ॥

वह लोई जो है लपट कहे ज्योति सो ब्रह्मांडमें है ताको यहि बिधिते तुम समझौ। अथवा लोई कहे हे लोगो! तुम यहि बिधिते समुझौ गोरी जो है कुंडलिनी शक्ति नागिनी ताहीके मुख शरीररूपी मंदिर कहे मृदङ्ग अथवा मंदिर कहे घर

बाजै है अर्थात् पराबाणी उहैं ते निकसै है सोई पश्यंती ते मध्यमा आइ वैखरीमें प्रकट होइ है । षटचक्रको बेधिकै कुण्डलिनी शक्ति नागिनी जायहै ताके साथ त्रिगुण ते युक्त जो एक सगुणजीव है सो जायहै सो वाकी विधि आगे लिखि आये हैं। सो वृषभ तो उहां नहीं चलै है औ कोल्हू जो कुंडलिनीशक्ति सो मांजै कहे देह मांजिकै उठै है सो पांच हजार कुंभक कियो तब श्वासनते तापित होइहै अथवा खेचरीतें सुधाबिंदु वाके ऊपर परयो ताकी शीतलता पाइकै उठै है सो ब्रह्मांड में जाइकै अर्थात् जेतने रोज समाधि लगायो तेतने दिन रही ताके साथ जीवहू गयो।सो कहै हैं कि,ब्रह्मांड जोरजोगुणहै ताको योगाग्निमें होमि दियो सो रजोगुण जरयो तौ तमोगुण जरै है। अरु भक्ष जो जीवहै सो नाभीके जलमें रह्यो तहांते चलिकै गगन जो ब्रह्मांडहै तहां गाजै है कहे यह कहै है कि मही मालिक हौं ॥ १ ॥ २ ॥

नितै अमावस नितै ग्रहण होय राहु ग्रास नित दीजै ।
सुरभी भक्षण करै बेद मुख घनवरसै तन छीजै ॥ ३ ॥
पुहुमिक पानी अंबर भरिया यह अचरज को कीजै ।
त्रिकुटि कुंडल मधि मंदिर बाजै औघट अंबर भीजै ४

खेचरी की दृष्टि तीनिहै तामें एक पूर्णिमाहै कहे सर्वत्र पूर्ण देखै है। औ ऊर्ध्वदृष्टि प्रतिपदा है । औ अंतरदृष्टि अमावस है । सो जब अंतर खेचरी चढ़ी औ कालपूतरी आकाशमें वेधी कहे ऊर्ध्वदृष्टि प्रतिपदा में बेधी तब अंधकार अविद्या ग्रहण ह्वैकै चैतन्यको छाइ लियो । अर्थात् प्रथम अंधकार देखोपरो और कछु न देखि परयो। पुनि बिजली ऐसी चमकी तब तारागण वीर्य है ताकी गति मालूम भई।तब प्रथम सूर्य मण्डल पुनि चंद्र मण्डल देखोपरयो ।सो वही ज्योतिमें लीन रहैहैं समाधि लगी रहैहै जब समाधि उतरी तब जीवको अमावस भई तममें परयो आइ। तब सूर्य प्रकाश देखत रह्यो ताको मायारूपी राहु ग्रसि लियो अथवा जब नागिनिको सुधा पिआवैहै तब बहुत दिनकी समाधि लगैहै।अब जौन पुरुष रोज समाधि लगावैहै औ उतारै है सो कहैहैं जब समाधि चढ़ाय लैगयो तब याको अमावस ह्वैगयो पुनि तममें परयो औ नित्य ग्रहण होइहै वे चंद्रमा औ सूर्य दुइ

नाड़ीहैं तिनको सुषुम्णारूपी राहु ग्रास देइहै अर्थात् ग्रसन करावै है वही सुषुम्णामें लीन कै देइहै। जब समाधि लगी तब सुरभी जोहै गायत्री माया कुंडलिनी शक्ति सो वेदमुख बाणी भक्षण कैलियो अर्थात बाणी रहित ह्वैगयो। औ तन छीजै है कहे दूबर ह्वै जाइहै सो घन बरसै है कहे सुधा बरसै है याते बनो रहै है। पुहुमी का पानी जब अंबरमें भरन लगैहै कहे नीचे को वीर्य ब्रह्मांडमें चढ़ावन लगैहै तब शीशे की सराई बनाइकै लिंगद्वार में डारै है पानी खैंचैहै जब राह साफ ह्वै जाइहै तब पवनके साथ वीर्य चढ़ैहै तब पवन वीर्यके साथ जीवात्मा चढ़ि जाइहै त्रिकुटी में त्रिबेणीको स्नान करिकै दशौ अनहद सुनन लाग्यो तामें मंदिर कहे मृदंगौ हैं सो बाजै हैं औ घटते कहे बङ्कनालकी राहते जब जीवात्मा जाइहै तब अम्बर जो है गैबगुफाको आकाश सो भीजै है अर्थात उहां वीर्य पहुंचि जाइहै सो यह आश्चर्य का कीजै ॥ ४ ॥

कहै कबीर सुनौ हो संतो योगिन सिद्धि पियारी।
सदा रहे सुख संयम अपने बसुधा आदि कुंवारी ॥ ५ ॥

सो कबीरजी कहै हैं कि हे संतौ! यहि तरहकी जो सिद्धिहै सो योगिनको पियारिहै सो प्रथमतो सिद्धिही नहीं होईहै जो घुनाक्षर न्याय ते सदा सुख संयम में रहै औ सिद्धि भई समाधि लगी ताते फेरि वैसेही योगी भये अथवा पुहुमीपति भये योग करिकै हम यह शरीरके मालिक ह्वैगये मनादिक हमारे बश ह्वैगये परंतु जब यह शरीर छूटि जाइहै और शरीर होइहै तब वह सुधि सब भूलि जाइहै अरु जब पुहुमीपति भयो आपनेको राजा मानि लियो सो जब मरिगयो तब पुहुमी आनही की ह्वै जाइहै पृथ्वी कुमारिही रहि जाइहै ॥ ५ ॥

इति बयासीवां शब्द समाप्त।

अथ तिरासीवां शब्द ॥ ८३ ॥

भूला वे अहमक नादाना। तुम हरदम रामहिं ना जाना १
बरबस आनिकै गाय पछारा गला काटि जिउ आप लिया।
जीता जिव मुरदा करि डारै तिसको कहत हलाल किया २

जाहि मासुको पाक कहतहैं ताकी उतपति सुनु भाई ।
रज बी रजसों मासु उपानी मासु नपाक जो तुम खाई ॥३॥
अपनो दोष कहत नहिं अहमक कहत हमारे वड़ेन किया ।
उसकी खून तुम्हारी गर्दन जिन तुमको उपदेश दिया॥४॥
स्याही गई सफेदी आई दिल सफेद अजहूं न हुआ ।
रोजा निमाज बांग क्या कीजै हुजरै भीतर बैठ मुआ॥५॥
पंडित वेद पुराण पढ़ै औ मोलनापढ़ै सो कुराना ।
कह कबीर वे नरकगये जिन हरदम रामहिं ना जाना॥६॥

१–५ तक के पदको अर्थ स्पष्टई है अंतके छठे तुकको अर्थ करैहैं। सब समें-टिकै जे हरमद कहे हर साइत श्वास श्वाशमें रामको नहीं जानते हैं ते नादान कहे बेवकूफ भूले अथवा हरदम कहे हरएकके दम कहे प्राणमें अंतर्यामी रूपते व्यापक परम पुरुष पर श्रीरामचन्द्र को जे बेवकूफ नहीं जानते हैं ते मोलना पंडित भूलिगये जो वे आपने हुजरामें बैठिकै रोजा निमाज किया औ कुरान किताब पढ़ा औ जो पंडित अपने घरकी कोठरीमें एकां[illegible]कै बहुत वेद शास्त्र को पढ़ा तौ का किया आखिर नरकही में गये [illegible] कि काहूको न सुन्यो कि बिना रामको जाने मुक्त ह्वैगये ॥ ६ ॥

इति तिरासीवां शब्द समाप्त ।

अथ चौरासीवां शब्द ॥ ८४ ॥

काजी तुम कौन किताब बखाना ।
झंखत बकत रह्यो निशि बासर मति एकौ नहिं जाना॥१॥
शक्ति न माने सुनति करतहौ मैं न बदौंगा भाई ।
जो खोदाय तुव सुनति करतहै आपुहिं काटि किन आई२॥

सुनति कराय तुरुक जो होना औरत की का कहिये ।
अर्द्धशरीरी नारि बखानै ताते हिंदू रहिये ॥ ३ ॥
घालि जनेऊ ब्राह्मण होना मेहरीको क्या पहिराया ।
वो तौ जन्म कि शूद्रिनि परुसा सो तुम पांड़े क्यों खाया४॥
हिंदू तुरुक कहांते आया किन यह राह चलाई ।
दिलमें खोज खोजु दिलहीमें भिश्त कहां किन पाई ॥५॥
कहै कबीर सुनोहो संतो जोर करतुहौ भारी ।
कबिरन ओट रामकी पकरी अंत चला पचिहारी ॥ ६ ॥

काजी तुम कौन किताब बखाना ।
झंखत बकत रहौ निशिवासर मति एकौ नहिं जाना॥ १ ॥

हे काजी ! तुम कौन किताबको बखानत रहौहौ निशिबासर वही किताबको बकत रहौहौ अरु बाहीमें झंखत कहे शंका करत रहौहौ सो कुरान किताब तात्पर्यते जो एक साहबको बर्णन करै है ताको जो तुम्हारी मति न जानत भई तौ तुम कुरान किताबकी एकऊ बस्तु न जानत भये ॥ १ ॥

शक्ति न माने सुनति करतहौ मैं न बदौंगा भाई ।
जो खोदाय तुव सुनति करति तौ आपु काटि किन आई२॥
घालि जनेऊ ब्राह्मण होना मेहरी को क्या पहिराया ।
वोतो जन्म की शूद्रिनि परुसा सो तुम पांड़े क्यों खाया३॥

सुनति किये जो मानतेहौ कि,हम मुसलमान हैं औ या नहीं मानते हौ कि, शक्ति जो माया सोई करैहै सो हे भाई ! मैं न बदौंगा जो खोदाय तेरी सुनति करतो तौ पेटही ते कटी आउती ॥ २ ॥ सो हे पंडित ! आपनी आत्माको साहबकी शक्ति न मान्यो । अरु ब्रह्मसाहबको न जान्यो जनेऊ पहिरिकै तुमतो ब्राह्मणभये औ अपनी मेहरीको कहा पहिरायैहै जाते वह ब्राह्मणी भई सो

तिहारी स्त्री तो जन्मकी शूद्रिनिहै सो परुसैहै औ हे पांड़े! तुम खाउहौ तातें तुम कैसे ब्राह्मण भये ब्राह्मण तौ ब्रह्म जानेते कहावैहै ॥ ३ ॥

हिन्दू तुरुक कहांते आया किन यह राह चलाई ।
दिलमें खोज खोजु दिलहीमें भिश्त कहां किन पाई॥४॥

आत्मातो एकईहै हिंदू तुरुक ये शरीरके भेदहैं यह शरीर कहां ते आयोहै औ यह राह कौन चलायो है अर्थात् बीचैते आये हैं बीचैते जायँगे सो दिलमें तुम खोजौ उसका खोज दिलही में है औ कौन भिश्त पायोहै अर्थाव खोदा-यका बंदा जो तिहारो जीवात्मा है जो हिंदू तुरुकमें एकई है सो तिहारे दिल-हीहै उसको जानो तो जानि परै उसके मिळनको खोज कहे राह वही आत्माहै जब आपने स्वरूपको जानोगे तब वाको पावोगे ॥ ४ ॥

कहै कबीर सुनो हो संतो जोर करतु है भारी ।
कबिरन ओट रामकी पकरी अंत चला पचिहारी ॥५॥

कबीरजी कहैहैं कि हे संतौ! सुनौ यह जीव आपने छूटि जाइबे को बड़ा जो-र करैहै कहे बहुत उपाय करै है नाना मतन करिकै ते कबीर काया के बीर जे जीवहैं ते औरे औरे मतनमें लगिकै राम अल्लाहके ओट कै और पकरत भये कहे और २ जे मतहैं ते राम अल्लाहके ओट कै देनबारे हैं तिनको पक-रिकै अथवा कबीर जे जीवैंह ते रामकी ओट न पकरत भये अर्थाव आपने जीवात्माको साहबको बंदा न जानत भये राम अल्लाहको बिसरि गये तातें अंतमें पचिकै कहे मरिकै अरु वे मतनते हारिकै चलेगये। जो यह मानि राख्यो तैं कि हमको स्वर्ग बिहिश्त होइ हम ब्रह्म होइँगे सो एकऊ न भये जौन कर्म करि राख्यो तैसोई कर्म नरक स्वर्गनमें भोग करन लग्यो ॥ ५ ॥

इति चौरासीवां शब्द समाप्त ।

अथ पचासीवां शब्द ॥ ८५ ॥

भूला लोग कहै घर मेरा ।
जा घर वामें फूला डोलै सो घर नाहीं तेरा ॥ १ ॥
हाथी घोडा बैल वाहनो संग्रह कियो घनेरा ।
बस्तीमें से दियो खदेरी जंगल कियो बसेरा ॥ २ ॥
गांठी बांधी खरच न पठयो बहुरि कियो नहिं फेरा ।
बीबी बाहर हरम महलमें बीच मियांको डेरा ॥ ३ ॥
नौ मन सूत अरुझि नहिं सुरझै जन्म २ अरुझेरा ।
कहै कबीर सुनो हो संतौ यहि पद करो निबेरा ॥ ४ ॥

भूला लोग कहै घर मेरा ।
जा घरवा में फूला डोलै सो घर नाहीं तेरा ॥ १ ॥

साहबको पार्षदरूप जो है हंसस्वरूप आपनो सांच शरीर ताको भूले लोग कहैहैं कि यह मिथ्या जो स्थूलशरीर सो हमारोहै सोजा घर स्थूल शरीरमें तैं फूलाडोलै है मेरो शरीरहै सो तेरा घर कहे शरीर नहीं है ॥ १ ॥

हाथी घोडा बैल बाहनो संग्रह कियो घनेरा ।
बस्ती मेंसे दियो खदेरी जंगल कियो बसेरा ॥ २ ॥
गांठी बांधी खरच न पठयो बहुरि कियो नहिं फेरा ।
बीबी बाहर हरम महल में बीच मियां को डेरा ॥ ३ ॥

बहुत हाथी घोड़े बैल इत्यादिक बाहनको संग्रह कियो परंतु जब तैं शरीर रूपी बस्तीते खदेरि जाइगो कहे शरीर छूटि जाइगो तब जंगलमें कहीं पीपर के तर भूत ह्वैके बसेर कहे बास करैगो अरु वह शरीरहूको बाहर खदेरिलै श्मशानमें जारि देइँगे तब वह हाथी घोड़े औरहीके ह्वै जाइँगे ॥ २ ॥ गांठी बांधि-धरचो अरु खर्च न पठयो कहे पुण्य न कियो जो वह लोकमें मिलिकै बहुरिकै

फेरा न कियो कहे यह शरीरमें नहीं पावैहै सो बीबी जो है साहबकी दई सुरति सो बाहरहै कहे संसार मुख ह्वै रही है औ हरम कहे लौंडी जो है माया सो महलमें है कहै सब शरीरन में है ताके बीचमें मियां जो है जीव ताको डेराहै ताको वह माया घेरे है ॥ ३ ॥

नौमन सूत अरुझि नाहिं सुरझै जन्म जन्म अरु झेरा ।
कहै कबीर सुनो हो संतौ यहि पद करो निबेरा ॥ ४ ॥

सो नौमन कहे नित्यही नवीन जौ मनहै अर्थात् मनके दिये नाना शरीर होयहैं सो नाना कर्म नाना मत जे सूतहै तिनमें अरुझिकै सुरझै नहीं है सो कबीरजी कहैहैं कि हे संतौ! यह पद को निबेरा करो कहे पांचौं शरीरमें अरुझो नौ है मन ताते भिन्नहोउ तौ तुम शरीरनते भिन्न ह्वैजाउ ॥ ४ ॥

इति पचासीवां शब्द समाप्त ।

अथ छियासीवां शब्द ॥ ८६ ॥

कबिरा तेरो घर कँदलामें या जग रहत भुलाना ।
गुरुकी कही करत नाहिं कोई अमहल महल देवाना ॥ १ ॥
सकल ब्रह्ममें हंस कबीरा कागन चोंच पसारा ।
मन मत कर्म धरै सब देही नाद बिंदु बिस्तारा ॥ २ ॥
सकल कबीरा बोलै बानी पानीमों घर छाया ।
लूट अनंत होत घट भीतर घटका मर्म न पाया ॥ ३ ॥
कामिनि रूपी सकल कबीरा मृगा चरिंदा होई ।
बड़ बड़ ज्ञानी मुनिवर थाके पकरि सकै नाहिं कोई ॥ ४ ॥
ब्रह्मा वरुण कुबेर पुरंदर पीपा प्रहलद चाखा ।
हिरणाकुश नख उदर विदारा तिनहुंक काल न राखा ॥ ५ ॥

गोरख ऐसो दत्त दिगम्बर नामदेव जयदेव दासा।
उनकी खबरि कहत नहिं कोई कहां कियेहैं वासा ॥ ६ ॥
चौपर खेल होत घट भीतर जन्मके पांसा ढारा।
दमदमकी कोइ खबरि न जानै करि न सकै निरवारा॥७॥
चारि दिशा महिमंड रचोहै रूम साम विच दिल्ली।
ता ऊपर कछु अजव तमाशा मारैहैं यम किल्ली ॥ ८ ॥
सब अवतार जासु महिमंडल अनत खड़ा कर जोरे।
अद्भुत अगम अथाह रचोहै ई सवशोभा तोरे ॥ ९ ॥
सकल कवीरा वोलै वीरा अजहूं हो हुशियारा।
कह कबीर गुरु सिकिली दर्पण हरदम करो पुकारा॥१०॥

कबिरा तेरो घर कँदलामें या जग रहत भुलाना।
गुरुकी कही करत नहिं कोई अमहल महल देवाना॥ १ ॥

कबीरजी कहैहैं कि हे कबिरा! कायाके बीर जीव तेरो घर तो कँदलामें है कहे आनंदको कंद कहे सारांश जो है साहबको धाम तहां है तेरो घर या जगतमें नहीं है तैं नाहक भुलान रहै है यहां गुरु कहे सबते श्रेष्ठ जे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र कहै हैं कि अबहू जो मोको जानो तौ मैं कालते छोड़ाइ लेउँ तिनको कह्यो कोई न मानिकै अरु आनंदको कंद उनको धाम छोड़िकै अमहल महल कहे जो कछु वस्तु नहीं है ऐसो जो है धोखा ब्रह्म तामें अरु कोई माया के प्रपंचमें देवाना ह्वै रह्यो है ॥ १ ॥

सकल ब्रह्ममें हंस कबीरा कागन चोंच पसारा।
मन मत कर्म धरै सबदेही नाद बिन्दु बिस्तारा ॥ २ ॥

हे हंस! कबिर कायाके बीर जीवते साहबको ब्रह्महीं कहै हैं तिनको कहिबो कागन कैसी चोंचको पसारिबो है जैसे कागनके आगे जो दूध भात औ

आमिष धरिदेउ तौ दूध भात न खायँ आमिषही खायँ तैसे साहब पुकारतई जायहैं कि तुम मेरे पास आवो मैं तुमको हंसरूप देउँ ताको छोड़िके जीव माया ब्रह्मके धोखामें लग्यो कागई होइहै नाना कर्मके बासनन ते शरीर छूटतमें जहां २ मन को मत होइहै कहे जहां २ मन जाइहै तहां २ सब देह धरै है नाद बिंदुके बिस्तारते सो नाद बिंदुको बिस्तार लिखि आये हैं ॥ २ ॥

सकल कबीरा बोलै बानी पानी मों घर छाया ।
लूट अनंत होत घट भीतर घटका मर्म न पाया ॥ ३ ॥

अरु ज्ञानी जे सब जीवहैं ते यह बाणी बोलै हैं कि यह शरीर पानी को घर छायाहै कहे पानीको बुल्ला है न जानो कब बिनाशि जाय कहे छूटि जाय सों मुखते तो यह कहै है अरु घट कहे शरीरके भीतर अनंत कहे बिना अंतको जोहै साहब ताकी लूटि होइजाइहै ताको नहीं देखैहै यह आत्मा साहबको है ताको भुलाइकै औरे मतनमें लगाइ देइहै वाको मर्म नहीं पावैहै ॥ ३ ॥

कामिनि रूपी सकल कबीरा मृगा चरिंदा होई ।
बड़ बड़ ज्ञानी मुनिवर थाके पकरि सकै नहिं कोई ॥ ४ ॥

सब कबीर जीवनके शरीर कामिनि रूपीहै कहे मृगीरूपी है तामें जो चलै सो चरिंदा कहावैहै सो चरिंदा कहे चलनवारो जोहै मन सो मृगाहै जब यह जीवात्माको यमदूत एकपुतरा देखावै हैं तब वह पुतरामें मनोमय जो लिंग शरीरहै सो जात रहै है अरु वही के साथ जीव प्रवेश करिजाइहै तब यमराज नाना कर्म भोग करावै हैं जौनें शरीरमें मन लोभ्यो मरतमें वाको स्मरण भयो सोई शरीर कर्म भोग करिकै धारण कियो सो मारितो यह भांतिते जायहै वह मंत्रको औ आत्मा के स्वरूपको कोई न पकरिपायो अर्थात् कोई न जान्यो ॥ ४ ॥

ब्रह्मा वरुण कुबेर पुरंदर पीपा प्रहलद चाखा ।
हिरणाकुश नख उदर बिदारा तिनहुँक काल न राखा ॥ ५ ॥
गोरख ऐसो दत्त दिगम्बर नामदेव जयदेव दासा ।
उनकी खबरि कहत नहिं कोई कहां किये हैंबासा ॥ ६ ॥

ये चारि तुकनमें जिनको कहि आये हैं तिनको काल जब खाइ लियो है कहे इनके शरीर जब छूटि गये हैं तब ये कहां बास कियो है यह कोई खबरि न जानतभयो सो जहां गये है अरु जहांकि गये नहीं आवै हैं तौने लोकको मूढ़जीव न जानतभये इहां नरसिंहै जीको लिख्यो तामें धुनि यहहै कि उपासक आपने आपने उपास्यनके साथ साहबही के लोक जाइ हैं उपास्य उपासक दोऊ जहां परम मुक्तावस्था में जायँ सो वह साहब के लोकको ये बद्धविषयी जीव कैसे जानैं ॥ ६ ॥

चौपर खेल होत घट भीतर जन्मके पांसा ढारा ।
दम दमकी कोई खबरि न जानै करि न सकै निरुवारा॥७॥

मन बुद्धि चित्त अंहकार ये अंतःकरण चतुष्टय हैं सोई चौपारि है ताको खेल घटके भीतर ह्वै रह्योहै इनहींके योगते नाना जन्म होइहैं सोई पांसा ढारिबो है सो दम दम कहे आपने श्वास श्वासकी खबरि तौ कोई जानै नहीं है कि आवत जातमें रकार मकार बिना जपे कब अंतःकरण शुद्ध ह्वैसकैहै अरु कों निरुवार करिसकै है अर्थात् कोई निरुवार नहीं करिसकै है अर्थात् या नहीं जानैहै कि हमारो जीवात्मा कहां जपैहै रकार मकार जीवात्मा सदा जपैहै तामें "प्रमाण रकारेण बहिर्याति मकारेण विशेत्पुनः । राम रामेति वै मंत्रं जीवो जपति सर्वदा" ॥ ७ ॥

चारि दिशा महि मंड रचो है रूम साम बिच दिल्ली ।
ता ऊपर कुछ अजब तमाशा मारे है यम किल्ली ॥ ८ ॥

महिमंडल जोहै शरीर तामें नाभि हृदय कंठ त्रिकुटी ये चारि दिशा रचत भये अरु रूमकहे सहस्रदल कमलहै अरु साम सुरति कमल है तौ ने सुरति कमलकें बीचमें दिल्ली है परंतु गुरुको स्थान तास्थानके ऊपर अजब तमाशाहै । सो कौन योगी प्राण चढ़ाइके सहस्र दल कमललों जाइहै कोई परम योगी प्राण चढ़ाइकै सुरति कमललों जाइहै परमपुरुष स्थानके ऊपर जहां अजब तमाशाहै तहां कोई नहीं जाइ सकैहै काहेते कि यमकिल्ली मारे है कहे दशवां दुवार बंद कियेहैं अजब तमाशा वह कैसे देखै सो कहैहैं कि यह ब्रह्म रंध्रते साकेत लोक जाको कहैं हैं परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्रको धाम वही साकेत लोकको दशवां स्थान फकीर

लोग जाहूत कहे हैं । तहांलों ब्रह्म ज्योतिकी डोरि लगी है वही डोरीको मक्र-तार कहैहैं सो वह मक्रतार सुषुम्णामें लगीहै जब परमगुरु रामनाम बताई है तब वही सुषुम्णा ह्वैकै मक्रतारकी डोरी ह्वैकै साहब के लोक जाय है तहां-अजब तमाशा कौनहै कि उहांके त्रिगुण गुल्म लता देखे तो पांचभौतिक से परेहै पै पांचभौतिक नहीं है आनंदरूप है ॥ ८ ॥

सब अवतार जासु महि मंडल अनँत खड़ो कर जोरे ।
अद्भुत अगम अथाह रचो है ई सब शोभा तोरे ॥ ९ ॥

सकल अवतार औ ईश्वर अनंत जिनके आगे कर जोड़े खडे हैं वह साहब लोक कैसो है अद्भुतहै कहे आश्चर्य है बचनमें नहीं आवै है औ अगमहै कहे उहां काहूकी गम नहीं है औ अथाह है कोई बर्णन करिकै थाह नहीं पायो कि यतनेहै सो हे जीव! यह सब शोभा तोरे साहबकी है तेरे देखिबे योग्यहै काहेते कि साहबौ द्विभुजहै औ तैंहूं द्विभुजहै और तो सब ईश्वर अवतार कोई अष्टभुज कोई चतुर्भुज मत्स्य कूर्म इत्यादिक हैं अथवा साहबके लोकमें जे ईश्वर अव-तार आदिक हैं ते सब अपनी शोभाको मंडल तोरे हैं अर्थात् उनकी शोभा साहबकी शोभाते मंद देखि परैहै ॥ ९ ॥

सकल कबीरा बोलै बीरा अजहूं हो हुशियारा ।
कह कबीर गुरु सिकिली दर्पण हरदम करो पुकारा ॥ १० ॥

हे सब कबीरौ! कायाके बीर जीवौ वही बीरा लेऊ अर्थात् परम पुरुष पर जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनको बीरालेउ अजहूं हुशियार होऊ जे मतनमें गुरुवा लोग समुझाइ समुझाइ लगाइ दिये है तिन मतनमें जब भर तुम रहौगे तब भर तुम्हारो जन्म मरण न छूटैगो ताते मतनको छोड़िदे सुरति कमलमें जेपरम गुरुहैं ते सिकिलीगरहैं तुम्हारे अंतःकरण साफ करिबेको ते राम बतावै हैं सो वा राम नाम सुनिकै हरदम पुकार करो तब साहबके इहां पहुंचौ अरु सब अवतार ईश्वर उनके द्वारे हाथ जोरे खड़े हैं तामें प्रमाण शिवसंहि-तामें हनुमान्जी प्रति अगस्त्यजी कहै हैं ॥ "आसीनं तमयोध्यायां सहस्र-स्तम्भमंडिते । मंडपे रत्नसंज्ञे च जानक्या सह राघवम् ॥ मत्स्यःकूर्मःकिरि-

नैंको नारसिंहोऽप्यनेकधा। वैकुंठोऽपि हयग्रीवो हरिः केशववामनौ ॥ यज्ञो नारायणो धर्मपुत्रो नरवरोऽपिच । देवकीनंदनःकृष्णो वासुदेवो बलोऽपिच ॥ पृष्णिगर्भो मधून्माथी गोविंदो माधवोऽपि च । वासुदेवो मरोऽनंतःसंकर्षण इरापतिः॥ मद्युम्नोऽप्यनुरुद्धश्च व्यूहास्सर्वेऽपि सर्वदा । रामं सदोपतिष्ठन्ते रामदेहा व्यवस्थिताः ॥ एतैरन्यैश्च संसेव्यो रामो नाम महेश्वरः । तेषामैश्वर्यदातृत्वात्तन्मूलत्वान्निरीश्वरः ॥ इंद्रनामा स इन्द्राणां पतिस्साक्षी गतिः प्रभुः । विष्णुस्स्वयं स विष्णुनां पतिर्वेदांतकृद्विभुः ॥ ब्रह्मा सब्रह्मणां कर्त्ता प्रजापतिपतिर्गतिः। रुद्राणां सपती रुद्रःकोटिरुद्र नियामकः ॥ चंद्रादित्यसहस्राणि रुद्रकोटिशतानि च । अवतारसहस्राणि शक्तिकोटिशतानि च ॥ ब्रह्मकोटिसहस्राणि दुर्गाकोशतानि च । महाभैरवकालादिकोटयर्बुदशतानि च ॥ गंधर्वाणां सहस्राणि देवकोटिशनानि च । सभां यस्य निषेवंते स श्रीराम इतीरितः" ॥ इति ॥ औ कबीरहू जी को प्रमाण॥ "जहँ सतगुरु खेलैं ऋतुबसंत । तहँ परम पुरुष सब साधु संत ॥ वह तीन लोकते भिन्नराज । तहँ अनहद धुनि चहुँ पास बाज॥ दीपक बरै जहँ निराधार । बिरलाजन कोई पाव पार ॥ जहँ कोटिकृष्ण जोरे दुहाथ । जहँ कोटिविष्णु नावैं सुमाथ ॥ जहँ कोटिन ब्रह्मा पढ़ पुरान । जहँ कोटि महादेव धरैं ध्यान ॥ जहँ कोटि सरस्वति करैं राग । जहँ कोटि इन्द्र गावने लाग ॥ जहँ गण गंधर्व मुनि गनि न जाहिं । सो तहँवां परकट आपु आहिं॥ तहँ चोवा चन्दन अरु अबीर । तहँ पुहुपबास भरि अतिगँभीर ॥ जहँ सुरति सुरङ्ग सुगन्धलीन । सब वही लोकमें बास कीन ॥ मैं अजरदीप पहुँच्यो सुजाइ । तहँ अजर पुरुषके दरश पाइ ॥ सो कह कबीर हृदया लगाइ । यह नरक उधारण नाम जाइ ॥ १० ॥

इति छियासीवां शब्द समाप्त ।

अथ सत्तासीवां शब्द ॥ ८७ ॥

कबिरा तेरो घर कंदलमें मनै अहेरा खेलै ।
बपुवारी आनंद मीर्गा रुची रुची शरमेलै ॥ १ ॥
चेतत रावल पावन षंडा सहजहि मूलै बांधै ।
ध्यान धनुष धरि ज्ञान वान बन योग सार शर साधै ॥ २ ॥

षट चक्र वेधि कमल वेध्यो जब जाइ उज्यारी कीन्हा ।
काम क्रोध अरु लोभ मोह ये हांकि साउजन दीन्हा ॥ ३ ॥
गगन मध्य रोंक्यो सो द्वारा जहां दिवस नहिं राती ।
दास कबीर जाय सो पहुंच्यो सब बिछुरे संग सँघाती ॥ ४ ॥

कबिरा तेरो घर कंदलमें मनै अहेरा खेलै ।
बपुवारी आनंद मीर्गा रुची रुची शरमेलै ॥ १ ॥

कबीरजी कहै हैं कि हे कबीर ! कहे कायाके बीरजीव तेरोघर कंदलामें है कहे आनंदको कंद कहे सार जो साहबको धाम है तहां है। जो कहो संसार कैसें भयो तौ तेरोबपु शिकारी बपुरी जो है नाना शरीर तेई वारी हैं। शिकारी जहां हांकै है सो वारी कहावै है।तहां जाइकै बिषयानंद ब्रह्मानंद जे हैं मृगाको शिकार खेलै हैं कोई विषयानंदरूप मृगामें वृत्ति शर मारि भोग करै हैं कोई शिकारी मन ब्रह्मानंदरूप मृगाको वृत्ति शर मारि भोग करै हैं ॥ १ ॥

चेतत रावल पावन षंढा सहजाहि मूलै बांधै ।
ध्यान धनुष धरि ज्ञानवान बन योग सार शर साधै २॥
षट चक्र वेधि कमल वेध्यो जब जाइ उज्यारी कीन्हा ।
काम क्रोध अरु लोभ मोह ये हांकि साउजन दीन्हा ३

जो शिकार खेलबो कैसे छूटै या मनको तौ रावल कहे सबके राजा ताको पावन कहे पायनको चेत करत कहे स्मरण करत अथवा पावन कहे पवित्र ह्वैकै षंढ कहे नपुंसक ब्रह्म तद्रूप जो जीव सो सहज समाधि लगाइकै मूलबंध करै यहै ध्यान जोहै धनुष तौनेको धरिकै साहब में आत्मा को लगाय दीबो जो बाण यही योगसार रूप शर साधै ॥ २ ॥ सोई योग बतावै हैं जे हठ योग करै हैं ते कुंडलिनी उठायकै छइउ चक्र बेधै हैं इहां कुछ कुंडलिनी उठाइबेको प्रयोजन नहीं है वह जो ब्रह्म ज्योतिकारकी मूलाधार चक्रते लै ब्रह्मांड है साकेतमें लगीहै सो छइउ चक्र को बेधिकै लगी है सुषुम्णा नाड़ी

ह्वैके ता ज्योतिरूपी डोरीमें गुरुजो युगुति बतावै है तौनी युगुति ते सुरतिके साथ जब जीवको साजि दियो तब छइउ चक्र को आपही वह ज्योति बेधै है सो वह ज्योतिके भीतर ह्वैकै षट्चक्र बेधिकै सहस्त्रदल कमलको बेध्यो तब उहां उजियारी देख्यो जाइ ब्रह्म प्रकाशकी तब काम क्रोध लोभ मोह मद मत्सर ई जे सावज हैं तिनको हांकि दीन्ह्यो कहे दूरिकै दीन्ह्यो ॥ ३ ॥

गगन मध्य रोंक्यो सो द्वारा जहां दिवस नहिं राती।
दास कबीर जाय सो पहुंच्यो सब बिछुरे संग सँघाती॥४

जहां सुरति कमलमें परमगुरु रकार मकार कहै हैं औ दशौ द्वार बंदहैं तहां न दिवसहै न रातिहै वह प्रकाशरूप ब्रह्मई है। सो उहां परम गुरुते राम-नाम सुनिकै वही नामते दशवों द्वार खोलिकै वही डोरी ह्वैकै दासजो कबीर जीव है सो परम पुरुष पर श्रीरामचन्द्र के लोकको पहुंचे जाइहैं तब संगके संघाती जे हैं चारिउ शरीर अरु प्रकाशरूप ब्रह्म जो है कैवल्य शरीर ताहूको बिछोह ह्वैजाई है।अथवा कबीरजी कहै हैं कि, मैं जो हौं साहबको दास सो अनि-र्वचनीय पार्षद शरीर जो है हंसशरीर ताको पाइकै वोही डोरी ब्रह्मज्योति ह्वै कै अनिर्वचनीय जो है साहबको धाम तहाँ पहुँच्योजाइ। तहां हे जीवो! तुमहूं पहुँचौ यह भ्रममें काहे परेहौ तुम तौ साहबके आनंदकन्द धामके हौ साहबके दास ताते रहित औ जौन तुम मानौ हौ सो तुम नहीं हौ ॥ ४ ॥

इति सत्तासीवां शब्द समाप्त।

अथ अट्ठासीवां शब्द ॥ ८८ ॥

गुरुमुख।

सावज न होइ भाई सावज न होइ।
वाकी मांसु भखै सब कोई ॥ १ ॥
सावज एक सकल संसारा अविगति वाकी बाता।
पेट फारि जो देखिये रे भाई आहि करेज न आता ॥ २ ॥

ऐसी वाकी मांसुरे भाई पल पल मांसु बिकाई ।
हाड़ गोड़ लै घूर पँवारै आगि धुवां नहिं खाई ॥ ३ ॥
शिर औ सींग कछू नहिं वाके पूंछ कहां वह पाई ।
सब पण्डित मिलि धन्धे परिया कबिर बनौरी गाई ॥४॥

सावज न होइ भाई सावज न होइ। वाकी मांसु भखैसब कोई १

साहब कहै हैं कि, जेहि शब्द ब्रह्ममें तुम लगे हौ औ तुमको वही भुलाय दियो सो सावज न होइ तौने शब्दको तात्पर्य्य तुम नहीं बूझो वहीके मांसको तुम सब भक्षौहौ कहे बाणी सब कहौहौ औ वही मांस सब जगत्है ताहीको भक्षौहौ कहे भोग करौहौ अरु वाको तात्पर्य्य सत्य पदार्थ जो मैंहौं ताको नहीं जानौहौ संपूर्ण बाणीको बिस्तार असत्यहै मैंहीं सत्यहौं ॥ १ ॥

सावज एक सकल संसारा अबिगति वाकी बाता ।
पेट फारि जो देखिये रे भाई आहि करेज न आता २

सो वाको पेट फारिकै जो देखिये अर्थात् जो वाको बिचारिकै देखिये तात्पर्य्यते तो जो तुम बिचार करिराख्यो है कि शब्द ब्रह्मके अर्थ को सारांश करेज निर्गुण ब्रह्म है सो नहीं है वेदतो तात्पर्य्य ते मोको बर्णन करै है अरु त्रिगुण माया आंतहै सो वाकी बात अबिगति है कहे अव्यक्त है काहूके जानिबे योग्य नहीं है जो मोको जानै है सोई वह सावज को जानै है ॥ २ ॥

ऐसी वाकी मांसुरे भाई पल पल मांसु बिकाई ।
हाड़ गोड़ लै घूर पँवारै आगि धुवां नहिं खाई ॥ ३ ॥

पल का कहावै है सो वह शब्द ब्रह्मकी मांसु जो है बाणी सोहै भाइउ! ऐसी है कि, पल पल कहे टका टका को बिकाइहै अर्थात् को बिकाइहै तामें प्रमाण॥ "कबीरजीको चौरासी अंगकी साखी॥ "गली गली गुरुवा फिरैं दिक्षा हमरी लेहु । की बूड़ौ की ऊबरौ टका परदनी देहु" ॥ थोरे थोरे अक्षरके मंत्र गुरुवा लोग देइहैं औ शिष्यनसों धन लेइहैं अरु केवल शब्द ब्रह्मते मुक्ति नहीं होइहै तामें

प्रमाण ॥ "शब्दे ब्रह्मणि निष्णातो न निष्णायात्परे यदि । श्रमस्तस्य श्रमफलं-ह्यधेनुमिव रक्षत" । इतिभागवते ॥ सो जब वे गुरुवा मंत्र दियो तब बाणी को जो हाड़ गोड़ रहै ज्ञानकांड कर्मकांड ताको घूर पँवारि दियो कहे ज्ञानकांड कर्मकांड घूर हैं तहां फेंकि दियो । उपासनाकांडी वह मंत्र दैकै उपासनामें लगाइ दियो तहां मंत्र दियो सो उन न जप्यो जाते ज्ञानाग्नि उत्पन्न होइ अरु भ्रम जरै औ धुवां जे हैं कल्मष ते निकसि जायँ सो बाणीरूपी वह मांसु ज्ञानाग्निते पकाइ नहीं गई अर्थात् वह मंत्रको अर्थ न जान्यो औ न अभ्यास कियो वह अज्ञानरूपी धुवां गुँगुआतै रह्यो निर्धूम न भई ॥ ३ ॥

शिर औ सींग कछू नाहिं वाके पूछ कहां वह पाई ।
सब पंडित मिलि धन्धे परिया कबिरं बनौरी गाई॥४॥

औ शिर जेहैं नित्य शब्द औ कार्यशब्द ते वाके नहीं हैं औ चारि जे सींग हैं नाम धातु उपसर्ग निपात ते वाके नहीं हैं काहेते कि, वाको अनिर्वचनीय कहैहैं। तौ पूंछ जोहै ब्रह्म ह्वैबो मोक्ष ताको कहां पावैगो अर्थात् जहांभर बचनमें आवैहै सो सब मिथ्याहै जो कहो मोक्षऊको रहि जाइबो न कह्यो तो रहि का गयो । तों शब्द तो तात्पर्य करिकै वर्णन करैहैं कि, निर्गुण सगुणके परे परम पुरुष जो मैं ताको सदाको अंश यह जीव है यह जो बिचार करै कि, मैं उनको हौं तों बद्धही नहीं है मुक्त काहेते होइ मुक्तही बनोहो बद्ध मुक्तती कथन मात्रहै तामें प्रमाण ॥ "अज्ञानसंज्ञौभवबंधमोक्षौ द्वौ नामनान्यौ स्त ऋतज्ञभावात्।अजस्त्रचि-न्त्यात्मनि केवलेपरे विचार्य्यमाणे तरणाविवाहनी"इति भागवते॥ अरु तात्पर्य्य करिकै शब्द यह मोहींको वर्णन करैहै सो भागवतादिकनमें प्रसिद्ध सुनैहै तऊ मूढ़ नहीं मानै है ॥ "शब्दब्रह्मपरब्रह्ममभोभे शाश्वतीतनू" ॥ अपने अपने अर्थ बनाइकै गाइ रहैहैं मोको नहीं जानै हैं सब पंडित धंधेमें परि रहे हैं नानामत बनाइ रहेहैं तिनकी बनौरीको कबीर जे हैं जीव उनके सब शिष्य ते गावै हैं अर्थात् अपने अपने आचार्यन के मतमें आरूढ़ ह्वैकै जो और कोई कहैहै तौ लड़ै हैं अरु पारिख करिकै सब वेदनको तात्पर्य जो मैं हौं ताको नहीं जानै हैं शब्द ब्रह्म तात्पर्य करिकै परम पुरुष पर जो मैं हौं ताहीको वर्णन करे हैं॥४॥

इति अट्ठासीवां शब्द समाप्त ।

अथ नवासीवां शब्द ॥ ८९ ॥

सुभागे केहि कारण लोभ लागे रतन जन्म खोये।
पूरब जन्म भूमिके कारण बीज काहेको बोये ॥ १ ॥
पानीसे जिन पिंडै साजे अगिनिहि कुंड रहाया।
दशौ मास माताके गर्भ कढ़ि वहुरि लागिली माया ॥ २॥
बालकसे पुनि वृद्ध हुआहै होनी रही सो होये।
जब यम ऐहैं बांधि लैजैहैं नयन भरी भरि रोये ॥ ३ ॥
जीवनके जिन आशा राख्यो काल गहे है श्वासा।
बाजीहै संसार कबीरा चित चेति ढारो पासा ॥ ४ ॥

हे सुभागे ! जीव तैंतो मेरो है यह संसारमें जो तैं लोभाकियो सो कौने कारण कियो काहेते कि आपने दुःख पाइबे को कोई उपाइ नहीं करैहै जैसे मनादिक कारिकै संसारमें परिगयो तैसे जो मेरो स्मरणकरत तो मैं हंसस्वरूपदेत्यों तामें स्थितह्वैकै मेरे धामको पहुँचते। सो तैं रत्न जोहै यह मानुषजन्म ताको धोइडारयो पूर्वजन्मकी भूमिकाके कारण कहे पूर्वजन्ममें जैसें कर्म करिराखे हैं तैसे सुख दुःख यह जन्म पावै है अरु जो यह जन्म करै है सो वह जन्ममें दुःख सुख पावैगो सो आंखिन तो देखि लिये कोई सुखदुःखके कारण रूप बीज तैं काहेको बोये और सब पदनको अर्थ स्पष्टई है ॥ १।४ ॥

इति नवासीवां शब्द समाप्त।

अथ नब्बे शब्द ॥ ९० ॥

गुरुमुख।

संत महन्तौ सुमिरौ सोई। जो कालफांससों वाचा होई १
दत्तात्रेय मर्म नहिं जाना मिथ्यास्वाद भुलाना।
सलिलमथिकै घृतको काढ़्यो ताहि समाधि समान ॥२॥

गोरख पवन रखै नहिं जाना योगयुक्ति अनुमाना ।
ऋद्धि सिद्धि संयम बहुतेरा पारब्रह्म नहिं जाना ॥ ३ ॥
वशिष्ठ शिष्ठ विद्या संपूरण राम ऐसे शिष शाखा ।
जाहि रामको करता कहिये तिनहुंक काल न राखा ॥४॥
हिन्दूकहै हमैं लै जरवै तुरुककहै मोर पीर ।
दूनों आय दीनमों झगरैं देखैं हंसकबीर ॥ ५ ॥

आगेके पदमें कहि आये काल श्वासा गहे है सो चेति पांसा डारो कहें बिचारि बिचारि कामकरो सोई बिचार बतावै है ।

संत महंतौ सुमिरौ सोई । जो कालफांससों बाचा होई॥१॥

साहब कहै हैं कि, हे संतमहंतौ ! ताको सुमिरण करो जो कालफांसतें बचो होइ ॥ १ ॥

दत्तात्रेय मर्म नहिं जाना मिथ्या स्वाद भुलाना ।
सलिला मथिकै घृतको काढ्यो ताहि समाधि समाना॥२॥

जो कहो दत्तात्रेय आपनें को ब्रह्म मानिकै ब्रह्महीं ह्वैगये तेतो वाके मर्मको कहे ज्ञानको जान्यो है सो प्रथम दत्तात्रियऊ नहीं जान्यो काहेते कि वहतो धोखा मिथ्या है सो तेऊ मिथ्यास्वादमें भुलाइ गये यह न बिचारयो कि, जौन बिचार करत करत रहिजाय है सो मेरो स्वरूप परम पुरुष पर श्रीरामचन्द्रको दास है जब वे बिग्रह देइ हैं आपनो तब उनके पास जाइ है सो यह तो न जान्यो पानी को मथिकै घृत कढ्यो वही धोखा ब्रह्मकी समाधिमें समाइ रह्यो सो कहूं पानिहूते घृत निकसै है उनके हाथ धोखई लग्यो ॥ २ ॥

गोरख पवन रखै नहिं जाना योगयुक्ति अनुमाना ।
ऋद्धि सिद्धि संयम बहुतेरा पारब्रह्म नहिं जाना ॥ ३ ॥

बाशिष्ठ शिष्ठ बिद्या संपूरण राम ऐसे शिष शाखा ।
जाहि रामको करता कहिये तिनहुंक काल न राखा ॥ ४ ॥

अरु योग युक्तिको अनुमान करिकै गोरख पवनराखै नहीं जान्यो कहे प्राण चढ़ावै नहीं जान्यो काहेते कि ऋद्धि सिद्धि संयममें लागिगये ब्रह्मके पार जे साहब हैं । तिनको न जान्यो ॥ ३ ॥ औ वशिष्ठ जे हैं संपूर्ण विद्यामें श्रेष्ठ तिनके राम ऐसे कहे श्रीरामचन्द्रहीके बरोबर रघुवंशी जिनमें शिष्य शाखा-भये तिनहूंको काळ नहीं राख्यो अर्थात् यह शरीर उनहूंको न रह्यो औ राजन में जिनको राम को कर्त्ता कहै हैं कि श्रीरामचन्द्रको जे उत्पन्न कियो है ऐसे दशरथौको काल न राख्यो । इहां गोरख आदिक योगी दत्तात्रियादिक ज्ञानी वशिष्ठ आदिक ब्रह्मर्षि ई सबते श्रेष्ठ हैं । याते संयोगी ज्ञानी ब्रह्मर्षि पृथ्वीके आइगये औ दशरथ महाराजको श्रीरामचन्द्रके बिछोह होत प्राण छूटिगयो सो ये सब राजर्षिते श्रेष्ठ हैं ताते दशरथ महाराज के कहे सब राजर्षि पृथ्वीभरके आयगये तिनहूंको काल न राखत भयो अर्थात् शरीरधारी कोई नहीं रहि जाइ है कोई योगकरि जो जियो तो ब्रह्माके दिन भर जियो महाप्रलयमें जब ब्रह्माको नाश ह्वै जाइ है तब ब्रह्मांडई नहीं रहै है और कोई कैसे रहै सो हंस समाधि लैकै मिलत है ॥ ४ ॥

हिन्दूकहै हमें लै जरवै तुरुक कहै मोर पीर ।
दूनों आइ दीनमों झगरैं देखै हंस कबीर ॥ ५ ॥

जाको हंसस्वरूप साहब देइहै सो हंस स्वरूपमें स्थित ह्वैकै साहबके पास जाइहै । सो साहब कहै है कि जो मोको जानै तौमैं हंसस्वरूप देऊँ तामें स्थित ह्वैकै मेरे पास आवै । सो मोको तो जानै नहींहै हिंदू कहैहैं कि हम वह ज्ञानाग्नि कैकै सबकर्म जारि देइँगे ब्रह्म होइ जाइँगे औ मुसलमान कहै हैं कि पिरान जाहिर जो मक्का है तहां हमारो पीरहै हमारे खाबिंदहैं ते हमारे कर्म सब जारि देइँगे । फिरि दोनों आइ दीनमें झगरै हैं वे कहै हैं कि तुम्हारा खोदाय झूठाहै वे कहै हैं कि तुम्हा-रा ईश्वर झूठा है सो जीवात्मा तौ मेरो बंदाहै सो आपने स्वरूपको जानिकै मोको जानै नहीं है आपने आपने अनुमानकरि आपने खाबिंद बनाइ लिये हैं

तिनको झगरा देखता कौन है जो सबके ऊपर होइहै सो साहब कहै हैं कि जिनको मैं हंसस्वरूप दियो है मेरे पास पहुंचै हैं ते सबके ऊँचेह्वैकै उनको झगरा देखते हैं औ हँसते हैं कि सांच साहबतो एकई हैं ताको जानै नहीं हैं आपुसमें झगरते हैं ॥ २ ॥

इति नब्बे शब्द समाप्त ।

अथ इक्यानबे शब्द ॥ ९१ ॥

जो देखा सो दुखिया देखा तनु धरि सुखी न देखा ।
उदय अस्तकी बात कहतहौं ताकर करहु विवेका ॥ १ ॥
बाटे बाटे सबकोइ दुखिया क्या गिरही बैरागी ।
शुकाचार्य दुखहीके कारण गर्भै माया त्यागी ॥ २ ॥
योगी दुखिया जंगम दुखिया तापसको दुखदूना ।
आशा तृष्णा सबघट व्यापै कोई महल नाहिं सूना ॥ ३ ॥
सांच कहौं तौ सब जगखीझै झूठ कहो नाहिं जाई ।
कह कबीर तेई भे दुखिया जिन यह राह चलाई ॥ ४ ॥

जो देखा सो दुखिया देखा तनुधरि सुखी न देखा
उदय अस्तकी बात कहतहौं ताकर करहु विवेका ॥ १ ॥

जाको संसारमें देखै हैं ताको सबको दुखिये हेखैं तनुधरिकै सुखिया काहूको नहीं देखा काहेते कि गर्भते जो जीव निकस्यो तो माया लपटि जाती है सो उदय अस्त कहे सब संसारकी बात कहौहौं अरु ताकर तुम विवेक करत जाउ ॥ १ ॥

बाटे बाटे सबकोइ दुखिया क्या गिरही बैरागी ।
शुकाचार्य दुखहीके कारण गर्भै माया त्यागी ॥ २ ॥

आपने आपने वाटमें कहे आपने आपने मतमें सबको दुखिया देखते हैं क्या गिरही क्या बैरागी अर्थात् त्रिगुणके मतमें सब परे हैं मायाको दुःख कोई नहीं

छोडै है जो जेतो पायो है सो वहीको सांच मानिकै सांचपदार्थ को नहीं जानै है दुःखहीके कारण शुकाचार्य गर्भमें मायाको त्यागिदियो । शुकाचार्य गर्भमें बारहबर्षके ह्वैगये सो गर्भते न निकसैं कहैं कि जो हम निकसैंगे तौ हमको माया लगि जायगी तब ब्रह्मादिक देवता सब जुरे आय न निकसे तब भगवान् आइ कह्यो कि बरदाके सींगमें सरसौं धारि देइ जब भर सरसौं सींगमें रहै है यतने काल भरमाया हम खैंचेले हैं निकासिआ ओ सो शुकाचार्य निकसे नारासहित बनको चलेगये साहबको मिले जाइ ॥ २ ॥

योगी दुखिया जंगम दुखिया तापसको दुख दूना ।
आशा तृष्णा सबघट व्यापै कोई महल नहिं सूना॥३॥
सांच कहौं तो सबजग खीझै झूठकहो नहिं जाई ।
कह कबीर तेई भे दुखिया जिन यह राह चलाई ॥४॥

योगिजंगम सबदुखियाहैं अरु तापसको तो दूनदुःखहै काहेते कि आशा तृष्णा सबके घटमें व्यापै हैं कोई महल सूननहीं है काहूको हृदय आशातृष्णाते सून नहीं ह सबके हृदयमें आशा तृष्णा व्यापि रही ह ॥ ३ ॥ श्रीकबीरजी कहै हैं कि अपने अपने मतमें जीव लगे हैं सांच मानिकै जो सांचको हम कहै हैं कि सांच जे परमपुरुष परश्रीराम चन्द्रहैं तिनमें लगौ जिनको तुम जानि राख्यो है ते असांचहैं तो खीझै हैं औ मोसों झूठ कह्यो नहीं जाइहै सो जे जे गुरुवा लोग आपनी आपनी मतकी राह चलाई हैं ते दुखिया ह्वै गये हैं तौ जिनको वे शिष्य बनायो है ते दुखिया काहे न होइँ ॥ ४ ॥

इति इक्यानबे शब्द समाप्त ।

अथ बानबे शब्द ॥ ९२ ॥

गुरुमुख ।

ता मनको चीन्हौ रे भाई । तनु छूटे मन कहां समाई॥१॥
सनक सनंदन जयदेव नामा। अंबरीष प्रहलाद सुदामा ॥२॥
भक्त सही मन उनहुं न जाना।भक्तिहेतु मन उनहुं न ज्ञाना३

भरथरिगोरखगोपीचंदा। तामनमिलिमिलिकियोअनंदा ४
जा मनको कोइ जान न भेवा।ता मन मगन भये शुकदेवा५
एकल निरंजन सकलशरीरा।तामें भ्रमि भ्रमि रहल कबीरा६

जो कहि आये कि नाना उपासना करि सांच साहबको न जान्यो सो इहां कहै हैं ॥

ता मनको चीन्हौ रे भाई । तनुछूटे मन कहां समाई ॥१॥
सनक सनंदन जयदेव नामा।अम्बरीष प्रहलाद सुदामा॥२॥
भक्त सही मन उनहुं न जाना।भक्तिहेतुमनउनहुं न ज्ञाना ३

जा मनते नाना उपासना भई ता मनको हे भाई ! चीन्हौ यह मन के को भयो है अर्थात् जौने मनते नाना उपासना ठाढ़ीकै लियो है सो मनतो तुमहींते भयो है सो यह बिचारतो करो जब सब शरीर छूटि जाइ है तब मन कहां समाइहै अर्थात् तुमहीं में समाइ जाइ है सो मनके मालिकतौ तुमहौ मनैते जो नाना उपासना ठाढ़ कै लियो है ते तुम्हारी उपासना सांच कैसे होइगी ॥ १ ॥ सनक सनंदन सनत्कुमार नामदेव जयदेव अंबरीष प्रहलाद सुदामा ये सब भक्त सही हैं संसारते छूटे हैं परन्तु मनको कोऊ न जान्यों जो मनको जानते तौ मनते भिन्नह्वै कै मनबचनके परे जो मेरो रामनाम है ताहीको जपते । और औरेकी भक्तिको कारणजो है मन तेहि कारिकै उनहूंको मेरो यथमज्ञान न होतभयो फेरि जब और २ सपासननमें कुछ न देख्यो तब साहब कहै हैं कि मोमें लगे काहेते कि वह मन आपैते होइहै अरु वह जीवात्माके परे मैं हौं काहेते कि यह मन आत्मैते होइहै अरु वह जीवात्माके परे मैंहौं काहेते कि मेरो अंशहै अरु ध्यानादि ज्ञानादिक सब मनते अनुमान करै हैं ताते ज्ञानको अनुभव ब्रह्म औ ध्यान को अनुभव उपास्य देवता ये मनके भीतर होवई चाहैं औ मन आत्माको है ताते मनमें आत्माको स्वरूप कैसे आइ सकै वहतो मनते परे है सो जब मनको छोड़ै है तब चिन्मात्र रहि जाइ

है यातें मन बचनके परे आत्मा होवई चहै अरु जब मैं हंसस्वरूप देउहौं तामें स्थितह्वैकै मेरे पास आवते कल्पनाकारकै नानारूप में न लगते ॥२॥३॥

भरथरिगोरखगोपीचंदा।तामनमिलिमिलिकियोअनन्दा ४
जामनकोकोइजाननभेवा।तामनमगन भये शुकदेवा ॥५॥

भरथरी गोरख गोपीचंद जे हैं ते वही मनहीं में मिलिकै आनंद कियो अर्थात् जौने ब्रह्ममें मिलिकै आनन्द कियो सो ब्रह्ममनहींको अनुभव है ॥४ ॥ सो जौने मनको अनुभव ब्रह्म होइ है अरु वह ब्रह्म उपास्यकनमे अर्थ आपनी नाना ईश्वर स्वरूप कल्पना करैहै तौने मनको भेद कोई नहीं जान्यो तौने मनके मगनमें कहे: राह में शुकदेव ना भये गर्भहीते मायाको त्यागि दियो औ सनक सनकादिक प्रह्लादादिक बहुत श्रमकरिकै फेरि फेरि समुझयो है सो साहब कहै है कि मोको जानिकै मेरे पास आये । इहां रामोपासक शुकदेव को छूटिगये जो कह्यो तौ रामोपासक सब आइ गये॥५॥

एकलनिरंजनसकलशरीरा।तामेंभ्रमिभ्रमिरहलकबीरा॥६॥

एक जो है निरंजन ब्रह्म सर्वव्यापी तिनहीं को नानाशरीर नारायणादिक महेशादि रूपहै तिनहीं में सिगरे कबीर कायाके बीर भ्रमि भ्रमि रहतभये कहे उनहींकी उपासना करतभये अपनो रूप औ मेरो रूप न जानत भये अरु ब्रह्म नानारूप कल्पनाकारि लियो है तामें प्रमाण ॥ "उपासकानां कार्यार्थं ब्रह्मणो रूपकल्पना"॥ याको अर्थ मेरे सर्व सिद्धांतमें है औ रामोपासक शुकदेवको कहि आये हैं सो शुकाचार्यई मुक्त ह्वैगयेहै तामें प्रमाण ॥ "शुको मुक्तो वामदेवो वा इति श्रुतेः" ॥ औ रामोपासक रहै हैं तामे प्रमाण ॥ "पादांबुजं रघुपतेः शरणं प्रपद्ये" ॥ इति भागवते ॥ औ कबीरऊजीको प्रमाण ॥ "आदिनाम शुकदेवजो पावा। पूर्वजन्मके कर्ममिटावा" ॥ ६ ॥

इति बानबे शब्द समाप्त ।

अथ तिरानबे शब्द ॥ ९३ ॥

बाबू ऐसो है संसार तिहारो येकलि है व्यवहारा ।
को अब अनख सहै प्रतिदिनको नाहिं न रहनि हमारा॥ १॥
सुमृति सुभाव सबै कोई जानै हृदया तत्त्व न बूझै ।
निरजिव आगे सरजिव थापै लोचन कछुव न सूझै ॥२॥
तजि अमृत विष काहेको अंचवै गांठी बांधो खोटा ।
चोरनको दिय पाट सिंहासन शाहुको कीन्हो ओटा ॥३॥
कह कबीर झूठो मिलि झूठा ठगहीठग व्यवहारा ।
तीनिलोक भरि पूरि रहो है नाहीं है पतियारा ॥ ४ ॥

बाबू ऐसो है संसार तिहारो येकलि है व्यवहारा ।
को अब अनख सहै प्रतिदिनको नाहिंन रहनि हमारा॥ १॥

बाबू कहे हे जीवो! तिहारो यह संसार ऐसोहै कि एक जो है मन ताहीके लिये यह संसारको व्यवहारहै अरु वहीके छोड़ेते संसार छूटि जाइहै तामें प्रमाण॥ "मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः"॥ तामें कबीरजीको प्रमाण ॥ "मुक्ति नहीं आकाशमें मुक्ति नहीं पाताल। जब मनकी मनसा मिटै तबहीं मुक्ति विशाल"॥ सो यह मनकी प्रतिदिनकी अनख कौन सहै अर्थात् अणुजो जीवहै ताको प्रतिदिन खाइ लेइहै कहे अपनेमें मिलाइ लेइहै सो रोजरोजको याके स्वरूपको भुलाइबो कौन सहै यह मन हमारे रहनि माफिक नहीं है यह जड हम चैतन्य याते हम कैसे मिलैंगे ॥ १ ॥

सुमृति सुभाव सबै कोई जानै हृदया तत्त्व न बूझै ।
निरजिव आगे सरजिव थापै लोचन कछुव न सूझै ॥२॥

सो यहि तरहते मनको स्वभाव सुमृति जे स्मृति है तामें बर्णन है सो सबै कोई जानै है परन्तु हृदयमें जो मनको तत्त्वकहे स्वरूपहै ताको कोई नहीं

बूझैहै कि हम यहि मनते भिन्नहैं। निर्जीव जो मन है ताके आगे सजीव जो है आत्मा ताको राखि देइहै कहे मिलाइ देइहै आंधरनको यह नहीं सूझि परै है कि, चित् जीवको जड़नमें मिलाइ जड़ काहे करैहै औआत्मा देहको एकही मानै है॥ २ ॥

ताजि अमृत विष काहेको अँचवै गांठी बांधो खोटा।
चोरनको दिय पाट सिंहासन शाहुको कीन्हो ओटा॥३॥

अमृत जो है आपने आत्माको स्वरूप ताको छोड़िके विष जो है मन तामें लगिकै नाना पर्दाथनमें लागिबो तो है ताको काहेते अँचवै हैं कि गांठीमें खोट जो मनहै ताको बांधै हैं सो काहैं सो काहे बांधै हैं मनते भिन्ननहीं ह्वै जाइहै आत्मा के स्वरूपको भुलाइकै मन में लगाइ देनवारे औ साहब को भुलाइ देनवारे औ संसारमें डारि देनवारे ऐसे जे गुरुवा लोगहैं तिनको पाट सिंहासन देइ है कहे उनको गुरु करैहै औ शाहु जे साधु जनहैं मनते छोड़ाय देन- वारे जे साहबको बताइ देइँ आत्माको स्वरूप जनाइकै तिनको ओट कीन्हे है कहे उनको दर्शनई नहीं लेइ है ॥ ३ ॥

कह कबीर झूठे मिलि झूठा ठगही ठग व्यवहारा।
तीनलोक भरि पूरि रह्योहै नाहीं है पतियारा ॥ ४ ॥

सो कबीरजी कहैहैं कि ऐसे जे लोगहैं ते झूठा जो मनको अनुभव ब्रह्महै तामें मिलिकै झूठ ह्वै रहै हैं ठगै ठगको व्यवहार ह्वै रह्यो है सो तीन लोक में वही भरिपूरि रह्यो है सो पतिआइबे लायक नहीं है जो ठगमें लगैहै सो ठगही ह्वै जाइहै जो कहो तीनलोकमें तौ साधुहूहैं पतिआइबे लायक कोई न रह्यो यह कैसे तो कबीर जी कहै हैं कि साधुजन तीनलोकके बाहरईहैं वे तीनलोकके भीतर नहीं हैं काहेते कि तीनि लोक मनको पसाराहै अरु वे मनते भिन्न हैं ॥ ४ ॥

इति तिरानबे शब्द समाप्त।

अथ चौरानबे शब्द ॥ ९४ ॥

कहौ निरंजन कवनी बानी ।
हाथ पांव मुख श्रवण न जिह्वा का कहि जपहु हो प्रानी॥१॥
ज्योतिहि ज्योतिज्योति जो कहिये ज्योति कौनसहिदानी ।
ज्योतिहि ज्योति ज्योति दैमार तव कहँ ज्योति समानी २॥
चारिवेद ब्रह्मा निज कहिया तिनहुं न यागति जानी ।
कहै कवीर सुनो हो संतो बूझहु पंडित ज्ञानी ॥ ३ ॥

जो कहौ मनहीं ते यह संसार है औ जब मनते छूटैगो तब ब्रह्मही हैजाइ गो तामें श्री कबीरजी कहै हैं ॥

कहौ निरंजन कवनी बानी ।
हाथ पांय मुख श्रवण न जिह्वा काकहि जपहु हो प्रानी॥१॥
ज्योतिहि ज्योति ज्योति जो कहिये ज्योति कौन सहिदानी।
ज्योतिहि ज्योति ज्योति दैमारै तव वह ज्योति समानी॥२॥

कहौतौ निरंजन ब्रह्मको कौनी बाणीते कहौहौ वाको तौ मन बचनके प कहौहौ तामें प्रमाण॥"यतो वाचो निवर्तते अप्राप्य मनसा सह"॥इति श्रुतेः ॥ अरु वाको तो बिना नाम रूप को कहौ हौ वाको कैसे जपौहौ औ कैसे ध्यान करौहौ॥ १॥जो कहौ वह प्रकाशरूप ब्रह्म है सो प्रकाशको ध्यान करैं हैं प्रकाशमें अपने आत्माको मिलाइ देइहैं ब्रह्म हमहीं है जाइहैं सो ज्योतिस्वरूप जो ब्रह्महै तामें आपने आत्माकी ज्योति ज्योतिकै कहे मिलाइकै जो कहिये वह ज्योति कौन सहिदानी रहिजाइहै अर्थात् जब सब पदार्थ मिथ्या मानत मानत एक प्रकाशरूप ब्रह्ममान्यो ताको मान्यो कि वहि ब्रह्म हमहीं ब्रह्म हैं सो जब :भर यह माने रह्यो कि वह ब्रह्म हमहीं हैं तबभर तो तिहारो अनुभव रहैहै औ जब अनुभवऊ मिटिगयो तब तुमहीं रहिजाउहौ तब वहि ब्रह्मकी कौन सहिदानी रहिजाइ है अर्थात कछु नहीं रहिजाय है तुमहीं रहि जाउ हौ यही प्रकार जब ब्रह्मज्योति

आत्माकी ज्योति मिलायकै वहि ज्योति को दैमारचो कहे छोड्यो अर्थात सबको निराकरण कै कैवल्य शरीरमें प्राप्त भयो अरु वहूको छोड़्यो तब आ-त्माकी ज्योति कहां समाईहै सो कहै हैं जीवके मुक्त भये पर परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र हंसस्वरूप जेइहैं तामें टिकिकै साहबकी सेवा जीव करैहै यह ज्ञानतो जीवजानै नहीं है वही ब्रह्म प्रकाश को आनिराख्यो है कि हमैंहीं ब्रह्महैं सो जब मनको निराकरण ह्वै गयो तब ब्रह्महू को ह्वैजाय है तब आत्मै रहिजाय है याते मनै को अनुभव ब्रह्महै सो जौने हंस स्वरूपमें वा ज्योति समाईहै ताको बिचारकरो ॥ २ ॥

चारिवेद ब्रह्मा निजकहिया तिनहुं न या गति जानी ।
कहै कबीर सुनो हो संतौ बूझहु पंडित ज्ञानी ॥ ३ ॥

ब्रह्मा चारिवेदकह्यो तिनमें यहकह्यो कि मुक्तभये पर विग्रहको लाभ होयहै॥ "मुक्तस्य विग्रहो लाभः"॥इत्यादिक श्रुति औरवही कह्यो तऊ न जान्यो काहेते जो जानते तौ जगत् की उत्पत्ति न करते हंसस्वरूपमें टिकिकै साहबके लोक-को चले जाते सो कबीरजी कहै हैं कि हे संतौ ! सुनौ जाके सारासार बिचा-रिणी बुद्धिहोय सो पंडित कहावै सोई पंडितहै सो हे ज्ञानिउ ! जिन संपूर्ण असारको छोड़ि कै सार जे साहबहैं तिनको ग्रहण कैलियो ऐसे जे पंडितहैं तिनसों बूझो वहगति वोई बूझैहैं तबहीं तिहारो धोखा ब्रह्म छूटैगो ॥ ३ ॥

इति चौरानबे शब्द समाप्त ।

अथ पंचानबे शब्द ॥ ९५ ॥

कोअसकरैनगरकोतवलिया। मासुफैलाय गीधरखवरिया १
मूस भो नाव मँजारि कँड़हरिया। सोवै दादुर सर्प पहरिया २
बैल बियाय गायभै बाँझा । बछवै दुहिया तिनतिन साँझा ३
नितउठि सिंहस्यारसों जूझै। कबिरक पद जन बिरला बूझै४

साहब कहैहैं या संसाररूपी नगरकी कोतवाली को करै जौने नगरमें शरीररूपी मांस फैलाहै। गीध जो निर्जन काल सो रखवारहै औ जहां जीवको स्वरूप ज्ञान जो मूसरूप नाव ताके बिलार कड़हारियाहै कहे गुरुवालोग औ दादुर जो जीवहै सो सोवैह प्राण जो सर्प सो पहरी हैं पै ई नानाशरीरमें लैजाइहैं औ गाय जो गायत्री सो आपने तात्पर्य छपाय राख्यो सो बांझ भई औ बैल जो शब्द ब्रह्म सो बियाय है कहे नाना ग्रन्थरूप बछवा भये तेई बछवाको तीनि तीनि सांझ दुहैहैं अर्थात् रजोगुणी तमोगुणी सतोगुणी सब वाही को दुहै हैं कहे पढ़े सुनैहैं औ सिंह जो विवेक है सो सियार जो कुमति तासों रोजही जूझैह सो कबीर जो है जीव ताको पद जो है मेरो धाम ताको कोई विरला बूझै है जे मेरे धाम को बूझै हैं ते संसारते छूटि जायहैं ॥ ४ ॥

इति पंचानबे शब्द समाप्त ।

अथ छानबे शब्द ॥ ९६ ॥

काकहि रोवहुगे बहुतेरा ।बहुतक गये फिरे नहिं फेरा॥१॥
हमरी बात बतैं न सँभारा। बात गर्भकी तैं न बिचारा॥२॥
अब तैं रोया क्या तैं पाया। केहि कारण तैं मोंहि रोवाया३
कहै कबीर सुनो नर लोई ।कालके बशहि परो मति कोई४

का कहिकै रोवोहौ बहुत तरहते कि, ये हमारे भाईहैं, ई बाप हैं, ईपुत्र हैं बहुत यही तरहते गयेहैं फेरि नहीं फेरेफिरे हैं ॥ १ ॥ सो जब जब हमको तेरो दुःखदेखिकै करुणाभई हमारो वा तोको उपदेश दियो सो तू न सँभारे जो करार किये तैं कि, मैं भजन करौंगो । सो न बिचारे । साहबको भजन न किये । अबतैं गर्भमें जाय जाय संसारमें आय आयकै रोवै है कहे दुःखपावैहै सो क्या तैं पाये अब हमको तैं काहे रोवावैहै तेरो दुःख देखिकै मोको दुःख होय है सो कबीरजी कहैहैं कि, हे नर लोगो! साहबको जानौगे तबहीं कालते बचौगे सो साहबको भुलायकै काहे कालके बशपरौहौ संसार दुःखपावौहौ॥४॥

इति छानबे शब्द समाप्त ।

अथ सत्तानबे शब्द ॥ ९७ ॥

अल्लह राम जीव तेरी नाईं ।
जन पर मेहर होहु तुम साईं ॥ १ ॥
क्या मूड़ी भूमिहिशिरनाये क्या जल देह नहाये ।
खून करै मसकीन कहावै गुणको रहै छिपाये ॥ २ ॥
क्या भो वजू मज्जन कीन्हे क्या मसजिद शिरनाये ।
हृदया कपट निमाज गुजारै कह भो मक्का जाये ॥ ३ ॥
हिंदू एकादशि चौविस, रोजा मुसलम तीस बनाये ।
ग्यारह मास कहौ किन टारौ ये केहि माहँ समाये ४॥
पूरुब दिशि में हरिको बासा पश्चिम अलह मुकामा ।
दिलमें खोज दिलमें देखो यहै करीमा रामा ॥ ५ ॥
जो खोदाय मसजिदमें बसतुहै और मुलुक केहि केरा।
तीरथ मूरति राम निवासी दुइ महँ किनहुं न हेरा॥६॥
वेद किताब कीन किन झूठा झूठा जो न बिचारै ।
सब घट माहँ एक करि लखै मैं दूजा करि मारै ॥७॥
जेते औरत मर्द उपाने सो सब रूप तुम्हारा ।
कबिर पोंगड़ा अलह रामका सो गुरु पीर हमारा ८॥

अल्लह राम जीव तेरी नाईं । जन पर मेहर होहु तुम साईं १

श्रीकबीरजी कहे हैं कि, हे श्रीरामचन्द्र ! कोई तुमको अल्लाह कहैहै कोई रामकहैहै हिंदू मुसलमान दोउनमें शरीरभेद है जीव तो एकईहै सबमें बिभु चैतन्य तुमहौ। अरु चैतन्यजीव है सो ज्योति तुम्हारी है हिंदू मुसलमानको आत्मा तुम्हारी है तुमदूनोंके साईंहौ ताते तुम्हारे जन जेहै हिंदू तुरुक दोऊ हैं तिनके ऊपर मेहरवानी करौ अर्थात् दयाकरौ ॥ १ ॥

क्या मूड़ी भूमिहि शिर नाये क्या जल देह नहाये।
खून करै मसकीन कहावै गुणको रहै छिपाये॥ २॥

कबीरजी कहै हैं कि, हिंदू तुरुक तुमको बिसराइकै और और बिचार करै हैं या चित्तमें न दीजै मिहर करिये काहेते कि, तुरुक मूड़ी भूमि जो गोर तामें शिर नावै है औ हिन्दू बहुत जलसों नहायहै याते काहभयो आपको तो जनबै न कियो औ जीवनके गरकाटै है ऐसो खूनकरै तौन खून तौ छिपावै है आपतें जे सर्वत्रपूर्ण हैं तिनको नहीं जानै है औ मसकीन जो फकीरसो कहावै है याते कहाभयो ॥ २ ॥

क्या भो वजू मज्जन कीन्हे का मसजिद शिर नाये।
हृदया कपट निमाज गुजारै कहाभो मक्का जाये॥ ३॥
हिंदू एकादशि चौबिस रोजा मुसलम तीस बनाये।
ग्यारह मास कहौ किन टारौ ये केहि माहँ समाये॥ ४॥

हिन्दू बहुत प्रकारके मज्जनकरै हैं औ तुरुक वजूजो कुल्ला मुखारी करिके हृदयमें कपट सहित निमाज़ गुजारचो, मसजिद में माथ नवायो, मक्का गयो यातें काह भयो ? आपको तों जनबै न कियो ॥ ३ ॥ हिन्दू तौ चौबिस एकादशी रहै औ तुरुक तीसरोजा रहे यातें काहभयो ? काहेते याते जनबै न कियो कि और दिन ये काहेमें समायँगे ई सब दिन साहिब के हैं ग्यारह मास काके हैं ॥ ४ ॥

पुरुब दिशिमें हरि को बासा पश्चिम अलह मुकामा।
दिलमें खोज दिलैमें देखो यहै करीमा रामा॥ ५॥
जो खोदाय मसजिदमें वसतुहै और मुलुक केहि केरा।
तीरथ मूरति राम निवासी दुइमें किनहुँ न हेरा॥ ६॥

हिंदू कहैहैं कि, पूरुब औ उत्तरके कोनेमें सुमेरुहै ताहीमें बैकुंठ है वहँते सूर्य उदय होइहै तहँ हरिको बासहै ताही ओर पूजा ध्यान करै हैं। औ पश्चिमकैति

मक्काहै तहां अल्लाहको बास है ताही ओर मुसलमान निमाज़ गुज़ारै हैं। सो याते काह भयो ? आपने दिलमें खोज कैकै तौ देखबै न कियो कि, करीम जे खुदा राम जे रामचंद्र ते दिलहीमें हैं हिंदू तुरुक दोउनमें वोई हैं ये तो शरीर आय साहब एकई है या न जानै तौ काहभयो ॥ ५ ॥ मुसल्मान लोग या मानै हैं खोदाय मसजिद में वसतु है औ हिन्दू मानै हैं कि रामचन्द्र मूर्त्ति औ तीर्थ में बसै हैं याते काह भयो ? काहेते दुइ में या बात कोई न बिचारे कि, और मुल्कमें को बसै है सो सर्वत्र साहिबही पूर्ण है यहै न जानने ते सब आपने आपने पक्षमें लगे हैं ॥ ६ ॥

वेद किताब कीन्ह किन झूठा झूठा जो न विचारै।
सब घट एक एक करि लेखै भय दूजा करि मारै ॥ ७॥

वेद वाले किताबको झूठाकहै हैं, किताब वाले वेदको झूठाकहै हैं सो या कहा झूठाहै इनको को झूठा करिसकै है। झूठा वही है जो इनको नहीं बिचारै है कि, वेदकिताबको यही सिद्धांत है साहब सर्वत्रपूर्ण है हिंदूके याहै कि, सब-नाम साहिबहीके हैं ॥ " सर्वाणि ना मानि यमाविंशतिइति श्रुतिः " ॥ औमुस-ल्मानके " जामैजमीसिफात जामै जमीअसमात " यह कलामुल्लाके किताबमें लिखै है सो घट घटमें चित्त स्वरूप जीव एकही है सबके साहब रामचन्द्रही हैं; तिनको एक करि लेखै भय दूसरेते होय है ताको मारै सो याते बिचारबै न कियो तौ काह भयो ॥ ७ ॥

जेते औरत मर्द उपाने सो सब रूप तुम्हारा।
कबिर पोंगड़ा अलह रामको सो गुरु पीर हमारा ॥ ८॥

सो कबीरजी कहै हैं कि, जेते औरत औ मर्द उपाने कहे उपजे हैं ते सब तुम्हारे रूप हैं काहेते कि, चित् जो तुम्हारो विग्रहहै ताही ते जगत् है । औ कबिर कहे कायाके बीर जे जीवहैं ते हे अल्लाह राम तिहारे जीवनके पोंगड़ा हैं अर्थात् तुमहीं घट घट में बोलत हौ, तुमको जानिबेको इनके कुदरति नहीं है चाहौ तुम उपदेशकरि आपनेमें लगावो चाहौ गुरुपीर द्वारा उपदेश

करि आपनेमें लगावो इनको वश नहीं है तामें प्रमाण ॥ "यथादारुमयी-योषिन्नृत्यते कुहकेच्छया । एवमीश्वरतंत्रोयमीहते सुखदुःखयोः" ॥ चौपाई ॥ " उमा दारुयोषितकी नाईं । सबैनचावत रामगोसाईं" ॥ ८ ॥

इति सत्तानबे शब्द समाप्त ।

अथ अट्ठानबे शब्द ॥ ९८ ॥

आवो वे आवो मुझे हरिको नाम। औरसकल तजुकौनेकाम १
कहँ तब आदम कहँ तब हवा । कहँ तब पीर पैगम्बर हुवा २ ॥
कहँ तब जिमींकहां असमाना। कहँ तब वेद किताब कुराना ३
जिन दुनियामें रची मसीद । झूठो रोजा झूठ ईद ॥ ४ ॥
सांच एक अल्लाःको नाम। ताको नय नय करौ सलाम ॥ ५ ॥
कहुधौं भिश्त कहांते आई। किसके कहे तुम छुरी चलाई ६ ॥
करता किरतिम बाजी लाई । हिंदु तुरुक दुइ राह चलाई ७ ॥
कहँ तबदिवस कहांतब राती। कहँ तबकिरतिम कीउतपाती ८
नहिंवाकेजातिनहींवाकेपांती। कहकबीरवाकेदिवसनराती ९

आवो बेआवोमुझे हरिको नाम। औरसकल तजु कौनेकाम १
कहँ तब आदम कहँ तब हवा । कहँ तब पीर पैगम्बर हुवा २ ॥
कहँ तब जिमी कहाँ असमाना। कहँ तब वेदकिताब कुराना ३

श्रीकबीरजी कहैहैं कि, जौने नाममें सब नामहैं तौने जो मन बचनके परे हरिको नाम है सो हे जीव ताको तैं बिचारकरु कि, मोको आवै । और सब बस्तु झूठे छोड़िदे, कौने कामके हैं । जब वह नाम रह्योहै आदिमें तब कुछ नहीं रह्यो ॥ १ ॥ ॥ २ ॥ ३ ॥ पदका अर्थ स्पष्ट है भाव यह है कि, ये जे कहिआये ते कहां रहैहैं अर्थात् कोई नहीं रहे ॥ २ ॥ ३ ॥

जिन दुनियामें रची मसीद । झूठी रोजा झूठी ईद ॥ ४ ॥
सांच एक अल्लाःको नाम। ताको नय नय करो सलाम॥५॥
कहुधौं भिश्त कहाँते आई।किसके कहे तुम छुरी चलाई६॥

अरु जीव जिन संसार में मसीद जो मसजिद शरीर रच्येहै ते कर्तारौ नहीं रहे ॥४ ॥ सांच एक मन बचनके परे अल्लाःको नामहै ताको नय नयकै सलाम करो और सब झूंठा है जिसके बनाये भिश्त भईहै तेऊ वही नामते प्रकट भये हैं तुम किसके कहे जीव मारते हौ ई सब झूठे हैं ॥५॥ ६ ॥

करता किरतिम बाजी लाई । हिंदु तुरुक दुइ राह चलाई७
कहँ तबदिवस कहाँ तब राती।कहँतबकिरतिमकीउतपाती८
नहिंवाकेजाति नहींवाकेपांती।कहैकबीरवाके दिवसनराती९

सो कर्ता कै कृत्रिम जो माया है सो बाजी लगायकै दुइ राह चलाईहै॥७॥ जब प्रथम साहब सुराति दियेहै तब कहां दिन रह्योहै कहां राति रही कहां कृत्रिम जो माया ताकी उत्पत्ति रही है ? न वाके कछु जाति है जो कहिये, वा ब्रह्ममें है, मायामें है, सत्चित है तौ वा एकऊमें नहीं है । न जाति है वाके एकई साहब हैं दुइ चारि साहब नहीं हैं न वाके दिवस है न राति है कहे ज्ञान है न अज्ञान है ताते साहबको सांच नाम जपौ ॥ ८ ॥ ९ ॥

इति अट्ठानवे शब्द समाप्त ।

अथ निन्नानबे शब्द ॥ ९९ ॥

अब कहँ चल्यो अकेले मिंता।उठिकिनकरहुघरहुकीचिंता १
खीर खांड़ घृत पिंड समारा ।सो तन लै बाहर कै डारा॥२॥
जेहि शिररचिरचिबांध्योपागा।सोशिररतनाबिदाराहिंकागा ३
हाड़ जरैं जस लकड़ीझूरी।केश जरैं जस तृणकै कूरी ॥ ४ ॥

आवत संग न जातको साथी। काह भयो दल साजे हाथी ५
मायाको रस लेइ न पाया। अंतर यम बिलार ह्वै धाया ६
कहकबीरनरअजहुंनजागा।यमकोमोंगरामधिशिरलागा ७

श्री कबीरजी कहै हैं कि, हे जीवौ ! जैसो या पदमें कहि आये हैं तैसो तिहारो हवाल ह्वै रह्यो है । जो तुम परम पुरुष पर श्रीरामचन्द्रको नँ जानौगे तौ तिहारे शिरमें यमको मोगदरलगैगो ॥१॥ ७ ॥

इति निन्नानबे शब्द समाप्त ।

अथ सौ शब्द ॥ १०० ॥

देखौ लोगौ हरिकी सगाई । माय धरै पुत धिय संग जाई१
सासु ननदि मिलि अदल चलाई।मादरिया गृह बेटी जाई२
हम बहनोइ राम मोर सारा । हमहिं बाप हरि पुत्र हमारा ३
कहै कबीर हरीके बूता । राम रमैतें कुक्कुरि के पूता ॥ ४ ॥

हे जीवो ! सब संसारकी सगाई न देखो दुःखकै हरैया जे हरि हैं तिनकी सगाई देखो । अर्थात् साहबमें लागो तो वे संसार दुःख दूरि करि देइंगे । जो संसारमें लागोगे तो माई जो माया सो तुमको धरैगी तुम जीवो वा मायाको पुत्र ह्वै रह्यो है । समष्टि ते व्यष्टि जीव मायाही करैहै याते मायाको माय कह्यो है अब जीवके बुद्धि उत्पन्न होयहै याते जीवकी धी कहे कन्या है । सो तैं बुद्धिके संग बिगारि गयो और और में बुद्धि निश्चय कराइ नरकमें डारि दियो ॥ १ ॥ बुद्धि कर्म की बासना ते उत्पत्ति होय है जौनै प्रकारकी बासना होय है तैसी बुद्धि होइ है सो बासना जीवकी सासु है औ जीवकी सुरति बहिनी है काहेते कि, वही सुरति पाइकै जीव चैतन्य भयो है संसारी भयो है औ वह सुरति जब साहब मुख होइगी तब साहब को पावैगो सो येई जे हैं बुद्धिकी सासु ननँदि हैं तेई अदल जो हैं हुकुमसो चलाइकै शुद्ध समष्टि

जीवको संसारमें डारि देइ हैं सो कैसे डारि देइहै सो कहै हैं जौन बादरको नट नचावै है सो मादारिया कहावै सो मनहै ताकी बेटी जो है इच्छा सो उत्पन्न भई तब जीव संसारमें पर्‌यो ॥२॥ हे जीव! तैं यह बिचारु कि, यामें परिकै हम बहनोय हैं अर्थात् बहन वारे हैं सो बही जायँगे अरु हमारे सार कहे सारांश रामै हैं औ हमारे बाप रामै हैं औ पुत्र रामै हैं तामें प्रमाण ॥ "रामो माता मत्पिता रामचन्द्रः स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः । सर्वस्वं मेरामचन्द्रो दयालुर्नान्यं जाने नैव जाने न जाने" ॥ तामेंकबीरजीहूकोप्रमाण ॥ "राम हमारे बाप हैं राम हमारे भ्रात । राम हमारी जाति हैं, राम हमारी पांत"॥ सो यह बिचारिकै श्रीकबीरजी कहै हैं कि, हारिके बूता कहे हारिनके बूतते अर्थात् अपने बलते नहीं। कुकुरी जो माया है ताके पति हे जीवो! सर्व नात रामै सों मानिकै रामैमें रमो अर्थात् जब तुम साहबके होउगे तब साहब हंस स्वरूप दैकै तुमको अपने धामको बोलाइ लेइँगे ॥ ३ ॥ ४ ॥

इति सवां शब्द समाप्त ।

अथ एकसै एक शब्द ॥ १०१ ॥

देखि देखि जिय अचरज होई । यह पद बूझै बिरला कोई १
धरती उलटि अकाशहि जाई । चींटीके मुख हस्ति समाई २
बिन पवनै जहँ पर्वत उड़ै । जीव जंतु सब बिरछा बुड़ै॥३॥
सूखै सरवर उठै हिलोल।बिनु जल चकवा करै कलोल ॥४॥
बैठा पण्डित पढ़ै पुरान । बिन देखे का करै बखान॥ ५ ॥
कह कबीर जो पद को जान । सोई संत सदा परमान॥६॥

देखि देखि जिय अचरज होई।यह पद बूझै बिरला कोई॥१॥
धरती उलटि अकाशहि जाई । चींटीके मुख हस्ति समाई २

श्रीकबीरजी कहै हैं कि मैं तो स्पष्टई कहौहौं पै यह पद जो साकेत लोक ताको कोई बिरला बूझै है सो यह देखि देखि मोको बड़ो आश्चर्य होइ है ॥ १ ॥ जब महाप्रलय होय है तब धरती उलटिकै आकाशको जात रहैहै कहे पृथ्वी जलमें जल तेजमें तेज वायुमें वायु आकाशमें समाइ जाइहै अरु वहौ जो है आकाश सो अहङ्कारमें समाइ है अरु अहङ्कार महत्तत्त्व में समाइहै सो महत्तत्त्व मनहै काहेते कि यह सब बिस्तार मनहीं को है सो महत्तत्त्व जो है आदि कारण मन हाथी सो भगवत् आपना रूप जो है जगत्‌की मूल-शक्ति सूक्ष्म चींटी ताके मुख में समाइ है ॥ २ ॥

बिन पवनै जहँ पर्वत उड़ै । जीव जंतु सब बिरछा बुड़ै ३

सो वह साहबके अज्ञान रूपा मूल प्रकृति लोक प्रकाशमें जो समष्टि जीवहैं तहां समानी रहै है पृथ्वी आदिक तो समाइ गये हैं उहां पवन नहीं है परन्तु वह चैतन्याकाश कहे ब्रह्मरूपी आकाश मे अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड जे पर्वत हैं ते उड़तई रहै हैं अरु वही सरवरमें जीव जन्तु ते सहित जे संसार रूपी वृक्षहैं ते बूड़ेहैं अर्थात वही ब्रह्ममें सब संसारकी लय होय है ॥ ३ ॥

सूखे सरवर उठै हिलोल । बिनु जल चकवा करै कलोल ४
बैठा पण्डित पढ़ै पुरान । बिन देखे का करै बखान ५

वह ब्रह्मतो सूखा सरोवरहै अर्थात् सो ब्रह्म महींहौं यह मानिबो मिथ्या है लोक प्रकाश ब्रह्म सत्य है तौने के प्रकाश की हिलोर उठै है तहां बाणीरूपी जल तौ है नहीं औ चकवा जे जीवहैं ते कलोल करै हैं कहे वहैंते पुनि बाणीको उत्पत्ति करिकै संसारी ह्वै जाइहैं ॥ ४ ॥ पण्डित जे हैं ते बैठे पुराण पढ़ै हैं अरु उत्पत्ति प्रलयको सब बखान करै हैं यह तो नहीं समुझै हैं कि वह तो बिन देखे का है कहे शून्य है जो हम ज्ञान उपदेश करिकै वहिं ब्रह्ममें लगावैगे तौ भगवत् अज्ञान रूपी कारणशक्ति तौ उहां बनिही है माया फेरि न धरि लै आवैगी ॥ ५ ॥

कह कबीर जो पदको जान । सोई संत सदा परमान ६

श्रीकबीरजी कहै हैं कि जो कोई यह पदको कहै है जौने को प्रकाश यह ब्रह्म है ऐसो जो साकेत है तौने पदको कहे स्थान को जो जानै तौ प्रमाणिक संत वहीहै औ जेहिको प्रकाश या ब्रह्म है तौने धाममें जायकै पुनि नहीं लौटि आवै है तामें प्रमाण ॥ "न तद्भासयते सूर्यो न शशांको न पावकः। यद्गत्वा न निवर्तंते तद्धाम परमं मम"॥तामें कबीरऊ जीको प्रमाण ॥ "कालहि जीति हंस लै जाहीं। अविचल देश पुरुष जहँ आहीं ॥ तहां जाय सुख होइ अपारा। बहुरि न आवै यहि संसारा" ॥ ६ ॥

इति एकसै एक शब्द समाप्त।

अथ एकसैदो शब्द ॥ १०२ ॥

होदारी! की लैदेउँ तोहिं गारी।तुम समुझु सुपंथ विचारी१॥
घरहूको नाह जो अपना। तिनहूं सों भेट न सपना ॥२॥
ब्राह्मण औ क्षत्री बानी। सो तिनहूं कहल न मानी ॥ ३ ॥
योगी औ जङ्गम जेते । वे आप गये हैं तेते ॥ ४ ॥
कहै कबीर यक योगी। तुम भ्रमी भ्रमी भो भोगी ॥ ५ ॥

होदारी!की लै देउं तोहिंगारी।तुम समुझु सुपंथ विचारी॥१॥
घरहूको नाह जो अपना। तिनहूं सों भेट न सपना ॥२॥
ब्राह्मण औ क्षत्री बानी। सो तिनहूं कहल न मानी ॥३॥

हो दारी कहे बांदी की बच्ची जीवशक्ति तोको गारी देइहौं। तैं यह मायाकी बच्ची हैकै मायाही में लगि रही है सो यह माया दारी है। जो सबको दरि डारै सो दारी कहावै है सो तोको दरे डारै है यही के ये पेटते निकसे यहीमें लगे यह कुपंथ है सो तैं सुपंथ बिचारु ॥१॥ घरके नाह जे परम पुरुष पर श्रीरामचन्द्र अपना है तासों सपनेहूं नहीं भेट करै है तौ योग ज्ञान उपासनादिकन में जो नाह बर्णन किये हैं तेतो जारहैं जो तोको मिलिबो करैंगे दश दिनको तौ फेरि

छाँडि देइँगे ॥ २ ॥ जो हमारो कहो ब्राह्मण क्षत्री वैश्य न मान्यो जिनको वेदको अधिकारहै ते वेदको तात्पर्य परम पुरुष पर श्रीरामचन्द्र को न जान्यो तौ शूद्र अंत्यजनकी कहवई कहा करैं ॥ ३ ॥

योगी औ जंगम जेते। वे आपु गये हैं तेते ॥ ४ ॥
कह कबीर यक योगी। तुम भ्रमी भ्रमी भो भोगी॥५॥

योगी जंगम जेतेहैं ते वही धोखा ब्रह्ममें लगिकै आपने आपने पौ खोइ दियो ॥ ४ ॥ श्रीकबीरजी कहैहैं कि तुम एकके योगी भयो कि हम आत्माको एक जो ब्रह्महै तामें संयोग कारि देइहैं कहे मिलाइ देइहैं सो यह नहीं विचार करतेहौ कि एक वही ब्रह्म जो जीव होतो तौ वासों भिन्न काहे होतो औ तुमको मिलाइबेको काहे परतो। जो कहौ यह ब्रह्महीको मायाते भ्रम भयो है तब नानारूप देखन लग्यो है तौ तुमहीं ब्रह्मको ज्ञानमय कहौहौ॥ "सत्यं ज्ञान मनंतं"॥इत्यादि तौ वाको भ्रमहीं कैसे भयो अरु जो मायामें एती सामर्थ्यहै कि तुमको फोरिकै नाना रूप कारि दियो है तौ जब तुम मिलिहू जाउगे तब तुमको फेरि फोरिकै संसारमें न डारि देइगो का? जनन मरण न छूटैगो ताते तुम फेरि फेरि यह भवभ्रममें भ्रमि भ्रमिकै भोगी होउगे अर्थात् जब वह ब्रह्ममें लगौगे फेरि फेरि संसारही में परौगे ॥ ५ ॥

इति एकसै दो शब्द समाप्त।

अथ एकसै तीन शब्द ॥ १०३ ॥

लोगो तुमहीं मतिके भोरा।
ज्यों पानी पानीमें मिलिगो त्यों ढुरिमिलयहु कबीरा ॥१॥
ज्यों मैथिलको सच्चा बास।त्योंहिं मरण होइ मगहर पास२
मगहर मरै मरन नहिं पावै। अंतै मरै तो राम लजावै॥३॥
मगहर मरै सो गदहा होई। भल परतीति रामसों खोई॥४॥

क्या काशी क्या ऊषर मगहर हृदय राम बस मोरा ।
जो काशी तन तजै कबीरा रामै कौन निहोरा ॥ ८ ॥

लोगो तुमहीं मतिके भीरा ॥
ज्यों पानी पानीमें मिलिगो त्यों ढुरि मिलयहु कबीरा॥१॥

हेलोगो! तुम बड़े मतिके भीरहौ कहे डराकुलहौ काहे ते जोमैं एतो उपदेश पशुको करत्यौं तौ पशुहू को ज्ञान ह्वैजातो तुम पशुहूते अधिकहौ जैसे पानीमें पानी मिलि जाइहै ऐसे कबीरजी कहै हैं कि तुमहूं ढुरिकै मिलौ कहे हंसस्वरूपमें प्राप्त होउ औ साहबके पास जाउ जो कहो पानीमें पानी मिले एकही ह्वै जाइहै; तब एक नहीं ह्वै जाइहै काहेते कि लोटा भरे जलमें चुरुवा भरि जल नाइ देइँ तों बाढ़ि आवै है जो वही जल होतो तौ बढ़तो कैसे जो कहो समुद्र में तौ नहीं बढ़ै तौ समुद्रौमें गंगादिक नदी जुदीही रहती हैं देखबेको मिली हैं परन्तु उनको पारिख मेघ जानै हैं वहांते मीठे जल लैकै वर्षै हैं पुनि जब श्रीरामचन्द्र समुद्रपर कोपे तब समुद्र आयो है सब नदी चमरछत्र लीन्हे जुदी जुदी आईं हैं औ अबहूं जहाजवारे जे जानै हैं ते मीठा जल समुद्रको पाइ जाइहैं सों हेकबीरौ ! कायाके बीर जीवौ तुमहूं हंसस्वरूपमें स्थित ह्वै साहब के लोकमें प्रवेश करि साहबको मिलोजाइ ॥ १ ॥

ज्यों मैथिलको सच्चा बासा त्योंहि मरण होय मगहर पास२
मगहर मरै मरण नहिं पावै । अंतै मरै तो राम लजावै ॥३॥
मगहर मरै सो गदहा होई । भल परतीति रामसों खोई॥४॥

जों श्रीरामचन्द्र को जानै तौ जैसे मैथिल कहे मिथिलापुर में मरे मुक्ति होइहै तैसे मगहरमें मरे मुक्ति होइ है ॥ २ ॥ जो मगहरमें मरै तो मरणनहीं पावै है यह सबकोई कहैहैं कि मगहरमें मरे मुक्ति नहीं होइहै अरुजो अंते मरै तो श्रीरघुनाथजीको लजावै कि तीर्थकी ओट लैकै मरयो ॥ ३ ॥ सो जाकी श्रीरामचद्रमें परतीति नहीं होयहै सो मगहरमें परे गदहै होइहै ॥ ४ ॥

क्या काशी क्या ऊषर मगहर हृदय राम बस मोरा ।
जो काशी तन तजे कबीरा रामै कौन निहोरा ॥ ५ ॥

जो हृदयमें श्रीरामचन्द्र बास कियेहैं तो क्या श्रीकाशीहै क्या ऊषरहै क्या मगहरहै जहैं मरै तहैं मुक्ति ह्वैजाइ तौ श्रीकबीरजी कहैहैं कि श्रीरामचन्द्रको कौन निहोरा तेहिते मैं श्रीरामचन्द्रको निहोरा करिकै मगहर मेंही शरीर छोड़्यो मोको मगहर बाधा न कियो तेहिते हे जीवो! तुमहूं परम पुरुष पर श्री रामचन्द्रको हृदयमें धरौगे औ रामनाम जपौगे तौ तुमहूं को कुछु बाधा न रहैगी जहैं मरौगे तहैं मुक्त ह्वैजाउगे ताते और सब धोखा छोड़िकै परम पुरुष पर श्री रामचन्द्रको स्मरण करौ मैं अजमाइकै कहौहौं जो कहो अपने शरीर छोड़िबे-की कथा श्रीकबीरजी अपने ग्रन्थमें लिखै हैं यह असम्भव बातहै तौ मगहरमें जो श्रीकबीरजी शरीर छोड्यो तौ आपनी रामोपासकता देखाइबेको मैं किमगह-रमें शरीर छोड़ौंहौं कैसे यम मोको गदहा करैंगे औ कैसे मुक्त न होउँगो सो मगहरमें मैं शरीर छोड़्यो यमको कियो कछु न भयो मगहरमें शरीर छोड़ि मथुरामें जाय रतनाकंदु इनिको उपदेश कियो है पुनि बहुतदिन प्रकट रहे हैं याते यह देखायो कि नित्य वृन्दावनके रासमें देख्यो जाइ है जहां सब मुक्त ह्वैके जाइहैं परम मुक्त ह्वै नित्य वृन्दैबनके रासमें जायहैं तामें प्रमाण शुकाचार्य मुक्त ह्वै गये हैं तिनसों श्री कृष्णचंद्र की उक्ति ॥ "स चोवाच प्रियारूपं लब्धवंतं शुकं हरिः । त्वं मे प्रियतमा भद्रे सदा तिष्ठ ममांतिके ॥ इति पद्म पुराणे",॥ सो सब कथा आपही धर्मदासते निर्भय ज्ञानमें आपनेही मुख कमलते कह्यो है सो स्पष्टई है ॥ ५ ॥

इति एकसै तीन शब्द समाप्त ।

अथ एकसै चार शब्द ॥ १०४ ॥

कैसे कै तरो नाथ कैसे कै तरो
अब बहु कुटिल भरो ॥ १ ॥
कैसी तेरी सेवा पूजा कैसो तेरो ध्यान ।
ऊपर उजर देखो बक अनुमान ॥ २ ॥

भाव तौ भुवंग देखो अति बिबिचारी।
सुरति सचान देखो मति तौ मँजारी ॥ ३ ॥
अति तो विरोधी देखो अतिरे दिवाना।
छौ दरशन देखो भेष लपटाना ॥ ४ ॥
कहै कबीर सुनो नरबन्दा।
डाइनि डिंभ परे सब फंदा ॥ ५ ॥

अब गोरखनाथ के मतके जे नाथ कहावै हैं जे आपने इष्ट देवता को नाथ कहै हैं तिनको कहै हैं कैसे हैं वे कि आप कालते नाथेगये अरु औरऊ को कालते नथावै हैं जिनको अपने अपने मतमें लै आवै हैं तेऊ कालते नाथे जायँगे अर्थात् नाथै सोनाथ कहावै अथवा नाथोजाइ सो नाथ कहावै ॥

कैसे कै तरो नाथ कैसे कै तरो, अब बहु कुटिल भरो ॥ १ ॥

श्री कबीरजी कहै हैं कि हेनाथ ! तुम कैसे मुक्त होउगे गोरखनाथ रहे तेतो योगऊ करतरहे अबतो योगको नामई रहिगयो मुद्रा पहिरिलियो वेष बनाइ लियो कपरा रँगिकै अरु नाना प्रकारके मंत्रते भैरव भूतको बशि कैकै सिद्धि देखावन लगे लोगनको ठगन लगे कोई महन्त बनि बैठे कोई राज काज करन लगे कोई राजाके गुरु ह्वैबैठे सो अब तुम बहुत कुटिलता ते भरेहौ ॥ १ ॥

कैसीतेरीसेवापूजाकैसोतेरोध्यानऊपरउजरदेखोबकअनुमान

तिहारी सेवा पूजा ध्यान करिबो कैसो है कि ऊपरले तो यह जानि परै हैं बड़े पुजेरी हैं बड़े ध्यानी हैं बड़ेयोगी हैं औ भीतर कपट ते भरे हैं जैसे बक ऊपरते उजल रहै है औ भीतर कुटिलईते भरे मछरी धरनको ताके रहै है तैसे भीतर बासना भरी है काहूको धनपावै तौ लैलेइ काहूके लरिकाको देखै तौ मूंड़ि लेइ काहू राजा को ठगि जागः पावै तौ लैलेइ जातै हमारी महंती चलै ॥ २ ॥

भाव तो भुवंग देखो अति बिबिचारी।
सुरति सचान देखो मति तौ मंजारी॥ ३॥

भाव करिकै तौ भुवंगहै जाको सांप धरै है ताको बिष चढ़ै है मरि जायहै तैसे जो इनको संग करै हैं ताहूके इनके मतको बिष चढ़ि जाइहै इनके मतनमें चल्यो सो मारो परयो । अरु वे बड़े बिविचारी होत हैं शास्त्रके मतते जो कर्म हैं ताको छोड़ाइही देइहैं अरु परम पुरुष पर श्री रामचन्द्र को जानतेई नहीं हैं जाते उद्धार ह्वैजाइ सो कर्मकांडी तो भला कछु स्वर्गको सुख पाइकै संसारमें परै हैं ये सीधे नरकही को चले जाइहैं सो इनकी सुरति सचान ह्वै रही है जैसे सचान खोजत फिरै है कि जो कौन्यो जीवको पाऊं तौ धरिलेउँ अरु उनकी मति जो है दुर्मति सो मंजारी ह्वै रही है जैसे मंजारी खोजत फिरै है कि जो काहू मूसको पाऊं तौ धरिलेउँ तैसे येऊ खोजत बागै हैं कि काहूको पावैं तौ चेला करिलेइँ औ धन लैलेइँ जैसे आप नरकमें जाय हैं तैसे चेलौको नरकमें डारैहैं ॥ ३ ॥

अतितौ बिरोधीदेखोअतिरेदेवाना।छौदर्शनदेखोभेषलपटाना॥४
कहै कबीर सुनौ नरबंदा । डाइनि डिंभ परे सब फंदा ॥५॥

योगी जङ्गम सेवरा संन्यासी दरवेश ब्राह्मण तिनसों अति बिरोध करैहैं अरु अपने मतमें अति दिवाने ह्वै रहे हैं अर्थात् वही पाखंड मतको सबते अधिक मानै हैं सो याही भांति छइउ दर्शनमें देखै हैं कि भेष सबमें लपटान्यो है कुछ सार पदार्थ नहीं जानै हैं भेष बनाइ लियो योगी जङ्गम सेवरादिक कहावन लगे ॥४॥श्री कबीरजी कहै हैं कि हे नर ! तैंतो परम पुरुष पर श्री रामचन्द्रको बंदाहै सो उनको तो ये षट् दर्शनवारे जानै नहीं हैं आपने आपने मतमें डिंभ किये हैं कि, हमारई मत ठीक है और मत झूठैहैं ॥ ५ ॥

इति एकसै चार शब्द समाप्त ।

अथ एकसै पांच शब्द ॥ १०५ ॥

यह भ्रम भूत सकल जग खाया॥जिनजिनपूजातिनजहड़ाया१
अंड न पिंड प्राण नहिं देहा। काटि काटि जियकेतिकयेहा२
बकरी मुर्गी कीन्हो छेहा। अगिल जन्म उन्ह अवसरलेहा ३
कहै कबीर सुनो नर लोई। भुतवा के पूजे भुतवै होई ॥ ४ ॥

दुलहादेव भैरव भवानी ग्रामदेवता ई सब भ्रमहैं ई सब जगत् को खाये लेइहैं जिन जिन इनको पूजाहै तिनको तिनको जहड़ाइबो कहे वह काल देइहै ॥१॥ येई देव तिनके नाअंड है ना पिंडहै इनको अनेक जीव काटि काटि दियो सो काह जानिकै दियो तुमको बैकलाइ डारैंगे फल ना देइँगे ॥ २ ॥ बकरी मुर्गी दैकै जो तुम इनको पूजा कीन्हों सोई आगिले जन्म तुम्हारो गर काटैंगे ॥ ३ ॥ सो श्री कबीरजी कहैहैं हे लोगो! तुम सुनौ ये भूतनको जो तुम पूजौगे तौ तुमहूं भूत होउगेभूतके पूजेते भूत होइहै तामें प्रमाण ॥ " यांति देवव्रता देवान् पितॄन् यांति पितृव्रताः । भूतानि यांति भूतेज्या यांति मद्याजिनोऽपि माम् "॥ इतिगीतायाम् ॥ ४ ॥

इति एकसै पांच शब्द समाप्त ।

अथ एकसै छः शब्द ॥ १०६ ॥

भवँर उड़े बक बैठे आय। रैनि गई दिवसौ चलि जाय ॥१॥
हल हल कांपै बाला जीव। ना जानै का करिहै पीव ॥ २ ॥
कच्चे बासन टिकै न पानी। उड़िगे हंस काय कुम्हिलानी ३
काग उड़ावत भुजा पिरानी। कह कबीर यह कथा सिरानी ४

भवँर उड़े बक बैठे आय। रैनि गई दिवसौ चलि जाय॥१॥
हल हल कांपै बालाजीव। ना जानै का करिहै पीव॥ २ ॥

यह जगत्में यह दशा ह्वैगई कि भवँर जेहैं रासिक संत जे परम पुरुष पर श्री रामचन्द्रके प्रेममें छके रहे हैं ते उड़िगये कहे उठिगये अरु बक जेहैं गुरुवा लोग ते बैठे आय जैसे बकुला मछरी खायहै तैसे ठगि ठगिकै जीवको स्वस्वरूप खाइलेइहै कहे भुलाइ देइहै वही ब्रह्ममें लगाइकै ॥ १ ॥ सोयह जीव तौ बाला स्त्रीकहे परम पुरुष श्री रामचन्द्र की चितशक्ति है सो ब्रह्म धोखामें लागिकै हलहल कांपैहै अर्थात मैं आपने स्वामीको भुलायकै धोखा ब्रह्ममें लग्यों सो हाथ न लग्यो सो ना जानौं खफा ह्वैकै मेरे पीउ कहे स्वामी अब कहा करैंगे ॥ २ ॥

कच्चे वासन टिकै न पानी। उड़िगो हंस काय कुम्हिलानी ३
काग उड़ावत भुजा पिरानी। कह कबीर यह कथा सिरानी ४

सो उमिरि तो वह ब्रह्ममें व्यतीत कै दियो औ हाथ कुछ न लग्यो तब यह बिचारयो कि मैं अपने स्वामी जे परम पुरुष श्रीरामचंद्र हैं तिनमें लगौं सो जैसे कच्चे बासनमें पानी धारि देइ तौ बासन कच्चा बिगासि जाय है तैसे यह शरीरतो रहै नहीं है जब हंस उड़िगयो शरीर कुम्हिलाइ गयो कहे छूटिगयों भाव यहहै तब पछितावई हाथ रहि जायहै ॥ ३ ॥ श्री कबीरजी कहै हैं कि जैसे नारी अपने पतिके आइबेको भुजाते काग उड़ावै है जब पति नहीं आवै है तब भुजाको पिरावई रहि जाइ है तैसे ब्रह्म ह्वैबे के लिये उमिरि बिताइ दियो अहं ब्रह्म अहं ब्रह्म करत करत वह सब कथा सिराइ गई कहे जिन जिन ब्रह्म भये उनको ब्रह्म न मिल्यो तब मेहनतई हाथ रहि जाइहै जैसे भूसीके खांड़े कुछ हाथ नहीं लगै है मेहनतई हाथ रहिजाइ है तैसे इनको बिना परम पुरुष श्रीरामचन्द्रके जाने ब्रह्म ह्वै जाइबो भूसई कैसो खांड़िबो है उहां कुछ हाथ नहीं लगै है तामें प्रमाण ॥ "श्रेयः स्तुतिर्भक्तिमुदस्य ते विभो क्लिश्यन्ति ये केवलबोधलब्धये ॥ तेषामसौ क्लेशल एव शिष्यते नान्यद्यथा स्थूलतुषावघातिनाम्" ॥ १ इतिभागवते ॥ ४ ॥

इति एकसैछः शब्द समाप्त ।

अथ एकसै सात शब्द ॥ १०७॥

खसम विन तेली के वैलभयो ।
बैठत नाहिं साधुकी संगति नाधे जन्म गयो ॥ १ ॥
बहि बहि मरै पचै निज स्वारथ यमके दण्ड सह्यो ।
धन दारा सुत राज काज हित माथे भार गह्यो ॥ २ ॥
खसमहिं छोड़ि विषयरँग माते पापके बीज बयो ।
झूंठ मुक्ति नर आश जिवनकी प्रेतको जूठ खयो ॥ ३ ॥

लख चौरासी जीव योनिमें सायर जात बह्यो ।
कहै कबीर सुनौहो संतौ श्वान कि पूंछ गह्यो ॥ ४ ॥

खसम बिन तेलीके बैलभयो ।
बैठत नाहिं साधुकी संगति नाधे जन्म गयो ॥ १ ॥
बहि बहि मरै पचै निज स्वारथ यमके दंड सह्यो ।
धन दारा सुत राज काज हित माथे भार गह्यो ॥ २ ॥

श्री कबीरजी जीवको उपदेश करै हैं हे जीव! तेरे मालिक जे रामचन्द्र हैं तिनहीं बिना तैं तेलीको बैल भयो जे साधु तेरो स्वरूप बताइदेइँ ऐसे साधुनकी सङ्गति में कबौं नहीं बैठे तेलीके बैलकी नाईं नाधे नाधे जन्म व्यतीत भयो जन्मतै मरत रह्यो ॥ १ ॥ जब कांधे जुवां नाधि जायहै तब निज तेलीके निमित्त ढोइ ढोइ मरै है जो ना रेंगैं तौ तेली डंडा मारै है तैसे यह जीव धन दारा सुत राज काजके हित नाना कर्म करै है इंद्रियसुख लिये बहि बहि कहे नाना कर्मनको भारा ढोइ ढोइकै पचै है अरु अंतमें यमदंड मारै हैं सो सहौ हौ याही रीति जन्म जन्म यमदंड सहो हौ ॥ २ ॥

खसमहिं छोड़ि विषय रँग माते पापके बीजबयो ।
झूंठ मुक्ति नर आश जिवनकी प्रेतको जूंठ खयो ॥३॥

खसम जे साहब तिनको त्यागि विषय रंगमें मात्यो औ पापको बीज बोवत भयो अर्थात् जो नारी आपने खसमको छोड़ि और पुरुषमें लगै है तौ वाको बड़ो पाप होयहै सोतैं खसमको छोड़िकै नाना देवतनकी उपासनामें लागि जात भयो मातिगयो सो तैं महापाप के बीजबोयो औ नरन को ज्यावनवारी जो मुक्तिकी जो हमको उपास्य देवता प्राप्त होयँगे तौ हम जीते रहैंगे हमारो जनन मरण न होयगो सो वह मुक्ति झूंठी है जौने शरीरते उनके लोकको जायगो सो तन नाश ह्वै जाइगो जब फेरि सृष्टि समय होइगो तब वाई देवनके साथ फिरि आवैगो जनन मरण न छूटैगो सो ऐसी झूंठी मुक्तिके वास्ते

तें प्रेतनको जूठ खाय है कहे भैरव भूत आदिकन के बलिदान खाय है उनके दिये तपौना शराब पियै है ॥ ३ ॥

लख चौरासी जीव योनिमें सायर जात बह्यो ।
कहै कबीर सुनौहो संतौ श्वान कि पूंछ गह्यो ॥ ४ ॥

श्री कबीरजी कहै हैं कि हे संतौ! जीवौ सुनो तुम परम पुरुष पर जे श्रीरामचन्द्र हैं ते तुम्हारे रक्षक संसार सागरते पार कै देनवारे जहाज तिनको छोडि श्वान जे हैं ई सब क्षुद्रदेवता तिनकी पूंछ गहे चौरासी लक्ष योनि समुद्र संसारमें बहो जाय है सो श्वान की पूंछ गहेते कैसे संसार समुद्रते पार जाउगे ॥ ४ ॥

इति एकसै सात शब्द समाप्त ।

अथ एकसै आठ शब्द ॥ १०८ ॥

अब हम भयल बहिर जल मीना । पुरुब जन्म तप का मद कीना १
तब मैं अछलो मन बैरागी । तजलो कुटुम्ब राम रट लागी ॥ २ ॥
तजलो काशी भै मति भोरी । प्राणनाथ कहु का गति मोरी ३
हम चलिगैल तुम्हारे शरणा । कतहुं न देखो हरिको चरणा ४
हमहिं कुसेवक तुमहि अयाना । दुइ महँ दोष काहि भगवाना ५
हम चलिगैल तुम्हारे पासा । दास कबिर भल कैल निरासा ६

श्री कबीरजी कहै हैं कि, जब मैं साहबके पास गयो तब यह बिनती कियो कि तबतो संसार के जलके मीनरहे अब जबते हम संसारके बाहिरें तिहारे प्रेमजलके मीनभये प्रथम हम पूर्व जन्ममें पंचांगोपासना तपस्या बहुत करी पुनि जब जन्मलियो तब हम को पूर्वजन्म की सुधि बनीरही वह तपस्याको मद कहे अहंकार हमको बहुत रहै सो वही तपस्याके प्रभावते ॥ १ ॥ तब हमको अच्छो मनमें वैराग्य रहै रघुनाथजीमें भक्ति भई तब कुटुम्बको छोड़िकै राम राम रट लगावत भयो ॥ २ ॥ तब प्राणनाथ मैं काशी छोड़िदियो औ मेरी मति भोरी भई कहे पूर्वजन्म के तपके मदते निर्गुणरस

रूपा भक्ति मोकों न होत भई केवल ज्ञानै करिकै रामनामकी रटनि लगाइकै विचरत भयो कि, मिलिही जायँगे तब हे प्राणनाथ! मेरी कहा गति होत भई सो कहौहौं ॥ ३ ॥ हम तुम्हारे शरण तो चलिगये कहे तुम्हारे नाममें रट लगावत भयो पै तुम्हारे चरणन को न देखत भयो अर्थात् दर्शन न पायों ॥ ४ ॥ सो हे भगवन्! षट् ऐश्वर्य संपन्न धौं हमहीं कुसेवक रहे जो तिहारो दरशन न पायो धौं तुमहीं अयान रहे हमको न जानत रहे जो हमको नहीं मिले इहमें काको दोष है ॥ ५ ॥ अब दास कबीर जो मैंहौं ताको भली भांतिते जब निराश करिदियो कि, कौनिउ भांतिकी जब आश न रहिगई न ज्ञान करिकै न योग करिकै न भक्ति करिकै केवल सुधारसरूपा निर्गुणा भक्ति जब मोको दियो तब हम तुम्हारे पास चलि आये याते कबीरजी या देखायो कि, जब सब बातते निराश ह्वै जाय हैं तब साहबके पास जाइहैं ॥ ६ ॥

इति एकसै आठ शब्द समाप्त ।

अथ एकसै नव शब्द ॥ १०९ ॥

लोग बोलै दुरिगये कबीरा। या मत कोइ कोई जानैं धीर॥ १॥
दशरथ सुत तिहुं लोकहि जाना। राम नामको मर्म आना २
जेहि जिय जानि परा जस लेखा। रजु को कहै उरग जोपेखा ३
यद्यपिफल उत्तमगुणजाना। हरिहित्यागिमनमुक्तिनमाना ४
हरि अधार जस मीनहिं नीरा। औरयतनकछुकहहिंकबीरा ५

लोग बोलै दुरि गये कबीरा। या मत कोइ कोइ जानैं धीरा १

श्री कबीरजी कहै हैं कि, सब लोग बोलै हैं कि, कबीर बहुत दूरि गयें बहुत पहुंचे हैं सो या मत कोई जे धीरे धीरे साधनमें क्रियनमें समुझनमें अभ्यास करै हैं सो जानै हैं कौन मत सो आगे कहै हैं ॥ १ ॥

दशरथ सुत तिहुं लोकहि जाना। राम नामको मर्मै आना॥ २॥

सो दशरथसुतको तौ तीनौंलोक जानैहैं पै रामनामको मर्म कोऊ कोऊ जानैहैं अर्थात् कबहूं दशरथ सुत कबहूं नारायण कबहूं व्यापक ब्रह्महो अवतार लेइ हैं नित्य साकेत विहारी परम पुरुष पर जे श्रीरामचन्द्रहैं जिनके नामते ब्रह्म ईश्वर वेद शास्त्र सब निकसै हैं तौने रामनामको तौ मर्म आनहै ॥ २ ॥

जेहि जिय जानि परा जस लेखा। रजुको कहै उरगको पेखा ३
यद्यपिफलउत्तमगुणजाना। हरिहित्यागिमनमुक्ति न माना४

जाको यह रामनाम जैसो जानि परचो है सो तैसे लेख्यो है कोई रघुनाथ-जी को दशरथके पुत्र मानै है कोई नारायण को अवतार मानै है कोई ब्रह्मको अवतार मानै है तिनहीं को नाम रामनाम मानैहै सो जैसे रसरीको उरग कहै हैं बिना समुझे ऐसे रामनाम जो साहबको है सो भ्रम छोड़िकै बिचारै तौ तौ साहिबैको बोध करैहैं ॥ ३ ॥ सो यद्यपि उत्तम गुण जानेके फल होयहै कि विष्णु लोक प्राप्तभये परन्तु परम पुरुषपर जे श्रीरामचन्द्र तिनके पास भये बिना हम मुक्ति नहीं मानै हैं ॥ ४ ॥

हरिअधारजसमीनहिंनीरा। औरयतनकछुकहैकबीरा ॥५॥

सो जैसे मीनको आधार अंबुहै बिना जल मीन नहीं रहि सकै है तैसे श्रीरामचन्द्र सबके आधारहैं सो तिनहीं को जो आधार मानै तो जैसे मीन सर्वत्र जलही देखै है द्विभुजरूप श्रीरामचन्द्रको सर्वत्र देखै औ उनहींमें रहै तौ श्री कबीरजी कहैहैं कि और यतन सब थोरई है तामें प्रमाण श्री गोसाईजी को ॥ दोहा ॥ " सो अनन्य अस जाहिके, मति न टरै हनुमन्त । मैं सेवक सचरा-चर, रूप राशि भगवंत " ॥ १ ॥ तामें प्रमाण कबीरजीको ॥ " नैनन आगे ख्याल घनेरा । अरध उरध बिच लगन लगी है क्या संध्या क्या रैनि सबेरा । जेहि कारण जग भरमत डोलै सो साहब घट लिया बसेरा । पूरि रह्यो अस-मान धरणिमें जितदेखो तित साहब मेरा । तसबी एक दियो मेरे साहब कहै कबीर दिलही बिच फेरा " ॥ ५ ॥

इति एकसै नव शब्द समाप्त ।

अथ एकसै दश शब्द ॥ ११० ॥

अपनो कर्म न मेटो जाई ।
कर्म लिखा मिटै धौं कैसे जो युग कोटि सिराई॥ १ ॥
गुरु बशिष्ठ मिलि लगन शोधाई सूर्य मंत्र यक दीन्हा ।
जो सीता रघुनाथ बिआही पल यक संच न कीन्हा २
नारद मुनिको बदन छपायो कीन्हो कपिसों रूपा ।
शिशुपालहुके भुजा उपारे आपुन बौध स्वरूपा ॥ ३ ॥
तीनि लोकके करता कहिये बालि बध्यो बरियाई ।
एक समय ऐसी बनि आई उनहूं अवसर पाई॥४॥
पार्वती को बांझ न कहिये ईश न कहिय भिखारी ।
कह कबीर करता की बातैं कर्मकि बात निनारी ॥५॥

श्रीमन्नारायण वैकुण्ठते केतन्यो अवतार लियो तेऊ कर्मकी मर्यादा राखिबोई कियो सो जे साहब उत्पत्ति पालन संहार करै हैं तेतो कर्मकी मर्यादा राखिबोई कियो और की कहा गतिहै सो बिना परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्रके नामलिये कर्मकीगतिकाहूकी मेटी नहीं मेटि जाइहै श्री रामनामते कर्मकी गति मिटि जाइहै साहब मेटि देइहै तामें दोऊ प्रमाण॥ "राम नाम मणि विषय व्यालके। मेटत कठिन कुअंक भालके" ॥१॥ "सर्व धर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज। अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि माशुच"इतिगीतायां॥ "सकृदेवप्रपन्नायतवास्मीतिच याचते।अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद्व्रतं मम"॥इति रामायणे॥औ कबीरजीऊको प्रमाण ॥ "पहिले बुरा कमाइकै, बांधी विषकै मोट । कोटि कर्म मिट पलकमें, आवै हरिकी ओट ॥ " और और पदको अर्थ स्पष्ट है ॥ २-५ ॥

इति एकसै दश शब्द समाप्त ।

अथ एकसै ग्यारह शब्द ॥ १११ ॥

है कोई पंडित गुरुज्ञानी उलटि वेदको बूझै ।
पानीमें पावक जरै अंधे आंखी सूझै ॥ १ ॥
गयातो नाहरको खायो हरिना खायो चीता ।
कागा लगरै फादिकै बटेरन बाजै जीता ॥ २ ॥
मूसा तो मंजारै खायो स्यारै खायो श्वाना ।
आदिके उपदेश जानै तासु बेसै बाना ॥ ३ ॥
एकै तो दादुर सो खायो पांचौ जे भुवंगा ।
कहै कबीर पुकारिकै हैं दोऊ यक संगा ॥ ४ ॥

है कोई गुरु ज्ञानी पंडित उलटि वेदको बूझै ।
पानीमें पावक जरै अंधे आंखी सूझै ॥ १ ॥

ऐसो गुरुज्ञानी पंडित कोई नहीं है जो उलटिकै वेदको अर्थ बूझै अर्थात गायत्रीते वेद भयो है प्रणवते गायत्री भई है प्रणव राम नामते उत्पन्न भयो है सो कहैहैं पानी जो है बानी तामें पावक बरैहै कहे ब्रह्माग्नि बीज रामनामहै सो सर्वत्र पूर्ण है सो अंधेके आंखीमें कैसे सूझै उलटिकै वेदको बूझै तौ जानै कि सबको मूल रामनामई है ॥ १ ॥

गैया तो नाहर को खायो हरिना खायो चीता ।
कागा लगरै फादिकै बटेरन बाज जीता ॥ २ ॥

गैया जो गायत्री तौनेके नाना अर्थ करि कहीं सूर्यमें लगावैहैं कहीं ब्रह्ममें लगावै हैं सोई अर्थ जो गैया सो सांच गायत्रीको तात्पर्यार्थ साहब तिनको ज्ञान जो नाहर ताको खायलियो औ हरिनाजो अद्वैत ज्ञान कि हरिनहीं है प्रणवको अर्थकियो कि जीव नहीं है एक ब्रह्महीहै सो मैं हौं या जो हरिना सो साहबको

ज्ञान जो चीता ताको खाय लियो चीता साहबके ज्ञानको काहेते कह्यो कि जब साहबको ज्ञान होइहै तब अद्वैत ज्ञान नहीं रहिजाइ है औ काग जो अज्ञान सो साहबको ज्ञान जो लगर शिकारी पक्षी कागा को खानवारो ताको कागा खायलियो औ असत् शास्त्रके अनेक प्रकारके जे अर्थ तेई हैं बटेर ते सत्र शास्त्र जे साहबके बतावनवारे तेई हैं बाज ताको जीतिलियो अर्थात् तामसीजे हैं ते तामस शास्त्रको प्रचार कारि सत् शास्त्रको लोप करिदियो ॥ २ ॥

मूसातो मंजारै खायो स्यारै खायो श्वाना ।
आदिको उपदेश जानै तासु बेसै बाना ॥ ३ ॥
एकै तो दादुर सो खायो पांचौ जे भुवंगा ।
कहै कबीर पुकारिकै हैं दोऊ यक संगा ॥ ४ ॥

मूसा जो है बितंडाबाद सो साहबको उपदेश जो मंजार ताको खायलियो औ स्यार जो माया सो जीवके स्वरूप ज्ञानते जो होइहै स्वानुभवानंद सोई है श्वान ताको खाइ लियो सो कबीरजी कहै हैं जो कोई आदिको उपदेश जो है रामनाम जानै ताहीको वेष बानाहै और सब पाखंडई है ॥ ३ ॥ एकही दादुर जो मन सो दादुरके खाय लेनवारा पांचभुवंग जे रति नैष्ठा भाव प्रेम रस ते ताको खाइलियो सोई एक एकके बिरोधी रहे तिनको खाइ लीन्हे सो कबीरजी कहैहैं जीव साहब एकै संगके हैं आपने स्वरूपको न समुझयो या न बिचारयो कि मैं साहबको हौं ताते संसारी ह्वै गयो है जो साहब मुख अर्थ बिचारतो तौ एकही संग को है ॥ ४ ॥

इति एकसै ग्यारह शब्द समाप्त ।

अथ एकसै बारह शब्द ॥ ११२ ॥

झगरा एक बढ़ो जियजाना।जो निरुवारै सो निरबान ॥१॥
ब्रह्म बड़ा की जहँते आया।वेद बड़ा की जिन उपजाया॥२॥
इहमनबड़ाकीजेहिमनमाना।रामबड़ाकी रामहिं जाना॥३॥
भ्रमिभ्रमिकबिरा फिरैउदास।तीर्थबड़ाकीतीर्थक दास ॥४॥

हे जीवौ ! यह झगड़ा बढ़ो है ताको बिचार करो जो कोई यह झगड़ा निरुवारै सोई निर्वाण कहे मुक्त है। सो कहै हैं भला जौन ब्रह्म जीव आपने मनतें अनुभव करि लियो है सो बड़ा है कि जहांते जीव आयो है लोक प्रकाशते सो बड़ो है। सो ब्रह्म बड़ा नहीं है। वा लोकःप्रकाश बड़ाहै जहांते जीव आयो है। औ जौने वेदकी अज्ञाते नाना ईश्वर मानि लियो है सो बड़ा है कि रामनाम ते वेद उपजाहै सोबड़ाहै अर्थात रामनाम बड़ा है जाते वेद भयो है। औ मन बड़ा है कि जाको मन आपनेते बड़ा मान्यो है सो बड़ाहै अर्थात् जो मन बचनके परे है सोई बड़ो है जाको मन मान्यो है। औ श्री रामचन्द्र काहूको उपदेश करै नहीं आवैं श्री रामचन्द्रके जाननवारे रामको बतायकै जीवनको उपदेश कै उद्धार कै देइहैं याते रामदास बड़े हैं। औ तीर्थ बड़ा कि जे तीर्थको बिधि सहित न्हाइहैं ते बड़े अर्थात् जे तीर्थके दास बने हैं ते बड़े हैं सो हे कायाके बीरौ जीवौ ! भ्रमि भ्रमि काहे को उदास फिरौ हौ या बात को बिचारौ ॥ १ ॥ ४ ॥

इति एकसै बारह शब्द समाप्त।

अथ एकसै तेरह शब्द ॥ ११३ ॥

झूठे जनि पतिआहु हो सुन संत सुजाना।
घटही में ठगपूरहै माति खोउ अयाना ॥ १ ॥
झूठेका मंडान है धरती असमाना।
दशौ दिशा जेहि फंद है जिउ घेरे आना ॥ २ ॥
योग यज्ञ जप संयमा तीरथ ब्रत दाना।
नवधावेद किताब है झूठेका बाना ॥ ३ ॥
काहूको शब्दै फुरै काहूकरमाती ।
मान बड़ाई लैरहै हिंदू तुरुक दुजाती ॥ ४ ॥

बातकथै असमानकी मुद्दति नियरानी।
बहुत खुदी दिल राखते बूड़े बिन पानी॥ ५॥
कहै कबीर कासों कहों सिगरो जग अंधा।
सांचेसों भाजे फिरैं झूंठे सों बंधा॥ ६॥

हे संत सुजान! जो तुम सुजान होउ तौ वा झूठेसों न पतिआहु मेरी बात सुनौ वह ठग जो है तिहारो अनुभव धोखा ब्रह्म सो तेरे घटही में है धोखामें परि आपनो स्वरूप जो साहबको दास ताको मति खोउ॥ १॥ धरतीमें कहे नीचेके लोकनमें औ असमानमें कहे ऊपरके लोकन में वही झूठे ब्रह्मका मंडानहै औ दशौ दिशा जे हैं छः शास्त्र औ चारिवेद तिनमें वहीको फंदहै वही के फंदते इनको जो है यथार्थ अर्थ सो कोई नहीं जानैहं जीवके आनिकै घेरि लियो है अर्थात शास्त्रन वदनमें अर्थ बदलि बदलि वही झूठे ब्रह्मको उपदेश कैकै गुरुवा लोग भुलाइ दियो है सब में वही धोखही ब्रह्म देखावैहै॥ २॥ योग यज्ञ जप संयम तीर्थ ब्रतदान नवधा सगुणाभक्ति औ वेदकिताब इनसब में झूठे कहे वही धोखा ब्रह्मका बाना कहे बिरदावली गुरुवा लोग सबकी मनावै हैं कि, या साधन कीन्हे अंतःकरण शुद्ध होय है तब ब्रह्म को प्राप्त होइहैं॥ ३॥ औ काहूको शब्दै फुरै है कहे वेद शास्त्र किताब कुरान पढ़िकै उनको अर्थ बदलि बदलिकै शास्त्रार्थ करिकै औरको हरावै है उनहींको हिन्दू तुरुके दूनों जाति मान बड़ाई करैहैं औ वोई मान बड़ाई लैरहै हैं। पंडित मोलबीलोग औ कोई जे बैरागी हैं संन्यासी हैं फकीर हैं औलियाहैं ते काहूको बेटादियो काहूको जागा दियो कहूं जलमें हीठि गयो कहूं आकाशते उड़ि गये कहूं दश पांच वर्ष कोठरी चुनाइकै आये कहूं भूत भविष्य वर्तमान जानिलियो इत्यादिक नाना प्रकारकी करामात देखाइकै हिन्दू तुरुक दूनों दीनन सों मान बड़ाई लैकै रहै हैं॥ ४॥

औ परम पुरुष श्री रामचन्द्र अल्लाह साकेत जाहूतके रहनवारे तिनको तो जानैं नहीं हैं आसमान जोहै शून्य धोखा ब्रह्म तौने की बातैं कथै हैं कि हमहीं ब्रह्महैं औ हमहीं बेचून बेचिगूग बेसुबा बेनिमून हैं औ उनके जिन्दगीकी मुद्दति नियरेही है केतनौ यहै कथत कथत मरिगये केतौ मरेंगे केतौ मरे जायह यह नहीं बिचारैहैं कि जो खुदा होते ब्रह्म होते तौ मरि कैसे जाते सो बहुत खुदी दिलमें राखते हैं कि खुदखाविंद हमहीं हैं औ जो बहुत खुबी पाठ होइ तौ यह अर्थ कि हमहीं सबते खूब कहे अच्छे हैं पै बिना पानी झूरहीमें बूड़ि गये अर्थात मरिही गये यहजो ब्रह्म खुदाको ज्ञान कियो कि हमहीं हैं सो ज्ञान झूरही ठहरचो वामें कुछ रस न ठहरचो मरतमें वह रक्षा तनकऊ न कियो जो कहो जे साहब खुदाको जानैहैं ते कब जिये हैं तेऊतो मरिही जायहैं तो तुमही रामायणमें सुनै होउगे कि जे ते भर प्रजाहैं जे ते भर भालु बांदरहैं तिनको श्रीरामचन्द्र सदेह आपने धामको लैगये औ श्री हनुमानूजीको बिभीषणको छोड़िगये ते अबलों बने हैं औ कागभुशुण्ड नारद अगस्त्य बशिष्ठजी रामोपासक हैं ते अबलो बने हैं जो कहो अब केतो राम भक्तको मरत देखे हैं तौ जे साधनमें हैं औ परमपुरुष श्री रामचन्द्रको नीकी भांति नहीं जानै हैं औ श्री रामचन्द्रकी प्राप्ति नहीं भई ते शरीर छोड़िकै वह लोकको क्रमतें जाइहैं शरीर छोड़िकै फिरि अवतार लेइहैं पुनि ज्ञान होइ है तब जाइहै औ जे परमपुरुष श्री रामचन्द्रको अच्छी भांति जानि लियो है औ तहांको प्राप्त होइ गये हैं तिनको शरीर छोड़िबो ऐसो कि यहां गुप्त ह्वै गये पुनि कहूं प्रगट ह्वैके उपदेश करिकै जीवनको तारचो वे साहबको प्राप्तई हैं जब चाहै हैं तब साहब के रहै हैं जब चाहै हैं तब प्रगट ह्वैकै जीवनको उपदेश करिकै तारैहैं सो श्री कबीरजी प्रगटई देखाइदियो कि काशीमें शरीर छोड़चो मथुरा में उपदेश कियो औ चारिउ युग उपदेश करतइहैं औ मुसल्माननके अली शरीर छोड़चो पुनि लौटिकै आयकै संदूकमें आपनी लाश राखिकै ऊंटमें लादिकै लैगये सो द्वै पहारके बीच ह्वै निकसे जांइ सो वहींमें अटकाइ दियो सो अबलों वह संदूक अटकी है सो इनको चोला छांड़िबो यहि भांति कोहै जैसे सांप केचुरि छांड़िदेइहैं ॥ ५ ॥

सो कबीरजी कहै हैं कि मैं कासों कहों सिगरो संसार आंधर है रह्योहै सांचे ज परम पुरुष श्री रामचन्द्र सर्वत्र पूर्णहैं तिनसों भागो फिरै है उनको नहीं देखैहै औ झूंठा जो है धोखा ब्रह्म ताही में बाँधि रह्योहै औ यथार्थ अर्थमें चारयो वेद छइउ शास्त्र तात्पर्यकैकै परम पुरुष श्री रामचन्द्रको बर्णन करै हैं सो मैं आपने सर्व सिद्धांत में स्पष्ट करिकै लिखि दियो है ॥ ६ ॥

इति श्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजा श्री राजा बहादुर
श्री सीतारामचन्द्र कृपा पात्राधिकारि विश्वनाथ
सिंह जू देव कृत तिलक शब्द समाप्त ।

इति ।

सूचना–मूल ग्रन्थमें ११५ शब्दहैं सो न जाने किस कारणसे महाराजने उसे छोड दिया है । सो दोनों शब्द प्रस्तावनामें दे दियाहै पाठक वहांसे देख लें ।

अथ चौंतीसी ।

ओंकार ।

ओंकार आदिहि जो जानै।लिखिकै मेटि ताहि फिरि मानै॥
वे ओंकार कहै सब कोई।जिनहुँ लखा सो बिरला सोई॥ १॥

चौंतीसी ।

कका कमल किरणिमें पावै।शशि बिगासित संपुटनहिं आवै॥
तहां कुसुंभ रंग जो पावै। औगह गहकै गगन रहावै ॥ १ ॥
खखा चाहै खोरि मनावै। खसमहिं छोडि दशौ दिशि धावै॥
खसमहिं छोड़ि क्षमा ह्वै रहई।होय अखीन अक्षय पद गहई२
गगा गुरुके वचनै मानै। दूसर शब्द करै नहिं कानै ॥
तहां विहंग कतहुं नाहिं जाई। औगह गहकै गगन रहाई॥३॥
घघा घट बिनशे घट होई। घटहीमें घट राखु समोई ॥
जो घट घटै घटै फिरि आवै। घटही में फिरि घटै समावै॥४॥

ङङा निरखत निशि दिन जाई। निरखत नैन रहा रटलाई ॥
निमिष एक लौं निरखै पावै । ताहि निमिषमें नैन छिपावै५॥
चचा चित्र रचो बहु भारी। चित्रहि छोड़ि चेतु चित्रकारी ॥
जिन यह चित्र बिचित्र उखेला। चित्र छोड़ि तू चेतु चितेला६
छछा आहि छत्र पति पासा। छकिकै रहसि मेटि सब आसा॥
मैं तोहीं छिन छिनसमुझाया। खसमछोड़िकसआपबंधाया७
जजा या तन जीयत जारो। यौवन जारि युक्ति जो पारो ॥
जो कुछ जानिजानि पर जरै । घटहि ज्योति उजियारी करै८
झझा अरुझि सरुझि कित जाना। हीठत ढूँढ़त जाहि पराना॥
कोटि सुमेरु ढूंढ़ि फिरि आवै। जो गढ़ गढ़ा गढ़हि सो आवै९
ञञा निरखत नगर सनेहू । करु आपन निरवारु सँदेहू ॥
नाहिं देखी नाहिं आपभजाऊ। जहाँ नहीं तहँ तन मनलाऊ१०
टटा बिकट बात मन माहीं । खोलि कपाट महलमें जाहीं ॥
रहै लटपटे जुटि तेहि माहीं। होहिं अटल ते कतहुं नजाहीं ११
ठठा ठौर दूरि ठग नीरे । नितके निठुर कीन मन धीरे ॥
जेहिठगठगसबलोगसयाना। सो ठगचीन्हिठौरपहिचाना १२
डडा डर कीन्हे डर होई । डरहीमें डर राखु समोई ॥
जो डर डरै डरै फिरि आवै। डरहीमें पुनि डरहि समावै॥ १३॥
ढढा ढूंढ़तई कत जाना । ढीगर ढोलहि जाइ लोभाना ॥
जहां नहीं तहँ सब कछु जानी। जहां नहीतहँले पहिचानी १४
णणा दूरि वसौ रे गाऊं । रे णणा टूटै तेरा नाऊं ॥
मुये यते जिय जाही घना। मुये यतादिक केतिक गना॥ १५॥

तता अति त्रियो नहिं जाई। तन त्रिभुवनमें राखु छपाई ॥
जो तन त्रिभुवनमाहँछपावै।तत्त्वहिमिलिसोतत्त्वजोपावै१६
थथा थाह थहो नहिं जाई। यह थीरे वह थीर रहाई ॥
थोरे थोरे थिरहो भाई। विन थंभे जस मन्दिर जाई ॥ १७ ॥
ददा देखौ बिनशन हारा। जस देखौ तस करौ बिचारा ॥
दशौ द्वारमें तारी लावै। तव दयालको दर्शन पावै ॥१८॥
धधा अर्ध माह्वँ अँधियारी। जस देखै तस करै बिचारी ॥
अधो छोड़ि ऊरध मन लावै।अपा मेटि कै प्रेम बढ़ावै॥१९॥
नना वो चौथमें जाई। रामका गदह है खरखाई ॥
नाह छोड़ि किय नरक बसेरा।अजौं मूढ़ चित चेतु सवेरा२०
पपा पाप करै सब कोई। पापके धरे धर्म नहिं होई ॥
पपा कहै सुनौरे भाई। हमरेसे ये कछू न पाई ॥ २१ ॥
फफा फल लागो बड़ दूरी। चाखै सतगुरु देव न तूरी ॥
फफा कहै सुनौ रे भाई। स्वर्ग पताल कि खबरि न पाई२२
बबा बर बर कर सब कोई।बर बर किये काज नहिं होई ॥
बबा बात कहै अरथाई।फलका मर्म न जानेहु भाई ॥२३॥
भभा भर्म रहा भरि पूरी। भभरेते है नियरे दूरी ॥
भभा कहै सुनौरे भाई। भभरे आवै भभरे जाई ॥ २४ ॥
ममा सेये मर्म न पाई। हमरे ते इन मूल गवाँई ॥
ममा मूल गहल मन माना।मर्मी होहि सो मर्महि जाना॥२५
यया जगत रहा भरि पूरी। जगतहु ते ययाहै दूरी ॥
यया कहै सुनौरे भाई। हमरे सेये जै जै पाई ॥ २६ ॥

ररा रारि रहा अरु झाई। राम कहै दुख दारिद जाई॥
ररा कहै सुनौरे भाई। सतगुरु पूछि कै सेवहु जाई॥२७॥
लला तुतरे बात जनाई। तुतरे पावै परचै पाई॥
अपना तुतुर और को कहई।एकै खेत दुनों निरबहई॥२८॥
ववा वह वह कह सब कोई। वह वह कहे काज नहिं होई॥
ववा कहै सुनहुरे भाई। स्वर्ग पतालकी खबरि न पाई २९
शशा शरद देखै नाहिं कोई। शर शीतलता एकहि होई॥
शशा कहै सुनौ रे भाई। शून्य समान चला जग जाई॥३०॥
षषा षर षर कह सब कोई। षर षर कहे काज नहिं होई॥
षषा कहै सुनहुरे भाई। राम नाम लै जाहु पराई॥ ३१॥
ससा सरा रचो बरिआई। सर बेधे सब लोग तवाई॥
ससाके घर सुन गुन होई। यतनी बात न जानै कोई ३२
हहा होइ होत नाहिं जानै। जबहीं होइ तबै मन मानै॥
है तो सही लहै सब कोई।जब वा होइ तब या नाहिं होई ३३
क्षक्षा क्षण परलै मिटि जाई। क्षेव परे तब को समुझाई॥
क्षेव परे कोउ अंत न पाया।कह कबीरअगमन गोहराया ३४

ओंकार आदिहि जो जानै।लिखिकै मेटि ताहि फिरि मानै॥
वै ओंकार कहै सब कोई।जिनहुँ लखा सो विरला सोई॥१॥

ओंकारको आदि जो रामनाम ताको जो कोई जानै पिंडाण्ड ब्रह्माण्डको चाहै लिखिकै कहै उत्पत्तिकै मेटै कहै नाशकरै फिरि मानै कहै पाळनकरै। सो वह ओंकारको तो सबै कोई कहै हैं परन्तु जिन वाको लखाहै सो कोई

बिरलाहै । तांके लखिबेको प्रकारहौं कहैहौं । अकार लक्ष्मणको स्वरूप उकार शत्रुघ्नको स्वरूप मकार भरतको स्वरूप अर्द्धमात्रा श्रीरामचन्द्रको स्वरूप संपूर्ण प्रणव श्री जानकीजीको स्वरूप । यहि रीतिते जो कोई प्रणवको जानै सो बिरला है । कौनी रीतिते जपकरै त्रिकुटीमें अकार कंठमें उकार हृदय में मकार नाभिमें अर्द्धमात्रा गैबगुफामें संपूर्ण प्रणव ऐसो एक एक मात्राको अर्थ बिचारत घंटानादकी नाईं जप करनवारो बिरला है साहबमुख यह अर्थ हम दिग्दर्शन करादियो है और बिस्तार ते अर्थ हमारे रहस्य त्रयग्रन्थमें है और सब जगतमुखअर्थ है ॥ १ ॥

कका कमल किरणिमें पावै।शशि बिकसितसंपुटनाहिंआवै॥
तहां कुसुम्भ रंग जो पावै । औगह गहकै गगन रहावै ॥२॥

क कहिये सुखको सो कका कहे सुखको सुख जो साहब तिनको किरणि जो अर्द्धमात्रा ताको नाभि कमलमें ध्यान करि जीव जानै । औ शशि जो चंद्र नाड़ी तौनेको अमृत सींचिकै विकासित कियरहै संपुटित न होनपावै । औ तहैं कुसुंभ रङ्ग जो प्रेम ताको पावै तौ अगह जो साहब जे मन वचन करिकै नहीं गहे जाइँ तिनको गहिकै गगन जो हृदय आकाश तामें राखै । याके आवरण के मंत्र औ ध्यानको प्रकार हमारे "शान्तशतक" में लिख्यो है । ककार सुखको कहै हैं तामें प्रमाण । "कः प्रजापति रुद्दिष्टः को वायुरिति शब्दितः॥कश्चात्मनि संमाख्यातः कस्सामान्य उदाहृतः ॥ १ ॥ कं शिरो जलमाख्यातं कं सुखेऽपि प्रकीर्त्तितम् ॥ पृथिव्यां कुः समाख्यातः कुः शब्देऽपि प्रकीर्त्तितः" ॥ २ ॥

खखा चाहै खोरि मनावै । खसमहिं छोड़ि दशहु दिशि धावै॥
खसमहिं छोड़ि क्षमा ह्वै रहई।होइ अखीन अक्षयपद गहई ३

खा जो चैतन्याकाश ताहूको चैतन्याकाश अर्थात् ब्रह्महूको ब्रह्म जो साहब ताको जो चाहै तौ अपनी खोरि जो चूकसो मनावै कहे बकसावै । कौन चूक ?

१–'क' ब्रह्मा, वायु, आत्मा और साधारणको कहतेहैं ।
'कं' शिर, पानी, और सुखको कहतेहैं । शब्द और भूमिको 'कु' कहतेहैं ।

जौन खसम जे साहब हैं तिनको छोड़िकै जो दशौ दिशामें धावै है कहे नाना उपासना करै है सो या चूकबकसावै । औ ख जो चैतन्याकाश सम कहे सर्वत्र पूर्ण ऐसो जो धोखा ब्रह्म ताको छोड़िकै तैं क्षमा ह्वैरहु ब्रह्मको बाद विवाद न करु होइ अखीन कहे आपनो स्वरूप जानिकै कि मैं साहबको हौं अक्षय हौं ब्रह्महूमें लीन भये मेरो जीवत्व नहीं जायहै ऐसो हंस रूप ह्वैकै अक्षय पद जे साहब तिनको गहु ख कहे आकाशतामें प्रमाण ॥ "खमिन्द्रिये खमाकाशेखः स्वर्गऽपिप्रकीर्तितः" ॥ ३ ॥

गगा गुरुके वचनै मानै । दूसर शब्द करै नहिं कानै ।
तहां विहङ्गम कतहुं न जाई।औगहि गहिकै गगन रहाई॥४॥

ग जो है साहबको गीत ताको गा कहे ते गवैयाहै । सो हेजीव ! तैं गुरु जे साहब हैं तिनके वचन मानु कौनबचन ? कि ॥ " अजहूं लेउ छुँड़ाइ कालसे जो घट सुरति सँभारै " ॥ और दूसर शब्द न कान करु जो घट सुरति सँभारैगो तौ बिहङ्गम जो जीवात्मा सो कतौं न जाइगो । औगह कहे अवगाह जे साहब हैं तिनको गहिकै गगन जो हृदयाकाश ताही में रहैगो । अर्थात् जो साहबको गुण गान करैगो तौ तेरो मन जो सर्वत्र डोलै है सो कतौं न जाइगो तामें प्रमाण॥"गो गेणेशः समुद्दिष्टो गंधर्वो गः प्रकीर्त्तितः। गं गीतं गाचगाथा स्याद्गौ-श्चधेनुस्सरस्वती " ॥ ४ ॥

घघा घट बिनशे घट होई । घटहीमें घट राखु समोई ॥
जो घट घटै घटै फिरि आवै । घटहीमें फिरि घटै समावै॥५॥

घ जो घट है ताको घा जो नाश है सो करन वारो अर्थात् जनन मरण वारे हे घघा जीव ! घट जे पांचौ शरीर ताके विनशे घट जो है हंस शरीर सो होइहै ? कैसे होइहै ताको साधन कहै हैं " घटही में घट राखु समोई " कहे स्थूल सूक्ष्ममें, सूक्ष्म कारणमें,कारण महाकारण कैवल्यमें, कैवल्य हंसस्वरूपमें, समोइ राखु:अर्थात् एक एक में लीन कै देइ । जो यही रीतिते घट जे पांचौ शरीर तिनको घटै घटै फिरि आवै तौ घट जो है हृदयाकाश ताहीमें घट जो हंस शरीर सो

१-ख । इन्द्रिग, आकाश, स्वर्गको कहते हैं ।

२-ग गणेश, गन्धर्व, ' गं ' गीत, ' ग ' गाथा, ' गौ ' गाय और सरस्वतीको कहते हैं ।

समावै अर्थात् जीतै । यहशरीर में हंसस्वरूप पायजाय । घ घातको कहैहैं ॥
"घोघटेऽपिसमाख्यातःकिंकिणीवा प्रकीर्त्तितः । घा हनूमति विख्यातोघृमूर्द्धनि-प्रकीर्त्तितः" ॥ ५ ॥

ङङा निरखत निशिदिन जाई। निरखत नय न रहत रतनाई ॥
निमिष एक लौं निरखै पावै। ताहि निमिषमें नयन छिपावै ६

ङ कहे भयानक ङा कहे बिषय बांछा । सो ङङा भयानक बिषय बांछा निरखत कहे बिचारत तोको दिनौ राति जाइहै वाहीके निरखत में कहे बिचारतमें नय जो नीति सो नहीं रहत रतनाई जो अनुराग बिषयमें सोई रहि जाइहै। कैसीहै वह बिषय कि एक निमिष लौं निरखै पावै कहे वामें लगै तौ तौनेन निमिषमें भोगोपरान्त नयन छिपावैहै नहीं नीक लागैहै । अर्थात् रूपको देख्यो फिरिनयनमें नीर भरि आवैह नहीं नीक लागैहै । सुगन्ध बहुत सूंघ्यो उपरांत नाक बरि उठैहै, अच्छो भोजन कियो तृप्त भये पर बिरस परि जाइहै, गान बहुत सुन्यो फिरि बक वाधि लगै है । स्पर्श बहुत सुन्दर स्त्री कियो फिरि वीर्य पात भये, नहीं नीकालागै है, गरम लागन लगै है । सो ये सब तृप्तिके उपरांत जो निमिष है तौने निमिष नहीं नीक लगै है । ङ विषय बांछाको कहैहैं तामेंप्रमाण ॥
"ङकारो भैरवः ख्यातो ङो ध्वनावपि कीर्त्तितः ॥ ङकारस्स्मरणे प्रोक्तो ङकारो बिषयस्पृहा" ॥ ६ ॥

च चा चित्र रचो वहु भारी। चित्र छोड़ि तू चेतु चित्रकारी ॥
जिन यह चित्र विचित्र उखेला। चित्र छोड़ तू चेतु चितेला ७

च कहे मन काहेते कि, मनको देवता चंद्रमा यांते मनको कही । औ दूसर चा चोरको कही सो तेरोमन जो चोर सो तेरे स्वरूपको चोराय लीन्हो साहबको भुलायदीन्हो सो यह जगत्‌रूपाचित्र जो रच्योहै चित्रविचित्र सो तू

१–'घ' घड़ा अथवा घुँघुरू को कहते हैं 'घा' हनुमान् और 'घृ' शिरको कहतेहैं ।

२–'ङ' भैरवको किसीकी याद करनेको और भोगकी इच्छाको कहतेहैं 'ङा' शब्दकरनेको कहतेहै ।

छोड़िदे हे जीव ! चित्रकारी जो मन ताको चेतकरु वही तेरे स्वस्वरूप को भुलाय दियोहै च चंद्रमा को चोरको कहैहैं ॥ "चैश्चंद्रश्च समाख्यातस्तस्करे भास्करेमतः" ॥ ७ ॥

छछा आहि छत्र पति पासा।छकि किन रहै छोड़ि सबआशा। मैं तोहीं क्षण क्षण समुझाया।खसमछोड़िकसआपुबँधाया ८

छ कहे निर्मल जीव तैं आपनें स्वरूपको भूलिकै साहबको भूलिगयो ताते छाकेह छेदरू ही ह्वैगयो तेरे स्वरूपकी क्षयह्वैगई सो तैं तो छत्रपती जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र तिनको आहि तिनके पास जायकै ई सब नाना देवनकी आशाछोड़िकै छकिरहु।या बात मैं तोको क्षणक्षण समुझायो परन्तु तुमखसमजे साहबहैं तिनको छोड़िकै तैं काहेको जगत् में अपनपौ बँधाया।छनिर्मल को औ खेद छ को कहै हैं तामें प्रमाण॥ "निर्मले[२] छस्समाख्यातस्तरणि श्छः प्रकीर्त्तितः॥ छेदे च छः समाख्यातो विद्वद्भिः शब्दशासने" ॥ ८ ॥

जजा ई तन जियतहि जारो। यौवन जारि युक्ति जो पारो ॥ घटहि ज्योति उजियारी करे।जो कछु जानि जानि पर जरै९

ज कहिये वेगवंतको औ जा कहिये जघनको सो हे जीव ! वेगवारो जोमनहै सोई तेरो जघनहै ताहीते बागत फिरै है अर्थात जननमरण होतरहैहै। सो यातनको कहे मन रूप तनको तैं जीते में कहे यही शरीरको साधनकरके जा रिदे मरेते न जरैगो दूसर शरीर देइगो। यौवन कहे युवाअवस्थाको जारिकै बहयुक्तिको पारो कहे धारणकरो फिरि वृद्धावस्थामें साधनकरिबेकी सामर्थ्य नहीं रहैहै ताते युवै अवस्थामें इन्द्रिनको विषय साधनकरि जारु कौनी तरहते जारु कि जो कछु पदार्थ जगतमें जानि राख्यो है ते जानिपरैं कि जरिगये अर्थात् मनको संकल्प विकल्प छूटि जाइ तबहीं ज्योति जो मनहै सोघटमें साहबकी ओर उजियारी करैहै । ज्योति मनको कहैहैं तामेंप्रमाण ॥ "जीवरू-

---

१–'च' चंद्रमा सूर्य, और चोरको कहतेहैं ।

२–'छ' निर्मल, छेद, सूर्य और नावको कहते है ।

पयकअंतरबासा । अंतरज्योतिकीनपरकासा ॥ औ जकार वेगवारेको औ जघनको कहै हैं "वेगिनि जः समाख्यातो जघने जः प्रकीर्त्तितः" ॥ ९ ॥

झझा अरुझि सरुझि कित जाना। हीठत ढूंढ़त जाहि पराना॥ कोटि सुमेरु ढूंढ़ि फिरि आवै। जो गढ़ गढ़ा गढ़हि सोपावै १०

झ कहिये झंझापवनको, औ झा कहिये नष्टको सो तैं विषयझंझामें परिकै नष्ट होइगये। सो यामें अरुझिकै तैं कहां सरुझिकै जैहै। झ कहिये पीठिको झा कहिये विषयवयारिकोसो विषयबयारिमें अरुझिकै साहबको पीठिदैकै सरुझिकै कितजान चाहैहै। हिठत ढूंढ़त तेरो परान जाइहै। नाना उपासना नानामतकरै है। अथवा हीठत ढूंढ़त तेरोपरान जाइहै नानामतनमें, पै तोको विषय बयारि न छांड़ैगी वाहीमें अरुझो रहैगो। कोटिसुमेरुकहे कोटिन ब्रह्माण्ड भटकि आवो परन्तु जौन मन शरीरगढ़को गढ़ाहै कहे बनावा तौनेनको औगढ़कहे शरीरको तपावैगो याते तैं विषयबयारिको छांडु साहबके सम्मुख होइ। झ झंझाबातको औ नष्टको कहै हैं तामेंप्रमाण॥ "झंझावाते झकारःस्यान्नष्टे झस्समुदाहृतः" ॥१०॥

ञञा निरखत नगर सनेहू। आपन करु निरुवारु सदेहू॥ नहिंदेखोनहिंआपुभजाऊ।जहां नहींतहँतनमनलाऊ॥११॥

ञ कहिये सोइबेको ञा कहिये झर्झर ध्वनिको। सो झर्झरनाक बजावत ऐसो सोवत कहे आपने स्वरूपको भूलो जीव नाना मतनमें बाद बिवाद करत नगर जो जगत् औ शरीर ताहीको निरखै है औ वाहीमें सनेह करै है आपने जो संदेहकी मैं साहबकोहौं कि और को हौं ताको तो निरवारुकरु नयबातते नहीं देखी जेहिमें साहब मिलै हैं औ न आप भजाऊ कहे न अपनपौ जाने कि मैं कौनकोहौं जिन जिन मतनमें न साहिबै जानिपरै न आपने स्वरूप जानिपरै तामें तैं तनमनको लगाये है। औ ञशयनको औ झर्झरध्वनिकोकहै हैं तामेंप्रमाण॥ "ञकारः[3] शयने प्रोक्तो ञकारो झर्झरध्वनौ" ॥ ११ ॥

१–'ञ' वेगवाले और जाँघ को कहते हैं।

२–'झ' आँधी और खोजानेको हकते हैं।

३–'ञ' सोने (शयनकरने) औ झर्झर शब्दमें कहाजाता है।

टटा बिकट बात मन माहीं । खोलि कपाट महलमें जाहीं ॥
रहेलटपटेजुटितेहिमाहीं। होहिंअटलतेहिकतहुं न जाहीं १२॥

एक ट कहे जो नाभीमें रेफकी ध्वनि उठैहै औ दूसरो टाकहे जो सुरति कमलमें गुरुरकार ध्वनिकरै है । सोदूनों ध्वनि जामें होइँ सो टटाकहावैहै सोहे॰ टटाजीव ! बिकटबातकी जेबासना तेरेमनमें तेई कपाटहैं ताकोखोलिकै दूनों रकारकी ध्वनि एक कै रामनामकी छइउ मात्रा जपत अर्थ बिचारत महल जो साकेत तहांको जाइ रहे । लटपटे कहे जैसे होय तैसे राम नाममें जुटिरहु तौ साकेतमें जाई कै तैं अटलह्वै है। अथवा बिकट बासननको तेरे मनमें टटाह्वै रहा है सो टटाको खोलिकै महलमें जा।हे लटपटे!जौने संसारमें लटपट ह्वैरहे है कहे नरक स्वर्गमें तैं गिरे उठै है सो तैं साकेतमें जुटिरहु जे साकेत में जुटिरहे हैं कहे प्रवेश करिरहे ह तेई अटल ह्वैरहे हैं उनको जनन मरणनहीं होय। वे कतहूं नहीं जाय हैं। टध्व-निकोकहैहैंतामेंप्रमाण॥"टः पृथिव्यां च करके टो ध्वनौ च प्रकीर्त्तितः" ॥१२॥

ठठा ठौर दूरि ठग नीरे। नितके निठुर कीन्ह मन धीरे ॥
जेहिठगठगसबलोगसयाना।सोठगचीन्हिठौरपहिचाना १३

ठ कहिये बृहद्ध्वनिको औ ठाकहियेचंद्रमंडलको । सो बृहत्है ध्वनिकहे कीर्त्तिजिनकी तीनों तापके हरणहारे चंद्रमण्डलकी नाईं ऐसे परमपुरुषपरजे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको ठौर दूरि है । औ ठग जो मनहै सोनेरे है अथवा हेठ-ठ्ठहा मसखराजीव साहबसों मसखरी करनवारो जाते जननमरण छूटै है वा साहबको ठौर दूरि है । ठगजे मन बुद्धि चित्त अहङ्कार ते नेरे हैं । तैं नित्यको निठुरहै याजो माया ताको ना धीरे करत भे सोकहे तेजकरते भये ऐसो जो ठग मन जौनसब सयाने लोगनको ठगतभो तौने ठगमनको चीन्हिकै साहब के ठौरको पहिचानौ । अथवा ठग जे हैं गुरुवालोग ते साहबते छोड़ायकै और औरमें लगायो ते कहां तेरे मनको धीरे किये नाहीं किये । औ ठ बृहद्ध्वनिको औ चंद्रमंडलकोकहै हैं तामें प्रमाण ॥ "बृहद्ध्वनिश्च ठः प्रोक्तस्तथा चंद्र-स्यमंडले" ॥ १३ ॥

१–'ट' भूमि, करकपात्र और शब्दकरनेमें कहागया है ।
२–'ठ' बड़े शब्द और चन्द्रमाके घेरेको कहते हैं ।

डडा डर कीन्हें डर होई। डरहीमें डर राखु समोई ॥
जो डर डरै डरै फिरिआवै। डरहीमें पुनि डरहि समावै॥ १४॥

एक ड कहिये ध्वनिको औ डा कहिये त्रासको सों मायारूप बाणीकी त्रास कहे डर सो याडर तेरेकीन्हे ते होइहै अर्थात् ये मिथ्या हैं तैंहीं बनायलियो है समोइदे। कैसेमिटै सो जिनको तैं डरै है। बिषयन को तिनको इन्द्रिनमें समोइदे, इंद्रिनको डरै है सोमनजो महाडरहै तामें समोइद, औ मनको चित्तन्मात्रब्रह्म में समोइदे या रीतिते डरको डरमें समोइके तैं फिरिआउ साधनकरि साहबको जानु। डकार ध्वनिको औ त्रासको कहै हैं तामें प्रमाण॥ "डकारः शंकरे त्रासे डकारो ध्वनिरुच्यते" ॥ १४ ॥

ढढा ढूढ़त ई कत जाना। ढीगर डोलहि जाइ लोभाना॥
जहां नहीं तहँसब कछु जानी। तहां नहीं जहँ ले पहिंचानी १५

ढ कहिये बाणीको ढा कहिये निर्गुण ब्रह्म को। सो हे जीव! बाणीमें लगिकै निर्गुण ब्रह्मको ढूँढत तोको कहां जानाहै अर्थात् उहाँ कुछुनहीं है तैंतो साहबकों है वा ढीगर जापुरुषके है तौनेको ढोल बाजा बानीरूप पानी तौनेमें लोभाने तैंजाइ अर्थात् या बाणीरूप ढोलबाजा है अहंब्रह्म बुद्धि बतावै है सो दूरिकों ढोल सुहावन है वामें कछुनहीं। देशकालबस्तु परिच्छेदते शून्य है हाथ एकौ न लगैगो। सो हे जीव! जहांकेह जौने साधनमें साहबनहीं हैं तौनेन साधन को तैं सबकछु जानिलीन्हे है। सो जहां नहीं कहे जहां माया ब्रह्म ये एक हू नहीं हैं तहा साहबको तैं पहिचानले। ढ निर्गुणको औ ध्वनि को कहै हैं तामें प्रमाण॥ "ढकारःकीर्त्तितो ढक्का निर्गुणेच ध्वनावपि" ॥ १५ ॥

णणा दूरि वसौ रे गाऊं। रे णणा टूटै तेरे नाऊं॥
मुये येते जिय जाही घना। मुये यतादिक केतिक वना १६

ण कहिये निष्फलको णा कहिये ज्ञानको। सो हे जीव! या धोखा ब्रह्मकों ज्ञान तेरो निष्फल है या ज्ञानते साहब न मिलैंगे साहब को गाउंजो साकेत है

१–'ड' श्री महादेव भय औरँ शब्द में कहागयाहै ।

२–'ढ' ढक्का गुणरहित और शब्दको कहतेहैं ।

सो दरि बसै है सोरे निष्फल ज्ञानवारे मूढ़ जीव! टूटै तेर नाउं कहे वा धोखा ब्रह्ममें जगै तेरोजीवत्व को नाउं टूटि जाइगो अर्थात् तैंहू धोखा ब्रह्म कहावन लैगा। । सो या ज्ञान में केतौ मरिगये हैं औघना कहे बहुत जीव मुये जाहि हैं । औ केतेजनै यही रीति मरिजै हैं या धोखाब्रह्म निष्फलज्ञानते साहब न मिलैंगे । ण निष्फलको औ ज्ञानको कहे हैं तामेंप्रमाण ॥ " ण[1]कारः कीर्त्तितो ज्ञाने निष्फलेऽपि प्रकीर्त्तितः " ॥ १६ ॥

तता अति त्रियो नाहिं जाई । तन त्रिभुवनमें राखु छपाई ॥
जो तन त्रिभुवन माहं छपावै।तत्त्वहि मिले तत्त्व सो पावै१७

त कहिये चोरको ता कहिये सीगटकी पूंछको सो हे जीव! साहबते चोराइकै आंखी छपाइकै सिंहजो साहब ताकीशरण छोड़िकै सीगटकी पूंछजो धोखाब्रह्म तौनेको तैं गहे सो अतित्रियोकहे आसमता ताते कहे अत्यंत चारिउ ओर व्याप्ति त्रिगुणात्मिका माया तौनौ भरितेरी नहीं जाईहै मुक्तिहोवे की कहाकहिये । सो तनकहे अणुमात्र जो तैं है ताको त्रिभुवनमें छपाय राखतिभै माया । सो येजे तेरे पांचौ तन हैं तिनको तैं त्रिभुवनमें छपायदे अर्थात् चारिउ शरीरहैं तिनको संसारी मानिले औ मैं इनते भिन्नहौं वा शरीर को अभिमान जो तैं छाँड़िदे तौ तत्त्व जो साहबको यथार्थज्ञान कि मैं साहबकोहौं तौन जब तोको मिलै तब तत्त्व जे साहबहैं तिनको पावै । तत्त्व यथार्थ को कहै हैं तामें प्रमाण ॥ " तत्त्वं ब्रह्मणि याथार्थे॥ औ साहब तत्त्वकहावै हैं तामें प्रमाण॥ "राम एव परं तत्त्वं राम एवपरंतपः " ॥ ता चोरको औ सीगटकी पूंछको कहै हैं तामे प्रमाण ॥ " त[2]कारः कीर्त्तितश्चौरः क्रोष्टुपुच्छेपि तः स्मृतः " ॥ १७ ॥

थथा थाह थहो नाहिं जाई । इह थोरे वह थीर रहाई ॥
थोरे २ थिर रहु भाई । बिनु थंभे जस मँदिल थँभाई॥१८॥

थ कहिये शिला समूहको औ था कहिये रक्षाको । सो हे जीव! शिलासमूह जो मन जोनेके भयते अपनी रक्षाकरु काहेते थाहहे अर्थात् बिचार कीन्हे कुछु-

---

१–'ण' ज्ञान और प्रयोजन रहित (बेफायदा) को कहतेहैं ।
२–'त' चोर और शृगालकी पूंछको कहतेहैं ।

बस्तु नहीं है परन्तु काहूके थहाये नहीं थहाय जायहै । शिलासमूह मनहै सो आगेपदमें कहिआये हैं ॥ "पाहनफोरि गंगयकनिकसी चहुंदिशि पानीपानी" ॥ सो यहै मनथिर होइ तो वह जीवहू थिररहै । ताते तैं थोरे थोर साधन करु जाते मन थिर होइ । जो साधन न करैगो तौ मन न थिर रहैगो कैसे ? जैसे बिना थंभकहे खंभा देवाऊ और जो कौनौ यशौवाली बात न करै तौवह यश बनै रहतहै ? मन्दिरथँभै है ? अर्थात् नहींथँभै है । अथवा थोरे थोरे साधनकरि मन थिर कैले जब मन थिर ह्वै जाइगो तब साधन न करन परैगो। कैसे जैसे कौनौ यशवाली बातकियो फिर वा यश रूप मंदिर बिना थम्भै बनोरहै है । थ शिलासमूहको औ रक्षाकोकहे हैं तामें प्रमाण ॥ "शिलोच्चये थँकारस्स्यात्थकारोभयरक्षणे" ॥ १८ ॥

दद्दा देखो बिनशनहारा । जस देखौ तस करौ बिचारा ॥
दशौ द्वारमें तारी लावै । तब दयालको दर्शन पावै ॥१९॥

द कहिये कलत्रको औ दा कहिये दानको। सो हेजीव! या सबकहे यहलोकमें जो कलत्रादि औ वहलोक स्वर्गादिक बिनशनहारा है अर्थात् सब नाशमानहै । सो जस देखो कहे जैसा नाशवान् देखतहौ तैसा तुहूं आपने को बिचारकरो कि, हमहूं नाश ह्वै जै हैं । दशौ द्वारको महा मुद्रा करि बंदकरि ताली लावै कहे समाधिकरै तबदयालु जे साहबहैं तिनको दर्शन तैं पावैगो । द कलत्रको औ दान को कहै हैं तामें प्रमाण॥ "दः[२]कलत्रे बुधैरुक्तो छेददानेपि दातरि"॥ १९॥

धधा अधे माहँ अँधियारी । जस देखै तस करै बिचारी ॥
अधौ छोड़ि उरध मनलावै। अपा मेटिकै प्रेम बढ़ावै॥२०॥

ध कहिये बंधनको औ धा कहिये धाताको । सोहेजीव ! मायाके बंधनमें परिकै अपनेको धाताकहे ब्रह्मा मानिलियो है। सो हेजीव ! तैं अधः कहे अधोगतिकी अंधियारीमें परो है । तोकोनहीं सूझिपरै अज्ञानमें परो है । सो जस देखैहै सुनै है तैसही बिचार अज्ञान पूर्वक करैहै सो तैं न करु अधो जो है अधो-

---

१-'थ' पर्वत और सङ्कटसे बचाने को कहतेहैं ।

२-'द' स्त्री, काटना, देना और दानकरनेवालेको कहते हैं ।

२८

गतिकी राह ताको छोड़िकै ऊर्ध्व कहे साहबके इहां जाबेकी जोराहहै तामेंमन लगाउ अपामेटिकै कहे जो आपन सब मानि राख्यो है सो सबसाहबको मानिकै औ आपनेहूंको साहबको मानिकै प्रेमको बढावै । ध बंधनको औ धाता को कहै हैं तामें प्रमाण ॥ "धो बंधने धनाध्यक्षे धाता धीर्मरुतावपि" ॥ २० ॥

नना वो चौथेमें जाई । रामको गदह है खर खाई ॥
नाहछोड़ि कियेनर्कबसेरा। नीचअजौंचितचेतुसबेरा॥२१॥

न कहिये गुणको औ ना कहिये निंदाको सो हेजीव ! तैंत्रिगुण में बँधिकै निन्दारूप ह्वैगयो अर्थात् निंदा करिबेलायक ह्वैकैमन बुद्धि चित्तमें अहंकार जो चौथ तामें परिकै अर्थात् आपने को ब्रह्ममानिकैं रामको तैं ह्वैकै अर्थात् तैंतो श्रीरामचन्द्रको है परन्तु अवरे २ में गदहा ह्वै खर खात फिरै है । अर्थात झूर ज्ञानमें परोहै सो नाह जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनको छोड़िकै नरकमें बसेराकियो सोहेनीच! अबै सबेरो है अजहूं चेतु। न गुणको औ निन्दाको कहै हैं तामेंप्रमाण ॥ "नेकारः स्याद्गुणे चंद्रेदुःस्तुतौ च प्रकीर्तितः"॥२१॥

पपा पाप करै सब कोई । पापके धरे धर्म नहिं होई ।
पपा कहै सुनहु रे भाई। हमरेसेये कछू न पाई ॥ २२ ॥

प कहिये श्रेष्ठको पा कहिये रक्षकको । सो हेजीव ! तैं साहबको ह्वैकै औरे औरे देवतनको श्रेष्ठ मानै है औ रक्षक मानै है । सो पापई करै है पापके किये ते धर्म नहीं होयगो अर्थात और देवतनके किये तेरी रक्षा न होयगी काहेते पपा जेहैं श्रेष्ठ रक्षक जिनको तैं मानै है तेई कहै हैं "हे भाई ! सुनो हमारे सेये कछू न पावैगो, मुक्तिं हमारी दीनि नहीं दैजाइ मुक्ति श्रीरामचन्द्रही की दई दैजाइ है तामें प्रमाण ॥ "मुक्तिप्रदाता सर्वेषां विष्णुरेव न संशयः"। विष्णु-श्रीरामचन्द्रको नामहै सो हमारे सर्वसिद्धान्तमें लिखोहै । प श्रेष्ठको औ रक्षकको कहैहैंतामेंप्रमाण ॥ "पंरमे पःसमाख्यातो पापाने चैव पातरि" ॥ २२ ॥

१–'ध' बाँधना, कुबेर, ब्रह्मा बुद्धि और वायुको कहतेहैं ।

२–'न' गुण, चन्द्रमा और निन्दामें कहाजाताहै ।

३–'प' श्रेष्ठको, 'पा' पीने, रक्षाकरनेवाले और पीनेवालेको कहतेहैं ।

फफा फल लागो बड़ दूरी। चाखैं सतगुरु देइ न तूरी॥
फफा कहैं सुनुहुँ रे भाई। स्वर्ग पताल कि खबरि न पाई २३

फ कहिये फलको फा कहिये निष्फल भाषण कों। सो हे जीव! जौने फलको तैं भाषण करैहे कि ऐसोफल होइगो सो या तेरो भाषणो निष्फल है फल जे साहब हैं ते बहुत दूरि हैं सतगुरु जेहैं जे साहब को जानै हैं तेईचाखै हैं व फल वे तूरिकै काहूको नहीं देइहैं काहे ते वे साहब मन बचन के परे हैं आपही ते आप जाने जाइ हैं आपनी दई इन्द्रि ते आप देखे जाइहैं सतगुरु जे बतावै हैं ते साहबके प्रसन्न होबेकी राह बतावै हैं सो हे भाई! लोकनमें फल की चाहकरिकै निष्फल के भाषणवाले जे गुरुवा लोगहैं ते कहै हैं कि स्वर्ग पाताल में साहब की खबरि हमहूं कहूँ नहीं पाई अर्थात् साहब हई नहीं हैं। फ फल को औ फा निष्फल भाषण को कहै हैं तामें प्रमाण॥ "झंझावातफकारः स्यात्फःफलेऽपिप्रकीर्त्तितः। फकारेऽपि च फःप्रोक्तस्तथा निष्फलभाषणे"॥२३॥

बबा बर बर कर सब कोई। बर बर किये काज नहिं होई॥
बबा बात कहै अरथाई। फलके मर्म न जानेहु भाई॥ २४॥

ब कहिये बरुणको बा कहिये घटको। सो बरुण जलके भीतर रहै हैं ऐसे हे जीव! तुहूं बाणी के भीतर ह्वैकै घटकी नाई भकभकाइ बरबर सब कोई करौहौ सो बरबर के किये काजनहीं होइ है अर्थात् साहब नहीं मिलैहैं। सो हे बबा! घटकी नाई भकभकान वारे बात तो बहुत अर्थायकै कहै हैं परन्तु हे भाई! लोकनके फलको मर्म नहीं जानौहौ कि वा फल भोगकरि कछुदिन में गिरही परैंगे। ब बरुणको औ कलशको कहै हैं तामें प्रमाण॥ "प्रचेता वः समाख्यातः कलशो ब उदाहृतः"॥ २४॥

भभा भर्म रहा भरि पूरी। भभरेते है नियरे दूरी॥
भभा कहइ सुनौ रे भाई। भभरे आवै भभरे जाई॥ २५॥

१–'फ' आँधी, फल, फ अक्षर और, व्यर्थभाषीको कहतेहैं।
२–'ब' वरुण और कलशको कहतेहैं।

भ कहिये आकाश शून्यको भा कहिये भ्रमणको। सो हे जीव ! भ भरिबो कहावै है, डेराबो धोखा या ज्यहि मतन में फल शून्य है तेही मतनमें तैं भ्रमण करि रहो है कहे सो विचार को भ्रमण तेरे पूरिरहो है, सो तोको गुरुवा लोग साहबते डेरवाइ दियो औ धोखा में लगाइ दियो सो तोको डरही डर सर्बत्रदेखो परै है जब आवै कहे जन्महोइहै तबहूं भभेर आवैहै कहे डरैमें आवैहै औ जब जाइहै तबहूं भभेरे कहे डरैमें जाइहै वोहू नानाप्रकारके दुःख होइहैं। सो या भभरे ते नियरे जे साहबहैं ते दूरिह्वैगये। सो भभाजेहैं धोखा ब्रह्मके भ्रमणवाले तेई कैहहैं सो हे भाई ! सुनो भ्रमैते आवैहै भ्रमते जाइहै महाप्रलयमें लीनहोइहै पुनिसृष्टि समयमें संसारमें आये है। भ आकाशको औ भ्रमणको कैहहैं तामेंप्रमाण ॥ " नक्षत्रं भं तथाकाशेभ्रमणेभः प्रकीर्त्तितः। दीप्तिर्भाभूस्तथाभूमिर्भीर्भयेकथिता बुधैः " ॥ २५ ॥

ममा से ये मर्म न पाई। हमेरेते इन्ह मूल गँवाई ॥
ममा मूल गहल मन माना।मर्मी होइ सो मर्महि जाना॥२६॥

म कहिये लक्ष्मीको मा कहिये बन्धन को। सो हे जीव तैं लक्ष्मीके बन्धन में परिकै ऐश्वर्य में परिकै साहब को मर्म्म तू न पायो हमेरेते कहे यह सब हमारहै कहे यह बिचारते यह सब साहब को पहन जानेइहै आपनमानतें इन्हमूल जे साहब हैं तिनको गवाँइदियो सो हे ममा ! मायाबन्धनमें बँधो जीव ! जौन तेरमन में मानाहै ताहीको मूलमानि गहिलीन्होंहै सो तैं मूल न पायो-काहे ते कि मर्मीकहे जो कोई साहबको मर्म्मीहोइ है सोई साहव के मर्मको जानैहै। म लक्ष्मीको औ बन्धनको कहै हैं तामें प्रमाण ॥ " मः शिरश्चन्द्रमा वेधा मा च लक्ष्मीः प्रकीर्त्तिता। मश्च मातरि माने च बन्धने मः प्रकीर्त्तितः" ॥ २६ ॥

यया जगत रहा भरि पूरी। जगतहु ते यया है दूरी ॥
यया कहै सुनौ रे भाई। हमरे सेये जय जय पाई ॥२७॥

१–'भ' भं उक्षत्र और आकाशको,'भः' घूमनेको,'भाः' शोभाको'भी' डरकोकहते हैं।

२–'म' शिर, चन्द्रमा, ब्रह्मा, माता, तौल, और बांधनेको कहते हैं 'मा' लक्ष्मीको कहते हैं।

य कहिये त्यागको या कहिये प्राप्तको। सो हे जीव! त्यागते नामसंन्यासतै प्राप्तजे साहब होई हैं ते साहब जगत् में पूरिरहे हैं। जौन भरिपूरिकह्यो सो साहबको सौलभ्यगुण दिखायो न जानै ताको जगत्‌ते दूरिहै अर्थात् बाहरहै। ते यया जे साहबहैं ते कहै हैं कि, हे भाई! सुनो हमरे सेयेते कहे हमरेन सेवाते सबको जय करनेवाला जो काल ताहूते जयपावै औरी तरहतै कालते जय नहीं पावै है साहब त्यागहीते मिलै हैं तामें प्रमाण॥ दोहा॥ "बिगरीजन्म अनेककी सुधरै अबहीं आज। होय रामको रामजपि तुलसी तजि कुसमाज"॥ य त्यागको औ प्राप्त को कहै हैं तामें प्रमाण॥"यमोयः कीर्तितः शिष्टैर्यो वायुरिति विश्रुतः। याने यातरि या त्यागेकथितः शब्दवेदिभिः"[1]॥ २७॥

ररा रारि रहा अरु झाई। राम कहे दुख दारिद जाई॥
ररा कहै सुनौ रे भाई। सत गुरु पूंछिकै सेवहु आई॥२८॥

र कहिये कामको स कहिये अग्निको। सो हे जीव तैं कामाग्निमें अरुझि रहो है तामें जरो जाइहै यामें दुःख दरिद्र न जाइगो रामनाम कहेते दुःख दरिद्रजाइहै। सो हे भाई! सुनो रराकहे रसरूप जे साहब तिनको ज्ञानाग्निते कर्मलायकै सतगुरु जे साहबके जाननवारे तिनसों समुझिकै रामनामको सेवहु। रामनाम के सेवनकी युक्ति बूझिकै रको काम अर्थ छोड़िकै र कामको औ अग्निको कहै हैं तामें प्रमाण॥ "रश्च कामेऽनले सूर्ये रुश्च शब्दे प्रकीर्तितः"[2]॥२८॥

लला तुतरे बात जनाई। ततुर पावै परचै पाई॥
अपना ततुर और को कहई। एकै खेत दुनो निरबहई॥२९॥

ल कही इन्द्रको ला कही लक्ष्मीको। सो हे जीव! तैं इन्द्रकी नाईं लक्ष्मी पाइकै तत्त्वकी बातैं जनावैहै सो तत्त्व तब पावैगो जब साधुनते परचै पावैगो। सो हे जीव! "तत्त्वंराति गृह्णातीति तत्त्वरः" अपना तत्त्व जेहैं यथार्थ साहब तिनको नहीं जानैहै और औरको ज्ञान सिखवै है सो एकखेत जोहै एकहृदय तेरो तामें दोनों निर्बै हैं अर्थात् का दोनों निर्बहैं हैं? नहीं निर्बै है हैं कि, तैं अज्ञानी बनोरहे है। और को ज्ञानकथै है तौका और के ज्ञानलगै है? नहीं लगैहै। जो तैंहूं ज्ञानीहोइहै तौ तेरो ज्ञानौ कथिबो औरको लगै औ जो ततुर पाठ

१–'य' यम, वायु, 'या' सवारी, जानेवाले और छोड़नेको कहतेहैं।

२–'र' कामदेव, अग्नि और सूर्यको कहतेहैं। 'रु' शब्दकरनेमें होताहै।

होइ तो याअर्थ है। "ला इन्द्रको औ छेदनकोकहे हैं। सो हे जीव! जो यज्ञादिककारि इन्द्रादिक देवतनके संतुष्टिके वास्ते पशुछेदन करौहौ सो वेद या तुतरेबात जनाई है। जेसे लरिका रोटीको टोटींकहैहै परन्तु माता तात्पर्य जानै है कि रोटिही मांगे है। ऐसेवेद जो यज्ञादिक कहै हैं सो दुष्कर्म छुड़ाइकै यज्ञादिक में लगायो। फेरिज्ञानदैकै येऊकर्म छुड़ाइकै तात्पर्यते साहबको बतावै हैं। सो तुतर जो है वेद तौनेको अर्थ तब पावै जब वाके तात्पर्य को पावै सो आपतो तुतरहै वेद परदा कैकै बात कहै है सब जीवनको ए कहे हैं कि, जीव औरको औरई कहै है मेरो तात्पर्य नहीं समझैहै सो एकै खेत जो संसार है तामें दूनों निबहै हैं"। अथवा साहबके इहां वेदनहीं पहुंचि सकैहै न प्रकट वर्णन कारि सकैहै तात्पर्यही करिकै कहै है जगत औ कर्म याहीको प्रकट बर्णन करैहै। औजीवजेहैं ते जगतही में परे रहै हैं जे तात्पर्य जानैहैं तेई साहबके समीप पहुंचे हैं ताते वेदौ जीवौ एक खेत जो जगत है ताहीमों निबहै हैं जो जगत न रहै तो बद्ध विषयी मुमुक्षुई न रहिजायँ मुक्तभारि रहिजायँ औ चारिउ वेद रकारमकार में रहिजायँ। ल[1] इन्द्र को लक्ष्मी को छेदन को कहैहैं तामें प्रमाण ॥ 'लं इंद्रो लवनो लश्च ला च लक्ष्मीः प्रकीर्त्तिताः'॥२९॥

ववा वह वह कह सब कोई। वह वह कहे काज नहिं होई॥
ववा कहै सुनौ रे भाई। स्वर्ग पताल कि खबरि न पाई ३०

वकहिये[2] भक्तको वा कहिये वायुको सो हेजीव! तैं तो साहबको भक्तहै वायु की नाई जगत्में बहतफिरौहौ! वहहै ईश्वर, वहहै ईश्वर या कहा सब कोई कहौहौ। सो वे नाना ईश्वरनके कहे काज कहे मुक्ति न होइहै। सोहे ववा कहनेवारे भाई! सुनते जाउ तुम स्वर्ग पातालकी खबरि नहीं पाई अर्थात् सबके रखवार साहबको नहीं जानौ हौ तामें प्रमाण ॥ "स्वर्गपतालभूमिलौंबारी। एकै रामसकल रखवारी" ॥ वा सात्वतको औवायुको कहै हैं तामें प्रमाण ॥ "सात्वतेवरुणे वातेवकारःसमुदाहृतः" ॥ ३० ॥

शशा सरदेखै नाहिं कोई। सरशीतलता एकै होई॥
शशा कहै सुनौ रे भाई। शून्यसमान चला जगजाई॥३१॥

१–'ल' इन्द्र और काटनेवाले को, 'ला' लक्ष्मीको कहते हैं।

२–'व' सत्वगुणी, वरुण और वायुको कहतेहैं।

शकहिये सुखको शाकहिये शेषको सो हे जीव! तैंतो सुखसागरजे साहबहैं तिनको शेषहै अर्थात् अंशहै सो सुखसर जे साहब हैं तिनको तुमकोई नहीं देखौहै कैसो है वा सर कि जाकी शीतलता एकई है वा शीतलता पाये फिरि जनन मरणनहीं होइहै सो शशा जे साहबके शेषसाधुहैं तेकहै हैं कि जिनको अंशजीव तिनको नहींजानै है शून्यजो धोखाब्रह्म ताहीमें जगत समानजाइहै। श शेषको औ सुखको कहै हैं ॥ "वदन्ति शं बुधाः शेषे शः शांतश्च निगद्यते॥शश्च शयन-मित्याहुः हिंसा शः समुदाहृतः ॥ ३१ ॥

षषा षरषर कहै सब कोई। षर षर कहे काज नहिं होई ॥
षषा कहै सुनौरे भाई। राम नाम लै जाहु पराई ॥ ३२ ॥

ष कहिये श्रेष्ठको। सो षा दूसरी है सो हे जीव! श्रेष्ठौते श्रेष्ठजे साहबहैं तिनको षरषर सांचसांच सबै कहै हैं औरेको खोटामानै हैं परंतु षर षर कहेते काज जो है मुक्ति सो न होगी बिना रामनामके साधनकीन्हे। औ बिना नीकी प्रकार साहबके जाने। काहेते ष षा कहे श्रेष्ठौते श्रेष्ठ जे साहब हैं ते कहै हैं कि, हे भाई! सुनौ। तुम राम नामको लैकै मायाब्रह्म ते पराइ जाउ अर्थात् सब को छोड़िकै रामनाम जपौ। ख श्रेष्ठको कहै हैं॥ "षकारःकीर्तितः श्रेष्ठषू-श्चगर्भविमोचने" ॥ ३२ ॥

ससा सरा रचो बरिआई। सर बेधे सब लोग तवाई ॥
ससाके घर सुन गुन होई। यतनी बात न जानै कोई ३३॥

स कहिये लक्ष्मी को सा कहिये परोक्षको। सो हे जीव! तेरो ऐश्वर्य्य परोक्षमें है अर्थात् साहबके यहां है या देखबेकी लक्ष्मी तेरी नहीं है सो तैं सरा-जोकर्म है ताको बरिआई रचिलियो सो वाही सरारूपीशरहै कहे कर्मरूपीशरमें लोग बेधे हैं ते सब तवाईमें परे हैं नरक स्वर्गमें जाय आवै हैं। सो ससा जो जीव ताके घर कहे हृदयमें काहूको शून्यकहे धोखा ब्रह्म समान है, काहूके गुण जो

१–'श' शं– सुख, मङ्गल, श– शेषनाग, शान्त प्रकृति, सोना और हिंसाकरने को कहतेहैं।

२–'ष' श्रेष्ठको और 'षू' गर्भसे प्राणीकी उत्पत्ति होनेको कहतेहैं।

माया सो समानैहै सो यतनी बात कोई नहीं जानैहै कि, येई जाहबके चीन्हन न देइहैं । स लक्ष्मीको औ परोक्षको कहैहैं ॥ "सःपरोक्षे समाख्यातः-साच लक्ष्मीःप्रकीर्तिता" ॥ ३३ ॥

हहा होइ होत नाहिं जानै । जबहीं होइ तबै मन मानै ॥
है तो सही लहै सब कोई । जब वा हो तब या नाहिं होई ॥ ३४ ॥

ह कहिये बिष्कम्भको हा कहिये त्यागको । सो हे जीव या बिष्कम्भ शरीरको त्यागहोत कोई नहीं जानै है । जब शरीरत्याग ह्वैजाइ है तबहीं जानैह कि, शरीरत्याग ह्वैगयो । जामें जीव थँभारैहैहै सो शरीरमें हंसरूप सही है। ता जीवको। परंतु सबकोई नहीं लगैहै कहे नहीं पावैहै। जब वा हंसशरीरहोइ जब या शरीरनहीं होइहै वाही हंसशरीरमें थँभारैहै है । ह विष्कम्भको औ त्यागको कहै हैं तामें प्रमाण ॥ "हः[२]कोपवारणे प्रोक्तो हस्स्यादपि च शूलिनि । हानेपि हः प्रकथितो हा विष्कम्भः प्रकीर्त्तितः" ॥ ३४ ॥

क्षक्षा क्षण परलय मिटि जाई । क्षेव परे तब को समुझाई ॥
क्षेवपरे कोउ अंत न पाया । कह कबीर अगमन गोहराया ॥ ३५ ॥

क्ष कहिये क्षत्रको क्षा कहिये वक्षस्थलको । सो हे जीव ! तैं क्षत्रपति जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनको बक्षस्थलमें तौ ध्यान करु तौ तेरी प्रलय जनन मरण क्षणैमें मिटिजाई । जब क्षेव कहे तेरो शरीर क्षय ह्वै जाइगो तब तोको को समुझावैगो । क्षेव परे कहे शरीर क्षय ह्वैगये कोऊ अंत साहबको नहीं पायो है । सो कबीरजी कहै हैं कि, याहीते तोको हम आगेते गोहरावै हैं कि फिरि क्या करैगो । क्ष क्षत्रको औ वक्षस्थलको कहै हैं तामें प्रमाण ॥ "क्षश्च क्षत्रं क्षत्रपतौक्षो वक्षसि निगद्यते" ॥ क्षत्रकहे क्षत्रपतीको बोधह्वैजाइ जैसेबल कहे बलरामको बोधह्वैजाइहै ॥ ३५ ॥

इति चौंतीसी संपूर्ण ।

१—'स' आँखोंके पीछेकी बात और लक्ष्मीको कहते हैं ।
२—'ह' क्रोधकेरोकने और शूलयुक्तको कहते हैं छोड़ने और रोकनेकोभी कहते हैं ।
३—'क्ष' दुःखसे बचाने वाले और छातीको कहते है ।

॥ सत्पुरुषाय नमः ॥

अथ विप्रमतीसी ।

सुनहु सवन मिलि विप्र मतीसी।हरि बिनु बूड़ीनाव भरीसी १
ब्राह्मण ह्वैके ब्रह्म न जानैं । घरमें यज्ञ प्रतिग्रह आनैं ॥२॥
जे सिरजा तेहि नहिं पहिचानैं।कर्म भर्म लै वैठि वखानैं ३॥
ग्रहण अमावस सायर पूजा।स्वातीके पात परहु जनिदूजा ४
प्रेत कर्म मुख अंतर बासा । आहुति सहितहोमकीआसा५
कुल उत्तम कुल माहँकहावैं।फिरिफिरि मध्यमकर्मकरावैं ६
कर्म अशुचि उच्छिष्ट खाहीं।मति भरिष्टयमलोकहिजाहीं७
सुतदारा मिलि जूठो खाहीं । हरिभगतनकी छूतिकराहीं८
न्हायखोरि उत्तम ह्वै आवैं।विष्णुभक्त देखे दुख पावैं॥९॥
स्वारथलागिरहे वे आढ़ा । नामलेत जस पावक डाढ़ा१०
रामकृष्णकीछोड़िनिआसा।पढ़िगुणिभयेकृत्तिमकेदासा ११
कर्मकराहिं कर्महिंको धावैं।जो पूछै तेहि कर्मदृढ़ावैं ॥१२॥
निष्कर्मीके निन्दा कीजै । करैकर्मताही चितदीजै ॥१३॥
असभगती भगवतकी लावैं।हरिणाकुशको पन्थचलावैं१४
देखहुकुमतिनरकपरगासा।बिनुलखिअंतरकिरतिमदासा १५
जाके पूजे पाप न ऊड़ै । नाम सुमिरितेभवमेंबूड़ै ॥१६॥

पापपुण्यकै हाथेहिपासा । मारि जगतको कीन्हविनासा १७
येबहनी दोऊ वहानि न छाड़ै।यहगृहजारैं वहगृह माड़ै॥१८॥
वैठते घर शाहु कहावै । भितरभेदमनमुसहि लगावै ॥१९॥
ऐसीविधि सुरविप्र भनीजै।नामलेत पंचासन दीजै ॥२०॥
ऊंचनीचकहुकाहिजोहारा।बूड़िगयेनहिंआपुसँभारा॥२१॥
ऊंचनीचहै मध्यमबानी । एकैपवन एकहै पानी ॥ २२ ॥
एकैमटियाएककुम्हारा । एकसबनकासिरजनहारा ॥२३॥
एकचाक बहुचित्र बनाया।नादबिंदुके वीच समाया ॥२४॥
व्यापीएकसकलकी ज्योती ।नामधरे क्याकहिये मोती२५
राक्षसकरणी देवकहावै । वादकरै भवपार न पावै ॥ २६॥
हंस देह तजि न्यारा होई ॥ ताकी जाति कहै धौं कोई॥२७॥
श्यामसुपेतकि,राताापियरा।अवरणवरणकिताातासियरा२८
हिंदू तुरुक कि बूढ़ा वारा।नारि पुरुष मिलि करौ विचारा२९
कहिये काहि कहा नाहिं माना।दास कवीर सोई पहिचाना३०

साखी—वहा अहै वहिजातुहै, करगहि ऐंचहु ठौर ।
समुझाये समुझै नहीं, दे धक्कादुइ और ॥ ३१ ॥

सुनहु सबनमिलिविप्र मतीसी।हरि बिन बूड़ी नाव भरीसी १
ब्राह्मण ह्वैकै ब्रह्म न जानैं । घरमें यज्ञ प्रतिग्रह आनैं॥ २ ॥
जे सिरजातेहि नाहिंपहिचानैं।करमभरम लैवैठि बखानैं॥३॥
ग्रहण अमावस सायर पूजा।स्वातीके पात परहु जनि दूजा ४

विप्रके वर्णनमें हम तीस चौपाई कहै हैं सो सबन मिलि सुनते जाउ कैसे ब्राह्मण हीतभये कि, जिनको जन्म हरिबिना भरी नाव ऐसी बूड़िगई ॥ १ ॥

ब्रह्मईके जानेतें ब्राह्मणकहावै है सो ब्रह्म को तो न जान्यों यज्ञादिकनके प्रति-ग्रह घरमें लैआवै हैं आदिते दानौं आयो ॥ २ ॥ जौन उत्पत्ति कियो है ताको तो जानतई नहीं हैं कर्मकाण्डको भरम नाना प्रकारके बैठिकै बखानै हैं ॥ ३ ॥ सो हे दूना कहे दुःखग्रहणमें अमावस में सायर कहे समुद्रादिक तीर्थन में जैसे स्वाती के जलको पपीहा दौरै है ऐसे तुम्हीं ग्रहण अमावसमें समुद्रादिक तीर्थन में दान लेन को ताके रहौ हौ परन्तु आशा नहीं पूनै है ॥ ४ ॥

प्रेत कर्म मुख अंतर बासा। आहुति सहित होम की आसा५ कुल उत्तम कुल माहँ कहावैं। फिरि फिरि मध्यम कर्म करावैं

मुखते प्रेत कर्म करावै हैं कि, ऐसो पिंडदान करो तौ प्रेतत्व छूटिजाइ। औ अंतःकरणमें या आशा बसै है कि, जो या होमकरै तौ हम दक्षिणा पावैं ॥ ५ ॥ औ ब्राह्मण तो बड़े उत्तमकुलके कहावै हैं कि, हमबड़े कुलके हैं परंतु फिरिफिरि कहे बारबार मध्यम कहे नरक जायवाके कर्मकरावै हैं ॥ ६ ॥

कर्म अशुचि उच्छिष्टै खाहीं। मति भरिष्ट यमलोकहि जाहीं७ सुत दारा मिलि जूठो खाहीं। हरिभगतनकी छूति कराहीं ८ न्हाय खोरि उत्तम ह्वै आवैं। विष्णु भक्त देखे दुख पावैं ॥९॥

नाना प्रकारके अपावनकर्म्म कैकै भैरव दुलहा देवादिकनको उच्छिष्टखाय हैं सो मतिभ्रष्टह्वैकै यमलोकहि जाइहैं ॥ ७ ॥ तौने प्रेतनको जूठ सुत दाराकहे पुत्र स्त्री त्यहि समेत सब मिलि खाइहैं औ हरिभक्तन की छूति मानै हैं ॥ ८ ॥ औ नहाय खोरि कै आपने जान पवित्रह्वै आवैं औ जिनके दर्शनते पवित्र होयहैं ऐसे बिष्णुभक्त तिनको देखिकै दुःखपावै हैं। ई बड़े तिलकादिये शङ्ख चक्र दीन्हे कहां रहे उनको मुख देखैंगे तो पापलगै है या कहै हैं ॥ ९ ॥

स्वारथ लागि रहे वे आढ़ा। नाम लेत जस पावक डाढ़ा१० राम कृष्णकीछोड़िनि आसा। पढ़ि गुणि भे किरतिमके दासा

अपने स्त्री पुत्र यहीके स्वारथ में वे अर्थ आढ़ाति लगायरहे हैं जिनके अंश हैं ऐसे जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनके नामलेतमें मानों जीभ पावकमें जरी जाइहै ॥१०॥

रामकृष्ण जे हैं तिनकी आशा छोड़िकै पढ़ि गुणिकै किरतिमकहे आपनी बनाई मूर्त्ति अथवा किरतम माया तिनको दास कहावै हैं ॥ ११ ॥

कर्म करहिं कर्महिको धावैं। जो पूछै त्यहि कर्म दृढ़ावैं॥१२॥
निःकर्म्मीकै निंदा करहीं। कर्म करै ताही चित धरहीं॥१३॥
अस भक्ती भगवतकी लावैं। हिरणाकुशको पंथ चलावैं १४॥

कर्म नाना प्रकारके करै हैं औ कर्मफल जो स्वर्गादिकनको भोग ताहीको धावै हैं औ जो कोई मुक्तिहूकी बात पूछै है ताको कर्मही दृढ़ावै हैं ॥ १२ ॥ निःकर्मी जे साधु हैं तिनकी तौ निन्दा करै हैं औ कोई कर्मकरै है ताको सत्कार करै हैं ॥ १३ ॥ सो या रीतिते भगवत्की भक्ति करै हैं या कहै हैं कि ईश्वर तो अजा गळ थनकी नाईं है वाते कौन कामहोय है। औ कोई हिरणाकुशको पंथ तामसी मत चलावै हैं कहै हैं कि हमहीब्रह्महैं ऐसो दैत्यनको ज्ञानहै तामें प्रमाण ॥ "ईश्वरोऽहमहंभोगी सिद्धोऽहं बलवान् सुखी आढ्यो-भिजनवानस्मि कोन्योऽस्ति सदृशो मया ॥ १४ ॥

देखहुकुमतिनरकपरगासा। विनुलखिअंतरकिरतिमदासा १५

सो या कुमतिनको प्रकाशतो देखौ बिनु अन्तरके लखे कि हम कौनके हैं या बिनाजाने किरतिम जो माया ताके दास ह्वै रहे हैं रक्षक को न मानै रक्षा कौनकरे १५

जाके पूजे पाप न ऊड़ै। नाम सुमिरितैं भवमें बूड़ै॥ १६ ॥
पापपुण्यकेहाथहिपासा। मारिजक्तसबकीनाविनासा॥१७॥
ये वहनी दोउ बहनिनछाड़ै। यहगृह जारै वहगृहमाड़ैं॥१८॥

औ जौने देवताके पूजे न पापछूटै ना मुक्तिहोइ तेई देवतन को पूजैहैं उनहींको नाम सुमिरि सुमिरि संसारमें बूड़ै हैं ॥ १६ ॥ औ नाना प्रकारके कर्म बताइकै पाप पुण्य रूप फांसी डारिकै जगत्को विनाश करिदेत भये ॥ १७ ॥ औ कोई विप्र जे हैं ते बहनी कहे संसारमें बहनवारी जो विद्या अविद्या माया पाप पुण्य रूप ताको बहनिन कहे ढोवनवारो जो विप्र सो ऊपरते छांड़िकै यह गृह जारिकै कहे छांड़िकै वहगृह कहे वहांके महन्त भये ध्यान लगायकै बैठे ॥१८॥

बैठेते घर शाहु कहावैं । भितर भेद मन मुसहि लगावैं॥ १९॥
ऐसीविधि सुर विप्र भनीजै । नामलेत पंचासन दीजै॥२०॥
बूड़ि गयेनहिंआपसँभारा।ऊंचनीचकहुकाहिजोहारा॥२१॥
ऊंचनीच है मध्यमवानी । एकै पवन एकहै पानी ॥ २२॥
एकै मटिया एक कुम्हारा।एक सवनको सिरजनहारा॥२३॥
एकै चाक वहुचित्र वनाया।नादबिन्दुके वीच समाया॥२४॥

सो ऊपरते ऐसो ध्यान लगायकै घरमें बैठै बड़े साधुकहावैं औ अन्तःकरण में मनते पराई द्रव्य मूसैको भेद लगाये हैं ॥ १९ ॥ सोयहि रीति विप्रनकें सुरनकी विधिकहै हैं नामको लेइहैं कहे मन्त्रजपै हैं औ पंचासनकहे पंच आसन देइहैं अर्थात् पंचांगोपासना करै हैं ॥ २० ॥ सो आपै मायाकी धारमें बूड़िगये न सँभारत भये तो ऊंचनीच कहे पांच देवतनमें काको जोहारचो कहे काकेभये अर्थात् काहूके न भये ॥ २१ ॥ सो बिप्रनको उत्तम मध्यम नीच बाणी कारिकै होइहैं बास्तव तो सबके शरीरनमें एकै पानी है एकै पवनहै ॥ २२ ॥ औ एकै सबकी माटीहै कहे सब पांचभौतिक हैं औ सबके सिरजनहार कुम्हार मन ऐकैहैं ॥ २३ ॥ एकचाक जो जगतहै तामें बहुत विधिके चित्र बनावत भयो मन औ नाद बिन्दुके बीचमें आपै समातभयो ॥ २४ ॥

व्यापी एक सकलमें ज्योती।नामधरेकाकहियेमोती॥२५॥
राक्षसकरणी देवकहावै । दाद करै भवपार न पावै ॥ २६॥
हंस देह तजि न्यारा होई।ताकी जाति कहै धौं कोई ॥ २७॥
श्यामसुपेदकि,राताापियरा।अवरणवरणकितातासियरा२८

सो एक ज्योति जो आत्मा सो सबमें व्यापि रही है ब्राह्मण नामधरचो सो ताहीते मोतीकही अर्थात् न कही बिना ब्रह्म जाने ब्राह्मण नहीं कहावै है ॥ २५ ॥ औ करणी तौ राक्षसकी नाई करे हैं औ जगतमें ब्राह्मण देवता भूसुर कहावै हैं

औ वादविवाद नानाप्रकारके करैहैं परंतु संसार समुद्रको पारनहीं पावैहैं॥२६॥ सो हंसजो जीव है सो देहको त्यागिकै न्यारो ह्वैजाइ है ताकी जाति कोई कहै तो वह कौन बर्णहै ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र ॥ २७ ॥ औ वह आत्मा कि, श्याम है कि सुपेद है कि लालहै किपियरहै कि अवर्ण है कि वर्ण में है कि गर्म है कि शीतल है ॥ २८ ॥

हिन्दू तुरुक कि बूढ़ावारा। नारिपुरुष मिलिकरहु विचारा २९
कहिये काहि कहा नहिं माना। दासकबीर सोई पहिचाना ३०

साखी। वहिआ है वहि जातुहै, करगहि ऐंचहु ठौर।
समुझाये समुझै नहीं, दे धक्का दुइ और ॥ ३१ ॥

पुनि हिन्दू है कि, तुरुकहै कि बूढ़ा है कि लडिकाहै या नारि पुरुष मिलिकै सबजने बिचारकरो ॥ २९ ॥ सो या बात कासों कहों कोई नहीं मानैहै सबके रक्षक जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं तिनको दासकबीर कहै हैं कि, मैं सोई पहिचान्यों है कि उनको अंशजीव है वे स्वामी हैं ॥ ३० ॥ या जीव और २ में लगिकै बहत आयो है औ बहा जाइ है सो करगहि कहे एकबे-उपदेशकरिके ओर ऐंचौ हौं कि साहब में लागु समुझावत आयो हैं औ समुझावतहौं जो समुझाये न समुझै तो लाचार ह्वैकै दुइ धक्का और महूं दैदेउँ कि बहा जाय ॥ ३१ ॥

इति विप्रमतीसी सम्पूर्णा ।

ॐ

अथ कहरा प्रारभ्यते ।

कहरा पहिला ॥ १ ॥

सहज ध्यान रहु सहज ध्यान रहु गुरुके वचन समाई हो ।
मेली सिष्ट चराचित राखो रहो दृष्टि लोलाई हो ॥ १ ॥
जो खुटकार वेगि नाहिं लागो हृदय निवारहु कोहू हो ।
मुक्तिकी डोरि गांठि जनि खैंचो तव बाझी बड़ रोहू हो॥२॥
मनुवो कहौ रहे मन मारे खीझत्रो खीझि न बोलै हो ।
मनुवो मीत मिताइ न छोड़ै कवहूं गांठि न खोलै हो ॥३॥
भूलौ भोग मुक्ति जानि भूलौ योगयुक्ति तन साधो हो ।
जो यहि भांति करहु मतवारी ता मतके चित वांधो हो॥४॥
नाहिं तौ ठाकुर है अति दारुण करिहै चालु कुचाली हो ।
वांधि मारि डारि सब लेहै छूटी सब मतवाली हो ॥ ५ ॥
जवहीं सामत आइ पहूंचे पीठि सांट भल टूटैहो ।
ठाढ़े लोग कुटुम्ब सब देखै कहे काहु किन छूटैहो ॥ ६ ॥
एक तो अनिष्ट पाउं परि बिनवै बिनती किये न मानै हो ।
अन चिन्ह रहे कियो न चिन्हारी सो कैसे पहिचानै हो॥७॥
लेइ बोलाय बात नहिं पूछै केवट गर्भ तन बोलै हो ।
जेकारि गांठि सबल कछु नाहीं निराधार है डोलै हो॥८॥

जिन्ह सम युक्ति अगमनकै राखिन धरणिमांझधरडेहारिहो ।
जेकरे हाथ पाउं कछु नाहीं धराणि लाग तनसे हरि हो॥९॥
पेलना अक्षत पेलि चलु बौरे तीर तीर कह टोवहु हो ।
उथले रहौ परो जानि गहिरे मति हाथै कै खोवहु हो ॥१०॥
तर कै घाम उपरकै भूभुरि छांह कतहुं नहि पावहु हो ।
ऐसो जानि पसीजहु सीजहु कस न छतारिया छावहु हो११
जो कछु खेल कियो सो कीयो वहुरि खेल कस होई हो ।
सासु ननँद दोउ देत उलाटन रहहु लाज मुख गोई हो१२॥
गुरु भो ढील गोन भो लचपच कहा न मानेहु मोरा हो ।
ताजी तुरुकी कबहुं न साजेहु चढ़्यो काठके घोराहो॥१३॥
ताल झांझ भल बाजत आवै कहरा सब कोइ नाचै हो ।
जेहि रँग दुलहा ब्याहन आये तेहि रँग दुलहिन राचै हो१४
नौका अछत खेवै नहिं जान्यो कैसे लागहु तीरा हो
कहै कवीर राम रस माते जोलहा दास कबीरा हो ॥१५॥

सहज ध्यान रहु सहज ध्यान रहु गुरुके बचन समाई हो ।
मेली सिष्ट चराचित राखौ रहौ दृष्टि लौ लाई हो ॥ १ ॥

श्रीकबीरजी कहै हैं कि, हे जीव ! तैं गुरुके बचनमें समाइकै सहज ध्यान तैं करुगुरुके बचन जो आगे लिखि आये हैं कि, सुरति कमलमें गुरु बैठ रकार मकार जपै हैं तामें समाइ जाइ । अर्थात् दलदलमें बाढ़िकै इक्कीस हज़ार छासै श्वास जे चलै हैं तिनमें तेतने राम नाम जपै । कौनी रीतिते जपै तामें प्रमाण॥ श्री कबीरजी को पद ।

षट् चक्र निरूपण ।

संतौ योग अध्यातम सोई ।
एकै ब्रह्म सकल घट व्यापै द्वितिया और न कोई ॥
प्रथम कमल जहँ ज्ञान चारि दल देव गणेशको बासा ।
रिधि सिधि जाकी शक्ति उपासी जपते होत प्रकासा ॥
षट दल कमल ब्रह्मको बासा सावित्री सँग सेवा ।
षट सहस्त्र जहँ जाप जपतहैं इंद्र सहित सब देवा ॥
अष्ट कमल जहँ हरि सँग लक्ष्मी तीजो सेवक पवना ।
षट् सहस्त्र जहँ जाप जपतहैं मिटिगो आवा गवना ॥
द्वादश कमलमें शिवको बासा गिरिजा शक्ती सारँग ।
षट सहस जहँ जाप जपत हैं ज्ञान सुरति लै पारँग ॥
षोडश कमल में जीवको बासा शक्ति अविद्या जानै ।
एक सहस जहँ जाप जपतहैं ऐसा भेद बखानै ॥
भवँर गुफा जहँ दुइ दल कमला परमहंस कर वासा ।
एक सहस जाके जाप जपतहैं करम भरमको नासा ॥
सहस कमलमें झिल मिल दर्शो आपुइ बसत अपारा ।
ज्योति स्वरूप सकल जग व्यापी अक्षय पुरुष है प्यारा ॥
सुरति कमल परसत गुरु बोलै सहज जाप जप सोई ।
छासै इकइस सहसहि जापिले बूझै अजपा कोई ॥
यही ज्ञानको कोई बूझै भेद अगोचर भाई ।
जो बूझै सो मनका पेखै कह कबीर समुझाई ॥ १ ॥

औ यही रामनाम मन बचनके परे है सो आगे कहि आये हैं और सब मनकें भितरै है यही रामनाम सबके ऊपरहै ताहीमें मतौ तबही पारै जाउगे । औ मेली सिष्ट कहे सिष्टजो संसार ताको मेलि देउ कहे छोड़ि देउ । औ चराचित राखौ कहे सहज समाधि आगे कहि आये हैं ताको चराचित राखौ कहे नहीं जानतरहु । अथवा वाहीमें जो आपने चितको चरा कहे चलत राखौ दृढ़द्-

यकतो अनिष्ट पांय परि बिनवै बिनती किये न मानै हो।
अनचिन्ह रहे कियो न चिन्हारी सो कैसे पहिचानै हो ७

एक जे साहब हैं सबके रक्षक तिनते ये अनिष्ट रहे कहे उनको इष्ट न मानत रहे। औ वहां यमदूतनसों पांय परि परि बिनवै है, सब देवतनते बिनवैं है, वे बिनतीहू किये नहीं मानैहैं। काहेते कि, दयाहीन हैं। औ साहब जे दयालु छुड़ावनवारे तिनसों अन चिन्हार रहै चिन्हारी न कियो सो कैसे अब पहिचानै। भाव यह है कि जो, अजहूं स्मरणकरो तौ साहब छुड़ाइही लेइगो॥ ७॥

लेइ बुलाय बात नहिं पूछै केवट गर्भ तन बोलै हो।
जेकरी गांठि सबल कछु नाहीं निराधार ह्वै डोलै हो८

औ केवट जे गुरुवा लोगहैं ते तब तो गर्भ कहे अहंकार तनमें कैकै तुमको बोलाय आपने मतमें मिलाय लीन्हेनि। अब जब यमदूत मारन लगे तब तुमको बात नहीं पूछै हैं। गुरुवा लोग सो जाके सबल कहे खर्च राम नाम रह्यो सो पार भयो औ जाके राम नाम सबल कछु नहीं रह्यो सो निराधार कहे रक्षक रहित यमपुरमें डोलैहै अथवा निराधार जो ब्रह्म ताहीम डोलैहै॥८॥

जिन सम युक्ति अगमनकै राखिन घराणि मांझ घर डेहरिहो।
जेकरे हाथ पाउँ कछु नाहीं धरन लागु तन सेहरि हो॥ ९॥

जौने स्त्री पुत्रादिकन को नाना युक्तिकैकै पालन कियोहै तौन घरणि कहे स्त्री शरीर छूटे डेहरी भरि जायहै आगे नहीं जायहै। सम जो पाठहाय तौ जिनका अपने सम बनाय राखिन तौन स्त्री डेहरीलौं पहुंचाई है। धुनिते या आयो कि पुत्र चिता लौं जायहै सो जेकरे हाथ पाउँ कछु नाहीं कहे जेकरे हाथपाउँ नहीं है ऐसो जो जीवात्मा ताको जब यमदूत धरनलागु तब तनमें सेहरि ह्वै आवै है तन विकल ह्वै जाइहै, वे कोऊ नहीं सहाय करै हैं। ताते साहबको जानौ जो कहो यमदूतै कैसे धरैंगे? तौ लिंग शरीरते धरैंगे अर्थात जाको जैसो कर्म है वाके संस्कारते वा लोकमें कर्म शरीर बनैहै॥ ९॥

पेलना अक्षत पेलि चलु वौरे तीर तीर कहँ टोवहु हो।
उथले रहौ परौ जनि गहिरे मति हाथै के खोवहु हो १०

: सो कबीरजी कहैहैं कि,पेलना जो राम नाम सो अक्षत बनै है ताको संसार समुद्रमें पेलिकै हे जीव ! संसारसमुद्र उतरिजा । तीर तीर कहे नाना मतनको का टोवत फिरै है उथले में रहौ अर्थात् साहब को ज्ञान कीन्हे रहौ । गहिर जो धोखा ब्रह्म कठिन तामें न जाउ । वहां गये तुम्हार हाथहुको जीवत्त्व सो जातरहैगो ताते तुम न खोवौ उथले कहे साहबको ज्ञान जानौ ॥ १० ॥

तरकै घाम उपरकै भूभुरि छांह कतहुं नहिं पावहु हो ।
ऐसो जानि पसीजहु सीजहु कस न छतरिया छावहु हो ११

तरके घाम कहे नाना कर्म जे नीकौ नागा कियो ताकी जो ताप संसारमें ऊपरकी भूभुरि कहे नरक में गये तौ वहाँ तपै है, स्वर्ग में गये तौ गिरनकी भय बनी है, काहू को अधिक ऐश्वर्य देख्यो तो ईर्षा बनी रहैहै कि, ऐसो कर्म हम न किये । ये दोऊ तापमें साहबको ज्ञान रूप छांह कतहूं नहीं पावैहै ऐसो तुम जानतैहौ पै वही में पसीजौ हौ कहे श्रम करौ है पसीना चलैहै औ छीजौहौ साहबकी ज्ञान रूप छतरिया काहे नहीं छावहुहौ ॥ ११ ॥

जो कछु खेल कियो सो कीयो वहुरि खेल कस होई हो ।
सासु ननँद दोउ देत उलाटन रहहु लाज मुख गोई हो १२

जो कछु खेल कियो कहे जो कछु कर्म कियो सोई भोग कियो । अथवा जौन खेल माया ब्रह्मको साथ करिकै कियो सोई फल भोग कियो । सो बिना राम नाम लीन्हे इनको छोड़िकै फेर खेल कियो चाहौ मुक्तिवाला सो कैसे होइगो । सासु जो है मूल प्रकृति औ ननँदि जो है विद्या माया सो ये दूनों तुमको उलाटन कहे उलटिकै जवाब देइहै कि, बिद्या माया करिकै मुमुक्षुह्वै मुक्तिकी इच्छा करत रह्यो । सो अब हम तुमहींको लपेटि लियो तुम हमको त्यागत रह्यो है अब नहीं छूटि सकौहौ । या जवाब सुनि तुम लाजिकै मुखगोइ रहौहौ लाचार ह्वै छूटि नहीं सकौहौ ॥ १२ ॥

गुरु भो ढील गोन भो लचपच कहा न मानहु मोरा हो ।
ताजी तुरकी कबहूं न साजेहु चढ़े न काठके घोरा हो ॥ १३॥

जो गुरुवा लोग तुमको उपदेश कियो ते गुरु ढील ह्वै गये काहेते कि, जौन जौन उपासना की गोन तुम्हारे ऊपर लादि दियो तेते देवता लचपच ह्वैगयें कहे उनके छुड़ायेते ना छूटे संसारमें परेजाय। देवता के फुरते न उत फुर होइहै नइत: जब देवतै न फुरे तब गुरुवा ढील परिगयो । सो कबीरजी कहै हैं कि, जो मैं कहत रह्यो सो तुम ना मान्यो कि, रकार मकार जपौ याहीते छूटौगे ताजी तुरकी जो रकार मकार ताको कबहूं न साज्यो कहे कबहूं राम नाम ना लियो जो साहबके पास लैजाय। काठको घोरा जो है मन जड़ तामें चढ़्यो सो कूदिकै संसार गाड़में डारि दियो जो ताजी तुरकी रामनाम तामें चढ़त्यो तौ तुमको कूदिकै साहब के पास पहुंचावतो ॥ १३ ॥

ताल झांझ भल बाजत आवै कहरा सब कोइ नाचै हो ।
जेहि रँग दुलहा ब्याहन आये तेहि रँग दुलहिनि राचै हो १४

गुरुवा लोगनकी ओठ झांझ है औ जीभ ताल देइहै वही ब्रह्महीं में ताल देइहै कहे नाना बाणी करिकै नाना मतन करिकै वही ब्रह्ममें चुवावै है। अथवा जाको जौन उपासना बतावै है ताको तौन इष्ट देवता है ताहीको ब्रह्म कहै हैं ताहीको सब कुछ कहै हैं, उहै तालको मान देइहैं अर्थात् सब शास्त्रको अर्थ वाहीमें पर्यावसानकरै हैं । और गुरुवनमें लगिकै सुखबाचक जौ कतौ न हरा गयो कहे परम पुरुष श्रीरामचंद्र को भूलि गये। संसार में सब जीव दुखि- या ह्वै नाचन लगे । कोई रजोगुणी उपासनामें राचत भये, कोई तमोगुणी उपा- सनामें राचत भये, कोई सतोगुणी उपासना में राचत भये। जेहि रंग दुलहा जे उपासना वारे जीव ब्याहन आये कहे गुरुवा लोग जौन रंगमें लगायो तेहि रंगमें दुलहिनि बुद्धि रचत भई ॥ १४ ॥

नौका अक्षत खेवै नाहिं जान्यो कैसेहु लागहु तीरा हो ।
कहै कबीर राम रस माते जोलहा दास कबीरा हो ॥ १५ ॥

अक्षत नौका जो राम नाम है ताको खेवै न जान्यो कहे जौने विधिते संसार सागरते पार कै देइ है सो विधि राम नाम जपिवेकी न जान्यो । सो कैसे संसार सागरते पार ह्वैकै तीर लागौगे ? सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि, जोलहा कहे जो कोई राम रस लहाहै अर्थात् राम रस पाय मातो है सोई संसार सागरको पार पायो है, सोई कायाको बीर जीव परम पुरुष श्रीरामचन्द्रको दास भयो है । १ जो " माते " पाठ होय तो या अर्थ है कि, कबीरजी कहै हैं कि, जातिको मैं जोलहा सो राम के रसमें मातेते मैं दास कबीर कहवावन लग्यो । पार्षदरूप जो हंस स्वरूप याही शरीरमें पाय गयो, संसारको पार ह्वैगयो । परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको दास ह्वै गयो । तुम ब्राह्मणादिक जो रामरस में मतौगे तौकैसे संसारसागरते ना पार होउगे, पारही ह्वै जाउगे । कबीरजी रामरसमें मतिकै बचिगये तामें प्रमाण ॥ सायरबीजकको ॥ "हम न मरैं मरिहै संसारा । हमको मिला जियावन हारा ॥ अब ना मरौ मोर मन माना । तेई मुवा जिन राम न जाना ॥ साकत मरै संत जन जीवै । भरि भरि राम रसायन पीवै" ॥१५॥

इति पहिलाकहरा समाप्त ।

अथ दूसरा कहरा ॥ २ ॥

मति सुनु माणिक मति सुनुमाणिक हृदया बंदि निवारौहो ॥१॥
अटपट कुम्हरा करै कुम्हरिया चमरा गाउ न बांचैहो ।
नित उठि कोरिया पेट भरतुहै छिपिया आंगन नाचैहो॥२॥
नित उठि नौवा नाव चढ़त है बरही बेरा बारिउ हो ।
राउरकी कछु खबरि न जान्यो कैसे झगर निवारिउहो॥३॥

---

१ याग्रन्थमें भी और और ग्रन्थनमें भी टीकाकार बारबार कबीरजीको अजन्मा कह गये हैं संसारमें केवल साहबकी आज्ञाते आवै हैं न कोई गर्भ ते उनको आवनो होय नहीं है याते ऊपर को अर्थ ही ठीक है नीचे को अर्थ क्षेपक जानपरत है पीछे से कोई लिखि दियो है ।

एक गांवमें पांच तरुणि बसैं तिनमें जेठ जेठानी हो ।
आपन आपन झगर पसारिनि प्रियसों प्रीति नशानीहो ४
भैंसिन माहँ रहत नित बकुला तकुला ताकि न लीन्हाहो।
गाइन माहँ बसेउं नाहिं कबहूं कैसेकै पद चीन्हा हो ॥५॥
पथिका पंथ बूझि नाहिं लीन्हो मूढ़हि मूढ़ गवाराहो ।
घाट छोड़ि कस औघट रेंगहु कैसे लगबेहु पाराहो ॥ ६ ॥
जत इतके धन हेरिनि ललइच कोदइतके मन दोराहो ।
दुइ चकरी जिन दरन पसारिहु तब पैहौ ठिक ठोराहो॥७॥
प्रेम बान एक सतगुरु दीन्ह्यो गाढो तीर कमानाहो ।
दासकबीर कियो यह कहरा महरा माहि समानाहो ॥ ८ ॥

मति सुनु माणिक मति सुनु माणिक हृदया बंदिनिवारोहो १

श्री कबीरजी कहैहैं कि हेजीव ! तैंतो माणिक है माणिक लाल होयहैं सोतैं कहां संसारमें अनुराग करिकै लाल ह्वैरहे साहब में अनुराग करि लाल होइ गुरुवा लोगनकी वाणी तैं मति सुनु मतिसुनु आपने हृदयकी जो संसाररूपी बंदि ताको निवारु ॥ १ ॥

अटपट कुम्हरा करै कुम्हरिया चमरा गाउ न बाचैहो ।
नित उठिकोरिया बेट भरतुहै छिपिया आंगन नाचैहो २॥

काहेते कि अटपट कुम्हरा जो या मन है सो कुम्हरिया करै है कहे नाना शरीर रचैहै जैसे कुम्हार नाना बासन बनावै है ऐसे या मन नाना शरीर रचैहै से शरीर जो गाउं है तौन चमरा कालके मारे नहीं बचैहै मन रचत जाइहै शरीर काल खात जाइ औ कोरिया जे मुनि लोग हैं सत रज तम ग्रन्थ प्रवर्त-नवारे ते बेट भरत हैं कहे बनावत जाइहैं तेई ग्रन्थनको लैकै छिपिया जे गुरुवा लोगहैं ते आंगन आंगन नाचै हैं अर्थात् चेला हेरत फिरै हैं नाना मतमें होकै औरनको नाना मतमें लगावत फिरै हैं ॥ २ ॥

नित उठि नौवा नाव चढ़तहै बरही बेरा बारिउ हो ।
राउरकी कछु खबरि न जान्यो कैसेकै झगर निवारिउहो ३

नौवा जो संन्यासी जौन आपनो मूड़ मुड़ावैहै आनौ को मूड़ि कै चेला बनाइ लेइहै सो वेषमात्र जो नाव तामें चढ़िकै संसार समुद्र पार होवा चाहै है औ नाना देवतन प्रतिपाद्य जे ग्रन्थ तेई हैं बरही कहे बोझा ताहीको बेरा रचि बारी जे नाना उपासना बारे हैं ते संसार समुद्रको पार होवा चाहै हैं । राउर जो परम पुरुष पर श्री रामचन्द्रको घर ताको जानतई नहीं या झगरा कैसेकै निवारण होइ । साहबते तो चिन्हारिनि नहीं है कबहूं माया पकरि लेइहै कबहूं ब्रह्म पकरि लेइहै कबहूं मन पकरिलेइ है इत्यादिक जेई पावैहैं तेई धरि लेइ हैं सो कैसेकै झगड़ा निवारण होइ ॥ ३ ॥

एक ग्राममें पांच तरुणि बसैं तिनमें जेठ जेठानी हो ।
आपन आपन झगर पसारिनि प्रियसों प्रीति नशानीहो ४॥

एकगांउ जो या संसार तामें पांच तरुणि जे ज्ञानेंद्री ते बसै हैं ज्ञानेंद्री कहेते कर्मेन्द्रिउ आइ गईं, तिनमें जेठ मन जेठानी माया है सोई दशौ इंद्री आपन आपन झगर कहे अपने अपने विषय ओर मनको खैंचत भईं सो मनके अधीनहै जीव सोऊ वही कत चलो गयो परम पुरुष पर जे श्री रामचंद्र प्रीतम हैं तिन सों प्रीति नशाइ गईं ॥ ४ ॥

भैंसिन माहँ रहत नित बकुला तकुला ताकि न लीन्हाहो ।
गाइन माहँ बसेहु नहिं कबहूं कैसेकै पद चीन्हाहो ॥ ५ ॥

सो भैंसीजे दशौ इंद्री हैं तिनमें बकुला जो मन सो रहैहै जैसे भैंसी जब जलमें पैरैहैं तब बकुला वाके ऊपर बैठ रहैहै जो मछरी भैंसिनके किलनी खावेको आई सो बकुला खाय लीनो ऐसी इन्द्री जब विषय ओर चली तब मनहीं भोग करै है इंद्रीद्वारा ताते मनको बकुला कह्यो है सो हे जीव ! तैंतो तकुलाहै कहे ताकनवारो है काहे न ताकि लीन्हा औ साहब के गावन वारे जे संत तिन गाइन में कबहूं बसैबै न कियो परम पुरुष पर श्री रामचन्द्र को पद कैसेकै चीन्हो ॥ ५ ॥

पथिका पंथ बूझि नाहिं लीन्हो मूढ़हि मूढ़ गवांराहो ।
घाट छोड़ि कस औघट रेंगहु कैसेकै लगिहौ पाराहो ॥ ६ ॥

साहब जे श्रीरामचन्द्र तिनके पंथके चलनवार जे पंथी संतजन तिनसों तौ पंथ बूझि न लीन्हेउ मूढ़ जे गुरुवा लोग तिनकी बाणीमें परिकै मूढ़ ह्वैगयो गवांर ह्वैगयो सो साहबके पहुंचबे को जो घाट ताको छोड़ि औघट जो माया ब्रह्म तामें चलौहौ सो कैसे कै पार लागौगे ॥ ६ ॥

जतइतके घन हेरिनि ललइच कोदइतके मन दौराहो ।
दुइ चकरी जिन दरन पसारेहु तहँ पैहहु ठिक ठौराहो ॥७॥

जत इतके कहे जिनके जतदा चलै है सो जतइत कहावै है सो धोखा ब्रह्म है जो सबको दरि डारै है सबको मिथ्यै मानै है तहां ललइच जे लालची हैं ते धन जो मुक्ति ताको हेरिनि सो उहौं न पाइन तव कोदइत जे गुरुवालोग जिनके नाना उपासनारूपको दौरा जाय है तिनके इहांगये कि इहां मुक्तिधन मिलैगो सो कबीर जी कहै हैं कि जतइत के तो धनको ठिकानै न लग्यो तौ कोद-इत जे माटीके दुइ चकरी बनाइ दरना पसारै हैं तहां ठीकठौर पैहौ ? अर्थात् न पैहौ साहब को जानोगे तबहीं ठिकान लागैगो ॥ ७ ॥

प्रेम बाण यक सतगुरु दीन्हो गाढ़ो खैंचि कमाना हो ।
दास कबीर कियो या कहरा महरा माहिं समाना हो ॥८॥

श्री कबीरजी कहैहैं कि हे जीवौ ! तुम यामें पार न जाउगे जब ऐसो करौ तब पारै जाउगे।प्रेमको तो बाण करु औ सतगुरु जो ज्ञान दीन्हो है ताको कमान करि गाढ़ो खैंचि साहबरूप जो निशान है तामें प्रेमबाण मारु अर्थात प्रेम लगाउ। हे साहब को सदाको दास ! कायाकेबीर जीव या कहरा में संसार को कहर है सो कहा कियो है, महरा माहिं समाना कहे जे साहब के महरमी हैं तेहीमें समाय अर्थात् उनहींको सत्संग करु । कहू गाढ़ो खैंचि कमाना यही पाठ है।अथवा हे कबीर ! कायाके बीर जीव मन माया ब्रह्मके दास ह्वै यहि संसार तैं

किये सो कहरा कहे कहर करनवारो है सो तैं आपनो रूपतौ विचारु कहाँ माया दास ह्वैरहै है तैं महरा कहे मायाके हरनवारे जे हैं साधु तेही माहिं समाना कहे तैं तिनके बरोबर है जो तैं आपने स्व स्वरूपको जानै है ॥ ८ ॥

इति दूसरा कहरा समाप्त ।

अथ तीसरा कहरा ॥ ३ ॥

रामनामको सेवहु बीरा दूरि नहीं दुरि आशाहो ।
और देव का पूजहु बौरे ई सब झूठी आशाहो ॥ १ ॥
उपरके उजरे कहभो बौरे भीतर अजहूं कारोहो ।
तनको वृद्ध कहा भो बौरे ई मन अजहूं बारोहो ॥ २ ॥
मुखके दांत गये का बौरे अंदर दांत लोहेके हो ।
फिरि फिरि चना चबाउ विषयके काम क्रोध मद लोभेहो ३
तनकी शक्ति सकल घटि गयऊ मनहिं दिलासा दूनीहो ।
कहै कबीर सुनो हो संतो सकल सयानप ऊनीहो ॥ ४ ॥

राम नामको सेवहु बीरा दूरि नहीं दुरि आशाहो ।
और देव का पूजहु बौरे ई सब झूठी आशाहो ॥ १ ॥

श्री कबीरजी कहै हैं कि हे कायाके बीरौ जीवो ! रामनाम को सेवन करो राम नाम दूरि नहीं है तुम्हारी आशा दूरिहै और देवको हे बौरे का पूजहुहौ इनकी आशा सब झूठी है ॥ १ ॥

उपरके उजरे कह भो बौरे भीतर अजहूं कारोहो ।
तनको वृद्ध कहाभो बौरे या मन अजहूं बारोहो ॥ २ ॥
मुखके दांत गयेका बौरे अंदर दांत लोहेके हो ।
फिरि फिरि चना चबाउ विषयके काम क्रोध मद लोभेहो ३

हे बौर जो ऊपर बहुत ऊजर बनेरह्यो बहुत आचार कियो तौ कहा भयो भीतर तो अजहूं करिये हो औ तनकी बड़ी वृद्धता मान्यो तौ हे बौरे ! कहा भयो मनतो अजहूं बारो कहे लरिकवा बनाहै वही चाल चलैहै ॥ २ ॥ औ मुखके दांत गिरिगये तौ हे बौरे कहा भयो अन्तःकरणके जे बिषय के चना चाबन-वारे ऐसे लोहेके दांततो गैषे न भये काम क्रोध मद लोभ बनेनहैं मिटबे न भये ॥ ३ ॥

तनकी शक्ति सकल घटि गयऊ मनहिं दिलासा दूनीहो ।
कहै कबीर सुनोहो संतौ सकल सयानप ऊनीहो ॥ ४ ॥

हे बौरे ! तनकी सकल कहे रूप बिषय करनवाली सामर्थ्य घटिगई औ संगी मरिगये पै दिलकी दिलासा जो तृष्णा सोतौ घटिबे न भई सो कबीरजी कहै हैं कि हे संतो ! तुम सुनो या सब जीवनकी सयानपऊनी है अर्थात् तुच्छ है बिना रामनाम के जाने जनन मरण न छूटैहै तामें प्रमाण कबीरजीका ॥ " जोतै रसना राम न कहिहै । उपजत बिनशत भरमत रहिहै ॥ जस देखी तरुवरकी छाया । प्राणगये कहु काकी माया ॥ जीवत कछु न किये परमाना । मुये मर्म कहु काकर जाना । अंत काल सुख कोउ न सोवैं । राजा रंक दोऊ मिलि रोवैं ॥ हंस सरोवर कमल शरीरा । राम रसायन पिवै कबीरा ॥ ४ ॥ "

इति तीसरा कहरा समाप्त ।

अथ चौथा कहरा ॥ ४ ॥

ओढ़न मेरा रामनाम मैं रामहि को बनिजारा हो ।
रामनामका करौं बनिजमैं हरि मोरा हटवाराहो ॥ १ ॥
सहस नामको करौं पसारा दिन दिन होत सवाईहो ।
कान तराजू सेर तिन पौवा डहकिन ढोल बजाईहो ॥ २ ॥
सर पसेरी पूरा करिले पासंघ कतहुं न जाईहो ।
कहै कबीर सुनोहो संतो जोरि चले जहडाई हो ॥ ३ ॥

ओढन मेरो रामनाम मैं रामहिंको बनिजारा हो।
रामनामको करौं बनिजमैं हरि मोरा हटवारा हो॥ १ ॥

श्री कबीरजी कहै हैं कि पांखडी लोग जे हैं ते कहै हैं हमारो ओढ़न रामनामही है अर्थात् राम नामही के ओढ़नते ठगि लेहिहैं। परम तत्त्व जो रामनामहै तौनेको ठगिवेको ओढ़र बनाये हैं काहे न मारे परैं? कौन तरहते कि बड़े बड़े टीका दैलिये माला जपै हैं न रामनाम को तत्त्व जानैं न अर्थ जानैं न जपैके विधि जानैं न नामापराध दश जानैं औ या कहै हैं कि हम रामनामको बनिजारा हैं औ रामनामकी बनिज करैहैं औ हरि जे हैं तेई हमारे हटवारे हैं कहे दलालहैं अर्थात् हम उनहींके द्वारा सब रामनामको सौदा लेहिहैं उनकी प्रेरणाते हम मन्त्र देइ हैं जो वाके भागमें होयगो सो होयगो हमारो पैसा धोतीतो हाथको न जायगो। जो कोई कहै है कि शिष्य परीक्षा कै लेउ तो या कहै हैं कि कहांको बखेड़ा लगायो है हम मन्त्र दैदियो वह जो चाहै सो करै मुक्त होइ जाइगो॥ १ ॥

सहस नामको किये पसारा दिन दिन होत सवाईहो।
कान तराजू सेर तिन पौवा डहकिन ढोल बजाईहो॥२॥

औ या कहै हैं कि एक नामके लीन्हेते सर्व कर्म छूटि जाइहैं हम तो हजारन नाम लेइहैं कर्म कहां रहैंगे सब छूटि जायँगे हमारे सुकर्म दिन दिन सवाई बढ़ैगे। सो दोऊ गुरु चेलनको ऐसो हवालहै चेलनके कान जे हैं तेई फेरहा तरजुवा है औ तीनपावका सेरहै अर्थात् त्रिगुणात्मक मन है सो मन बचन के परे जो रामनाम सो गुरुवालोग तौलि दियो अर्थात् मन्त्र दियो। डहकिन ढोल बजाई कहे चेला लोग चारिउ ओर कहि आये कि हम मन्त्र लियो है कै डहकाइ गये ढोल बजाइ॥ २ ॥

सेर पसेरी पूरा करिले पासँघ कतहुं न जाईहो।
कहै कबीर सुनोहो संतो जोरि चले जहडाईहो॥३॥

गुरुवनके उपदेशते सेर जो है मन पसेरी जो है ब्रह्मज्ञान सो पूरो करिलै अर्थात् सर्वत्र ब्रह्मको पूर्ण मानै परंतु पसंघा जो मूलाज्ञान सो कतहूं न जायगो वाहीमें परिकै अन्तकाल में जहडायकै कहे डहकाय चले जायँगे॥ ३ ॥

इति चौथा कहरा समाप्त।

अथ पांचवां कहरा ॥ ५ ॥

राम नाम भजु राम नाम भजु चेति देखु मन माहींहो ।
लक्ष करोरि जोरि धन गाड़े चले डोलावत बाहींहो ॥ १ ॥
दाऊ दादा औ परपाजा उइ गाड़े भुइ भांड़ेहो ।
अँधेरे भये हियाकी फूटी तिन काहे सब छांड़ेहो ॥ २ ॥
ई संसार असार को धन्धा अंतकाल कोइ नाहींहो ।
उपजत बिनशत बार न लागै ज्यों बादरकी छाहींहो ॥३॥
नाता गोता कुल कुटुम्ब सब तिनकी कवनि बड़ाईहो ।
कह कबीर यक राम भजे बिन बूड़ी सब चतुराईहो ॥ ४ ॥

राम नाम भजु राम नाम भजु चेति देखु मन माहींहो ।
लक्ष करोरि जोरि धन गाड़े चले डोलावत बाहींहो॥१॥

श्री कबीरजी कहै हैं कि हे मूढ़ ! परमपुरुष श्री रामचन्द्रको रामनाम है ताको भजु भजु। भज सेवायां धातुहै सो याही रामनामको सेवा करु । रामनाम मन बचनके परे है सो आगै लिखि आये हैं आपने मनमें चेति कहे बिचारिकै देखु तो लाखन करोरिन धन जोरिकै गाड़ि २ धरचो जब मरन लाग्यो यमदूत लै जान लगे तब बाहीं डोलावत चलैहो कि वे धन हमारे नहीं हैं ॥ १ ॥

दाऊ दादा औ परपाजा उइ गाड़े भुइँ भांड़ेहो ।
अँधेरे भये हियोकी फूटी तिनकाहे सब छांड़ेहो ॥ २ ॥

जो कहो वा जन्म कब देख्योह तो तेरे दाऊ दादा औ परपाजा वे भुइँ में केतौ भांड़े गाड़ि गाड़ि मरिगये हैं उनहीं के साथ कबै धन गयो है सो तैं आँधरे ह्वैगये तेरे हियोकी फूटि गई हैं जैसे सब धन छोड़िकै वे चले गये हैं धनको मालिक तुहीं भयो ऐसे तुहूं धन छोड़िकै चलो जायगो तेरो धन औरही को होयगो तेरे हाथ कछु न लैगो ॥ २ ॥

या संसार असारको धंधा अन्तकाल कोइ नाहींहो।
उपजत विनशत बार न लागै ज्यों बादरकी छाहींहो॥३॥

या संसार असार कहे झूठहीको धंधाहै अंतकालमें कोई आपनो नहीं है जोकहो कि हम जाबही न करैंगे बनेही रहैंगे तो शरीरके उपजत विनशत में बार नहीं लगैहै जैसे बादरकी छाहीं भई औ पुनि मिटिगई॥ ३ ॥

नाता गोता कुल कुटुम्ब सब तिनकी कवनि बड़ाईहो।
कह कबीर यक राम भजे विन बूड़ी सब चतुराईहो॥४॥

बड़े गोतके भये बड़े कुल के भये बड़ी बड़ी जातिके नात भये तिनकी कौन बड़ाईहै ये तो सब शरीरही के हैं जब तेरो शरीर छूटि जायगो तब तेरो शरीरही कोई न छुवैगो ताते ये सब नात गोत जबभर शरीर बनोहै तबहीं भरेके हैं शरीर छूटे ये सब छूटि जाइहैं इनकी कौन बड़ाई है। सो श्री कबीरजी कहै हैं कि, एक जे परमपुरुष परश्रीरामचन्द्रहैं तिनके रामनाम के भजे कहे सेवा किये बिन सब चतुराई तिहारी बूड़ि जायगी नरकहीको जाउगो। जेजे आपनी २ कल्पना ते नाना उपासना कैलियेहो तिनते चाहोहो कि हमारी मुक्ति ह्वै जायगी ते एकहू काम न आवैगो तामें प्रमाण **श्री गोसाईंजी को पद** ॥ "राम कहत चलु राम कहत चलु राम कहत चलु भाईरे। नाहिंतो भव बेगारि में परिहौ पुनि छूटब अति कठिनाईरे। बाँस पुरान साजु सब अटपट सरल त्रिकोण खटोलारे। हमहिं दिहल कारि कुटिल करमचँद मंद मोल विन डोलारे। बिषम कहारमार मद-माते चलैं न पाय बटोररे। मंद बेलंद अभेरा दलकनि पाई दुख झकझोररे। कांट कुराय लपेटन लोटन ठामहिं ठाम बझाऊरे। जस जस चलिये दूरि निज तस तस बांसन भेंट लकाऊरे। मारग अगम संग नहिं संबल नाम गामकर भूलारे। तुलसि दास भवआश हरहु अब होहु राम अनुकूलारे॥ १॥

अर्थ–राम कहत चलु राम कहत चलु राम कहत चलु भाई रे॥ गोसाईंजी जीवन को उपदेश करैहैं इहां राम कहतचलु तीनि बारकह्यो सो मुक्त मुमुक्षु विषयी तीनों जीवन को कहैहैं सो गोसाईंजी अपनी रामायणमें कह्योहै चौ०॥ "विषयी साधक सिद्ध सयाने। त्रिविध जीव जग वेद बखाने॥ राम सनेह

सरस मन जासू। साधुसभा बड़ आदर तासू ॥ सिद्ध विरक्त महामुनि योगी। नाम प्रसाद ब्रह्म सुखभोगी" ॥ या ते यह कि राम बिना मुक्तहुनकी गति नहीं है अरु भाई जो कह्यो सो जीवके नाते कहै हैं कि हम सब यकीहैं अरु इहां एकबचन कहैहैं सो प्रति जीव सो पृथक् २ कहै हैं कि हे भैया या दुःखमार्ग त्यागि देउ यामें दुःख पावोगे ताते राम कहते चलो ॥ नाहिंतो भव बेगारिमें परिहौ पुनि छूटब अति कठिनाईरे ॥ नहीं तो भव जो संसार है ताके बेगारिमें परोगे बेगारि परिबो कहाहै जाते संसारते कबहूं न उद्धार होइ ऐसे कर्म माया तुमको धरिकै करावैगी जो शरीररूप डोलाको गुमान कियेहोहु कि डोला चढि बेगारि न परैंगे तो धरनवारो समरथ है डोलामें चढेहू धरि लेइगो तब कठिन ह्वै जायगो जैसे फिरङ्गी म्याना पालकिनवाले को बेगारि पकरै है तब कोई कहै हैं कि येतो बड़े आदमी हैं इनको सड़क खोदाना चाहिये तब अंगरेजलोग कहैहैं कि हमारे इहां दस्तूरहै म्याना चढेजाइ वही में फरुहा कुदारी धरेजाइ सो पालकिउ चढे बेगारि धरि जाइ है औ डोलहू तिहारो जर्जरहै सो कहै हैं ॥"बांस पुरान साजु सब अटखट सरल तिकोन खटोलारे। हमहिं दिहलकारि कुटिल करमचँद मंद मोल बिन डोलारे ॥ प्रारब्ध जो हैं सोई पुरान बाँस है काहे ते कि संचित तो प्रारब्ध भै है तेहिते महापुरानहै। औ सब साज अटखट कह्यो सो आठ औ षट कहे चौदह साज हैं शरीररूपी डोलाकी सो कहैहैं "त्वचा, रुधिर, मांस, अस्थि, मेद, मज्जा, शुक्र, केश, रोम, नस, नख, दंत, मल, मूत्र, सो त्वचा डोलाको वोहारहै रुधिर वोहार को रंग औ मांस वोहारकी तुई है औ अस्थिडोलाको काठहै औ मेद मज्जा डोलाको तकिया बिछौनाहै औ नस रसरीहै औ नख लोहेकी पतुरी है औ दांत खीला है औ मलमूत्र लघुत है औ घुनको कीरा है काहेते कि कीरनहू में पानी होय है। अथवा साजु सब अटखट जो यह पाठ होइ तौ पुरजा पुरजा जो रै है यही अर्थ है औ सरल जो कह्यो सो सरोहै कहे रोगनते ग्रासितहै औ तिकोन खटोला जो कह्यो डोलामें सो शरीर की तीन अवस्थाहैं जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति याहीमें परोरहै है सोई तिकोन खटोला है अथवा बालापन युवापन वृद्धापन ई तीनौंपन तिकोन खटोलाहैं शरीर रूपी डोलामें सो ऐसो डोला कुटिल करमचंद

कहे कुटिल कलंकी करम करिकै कहे बनाइकै हम सबको दीन्हो है औ ऐसो निबल डोलाहै । औ मंद मोलबिन जो कह्यो सो औरको मांस भोजनहूंमें काम आवै है यह मानुष शरीरको मांस बेचबेहूते कोऊ नहीं लेइ याते मंद मोल कहे थोरहू मोल बिनाहै सो ऐसो डोला में चढिकै हे भैया ! या संसार मार्ग में चलैगे तो कलंकी करम को दियोहै डोला तुमहूं को कलंक लागि जाइगो । यह जर्जर डोला जो संसार मार्गमें टूटैगो तौ फँसि जाउगे फिर न निकसौगे: जो नाम सड़क चलैगे तौ या सड़क राम घाटही लगीहै डोला टूट्यो दिव्य रूप ते आंखी मूंदेहू चले जाउगे अथवा दिव्य रूपते बिमान चढ़ि चले जाउगे कैसो है डोला सो कहैहैं ॥ "बिषम कहार मार मद माते चलहिं न पाय बटोरे रे । मंद बिलंद अभेरा दलकनि पाई दुख झक झोरेरे" ॥ बिषम कहे कहार जेहिको पांचों इंद्रिय सो एकतो सम नहीं है दूसरे स्वभावहीते बिषमहैं तीसरे मार मदमाते हैं सो मतवारे के पांय सम नहीं परै हैं चलत में पांय बगरि जाइ हैं पांय बगरिबे कहे रूप रस गंध स्पर्श शब्द इनमें जाय रहैहै । फिरि मार्ग कैसो है मंद कहे नीचहै बिलंद कहे ऊंचहै अर्थात् कहूं अपमानते दीन ह्वै जाइहै अपनेको नीच मानै है कहूं मानते अपनेको बड़ो ऊंच मानैहै औ कहूं अभेरा कहे धक्का लगि-जायहै। धक्का कहा है कहूं पुत्र मरिगयो भाई मरिगयो चोर चोराय लियो सो या लोकमें लोग कहैहैं कि हमको बड़ो धक्का लगो।दलकनि कहाहै कि विषय सुख देत में अच्छो लगैहै जब वामेंररयो तब बिषय दलदल में फँसि जाय है औ पाई दुःख झकझोरे कहे डोलामें झकझोरा लगैहै सो इंद्रीरूप कहार गिरैं हैं कहूं उठै हैं ताते विकलताई झकझोरा का दुःख पाइतैहैं ॥ "कांट कुरायल पेटन लोटन ठांवहिं ठांव बझाऊरे । जस जस चलिय दूरि निज तस तस बासन भेटल काऊरे" ॥ कहीं कांटहैं कहे सुन्दर रूपहै सो नयनरूपी कहारनके छेदिजायहैं तब गिरि जाय हैं कहे आसक्त ह्वै जाय हैं औ कुराय सजल होइ है सो रस है तामें रसनारूप कहार बूडिजाय है औ लपेटन फूली लताहै तेई गन्धहैं तामें नासिकारूप कहार लपटिकै गिरि परै है लोटन लोकमें सर्पको कहैहैं सो स्पर्श है त्वचारूप कहारनको डसि डारै है कामिनीके एक अङ्ग छुवतमें सर्वांग कामबिष चाढ़ि जाय है याते स्पर्शको लोटन सर्प कह्यो है

औ ठांवहिं ठांव बझाऊ कहे मोहरूप शिकारी सो नाना बिषय की कथा औ नाना भूत यक्षादिक सेवनते सिद्धिकी प्राप्त तिनकी कथा औ नाना तामसमत तिनकी कथा सो शब्दरूप बागुरि ठामहि ठांव लगाय राख्यो है तामें श्रवणरूप कहार अरुझिकै डोला डारि देइहै फिरि संसार मग कैसो है ज्यों ज्यों संसार पथमें चलियतुहै त्यों त्यों दूरि रामपुर परतो जायहै भैया रामपुरकी गैल नहीं है और राहहै फिरि कैसो ह यामें वास नहीं है अर्थात् कल नहीं रहै है कर्म करतई जाइहै शांत ह्वैकै कोई नहीं टिक्यो ॥ "मारग अगम संग नाहिं संबल नाम ग्रामकर भूलारे । तुलसिदास भव त्रास हरहु अब होहु राम अनुकूलारे ॥" सो या प्रकार यह मार्ग है संसार सोई पृथ्वी है तामें विषयके हेतु नाना यतन करिबो अरु राजस तामस शास्त्रमार्ग तदनुसार कर्म करिबो सोई चलिबो है ताको गोसाईंजी कहै हैं कि अगमहै कहे चलिबे मुआफ़िक़ नहीं है औ नाम मार्गमें संतनको संगहै ते रामपुरको बिघ्न नाशिकै पहुंचाइ देईहैं यहां कैसो है संगनाहिं संबल कहे सम्यक् है बल जेहिके ऐसे संत सङ्गमें नहीं है अथवा नानामार्ग में तो सात्विक श्रद्धा कलेवा मिलै है या मार्गमें श्रद्धारूप कलेवा नहीं मिलैहै सो गोसाईंजी अपनी रामायण में लिख्यो है जे श्रद्धा संबल रहित इत्यादिक औ जा गाउंको तुमको जानोहै ताको नामही भूलि गयो है भूला जो कह्यो सो गर्भमें सुधि होइ है फिरि भूलि जायहै याते भूला कह्यो है अथवा जीव नाम ग्राम कर भूलाहै नाना देवतन को नाम लेइहै औ तिनहीं के धाम जाइबेकी इच्छा करै है सो तेरो ते नामनते भव बन्धना छूटै है न ते धामनमें गये तेरो जनन मरण त्रास छूटैगो सो अब गोसाईंजी कहैहैं कि हे भैया ! अब अपने अपने जीवन पै दाया करि संसारकी त्रास हरो अब काहेते कह्यो कि अनेक जन्म भटकि के अनेक शरीर पाइकै मनुष्यको शरीर पायो है सो अबहूं नाम मार्ग चलौ याते अब कह्यो है औ होहु राम अनुकूला जो कह्यो सो उपक्रममें नाम मार्ग बतायो ताको चलिकै उपसंहार में होहु राम अनुकूला कह्यो सो एक उपलक्षण है छः प्रकारकी शरणागती को सूचन कियो है उपक्रम में नाम मार्ग बतायो उपसंहारमें शरणागती बतायी सोई श्री गोसाईं जी कहैहैं

कि हे भैया ! रघुनाथजी को नाम जपौ औ शरण जाउ याहीमें उबारहै औरमें नहीं है षट् विधि शरणागत को लक्षण ॥ " अनुकूलस्य सङ्कल्पः प्रातिकूलस्य वर्जनम् ॥ रक्षिष्यतीति विश्वासो गोप्तृत्ववरणं तथा ॥ आत्मनिक्षेपकार्पण्यं षड्विधा शरणागतिः " ॥ ५ ॥

इति पांचवां कहरा समाप्त ।

अथ छठवां कहरा ॥ ६ ॥

राम नाम बिनु राम नाम बिनु मिथ्या जन्म गँवाईहो॥१॥
सेमर सेइ सुवा जो जहडे ऊनपरे पछिताईहो ।
जैसे मदिप गांठि अर्थै दै घरहुकी अकिल गँवाई हो ॥२॥
स्वादे उदर भरत धौं कैसे ओसे प्यास न जाईहो ।
द्रव्यक हीन कौन पुरषारथ मनहीं माहँ तवाईहो ॥ ३ ॥
गांठी रतन मर्म नहिं जानेहु पारख लीन्हो छोरी हो ।
कह कबीर यह अवसर बीते रतनन मिलै बहोरी हो ॥४॥

राम नाम बिनु राम नाम बिनु मिथ्या जन्म गँवाई हो ॥१॥

उपासक जे हैं ते पंचांगोपासना करिकै औ कापालिकादिक मतवारे देवतनके उपासना करिके नास्तिक मरबई मोक्ष मानिकै व्याकरणी शब्द ज्ञान करिकै ज्योतिषी कालज्ञान करिके सांख्यवाले प्रकृतिपुरुषज्ञान करिकै पूर्व मीमांसावारे कर्महीं करिकै नैयादिक दुःखध्वंसही करिकै औ कणाद वाले नौगुणध्वंसही करिकै औ शंकरवेदांतवाले ब्रह्मज्ञानही करिकै इत्यादिक मुक्त होब मानै हैं परम पुरुष पर श्री रामचन्द्र तिनहीं बिना औ तिनके रामनाम बिना मिथ्य जन्म गँवाइ दियो ॥ १ ॥

सेमर सेइ सुवा जो जहडे ऊनपरे पछिताई हो ।
जैसे मदिप गांठि अर्थैदै घरहुकी अकिल गँवाई हो ॥ २ ॥

जैसे सेमरके फलको सुवासेयो चोंच चलायो जब वामें धुवानिकस्यो तब भोजनते ऊन कहे खाली परचो भोजन न पायो तब पछितायकै कहे जहड़ि कै भोजन डहकायकै चल्यो । ऐसे जीव नाना मतन में परिकै मुक्ति चाह्यो जब मुक्ति न पायो तब मुक्ति डहकाइकै संसारमें परचो औ जैसे मदिप कहे मतवार गांठी को द्रव्य दैकै मद पियो घरौकी अकिल गँवायदियो तैसे गुरुवा लोगनको गांठी की द्रव्य दैकै मन्त्र लैकै औरे औरे मतनमें लगिगये घरोंकी अकिल गँवाइ दियो कहे साहबको सदा को दास है जीव सो आपने स्वरूपको भूलि गयो ॥ २ ॥

स्वादे उदर भरत धौं कैसे ओसै प्यास न जाईहो ।
द्रव्यक हीन कौन पुरषारथ मनहीं माहँ तवाईहो ॥ ३ ॥

जौने मतमें स्वादपायो सो तौनेही मतमें लग्यो सो ओसते कहूं पियास बुझाइहै ओसपरो सो ओसको जलको स्वाद मुखमें आयो सो कहा स्वादते पेट भरे है नहीं भरे है तैसे जीव नाना मतमें लग्यो नाना साधन करन लग्यो औ वे देवतन-के लोक न गयो अथवा ब्रह्मज्ञान सिद्ध भयो अथवा आत्मज्ञान सिद्धभयो इत्यादिक सब सिद्धि भयो किंचित सुख पायो तेतो ओसको चाटिबो है कहा मुक्तिहोइ है नहीं होय है औ द्रव्य का हीन जो पुरुषारथ है सो कौन पुरुषार थहै मनमें बहुत बिचार करै है कि वाको दशहजारदेउं वाको पांच हजार देउं जब द्रव्य की सुधि आई सो द्रव्य तो हेई नहीं है तब मनै में तवाई होयहै कि हाय का करौं ऐसे नाना मतनमें लगे पाछे पछिताउ होयहै अन्तकाल में मैं कहा कियो साहबमें न लाग्यो जाते मुक्तिहोती ॥ ३ ॥

गांठी रतन मर्म नहिं जानेहु पारख लीन्ही छोरीहो ।
कह कबीर यह अवसर बीते रतन नमिलै बहोरी हो॥४॥

या जीव सदाको साहबको अंशहै सो या रतन तुम्हारे गांठी में है ताको यह राम नामते पारिख करिकै छोरि लेउ साहबके गुण जीवौ में हैं वे बृहत चैतन्यहैं यह अणुचैतन्यहैं वे घन रस रूपहैं या लघु रसरूप हैं ऐसो जो शुद्ध आपनो रूप जानै तौ रतन तेरे गांठीमें है ताको मर्म तुम रामनाम बिना नहीं जान्योकि वा साहब कोहै मन माया ब्रह्मको नहीं है काहेते कि गुरुवालोग तिहारी पारख

छोरि लियो और और तिहारो साहब बनाइ दियो सो कबीरजी कहै हैं कि जो ऐसो मनुष्य शरीरमें साहबको ज्ञान न भयो किमैं साहबको हौं तो या अवसर बीति गये कहे या शरीर छूटिगये फेरि रतन जोहै आपने स्वरूपको ज्ञान कि मैं साहब को अंशहौं सो पुनि न मिलैगो औ साहबको ज्ञानकै देनवारो राम नाम न मिलैगो औ आगे जे कहि आये पंचांगोपासनवारे कापालिकादिक मतवारे व्याकरणी सांख्य मीमांसावारे नैयायिक कणादवारे शंकरवेदांती नास्तिक मतवारे जो या कहै हैं कि हमारे मतमें काहे मुक्ति नहीं होय है सो कहै हैं पंचांगोपासना तौ सगुणहै सो सत रज तम ये गुण माया के हैं सो मायाते माया नहीं छूटै है या असंभवहै औ कापालिकादिक व्याकरणादि भैरवको मानै हैं सो वेद विरुद्धहै ई मुक्तिदाता कोई नहीं हैं तामें प्रमाण॥ "मुक्तिदाता च सर्वेषां राम एव न संशयः ॥" औ वैयाकरण शब्दब्रह्मते मुक्ति मानै हैं सो केवल शब्दब्रह्मके जाने मुक्ति नहीं होयहै जब शब्दब्रह्मको जानिकै परब्रह्मको जानै तब मुक्ति होइहै तामें प्रमाण॥ "शब्दे ब्रह्मणि निष्णातो न निष्णायात्परे यदि। श्रमस्तस्य श्रमफलोह्यधेनुमिव रक्षतः ॥" औ ज्योतिषी कालज्ञानते मुक्ति मानै हैं सो कालहूके कालजे श्री रामचन्द्रहैं तिनके बिना जाने मुक्ति नहीं होयहै तामें प्रमाण ॥ "यः कालकालो गुणी सर्ववेत्ता" ॥ औ सांख्यवारे प्रकृति पुरुषते मुक्ति मानै हैं सो पुरुषोत्तम श्रीरामचंद्रहैं तिनके विनाजाने मुक्ति नहीं होयहै तामें प्रमाण ॥ "वन्दे महापुरुष ते चरणारविंदम् ॥" औ पूर्वमीमांसावारे कर्म ते मुक्ति मानै हैं सो कर्म ते मुक्ति नहीं होय है कर्म त्यागेते मुक्ति होयहै तामें प्रमाण ॥ "न कर्मणा न प्रजयाधनेन त्यागेनैके अमृतत्त्वमानशुः" इति श्रुतेः ॥ औ नैयायिक ईश्वर श्री रामचन्द्रही हैं तामें प्रमाण॥ "तमीश्वराणां परमं महेश्वरं"॥ औ कणादवारे नौगुणध्वंस मुक्ति मानै हैं सो नौ गुणध्वंसही मुक्ति नहीं होयहै नौगुणध्वंस भये उपरांत जब भक्ति होयहै तब मुक्ति होयहै तामें प्रमाण ॥ "ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा नशोचति न कांक्षति। समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते परां"॥ औ शङ्कर वेदांती ब्रह्म ज्ञान करिकै मुक्ति मानै हैं सो जीव ब्रह्म कभी होतही नहीं है तामें प्रमाण ॥ "सत्य आत्मा सत्यो जीवः सत्यंभिदःसत्यंभिदः ॥

औ नास्तिक चारि प्रकारके हैं-सौगत १ बिज्ञानबादी २ सौ-

त्रांत्रिक ३ चार्वाक ४ सो सौगतनामके आत्मा क्षणिक नाशमानमानै हैं जैसे घट, सोआस्तिक मतते विरुद्धहै काहेते कि आस्तिक आत्माको नित्य मानै है ॥ १॥ विज्ञानवादी पदार्थ मात्रका ज्ञान स्वरूप मानै है सो आस्तिक मतमें बाधक है काहेते कि जो क्षणिक ज्ञानके बाहर दूसर पदार्थ नहीं मानै है तौ ज्ञानाश्रय आत्मा केहितराते होइ ॥ २ ॥ औ सौत्रांत्रिक गुणरूप आत्मा मानै है कौन गुण सुख बिशेषगुण सो आस्तिक मतते बिरुद्ध है काहेते आस्तिक सुखरूप सुखाश्रय आत्माको मानै है ॥ ३ ॥ औ चार्वाक शरीरैको आत्मा मानै हैं काहेते प्रत्यक्षहै सो आस्तिक मतते बिरुद्धहै काहेते शरीरते अभिन्न आत्माको मानै है याही रीति उदयनाचार्य बौद्धाधिकार ग्रन्थमें बहुत नास्तिकनको खंडन कियो है ॥ ४ ॥ औ अछु हमहूं कहै हैं औ सौगत जो आत्माको क्षणिक नाशवान् मानैंगे औ चार्वाक जो शरीरको आत्मा मानैंगे तो जो क्षणिक नाश मान् आत्मा होत तौ भूत कैसे होत याते सौगत निराकरण भयो औ जो शरीरै आत्मा होयगो तौ मुर्दा कैसे होइगो शरीर काटिहू डारै चैतन्य रहैगो औ विज्ञानबादी जो आत्माको ज्ञानस्वरूप मानैगो तौ अज्ञान कैसे होयगो औ सौत्रांत्रिक सुख गुणस्वरूप आत्मा मानै है तौ गुणतो बिना गुणी रहतई नहीं है सो गुणी कोहै जो कहो अर्हन्को अथवा जिनको गुण मानै है जीवात्माको तौ गुण गुणी को समवाय है गुण गुणी को छोड़िकै नहीं रहै है सो जीव जो अज्ञानी भयो सो जाको गुणहै जीव सोऊ अज्ञान भयो जो चार्वाक कालैकै प्रत्यक्ष मानैहै गुण गुणी को नहीं मानै है वेद शास्त्रको कहो मिथ्या मानौहौ सो ग्रहण शास्त्रमें लिखै है सो परतही है सो वेदको कहो कैसे मिथ्या मानै तुम्हारे शास्त्र में लिखै है कि पृथ्वी नीचेको चली जाइहै सो जो पृथ्वी चली जाती तौ पाथर फेंकेते फेरि कैसे पृथ्वीमें मिलतो काहेसे कि पाथर हलुकहै बिलम्ब पूर्वक आवाचाही पृथ्वी गरूहै जल्दी जावा चाही ताते तुम्हारे ग्रन्थ झूठे हैं वेद शास्त्र सांचे हैं सो श्री रामचन्द्र बिना तुम मिथ्या जन्म गमाइ दियो ॥ ५ ॥

इति छठवां कहरा समाप्त।

अथ सातवां कहरा ॥ ७ ॥

रहहु सँभारे राम विचारे कहत अहौ जो पुकारेहो ॥ १ ॥
मूड़ मुड़ाय फूलिकै वैठे मुद्रा पहिरि मँजूसाहो।
ताहि ऊपर कछु छार लपेटे भितर भितर घर मूसाहो॥२॥
गाउँ वसतहै गर्व भारती माम काम हंकाराहो।
मोहिनि जहां तहां लै जैहै नाहिं पति रहे तुम्हारा हो ॥ ३ ॥
मांझ मँझरिया वसै जो जानै जन ह्वैहै सो थीराहो।
निर्भय गुरु कि नगरिया तहँवां सुख सोवै दास कवीरा हो४॥

रहहु सँभारे राम विचारे कहत अहौ जो पुकारे हो॥१॥
मूड़ मुड़ाय फूलिकै वैठे मुद्रा पहिरि मँजूसा हो।
ताहि उपर कछु छार लपेटे भितर भितर घर मूसाहो२॥

श्री कबीरजी कहै हैं कि पुकारे कहौ हौं कि श्री रामनाम को बिचारत हे जीवौ!यह मनको सँभारे रहौ अनत न जान पावै मैं पुकारे कहौहौं अनत जायगो तौ मारो जायगो ॥ १ ॥ ऊपरते मूड़ मुड़ायकै कानेमें मुद्रा पहिरिकै अंगमें छार लपेटिकै मंजूसा कहे गुफामें बैठे औ माण चढ़ाइकै मानन लगे कि हमहीं ब्रह्म हैं सो ऊपरते तो बहुत रंग कियो पै भीतर भीतर उनको घर मुसि गयो कहे साहबको भूलिगये ॥ २ ॥

गाउँ वसतहै गर्व भारती माम काम हंकारा हो।
मोहिनि जहां तहां लैजैहै नहिं पति रहै तुम्हारा हो॥३॥

यह शरीररूपी जो गाउँ है तामें गर्बको जो भाराहै सो थिर भयो कहे यह मान्यो कि यह शरीर मेरोहै तब माम जो है ममता औ कामादिक जे हैं अहं-कार तेहिते भरि गयो सो श्री कबीरजी कहै हैं कि मोहनि जो है मोहि ले

नवारी माया सो जहां रहै है तहैं तोको ये सब कामादिक लैजैहैं जो यह मानि राख्योहै कि प्राण चढ़ाइके ब्रह्मांडमें लैगये मायाते भिन्न ह्वैगये सो या पति तिहारी न रहैगी जब समाधिते जीव उतरैगो तब पुनि मायामें परि जाउगे ॥ ३ ॥

मांझ मँझरिया बसै जो जानै जन ह्वैहै सो थीराहो ।
निर्भय गुरु कि नगरियातहँवांसुख सोवै दास कबीराहो४

सो मांझ जो है माया काहेते कि जीव साहब के बीचमें माया को आवरणहै तौने के मँझरिया में जो जन बसै जानैहै कि मायाके बीचमें बसोहै औ माया वाको ग्रहण नहीं करिसकै है जैसे जलमें कमल जल नहीं स्पर्श करि सकै है काहेते साहब को जानै है सहज समाधि लगाये है तेई जन थिर रहै हैं। अथवा साहब औ जीव के मांझ कहे बिचबादक रामनाम तौनै मँझरिया कहे जामिन है साहबके पास पहुंचाइबे को तौने रामनाम में जो कोई बसै जानैहै कि मकार रूप मैंहौं रकाररूप साहब है मैं सदाको दास हौं औ रामनाम सर्वत्र पूर्ण है ऐसो जो कोई जानै सो थिर रहै है तामें प्रमाण गोसाईं की चौपाई ॥" अगुण सगुण बिच नाम सुसाखी । उभय प्रबोधक चतुर दुभाखी ॥ " फिरि प्रमाण श्लोक ॥ "रकारश्शेषलोकश्च अकारोमर्त्यसंभवः । मकारश्शून्यलोकश्च त्रयोलोकानिरामयाः ॥" तामें प्रमाण कबीर जीका पद ॥ "क्या नांगे क्या बांधे चाम जो नहिं चीन्है आतम राम ॥ नांगे फिरै योग जो होई । बनको मृगा मुकुति गो कोई ॥ मूड़ मुड़ाये जो सिधि होई । मूड़ी भेड़ि मुक्ति क्यों न होई ॥ बिंद राखेजो खेलहि भाई । खुसैरै कौन परम गति पाई ॥ पढ़े गुने उपजै हंकारा । अधधर बूड़े वार न पारा ॥ कहै कबीर सुनोरे भाई । राम नाम बिन किन सिधि पाई ॥ " औ थिर ह्वैकै गुरु कहे सबते श्रेष्ठ श्री रामचन्द्रके नगर कहे साकेतमें कबीर जे जीव ते उनके दासह्वै तहां सुखसों सो वै हैं वहां और देवके उपासना वारे अहं ब्रह्मास्मिवारे जैहैं ते नहीं जाइ सकैहैं वे मायाहीमें रहे आवै हैं ॥ ४ ॥

इति सातवां कहरा समाप्त ।

अथ आठवां कहरा ॥ ८ ॥

क्षेम कुशल औ सही सलामत कहहु कौनको दीन्हा हो ।
आवत जात दुनौ विधि लूटे सरव संग हरि लीन्हा हो॥ १॥
सुर नर मुनि जेते पीर औलिया मीरा पैदा कीन्हाहो ।
कहँलौं गिनैं अनंत कोटिलै सकल पयाना दीन्हाहो ॥२॥
पानी पवन अकाश जाहिगो चन्द्र जाहिगो सूराहो ।
वहभी जाहिगो यहभी जाहिगो परत काहुको न पूराहो॥३॥
कुशलै कहत कहत जग विनशै कुशल कालकी फांसीहो ।
कह कवीर सब दुनियांविनशल रहलरामअविनाशीहो॥४॥

क्षेम कुशल औ सही सलामत कहहु कौन को दीन्हा हो ।
आवत जात दुनौ विधि लूटे सरव संग हरि लीन्हा हो॥ १॥

श्री कबीरजी कहै हैं क्षेम कहे कल्याण स्वरूप सदा रहै औ कुशल कहें सब बातमें कुशल होय अर्थात् सर्वज्ञ होय औ सही सलामत कहे जेहिके सहीतें जीव सलामत ह्वै जाय अर्थात् जेहिके अपनाय लीन्हेते जीवको जनन मरण छूटि जाय ऐसे जे अपने गुणहैं ते साहब कौने जीवको अपने बिना जाने दीन्ह है अर्थात् काहूको नहीं दीन ऐसे जे साहब हैं सरब संग कहे सब के अंतर्यामी तिनको या काल जीवको आवत कहे जनन औ जात कहे मरन दूनौ बिधिमें लूटचो अर्थात् जब आयो तब गर्भको ज्ञान नाशकै दियो औ जब जाइगो तब वही को नाश ह्वैगयो साहबते चिन्हारी ना करनदियो ॥ १ ॥

सुर नर मुनि जेते पीर औलिया मीरा पैदा कीन्हाहो ।
कहँलौं गिनैं अनंत कोटिलै सकल पायाना दीन्हाहो॥२॥

औ सुर नर मुनि जे हैं औ पीर जे हैं औ औलिया जे हैं औ मीर जे पादशाहहैं तिनको पैदा करत भयो और कहांलौं गिनैं अनंत कोटि जीवनको पैदा करि पायना कराइ देतभयो ॥ २ ॥

पानी पवन अकाश जाहिगो चन्द्र जाहिगो सूराहो ।
वह भी जाहिगोयहभीजाहिगो परतकाहुको न पूराहो॥३॥
कुशलै कहत कहत जग बिनशै कुशल कालकी फांसीहो ।
कहकबीरसबदुनियाबिनशलरहलरामअविनाशीहो ॥४॥

पानी औ पवन औ आकाश औ चन्द्रमा औ सूरा कहे सूर्य औ यहभी कहे यह जगत् औ वहभी कहे ब्रह्म सो ये सब चले जायँगे सबको काल खाय लियो है काहूकी पूर नहीं परी है ॥ ३ ॥ सो कुशलै कहत कहत कहे कुशलै मानेमाने जग सब मरिगयो कुशल कोई न रहे कुशल कालकी फांसी है जाकी फांसीमें सब परे हैं सो कबीरजी कहै हैं कि सब दुनियां बिनशि जाय है जो राम करिकै जन्म बिनाशी है सोई रहिगे अर्थात् रामके दासई अविनाशी हैं इनका नाश नहीं होयहै सो या बाल्मीक रामायणमें प्रसिद्ध है अङ्गद हनुमान् आदिकनको नाश नहीं भयो है ॥ ४ ॥

इति आठवां कहरा समाप्त ।

अथ नवां कहरा ॥ ९ ॥

ऐसन देह निरापन बौरे मुये छुवै नाहिं कोईहो ।
डंडक डोरवा तोरि लै आइनि जो कोटिकध नहोईहो॥१॥
उरध श्वासा उपंजग तरासा हंकराइनि परिवाराहो ।
जो कोई आवै वेगि चलावै पल यक रहन न हाराहो॥२॥
चंदन चूर चतुर सब लेपैं गल गजमुक्ता हाराहो ।
चोंचन गीध मुये तन लूटै जंबुक वोदर फाराहो ॥ ३ ॥

कहै कवीर सुनोहो सन्तौ ज्ञानहीन मति हीनाहो।
यक यक दिन यह गति सवही की कहा रावकादीनाहो४॥

ऐसी देह निरानप है कहे अपनी नहीं है और सब अर्थ मगटई है श्री कबीरजी कहैहैं कि जे मतिते हीन मूर्ख परम पुरुष श्री रामचन्द्रके ज्ञानते हीन रहैं तिनके शरीरकी दशा ऐसे एक दिन सबकी है चाहै रंक होइ चाहै राउ होइहै ॥ ४ ॥

इति नवां कहरा समाप्त ।

अथ दशवां कहरा ॥ १० ॥

हौं सबहिनमें हौं नाहीं मोहिं विलग विलग विलगाई हो ।
ओढ़न मेरे एक पिछौरा लोग बोलहिं यकताई हो ॥ १ ॥
एक निरंतर अंतर नाहीं ज्यों घट जल शशि झाईहो ।
यक समान कोई समुझत नाहीं जरा मरण भ्रम जाईहो॥२
रैनि दिवस मैं तहँवो नाहीं नारि पुरुष समताई हो ।
नामैं बालक नामैं बूढ़ो नामोरे चेलिकाई हो ॥ ३ ॥
तिरविधि रहौं सबनमें वरतों नाम मोर रम राईहो ।
पठये न जाउँ आने नहिं आऊँ सहज रहौं दुनिआई हो ।
जोलहा तान बान नाहिं जानै फाट विनै दश ठाईहो ।
गुरुप्रताव जिन जैसो भाष्यो जिन विरले सुधिपाईहो॥५॥
अनंत कोटि मन हीरा वेध्यो फिटकी मोल न आईहो ।
सुर नर मुनि वाके खोज परे हैं किछु किछु कविर न पाईहो६

हौं सबहिनमें हौं नाहीं मोहिं विलग विलग विलगाईहो ।
ओढ़न मेरे एक पिछौरा लोग बोलहिं यकताई हो ॥ १ ॥

गुरुमुख ।

मैं सबमें हौं औ सब न होउँ ऐसे मोको बिलग बिलग कहे जुदा जुदा बिलगाइकै बेद कह्यो । इहां दुइबार बिलग बिलग कह्यो सो एकतो चित् कहे जीव ब्रह्म ईश्वर अचित् कहे माया काल कर्म सुभाव पृथ्वी आदिक मायाके कार्य सब सो ये दोहुनमे अंतर्यामी रूपते व्यापक हौं सो जीव ब्रह्म ईश्वर चित् तत्त्व में व्यापक हौं तामेंप्रमाण ॥ "विष्ण्वाद्युत्तमदेहेषु प्रविष्टो देवताभवत् । मर्त्याद्यधर्मदेहेषु स्थितो भजति देवताः" ॥इति श्रुतिः।"एको देवः सर्वभूतेषुगूढः सर्वव्यापी सर्वभूतांतरात्मा इति श्रुतिः" ॥ "ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठाहमिति गीतायाम्॥" अचितौमें व्यापक है तामेंप्रमाण॥ "विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत इति गीतायाम्"॥सो चित्अचित्दोऊ व्याप्यपदार्थ हैं व्यापक मैं हौं सो चित् अचित्रूप पिछौरा दुइ छोरिया मेरो ओढ़नहै सर्वत्र महीहौं सो वेद को तात्पर्य न जानिकै लोग यकताई बोले हैं कि एकई ब्रह्म है पिछौरा ओटै याको एकही कहै हैं दूसरा नहीं कहै हैं लोगजो यकताई कहैहैं सो कौनी तरह ते कहै है सो कहै हैं ॥ १ ॥

एक निरंतर अंतर नाहीं ज्यों घट जल शशि झाईहो ।
यक समान कोइ समुझत नाहीं जरा मरण भ्रम जाईहो॥२॥

वही ब्रह्म निरंतर एक सर्वत्र है या लोग बोलै हैं सो कहा अन्तर नहीं है अर्थात् अन्तरहै कैसे जैसे जलभरे घटनमें शशिकी छाया बामें व्याप्य व्यापक बनो है सो एक जो मैं सो समान कहे सबमें समव्यापकहौं ताको कोई व्याप्य व्यापक कोई नहीं समुझै है तौ कहा उनको जरा मरण भ्रम जाइहै अर्थात् नहीं जाइहै सो अंतर्यामी रूपते व्यापक साहब कहि चुके अब निज रूपते जहाँ रहै हैं तहांकी बात कहै हैं॥२॥

रैनि दिवस में तहँवों नाहीं नारि पुरुष समताईहो ।
नामैं बालक नामैं बूढ़ो ना मोरे चेलिकाईहो ॥ ३ ॥

जहांमैं रहौ हौं तहां न रातिहै न दिनहै औ सब नारी रूपहैं जो पुरुषहू जाईहै सो नारिन रूपते रासमें प्राप्त होइहै पुरुष महींहौं औ समताई है जैसे सच्चिदानन्दरूप

ऐसे ओऊ सच्चिदानंद रूपहैं मैं न बालकहौं न बूढ़हौं सदा किशोररूप बनो रहौहौं औ न मोरे चेलिकाई कहे कोऊ वह उपदेश्य नहीं है अर्थात् अज्ञानी कोऊ नहीं हैं सब मेरे रूपको जानै हैं उहां राति दिन नहीं है तामें प्रमाण ॥ "न तद्भासयते सूर्यो न शशांको न पावकः। यद्गत्वा न निवर्तंते तद्धाम परमं मम" ॥ ३ ॥

तिरबिध रहौं सबनमें बरतौं नाम मोर रमराई हो।
पठये न जाउँ आने नाहिं आऊं सहज रहौं दुनिआई हो॥४॥

तिरबिध रहौं कहे जीव ब्रह्म ईश्वरनमें जो अंतर्यामी रूपते रहौहौं औ सबनमें बरतौं कहे माया काल कर्म सुभाव इन में जो अंतर्यामी रूपते रहौहौं सो इनमें जो रमनवारो अंतर्यामी मेरो रूप ब्रह्म ताहूको मैं राईहौं सो पठये नहीं जाउहौं न आनते आऊंहौं अर्थात् जो कहूं नहोउं तौ ना आनें आऊँ न पठये जाउँ सर्वत्रै तो हौं सो यही रीतिते सहजही या दुनियांमें अंतर्यामीके अंतर्यामी रूपते पूर्णहौं ॥ ४ ॥

जोलहा तान बान नाहिं जानैं फाट बिनै दश ठाईहो।
गुरु प्रताप जिन जैसो भाष्यो जन बिरले सुधि पाई हो॥५॥

जोलहा जे हैं जीव ते तान बान नहीं जानैं अर्थात् वा हंसस्वरूप पोसाक बनै नहीं जानैं जो पहिरिके मेरे समीप आवै फाटबिनै दश ठाईं कहे दशहैं छिद्र जिनमें ऐसो जो शरीर ताहीको बिनै है कहे नाना मतनमें परिकै वही कर्म करैहै जामें अनेक जन्म शरीर धारण करत जायहै जो कहो कोऊ जानतही नहीं है तौ गुरुके प्रतापते जो कोऊ मेरो रूप भाष्यो है जैसो सो तौ कोई बिरला जन सुधि पायो है अर्थात् जाको सतगुरु मिल्यो है सोई पायों है ॥५॥

अनंत कोटि मन हीरा बेध्यो फिटकी मोल न आईहो।
सुर नर मुनि वाके खोज परेहैं किछु किछु कबिरन पाईहो ६

अनंत कोटि जे जीव हीराहैं तिनमें मन बेध्यो है सो या हीरारूप जीवको फिटिकिरिउ को मोल न रहिगयो सो सुर जे हैं मुनि जे हैं नर जेहैं

ते वही अपने स्वरूपको खोजैहैं सो किछु किछु कहे थोरहूते थोर जीव पाइनहै और कोई नहीं पायो जे आपनो रूप मेरो रूप गुरुमताप जानि शरीरको बिनैया मनको त्याग्यो है तेई पायो है अथवा किछु किछु काबिरन पाई कहे साकल्य करिकै हमारो भेद तौ कोई जानतही नहीं है जे अपनो रूप मेरोरूप जानत जे जीवं ते किछु किछु भेद पायो है ॥ ६ ॥

इति दशवां कहरा समाप्त ।

अथ ग्यारहवां कहरा ॥११॥

ननँदी गे तै विषम सोहागिनि तैं निदले संसारागे ।
आवत देखि एक सँग सूती तैं अरु खसम हमारागे ॥ १ ॥
मोरे बापकि दोय मेहारिया मैं अरु मोर जेठानीगे ।
जब हम ऐलि रसिकके जगमें तबहिं बात जग जानीगे २
माई मोर मुवल पिताके संगहि सर रचि मुवल संघातागे।
अपनो मुई और ले मुवली लोग कुटुम्ब सँग साथागे ॥३॥
जौ लौं सांस रहै घट भीतर तौ लग कुशल परैहैगे ।
कह कबीर जब श्वास निसरिगै मंदिर अनल जरैहैगे ॥ ४ ॥

कबीर जी जीवनपर दया कैकै ज्ञान शक्तिते कहे हैं कि, मगहमें मिथिला देशमें परस्पर स्त्री लोग बतातीहैं आदर कैकै तब गे संबोधन देतीं हैं सो या पदमें गे संबोधनहै अथवा गे बिगरे जीवको कहै हैं, हे गये जीवसों कबीरजी जीवजो चित् शक्ति साहबकी स्त्री सो ज्ञानशक्ति जो साहबकी बहिनी तासों कहै हैं ननँदी याते कहै हैं कि प्रथम साहबको ज्ञान प्रगट होयहै पीछे साहब प्रगट होयहै सो साहबकी बहिनी भई सो चित् शक्ति जीव कहै हैं कि तैं हमते सब जीवहै तिन पर तैं बिषम ह्वै गई औ पतिकी सोहागिनि ह्वैगई कैसीहै तैं कि निदले संसारा कहे तैं तो संसारको

निदरेंनहै हम पर विषम ह्वै गईहै काहूको ज्ञानकरि साहबको मिलाय दियो काहूको ज्ञानहरि संसारी करिदियो। गेजो कहै हैं सो साहबको पतिमानि वाको ननँदिमानि गारिदै कहै है कीन्ही तैं कहा कि समष्टिते व्यष्टि करैवाली ऐसी मायाको आवत देखिकैं हमार खसमजो साहबहै तिनके सङ्ग सूती जाइ तैं अपने भाईकों पति बनाये तैं अर्थात् साहबको ज्ञान काहू जीवके न रहिगयो साहबको ज्ञान साहिबै को रहिगयो ॥ १ ॥ सो जौने धोखा ब्रह्मको मानि हम संसारी भयेहैं सो जो हमारो बापहै धोखाब्रह्म ताके दोय मेहरियाहैं जीव चित् शक्ति कहे हैं कि एक मैं औ एक मोर जेठानी जौन साहब अज्ञानमूल प्रकृति धोखा ब्रह्मते जेठ समष्टिक रहीहै सो तब कारण रूपा है अब कार्य रूपा भई अर्थात् चित्शक्ति जीव कहै है कि वही मायामें परिकै अहं ब्रह्मास्मि हम सब मानत भये जो कहो तुम या बात कसकै जान्यो। तौ जब हम ऐलि रसिकके जगमें कहे जब हम रसिक जे साहब तिनके लोकमें आये तब हम या बात जान्यो कि अहं ब्रह्मास्मि हम मानेन रहे औ संसारमें परिबेही कियो साहबको ज्ञान हमारे नहीं भयो सो साहब या लोकके मालिक जेहैं तेईहैं जिनके जाने संसार छूटैहै ब्रह्मसाहब नहीं है ॥ २ ॥ सो पिता जो हमारो धोखा ब्रह्म जौनेके द्वारा हम व्यष्टिभये सो जब मिर्‍यो तब मोर माई जो मूलप्रकृति सो सर कहे चिंता वशीकार बैराग रचिकै पिताके साथ वाहू सती ह्वैगई अर्थात् जब धोखाब्रह्म मिर्‍यो तब रामा अज्ञानरूपी माया सोऊ छूटिगई साहबको ज्ञान ह्वैगयो सो अपना मरी और जेतने नाता मानि राख्यौ लोग कुटुम्ब तिनहूं को साथही लैजात भई अर्थात् अहंब्रह्म छोड़ि दियो जगत्के नाते छोड़िदियो एक साहबको जान लियो उनहीं नाता मानलियो सो हे ज्ञानशक्ति! जब तू या मोको जनायो तब मैं जान्यो ॥ ३ ॥ सो जबलौं श्वास है तबलौं कुशल है तू काहें बिषम ह्वै गई जबलौं श्वास ह तबलौं इनके आइकै साहबको प्राप्ति करायकै इनको दुःख छुड़ाइदेउ श्वास निसरि गयेपर यम धरि लैजायंगे अनेक योनिमें भटकरत बागौ गे शरीर जाइगो। सो हे ज्ञान शक्ति! तब तू न आय सकौगी तेहिते ई जीवन पर तुम आय सक्ती हौ साहबको ज्ञान ह्वै सकैहै ॥ ४ ॥

इति ग्यारवां कहरा समाप्त।

अथ बारहवां कहरा ॥ १२ ॥

या माया रघुनाथ कि बौरी खेलन चली अहेरा हो ।
चतुर चिकनिया चुनि चुनि मारै काहु न राखै नेराहो॥१॥
मौनी वीर दिगम्बर मारै ध्यान धरंते योगीहो ।
जंगल मेंके जंगम मारे माया किनहुं न भोगीहो ॥ २ ॥
वेद पढ़ंता पांड़े मारे पूजा करते स्वामीहो ।
अर्थ विचारे पंडित मारे बांध्यो सकल लगामीहो ॥ ३ ॥
शृंगीऋषि बन भीतर मारे शिर ब्रह्माके फोरीहो ।
नाथमछंदर चले पीठदै सिंहलहूमें बौरीहो ॥ ४ ॥
साकठके घर कर्त्ता धर्त्ता हरि भक्तनकी चेरीहो ।
कहै कबीर सुनोहो संतो ज्यों आवै त्यों फेरी हो ॥ ५ ॥

ज्ञानशक्ति कबीर को जवाब दियो मैं कहा करौं मोको कोई जीवनके उदय होन नहीं देइहै माया सबको बांधि लियो है सो कबीरजी जीवनसों कहै हैं यह माया छुइ जान न पावै जबहीं आवै तबहीं यासों मुंह फेरिलेउ तबहीं बचौगे या सबको बांधि लियो है तुमहूंको बांधि लेइगी औ इहां रघुनाथकी बौरी जो माया कह्यो सो रघुहै जीव ताके नाथ जे श्री रामचन्द्र तिनकी या माया है सो जीवनको धरि धरिकै शिकार खेलै है सो जब अपने नाथको या जीव जानै जिनकी या मायाहै तब तब या मायाते छूटैगो अपने बल ते जीव न छूटि सकैगो अवथवा या माया रघुनाथकी बौरी है रघुनाथकी बौरी कहै रघुनाथको न जानिबो यहै याको स्वरूप है १ ॥ ५ ॥

इति बारहवां कहरा समाप्त

इति कहरा सम्पूर्ण ।

अथ बसंत।

पहिला बसंत ॥ १ ॥

जहँ बारहि मास बसंत होय।परमारथ बूझै बिरल कोय॥१॥
जहँ बर्षै अग्नि अखंड धार।बन हरियर भो अट्ठार भार २॥
पनिया अन्दर तेहि धरे न कोय।वह पवन गहे कश्मल न धोय३
बिनुतरुवरजहँ फूलो अकास।शिव औविरंचि तहँ लेहिंवास४
सनकादिक भूले भवँर भोय। तहँ लख चौरासी जीव जोय५
तोहिं जो सतगुरु सत सो लखाव।तुम तासु न छांड़हु चरणभाव
वहअमरलोकफललगे चाय।यह हक कबीर बूझै सो खाय७

जहँ बारहि मास बसंत होय। परमारथ बूझै बिरल कोय॥१॥
जहँ बर्ष अग्नि अखंड धार। बनहरियर भो अट्ठार भार २

जाके कहे जौने साहबके लोकमें बारहौ मास बसंत बनो रहै है सो या परमार्थ कोई बिरला बूझै है। सो वा रूपकातिशयोक्ति अलंकार करिकहै हैं॥ १॥ औ बसंत ऋतुमें सूर्यते अग्नि बर्षै है अखंडधार बन जो है अट्ठारह भार बनस्पती सो हरियर होतजाइ हैं औ साहबके लोकमें कोटिन सूर्यको प्रकाशहै परंतु सबको ताप हारि लेनवारो है वहांके सब बन संतानक आदिक हरियर रहै हैं ॥ २ ॥

पनिया अंदर तेहि धरे न कोय।वह पवन गहेकश्मल न धोय
बिनु तरुवर जहँ फूलोअकास॥शिव औ विरंचितहँ लोहिंबास

औ बसंत ऋतुमें वृक्षनके अंदरनमें कोई पानी नहीं धरै है चन्द्र जो है सो अमृतको श्रवै है ताहीको गहे पवन वृक्षनके कश्मलन को धोयडारै है। औसाहबको लोक कैसो है कि, पनिया अंदर कहे वा रसरूपहै ताको कोई नहीं जानैहै। वही रसरूप लोकको स्मरण पवनहै ताके गहे कहे कियेते कश्मल जे पाप हैं ते धोय जात हैं। अथवा कामादि जे कश्मलहैं ते धोय जात हैं ॥ ३ ॥ औ बसंत ऋतुमें जहां तरुवर नहीं हैं ऐसो जो आकाश सोऊ पुहुपन के परागन करिकै फूलो देखो परै है। कैसो है आकाश जहां शिव बिरंचि बास लेहि हैं अर्थात् बासकीन्हे हैं सुगंधित ह्वैरह्यो है। औ साहबको लोककैसाहै कि जेहिका प्रकाश चैतन्याकाश, बिना तरुवरै जगत्रूप फूलफूलैहै शिव बिरंचिआदिक बास लेहिहैं ॥ ४ ॥

सनकादिक भूले भवँर भोय।तहँ लख चौरासी जीव जोय५॥

बसंत ऋतुमें चौरासी लाख योनि जीवनकी कौन गनती। सनकादिक जे मुनि हैं तेऊ पुष्पमकरंद में भोयकै भवँरकी नाइ भूलि जाहिहैं। औ साहबको लोकप्रकाश ब्रह्म कैसाहै कि, सनक सनन्दन सनत्कुमार जाके भवँर में भोयकै कहे परिकै भूलै हैं चौरासीलाख योनि जीवनकी कौनगिनती है ॥ ५ ॥

तोहिंजोसतगुरुसतकैलखाव।तुमतासुनछांड़हुचरणभाव६॥
वहअमरलोकफललगेचाय।यहकहकबीरबूझै सोखाय॥७॥

सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि, ऐसो जो साहब को लोक जहां बरहौ मास बसंत बनो रहै है तौन जो सतगुरु कहे साहबके बतायदेनवारे तोको सत्यकैलखायो होय तो तुम ताके चरणको भाव न छांड़ौ। भाव यहहै कि, वा लोक के मालिक जो साहब हैं तिनहूंको बताय देइँगे। वह अमरलोक कैसा है कि, जहां चारिउ फल अर्थ धर्म काम मोक्ष आनंदकै फल लगेहैं। सो हे जीवो ! या बात जो कोई बूझिहे सोई खायहै। साहब के धाम में बारहा मास बसंतरहै है। तामें प्रमाण कबीरजीकी साखी ज्ञानसागरकी ॥ "सदा बसंत होत

तेहि ठाऊं । संशय रहित अमरपुर गाऊं ॥ जहँवां रोग शोक नहिं होई । सदा अनन्द करै सब कोई ॥ चन्द्र सूर्य दिवस नहिं राती । बरण भेद नहिं जाति अजाती ॥ तहँवां जरा मरण नहिं होई । क्रीड़ा बिनोद करै सब कोई ॥ पुहुप विमान सदा उजियारा । अमृत भोजन करै अहारा ॥ काया सुन्दरको परवाना । उदित भये जिमि षोड़श भाना ॥ येता एक हंस उजियारा । शोभित चिकुर उदय जनु तारा ॥ बिमल बास जहँवां पौढ़ाही । योजन चार घ्रान जो जाही ॥ श्वेत मनोहर छत्र शिर छाजा । बूझि न परै रंक अरु राजा ॥ नहिं तहँ नरक स्वर्गकी खानी । अमृत बचन बोलै भल बानी ॥ अस सुख हमरे घरन महँ, कहैं कबीर बुझाय । सत्य शब्दको जानै, सो अस्थिर बैठै आय" ॥ ६ ॥ ७ ॥

इति पहिला बसन्त समाप्त ।

अथ दूसरा बसंत ॥ २ ॥

रसनापढ़िभूलेश्रीबसंत । पुनिजाइपरिहौतुमयमकेअंत॥१॥
जोमेरुदण्डपरडंकदीन्ह । सोअष्टकमलपरजारिलीन्ह॥२॥
तबब्रह्मअग्निकीन्होप्रकास । तहँअद्धऊर्ध्वबहतीबतास॥३॥
तहँनवनारीपरिमलसोगावँ।मिलिसखीपांचतहँदेखनजावँ४
जहँअनहदबाजारहलपूर । तहँ पुरुष बहत्तरि खेलैं धूर ॥५॥
तैंमायादेखिकसरहासिभूलि । जसबनस्पतीबनरहलफूलि६
यहकहकबीरयेहरिकेदास । फगुवामांगैबैकुंठवास ॥ ७ ॥

रसना पढ़ि भूल श्रीबंसत।पुनि जाइ परिहौ तुम यमके अंत १

श्रीबसंत कहे ऐश्वर्य्यरूप जो बसंत ताको रसना में पढ़िकै मन बचनके परे जो साहबके लोकको बसंत ताको तुम भूलि गयो । रसनामें पढ़ि जो कह्यो

तामें धुनियहहै कि, औरै देवतन की उपासनामें बड़ो ऐश्वर्य्य प्राप्तिहोइहै यह पोथिनमें पढ़ि पढ़ि भुलाइगयो । वाहूको जीभैभरेते कह्यो कछुप्राप्ति नहीं भै सो तुम फेरि यमके अंत कहे संसारमें परिहौ । औ जो लेहू पाठहोय तौ रसनामें श्रीबसंतको पढ़िलेहुनहीं तो पुनि यमके अंत कहे फंदमें परिहौ ॥ १ ॥

जो मेरु दंड पर डंक दीन्ह । सो अष्ट कमल परजारि लीन्ह २

औ जो या गुमान करो कि हम योगवारे हैं हम यमके अंतमें न परैंगे । सो जो तुम मेरुदंडमें प्राणखैंचिकै मेरुदंडपर डंका दीन्ह्यो, औ अष्टजो हैं आठों कमल मूलाधार, विशुद्ध, मणिपूरक, स्वाधिष्ठान, अनहद, आज्ञाचक्र, सहस्रारचक्र, अठयें सुरतिकमल जहां परमपुरुषहै तामें पहुंचिकै जारि दीन्ह अर्थात योगौ की खबारि भूलिगई ॥ २ ॥

तहँ ब्रह्म अग्नि कीन्हो प्रकास । तहँ अद्धो ऊर्ध्व बहती बतास ३
तहँनवनारीपरिमलसोगावँ । मिलिसखीपांचतहँदेखनजावँ ४

सो वा ज्योतिमें लीनभयो जीवतहैं ब्रह्मअग्नि प्रकाश करत भई औ बतासजो अधोऊर्ध्व श्वास सो वहै बहतभै अर्थात् बहिरे न आवत भै श्वास वहैं रहत भै याभांति जीव तखतमें बैठि मालिक भयो गांउकारा बसंतदेखैहै ॥ ३ ॥ सोयहां परिमल कहे गंधका गांव है शरीरमें पृथ्वीतत्त्व अधिकहै सो गंधका गांव शरीरहै तौने में नौ नारी हैं कहे नौ राहहैं तहां पांचो जे ज्ञानेन्द्री हैं तेई सखी देखन जायहैं अर्थात् वहैं लीन ह्वै गई हैं ॥ ४ ॥

तहँ अनहद बाजा रहल पूर । तहँ पुरुष बहत्तरि खेलैं धूर ॥ ५ ॥
तैं माया देखिकस रहसिभूलि । जसबनस्पतीबनरहलफूलि ६

बसंतमें बाजा बजै है सो अनहद बाजा जहां पूरि रह्यो है तहां बहत्तरि पुरुष जे बहत्तरिकोठाहैं ते धूरि खेलैहैं अर्थात् चैतन्यता न रहिगै ॥ ५ ॥ सो बसंतमें बनस्पती फूलै हैं ऐसे या माया फूलि रही है । तामें समाधि उतरे फिरि काहे भूले । अथवा जैसे बनस्पतीफूलैहैं ऐसे गैबगुफामें सुधापीकै नागिनी फूली है तामेंतैं काहे भूलिरहे है । कहा वा माया के बहिरे है समाधि नागिनिहीके आधार तो समाधिउहै ॥ ६ ॥

यह कह कबीर ये हरिके दास। फगुवा मागै वैकुण्ठ वास७॥

सो या हठयोग करिकै जानै कि मैं मुक्त होउँगो, तौ या समाधिमें मायाहीतें नहीं छूट्यो मुक्त कहां होइगो। तातें श्रीकबीरजी कहै हैं कि, हे जीवात्मा! हरिके दास तैं बैकुंठबासको फगुवामांगै अर्थात् फगुहार फगुवा खेलाइकै फगुवामांगै हैं सोतैंहठयोगकियो ताको फल फगुवा राजयोग मांगु जाते वैकुंठ बासहोई॥ ७॥

इति दूसरा बसंत समाप्त।

अथ तीसरा बसंत ॥ ३ ॥

मैंआयउँमेहतरमिलनतोहिं।अबऋतुबसन्तपहिराउ मोहिं१
है लंबी पुरिया पाइ झीन। तेहि सूत पुराना खुंटा तीन ॥२॥
शर लागे सै तीनि साठि। तहँ कस न वहत्तरि लागगांठि॥३
खुर खुर खुर खुर चलै नारि।वहबैठिजोलाहिनिपलथिमारि४
सो करिगहमें दुइ चलहिं गोड़।ऊपर नचनी नचि करैकोड़५
हैं पांच पचीसौ दशहु द्वार। सखी पांच तहँ रचीधमार॥६॥
वें रंग विरंगी पहिरैं चीर। धरि हरिके चरण गावै कबीर॥७॥

मैं आयउं मेहतर मिलन तोहिं।अबऋतुबसंतपहिराउमोहिं १
हैं लंबी पुरिया पाइ झीन। तेहि सूत पुराना खुंटा तीन॥२॥

जीव कहैहैं मेह कही बड़ेको औ जो बड़ाते बड़ा होइ ताको मेहतर कहै हैं फ़ारसीमें। सो ईश्वरनते ब्रह्मते जो बड़े श्रीरामचंद्रहैं तिनसों जीव कहै है कि, मैं तुमको मिलन आयोहौं। सो जौने लोकमें सदा बसंत रहै है सो मोको पहिराओ अर्थात् मेरो प्रवेश कराइ दीजे। ताना रूप जो मेरे शरीरको बसंत तातें छुड़ाइये॥ १॥ सो लम्बी पुरिया कौन कहावै जो ताना तनै है पूरै है

सो मैं बासननि करिकै बहुत लम्बा ह्वै रह्योंहौं । कहे बासननि करिकै मैं संसारमें फैलिरह्योहौं । औ पाई वा कहावैहै जो ताना साफ करैहै सो या आत्माको साफ करिबो बहुत झीनहै कहे जब कोई बिरलै संत मिलैं तब आत्मा शुद्ध होइ काहेते कि, यह सूतजीव पुरान कहे अनादि कालते तीन खूंटा जो हैं सत १ रज २ तम ३ तामें बँधो है ॥ २ ॥

शर लागै सै तीनि साठि। तहँ कसनि बहत्तारि लाग गांठि३
खुर खुर खुर खुरचलै नारि।वह बैठि जोलाहिनि पलथि मारि४

पाई में शर लागैहै सो शरीरमें तीनिसै साठि हाड़हैं तेई शरहैं बहत्तारि जे कोठाहैं तिनमें बहत्तारि हजार नसनकी गांठि एक एककोठनमें लागहैं तेई कसनी हैं ॥ ३ ॥ औ बिनतमें जौन बीच ह्वै चलावै है सो नारि कहावै है सो या शरीरमें नाड़ी जो है सो खुर खुर खुर खुर चलैहै । औ जोलाहिनि जो है बुद्धि सो पलथी मारिकै बैठी है अर्थात् देहही में निश्चय करिकै बैठी है ॥ ४ ॥

सो करिगहमें दुइ चलहि गोड़।ऊपर नचनीनाचि करै कोड़५

सो यह तरहको जो शरीर है सो कारिगह है जहां जोलाहिनि बैठै है धमारि महलमें होयहै सोशरीरै महलहै सो कारिगहमें जोलाहिनि दोऊ अंगूठा चलावै है ऊपर तानामें नचनी कोड़ करै है कहे नाचै है । इहां शरीररूपी करिगहमें बुद्धिरूपी जोलाहिनि बैठिकै कहूं शुभकर्म में निश्चय करै है कहूं अशुभ कर्ममें निश्चय करै है यही दोऊ अंगूठाको लचाइबोहै । औ वृत्तिबुद्धिकी कहूंशुभमें कहूं अशुभमें जायहै यही नचनी है सो नाचै है औ धमारि पक्षमें नाचत में नचनी को गोड़ चलैहै ऊपर कोड़ करै है कहे भावबतावै है ॥ ५ ॥

हैं पांच पचीसौ दशहु द्वार। सखी पांच तहँ रची धमार ॥६॥

औ कषाय पांच जे हैं १ अविद्या २ आस्मिता ३ राग ४ द्वेष ५ अभिनिवेश । औ पचीसौ जे तत्त्व हैं १ जीव २ माया ३ महत्तत्त्व ४ अहंकार ५ शब्द ६ रूप ७ रस ८ गन्ध ९ स्पर्श दशौइंद्रिय एकमन २० पंच भूत ई २५ औ ताहीमें दशौ द्वार ऐसे शरीर में पांच सखी जे हैं पंचप्राण ते धमारि

रचतभई। औ ताना पक्षमें पांच पचीस तत्त्वकेकहे सबकोरीकै साजु आइगैं औ धरिकहे सबअपने अपने धमारमें लगिगे कैड़ावारे माड़ीवारे पुरियावारे करिगहवारे तानासाफकरैवारे औ धमारिपक्षमें पांच सखी धमारि रचैहैं दुइ एकबार कियो एकदेखैया भो ॥ ६ ॥

वे रंग बिरंगी पहिरैं चीर। धरि हरिके चरण गावै कबीर॥७॥

पांचो जे सखीहैं पांच तत्त्वनका रंग बिरंग चीर पहिरैं। स्वरोदय में लिखे है श्वास तत्त्वनके रंग जुदजुदे देखे परे हैं औ कोरीके घरके अनेक रंगकेंचीर पहिरै हैं। औ धमारि पक्षमें केशरि कस्तूरी करिकै गुलाल भोड़र करिकै चीर रंग बेरंग ह्वैगयेहैं ते पहिरें हैं। सो यहि तरहकी धमारि या संसारमें है ताते हरिको चरण धरिकै कबीर गावै है कहै है। या धमारिको प्रथम या कहि आये हैं जौने लोकमें सदा बसंत है तहांप्रवेश करावो। औ इहां धमारि कहैं हैं तात्पर्य यह कि, या शरीरको ताना बाना जनन मरण में परिरह्यो है या धमारि तुमको देखायो जो रीझे होहु तो मैं फगुवा यही मांगौहौं कि जहां सदा बसंत है वा लोक में प्रवेश करावो औ न रीझ्यो होहु तौ तुम हरिहौ या ताना बाना धमारि हरिलेउ। या कहो कि, "ऐसी धमारि तैं न रचु" कबीर कहै हैं कि हे जीव हरिके चरणधारि ऐसी बिनयकरु ॥ ७ ॥

इति तीसराबसंत समाप्त।

अथ चौथा बसन्त ॥ ४ ॥

बुढ़ियाहँसिकहमैंनितहिबारि। मोहिंऐसितरुणिकहुकौननारि १
ये दांत गये मोर पान खात। औ केश गयल मोर गँगनहात २
औ नयनगयल मोरकजल देत। अरुवैस गयलपरपुरुषलेत ३
औ जान पुरुष वा मोर अहार। मैं अन जानेको कर शृँगार ४
कह कबीर बुढ़िया आनँद गाय। पूत भतारहि बैठी खाय ५॥

बुढ़ियाहँसिकहमैंनितहिबारि।मोहिंएसितरुणिकहुकौनिनारि १

बुढ़िया जो मायाहै सो हँसिकै कहैहै कि मैं नित्यही बारीहौं माया अनादि है याते बुढ़िहाकह्यो है तामें प्रमाण ॥ "अजामेकांलोहित" इत्यादि । औ हँसिकै कह्यो याते या आयो कि साधनकरिकै छोटे छोटे या कहै हैं कि,हमको माया जीर्ण ह्वैगई है अर्थात् अब छूटि जाइहै मैं नित्यही बारीहौं सबके कार्य रूपते उत्पन्न होत रहौं हौं । औ मोहिं अस तरुणि कौनि नारि है जो सब जीवनको संग करौंहौं औ बुढ़ाउँ कबौं नहीं हौं ॥ १ ॥

दांत गये मोर पान खात।औ केश गयल मोर गँग नहात॥२॥

औ दांत गये पान खात जो कह्यो सो पान जो है वेद ताको तात्पर्य जो जानै है यही खाब है । सो वेद तात्पर्यार्थ जानेते कामादिकजे मेरे दांतहैं जिनते जीव सज्जननको ज्ञानखाय लेइहै ते दांत मेरे जातरहे काम क्रोधादिक मायाके दांतहैं तामें प्रमाण ॥ रत्नयोग ग्रंथ कबीरजीको ॥ "काम क्रोध लोभ मोह माया । इन दांतनसों सब जग खाया " ॥ औ साहबको जो कथा चरित्र रूप गंगा तामें जो नहायहै अर्थात् सुनै है सो कुमति रूप केश मेरे जातरहे हैं॥ २॥

औनयनगयलमोरकजलदेत । अरुबैसगयलपरपुरुषलेत ३

साहबको ज्ञानरूप कज्जल जो कोई दियो तो मेरे नयन जो निरंजनहैं सो जातरहे हैं । अर्थात् चैतन्यके योग करिकै माया देखै है औ । नयनको निरंजन कहै हैं । तामेंप्रमाण कबीरजीको ॥ "नयन निरंजन जानि भरममें मतपरै" ॥ औ बैस जो मोर है सो परम पुरुष जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनको लेत अपने बशकै बैस मोर जात रहै है अर्थात चारिउ शरीर मोर नहीं रहतेहै ॥ ३ ॥

औ जान पुरुषवा मोर अहार।मैं अन जानेको कर शृँगार ४

औ जान पुरुषवा कहे जो या कहैहैं कि, हम ब्रह्मको जानिलियो, हमहीं ब्रह्म हैं । तेतो हमार अहारहीहैं आपने आत्मैको भूलिगये औ अजान जे हैं तिनको शृंगारै किये हैं नाना विषदैकै लोभाय लेउहौं । अर्थात् जानौ अज्ञानको

विद्या अविद्या रूपीते बशकरि लियो है धुनि याहै, जिनको साहब आपनो हंसरूप दियो है तेई बचे हैं या उपसंहार कियो ॥ ४ ॥

कह कबीर बुढ़िया अनँद गाय।पूत भतारहि बैठि खाय॥५॥

सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि बुढ़िया जो माया है सो जैसो या पद कहि आये तैसो आनंदसों गावैहै । वेद शास्त्रादिकनमें बाणीरूपते सबजीव सुनैहैं परन्तु या नहीं जानैहैं कि, जीव औ ब्रह्म माया के भितरै है । पूत जो जीव है औ भतार जो ब्रह्महै ताको बैठिखाय है अर्थात जबजीव संसारी भयो तब संसारमें डारिकै खायो जब ब्रह्म में लीनभयो औ सृष्टि समय आयो तब वा ब्रह्मज्ञानहू नहीं रहि जाइहै ब्रह्महूको खायो ॥ ५ ॥

इति चौथा बसंत समाप्त ।

अथ पांचवां बसंत ॥ ५ ॥

तुम बूझहु पण्डित कौन नारि ।
कोइ नाहिं बिआहल रहल कुमारि ॥ १ ॥
यहि सब देवन मिलि हरिहि दीन्ह ।
तेहि चारिहु युग हरि संग लीन्ह ॥ २ ॥
यह प्रथमहि पद्मिनि रूप आय ।
है सांपिनि सब जग खेदि खाय ॥ ३ ॥
या बर युवती वे बारनाह।अति तेज तिया है रैनि ताह ॥ ४ ॥
कहकबीरसबजगपियारि।यहअपनेबलकवैरहलमारि ॥५॥

तुमबूझहुपंडितकौननारि।कोइनाहिंविआहलरहलकुमारि१
यहि सबदेवनमिलि हरिहिदीन्ह।तेहिचारिहुयुगहरिसंगलीन्ह२

श्रीकबीरजी कहैहैं कि, हे पण्डित ! तुम बूझो तो या शङ्खिनी हस्तिनी चित्रिणी पद्मिनी चारि प्रकारकी नारिनमें कौन नारिहै या माया है ? अर्थात एकौकें

लक्षण नहीं मिलत एकौके लक्षण जो मिलते तौ कुमारि न रहती बिआहि जाती याहीते अब तक कुमारि है ॥ १ ॥ जब समुद्र मथिगयो लक्ष्मीकढ़ी सो सबदेवमिलि हरिको देतभये सो हरि चारिहुयुग सङ्गही राखतभये ॥ २ ॥

यह प्रथमहि पद्मिनिरूपआयहै सांपिनिसब जग खेदि खाय याबर युवती बे बार नाह। अति तेज तिया है रैनि ताह ॥४॥

प्रथमतो ब्रह्मजे हैं विष्णु तिनकी नाभिमें कमलिनीहै सो लक्ष्मी रूपहै सो आय अब धन रूप सांपिनि ह्वै संसारको खेदिखाय है ॥ ३ ॥ या माया बरयुवती है कहे श्रेष्ठ है बार जे लरिका ब्रह्मा विष्णु महेश तेई याके नाह हैं औ ताह कहे तौन जो संसार रूपी रैनि है तौने में अति तेजहै ॥ ४ ॥

कह कबीर सब जगपियारि।यह अपने बलकवै रहल मारि ५

सो श्रीकबीरजी कहैं हैं कि या माया सबजगत्को पियारिहै आपन बालक जे जीव तिनको मारि रही है अर्थात् सब जीवनको बांधे है जनन मरण करावै है ॥ ५ ॥

इति पांचवां बसंत समाप्त।

अथ छठवां बसंत ॥ ६ ॥

माई मोर मनुष है अति सुजान।धंधा कुटि कुटि करै बिहान १
बड़े भोर उठि अँगन बहार। बड़ी खांच लै गोबर डार ॥२॥
बासी भात मनुष ल खाय। बड़ घैला लै पानी जाय ॥३॥
अपने सैंयां बांधी पाट। लैरे बेंचौ हाटै हाट ॥ ४ ॥
कह कबीर ये हरिकेकाज। जोइयाके ढिंगर कौन है लाज ५

जीव शक्ति कहै है कि, हे माई माया ! मोर मनुष जो मन सो बड़ा सुजान है। धंधा जो बाल पौगंड किशोर ताहीको कूटिकूटि कहै कैकै बिहान-कहे देहांत कै देइहै। सुजान याते कह्यो कि, मोको नहीं जान देइहै। आपही

जानै है बड़े भोर कहे जबदूसर भयो तब आंगन बहार कहे गर्भबासमें ज्ञान-दियो अंतःकरण साफकियो यहीबहारबो है औ बड़ीखांच जो प्रसूत वायु तौनें-ते गर्भरूप गोबरटारचो अर्थात् बाहर निकारचो। औ बासीभात जो पूर्व कर्म ताको दुःख सुख आपही भोगै है। औ घैलाजो बुद्धिहै ताको लैकै गुरुवन कें इहां नाना बानी रूप पानी ताको लेनजाइ है अर्थात् बुद्धिते निश्चयकरै है। ऐसोजो मोर सैंयां है ताको पाट जो ज्ञान तामें बांधे पाऊं तौ हाट हाट में बेंचौं अर्थात् साधुनको संगकरिकै अपनो औ याको सम्बन्ध छोड़ायदेउँ। सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि, जोइया जो जीव तौनेको ढिंगरा जोमन सो हरि जे श्रीरामचन्द्र तिनको काज में जो नहीं लागै तौ याको कौन लाज है। धुनि या है जो साहबमें लगै तौ यहू शुद्ध होइजाय ॥ १-६ ॥

इति छठवां बसंत समाप्त।

अथ सातवां बसंत ॥ ७ ॥

घरहीमें बाबुल बढ़ी रारि। अँग उठि उठि लागै चपल नारि १
वह बडी एक जेहि पांच हाथ। तेहि पचहुनके पच्चीस साथ२
पच्चीस बतावैं और और। वे और बतावै कई ठौर ॥ ३ ॥
सो अंतर मध्ये अंत लेइ। झकझोलि झुलावै जीव देह ॥ ४ ॥
सब आपन आपन चहैं भोग। कहु कैसे परिहै कुशल योग५
विवेक विचार न करै कोइ। सब खलक तमाशा देख सोइ ६
मुख फारिहँसैं सब राव रंक। तेहि धरे न पैहौ एक अंक ॥७॥
नियरे बतावैं खोजैं दूरि। वह चहुँ दिशि बागुरि रहल पूरि ८
है लक्ष अहेरी एक जीउ। ताते पुकारै पीउ पीउ ॥ ९ ॥
अबकी वारै जो होय चुकाव। ताकी कबीर कहपूरिदाव १०

घरहीमें बाबुल बढ़ी रारि । अंग उठि उठि लागै चपलनारि १
वह बड़ी एक जेहि पांच हाथ।तेहि पचहुनके पच्चीससाथ २॥

हे बाबू ! जीव तुम्हारे घटहीमें कहे शरीरहीमें रारि बढ़ीहै काहेते कि, हमेशा उठि उठि चपल नारि जो माया सो तेरे पीछू लगैहै॥ १ ॥तामें वह एक सबते बड़ी काया जाके पांच हाथकहे पांच तत्त्वहैं पृथ्वी, अप, तेज, वायु, आकाश, पुनि एक एक तत्त्वनके साथ पांच पांच प्रकृतिहैं । सो असकैकै पच्चीस प्रकृतिहैं कहैहैं मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार चौथ, पांचों अन्तःकरण जामें चारचोरहैहैं । ये सब निराकारहैं । ऐसे आकाशके साथहैं । औप्राण अपान समान व्यान उदान ये कर्म करावैहैं एते वायुके साथहैं । औ आंखी कान नाक जिह्वा त्वचा येऊ बिषयको प्रकाश करै हैं एते अग्निके साथ हैं । औ शब्द स्पर्श रूप रस गंध सो येऊ पांचौ तृप्ति कर्त्ता हैं । एते जल पंचक हैं जलकेसाथहैं । औ हाथ पांव मुख गुदा लिंग येऊ आधारभूत हैं एते पृथ्वीकेसाथहैं । यही रीति पचहुन तत्त्वनके साथ पचीसौ प्रकृति हैं ॥ २ ॥

पच्चीस बतावैं और और । वे और बतावैं कई ठौर ॥ ३ ॥

सो ये पच्चीसौ प्रकृति जे हैं ते और और अपने विषयको बतावे हैं । सो कहैहैं **अंतःकरणको** बिषय निर्विकल्प । **मन** को विषय संकल्प विकल्प । **चित्तको** विषय बासना ! **बुद्धि** को विषय निश्चय । अहंकारको बिषय करतूति । **प्राणको** विबय चलब । **अपानको** विषय छोड़ब । **समानको** विषय बैठब । **उदानको** विषय उठब । **व्यानको** विषय पौढ़ब । **कानको** विषय सुनब । **आंखीको** विषय रूप । **नाकको** विषय सूंघबो । **जीभको** विषय बोलिबो। **त्वचा** को विषय स्पर्श। **शब्दको** विषय राग रस । **स्पर्श** को विषय कोमलत्व कठिनत्व शीतलत्व उष्णत्व । **रूपको**विषय सुंदरत्व । **रसको**विषय स्वाद । **गंधको** विषय सुबास । इनको वे पचीसौ प्रकृतिबतावैं हैं ईसब कई ठौर और बतावै हैं कहे चौरासीलक्षयोनि जीवको बतावैहैं ॥ ३ ॥

सो अंतर मध्ये अन्त लेइ।झक झोलि झुलाउब जीव देइ ४॥

सब आपन आपन चहैं भोग । कह कैसे परिहै कुशलयोग ५
बीबेक विचार न करै कोइ ।सब खलक तमाशा लखै सोइ६

सोये विषय कैसे हैं कि अंतरमें अंत लेइहैं कहे गड़ि जाते हैं । झकझेलि कैकहे जोरवारी झुलाउब जो आवागमनहै सोजीवको देइहै ॥ ४ ॥ सो ये सब आपन आपन भोगचाह्यो तबजीवको कुशल को योग कैसे परै अर्थात् कैसे कल्याण पावै ॥ ५ ॥ सो ये बंधनको विवेककहे विचार कोई नहीं करै है कि क्या सांचहै क्या झूंठहै सब खलक कहे सब संसारके लोग प्राणी विषयनको तमाशा देखैहैं औ वहीमें अरुझि रहैहैं ॥ ६ ॥

मुख फारि हँसैं सब राव रंक । तेहि धरन न पैहौ एक अंक ७
नियरे बतावैं खोजैं दूरि । वह चहुँ दिशि बागुरि रहलपूरि ८
है लक्ष अहेरी एक जीउ । ताते पुकारै पीउ पीउ ॥ ९ ॥

सो वही विषयमें परिकै मुख फारिकै राव रंक सब हँसैं हैं या दुःखदायीहैं विषय या अंक कोऊ नहीं धरन पावै है तेहिको ॥ ७ ॥ सो वेद शास्त्र पुराण साहबको तौ नियरेही बतावैहैं औ दूरिखोजै हैं काहेते कि, मायारूप बागुरि सर्वत्र पूरिरहीहै ॥ ८ ॥ सो येतो सब शिकारी हैं औ लक्ष कहे निशाना एकजीवही है ताते हे जीव ! तैं पीउ पीउ पुकारै तबहीं तेरो बचाउहै ॥ ९ ॥

अबकी बारै जो होय चुकाव । ताकी कबीर कह पूरिदाव १०

सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि, अबकी बार जो मानुष शरीरमें चुकाव होयगो औ साहबको न जानैगो तौ ताकी पूरिदावहै काहेते कि अबकीबारके चूकेफेरि ठिकाना न लगैगो चौरासीलाख योनिन में भटकैगो फेरि जो मानुष शरीर पावैगो तब पुनि नाना मतनमें लगिकै चौरासी लाख योनिमें भटकैगो उद्धार न होइगो । ताते अबकी बार जो समुझै औ साहबको जानै तौ तेरो पूरो दांव परै तामें प्रमाण कबीरजीकीसाखी ॥ "लख चौरासी भटकि कै, पौमें अटको आय ॥ अबकी पौ जो ना परै, तौ फिरि चौरासी जाय" ॥ १० ॥

इति सातवां बसन्त समाप्त ।

अथ आठवां बसन्त ॥ ८ ॥

कर पल्लवके वलखेलैनारि।पण्डित जो होयसोलेइविचारि१
कपरा नहिं पहिरै रह उघारि।निरजीवै सो धनअतिपियारि२
उलटी पलटी बाजै सो तार।काहुहि मारै काहुहि उवार॥३॥
कह कबीर दासन के दास।काहुहि सुख दे काहुहि उदास४॥

कर पल्लवके वलखेलैनारि।पण्डित जो होयसोलेइबिचारि १

सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि, नारि जो माया सो पल्लव जो राम नाम सो करमें लैकै वाहीके बल खेलैहै । जब प्रथम यह जगत् की उत्पत्ति भई तब राम नाम लैकै बाणी निकसी है तामें प्रमाण ॥ " रामनामलैउचरीबाणी ॥ " ताही जगत मुख अर्थ में चारिउ वेद ईश्वर ब्रह्म सब संसार निकसेहैं तामें प्रमाणसायरको ॥ " रामनामके दोई अक्षर चारिउवेद कहानी " ॥ सो तौनेहीके बलते सबसंसार बांधि लियोहै । सो जो कोई पंडित होइ सो बिचारिकै लैलेइ । जगत्मुख साहब मुख यामें दोऊ अर्थ हैं सो साहब मुख अर्थ राममनाममें लेइ जगत्मुखअर्थ केवल माया खेलैहै ताको छोड़िदेइ ॥ १ ॥

कपरा नहिं पहिरै रह उघारि।निरजीवै सोधन अति पियारि२
उलटी पलटी बाजै सो तार । काहुहि मारै काहुहि उवार३॥

सो वा नारि माया कैसी है कि कपरा नहीं पहिरै उघारही रहै है अर्थात यह माया सबको मूंदेहै वाको मूंदनवारो कोई नहीं है । जो कहो वाको ब्रह्म मूंदे होइगो तौ निर्जीव जो ब्रह्म सो धन जो माया ताको अति पियारहै अर्थात् वाहूको सबलित कियेहै ॥ २ ॥ औ पुनि कैसीहै कि उलटी पलटी तार बाजैहै कहे काहूको अविद्यामें डारिकै नरकदेइहै औ काहूको विद्यारूपतें स्वर्ग सत्यलोकादि देइ है ॥ ३ ॥

कह कबीर दासनके दास।काहू सुख दै काहू उदास॥४॥

श्री कबीरजी कहै हैं कि, दासनके दास कहे ब्रह्मादिक जे माया के दास तिनहूंके दास जीव तुम्हारी माया कैसे छूटै वे ब्रह्मादिकै मायाते नहीं

छूटे । या माया कैसीहै काहूको तौ सुखदहै काहू कैति उदास है । कहे उनको स्पर्शनहीं करिसकैहै । अर्थात् जे साहब को जानैहैं तिनकी कैति उदासहै तिनहींके दास तुमहूं होउ तब उबार होइगो माया ब्रह्मजीवके परे श्रीरामचन्द्रही हैं तामें प्रमाण ॥ " राम एव परं ब्रह्म राम एव परंतपः । राम एव परंतत्त्वं श्रीरामो ब्रह्म तारकं " इतिश्रुतेः ॥ ४ ॥

इति आठवां बसन्त समाप्त ।

अथ नवां बसन्त ॥ ९ ॥

ऐसो दुर्लभ जात शरीर । रामनाम भजु लागै तीर ॥ १ ॥
गये वेणु[1] बलि गेहैं कंस । दुर्योधन गये बूड़े बंस ॥ २ ॥
पृत्थु गयै पृथ्वी के राव । विक्रम गये रहे नहिंकाव ॥ ३ ॥
छौ चकवे मंडलीके झार । अजहूं हो नर देखु विचार ॥४॥
हनुमत कश्यप जनकौ बार । ई सब रोंके यमके धांर[2] ॥५॥
गोपिचँद भल कीन्हों योग । रावण मारिगो करतै भोग॥६॥
जात देखु अस सबके जाम । कह कबीर भजु रामै नाम॥७॥

चौरासी लाख योनिनमें भटकत भटकत यह शरीर पायो दुर्लभ सो वृथाही जायहै सो राम नामको भजु सेवा करु जाते तीर लगै । छौ चकवे कहिये १ बेणु २ बलि ३ कंस ४ दुर्योधन ५ पृथु ६ विक्रम ये छवो चक्रवर्ती भूमिमंडल के, ते शरीर छोड़िकै जातभये।सो हे नर अजहूं बिचारिकै तू देखु औ हनुमत कश्यप अदिति जनक कहे ब्रह्मा, बार कहे सनकादिक ते ये अबलौं रामनाम कहि यमको धाररोकेहैं । अर्थात् जे उनके मतमें जाय रामनाम कहैहैं ते संसारते छूटिही जायहैं उनपै यमको बल नहीं चलैहै । औ गोपीचन्द योगीरहे रावण भोगीरह्यो पै रामनाम नहीं भजे ते दोऊ मरिगये सो श्री कबीरजी कहै हैं कि याही भांति

---

1 अन्य प्रतियों में वेणुके स्थानमें विष्ण लिखाहै ।

2 दूसरी प्रतियोंमें धारकी जगह द्वार लिखाहै ।

सबके जामा जे शरीर ते जात देखै हैं ताते रामनाम भजु । भजसे वायु धातुहै ताते तहूं रामनामकी सेवा करु तबही संसार समुद्रकै तीरलगैगो नहीं तो बहि जायगो । रामनामके जपैया नहीं मरै हैं तामें प्रमाण **कबीरजी को पद** ॥ "हम न मरैं मारि है संसारा । हमको मिला जियावनवारा ॥ अबनामरैंमोरम-नमाना । सोइ मुवा जिन राम न जाना । साकतमरै संतजन जीवै । भरिभरि रामरसायन पीवै ॥ हरि मरिहैं तौ हमहूं मरिं हैं । हरि न मरैं हम काहेको मरि हैं ॥ कह कबिर मन मनहिं मिलावा । अमर भये सुख सागर पावा" ॥ १-७ ॥

इति नवाँ बसंत समाप्त ।

अथ दशवां बसंत ॥ १० ॥

सबहीमदमातेकोईनजाग।सोसँगहिचोरघरमुसनलाग ॥१॥
योगीमदमातेयोगध्यान । पंडितमदमातेपढ़िपुरान ॥ २ ॥
तपसीमदमातेतपकेभेव । संन्यासीमातेकरिहमेव ॥ ३ ॥
मोलनामदमातेपढ़िमुसाफ।काजीमदमातेकैनिसाफ[1] ॥ ४ ॥
शुकदेवमतेऊधोअक्रूर । हनुमतमदमातेलियेलँगूर ॥ ५ ॥
संसारमत्योमायाकेधार । राजामदमातेकरिहँकार ॥ ६ ॥
शिवमातिरहेहरिचरणसेव । कलिमातेनामदेवजयदेव ॥७॥
वहसत्यसत्यकहसुम्रृति[2]वेद । जसरावणमारेघरकेभेद ॥ ८ ॥
यहचंचलमनकेअधमकाम।सोकहकवीरभजुरामनाम ॥९॥

यहि पदको समेटिके अर्थ करै है यहसंसारमें सबकोई मदमे माततभयो, जागतकोई न भयो । सो जिनको जिनको यह पदमें गनायआये तेते प्रथम जैसे रावण घरके भेदते मारे गयो, तैसे मनके भेदते मारे गये । परन्तु इनसबमें जे रामनामको जप्यो तेई छूटै हैं । हनुमदादि शुकादि जे कहिआये । यह मन-के तो अधम काम हैं जे रामनामको नहीं जाने ते संसारहीमें परे । ताते तैं हूं रामनामको भजु तबहीं तेरो उवार होइगो, औरीभांति संसारहींमें परेरहैगो । औ

---

१ इनसाफ को पूर्वी भाषामें निसाफ बोलते हैं इसाका अर्थ है न्याय । २ स्मृति ।

संसार सागरको पार करनवारो एक राम नामही है तामें प्रमाण पद ॥ "माधव दुख दारुण सहि नं जाइ । मेरी चपल बुद्धि ताते का बसाइ ॥ तन मन भीतर बस मदन चोर । तब ज्ञान रतन हरि लीन मोर ॥ हौं मैं अनाथ प्रभु कहौं काहि । अनेक बिगूंचे मैं को आहि ॥ औ सनकसनंदन शिव शुकादि । आपुन कमला पति भो ब्रह्मादि ॥ योगी जंगम यति जटाधारि अपने अवसर सब गयेहारि॥ सो कह कबीर कारि संत सात । अभिअंतर हरिसों करहु बात॥ मन ज्ञान जान कारि कारि बिचार । श्री राम नाम भजु होउ पार"॥ १-६ ॥

इति दशवां बसंत समाप्त ।

अथ ग्यारहवां बसन्त ॥ ११ ॥

शिवकाशीकैसीभैतुम्हारि।अजहूंहोशिवदेखहुविचारि ॥१॥
चोवाअरुचन्दनअगरपान। सबघरघरस्मृतिहोइपुरान॥२॥
बहुविधिभवननमेंलगैंभोग।असनगरकोलाहलकरतलोग३
बहुविधिपरजानिर्भयहैंतोर। तेहिकारणचितहैढीठमोर॥४॥
हमरेबालककरयहैज्ञान । तोहींहरिकोसमुझवैआन ॥ ५ ॥
जगजोजेहिसोंमनरहललाय।सोजिवकेमरेकहुकहँसमाय ६
तहंजोकछुजाकरहोयअकाज।हैताहिदोषनहिंसाहबलाज ७
तबहरहर्षितसोकहलभेव । जहँहमहींहैंतहँदुसरकेव ॥ ८ ॥
तुमदिनाचारिमनधरहुधीर।पुनिजसदेखहुतसकहकबीर९॥

शिवकाशीकैसीभैतुम्हारि।अजहुंहोशिवदेखहुबिचारि ॥१॥
चोवाअरुचन्दनअगरपान।सबघरघरस्मृतिहोइपुरान ॥२॥
बहुविधिभवननमेंलगैंभोग।असनगरकोलाहलकरतलोग ३
बहुविधिपरजा निर्भयहैंतोर।तेहिकारणचितहैढीठमोर ॥४॥

श्री कबीरजी कहे हैं कि जब मैं बालापन में साधन करत रह्यों है तबहीं देवतनको दर्शन होत रह्यो है। सो मैं महादेवजीते पूछ्यो कि, यह काशी

तुम्हारी कैसी भई है, अजहूं तो बिचारि देखो । तुम्हारी काशीमें चन्दन चोवा अगर लगावै हैं, पान खायहैं घर घर स्मृति पुरान होइहैं, बिविध भांतिके मेवा पकवान भोग लगावै हैं, यही रीतिते नगरमें कोलाहल लोग करिरहे हैं ऐसे परजा तुम्हारे निर्भय होइ रहे हैं तौने कारणते मोरौ चित ढीठ होइ गयो है १–४

हमरेबालककोयहैज्ञान । तोहींहरिकोसमुझवैआन ॥ ५ ॥
जगजोजेहिसोंमनरहललाय।सोजिवकेमरेकहुकहँसमाय६॥

सो हम जे सब बालक हैं तिनकर यहै ज्ञान है तुम जे हौ महादेव औ हरि जे हैं श्रीरामचन्द्र तिनको तो समुझावै आनहैं काहेते कि, वेद द्वार यह कहते हैं कि, जब संसारछूटै है ज्ञान होइहै तब मुक्ति होइहै और ये सब काशीमें जे नाना विषय भोग करै हैं संसारमें लिप्त रहै हैं सो यहू वेदैके प्रमाणसे मुक्त हो यबो मानत है ॥५॥ और जगत् में जो जौनेमें मनलगावै है सो शरीरछूटे कहो कहां समायहै अर्थात् जाहीमें मन लगावै है ताहीमें समाय है यहू वेद में लिखै है॥"अन्ते या मतिः सा गतिः॥" सोहम तुमसों पूछै हैं कि विषयमें मन लगाये मरे जे काशीके लोग ते कहां जायहैं ? ॥ ६ ॥

तँहजोकछुजाकरहोइअकाज।हैताहिदोषसाहबनलाज ॥७॥
हरहर्षितह्वैतबकहलभेव । जहँहमहींहैतहँदुसरकेव ॥ ८ ॥
तुमदिनाचारमनधरहुधीर।पुनिजसदेखहुतसकहहकबीर॥९॥

सो जाकर अकाज होइहै ताहीको दोष है काहेते, वाके कर्महीते अकाज होइहै । साहब जो आपहै श्रीरामचन्द्र तिनको कौन लाज है जो आप काशीके जीवनको मुक्ति देइहैं सो कौने हेतुते कहा ? औरे संसार क्या आपका नहीं है काशी ही आपकी है ? ॥ ७ ॥ तब हर्षित ह्वैके हर मोसे भेद बतायो कि, जहां हमहैं तहां दूसरको है काशीमें औ सब संसारमें जहां हमहैं अर्थात् हमको जे जानै हैं तेके कर्म औ कालई कैसे जोर कैसकैं काहेते कि जब हम ब्रह्माते राम नाम पायो है तब जान्यो है ताहीते मुक्त करै हैं राम नामको उपदेश करि श्रीरघुनाथजीको ज्ञानदेइहै वाको तब मुक्त होइहै । सोकाशीहूमें रामनाम दै मुक्त करै है । औरहू देशमें राम नाम पाइकै मुक्तह्वै जाइहै ॥ ८ ॥ सो दिन-चार तुम मनमें धीर धरो पुनि जस देख्यो तस हे कबीर तुम कह्यो अर्थात

जैसे हम रामनाम दैकै जीवनको उद्धार करते हैं तैसे तुमहूं करौगे । तब तस देखोगे कि राम नामते कैसेहू विषयी होइ पै वाको उद्धारई होइ जाइहै।औ काशीमें रामनामही ते मुक्तिहोइहै रामई नाम महादेव देइहैं तामेंप्रमाण ॥ "पेयं पेयं-श्रवणपुटके रामनामाभिरामं ध्येयं ध्येयं मनसि सततं तारकं ब्रह्मरूपम् । जल्पं जल्पंप्रकृतिविकृतौ प्राणिनां कर्णमूले वीथ्यांवीथ्यामटतिजटिलः कोपि काशी निवासी । इतिस्कांदे" ॥ ९ ॥

इति ग्यारहवां बसंत समाप्त ।

अथ बारहवां बसंत ॥ १२ ॥

हमरे कहल कर नहिं पतियार।आपु बूड़े नर सलिलै धार १॥
अंधा कहै अंध पतिआय। जस बिश्वा के लगनै जाय॥२॥
सोतो कहिये अतिहि अबूझ।खसम ठाढ़ ढिग नाहीं सूझ ३
आपन आपन चाहहिं मान। झुठ परपंच सांचकै जान॥४॥
झूठा कबहुं करौ नहि काज । मैं तोहिं बरजौं सुनु निरलाज५
छाड़हु पाखंड मानहुं बात। नाहिंतौ परिहौ यमके हात ॥६॥
कहै कबीर नर चले न सोझ। भटकि मुये जस बनके रोझ ७

हमरे कहल कर नहिं पतियार।आपु बूड़े नर सलिलै धार १॥
अंधा कहै अंध पतिआय। जस बिश्वाके लगनै जाय ॥ २॥
सो तौ कहिये अतिहि अबूझ। खसम ठाढ़ ढिग नाहीं सूझ ३

श्री कबीरजी कहै हैं कि, हमरे कहे ये जीव कोई नहीं पतिआयहैं साहब में कोई नहीं लगते हैं; आपने खुशीते बानी रूप सलिलमें बूड़े जाते हैं बानी को पानी आगे कहि आये हैं ॥ १ ॥ आंधर जे गुरुवा लोगहैं ते नाना मतनको बतावै हैं और आँधर जे जीव ते ग्रहण करै हैं साहब को नहीं जानै हैं जैसे बेश्या की लगन, वह तो नाना पुरुषते रमै है एकको जानतिही नहीं है ऐसे नाना उपासना मानै हैं सो साहब को मानतही नहीं हैं ॥ २ ॥ सो ते जीवन को

छिलकत थोथे प्रेमसों, धरि पिचकारी गात ।
करि लीनो बश आपने, फिरि फिरि चितवत जात ९॥
ज्ञान गाड़ लै रोपिया, त्रिगुण लियो है हाथ ।
शिव सन ब्रह्मा लीनिया, और लिये सब साथ ॥१०॥
एक ओर सुर मुनि खड़े, एक अकेली आप ।
दृष्टि परे छोड़ै नहीं, करि लीनो यक छाप ॥११॥
जेते थे ते ते लियो, घूंघुट माहँ समोय ।
कज्जल वाके रेखहै, अदग गया नहिं कोय ॥१२॥
इंद्र कृष्ण द्वारे खड़े, लोचन दोउ ललचाय ।
कह कबीर ते ऊबरे, जाहि न मोह समाय ॥१३॥

खेलति माया मोहनी, जेर कियो संसार ।
कटि केहरि गज गामिनी, संशय कियो शृँगार ॥१॥
रचै रँगकी चूनरी, सुन्दरि पहिरै आय ।
शोभा अद्भुत रूपकी, महिमा बरणि न जाय ॥ २ ॥

जौन माया सब संसार को जेर कियो है सो मोहिनी माया चाचरि खेलै है। केहरि जो है काल सब को खाइलेनवारो सो वाकी कटिह कहे मध्यभाग है। मध्य में बैठिकै अधो ऊर्ध्व को खाय है। औ मन गज है तेही कारिकै चलै है। औ संशय रूप शृङ्गार किये अर्थात् जहैं बहुत संशय होइहै तहैं माया बहुत शोभित होइ है ॥ १ ॥ नारी लोग रचैकहे जो पीउ को रुचैहै सो चूनरी पहिरे हैं औ माया नाना विषय जो जीवन को नीक लगै ताकी चूनरी पहिरें है अद्भुत शोभा स्त्रियनहूं की होइहै यहै मायौकी अद्भुत शोभा है ॥ २ ॥

चन्द्र बदनि मृग लोचनी, बिन्दुक दियो उघालि ।
यती सती सब मोहिया, गज गति वाकी चालि ॥३॥

नारदको मुखमाड़िकै, लीन्हो बदन छिपाय।
गर्ब गहेली गर्बते, उलटि चली मुसकाय ॥ ४ ॥

औ नारी चंद्र बदनी मृग नयनी बिंदुक दीन्हे घूँघुट उघारि गज की नाईं चलि सबको मोहै हैं। माया कैसी है कि, चंद्रबदनी है चन्द्रमाके समान याहू आपने पदार्थते सबको आनन्द देय है। मृगनयनी कहे यहू चंचल है। बिंदुक दीन्हे उघारि कहे आपने रागको फैलाय देइहै गजगति कहे धीरे धीरे यती सती सबको मोहै है ॥ ३ ॥ वे स्त्री नारद कहे जाके रद कहे दांत नहीं हैं ऐसे जे वृद्ध पुरुष तिनको मुख माड़िकै बदन कहे बोलिबो छिनाय लेती हैं। अर्थात् और बोलिबो सो छूटि जाइहै नारी नारी यहै कहै हैं। चाचरि वोऊ गावै लगै हैं। अथवा माया जो है सो नारद ऐसे मुनिको बांदरकी नाईं मुख कै दियो। शीलनिधि राजाकी कन्याको काज करै चले। और स्त्री गर्व को गहे लोगनके मोहिबे को चाचरि में मुसक्याय चलैहै। औ माया जो है सोऊ नारदके गर्बको गहिकै मुसक्यायकै चली है ॥ ४ ॥

शिव अरु ब्रह्मा दौरिकै, दोनों पकरे जाय। फगुवा लीन छिनायकै, वहुरि दियो छिटकाय ॥ ५ ॥ अनहद धुनि बाजा बजे, श्रवण सुनत भो चाव। खेलनि हारी खेलिहै, जैसी वाकी दाव ॥ ६ ॥

स्त्री जेहैं ते पुरुषनते चाचरि में पकरि फगुवा लैकै आपुस में छिटकाय कहे बांटिलेय हैं तैसेही मायाजो है सोऊ ब्रह्मा शिव तिन को पकरिकै फगुवा जो नाना मत सो लैकै अनेक ब्रह्मांडनमें छिटकाय दीन्हों ॥ ५ ॥ चाचरि में बाजा बजै है ताको सुनिकै चाव होइ है खेलनिहारी आपनो दावँ ताकि ताकि खेलै हैं। औ माया जो है सोऊ अनहद बाजा बजाइ जौनेके सुनतमें योगिन के चाव होइहै सो खेलनिहारी जो कुंडलिनी शक्ति सो जैसो वाको दावँ है तैसो खेलै है जीवको चढ़ावै औ उतारै है ॥ ६ ॥

आगे ढाल अज्ञानकी, टारे टरत न पाव। खेलनिहारी खेलिहै, वहुरि न ऐसीदाव ७ सुरनर मुनि भूदेवता, गोरख दत्ता व्यास। सनक सनन्दनहारिया, और कि केतिक आस ॥ ८ ॥

चाचरिमें स्त्री भोडरकी ढाल आगेंकरि पांव पीछेको नहीं टरै हैं सो खेलनिहारी जे हैं ते जब पतिको पाय जाय हैं तब कहै हैं कि, खेलि लेउ अब ऐसो दावँ न मिलैगो। औ यहां मायाजो है सोऊ अज्ञानकी ढाल आगे लीन्हे है, जाको पांव ज्ञानभक्ति बैराग्यकरि टारे नहीं टरै सो, खेलनिहारी जो माया सो खेलबै करी ऐसो दावँ वाको फिरि न मिलैगो अपने बशकरि पायोहै ॥७॥ औ चाचरि में स्त्रिनते पुरुष हारि जाइहैं सुख मानै हैं औ माया जो है ताहूसों सुर जेहैं देवता, नर जेहैं मनुष्य, मुनि जेहैं ज्ञानी, भूदेव जे हैं ब्राह्मण, गोरख जे हैं योगी कवि, दत्तात्रेयजे हैं अवधूत, व्यास जे हैं कवि, सनकसनंदनजे हैं त्यागी ते सब हारिगये औरकी कौन गिनती है ॥ ८ ॥

छिलकत थोथे प्रेमसों, धरि पिचकारी गात ।
करि लीनो बश आपने, फिरि फिरि चितवत जात९॥
ज्ञान गाड़ लै रोपिया, त्रिगुण लिये है हाथ ।
शिव सँग ब्रह्मा लीन्हिया, और लिये सब साथ॥ १० ॥

चाचरि में नारी रंगकी पिचकारी गात में सींचि आपने बश करि फिरि फिरि चितवत कहे कटाक्ष करै हैं इसी प्रकार मायाजोहै सोऊ थोथे कहे झूठेप्रेमसो संसार राग सबको गातसींचैहै आपनेबश करिलियोहै औ फिरिफिरि चितवत जातै है कहे सबको ताकेरहै है कि कोऊ बाच्यौतौ नहीं ॥९॥ औचाचरिमें स्त्री लोग रंगकेहौदमें डारिदेइ हैं औ फूलनके मालामें हाथबांधै हैं पुरुषनको वैसेही माया जोहै सोऊ ज्ञानके गाड़में ब्रह्मादिक देवतनको डारिकै त्रिगुण की फांसीमें बांधि लियो ॥ १० ॥

एक ओर सुर मुनि खड़े, एक अकेली आप ।
दृष्टि परे छोड़ै नहीं, करिलिय एकै छाप ॥ ११ ॥
जेते थे तेते लियो, घूंघुट माहँ समाय ।
कज्जल वाके रेख हैं, अदग न कोई जाय ॥ १२ ॥
इन्द्र कृष्ण द्वारे खड़े, लोचन निज ललचाय ।
कह कबीर ते ऊबरे, जाहि न मोह समाय ॥ १३ ॥

औ चाचरिमें दुइ पारा होयहैं एकओर स्त्री एकओर पुरुष होइहैं ऐसे सुर नर मुनि सब एक ओर माया अकेली आप है दृष्टिपरे काहूको नहीं छोड़ैहै॥ ११॥ वैसे स्त्री जे हैं ते आपने घूंघुट में सबको मन समाय लेइहैं सबके काजर लगाइदेइ हैं अदगकोई नहीं जायहै वैसे माया जो है सोऊ आपनेमें सबको समाय लियो है सबके एकदाग लगाइ दियो है अदग कोई नहीं बच्यो ॥ १२॥ चाचरि में स्त्रिनके द्वारे इन्द्र कृष्ण सबखड़े रहे हैं लोचन देखिबेको ललचायहैं ऐसे माया जोहै ताहूके द्वारमें इन्द्रकृष्णजे हैं उपेन्द्र ते खड़ेहैं मायाके देखिबे को लोचन ललचाय हैं सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि तेई पुरुष उबरे हैं जे मोहमें नहीं समाने हैं ॥ १३ ॥

इति पहिली चाचर समाप्त।

अथ दूसरी चाचर।

जारहु जगको नेहरा मन बौराहो।
जामें शोक संताप समुझ मन बौराहो ॥ १ ॥
काल बूतको हस्तिनी मन बौराहो।
चित्र रचौ जगदीश समुझ मन बौराहो ॥ २ ॥
बिना नेइको देवघरा मन बौराहो।
विन कहागिलकै ईंट समुझ मन बौराहो ॥ ३ ॥
तन धन सो क्या गर्व समुझ मन बौराहो।
भसम क्रीमकी साजु समुझ मन बौराहो ॥ ४ ॥
काम अन्ध गज वश परे मन बौराहो।
अंकुश सहिया शीश समुझ मन बौराहो ॥ ५ ॥
ऊँच नीच जानेहु नहीं मन बौराहो।
घर घर नाचेहु द्वार समुझ मन बौराहो ॥ ६ ॥

मरकट मूठी स्वादकी मन बौराहो ।
लीन्हों भुजा पसारि समुझ मन बौराहो ॥ ७ ॥
छूटनकी संशय परी मन बौराहो ।
घर घर खायो डांग मन बौराहो ॥ ८ ॥
ज्यों सुवना नलिनी गह्यो मन बौराहो ।
ऐसा मर्म बिचारि समुझ मन बौराहो ॥ ९ ॥
पढ़े गुने का कीजिये मन बौराहो ।
अंत बिलैया खाय समुझ मन बौराहो ॥ १० ॥
सूने घरका पाहुना मन बौराहो ।
ज्यों आवै त्यों जाय ममुझ मन बौराहो ॥ ११ ॥
न्हाने को तीरथघनी मन बौराहो ।
पूजैका बहुदेव समुझ मन बौराहो ॥ १२ ॥
बिनपानी नर बूड़िया मन बौराहो ।
तुम टेकहु राम जहाज समुझ मन बौराहो ॥ १३ ॥
कह कबीर जग भर्मिया मन बौराहो ।
तुम छोड़े हरिका सेव समुझ मन बौराहो ॥ १४ ॥

जारहु जगको नेहरा मन बौराहो ।
जामें शोक संताप समुझ मन बौराहो ॥ १ ॥
कालबूतकी हस्तिनी मन बौराहो ।
चित्र रचो जगदीश समुझ मन बौराहो ॥ २ ॥

विना नेइ को देवघरा मन बौराहो।
बिन कहगिलकै ईंट समुझ मन बौराहो॥ ३ ॥

हे मन करिके बौरा जीव ! जौनेमें शोक संताप अनेक पावै है तें सब ऐसो जगत्को नेहरा समुझिकै जारिदे ॥ १ ॥ औ या जगतकालबूत जो धोखा ताकी हस्तिनी है अर्थात झूठो है जौनरूपते देखै जगदीश जो साहब ताको रचो यह चित्रहै सो बिचारिकै छांड़ो। औ या देह कैसीहै जैसे बिना नेइको देवाला औ धन कैसो है जैसे बिना गिलावाकी ईंट अर्थात् देवालकी नाईं या तन गिरिही जायगो ईंट की नाईं जैसेईंट खरकिजाइहै तैसेतन खरकिही जायगो २। ३ ॥

तन धन सों क्या गर्ब समुझ मन बौराहो।
भसम क्रीमकी साजु समुझ मन बौराहो ॥ ४ ॥
काम अन्ध गज बश परे मन बौराहो।
अंकुश सहिया शीश समुझ मन बौराहो ॥ ५ ॥
ऊंच नीच जानेहु नहीं मन बौराहो।
घर घर नाचेहु द्वार समुझ मन बौराहो ॥ ६ ॥

सो ऐसे नाशवान् तनधनको क्या गर्बकरै है भस्म औ कीराकी साजु है। सोतैं जैसे कामते आंधर ह्वैके हाथी हथिनी वास्ते बँधिकै अंकुश शीशमें सहै है ऐसे तैं बिषयको बश परिकै नाना प्रकारके दुःखसहै है ऊंचनीच न पहिंचानें द्वार द्वार बागत फिरै है ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

मरकट मूठी स्वादकी मन बौराहो।
लीन्हों भुजा पसारि समुझ मन बौराहो ॥ ७ ॥
छूटनकी संशय परी मन बौराहो।
घर घर खायो डांग समुझ मन बौराहो ॥ ८ ॥

जैसे मर्कट स्वादके लिये भुजा पसारि चंना लेइहै मूठी नहीं छांड़े है ऐसे तैं मुक्तिके लिये नानामतनमें परिकै दृढ़कैलियो है साहब को नहीं जानै है सो तोको

संसारतें छूटिबेकी संशय आइपरी है यमके घर लाठी खायहै पै मतनहीं छांड़ै है सो हे बौरा जीव ! मन करिकै समुझुतौ ॥ ७ ॥ ८ ॥

ज्यों सुवना नलिगी गह्यो मन बौराहो ।
ऐसा भर्म बिचारि समुझ मन बौराहो ॥ ९ ॥
पढ़े गुने का कीजिये मन बौराहो ।
अंत बिलैया खाय समुझ मन बौराहो ॥ १० ॥

जैसे नलिनीको सुवा भ्रमते गहै है कोऊ धरै नहीं है ऐसे तुहूं आपने भ्रमते बँधो है सो साहबको जानै बिचार करै तौ छूटिही जायहै । जो सुवा पढ़े गुने बहुत भयो तौ का भयो बिलैया तो अंतमें खाय है सो ऐसेतैं बहुत पढ़ि गुनि नाना मत कीन्हें परन्तु जौने में मीचते बचै सोतौ करबही न कियो॥९।१०॥

सूने घरका पाहुना मन बौराहो ।
ज्यों आवै त्यों जाइ समुझ मन बौराहो ॥ ११ ॥
न्हानेका तीरथ घना मन बौराहो ।
पूजैको बहु देव समुझ मन बौराहो ॥ १२ ॥
बिन पानी नर बूड़िया मन बौराहो ।
टेकहु राम जहाज समुझ मन बौरहो ॥ १३ ॥
कह कबीर जग भर्मिया मन बौराहो ।
छोड़े हरिको सेव समुझ मन बौराहो ॥ १४ ॥

सो तैं शून्य धोखा ब्रह्ममें लगिकै सूना घरको पाहुना भयो जैसे आयो तैसे चल्यो मुक्ति न भई । सो जो मुक्ति न भई तौ का बहुत तीर्थ नहाये भयो का बहुत देव पूजे भयो तैंतो बिना पानी को जो संसार समुद्र तौनेन में बूड़िगयो । सो तैं श्रीरामनामरूपी जहाज समुझिकै धरु । श्रीकबीरजी कहे हैं कि, हे मन करिकै बौराजीव! जगत्में भर्मिया कहे भ्रमत फिरै है हरि जे साहबहैं तिनकी सेवाछोड़िकै सो हे मन बौरा अबहूं समुझ ॥११।१२।१३।१४॥

इति चाचरि समाप्त ।

ॐ

अथ बोलि प्रारम्भ ।

हंसा सरवर सरिरहो रमैया राम ।
जगत चोर घर मूसल हो रमैया राम ॥ १ ॥
जो जागल सो भागल हो रमैया राम ।
सोवत गैल बिगोय हो रमैया राम ॥ २ ॥
आज बसेरा नियरे हो रमैया राम ।
काल्हि बसेरा दूरि हो रमैया राम ॥ ३ ॥
परेहु बिराने देश हो रमैया राम ।
नैन मरैंगे ढूँढ़ि हो रमैया राम ॥ ४ ॥
त्रास मथन दधि मथन कियो हो रमैया राम ।
भवन मथ्यो भरि पूरि हो रमैया राम ॥ ५ ॥
हंसा पाहन भयल हो रमैया राम ।
बेधि न पद निरबान हो रमैया राम ॥ ६ ॥
तुम हंसा मन मानिक हो रमैया राम ।
हटल न मानल मोर हो रमैया राम ॥ ७ ॥
जस रे कियो तस पायो हो रमैया राम ।
हमर दोष जनि देहु हो रमैया राम ॥ ८ ॥
अगम काटि गम कीन्हो हो रमैया राम ।
सहज कियो बैपार हो रमैया राम ॥ ९ ॥

राम नाम धन बनिजहु हो रमैया राम ।
लादेहु वस्तु अमोल हो रमैया राम ॥ १० ॥
नौ वहिया दश गौन हो रमैया राम ।
पांच लदनवा लादे साथ हो रमैया राम ॥ ११ ॥
पांच लदनवा परे हो रमैया राम ।
खाखरि डारिनि खोरि हो रमैया राम ॥ १२ ॥
शिर धुनि हंसा चले हो रमैया राम ।
सरवर मीत जोहार हो रमैया राम ॥ १३ ॥
आगी सरवर लागि हो रमैया राम ।
सरवर भो जरिक्षार हो रमैया राम ॥ १४ ॥
कहै कबीर सुनो सन्तो हो रमैया राम ।
परखिलेहु खर खोट हो रमैया राम ॥ १५ ॥

हंसासरवरसरिरहोरमैयाराम।जागतचोरघरमूसलहोरमैयाराम १
जोजागलसोभागलहोरमैयाराम । सोवतगैलबियोगहोरमैयाराम २

सो हे राम नामके रमनवारे हंसा ! या शरीर रूप सरवरमें तेरो ज्ञान जागतमें चोरमूसि लियो ॥ १ ॥ जो जागतहै मोहनिशाते सो भागै है संसारते सो हे राममें रमनवारे मोहनिशामें सोवत सब बिगोय गये हैं कहे नानायोनिमें संसारस्वप्नमें भटकत फिरै हैं ॥ २ ॥

आजबसेरानियरेहो रमैयाराम।कालिहबसेरा दूरि होरमैयाराम३
परेहु बिराने देश हो रमैयाराम।नैन मरैंगे ढूंढ़िहो रमैयाराम४

सो हे राममें रमनवारे! आजु बसेरा नेरे है कहे मानुष शरीरई में ज्ञान होइ है सो पायेहै कालिह कहे जब या शरीर छूटि जायगो तब बसेरा दूरि ह्वैजायगो

अर्थात् अनेक योनिनमें भटकत फिरौगे तब मेरो ज्ञान होयगो ? तैं जागते में लूटिगयो है तैं का जागत रहे है नहीं जागत रहे ॥ ३ ॥ हे राममें रमनवारे ! आपनो देश साकेत ताको छोड़िकै बिराने कहे मनकेदेशमें परचोहै तैसो अनेक योनिनमें तेरी आंखी आंशू ढारिढारि फूटिजायँगी ॥ ४ ॥

त्रास मथन दधि मथन हो रमैया राम।
भवन मथ्यो भरि पूरि हो रमैया राम ॥ ५ ॥
हंसा पाहन भयल हो रमैयाराम ।
बेधि न पद निर्बाण हो रमैयाराम ॥ ६ ॥
तुम हंसा मन मानिक हो रमैयाराम ।
हटल न मानेहु मोर हो रमैयाराम ॥ ७ ॥

त्रास मथन जो है रामनाम तौनै है दधिमथन कहे मथानी तौनेते हे राम-नामके रमनवारे ! भव समुद्र जो तेरे हृदयमें भरिपूर है ताको काहे नहीं मथ्यो ? ॥ ५ ॥ हेरामनामके रमनवारे ! तैंतो चैतन्य है मनके साथ तुहूं जड़ह्वैगये है काहेते कि निर्बाणपदको न बेधि कै तैं जड़ ह्वैगये है जो निर्बाणपद को बेधते तो मेरे साकेत को जाते ॥ ६ ॥ हे हंसा तुमहीं मन में मानिकै कहो तो जब तुम राम नामको जगतमुख अर्थ करन लग्यो है तब मैं हटक्यों है सो तुम नहीं मान्यो है सो तुमतो रामनाम के रमैयाहो परंतु राम नाम जो मोको वर्ण-नकरै ताको अर्थ नहीं जान्यो संसारमें परचो है ॥ ७ ॥

जसरे कियो तस पायो हो रमैयाराम ।
हमर दोष जनि देहु हो रमैयाराम ॥ ८ ॥
अगम काटि गम कीन्हों हो रमैयाराम।
सहज कियो बेपार हो रमैयाराम ॥ ९ ॥
राम नाम धन बनिजहु हो रमैयाराम ।
लादेहु वस्तु अमोल हो रमैयाराम ॥ १० ॥

हे रामनामके रमनवारे हंसा ! जस कियो तस पायो हमारो दोष जनि देहु ॥ ८ ॥ अगम जो राम नाम ताको काटि गम कीन्हों अर्थात् साहब मुख अर्थ छांड़ि जगत् मुख अर्थ कियो फिरि वही रामनाम को ब्रह्ममुख अर्थ-करि सहज व्यापार कहे सहज समाधि लगावनलगे कि, हमहीं ब्रह्म हैं ॥ ९ ॥ हे रामनाम के रमनवारे ! रामनाम धनको बनिज करिकै रामनाम अमोल वस्तु लादेहु परंतु अर्थ न जान्यो । जो " बनिजहु लादहु " पाठहोइ तो यहअर्थ है अगम जो है रामनाम ताको काटिकै कहे बीजक में बनाइकै तुमको गमकै दियो कहे सुगम कैदियो समुझनलगे रामनाम को व्यापार तुम को सहज कै दियो अर्थात् रामनाम की सहज समाधि तुमको कोउ बतायदियो सो रामनाम अमोल है ताको बनिज करो औ वही धनको लादो यह सांच है और सब झूंठहै ॥ १० ॥

पांच लदनवा लादे हो रमैयाराम ।
नौ बहिया दश गोन हो रमैयाराम ॥ ११ ॥
पांच लदनवा आगे हो रमैयाराम ।
खाखरि डारिनि खोरि हो रमैयाराम ॥ १२ ॥
शिर धुनि हंसा उड़ि चले हो रमैयाराम ।
सरवर मीत जोहार हो रमैयाराम ॥ १३ ॥

ताही ते पांच लदनवा लादे अर्थात् पांचभौतिक शरीर धारण कीन्हे ते जौने-में दशौ गोन दश इंद्रिय हैं तामें मन बुद्धि चित्त अहंकार पांचौ प्राण ते बहि-या हैं अर्थात् बहनवारे हैं चलावन वारे हैं ॥ ११ ॥ खाखरि जो शरीर तौन जब खोरिमें डारेनि अर्थात् नाश भयो तब पांच लदनवा कहे वही पांचभौतिक शरीर आगे मिलैहै । "पांच लदनवा गिरि परे" पाठ होइ तो यह अर्थ है कि जब इंद्रिय न रहिगई तब शरीरौ छूटिजाई है ॥ १२ ॥ सो हंसा जो जीव है सो शिर-धुनिकै सरवर जो शरीर मीत तौने को जोहारिकै उड़ि चलै है ॥ १३ ॥

आगि लगी सरवरमें हो रमैयाराम।
सरवर जरिभो क्षार हो रमैयाराम॥ १४॥
कहै कबीर सुनो संत हो रमैयाराम।
परख लेहु खर खोट हो रमैयाराम॥ १५॥

जब हंसा उड़ि चलैहै तब सरवर जो शरीर तामें आगि लगै है सरवर जरिकै क्षारह्वै जाइ है सो हे रामनाम के रमनवारे तुम तो संसारमुख अर्थकैकै संसारमें परचो सो तुम्हारी यहदशा होतभई॥ १४॥ श्रीकबीरजी कहै हैं कि, हे सन्तो! साहब जो कहै हैं ताको सुनते जाउ। तुमतो रामनाममें रमनवारेहो सो रामनामको जगतमुख अर्थ छांडिकै साहब मुख अर्थ करिकै साहब में लागो साहब की बाणी गहो खरखोट परखिलेहु कौन खराहै कौन खोटहै साहबमुख अर्थ खराहै काहेते साहिबै अपने मुख कहै हैं जगतमुख अर्थ खोटहै सो खोट छांड़िकै साहबमें लागो॥ १५॥

इति प्रथम बेलि समाप्त।

अथ द्वितीयबेलि।

भल सुस्मृति जहडायहु हो रमैयाराम।
धोखा कियो बिश्वास हो रमैयाराम॥ १॥
सोतो हैं बन सीकसि हो रमैयाराम।
शिरकै लियो बिश्वास हो रमैयाराम॥ २॥
ईतौ हैं बिधि भाग हो रमैयाराम।
गुरु दीन्हों मोहिं थापि हो रमैयाराम॥ ३॥
गोबर कोट उठायहु हो रमैयाराम।
परिहरि जैहो खेत हो रमैयाराम॥ ४॥

बुधि बल तहां न पहुंचै हो रमैयाराम ।
खोज कहांते होय हो रमैयाराम ॥ ५ ॥
सुनि मन धीरज भयल हो रमैयाराम ।
मन वढ़ि रहल लजाय हो रमैयाराम ॥ ६ ॥
फिरि पाछे जनि हेरहु हो रमैयाराम ।
काल बूत सब आय हो रमैयाराम ॥ ७ ॥
कह कबीर सुनौ संतौ हो रमैयाराम ।
मति ढिगही फैलाव हो रमैयाराम ॥ ८ ॥

भल सुस्मृतिजहडायहु हो रमैयाराम ।
धोखा कियो विश्वास हो रमैयाराम ॥ १ ॥

साहब कहै हैं हे रामनामके रमनवारे जीव तुम भली तरहते स्मृतिमें जह- डाय गयो । स्मृतिको तात्पर्यार्थ जो मैं ताको न जान्यो काहेतेकि धोखा ब्रह्ममें विश्वास कीन्ह्यो ॥ १ ॥

सो तौ है बनसी कसि हो रमैयाराम ।
शिर कै लियो विश्वास हो रमैयाराम ॥ २ ॥

सोतौ है कहे सो धोखाब्रह्म बंशीकी नाई है जो मछरीबंशीमें लागै है ताको प्राण छूटिजाइहै, ऐसे तुहूं वामें लगैहै सो तेरो जीवत्व न रहैगो । अर्थात् तेरो स्वरूप भूलि जाइगो मुरदाकी नाईटँगो रहैगो। तौनिधोखा ब्रह्ममें शिरकै बिश्वास कै लिये है । अथवा जे गुरुवालोग तोको धोखा ब्रह्ममें बिश्वास कराइ देइहैं स्मृतिन का अर्थ फेरिकै ते बनके सीगट हैं । उहां हैं वा जो ब्रह्महै सो तैं आहे यही कहै हैं अथवा हुआहै हुआ है या कहै हैं कि तैं लगा सो ब्रह्महुआ जैसे सीगटनकी बाणीमें अर्थ नहींहै ऐसे गुरुवा लोगनकी बाणी में अर्थनहीं है तैं ब्रह्म कबहूं न होइगो तैं रामनाममें रमनवारो है सो ताहीमें रमै तबहीं तेरोबनैगो ॥ २ ॥

ई तो है विधि भाग हो रमैयाराम।
गुरु दीन्ह्यो मोहिं थापि हो रमैयाराम ॥ ३ ॥
गोबर कोट उठायहु हो रमैयाराम।
परिहरि जैहो खेत हो रमैयाराम ॥ ४ ॥

साहब कहै हैं कि रामनामके रमनवारे यहस्मृति बिधि निषधका भागकहावै है तौने भागबश मोको गुरुवा लोग बहँकाइ दियो मैं काकरौं मेरोदोष कौन है तौ हमारो महल छोड़ि तहीं गोबरको कोट उठायहुहै जो तैं गुरुवालोगनके न जाते और उपासना न पूछते तौ वे काहेको बतौते सो मोको परिहरिकै तैं संसाररूप खेत में जाय है जहां सब उत्पत्तिहोइहै ॥ ३ ॥ ४ ॥

बुधि बल तहां न पहुंचै हो रमैयाराम।
खोज कहांते होय हो रमैयाराम ॥ ५ ॥
सुनि मन धीरज भयल हो रमैयाराम।
मन बढ़िरहल लजाय हो रमैयाराम ॥ ६ ॥

सो धोखाब्रह्म में बुद्धि बल नहीं पहुंचै है शून्य है खोजकहां ते होई। जो कहो कि आपै में तो बुद्धि बल नहीं पहुंचै है तौ जो कोई मेरे रामनाममें रमैहै मोको जानै है ताकोमहीं बताइ देउँ हौं नयनइन्द्रिय देउँहौं ताहीमें मोहिंदेखै है ॥५॥ गुरुवनकी बाणी सुनिकै जो तेरे मनमें धैर्य भयो कि हम ब्रह्म ह्वै जाइँगे सो हे राम में रमन वारे वा ब्रह्ममें मन बढ़िकै कहे बिचार करत करत लजाय गयो ब्रह्म न भयो मन आपनी गति जब नहीं देखै है तब सकुचिकै वाही में रहिजाइहै मनको नाश नहीं होयहै ॥ ६ ॥

फिरि पाछे जनि हेरौ हो रमैयाराम।
काल बूत सब आय हो रमैयाराम ॥ ७ ॥
कह कबीर सुनौ संतो हो रमैयाराम।
माति ढिगही फैलाव हो रमैयाराम ॥ ८ ॥

तुमतो रामनाममें रमनवारे हौ ई तो सब तुमते पाछे हैं तिनकी ओर जनि हेरौ । माया ब्रह्म कालके पराक्रम आय जो इनके ओर हेरोगे तौ ये कालकें बूत आय कहै कालके पराक्रमहैं अर्थात् मायै ब्रह्म द्वारा काल नाश सबको कैं देइ है ॥ ७ ॥ सो श्रीकबीरजी कहे हैं कि हेसंतौ ! साहब कहे हैं सो सुनते जाउ तुम तो राम नाम में रमन वारेहौ दूरिदूरि कहां खोजौहौ, मतिको ढिगहीमें फैलाव अर्थात अपने स्वरूपको बिचारु कि मैं कौन को हौं तौ या जानि लेइ तैं कि मैं राममें रमनवारो हौं रामनाम स्मरण करौगे तबहीं मुक्ति होयगी तामें प्रमाण ॥

श्रीकबीरजीको पद ।

"असचरित देखि मन भ्रमै मोर । ताते निशि दिन गुण रमा तोर ॥
यक पढ़हिं पाठ यक भ्रम उदास । यक नगन निरंतर रह निवास ॥
यक योग युक्ति तिन होहिं खीन । यक राम नाम सँग रहल लीन ॥
यक होहिं दीन यक देहिं दान । यक कलपि कलपि कै होयँ हरान ॥
यक तन्त्र मंत्र औषधीवान । यक सकल सिद्धि राखैं अपान ॥
यक तीरथ ब्रत करि काय जीति । यक राम नामसों करत प्रीति ॥
यक धूम घोटि तन होहिं श्याम । तेरी मुक्ति नहीं बिन राम नाम ॥
सतगुरु शब्द तोहि कह पुकार । अब मूल गहो अनुभव बिचार ॥
मैं जरा मरणते भयउँ थीर । मैं राम कृपा यह कह कबीर ॥ ८ ॥

इति बेलि समाप्ता ।

ॐ

अथ बिरहुली।

आदि अंत नहिं होत बिरहुली।
नहिं जड़ पल्लव पेड़ बिरहुली॥ १ ॥

निशिवासरनहिंहोतबिरहुली। पानीपवननहोतबिरहुली २
ब्रह्मआदिसनकादिबिरहुली। कथिगयेयोगअपारबिरहुली ३
मासअसाढ़हिशीतबिरहुली । बोइनसातौबीजबिरहुली ४
नितगोड़ैनितसिंचैबिरहुली । नितनवपल्लवपेड़बिरहुली ५
छिछिलबिरहुलीछिछिलबिरहुली।छिछिलरहीतिहुँलोकाबिरहुली
फूलएकभलफुललबिरहुली । फूलिरहलसंसारबिरहुली ७
तेफुलबंदैभक्तबिरहुली। बांधिकैराउरजाहिबिरहुली ॥८॥
तेफुललेहींसंतबिरहुली। डसिगोबेतलसांपबिरहुली ॥९॥
विषहरमंत्रनमानबिरहुली । गाड़ुरिबोलेआरबिरहुली १०
विषकीक्यारीबोयोबिरहुली।लोरतकापछितायबिरहुली ११
जन्मजन्मअवतरेबिरहुली।फलयककनयलडारबिरहुली १२
कह कबीरसचुपायबिरहुली।जोफलचाखहुमोरबिरहुली १३

आदिअंतनहिंहोतबिरहुली। नहिंजड़पल्लवपेड़बिरहुली १
निशिवासरनहिंहोतबिरहुली। पानीपवननहोतबिरहुली २
ब्रह्मआदिसनकादिबिरहुली।कथिगयेयोगअपारबिरहुली ३

बी कहे दुइ विद्या अविद्या रूपको, रहुली कहे रहनवाली जो माया ताको। सो कबीरजी कहे हैं कि, विद्या अविद्या दुहुनको न आदि है न अंत है अर्थात् विचार कीन्हे भ्रममात्रै है जीव छूटि मात्र जाइ है। सो बिरहुली जो माया ताके न जड़ है न पेड़ है न पल्लव है अर्थात् विचार कीन्हे मिथ्या है ॥ १ ॥ जब निशिवासर नहीं होत है तबहूं बिरहुली माया रहो है जब पानी पवन नहीं रह्यो तबहूं बिरहुली माया रही है औ ब्रह्मा सनकादिककी आदि बिरहुली है औ जौन योग अपार कथि गये हैं सोऊ बिरहुली है ॥ २ ॥ ३ ॥

मासअसाढ़हिशीतबिरहुली।बोइनसातौबीजबिरहुली ॥४॥
नितगोड़ैनितासिंचैबिरहुली।नितनवपल्लवपेड़बिरहुली॥५॥

जब प्रथम उत्पत्ति भई है सोई आषाढमास है काहेते चौमास को आदि आषाढ है। तैसे युगनको आदि सतयुग है सो कैसा है शीतकहे शुद्ध सतोगुण है तौनेमें जीव को जो सातौ सुरति तेई हैं बीज तेके बोवत भये ते सब बिरहुलिन आइ सो मंगलमें लिखि आये हैं कि ॥ " सात सुरति सब मूल हैं। प्रलयहु इनहीं माहँ " ॥ सो जीव नितगौड़े है गुरुवनते बोई कर्म्म पूछै है खोदि खोदि नित सींचै है कहे वोई कर्म्म करै है जाते बिरहुली कहे माया बढ़तै जाइ है ॥४॥ ५ ॥

छिछिलबिरहुलीछिछिलबिरहुली।छिछिलरहलतिहुँलोकबिरहुली६
फूलएकभलफुललबिरहुली।फूलिरहलसंसारबिरहुली॥७॥

कहूं विद्यारूपते छिछिली है बिरहुली माया; कहूं अविद्या रूपते छिछिली है बिरहुली माया। यही रीतिते तीनों लोकमें बिरहुली छिछिलरही है। सो यही माया बिरहुली में कहूं कर्म्मत्यागरूप एक फूल धोखा ब्रह्म फूलि रह्यो है ताही में सब संसार लगिके फूलि रहे कहे आनन्द मानि लिये हैं ॥ ६ ॥ ७ ॥

तेफुलवन्दैभक्तिबिरहुली। बांधिकैराउरजायबिरहुली ॥८॥
तेफुललेहींसंतबिरहुली । डसिगोबेतलसांपबिरहुली ॥९॥

ते फूल कहे तीन जो धोखा ब्रह्म सो भक्तनको बन्दै है अर्थात् खुलो नहीं है वे धोखा में नहीं परे है काहेते वाको बांधिकै कहे खण्डन करिकै राउर जो साहबको महल है तहांको जाहि हैं औ जे सन्त धोखा ब्रह्म रूप फूल लेहि हैं अर्थात् ब्रह्म विचारमें जे शांत भे साहबको भूलिगे ते बेतल कहे बेताल भुतहा सांप ऐसो जो धोखा ब्रह्म तौनेते डसिगे । धुनि या है जाको सांप डसै है ताको स्वरूप भूलि जाइ है सांपै बोलै है ऐसे जे धोखा ब्रह्मवारे हैं तिनहूं आपनोस्वरूप भूलिगये कहे हैं हमहीं ब्रह्म हैं ॥ ८ । ९ ॥

बिषहरमंत्रनमानबिरहुली।गाडुरिबोलेआरबिरहुली ॥१०॥
बिषकीक्यारीबोयोबिरहुली।अवलोरतपछितायबिरहुली ११

जाको ब्रह्मरूप सर्प डस्यो सो ब्रह्मरूप सर्पको विषहरनवारो जो रामनाम ताको नहीं मानै है । गाडुरि जे हैं ते आर बोले हैं झारै हैं । इहां सतगुरु जेहैं ते रामनाम उपदेश करै हैं परंतु नहीं मानै हैं सो बिषयकी कियारी जो या संसार तामें आत्मज्ञानरूप बीज बोयो सो वा बिरहुली कहे मायैआय सो अवलोरत कहे काटतमें का पछिताय है । अबका विषम छांड़े है ! नहीं छांड़े है । कहूं ब्रह्मानंदकी कहूं विषयानन्दकी चाह । विद्यामें ब्रह्मानन्दकी चाह अविद्यामें विषयानन्दकी चाह ताको नहीं छांडै है ॥ १० ॥ ११ ॥

जन्मजन्मअवतरेउबिरहुली।फलयककनयलडारबिरहुली१२
कहकबीरसचुपायबिरहुली।जोफलचाखहुमोरबिरहुली १३

सो हे जीव बिरहुली जो माया ताहीमें तुम जन्मजन्म अवतर्‍यो । जौने बिरहुलीको फल धोखाब्रह्म । औ वह कर्मफल कैसो है कि, कनयल कैसो फल है अर्थात् निरसहै रस नहीं है औबिषधरहै सो कौनीतरहते सचुपावोगे । सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि, तब सचुको पावै जब फल मोर चाखै कहे जौने रामनाममें मैं जपौ हौं ताही फलको चाखै तो सुचित्तई पावै या कनयल का फल न चाखै ॥ १२ ॥ १३ ॥

इति बिरहुली समाप्त ।

अथ हिंडोला।

भर्म हिंडोलना झूलै सब जग आय॥
जहँ पाप पुण्यके खंभ दोऊ मेरु माया नाय।
तहँ कर्म पटुली बैठिकै को को न झूलै आय॥ १॥
यह लोभ मरुवा विषय भमरा काम कीला ठानि।
दोउ शुभौ अशुभ बनाय डांड़ी गह्यो दूनौ पानि॥२॥
झूले सो गण गंधर्व मुनि नर झुले सुर गण इन्द्र।
झूलत सु नारद शारदा हो झुलत व्यास फणिन्द्र॥३॥
झूलत विरंचि महेश मुनि हो झुलत सूरज इन्दु।
औ आप निरगुण सगुण ह्वैकै झूलिया गोविंदु॥ ४॥
छ चारि चौदह सात यकइस तीन लोक बनाय।
चौ खानि बानी खोजि देखौ थिर न कोइ रहाय॥५॥
शशि सूर निशि दिन संधि औ तहँ तत्त्व पांचों नाहिं।
कालहु अकालहु प्रलय नाहिं तहँ संत बिरले जाहिं ६॥
खण्डहु ब्रह्मण्डहु खोजि षट दरशन ये छूटे नाहिं।
यह साधु संग बिचारि देखौ जीउ निसतरि जाहिं॥७॥
तहँके बिछुरि बहु कल्प बीते परे भूमि भुलाय।
अब साधु संगति शोचि देखौ बहुरि उलटि समाय८॥

तेहि झूलबेकी भय नाहिं जो संत होहिं सुजान।
कह कबीर सत सुकृत मिलै तौ फिरि न झूलै आन९॥

भर्म हिंडोलना झूलै सब जग आय॥
जहँ पाप पुण्यके खम्भ दोऊ मेरु माया नाय।
तहँ कर्म पटुली बैठिकै को को न झूलै आय॥ १॥
यह लोभ मरुवा विषय भमरा काम कीला ठानि।
दोउ शुभौ अशुभ बनाय डांड़ी गहे दूनौ पानि॥ २॥

परम पुरुष पर श्रीरामचन्द्र के बिनाजाने भरमको हिंडोला सब संसार झूलैहै कैसोहै हिंडोला; जहां पाप पुण्य रूप दोऊ खंभहैं, माया जोहै सो मेरु-कहे गोलाहै, जौनेमें कर्मरूपी पटुली है, ताहीमें बैठिकै को नहीं झूल्यो अर्थात् सब झूल्यो है॥१॥ लोभ जो है सोई मरुवा लगो है, विषय जो है सोई भमरा है, काम जो है सोई कीला है, औ शुभ औ अशुभ जे उपासनाहैं तेई डांड़ी हैं ताको पाणिते गहिकै सब झूलैहैं ? को को झूलै हैं ताका आगे कहे हैं ॥ २॥

झूलै सो गण गन्धर्व मुनि नर झूलै सुर गण इन्द्र।
झूलत सु नारद शारदा हो झुलत ब्यास फणिन्द्र॥ ३॥
झूलत विरंचि महेश मुनि हो झुलत सूरज इंदु।
औ आपु निर्गुण सगुण ह्वैकै झूलिया गोविंदु॥ ४॥

गन्धर्व मुनि नर सुरगण इंद्र नारद शारदा व्यास फणीन्द्र जे हैं शेष महेश जेहैं बिरञ्चि सूर्य्य चंद्रमा ये सब झूलैहैं और कहां तक कहैं सगुण निर्गुण रूपते अर्थात् चित्‌अचित् के अंतर्यामी ह्वैकै गोबिंद जेहैं तेऊ झूले हैं ॥३॥४॥

छ चारि चौदह सात यकइस तीन लोक बनाय।
चौखानि बानी खोजि देखौ थिर न कोइ रहाय॥ ५॥

छः जे शास्त्रहैं, चारि जे वेदहैं चौदह जे विद्याहैं, सात जे द्वीप हैं, औ इकीसौ जेहैं सात शून्य सात सुरति सात कलम, यतनेमें परे जे तीनिउ लोककी

रचना भई सो इनमें चारिउ खानिके परे जे जीव तिनकी हम चारिउ बानीतें वेदशास्त्रादिकनते बिचारि खोजि देख्यो कोई थिर नहीं रहे हैं सबै झूलैहैं। सो तैं यहां को नहीं है तैं तो बाहर को है जहां इहां की साजु उहां एकौ नहीं है ॥ ५ ॥

शशि सूर निशि दिन संधि औ तहँ तत्त्व पांचों नाहिं।
कालौ अकालौ प्रलयनाहिं तहँ सन्तबिरले जाहिं॥६॥
खण्डौ ब्रह्मण्डौ खोजि षट दरशन ये छूटे नाहिं।
यहसाधुसंग बिचारि देखौ जीउ निस्तारि जाहिं॥७॥

न उहां सूर्य है, न चन्द्र है, न दिनहै, न राति है, न संध्याहै न पांचौ तत्वहैं, न कालहै, न अकालहै, न उहां प्रलयहै, ऐसी जगहमें कोई विरले संत जाइहैं ॥ ६ ॥ पुनि कैसो है जाको खण्ड जो शरीर ब्रह्माण्ड जो जगत् तामें वाको छइउ दर्शन वारे खोजि खोजिहारे परन्तु पाये नहीं न संसारते छूटे। सो ऐसे लोकको साधुजे हैं तिनको सङ्गकरिकै विचारिकै देखै जाते जीव यहीं संसारते निस्तारि जाइ ॥ ७ ॥

तहँ केबिछुर बहु कल्प बीते परे भूमि भुलाय।
अबसाधु संगति शोचिदेखौ बहुरि उलटि समाय॥८॥
तेहि झूलबे की भय नहीं जो संत होहिं सुजान।
कह कबीर सत सुकृत मिलै तौ फिरि न झूलै आन॥९॥

सो ऐसे लोकते बिछुरे तोको केतन्यों कल्प व्यतीत भये तैं संसारमें भुलायकै परे आय सो तैं अब साधु सङ्गतिकरि बिचारि कै रामनामको जानै जाते बहुरिकै वहैं समाय अर्थात् जहांते आये है तहैं जाय। या संसार हिंडोला छांडु जो कोई साहबके जाननवारे सुजान साधुहैं तिनको या हिंडोलामें झूलबे की भयनहीं है। तिनसों श्री कबीरजी कहै हैं कि, जो याको सतसुकृतराम नाम मिलै तो फिर आनि बार न झूलै। रामनाम को जपिबो जो है सोई सत्य सुकृतह वही बाङ्मनो गोचरातीत जे श्रीरामचन्द्र हैं। तिनके और जे सुकृतहैं ते क्षयमानहैं औ रामनाम पास पहुँचावे है जहांते नहीं लौटे है तामें प्रमाण ॥ "सप्तको-

टिमहामंत्राश्चित्तविभ्रमकारकाः ॥ एक एव परो मंत्रो रामइत्यक्षरद्वयम्'' ॥ इतिसारस्वततंत्रे ॥ दूसराप्रमाण ॥ ''इममेवपरंमन्त्रं ब्रह्मरुद्रादिदेवताः॥ऋषयश्च महात्मानो मुक्ता जप्त्वाभवाम्बुधेः'' ॥ इति पुलहसंहितास्मृतिः ॥ ८ ॥ ९ ॥

इति प्रथम हिंडोला समाप्त।

अथ दूसरा हिंडोला।

बहुबिधिके चित्र बनाइकै हरि रच्यो क्रीडा रास।
ज्यहि नाहिं इच्छा झूलबे अस बुद्धि केहिके पास॥१॥
झूलत झुलत बहु कलप बीते मन न छोड़ै आस।
यह रच्यो रहस हिंडोलना निशि चारि युगचौमास॥२॥
कबहूंक ऊँच नीचे कबहूं स्वर्ग भूलौं जाय।
अति भ्रमत भ्रमहिं हिंडोलना सो नेकु नाहिं ठहराय॥३॥
डरपत रहौ यहि झूलिबेकौ राखु यादवराय।
कह कबिर सुनु गोपाल बिनती शरण हौं तुवपाय॥४॥

बहुतबिधि चित्र बनाइकै या जगत् हरि जे हैं गोलोकबासी कृष्णचन्द्र आपनी क्रीडा बनाइ राख्यो है अर्थात् अन्तर्यामी रूपते आपही बिहार करै हैं। सो या जगतरूप हिंडोला में झूलिबेकी बुद्धि केहिके नहीं आई अर्थात सबैके है न झूलिबेकी बुद्धि कोई बिरले सन्तन के है। सो ऐसो हिंडोलाना चारि युग जे हैं चौमास तामें रच्यो है जीवनके झूलत झूलत कोटिन कल्प व्यतीत भये तऊ झूलिबेकी आशा मन नहीं छोड़ै है। हिंडोलाके चढ़ैया कहूं नीच आवै हैं कहूं ऊंचे जायँहैं ऐसे अति भ्रमत जो जगत रूप हिंडोला तामें परे जे जीव ते कहूं नरकको जायँ हैं, कहुं स्वर्गको जाय है। सो हे जीवौ! या जगतरूप हिंडोला झूलिबेको डरत रहो राखु यादवराय या कहौ कि हे यादवराय कृष्णचंद्र हमको बचायो। सो हे कायाके बीरौ जीवौ ! यह कहो कि,हे गोपाल ! गो जे हैं इन्द्रिय तिनके रक्षा करनवारे हमारी बिनती सुनो हम तुम्हार चरण शरण हैं ॥ ४॥

अथ तीसराहिंडोला ॥ ३ ॥

जहँ लोभ मोहके खम्भ दोऊ मनं रच्योहौ हिंडोर।
तहँ झुलहिं जीव जहान जहँ लगि कतहुँ नहिं थिति ठौर १॥
चतुरा झुलैं चतुराइया औ झूलैं राजा सेव।
अरु चन्द्र सूरज दोऊ झूलहिं नाहिं पायो भेव ॥ २ ॥
चौरासि लक्षहु जीव झूलैं धरहिं रविसुत धाय।
कोटिन कलप युग बीतिया मानै न अजहूं हाय ॥ ३ ॥
धरणी अकाशहु दोऊ झूलैं झुलैं पवनहुँ नीर।
धरि देह हरि आपहू झूलहिं लखहिं हंस कबीर ॥ ४ ॥

जौन जगतमें लोभ मोहके खम्भ बनाइकै मनको रच्यो जो हिंडोल ताहीमें सब जहानके जीव झूलै हैं थिर नहीं कौनौ ठौर में रहै हैं। चतुर चतुराईते झूलै हैं, राजा झूलै हैं, सेवक झूलै हैं, चंद्र, सूर्य तेऊ झूलै हैं। हिंडोलाको भेद नहीं पावैहैं। चौरासी लक्ष योनिके जीव झूलैहैं तिनको सबको रवि सुत जे यमराज ते धरै हैं। सो कोटिन कल्प बीतिगये जीवनको झूलत परन्तु अजहूं नहीं मानै है औ धरणी आकाश पवन पानी ये सब वही हिंडोलामें झूलै हैं औ देहधरिकै कहे अवतारलैकै जौनी रीति सब झूलै हैं तौनी रीति हरि आपहू झूलै हैं। जीवनको यह दिखाइबे को कि, जैसे तुमहूं झूलैहौ तैसे हमहूं झूलै हैं सो देहधरेको फल यह है इन को हेतु कोई जानि नहीं सकै है कि, जीवनपर दयाकरिकै उद्धार करिबे को हेतु दिखावै हैं कि, देहको फल यह संसारई है ताते देहको अभिमान छोड़ि हमारे अवतारके नाम लीलादिकनमें लागि, मनको त्याग करिकै चारों शरीरनको त्याग करिदेउ। जब तुम आपने स्वरूप में स्थित रहौगे तब हंस स्वरूप दै आपने धामको लै आवेंगो। यह बात कोई नहीं लखै है कहे जानै है। जे हंसस्वरूप पाये कायाके बीर जीवहैं तेई जानै हैं याते साहबकी दया-लुता ब्यंजितभई ॥ १-४ ॥

इति तीसरा हिंडोला।

हिंडोला समाप्त।

अथ साखी।

जहिया जन्म मुक्ता हता, तहिया हता न कोइ ॥
छठी तिहारी हो जगा तू कहँ चला विगोइ ॥ १ ॥

गुरुमुख ॥ जीवसों साहब कहै हैं जहिया कहे प्रथम जब तुम जन्मते मुक्त रह्योहै कहे जन्ममरणते छूटे रह्योहै तहिया कहे तब हता न कोयकहे ये मनादिक नहीं रहे। जो जहिया जन मुक्ता हता या पाठहोय तो साहबकहै हैं कि हे जन हमारे दास जब तुम मुक्त रह्यो है तब ये मनादिक कोई नहीं रहे। अरु बिज्वर गुणातीत चिन्मात्र मेरो अंश सनातनको या स्वरूपते रह्यो है। छठई देइ हमारे पास है तू कहां विगरो जाइ है मनादिकनमें लगिकै तैं कैवल्य शरीरमें टिकिकै हमारे प्रकाशमें स्थित रहै हमको नहीं जाने याहीते माया

तोको धरिकै संसारमें डारिदियो । सो तुम कैवल्य तनतें महाकारणमें, महाकारणते कारणमें, कारणते सूक्ष्ममें, सूक्ष्मते स्थूल शरीर में गयो । सो जो अजहूं मनादिकनको त्यागिकै मोको जानै तौ मैं तोको हंसशरीरदेउँ, तामें टिकि मेरे पास आवै । प्रथम साहब बरज्यो है ताको प्रमाण आगे बोलिमें लिखिआये हैं । जो कोई कहै हैं कि, " हंसस्वरूपइते माया तोधरिलेआई है औ भूलि भई है सो बिना बिचारेकहै है । पारिखकारिकैदेखो तो जो हंस स्वरूपइते माया धरि लेआवती; तौ पुनि जब हंसस्वरूप पावैगो तबहूं न माया धरि लेआवैगी ? काहेते कि एक बार तो धरिही लेआई । ताते हंस शरीरते माया नहीं धरिल्यावैहै । जीव कैवल्य शरीरमें सदा स्थित रहै है तहां मनकी उत्पत्ति होइहै । तब माया धरिल्यावैहै । जीव संसारी ह्वैजाइहै । पुनि जब महाप्रलय होइहै तब फेरि वही ब्रह्म प्रकाशमें जाइकै एकरूपते सब रहै है तामें-प्रमाण ॥ " परेव्ययेसर्वएकीभवति"॥औसब वहै उत्पत्ति होइहै तामेंप्रमाण ॥ सदेवसौम्येदमग्रआसीत् एकमेवाद्वितीयम् ।तदैक्षत एकोहं बहुस्याम्" इतिश्रुतेः॥ औ जब जीव संसारते मुक्त ह्वै जायहै तब साहब हंस स्वरूप देइहैं, तामें स्थित ह्वैकै साहब के पास जाइहै ताकोप्रमाण आगे लिखिआये हैं, साहबके पास जाय फेरि नहीं आवै ॥ तामें प्रमाण"नतद्भासयते सूर्यो न शशांको न पावकः । यद्गत्वा न निवर्त्तन्ते तद्धाम परमं मम॥इतिगीतायाम् " ॥ औ जबजीव कैवल्य शरीरमें रहै है सो सच्चिदानन्दरूप प्रकाशमें भरोरहै है, तहां जब मनको अंकुर वह चित् होइ है तब तुरीय अवस्था को स्मरणहोइ है, सो याको महाकारणशरीर है । औ जब वह सुख के स्मरणते बासना उपजी तब सुषुप्ति अवस्थामें मगनहोइहै जागै है तब कहै है कि, आज खूब सोयो याको या कारण शरीर है । औ जब वह बासना संकल्प बिकल्परूप भयो या याको सूक्ष्म शरीरहै स्वप्न अवस्थाको सुख भयो । औ जब संकल्प बिकल्पते नाना कर्मनके फलते पृथ्वी अप् तेज वायु आकाशादिकते स्थूल शरीर पावै है तहां जागृत अवस्था सों सुख होइहै तामें प्रमाण कबीर जी के ग्रन्थ पंचदेहकी निर्णयको ।

पंचदेहका निर्णय ॥

एकजीवको स्वतःपद, बुद्धिभ्राँति सोकाल ।
कालहोइ यहकाल-रचि, तामें भये बिहाल ॥
बीहाले को मतो जो, देउ सकल बतलाय ।
जाते पारख प्रौढ़ लहि, जीव नष्ट नहिं जाय ॥
करि अनुमान जो शून्यभो, सूझै कतहूं नाहिं ।
आपु आप बिसरो जबै तन बिज्ञान कहि ताहि ॥
ज्ञान भयो जाग्यो जबै, करि आपन अनुमान ।
प्रतिबिंबित झाई लखै, साक्षी रूप बखान ॥
साक्षी होय प्रकाश भो, महा कारण त्याहि नाम ।
मसुर प्रमाण सो बिम्बभो, नील बरण घन श्याम ॥
बढ़्यो बिम्ब अध पर्व भो, शून्याकार स्वरूप ।
ताको कारण कहतहैं, महँ अँधियारी कूप ॥
कारणसों आकार भो, श्वेत अँगुष्ठ प्रमान ।
वेद शास्त्र सब कहतहैं, सूक्षम रूप बखान ॥
सूक्ष्मरूपते कर्मभो, कर्महिंते यह अस्थूल ।
परा जीव या रहटमें, सहै घनेरी शूल ॥

संतो षट प्रकारकी देही ।
स्थूल सूक्ष्म कारण महँकारण केवल हंस कि लेही ॥
साढ़े तीन हाथ परमाना देह स्थूल बखानी ।
राता बर्ण बैखरी बाचा जागृत अवस्था जानी ॥
रजोगुणी ओंकार मात्रुका त्रिकुटी है अस्थाना ।
मुक्तिश्लोक प्रथम पद गाइत्री ब्रह्मा बेद बखाना ॥
पृथ्वी तत्त्व खेचरी मुद्रा मग पपील घट कासा ।
क्षए निर्णय बड़वाग्नि दशेंद्री देव चतुर्दश वासा ॥

---

१ इस ग्रन्थमें षट्देह को बर्णन है पर याको नाम पंचदेहका निर्णय याका कारण यहहै कि, हंसदेह को दूसरे देहन के साथन मिलाय अलग मानै है ।

और अहै ऋग्वेद बतायू अर्द्ध शुन्नि संचारा।
सत्यलोक विषयका अभिमानी विषयानंद हंकारा॥
आदि अंत औ मध्य शब्द या लखै कोइ बुधिवारा।
कहै कबीर सुनो हो संतो इति स्थूल शरीरा॥ १॥

संतौ सुक्षम देह प्रमाना।
सूक्षम देह अँगुष्ठ बराबर स्वप्न अवस्था जाना॥
श्वेत बर्ण उोंकार मात्रुका सतोगुण विष्णू देवा।
ऊर्ध्व सुन्न औ यजुर्वेद है कण्ठ स्थान अहेवा॥
मुक्ति सामीप लोक बैकुण्ठं पालन किरिया राखी।
मार्ग बिहंग भूचरी मुद्रा अक्षर निर्णय भाखी॥
आव तत्त्व को हं हंकारा मंदाअग्नी कहिये।
पंच प्राण द्वितीया पद गाइत्री मध्यम बाणी लहिये॥
शब्द स्पर्श रूप रस गंध मन बुद्धि चित हंकारा।
कहै कबीर सुनौ भाइ संतौ यह तन सूक्षम सारा॥ २॥

संतौ कारण देह सरेखा।
आधा पर्व प्रमाण तमोगुण कारा बर्ण परेखा॥
मध्य शून्य मकार मात्रुका हृदया सो अस्थाना।
महदाकाश चाचरी मुद्रा इच्छा शक्ती जाना॥
उदरा अग्नि सुषुप्ति अवस्थां निर्णय कंठ स्थानी।
कपि मारग तृतीय पद गाइत्री अहै प्राज्ञ अभिमानी॥
सामवेद पश्यन्ती बाचा मुक्त स्वरूप बखानी।
तेज तत्त्व अद्वैतानन्दं अहंकार निरबानी॥
अहैं बिशुद्ध महातम जामें तामें कछु न समाई।
कारण देह इती सम्पूरण कहै कबीर बुझाई॥ ३॥

सन्तौ महकारण तन जाना।
नील बरण औ ईश्वर देवा है मसूर परमाना॥
नाभि स्थान बिकार मात्रुका चिदाकाश परवानी।

मारग मीन अगोचर मुद्रा वेद अथर्बन जानी ॥
ज्वाला कल चतुर्थ पद गायत्री आदि शक्ति ततु बाऊ ।
आश्रय लोक बिदेहानंद मुक्ति साजोजि बताऊ ॥
नृणै प्रकाशिक तुरी अवस्था प्रत्यज्ञात्मतु अभिमानी ।
शीव अहंकार महाकारण तन इहो कबीरबखानी ॥ ४ ॥
संतौ केवल देह बखाना ।
केवल सकल देहका साक्षी भमर गुफा अस्थाना ॥
निराकाश औ लोक निराश्रय निर्णय ज्ञान वसेखा ।
सूक्षम वेद है उनमुन मुद्रा उनमुन बाणी लेखा ॥
ब्रह्मानंद कही हंकारा ब्रह्मज्ञानको माना ।
पूरण बोध अवस्था कहिये ज्योतिस्वरूपी जाना ॥
पुण्य गिरी अरु चारुमात्रुका निरंजन अभिमानी ।
परमारथ पंचम पद गायत्री परामुक्ति पहिचानी ॥
सदाशीव औ मार्ग सिखाहै लहै संत मत धीरा ।
कालेतीत कला सम्पूरण केवल कहै कबीरा ॥ ५ ॥
संतौ सुनौ हंस तन ब्याना ।
अबरण बरण रूप नाहिं रेखा ज्ञान रहित विज्ञाना ॥
नाहिं उपजै नाहिं बिनशै कबहूं नहिं आवै नहिं जाहीं ।
इच्छ अनिच्छ न दृष्ट अदृष्टी नहिं बाहर नहिं माहीं ॥
मैं तू रहित न करता भोगता नहीं मान अपमाना ।
नहीं ब्रह्म नाहिं जीव न माया ज्यों का त्यों वह जाना ॥
मन बुधि गुन इंद्रिय नाहिं जाना अलख अकह निर्बाना ।
अकल अनीह अनादि अभेदा निगम नीति फिरि जाना ॥
तत्त्व रहित रवि चंद्र न तारा नहिं देबी नाहिं देवा ।
स्वयं सिद्धि परकाशक सोई नहिं स्वामी नहिं सेवा ॥
हंस देह विज्ञान भाव यह सकल बासना त्यागे ।
नहिं आगे नहिं पाछे कोई निज प्रकाशमें पागे ॥

निज प्रकाशमें आप अपनपौ भूलि भये विज्ञानी ।
उनमत बाल पिशाच मूक जड़ दशा पांच इह लानी ॥
खोये आपु अपन पौ सब रस निज स्वरूप नहिं जाने ।
फिरि केवल महकारण कारण सूक्ष्म स्थूल समाने ॥
स्थूल सूक्ष्म कारण महा कारण केवल पुनि विज्ञाना ।
भये नष्ट ये हेर फेरमें कतौं नहीं कल्याना ॥
कहै कबीर सुनोहो संतो खोज करो गुरु ऐसा ।
ज्यहिते आप अपन पौ जानो मेटो खटका रैसा ॥ ६ ॥

इति पंच देह निर्णय ।

औ जब पांचौशरीर ते भिन्न अपने को मान्यो अरु आपनेको ब्रह्मरूप न मान्यो यह मान्यो कि, मैं साहबको अंशहौ यह जान्यो तब साहब याको हंस-शरीर देइहै । सो जैसे साहब अनिर्बचनीय रस रूप है ऐसे जीवो है रकार रूप साहब है मकाररूप जीव है न्यूनता येती है साहब स्वामी है, जीव सेवक है, साहब स्वतन्त्र है यह परतन्त्रहै साहब की मरजी ते सब काम करै है। जैसे गुण साहबके हैं तैसे याहूके हैं, जैसे साहब नहीं आवै जायहै ऐसे यहो नहीं आवै जायहै साहबके पासते । जैसे साहबकी सर्वत्र गति है ऐसे याहू की सर्वत्र गति है साहब के बराबरयाको भोगहै तामें प्रमाणव्याससूत्रम्॥ " भोग-मात्रसाम्यलिंगात् " तामें प्रमाण षट्दोहांवलीको शब्दभी कबीरजीका ॥ "तत्त्व भिन्न निस्तत्त्व निरक्षर मनो पवनते न्यारा । नाद बिंदु अनहद अगोचर सत्य शब्द निरधारा ॥" औ स्थूल शरीर पच्चीस तत्त्वको है पृथ्वी अप तेज वायु आकाश दश इन्द्री पञ्च प्राण मन बुद्धि चित्त अहंकार जीव । सो जाग्रत अवस्था में अनुभव होइहै औ ऋग्वेदहै प्रथमपद गायत्री । औ सूक्ष्मशरीर सत्रह तत्त्वकोहै पञ्चप्राण, दशइन्द्री मन, बुद्धि, सो स्वप्न अवस्थामें अनुभव होइहै औ यजुर्वेदहै द्वितीयपदगायत्री । औ कारण शरीर तीनितत्त्वको है चित्त अहंकार जीवात्मा सो सुषुप्ति अवस्था में अनुभवहोइहै सामवेद है तृतीयपद गायत्री । और महाकारण शरीर दुइ तत्त्व कोहै अहंकार जीवात्मा सो तुरीया-वस्था में अनुभव होइहै अथर्वणवेद है चतुर्थपदगायत्री है । जीव सूक्ष्मवेद

है नी ओंकार पञ्चमपद गायत्री है बचनमें नहीं आवैहै ॥४॥ पंचम पद गायत्री नाम वेदहै तामें प्रमाण ॥ "निद्रादौ जागरस्यांते यो भाव उपपद्यते ॥ तम्भावं भावयेन्नित्यमक्षयानंदमश्नुते"॥औ कैवल्य शरीर एक तत्त्वको है चित मात्र है औ जौन ब्रह्मको छठों शरीर मानि राख्यो सो निस्तत्त्व है सो वाको भ्रमहै, कुछबस्तु नहीं है । सो जो कोई रामनामको स्मरण करत साहबको जान्यो औ पांचो शरीरको त्यागकियो तब साहब हंसशरीर जीवको देइहै जो मनवचनमें नहीं आवै है । सो हंसशरीर अनिर्बचनीयहै रसरूप है वह निस्तत्त्वहूसे परेहै जब प्राकृत रसजोहै सोऊ ब्यंजनावृत्ति करिकै जानोपरैहै तौ अप्राकृत जो मनवचनके परेहै वाको कोई कैसेजानै । सो तौने हंसशरीरमें प्राप्त ह्वै कै साहबके पासजाइकै फिरिनहीं आवैहै । उहां मायामनादिकनकी पहुंचनहीं है सो साहबकहै हैं कि हे जीव ! हंसस्वरूप जो छठौं शरीर तिहारो सो हमारे पास है तू कहां मनादिकन में लगिकै बिगरे जाउहौ तुम हमारेपास आवो । और अर्थ इनको स्पष्ट है अंतमें कछु अर्थ खोले देइ हैं । सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि, षट जे हैं छयो शरीर तिनको ऐसा कहे झगरा है सो मेटो । जौने ब्रह्म प्रकाशमें तुम भरे रहहौ सो वाको छठौ शरीर आपनो मानो हौ सो तिहारो शरीर नहीं है, वामें परे तो पिशाचवत् उन्मत्तवत् ह्वै जाइहै जाको भूत लगै है औ जो उन्मत्त होइ है ताको यथार्थ ज्ञान नहीं होइ है । सो ऐसा गुरु करो जो साहबको बतावै तब आपनो छठा शरीर हंसस्वरूप पावोगे लोकमें जो साहब देइ है तौने इहां साहब कह्यो है कि, छठी तिहारीहौ जगा कहे छठौं शरीर हंसस्वरूप हमारी जगह में कहे हमारे पास है सो हमको जानोगे कि, वही ब्रह्म है तब हमारे दिये पावोगे जौन छठौं शरीर तुम मानिराख्यो है औ खोजौहो सो तिहारो नहीं है ताते तुम्हारो कार्य्य न सरैगो ॥ १ ॥

शब्द हमारा तुम शब्दका, सुनि मति जाहु सरक्खि ।
जो चाहो निज तत्त्व को, तौ शब्दै लेहु परक्खि ॥२॥

साहब कहै हैं कि, शब्द जोहै हमारा रामनाम तौनेही शब्द के तुमहौ सो रामनाम को सरेखिकै कहे बिचारिकै माया ब्रह्म में मतिजाहु । जो निज-

तत्त्वको चाहो कि, मैं कौन तत्त्व यथार्थहौं तो शब्द जो रामनाम ताको परखि लेउ, अनादि शब्द यही है । मेरे धाममें यह नाम मेरो सदा बनो रहै है जब आदि उत्पत्ति प्रकरण होइ है तब यही नाम लैके यहीको अर्थ वेदशास्त्र औ सब जगत् निकासिकै बाणी जगत की उत्पत्ति करै है राम-नाम को अर्थ मोमें रूढ़ है सो अर्थ बाणी गुप्तकै देइ है तौन अर्थ साधुजानै है कि, रकारजे हैं साहब तिनको अकार जो है आचार्य सतगुरु सो मकार जो है जीव ताको शरण करावै है सो तुम मकार तत्त्वहो ताको जानो चाहो तो शब्द जो है मेरो रामनाम ताको परखो । जो ककारके समीप मकार होइ तो वो मकार काम रूप सजै है औ जो दकारके समीप मकार होइ तो दाम रूप सजेहैं इत्यादिक नाना शब्द सजै हैं तहां तौने रूप ह्वैजाय है वतनी शुद्धता नहीं रहि जाय है । जब वहै मकार रकार के समीप सजै है तबहीं शुद्धता होइ है । ऐसे तुम मेरे समीप सजौहौ सो मेरे पास आवो मोको जानो तो तुमहूं शुद्ध ह्वै जाउ । जैसे रकार के समीप मकार सदा रहै है तैसे तुमहूं सदाके मेरे समीपि हो ताते मेरे समीप आवो औरे२ में न लगो । रकार के शरण मकार को अकार करावै तामें प्रमाण ॥ "रकारो रामरूपोयं मकारस्तस्यसेवकः । अकारश्रीमकारस्य रकारे योजनीमता ॥" इति शम्भु संहितायाम् ॥२॥

शब्द हमारा आदिका, शब्दहि पैठा जीव ॥
फूल रहनकी टोकनी, घोरा खाया घीव ॥ ३ ॥

साहब कहै हैं कि हमारा शब्द जो रामनाम सो आदि को है आदिहीते-यहि शब्द में जीव पैठा है सो शब्द रामनाम जीवके रहिबेको पात्र है; जैसे फूल के रहनकी टोकनी पात्र है । सो राम नामको लैकै निर्भय सुखपूर्वक बिचरै, कछू भय न लगै । तौने रामनामको सार जो अर्थ है सोई घी है ताको घोरे जे पशु हैं गुरुवा लोग अज्ञानी ते खाइलियो । अथवा पूर्व में छांछको घोरा कहै हैं जामें सार नहीं है ऐसे जे हैं छांछ गुरुवा लोग ते साहब को यथार्थ ज्ञान जो घी ताको खाइलियो कहे वाको और और अर्थ करिकै नाना मतनमें लगाइ दियो । जो रामनाम मोको बतावै है सो अर्थ भुलायदियो गुरुवा लोग बड़े घोर हैं येई संसारमें तोको डारि दियो है ॥ २ ॥

शब्द बिना श्रुति आंधरी, कहौ कहांको जाय ॥
द्वार न पावै शब्दको, फिरि फिरि भटका खाय ॥ ४ ॥

श्रीकबीरजी कहैहैं कि, श्रुति जो है सो शब्द जो है रामनाम ताके बिना आंधरी है । काहेते कि, रकार मकार श्रुति की आंखी हैं ताके बिना कहांको जाय । सो शब्द जो रामनाम है तौनेको द्वार नहीं पावै अर्थात् अर्थ नहीं जानै । रामनाम तो साहबमुख अर्थमें मन बचनके परे पदार्थ बतावै है और या श्रुति नेति नेति कहि बतावै है । याते रामनामको साहब मुख अर्थ नहीं कहि सकैहै । याते यामें परिकै जीव फिरि २ भटका खायहै । ज्ञान, भक्ति, बिज्ञान, योग; बतावै है फिरि फिरि नेति नेति कहि कहि देइहै, याते जीव भटकाखाइहै । उहां वस्तु कुछ नहीं पावै है जो रामनामको साहब मुख अर्थ जीव जानिकै लगावै तौ सब श्रुति लागि जायँ । औ सबके परे पदार्थ सो जानि जाहिं । काहेते बिना आंखी कोई नहीं देखै । जौनी तरहते राम नामते सब श्रुति लागिजायहैं औ अनिर्बचनीय पदार्थ मालूम होयहै सो पीछे लिखि आये हैं ॥ ४ ॥

शब्द शब्द बहु अंतर हीमें, सार शब्द मथि लीजै ॥
कह कबीर जेहि सार शब्द नहिं, धिग जीवन तेहि दीजै ५

जहां जहां अन्तर तहां तहां बहुत शब्द देखे हैं। औ तुम रामनामको अनिर्बचनीय है श्रुति की आँखी हैं या कहौ हौ सो कैसे होइगो ? एकशब्द - बोहू होइगो? सो या ऐसो नहींहै सार शब्दहै जब सब शब्दनको मथै तब बा जानि परै । सो श्री कबीरजी कहै हैं कि, जेहि को सार जो रामनाम सो नहीं मथिलियोहै, ताको जीवन संसार में धिगहै । "सारशब्द मतलीजै" जो यह पाठ होइ तौ सारशब्द रामनाम ताको मतिलेइ । और जे मतिहैं ते कुमतिहैं तेहिको छोड़िदे । रामनाम वर्णन सब श्रुति की आंखीं हैं तामें प्रमाण ॥ " आखर मधुर मनोहर दोऊ । वरण बिलोचन जन जिय जोउ "॥ १ ॥ "मुक्तिस्त्रीकर्णपूरे-र्मुनिहृदयवयः पक्षतीतीरभूमिः संसारापारसिंधोः कलिकलुषतमस्तोमसोमार्कविम्बे। उन्मीलत्पुण्यपुंजद्रुमललितदलेलोचनेचश्रुतीनां कामंरामेतिवर्णौशमिहकलयतां ंततंसज्जनानाम् ॥ ५ ॥

शब्दै मारा गिरि गया, शब्दै छाड़ा राज ॥
जिन जिन शब्द विवेकिया, तिनको सरिया काज ॥ ६॥

श्री कबीरजी कहै हैं कि शब्दजो रामनामतौनेको जगत्मुख अर्थमें वेदशास्त्र पुराण नानामतजे निकसे हैं तामें जो परचो सो गिरगया अर्थात् संसारमें परचो औ जिन जिन शब्द बिवेकिया कहे सब शब्दनते बिचारकारि सारशब्दजो रामनाम ताकोजानि लियो सोई संसाररूप राजको छोड़िदिये हैं औ तिनहीं को काजसरियाकहे सिद्धभयो है ॥ ६ ॥

शब्द हमारा आदि का, पल पल करै जो यादि ॥
अंत फलैगी माहली, ऊपरकी सब बादि ॥ ७ ॥

गुरुमुख। साहबकहैहैं हे जीवो! हमारा शब्द जो रामनाम सोई आदिको है अर्थात् याहीते प्रणव वेदशास्त्र बाणी सब निकसे हैं सो याको आदिकहे स्मरण जो पल पल कहे निरन्तर करैगो तौ अन्तमें फलैगी साकेत जो हमारो महलताको माहली होइगो बसैया होइगो अर्थात तहांको जाइगो और ऊपरके जे सब नाना मतहैं ते वादि कहे मिथ्या हैं अथवा और सब ऊपरके मत बाद विवादहैं॥७

जिन जिन संबल ना किया, अस पुर पाटन पाय ॥
झाल परे दिन पाथये, संबल किया न जाय ॥ ८ ॥

श्री कबीरजी कहै हैं कि, अस पुरपाटन जो या मानुष शरीर तौने को पाय कै, जिन जिन पुरुष संवल न किया कहे सम्यक् प्रकार बल न कियो अर्थात् मनादिकनको न जीति लियो, साहब को न जान्यो। अथवा संबलकहे जमा, सो परलोककी जमा रामनामको न जानि लियो। 'अथवा सन्बलकहे कलेवा सो जो कलेवा साधन लै न लियो अर्थात् भजन न कै लियो सो दिन अथये कहे शरीर छूटे झालिपरे अर्थात चौरासी लाख योनि में परचो अब सबल कियो नहीं जायहै ॥ ८ ॥

इहई सम्बल करिले, आगे विषमी बाट ॥
सरग बिसाहन सब चले, जहँ बनियां नाहिं हाट ॥ ९॥

इहईं कहे यहीं संसारमें सम्बल कहे कलेवा सम्पन्न करिले आगें। विषमी बाट कहे कठिन दुखदाई बाटको, सो श्री कबीरजी कहे हैं कि, आगे न जागे कौनी योनि में परैगो और वहाँ कछु किये होइगो कि नहीं । अथवा जो या कहो कि, स्वर्गमें विसाहन करि लेइँगे अर्थात् सौदा करि-लेइँगे अर्थात् वहैं साहबको जानन वारो कर्म करिलेइँगे । तो वहां न बनियां है न हाट है अर्थात् वह तो भोगभूमि है कर्म भूमि नहीं है स्वर्ग के शरीर से केवल मृत्यु लोकमें किये कर्मनको भोग होइहै कर्म करिवे को स्थानतो या मनुष्य शरीर औरे या मृत्यु लोकही है । ताते श्री कबीरजी कहै है हे जीवो ! यहांहीं सुकर्म करि लेउ ॥ ९ ॥

जो जानौ जिव आपना, तो करहु जीवको सार ।
जियरा ऐसा पाहुना, मिलै न दूजी बार ॥ १० ॥

हे जीवो! जो अपने स्वरूप को जानो तो जीव का सार जो सार शब्द तामें रकारके समीप मकार आपने स्वरूपको करौ अर्थात् साहबको जानि साहबको होउ ।सो हे जीवो !रा अर्थात् रामनाम ऐसो पाहुना दूजी बार ना मिलैगो । भाव यह है कि, याही मनुष्य शरीर में मिलैगो और कहीं ना मिलैगो ॥ १० ॥

जो जानहु पिव आपना, तो जानौ सो जीव ।
पानिपचावहु आपना, पानी मांगि न पीव ॥ ११ ॥

जो आपना पीव जे साहब हैं तिनको जानौ तो हम तुमको जानैं कि, तुम जीव हौ । पानिप जो शोभा सो जो आपनी शोभा (प्रतिष्ठा) चाहो तौ पानी जे गुरुवा लोगोंकी नाना वाणी है तिनको मांगिके नाँ पिउ अर्थात् गुरुवन ते अपने साहबको ज्ञान मत लेउ वे तो ठग हैं तुझे ठग लेइँगे ॥ ११ ॥

पानि पियावत क्या फिरो, घर घर सायर बारि ।
तृषावन्त जो होयगा, पीवेगा झख मारि ॥ १२ ॥

साहब कहैं हैं श्रीकबीरजीसे । हे कबीर ! मेरो उपदेश रूप पानी जीवन को पियावत घर घर का (क्या) फिरो हौ । सबके समुद्र भरो है अर्थात

सब अपनी २ वाणी और कल्पना में मस्त हैं । जो तृषित होइँगे अर्थात् मुक्तिको चाहैंगे तो तुम्हार उपदेश रूपपानी झख मारिके कहे लाचार ह्वै के आपै पियैंगे । समुद्रका खाराजल त्यागि देंगे ॥ १२ ॥

हंसा मोती विकानिया, कंचन थार भराय ।
जो जस मर्म न जानिया, सो तस काह कराय ॥ १३ ॥

श्रीकबीरजी कहै हैं कि, हे विवेकी जीवौ ! हे हंसो ! कंचन थार रूप जो तुम्हारे अन्त करनः तामें मोती रूप साहब को ज्ञान मोते भराओ अर्थात् मैं तौ तुमको उपदेश देऊंहौं तुम कहा बिकत फिरौ हौ । जौन जस पदार्थ होइ है तौने को तस न जानत है तौ वाको लैकै का करै ।

अथवा–कबीरजी कहै हैं हे हंसो ! हे जीवो ! मोती जो निर्मल शुद्धरूप आपना स्वरूप तौनेंको कंचन थार जो माया तौने में भरिके विकानिडारे अर्थात् कनक कामिनीमें लगाई कै मायाके हाथ बेचिडारे । सो जो जौने तराते आपने स्वरूपको न जानि सक्यो सो जाहिमें जैसौ लग्यो ताहिमें तैसो ह्वै अज्ञान भयो । अब कहा करै मायामें फंसिकै मरिगै ॥ १३ ॥

हंसा तुम सुवरण वर्ण, का वरणौं मैं तोहि ।
तरवर पाय पहेलि हो, तबै सराहौं छोहि ॥ १४ ॥

हे हंसा जीव ! तुम सुवरण जे मकार ताके बर्णहो, मैं तोंही का वरणौं अर्थात् तुमहूं मन बचनके परे हौ सो तरिवर जो या संसार ताको जब पाइके पहेलिहो कहे ठेलि जैहो अर्थात् संसार को दूरि करि दैहो तबही मैं तोको छोह करिके सराहौं गौ कि बड़े बन्धनमें बांधिके छूट्यो ॥ १४ ॥

हंसा तू तो सबल था, हलकी अपनी चार ।
रंग कुरंगी रंगिया, किया और लगवार ॥ १५ ॥

हे हंसा जीवो ! तुमतो सबल कहे सम्यक् प्रकार बलवाले थे (तेहोरो साहबौ सबलहै) परंतु अपनी चार कहे अपनी चालते हलुक कहे निबल ह्वै गयो काहेते कि रंग कुरंग जो या संसार है तौनेमें रंगिगै कहे राग करि लियो।

और राग करिकै और लगवार कहे नाना मतनमें जाइके नाना मालिक बनावतभै। धुनि यहहै कि, आपने स्वरूपको देखु ॥ १५ ॥

हंसा सरवर तजिचले, देही परिगै सुन्नि ॥
कहै कबीर पुकारिकै, तेई दर तेइ थुन्नि ॥ १६ ॥

हे हंसाजीव! विना साहबके जाने या सरवररूपी शरीर तजिकै जाउगे तब या देही सुन्नि परिजायगो अर्थात् मरिजायगी। सो श्री कबीरजी कहै हैं कि, हम पुकारिकै कहै हैं बिना साहबके जाने तेई दर तेई थूनी बने हैं अर्थात् नये तलायेमें लाठि गाड़ि जाइहै सो जहैं जायगो तहैं देहरूपी सरवरमें बासनारूपी दरमें कर्मरूपी थून्हि गाड़ि लेउगे। पुनि पैदा होइगो जनन मरण न छूटैगो ॥ १६ ॥

हंसा बक यक रँग लखिये, चरैं एकही ताल ॥
क्षीर नीर ते जानिये, बक उघैर तेहि काल ॥ १७ ॥

बकुला और हंस एकही रंग होइहैं और एकही ताल में चरै हैं परन्तु जब नीरक्षीर एक करिकै धरिदियो वे दूध पीलिये पानी रहिगयो तब जानिपरो हंसहै। औ नीर क्षीर जुदो कौन न भयो तब जान्यो कि बगुला है। ऐसे टीका कंठी माला टोपी सब बराबरै होइ हैं जब बिचार करनलग्यो मन माया ब्रह्म जीव इनते साहबको अलग मान्यो तौ जान्यो कि ये हंस हैं जो मनमाया ब्रह्म जीव ते अलग न कियो साहब को तौ जान्यो कि ये बगुलाहैं ॥ १० ॥

काहे हरिणी दूबरी, चरै हरियरे ताल ॥
लक्ष अहेरी एक मृगा, केतिक टोरो भाल ॥ १८ ॥

जीव कहै है कि हे हरिणी! बुद्धि तैं काहे दूबरी ह्वै रही है। संसार रूपी हरियरे तालमें चरिकें यह संसारतालमें लक्ष तौ अहेरी कहे मारनवारोहै सो तैं केतिक भार टारोगे मरिही जाइगो। सो हरियर है जौने ---- तौनेमें काहे

मकार है। सो जरदबुन्द कहे जरद रज स्त्रीको और बुन्द वीर्य्य पुरुषको ये दुन-हुनके संयोगते शरीररूप कूकुही जीवके लगि गई । जैसे खेतनमें कूकुही लगि जाइ है सो कबीरजी कहै हैं कि, याको भीतर विचार करि देखो तो यहि जीव को स्वरूप जानि परै । कूकुही छड़ाइबो जैसे कूकुहीते अन्ननाश ह्वै जाइ है ऐसे याहु शरीररूप कूकुही जीवके लगी है सो एकही शुद्धता को नाश कै देइ है ॥ २५ ॥

पांच तत्त्व लै या तन कीन्हा, सो तन लै कह कीन्ह ।
कर्महिके वश जीव कहतहै, कर्महिको जिय दीन्ह२६

या पांच तत्त्वनको लैकै या शरीर कियो सो या शरीर लैकै तैं कौन काम कीन्ह्यो, कर्मके बश ह्वैकै मेरो अंश जो जीव सो कर्महि को देत भयो । मेरो ह्वैकै अर्थात् कर्मैके बश ह्वैकै संसारी भो जीव सो कौन बड़ो काम कियो जीव कहवावन लग्यो ॥ २६ ॥

पांच तत्त्वके भीतरे गुप्त वस्तु अस्थान ॥
बिरल मर्म कोइ पाइहै, गुरुके शब्द प्रमान ॥ २७ ॥

पांच तत्त्वको जो या शरीर ताके भीतर जो गुप्तवस्तु जीवात्मा है ताको स्थान है ताको मर्म कोई बिरला पावै है कि, यह नित्य कौनको है यामें गुरु जे साहब हैं तिनका शब्द जो रामनाम सोई प्रमाण है । तौनेको अर्थ बिचार करै तौ या जानि लेहि कि जीव साहबैको है ॥ २७ ॥

अशुनत खत अड़ि आसनै, पिण्ड झरोखे नूर ॥
ताके दिलमें हौं बसौं, सैना लिये हजूर ॥ २८ ॥

अशुन कहे शून्य नहीं वा निराकारके परे अशून्य जो साहबको तख्त आडिकै तामें आसन कैकै अर्थात् ध्यानमें रत पिण्ड जो है शरीर ताके झरोखा जे हैं नेत्र तिनते साहबको जो कोई नूरदेखै कि, सब साहिबैको प्रकाश पूर्ण है सर्वत्र ताके दिलमें आपने परिकरते सहित बसौहौं ॥ २८ ॥

हृदया भीतर आरसी, मुखतो देखि न जाय ॥
मुखतो तबहीं देखिहौं, जब दिलकी द्विविधा जाय ॥ २९ ॥

हृदय भीतर जौ आरसी है तौनेमें आपनेरूपको जो मुख सो नहीं देखो जायहै वा बिचारकरिकै देखोजाइहै सो मुख जो तुम्हारो स्वरूप सो तबहीं देखिहौं जब मैं मोर या द्विबिधा जात रही कि, चित अचित रूप सब साहबैके देखो गे ॥ २९ ॥

ऊँचे गाँव पहाड़ पर, औ मोटे की बाँह ॥
ऐसो ठाकुर सेइये, उबरिये जाकी छाँह ॥ ३० ॥

जोगांव ऊँचेपर होइहै तहां बूड़ाकी भयनहीं होइहै, जाके जबरेकी बांह होइहै ताको डर नहीं होयहै ऐसे ऊँचो गांव जो साकेत, तहां साहब जे हैं तिनकी जहां बांह है ऐसे जे साहबहैं तिनकी बाहँकी छांहमें टिकौ जाते उबरौ । उहां मायाके बूड़ाको डर नहीं है इहाँ मन मायादिकनमें परेहौ इनमें कालते न बचोगे ॥ ३० ॥

ज्यहि मारग गे पण्डिता, तेही गई बहीर ॥
ऊँची घाटी रामकी, त्यहि चढ़ि रहे कबीर ॥ ३१ ॥

जौने मार्गमें राम नाम जाने बिना पण्डित गये, वही मार्ग ह्वै मूर्खौ जात भयें अर्थात् पापीपुण्यवांन सबवहीयमपुरी गये । कबीर जी कहै हैं कि, ऊँची घाटी जो रामनाम तामें आरूढ़ह्वैकै हे कायाके वीर कबीर माया के बूड़ाते बचिजाऊ ॥ ३१ ॥

हे कबीरतैं उतरि रहु, सँबल परोह न साथ ॥
सबल घटे औ पग थके, जीव बिराने हाथ ॥ ३२ ॥

गुरुवालोग मोको समझायो हे कबीर ! तैं ऊँचीघाटी जो राम नाम तौनेते उतरिरहु न तेरे सँबलकहे कलेवा है न परोहनकहे बाहन साथहै । सो सँबल औ पगु जब थाकैगो तब जीव तो बिराने हाथ ह्वै जाइगो । जो हमारेपास आवोगे तो ज्ञान योगादिक सम्बल बतावैंगे । अहंब्रह्मास्मि बाहनदेयँगे तामें आरूढ़ह्वैकै संसारसमुद्र पार ह्वै जाइगो ॥ ३२ ॥

घर कबीरका शिखर पर, जहां सिलि हिली गैल ॥
पांय न टिकैं पिपीलिका, खलक न लादे बैल॥ ३३ ॥

श्रीकबीरजी कहे हैं कि, हे गुरुवालोगो ! हमारा घर शिखर जो रामनामहै तामें है । तहांगैल चिकनीहै चींटी जो बुद्धिहै ताहीके पांय नहीं टिकैहैं अर्थात् वा मन बचनकेपरेहैं रामनाम औरस्वरूपहै तहां तुम पहुंचि न सकौ हौ ताते बिछुल गैल हौ उहां नाना मत शास्त्र रूप लाद लादे बैल जे हैं गुरुवा ते नहीं जाइ सकैहैं । अर्थात् सूक्ष्म बुद्धिहू नहीं जाइसकै हैं तौ तुम जे नाना मतनको लाद लादेहौ सो कैसे जाइ सकौहौ जहां मैं टिकौहौं तहांभारि तुमहूं पहुंचि सकतै नहींहौ कहां कलेवा देउगे कहां बाहन देउगे ॥ ३३ ॥

बिन देखे वहि देशकी, बातैं कहै सो कूर ॥
आपै खारी खात हौ, बेचत फितर कपूर ॥ ३४ ॥

श्रीकबीरजीकहैहैं कि, जौने शिखरमें हम चढ़े हैं तौने देशको बिना सतगुरु द्वारा देखे जे बात वहांकी कहैहैं ते क्रूरहैं । अर्थात् तुम हमको उतरन शिखरते बिना जाने कहौहौ सो तुमहीं क्रूरहौ । कैसे हौ आपतोखारी जे नाना मत तिनको ग्रहण कीन्हेहौ स्वच्छ उज्ज्वल कपूर जो है ज्ञान ताको बेंचत फिरौहौ। अर्थात् द्रव्य लैके चेला बनावत फिरौहौ । भाव यहहै कि, नामको भेद नहीं जानौ हमारे इहां कैसे पहुंचौगे ॥ ३४ ॥

शब्द शब्द सबको कहैं, वातो शब्द विदेह ॥
जिह्वा पर आवै नहीं, निरखि परखि कर लेह ॥ ३५ ॥

शब्द शब्द सबकोई कहैहैं परन्तु वा शब्द जो रामनामहै सो विदेहहै बिना शरीरका है जिह्वा में नहीं आवै है मन बचन के परे है ताको ज्ञानदृष्टिते निरखिकै पारिख करिलेहु ॥ ३५ ॥

परवत ऊपर हर बसै, घोड़ा चढ़ि बस गाउँ ॥
बिन फुल भौंरा रस चखै, कहु बिरवाको नाउँ ॥ ३६ ॥

पर्वत आगे जीव ब्रह्मको कहिआये हैं सो पर्वत जो ब्रह्म ताके ऊपर हर जो माया सो है अर्थात् सबलित ह्वैके संसारकी उत्पत्ति करै है । सो घोड़ा जो है मन तौनेमें गाउँ जो संसार है सो बसै है अर्थात् मनैमें सब संसारहै बिनफुल कहे या संसार तरु को फूल विषयहै सो मिथ्याहै कछु बस्तु नहीं है तौनेको रसभौंरारूप जीव चाखैहै सो वा बिरवाको नाउँ तो कहु ? नाम संसार मिथ्याहै जौन याको सांचनाम है ताको कहु। ताको तैं ध्वनी यहहै नहीं जानै है ॥ ३६॥

चन्दन बास निवारहू, तुझ कारण बन काटिया ॥
जिवत जीव जनि मारहू, मुयेते सबै निपातिया॥ ३७॥

हे चन्दन जीव ! अपनी बासना तू निवारणकरु । काहेते कि,मैं तेरे कारण जौने गुरुवनकी नाना बाणी नाना मतनमें तुम लाग्यो तिनकी बाणी रूप बन काटि डारयो अर्थात् खण्डन करिडारयो जाते तुमको ज्ञानहोय । सो बासना में परिकै जीवत जीव तुम अपनो न मारो । जो वामें लागि जाहुगे तौ तुम्हारो जीवत्व जात रहै गो मरिजाहुगे । वाही धोखामें लागिकै आपको ब्रह्म मानन लागोगे तब निपातिया कहे सब साहबके ज्ञानको निपात ह्वैजाइगो ॥ ३७ ॥

चन्दन सर्प लपेटिया, चन्दन काह कराय ॥
रोम रोम विष भीनिया, अमृत कहाँ समाय ॥ ३८ ॥

चन्दन जो जीवहै सो कहाकरै है । सर्प्प जेगुरुवालोगहैं ते लपटिरहे हैं सो उनकी बाणी को जो है बिष सो रोमरोम बिषे भेदि गयो है हमारो उपदेश जो अमृत सो कहां समाय ॥ ३८ ॥

ज्यों मुदादि समसानासिल, सब यक रूप समाहिं ॥
कह कबीर साउज गतिहि, तबकी देखि भुकाहिं ॥ ३९॥

जैसे मुदादि समसानसिल होइहै सो जो कोई देखै है ताको मुरैलैरूप देखिपरै है । सो कबीरजी कहै हैं कि, गुरुवालोगनकी बाणीरूप सिलमें तबकी कहे सृष्टिके आदिमें आपनीगतिदेखै हैं कि, तबहूँहम ब्रह्मरहेहैं या मानिकै भोकै हैं कि, हमहीं ब्रह्महैं । अथवा ज्यों मुदादि कहे मुदको आदि ब्रह्म ज्योंकहे कैसे जैसे मसानते सहित सिल पाथरकेभुतहा चौरा, जेई वा चौरामें बैठे हैं साभु-

आइहैं कहै हैं मैं फलानो भूतहौं आपनो रूप भूलिजाइहैं ऐसे जेई गुरुवालोगन-की बाणी उपदेश में परे हैं ताहीके एकरूप ब्रह्म समाइ है यही कहै हैं कि, मैहीं ब्रह्म हौं औ सब ब्रह्मही है एकरूप दूसरो पदार्थ नहीं है । सो श्रीकबीरजी कहै हैं साउज जो जीवहै ताकी तबकी गति गुरुवालोग कहै हैं तब तुम ब्रह्महीरहेहौ आपने अज्ञानते तुम जीवत्वको धारणकीन्हेहौ अबहूं जो ज्ञानकरो तौ ब्रह्मही ह्वै जाहु या मानिकै उपदेश जीव भोंकै है कि हमहीं ब्रह्महैं अर्थात् जैसे वा पण्डा भूतनहीं ह्वै जाइहै जीवहीरहै है ऐसे न ब्रह्म रहे हैं न ब्रह्म होइगो । भोंकै-पदके शक्तिते दूसरो दृष्टांत ध्वनित होइहै जैसे कुकुर कांचके मन्दिरमें आपनो प्रतिबिम्ब देखि भूंकै है ऐसे अपने भ्रमते गुरुवनकी बाणीरूप ऐनामें आपनो रूप ब्रह्महीदेखै हैं भूंकै हैं, यह नहींजानै हैं कि हम साहबके हैं या गुरुवालो-गनकी बाणी में ब्रह्मदेखोपरै है सो हमारे मनहींको अनुभवहै ॥ ३९ ॥

गही टेक छोडै नहीं, चोंच जीभ जरिजाय ॥
मीठो काह अँगारहै,ताहि चकोर चवाय ॥ ४० ॥

ब्रह्मवादिन की टेक कैसी है जैसे चकोर को ओठ जीभ जरै है परन्तु अँगारै को चाबै है ॥ ४० ॥*

झिलमिल झगरा झूलते, बाकी छुटी न काहु ॥
गोरख अँटके कालपुर, कौन कहावै साहु ॥ ४१ ॥

झिलमिल झगरा कहे दशमुद्रा करिकै बंकनालते खिरकीकेराह लैजाइकै वहज्योति जो झिलमिलाइहै तामें आत्माको मिलाइ देइहै पुनि षट्चक्रते झिलिकै गैवगुफा में जो ब्रह्मज्योतिहै तामें मिलिकै औ झगराकरिकै कहे कामक्रोधादि-कनको दूरिकरिकै पुनि संसारमें झूलिपरे है अर्थात् जबसमाधि उतरि आई तब-फेरि वही झगरामें झूलिपरे सो कर्मकीबाकी काहूकी नहीं छूटै है सब कर्म भोग-करै है । जो गोरखै कालपुरमें अँटके अर्थात् उनहींको जो काल खाइलियो तौ और दूसरो कौन शाहु कहावै है कौनकालते बच्यो है । जो बहुत जियो योगी

---

* और २ प्रतियों में ४१ वी साखी यह है । चकोर भरोसे चन्दके, निगले तप्त अँगार । कहै कबीर दाहे नहीं; ऐसीवस्तु लगार ॥ ४१ ॥

तो कल्पान्तमें कोई नहीं रहिजाय है जो कोई रहिगयो जलबढ़्यो तो जलमें मि- लिकै रहिगये अग्नि बढ़ी अग्नि में मिलिकै रहिजाइ है तो महाप्रलय में नहीं रहि जाइ है ॥ ४१ ॥

गोरखरसिया योगके, मुये न जारी देह ॥
माँसगली माटी मिली, कोरो माँजी देह ॥४२॥

जो कहौ गोरख तो बने हैं तो प्रलयादिकनमें वोऊ न रहैंगे। योग के रसि- या जे हैं गोरख ते ऐसो योग हजारन बर्ष कियो कि मरयोतौ देहको न जारयो मांसगलिकै माटीमें मिलिगयो तब कोरो कहे मांजी कहे शुद्धचर्म देह गोरखकी कढ़िआई आखिरपर वहौ प्रलयादिकनमें न रहैगी। सो उनकीदेह मुयोकहे ऐसो योग कियो कि जाते अज्ञान न रहिगयो संसार छुटि गयो संसारते मरिगये कै उनकी सूक्ष्मादिक देहौ मरयो पर न जरी जब देह न जरी तब पुनि २ संसार में आवते भये कल्पांतरनमें सो कल्पान्तरमें गोरख आदिदैकै योगी सब आवै हैं सो आगे कहै हैं ॥ ४२ ॥

बनते भगि बिहडे परा, करहा अपनी बानि ॥
वेदन करह क सों कहै, को करहाको जानि ॥ ४३ ॥

बन जो है संसार तौनेतें भागिकै बिहड़ जो है अटपट गैले ब्रह्म तामें परयो- जाइ। सो यह जीवको सदा स्वभावई है कि, प्रलयादिकनमें ब्रह्ममें गयो औ पुनि करहा कहे करहि आयो संसार में जन्म लियो शरीर धारणकियो। सो यहजीव संसार योगादिक साधन कियो। सो यह वेदन कहे पीड़ा जीव कासों कहै औ शरीर काहेते करहि आयो यह को जानै जैसे आम्रादिक वृक्ष करहि आवै हैं कहे फूलिआवै हैं फेरि फरै हैं आपनी ऋतुपाइकै तैसे जब महाप्रलया- दिकभये तब लीन होइ गयो जब उत्पत्ति प्रकरणभयो तब फेरि करहिआये कहे शरीर धारणकिये पुनि नानाकर्म करिकै नाना फल पावन लगे ॥ ४३ ॥

बहुत दिवस सों हीठिया, शून्य समाधि लगाय ॥
करहा परिगा गाड़में, दूरि परे पछिताय ॥ ४४ ॥

जीव बहुत दिन समाधि लगाइके शून्यमें ह्वैठिया कहे भ्रमत भये कि, हमारो जन्म मरण छूटै । सो हजारन कल्प समाधि लगाये रहे जब समाधि उतरी तब पुनि जैसेके तैसे ह्वैगये । अथवा हजारन बर्ष ब्रह्ममें लीनरहे जब सृष्टि भई तब पुनि संसाररूपी गाड़में परिके पछितान लगे । पछिताइबो कहा है कि वही बासना लगीरही ताते पुनि नाना साधन करनलगे कि हमारो जन्म मरण छूटै ॥ ४४ ॥

कबिराभर्मनभाजिया, बहुविधि धरियाभेरव ॥
साईंके परिचयबिना, अन्तररहिगोरेख ॥ ४५ ॥

कबीर जे हैं कायाके बीर यहजीव सो बहुत भांतिके वेष धरत भयो योगी ह्वैके योग करत भयो, ज्ञानी ह्वैके ज्ञान करत भयो, भक्त ह्वैके भक्ति करत भयो कर्मकाण्डी ह्वैके, कर्म करत भयो पै जिनको यहजीव अंश है ऐसे जे हैं साईं परमपुरुष श्रीरामचन्द्र तिनके बिना जाने याको भ्रम न भाजत भयो । जो मुक्त हू ह्वै गयो आपने को ब्रह्महू मानतभयो तो मूलाज्ञानरेख याके रहीगई काहेतें कि, यह जाको है ताको तो जान्यो नहीं योग कियो, ज्ञान कियो भक्ति कियो, औ नाना कर्म कियो, ताते पुनि संसारहीमें परचो, कौन रक्षा करै, रक्षकको तो बिसराइ दियो ॥ ४५ ॥

बिनडांड़े जग डाँड़िया, सोरठ परिया डांड ॥
बांटन हारा लोभिया, गुरते मीठी खांड ॥ ४६ ॥

यह संसारमें जीव विना काहूके डांड़े डांड़िया कहे सब डारि जाते भये । अर्थात् आपनेही कर्मते साहबको ज्ञान भूलिगये । औ सोरठ या देश बोली है । सोरठै फल देउ दशउ फल देउ सो ये सोरठै उपाय बतायो चारि वेद छः वेदांग छः शास्त्र, ई सोरठते ब्रह्मा साहब को उपदेश इनको कियो, पै ये सब अपने अपने कर्ममें लगिगये । उनको वा सोरठकहे सोरठै जौन ब्रह्मा उपाय बतायो तौन उनको डांड़परचो । डांड़ वह कहावै है जौन बन कटिके मैदान ह्वैजाय है सो उनको चारि वेद छः वेदांग छः शास्त्र ई जे सोरठ हैं ते डांड़परचो कहे वामें साहब को खोज न पायो । साहबको बिचार उनको दिखाइ न परचो । अनतही

अनतही लगावैहै वेद शास्त्रका अर्थ करि काहेतें न पायो कि बांटनहारोजो ब्रह्मा हैं सो लोभी रह्यो है कहे रजो गुणीहै सो बहुत चोराइकै कह्यो परोक्ष कह्यो जातें कोई न पावै । औ जे जानतभये ब्रह्माको उपदेश ते गुरु जे ब्रह्माहैं तिनहूंते अधिकह्वैगये अर्थात् गुरुगुरुही रह्यो चेला खांड ह्वैगयो अर्थात् गुरते मीठी खांड होइहै काहेते ब्रह्माते अधिक ह्वैगये कि, ब्रह्मा गुणको धारण किये हैं औ वे सगुण निर्गुणके परेकी बात जानै हैं ॥ ४६ ॥

मलयागिरिके बासमें, वृक्ष रहा सब गोइ ॥
कहिबेको चंदन भया, मलयागिरि ना होइ ॥ ४७ ॥

मलयागिरि चन्दनके वृक्षके बासमें सब बृक्ष गोइरहे कहे मलयागिरिकै बास सबमें आयगई, कछू मलयागिरि नहीं ह्वैगई । ऐसे तिनको साहबको ज्ञानभयो तिनमें साहबको गुण आइगये शुद्धह्वै गये कछू साहब न ह्वैगयो । जो कहो ब्रह्माते चारिवेद छःवेदांग छःशास्त्र जे सोरठहैं तिनते सबको उपदेश कियो ताको गुप्तार्थ और लोग काहे न समझ्यो एक साहबको जनैये काहेते जान्यो तोने को अर्थ दूसरी साखीमें दिखावै हैं ॥ ४७ ॥

मलया गिरिके बासमें, वेधा ढाक पलाश ॥
बेनाकबहूंन बेधिया, युगयुगरहियापास ॥ ४८ ॥

मलयागिरिके बासमें ढाक पलाश सब बेधि गये औ बेना जो है बांस सो युगयुग मलयागिरि के पासरहै है पै वामें बास न बेधत भई । अर्थात् और वृक्षन भीतर सार रह्यो तेहिते बास बेधिगई । औ बांसके भीतर सार न रह्यो ताते बास न बेधत भई । अर्थात् और जे अज्ञानिउ रहे तिनके अन्तःकरणमें शून्य नहीं रह्यो सो जो कोई उपदेश कियो तो साँच मानिकै समुझि लिये औ जिनके भीतर वह शून्य ब्रह्मधोखा घुसो रह्यो ते और ऊपरते खण्डन करनलगे और और अर्थ वेदशास्त्र के बनाइ लियो ते न बासि गये कहे उनको साहबको रंग न लग्यो चारों युगमें वेदशास्त्र सब पढ़तई रहे ॥ ४८ ॥

चलते चलते पगुथका, नगर रहा नौ कोस ॥
बीचहिमें डेरा परचो, कहौ कौनको दोस ॥ ४९ ॥

चलत चलत थकि गयो वह नगर नव कोश रह्यो। सो नवकोशमें एको कोश न चलि सक्यो, तौ दशौ कोश जहां साहबको मुकाम है तहां कैसे जाय-सके। दशौ कोश दशौ मुकाम रेखतामें लिखिआये हैं। सो बीचै में याको डेरा परयो बीचही में रहिगयो ताते जन्म मरण होन लग्यो, तो कौन को दोषहै। साहबके पास भर तो पहुँचिबोई न कियो। औ मुसल्माननके मतमें बहत्तर हजार परदाके ऊपर जब गयो तब नव परदा बाकी रहिजाय हैं तौनै कोश है दशयें में साहबहै ॥ ४९ ॥

झालि परे दिन आँथये, अन्तर परिगै साँझ ॥
बहुत रसिकके लागते, वेश्या रहिगै बाँझ ॥ ५० ॥

यहि साखी में अर्थ कोऊ यह कहै हैं कि, प्रपंच करतेकरते औ बिषय रस लेते लेते बुढ़ाई आई। औ वेद शास्त्र पुराण नानाबाणी पढ़तेपढ़ते औ कर्म्म उपासना तपस्या योग बैराग्य करते करते थके। आखिर गुरुपद पारिखकी प्राप्ति नहीं भई यकदिन मौत आइ पहुँची तब आँखिन पर झालिपरी कहे अँधियारीपरी। औ दिनकहिये ज्ञान सो गाफिली में डूबि गया। औ हमारो अर्थ यहहै ॥

झालि पर कहे जब दिन अथवा कहे आयुर्दाय घटी तब गिरिपरे कहे तब बीमारहुये इन्द्रिय शिथिलभई तब अन्तःकरणमें अँधियार ह्वैगयो कहे कुछ न सूझि परन लग्यो तब जैसे बहुत रसिकके संग ते वेश्या बांझ रहि जाइ है तैसे गुरुवा लोगनकी नाना प्रकारकी बाणी को उपदेश सुनि सुनिकै शून्य ह्वैगये। न ज्ञान भक्ति उत्पत्ति भई औ साहब न प्राप्त भये॥ ५० ॥

मन तो कहै कब जाइये, चित्त कहै कब जाउँ ॥
छा मासेके हीठते, आध कोश पर गाउँ ॥ ५१ ॥

मन संकल्प बिकल्प करिकै आत्मा को स्वरूप खोजै है कि आत्मा कैसो है? औ चित्त स्मरण करै है कि आत्माको स्वरूप कैसो है? सो छा मास जो हैं छयू शास्त्र तौनेमें हीठत कहे स्वरूपको खोजतई गये, पै वह गाउँ आ-त्माको स्वरूप मकार आध कोश में कहे अर्धनाम रकार ताके निकटही रह्यो पै खोजे न पायो ॥ ५१ ॥

गिरही तजिके भये उदासी, बन खँड तपको जाय ॥
चोली थाकी मारिया, बरइनि चुनि चुनि खाय॥ ५२ ॥

घर छोड़िकै जगत्ते उदास भये, वन पहारमें बैठे जाय। साहब को तो न जान्यो। शरीर औटिकै तपस्या करन लगे। सो या मारते कहे कन्दर्प्प तें चोली थकिगई कहे वीर्यकी हानि ह्वै गई जब बृद्ध ह्वै गये तब जैसे चोली बरइनि की थकिगई तब बरइनि सरे सरे पान निकारिडारै है नये नये पान चुनिचुनिकै खायहै। तैसे माया जो है बरइनि कहे ज्ञानभक्ति को बरायदेनवारी कहे दूरि करनवारी सो पुरान पुरान जे शरीर हैं तिनको निकारि डार्यो नये नये सुन्दर दैकै स्वर्गादिकनको सुख दियो। राजाबनायो, धनवान् बनायो भोग कराइ कराइकै उनको माया मृत्युरूप खाय लियो। ज्ञानी भक्तियोगी तपस्वी कोई नहीं बचै हैं जे साहब को जानै हैं ते बचै हैं ॥ ५२ ॥

राम नाम जिन चीन्हिया, झीने पिंजर तासु ॥
नयन न आवै नींदरी, अंग न जामै माँसु ॥ ५३ ॥

जिन रामनामको चीन्ह्यो है तिनके पिंजर झीने ह्वैगये हैं। पांचो शरीर उनके छूटिगये। यह स्थूल शरीर कैसो बन्यो है जैसे सूमा जरिजाय ऐंठनि बनी रहै जब यहौ शरीर छूटैगो तब हंस शरीर में स्थित ह्वैकै साहब के पास जाइगो सो इनको शररूपी पिंजरा झीन ह्वै गयो है औ नयनन में नींद नहीं आवै है कहे सोवायदेनवारी जो माया है सो उनको स्पर्श नहीं करै है औ अङ्गमें पुनि माँस नहीं जामै अर्थात् पुनि वै शरीर धारण नहीं करै हैं ॥५३॥

जे जन भीजे राम रस, विकसित कबहुं न रुक्ख ॥
अनुभव भाव न दरशै, ते नर सुक्ख न दुक्ख ॥ ५४ ॥

जे जन श्रीरामचन्द्रके रसमें भीजे रहै हैं ते सदा बिकसित रहै हैं. उनको हृदय कमल सदा प्रफुल्लितई रहै है रूख कबहूं नहीं रहै है। औ रूख जो है अनुभव भाव वह धोखा ब्रह्म सो उनको कबहूं नहीं दर्शै है। औ ते नरनको न संसारको सुख होइहै न दुःखहोइहै वै रामरसही में मग्न रहैहैं ॥ ५४ ॥

सुखे मग्ना दैत्याश्चहारिणा हताः। तज्ज्योतिर्भेदनेसक्ता रसिका हरिवेदिनः"। औ साहब के लोकमें जे हैं तिनकी सर्व्वत्र गति है तामें प्रमाण ॥ "समृत्युन्त रतिससर्वेषु लोकेषुकामचारो भवति "॥ इति श्रुतेः ॥ ६० ॥

दोहरा तो नव तन भया, पदहि न चीन्है कोइ ॥
जिन यह शब्द विवेकिया, क्षत्र धनी है सोइ ॥ ६१ ॥

सेव्य सेवक भाव मान्यो साहबको जान्यो तब दोहरा नव तन भया कहे हंस शरीर पायो, परा भक्ति पायो तौने पदकहे साहबके लोकमें प्रवेशकरै है सो वो लोकको नहींचीन्है । जो कहौ ब्रह्मरूप ह्वैके कैसे सेव्य सेवक भाव साहबते कियो तुम बनायकै कहौ हौ तौ श्रीकबीरजी कहै हैं जिन यहशब्द बिबेकिया कहे जिन साहब यह बिबेककारि शब्द बतायो सोई क्षत्रधनी है अर्थात् साहिबै मोको बतायो है मैं बनायकै नहीं कहौं हौं तामें प्रमाण ॥ **श्रीकबीरजीको** "ज्ञानी बेगि जाहु संसारा । अमी शब्द करि जीव उबारा ॥ पुरुष हुक्म जब जब मैं पावा । तब तब जीवको आनिचेतावा" ॥ गीतामेंभी लिखाहै॥"ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न कांक्षति । समस्सर्वेषु भूतेषुमद्भक्तिंलभतेपराम् ॥ भक्त्यामामभिजानाति यावान्यश्चास्मि तत्त्वतः । ततो मां तत्त्वतोज्ञात्वा विशते तदनन्तरम्" ॥ ६१ ॥

कबिरा जात पुकारिया, चढ़ि चन्दनकी डार ॥
बाट लगाये ना लगै, फिरि का लेत हमार ॥ ६२ ॥

श्री कबीरजी कहैहैं कि जब मैं चन्दनकी डारमें चढ़िकै कहे वह ब्रह्मकें परे ह्वैके साहबके लोकको जान लग्यों तब मैं पुकारयों औ अबहूं पुकारौं हौं सो पीछे लिखि आये हैं कि, बिरवा चन्दनते बासिजाइहै कछुचंदन नहीं ह्वै जाइहै ऐसे ब्रह्मज्ञान किये जीव शुद्ध ह्वै जाइहै कछु ब्रह्म न होइहै । सो ब्रह्म जो है चन्दन तौनेकी डार चढ़िकै अर्थात् ब्रह्मज्ञान करिकै शुद्ध ह्वैके वाको जानिकै पुकारयों हौं कि, साहबके होउ ब्रह्महीमें जनि अटकेरहौ । इतनाही नहीं है साहब ब्रह्मके आगे है सो सबको मैं बाट लगावों हौं कि, तुम साहब के होउ तुम हमारे लगाये उस राहमें जो नहीं लगतेहो तो हमरो कहाजायहै ।

अथवा हम जौनचाल वतावैं हैं तौने चाल नहींचलते हो औ हमारो नामलेतेहो कि, हम कबीरपंथी हैं। सो लम्बी टोपी दीन्हे औ बिना छिद्रको चंदन दिये औ बहुत साखी शब्द कण्ठ करलिये हमारे फिरका न पावोगे मतको न पावोगे यमके धक्काते न बचोगे। तामें प्रमाण॥ "हमारा गाया गावैगा । अजगैबी धक्कापावैगा॥ मेराबूझायबूझैगा । सोतीनलोकमेंसूझैगा" ॥१॥ कबीर की साखी शब्दी पढ़िकै और बितण्डाबाद अनर्थ करनेलगे औ परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको वेदशास्त्रको झूठकरनलगे आपने जीवै को सत्य करनलगे ते यमको धक्का पावै चाहैं । औ जे कबीरकी साखी बूझिकै औ परमपुरुष श्रीरामचंद्रको अंशहै जीव श्रीरामचंद्र याके रक्षकहैं ऐसो जे बूझ्यो ते तीनलोकमें सूझबई करैंगे काहेते उनके रक्षक परमपुरुष श्रीरामचंद्र तो बनेई हैं सर्वत्र रक्षा करिलेइहैं ॥ ६२ ॥

सबते सांचा है भला, जो सांचा दिल होइ ॥
सांच बिना सुख नाहिं ना, कोटि करै जो कोइ ॥६३॥

जो आपना साँचादिलहोइ तो सबते साँचे जेपरमपुरुष श्रीरामचंद्र औ उनहींको अंशजीवहै औ उन्हींको मैं साँचो दासहौं यह मत सबते साँचहै सोईभलाहै। सो यह साँच मत बिना सुख काहूको नहीं है कोटिन उपायकरै । औ श्रीरामचंद्र सत्यहैं औजीव सत्यहै औ जीवको औ श्रीरामचद्रको भेदसत्यहै तामेंप्रणाम ॥ "सत्यंभिदः सत्यंभिदः" ॥ इत्यादि औ श्रीकबीरजीकी साखिहूको प्रमाण ॥ "सत्य सत्य समरथ धनी सत्य करो परकाश । सत्यलोक पहुँचावहू, छूटै भवकी आश ॥ ६३ ॥

साँचा सौदा कीजिये, अपने मनमें जानि ॥
साँचे हीरा पाइये, झूठे मूरौ हानि ॥ ६४ ॥

आपनें मनमें पारिखकै लीजिये तब साँचा सौदा कीजिये कहे ऐसी खानि खुदाइये जाते साँचे हीरा पाइये वही में कच्चे हीरा निकसै हैं तिनको छाड़िदीजिये । ऐसे वेदपुराण खानिहैं तिनमें साहबको मत निकासि लीजिये यह साँचो सौदा कीजिये और मतनको त्यागि दीजिये काहेते झूठ मत मैं लागे आपनो स्वरूप जो है साहब को अन्त मूर ताकी हानि ह्वैजायहै अर्थात् भलिजायहै॥ ६४॥

सुकृत वचन मानै नहीं,आपु न करै विचार ॥
कहैं कबीर पुकारिकै, सपन्यो गो संसार ? ॥ ६५ ॥

सुकृतसाहब अथवा सुकृतसन्त अथवा सुकृत बचन जो मैं कहौहौं कि साहबको भजनकरो सो नहीं मानै हैं जो मनमें आवै है सो विचारकरै हैं । सो कबीरजी पुकारिकै कहहैं का उनको स्वप्न्यो में संसार गयो ? अर्थात् स्वप्नेहूमें संसार नहीं गयो यह काकुहै ॥ ६५ ॥

लागी आगि समुद्रमें,धुआँ प्रकट नहिं होइ ॥
की जानै जो जरि मुवा, की ज्यहि लाई होइ ॥ ६६ ॥

समुद्रमें आगिबड़वाग्नि लगी है औ वाको धुआँ नहीं प्रकट होइहै सो वाको सो जानै है जो वामें जरिजाय कि जाकी वह बड़वाग्नि लाई कहे लगाई होय सो जानैं अर्थात् संसारमें मायाब्रह्म की अग्नि लगिरही है ताको वही जानै जाकोज्ञान भयोहोय या समझैकि माया ब्रह्मकी अग्निमें हम जरेजाय हैं । अथवा सो जानै जाकी अग्नि बनाई है संसार रच्यो है ॥ ६६ ॥

लाई लावनहारकी, जाकी लाई पर जरै ॥
बलिहारी लावन हारकी, छप्पर बाचै घर जरै॥ ६७ ॥

यहअग्नि किसकी लगाई है ताकेलायेते सगुणनिर्गुण जेदोनों परहैं ते जरै हैं औ घरजे हैं पांचों शरीरते जरिजाते हैं तामें प्रमाण ॥

श्रीकबीरजीको पद ।

" अबतौ अनुभव अग्निहि लागी । घेरि घेरि तन जारन लागी ॥
यह अनुभव हम कासों कहिये बूझै कोउ बैरागी ॥
ज्येठरी लहुरी दोनों जरिया जरी कामकी बारी ।
अगम अगोचर समुझि परै नहिं भयो अचम्भौ भारी ॥
सम्पति जरी सम्पदा उबरी ब्रह्म अगिनि पसारी ।
कहै कबीर सुनो हो सन्तौ बड़ी सो कुशल परी ॥ ६७ ॥

बुन्द जो परा समुद्रमें, सो जानै सब कोइ ।
समुद्र समाना बुन्दमें, बूझै बिरला लोइ ॥ ६८ ॥

यहब्रह्म ईश्वर माया आदिदैकै जो संसारसागरहै तामें बुन्द जो जीवहै सों परचो या सबै जानिहैं कि जीव संसारी ह्वैगयो है वेदशास्त्रमें सर्वत्र लिखैहै अरु यह सिगरो संसारसमुद्र बुन्दरूप जीवमें समायजाय है अर्थात् ईश्वर मायाब्रह्ममय जो संसार ताको जीवही अनुभव करि लियोहै सो जबजीव याभांतिते अनुभवत्यागै कि बिषय इंद्रीमें इंद्रीमनमें मन चित्तमें चित्त प्राणमें प्राण जीवात्मामें लीनकै देद तब संसारसागर बुन्दरूप जीवमें समायजायहै अर्थात संसार मिटिजायहै जीव साहबको जानि जाय है ॥ ६८ ॥

जहर जिमी दै रोपिया, अमि सींचै सौ बार ॥
कबिरा खलकै ना तजै, जामें जौन बिचार ॥ ६९ ॥

जिमीमें जहर को थलहादैकै जो बीज बौवे है सो वामें जो सैकड़ों बार अमृतौ सींचै तो वहि बीजा में जहरको असर आयबोई करैगो तैसे यह खलक कहे संसारमें मायाकी जिमी है विषय को थलहा है ताते केतिकौ कोई उपदेश करै परन्तु मायाको असर कबिरा जे जीव हैं तिनके आयही जाय है जोई बिचारआवै है सोई करै हैं सो संसार नहीं छोड़ैं ॥ ६९ ॥

दौकी दाही लाकरी, वाभी करै पुकार ॥
अबजो जाउँ लोहार घर, दाहै दूजी बार ॥ ७० ॥

दावानलकी दाही कहे जरी जो लकरी है सोई लाई भई वहै पुकारिकै कहै है कि अब जो लोहारके घरजाउं तो दूजी बार लोहार मोको दाहै कहे जारै । सो दावाग्नि जोहै ब्रह्माग्नि तौनेते जो सम्पूर्ण कर्म जरिहुगे तौ कोयला रहिजायहै कहे वहै कैवल्य शरीर रहिजायहै । सो कहै हैं कि, जो अब लोहार जे सतगुरु हैं तिनके इहां जाउं तौ कैवल्यौ शरीर छूटै मुक्त ह्वै जाउँ अर्थात जो साहब को न जान्यो औ कर्म सब जरिगये तो कैवल्य शरीर रहिगयो अर्थात् सब संसारहीमें आवैहैं । जो कैवल्य शरीर छूटै तो हंस शरीते मुक्त ह्वै जाय काहेते कर्मनके जरे कैवल्यशरीर नहींछूटैहै ॥ ७० ॥

विरहकि ओदी लाकरी, सपचै औ गुंगुआय ॥
दुखते तबही बाचिहौ, जब सगरो जरिजाय ॥ ७१ ॥

बिरहकी जरी लाकरी है अर्थात् याको साहब को बिरहभयो है सोवह बिर-हते ओदी है याहीते सपचै है औगुंगुआयहै नानादुःखपावैहै सो जब पांचौशरीर जरिजायहैं हंसशरीरपाय साहब के पासजायहै तब दुःखते बचैहै । जो कहौ इहांतो सगरोशरीर को जरिजायबो कह्यो हंस शरीरको जरिबो काहे न कह्यो तो हंसशरीर याको न होय वा साहबके दिये मिलै हैं त्यहिते याहीके पांचौ शरीर जबजरैहैं तब सतई जगह भूमिकाते नाघिकै आठई भूमिकामें जायहै तब चितमात्र रहिजायहै तब साहब हंसशरीर देइहैं तामें टिकिकै साहबके पासजा-यहै सो पाछे लिखि आये हैं ॥ ७१ ॥

बिरह बाण ज्यहिं लागिया, औषध लगत न ताहि ॥
सुसुकि सुसुकि मरि मरि जियैं, उठै कराहि कराहि ॥ ७२ ॥

साहबको बिरहरूपीबाण जाकेलग्यो अर्थात जिनको यहजानिपरयो कि हमतें साहबते बिछोहुह्वै गयोहै ते बिरहवारनको ज्ञान योगादिक औषध नहींलगै है बिरहबाणाग्निते तप्त जरै है मरिमारि जियैहै । याजो कह्यो सो बिरहाग्निते जरै है स्थूलशरीरको जब अभिमान छूट्यो तब सूक्ष्मशरीरमें जियो, जबसूक्ष्म शरीर छूट्यो तब कारण शरीरमें जियो, जब कारणशरीरछूट्यो तब महाकारण शरीरमें जियो, जब महाकारण शरीर छूट्यो तब कैवल्यशरीरमें जियो, यही मरिमरिजीबोहै । औ तहौं कराहि कराहि उठैहै कहे एकौ शरीर नहीं आछें लगै हैं ॥ ७२ ॥

सांचा शब्द कबीरका, हृदया देखु बिचार ॥
चितदै समझै मोहिं नहिं, कहत भयल युगचार ॥ ७३ ॥

साहब कहै हैं कि साँचाशब्द जो कबीरका राम नाम ताको हृदयमें बिचा-रिकै देखु तो तैं चित्तदैकै नहीं समझै है । मोको चारोंयुग वेद शास्त्रमें कहत-भयो । औ **कबीरजे हैं तेऊ चारोंयुगमें कहतआये हैं** । सतयुगमें **सत्यसुकृत** नामते त्रेतामें **मुनीन्द्रनामते** । द्वापर में **करुणामय** ना-

मते । औ कलियुगमें कबीर नामते एक रामनामै को उपदेशकियो सो जो तैं वह रामनामको जानते तो तेरे समीप मोको आवननपरतो हंसशरीरदै अपनेपास लैआवतो ॥ ७३ ॥

जो तू साँचा बानियाँ, साँची हाट लगाउ ॥
अंदर झारू दैकै, कूरा दूरि बहाउ ॥ ७४ ॥

हेजीव! जो तैं अपने स्वरूपको चीन्है तो तैंसाँचा बानियाँ है सो साँची हाट-लगाउ कहे साँचे जे साहब तिनकोजानु औ उनके नामरूप लीलाधाम सब साँचेहैं तिनकीहाट लगाउ कहे स्मरणकरु । औ अन्दरमें झारूदैकै विषय बासना औ नाना मत जे कूरा हैं तिनको दूरि बहायदे तू साँचा है साहबको है असाँचेन मान लागु ॥ ७४ ॥

कोठी तौ है काठकी, ढिग ढिग दीन्ही आगि ॥
पण्डित तो झोलाभये, साकठ उबरे भागि ॥ ७५ ॥

कोठीजे हैं चारौ शरीर ते तो काठकी हैं जरन वारी हैं ज्ञानाग्नि ढिग ढिग उनके लगी है । वेदशास्त्र पुराण साहबको बतावै हैं सो जे पण्डितरहे ते सारासारको विचारकर साहब जे सार तिनको जान्यो ते उसअग्निमें परिकै झोलाह्वैगये । ये कहे उनके सबशरीरजरिगये । अर्थात् संसारते मुक्तह्वैगये । औ साकठ जे हैं शाक्तते भागिकै उबरेकहे जो वेदशास्त्र साहबको प्रतिपादनकरै है ताके डांड़े नहीं गये खण्डन करनलगे उनसों भागिकै संसारमें परे मायामें लपटे हैं मायैको स्मरण करनलगे ॥ ७५ ॥

सावन केरा मेहरा, बुंद परा असमान ॥
सब दुनियाँ वैष्णव भई, गुरू न लाग्यो कान ॥ ७६ ॥

जैसे श्रावणके मेहको असमान बुन्द परै है तैसे सब दुनिया वैष्णवहोत भई । सब बीज मन्त्र लेत भये जैसे लोक में को गुरु हजारनचेला एकैबार बैठायकै मन्त्र गोहरायदेय हैं याही भाँति श्रावण कैसोमेह सबको मन्त्रदेइ हैं चेला-मन्त्रलेइहैं । याही रीति गुरुवालोग उपदेश करतभये कोटिन बैष्णवहोत भये

गुरु कबै कानलग्यो? अर्थात् नहीं लग्यो। अरु गुरुतो वाको कहै हैं जो अज्ञानको नाशकरै सो जो चेलाको अज्ञान न नाशभयो तौ गुरुचेला दोऊ नरकको जायहैं तामेंप्रमाण ॥ "हरैं शिष्य धन शोक न हरहीं। ते गुरु घोर नरकमें परहीं ॥" सो जो वो चेलाको अज्ञान दूरि न कियो तो कौन गुरु है औ जौन गुरुते ज्ञानलै अज्ञान न नाशकियो तो वह कौन चेला है अर्थात् वह गुरुनहीं है कायरक्रूर है और वह चेलानहीं है टूट मसखराहै और जो आज्ञानको नाशै सोई गुरुहै तामेंप्रमाण ॥ "अज्ञानतिमिरान्धस्यज्ञानाञ्जनशलाकया। चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः" औ जो संसार दूरि नहीं करै है सो गुरुनहीं है तामेंप्रमाण ॥ "गुरुर्न स स्यात् स्वजनोन स स्यात् पिता न स स्याज्जननी न सा स्यात्॥ दैवन्न तत्स्यान्नृपतिश्च स स्यान्न मोचयेद्यस्समुपेतमृत्युम् ॥" श्रीकबीरजीकी गुरुपारख अंग की साखी॥ "गुरू सीख देवे नहीं, चेला गहै न खूट। लोक वेद भांवे नहीं, गुरु शिष्य कायर टूट" ॥७६॥

ढिग बूड़ा उसला नहीं, यहै अँदेशा मोहिं ॥
सलिल मोहकी धारमें, क्या निंद आई तोहिं ॥ ७७॥

साहब कहै हैं कि हे जीवो! तुम सब संसार सागर के तीरहीं में बूड़िगये एकहूबार न उसले,यहै मोको अँदेशाहै या संसारसागरके मोहरूपी सलिल धारमें क्या तोको नींद आई है भला एक बारतो मूड़निकासि उसलि मोको पुकारतो तौ मैं तोको पारही लगावतो सर्वत्र पूर्णमैं बनोहौं तैं मेरे ढिगहीं बूड़ो जातोहै अबहूं जो जानतो मैं पारही लगाय देहुं ॥ ७७ ॥

साखी कहैं गहैं नहीं, चाल चली नहिं जाय ॥
सलिल मोह नदिया बहै, पायँ नहीं ठहराय ॥७८॥

कबीरजी कहै हैं कि साखीतो कहै हैं औ जो मैं साखी कहो है ताको गहैं नहीं हैं वाको विचारै नहीं हैं। औ जो मैं चाललिख्यो है सोऊ नहीं चलीजाय संसाररूपी नदियामें मोहरूपी सलिलबैह है तामें पांवै नहीं टहराय जीव विचारा क्याकरै या साहब सों अर्जकै जीवको क्षमापन करावै है ॥ ७८ ॥

कहता तो बहुता मिला, गहता मिला न कोइ ।
सो कहता बहि जानदे, जो नाहिं गहता होइ ॥ ७९ ॥

साहब कहे हैं याही भांति कहता तो बहुत मिल्यो गहता कोई नहीं मिलैहै सो जो कोई गहता न होय ताको तैं बहिजानदे तोको कहापरी है ॥ ७९ ॥

एक एक निर्वारिया, जो निरवारी जाय ॥
दुइ दुइ मुखको बोलना, घने तमाचा खाय ॥ ८० ॥

तामें पुनि कबीरजी कहै हैं कि हेसाहब! याको जीवको दोष नहीं है एक२ जो निरवारतो तौ वेद शास्त्र ते याको निरवार ह्वैजातो अर्थात् जो एकमालिक आपही ठहराय देतो तौ जीव गहिलेतो । दुइदुइ मुखको बोलना वेद शास्त्रको अर्थात् कहीं ब्रह्मको, कहीं ईश्वरको, कहीं जीवको, कहीं कालको, कहीं कर्मको मालिक बतायो सो या दुइमुख के बोलेते जीवघने तमाचा खायहै तुम को नहीं जानिसकै ॥ ८० ॥

जिह्वाको दै बंधनै, बहु बोलना निवारि ॥
सो परखी सों संग करु, गुरु मुख शब्द विचारि ॥ ८१ ॥

सोकबीरजी कहै हैं कि हेजीव! मैं साहबसों बिनती करिलियो है सो तुम यहिराह चलो तुम्हारो उबार साहब करिलेइगो आपनी जिह्वाबंधनकरो असत् वाक्य न बोलनेपावे एकरामनामहीं कहो औनाना मत जोकहौ हौ सो कहिबो निवारि देउ । औ जौन सबमतनते पारिखकरिकै साहबको ठहरायो होय ऐसे पारखीको संगकरु औगुरुमुख जोशब्दहै ताको तू बिचारकरु काहेते साहब या कह्यो है ॥ "अबहूं लेहुँ छुड़ाय कालसों जो घट सुरति सँभारै" ॥ सो तैं सुरतिसँभारि साहबमें लगायदे अनत न जानदे साहब तोको संसार सागरतें उबारिही लेइँगे ॥ ८१ ॥

जाकी जिह्वा बंद नहिं, हृदया नाहीं सांच ॥
ताके संग न लागिये, घालै बटिया कांच ॥ ८२ ॥

जाकी जिह्वा बंद नहीं है जौने मतको चाहै तौनेन मतको प्रतिपादन करै है औजिनके हृदयमें साहबके नामरूपादिक नहीं हैं तिनके संग कबहूं न लागिये वे कच्चे हैं उनके संग लागेते संसारमें परौगे ॥ ८२ ॥

पानी तो जिह्वै ढिगै, क्षण क्षण बोल कुबोल ॥
मन घाले भरमत फिरैं, काल देत हींडोल ॥ ८३ ॥

पानीरूप जो बानी है सो याके जीभके ढिगै है छिन छिनमें कुबोलई बोलबोलै है असतबाणी बोलि २ बानीरूप पांनीमें भूड़िगयो अथवा ब्रह्ममायाकी आगी बुझावनवारो पानी याके जीभहीके ढिगहै सो नहीं कहै है छिन छिन कुबोलही बोलै है सो मनके घालेकहे फेरि संसारमें भरमत फिरै है काल जो है सो याको हिंडोल रूप शरीर दियाहै सो झूलत फिरै है कबहूं मानुष होय है कबहूं पशु पक्षी इत्यादिक शरीर धारण करै है ॥ ८३ ॥

हिलगैं भाल शरीरमें, तीर रहीहै टूटि ॥
चुम्बक बिन निकसैं नहीं, कोटि पहन गये फूटि ॥८४॥

जिन मतनमें श्रीरघुनाथजी नहीं मिलै हैं तेई मतनके बाण याके लगै हैं नाना कुमतिरूपी गाँसी याके अटकी हैं सो रामनाम चुम्बक बिना वे नहीं निकसै हैं ॥ ८४ ॥

आगे सीढ़ी साँकरी, पाछे चकना चूर ॥
परदा तरकी सुन्दरी, रही धका दै दूर ॥ ८५ ॥

साहबके यहां की गैल बहुत साँकरी है कोई कोई पावै है औ पाछे संसारमें गिरै तौ चकनाचूर ह्वैजाय परदातरकी सुन्दरी जो माया सो जो को साहबसों लगनलगावन लागैहै ताको धक्का देइहै औ जो कोई साहबके सम्मुखभयो वही राह चढ़्यो तेहिते दूरिरहै है धुनि या है। कि, जो वाके जायगी तौ गैलसाँकरी है दूसेर की समाई नहीं है पीसिजायगी यहडरैहै ॥ ८५ ॥

संसारी समय विचारिया, क्या गिरही क्या योग ॥
अवसर मारो जात है, चेतु बिराने लोग ॥ ८६ ॥

क्या गिरही कहे गृहस्थ औ क्या योमवारे कहे योगी ज्ञानी ते श्रीरामचन्द्र को छोड़ि छोड़ि और औरसाहब बिचारे हैं ते सब संसारीसमय बिचारते हैं परमारथ कोई नहीं बिचारे हैं अर्थात् संसारहीमेंरहे हैं अर्थात आपने इष्ट देवतन के लोकगये अथवा ब्रह्म में लीन भये ज्योतिमें लीनभये पुनि संसार में आयगये सो हे जीव! तैं बिरानाहै साहबको है और काहूको नही है और मतनमें लागे तैं न छूटैगो। जौनजाको होयहै तौन ताहीके छुड़ाये छूटै है सोया मानुष शरीर पायकै अवसर मारो जायहै चेतुतौ तैं परमपुरुषश्री रामचन्द्रको है तिनहींकेछुड़ाये संसारते छूटैगो। औ संसारी देवतनको कहा परी है जो आपनेते छुड़ायकै संसारते छुड़ावैंगे वे तौ और संसारही में डारैंगे ॥ ८६ ॥

संशय सब जग खंधिया, संशय खँधै न कोय ॥
संशय खंधै सो जना, जो शब्द विवेकी होय ॥ ८७ ॥

संशय जो है मनको सङ्कल्प बिकल्प सो सब जगको खँधाइ लियोहै कहे फँदाय लियो है औ संशय जो है मनको सङ्कल्प विकल्प ताको कोई नहीं खँधि सकैहै अर्थात् मनको सङ्कल्पविकल्प काहूको नहीं छूटै है जो साहबके शब्द रामनामको अर्थ बिचारत रहे हैं सोई संशयको खँधिसकै है अर्थात् ताहीके मनको सङ्कल्पविकल्प छूटै है, संशय छूटिबे को उपाय याहीमें है ॥ ८७ ॥

बोलनाहै बहु भाँतिके, नयन कछू नहिं झूझ ॥
कहै कबीर बिचारिकै, घट २ बाणी बूझ ॥ ८८ ॥

सो बोलना तो बहुत प्रकारके हैं कहे बहुत प्रकारके शब्दहैं बहुत प्रकारके मतहैं तिन मतनमें ज्ञान नयनते सार पदार्थ जो जनन मरण छुड़ावे सो कछू न सूझतभयो। सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि तैं बिचारिकै तौ देखु येजे बाणी ते नानामत घटघटते निकसै हैं ते मनैके सङ्कल्प विकल्पते हैं, सो तौनेते संकल्प विकल्प मनको कैसे छूटैगो येतो मनबचनमें है। वह घटघटकी बाणी तो झूठकी कहांते निकसीहै वह बाणीको मूल औ मनबचनके परे ऐसो जो रामनाम ताको बिचारकरि जानैगो तबहीं छूटैगो। यह सब बाणीको मूल रेफ है सो नाभि स्थानमें है तहाँते बाणी उठै है सो जो मूल है सो तो साहबको

बतावै है रामनामही प्रथम प्रकटकरै है । औमूलाधार चक्रमें मूलजो रामनाम है मनवचनकेपरे त्यहिते जो अनुसार भयो बाणीको ताहीको आभास परा बाणी प्रकट भई रेफ, ताहीते अकार जब जारयो तब रकार रूप हृदयमें पश्यन्ती प्रकट होइ है। औ फेरि जब एक अकार और आयो तब कण्ठ में मध्यमा प्रकट होइहै।औ पुनि जब बैखरीमें एक अकार और प्रकटभयो जब ओठलग्यो तब व्यंजन मकार भई तब वहै मन बचन के परे राम नाम सो आपने रूप को आभास बैखरी में प्रकटकरै है सोई प्रथमभी कबीरजी लिख्यो कि ॥ " रामनाम लै उचरीबाणी " ॥ सो प्रथम याको प्रतिलोम क्रमते जप करत चारिउ बाणी को स्वरूप जानै औ फेरि अनुलोम क्रमते रामनाम को उच्चारकरै घण्टा नाद वत या भांतिते जो जपकरै तौ जानै कि,मन बचनके परे जो रामनाम ताको आभास जो रामनाम है सो प्रथम याहीको लै कै बाणी उचरी है । फेरि प्रणवादिक मन्त्र भये हैं यही घटघट बाणी को मूल तैं बूझ औ मन बचनते परे जे साहब हैं तिनको पायजाय सो या भांतिते बाणीको मूल जो तैं घटघटमें बिचारै तो ये सब बाणी ऊपरते नानामत नाना सिद्धांत कहै हैं याको मूल सिद्धांत तौ साहिबै को बतावै है त्यहितें चारोवेद छःशास्त्र तात्पर्य्य करिकै श्रीरामचन्द्रही को बतावै हैं सो मेरे सर्व्व सिद्धांत ग्रन्थमें प्रसिद्ध है ॥ ८८ ॥

मूल गहेते काम है, तू मति भर्म भुलाय ॥
मनसा पर मन लहरि है, वहि कतहूं मति जाय॥८९॥

मन जो है सोई समुद्रहै मनसा कहें मनोरथ ताकी लहरि में बहिकै तैं मतिजा अर्थात् मनको संकल्प विकल्प छोड़ि दे । नाना बाणी नानामत में तैं न भूलिजाय, मूल जो रामनाम ताही को ग्रहणकरु, याही के गहेते तेरो उबार होइगो संसार छूटैगो ॥ ८९ ॥

भँवर बिलम्बै वागमें, बहु फुलवनकी आश ॥
जीव बिलम्बै विषयमें, अन्तहु चलै निराश ॥ ९० ॥

जैसे भँवर बागमें बहुत फूलनकी आश करिकै बिलँबै है तैसे जीव संसारमें बहुत विषयकी आशकै परयो । सो ऐसो फूल भ्रमर न पायो कि एकैफूल

सूंघते संतोषह्वैजाय । औ न ऐसे विषय जीवही पायो कि जामें संतुष्ट ह्वैजाय । अर्थात् विषयसुख जीव कियो परन्तु अन्तमें निराशही ह्वैजाय है सो प्रकटही है वह सुख नहीं रहिजायहै परन्तु मूढ़जीव नहीं छोड़े है ॥ ९० ॥

भंवर जाल बगु जाल है, बूड़े जीव अनेक ॥
कह कबीर ते बाचिहैं, जिनके हृदय विवेक ॥ ९१ ॥

भ्रमर जाल जो हैं संसारसागरके विषयको अनेक फेरो सो कैसे हैं कि बकुलाजे जीव हैं तिनके बोरिबेको जालहैं, तामें बहुतजीव बूड़िगये । सो कबीरजी कहै हैं कि, जिनके हृदयमें विवेकहै असार बाणीको छोड़िकै सारजो रामनामरूपी जहाज ताको विवेक करि गहि लियो है तेई संसारसागर के पारजाइहैं ॥ ९१ ॥

तीनि लोक टीडी भई, उड़िया मनके साथ ॥
हरि जन हरि जाने विना, परे कालके हाथ ॥ ९२ ॥

टींड़ीके जब पखना जामा तब जहैं जाइहै तहैं मरिही जायहै सो तीनिलोकके जीवनके मनरूपी पखनाजामे सो जहां जाय हैं तहां मरिही जायहैं सो हैं तो ये हरिकेजन हरिके अंश पै अपनो स्वामी औरक्षक हरिजे हैं परमपुरुष श्रीरामचन्द्र सबके क्लेश हरनेवाले तिनके बिना जाने कालकें हाथमें परे औ मनके साथ उड़ेहैं सो मरतमें जहैं मनजायहै तौनेरूप ह्वैजायहै तामेंप्रमाण ॥ "अंते या मतिः सा गतिः"॥ औ कबीरजी हूको प्रमाण॥"जाकी सुरति लागिहै जहँवां। कहैकबीर सो पहुँचै तहँवां" ॥ ९२ ॥

नाना रंग तरंग हैं, मन मकरन्द असूझ ॥
कहै कबीर पुकारिकै अकिल कला लै बूझ ॥ ९३ ॥

सङ्कल्प विकल्परूप नानारङ्गकी हैं तरंगै जामें ऐसो जो मन तामें काहेते तरंग उठै है कि, मकरन्द जो विषयरस ताको पान करिकै मतवालो ह्वै गयो है सो जो मतवालो होय है सो औरको और करै चाहै । श्रीकबीरजी पुकारिकै कहै हैं कि, अकिल जो बुद्धि तामें निश्चय करिकै कला जो है रेफ अर्धमात्रा ताको लैकै बूझ अर्थात वही अर्ध मात्रामें स्थितिकी विधि पाछे लिखि

आये हैं अथवा नानारंगकी जामें तरङ्ग उठतीं हैं ऐसा जो मकरन्द पुष्परस कहावै है सो महुवाके फूलका रस मदिरा समुद्र मनसो अमूझकहे अपारहै वारपार नहीं सूझिपरै है सो कहा ते मनरूपी मद भरयो है सो आपनी अकिलते कहे बुद्धिते बह कलाल कहे कलार को तो बूझ ॥ ९३ ॥

बाजीगरका बंदरा, ऐसा जिउ मन साथ ॥
नाना नाच नचायकै, राखै अपने हाथ ॥ ९४ ॥
ये मन चंचल चोर ई, ई मन शुद्ध ठहार ॥
मनकरि सुर मुनि जहाड़िया, मनके लक्ष दुवार॥ ९५ ॥

ये दूनों साखिनको अर्थ स्पष्टई है ॥ ९४ ॥ ९५ ॥

विरह भुवंगम तन डसा, मन्त्र न मानै कोइ ॥
राम वियोगी ना जियै जियै सो बाउर होइ ॥ ९६ ॥

विरह भुवङ्गम कहे जिनको साहबकी अप्राप्तिहै तिन जीवनको अज्ञान भुवङ्गम डस्यो है ताते ज्ञान भक्ति वैराग्य योग ये मंत्र नहीं मानै हैं काहेते कि जिनमें साहबको ज्ञान नहीं है तैं भक्ति वैराग्य ते विमुखहै। सो कबीरजी कहै हैं कि रामके वियोगी जे जीवहैं ते जियै नहीं हैं बिषयमें लागेहैं काल उनको खायलेइहै। औ जे योग करिकै बैराग्य करिकै भक्तिकरिकै जियेहैं विषय छाड़िकै संसारको छोड़ै हैं ते बाउर ह्वैजायहैं। कहे बहुत दिन जीबो-किये ब्रह्महूमें लीन भये तौ पुनि संसारमें तो आवही करैंगे। काहेते कि, अपने स्वामीको तो चीन्हबही न किये अर्थात बैकल ह्वैगये हैं जो बैकलाय है सो औरको और करैहै यथार्थ बात नहीं करै है ॥ ९६ ॥

राम बियोगी बिकल तन, जानि दुखवो इन कोइ ॥
छूवतही मरि जायँगे, ताला बेली होइ ॥ ९७ ॥

श्रीकबीरजी गुरुवालोगनते कहै हैं जे साहबके बियोगीजीव ह्वैरहेहैं तिनको तुम काहे दुखावतेहो अर्थात् नाना मतनमें नाना उपासनामें काहे भटकावतेहो जरैमें लोन मींजतेहौ इनके भीतर आपहीते तालाबेली परिरही है नाना मत

खोजैहैं ये छुवतही मारि जायँगे । अर्थात् धोखा ब्रह्म उपदेशदेतै में गहि लेइँगे सो अबै तौ भला बद्धै भरिहैं नित्यबद्ध नहीं हैं जो कहूं साधुते भेंट ह्वैजाय तो उबारहू ह्वैजाय जब धोखा ब्रह्म में लागैगो तब वाको न छाड़ैगो साहब को मत खण्डन करैगो सो तुम ऐसे मरेनको काहे मारौहौ ॥ ९७ ॥

बिरह भुवंगम पैठिकै, कीन करेजे घाव ॥
साधुन अंग न मोरिहै, जब भावै तब खाव ॥ ९८ ॥

बिरहरूपी भुवङ्गम कहे साहबको अप्राप्तरूपी जो भुवङ्गम है सो पैठिकै करैजेमें घाव करतभयो अर्थात् उत्पत्ति प्रकरणमें साहबकी अप्राप्ति जीवनको होत भई जेहिते साहबते विमुख संसारी ह्वै गये । अथवा गुरुवालोग कानमें लगिकै नाना मत नाना उपासना बताय करेजेमें घाव करिदियेहैं । अर्थात् औरेईमें लगाइके साहबके मिलबेके द्वारको निरोधं करिके साहबकी अप्राप्तिको उपाय अच्छी प्रकार करते भये अर्थात् साहब ते बिमुख करिदिये । सो जेते असाधुरहे साहबकी भक्तिको कौने जन्मको संस्कार उनको न रह्यो तेतो मारिपरे औ जे कौनेहू जन्ममें साहबको पुकारचोहै उपासना कियो है धोखेहु कबइ एकबार सत्यप्रेम के साथ साहब को स्मरण कियोहै सो वाकी वासना बढत बढत बढ जायगी आखिर साहबको जानिकै साहबको प्राप्त होय जायेंगे । गुरुवा लोग जब चाहें तब उनको खातरहें, धोखामें लगावतरहें धोखामें कबहूं न लगैंगे । ऐसो जो साधु सो साधु कबहूं न अङ्गमोरैगो काल उनको जब चाहै तब खाय, वे जब जन्मधरैंगे तब साहिबै की उपासनाँ करैंगे उपासना भये सिद्ध करि साहबके पास पहुंचैंगे । तामें प्रमाण "अनेक जन्म संसिद्धिस्ततो याति परां गतिम्" ॥ जे धोखेहू साहबको जान्यो है ते शरीर धारन करिके चौरासीमें नहीं जाइ हैं और जो साहबको नहीं जानै हैं साहब को स्मरण नहीं कियोहै जे संसार मेंही लगेरहे हैं ते चौरासीमें बारम्बार पडैंगे। साहबको भजन करनवारो चौरासी नहीं जाइहै तामें प्रमाण । चौरासी अंगकी साखीको ॥ " भक्त बीज पलटै नहीं, जो युग जाहिं अनंत ॥ नीच ऊंच घर अवतरै, होय संतको संत " । अथवा [साह]बकी अप्राप्तिते जीव सब संसारी भये । ते जीवनमें जे साधु भये साहब

को जान्यो उनके शरीरको जब चाहे तब काल खाये उनको पीड़ा नहीं होय है उनको साहेबै सर्वत्र देखि परै है साहबकी प्राप्तिही बनी रहै है ॥९८॥

करक करेजे गड़ि रही, वचन वृक्षकी फांस ॥
निकसाये निकसै नहीं, रही सो काहू गाँस ॥ ९९ ॥

विरह रूप कहे, सब जीवको साहब की अप्राप्ति रुप जो भुवंगम है करककहें पीड़ा गड़िरही है कहे गुरुवनके बैन बृक्षकी फांसको लगोद छोलिकै काठ के बाण बनावै है ताकी फाँस अथवा बृक्षते शरइव आयगई ताकी फाँस करेजे में गड़िरही है सो निकासेते नहीं निकसै है अर्थात् जिनको गुरुवालोग धोखाब्रह्ममें लगायदिये हैं ते पलटाये नहीं पलटै हैं वाहीको गहै हैं। काहूके तो बाण सहित गाँसी के अटकिरहै हैं ते वही ब्रह्मको प्रतिपादन करै हैं सत् मतको खंडन करै हैं औ वे जे ऊपरते बेष बनाये हैं भीतर धोखाब्रह्मही घुसो है तिनके भीतर करेजे में गाँसिही भर अटकी है तामें प्रमाण ॥ अन्तश्शाक्ता बहिश्शैवाः सभामध्ये च वैष्णवाः । नानारूपधराः कौला विचरंति महीतले''। अथवा गुरुवालोग जो और और देवतन को मत सुनायो है सोई उनके अंतःकरणमें जाइकै अज्ञानरूपी वृक्ष जाम्यो है तौनेकी कुमतिरूपी फाँस याके करेजे में गड़िरही है सो वह करक कहे जनन मरणरोग नहीं जायहै अर्थात् वा फाँस काहूकी निकासी नहीं निकसै केतो उपदेश कोई करै सो कबीरजी कहै हैं कि काहू गुरुवनकी यहजीव के कहा गाँस कहै बैररह्यो है जो ऐसी फाँस मार्यो जो अबलौं निकासी नहीं निकसै ॥ ९९ ॥

काला सर्प्प शरीरमें, सब जग खाइसि झारि ॥
बिरलै जन बचिहैं जोई, रामहिं भजैं विचारि ॥ १०० ॥

कालरूप जो सर्प्प सो सबजीवन के शरीरमें बसै है शरीरके सौंथै उत्पन्न भयो है जेती अवस्थाजायहै तेतीकाल खातोजाय है जब आयुर्दाय पूरिगई तब सबकाल खायलियो याहीभाँति बस जगत्को कालझारादै खाये लेइहै जे सबमतकों छोड़ि परम पुरुष श्रीरामचन्द्रको बिचारिकै भजै हैं तेई बिरलैबाचै हैं तामें प्रमाण

कबीर जीको पद ॥

सन्तौ रामनाम जो पावैं। तौ वो बहुरि न भवजल आवैं ॥
जंगमतो सिद्धिहिको धावैं। निशिबासर शिव ध्यानलगावैं ॥
शिवशिवकरतगयेशिवद्वारा । रामरहेउनहूंतेन्यारा ॥
पण्डित चारिउ वेदबखानैं । पढ़ैं गुनैं कछु भेदनआनैं ॥
संध्या तर्पण नेम अचारा । रामरहे उनहूंते न्यारा ॥
सिद्धएकजो दूधअधारा । कामक्रोधनहिंतजैं बिकारा ॥
खोजतफिरैंराजको द्वारा । रामरहे उनहूंते न्यारा ॥
बैरागी बहुवेष बनावैं । करमधरमकी युगुतिलगावैं ॥
घण्टबजाय करैं झनकारा । रामरहे उनहूते न्यारा ॥
जंगमजीवकबौंनहिंमारैं । पढ़ैंगुनैं नहिं नामउचारैं ॥
कायहिको थापै करतारा । रामरहे उनहूंते न्यारा ॥
योगी एकयोग चितधरहीं । उलटे पवन साधना करहीं ॥
योगयुगुतिलै मनमें धारा । रामरहे उनहूंतें न्यारा ॥
तपसी एकजो तनकोदहई । बस्तीत्यागिजँगलमें रहई ॥
कन्दमूलफलकरआहारा । रामरहे उनहूंतें न्यारा ॥
मौनी एकजो मौनरहावैं । और गाउँमें धुनीलगावैं ॥
दूध पूत दैचले लवारा । रामरहे उनहूंतें न्यारा ॥
यती एक बहुयुगुतिबनावैं । पेटकारणे जटाबढ़ावैं ॥
निशिबासर जो करहङ्कारा। रामरहे उनहूंतें न्यारा ॥
फुक़रा लैजिय जबे कराहीं । मुखते सबतर खुदाकहांहीं ॥
लैकुतकाकहैं द्रम्ममदारा । रामरहैं उनहूंते न्यारा ॥
कहैकबीरसुनोटकसारा । सारशब्द हम प्रकटपुकारा ॥
जोनहिं मानहिं कहाहभारा। रामरहे उनहूंतें न्यारा ॥ १०० ॥

काल खड़ा शिर ऊपरे, जाग विराने मीत ॥
जाको घर है गैलमें, क्या सोवै निश्चीत ॥१०१॥

मानुष ह्वैकै ना मुवा, मुवा सो डाँगर ढोर ॥
एकौ जीव ठौर नहिं लाग्यो, भया सो हाथी घोर १०८॥

जो कोई साहबके पास पहुँचै सोई मानुषहै अर्थात् साहब द्विभुजहैं यहौ द्विभुज ह्वैकै साहबके पास जाइहै औ कबहूँ मरै नहीं है सो साहबके जाननवारे नहीं मरैं या पीछे लिखि आयेहैं औ जे साहबको नहीं जानै हैं तेई मरै हैं ते वे डाँगरढोरहैं ते मानुष नहीं हैं अर्थात पशुहैं एकौ ठौर में नहीं लागैहैं कहे साहबके पास नहीं पहुँचै हैं हाथी घोर इत्यादिक नाना योनिमें भटकै हैं ॥१०८॥

मानुष तैं बड़ पापिया, अक्षर गुरुहि न मानि ॥
बार बार बन कूकुही, गर्भ धरे चौखानि ॥ १०९ ॥

हेमानुष ! तैंतो श्रीरामचन्द्रको अंशहै तेरो स्वरूप मानुष को है सो तैं बड़ो पापी ह्वैगयो काहे ते कि साहब तोको बारबार गोहरायोःकि तैं मेरो है मेरे पास आउ सो उनके कहे अक्षर न मान्यो आज्ञा भंगकियो तैंने पापते बारबार जो बनकी कुकुही कहे मुर्गी तिनके कैसोगर्भ चारिउ खानिके जीवनमें परिवारके पालन पोषणमें लागिकै पुनि पुनि जन्मधरत भयो नानादुःख सहत भयो इहाँ मुर्गी याते कह्योहै कि बच्चा बहुतहोयहैं ॥ १०९ ॥

मनुष बिचारा क्या करै, कहे न खुले कपाट ॥
श्वान चौक बैठायकै, पुनि पुनि ऐपन चाट ॥११०॥

वेद शास्त्र पुराण इनके कहे जो कपाटनहीं खुलै हैं अर्थात् ज्ञाननहीं होयहै तौ मानुष बिचारा क्याकरै प्रथम साहबको कह्यो नहीं मान्यो याते मानुष पशुवत् ह्वैगयो अज्ञान घेरे है सो जो कूकुर कुकुरिया को बिवाहकरै चौकमें बैठाइये तौ वे पुनि पुनि ऐपनै चाटै हैं तैसे जीवनको पशुवत् ज्ञान ह्वैगयो है फेरि फेरि वही बिषयमें लागै हैं साहबकी ओर नहीं लागै हैं ॥ ११० ॥

मनुष बिचारा क्याकरै, जाके शून्य शरीर ॥
जो जिउ झाँकि न ऊपजै, काहि पुकार कबीर॥१११॥

या मानुष बिचारा क्याकरै जाके शरीरमें शून्य जो धोखाब्रह्म सो समाय रह्यो है सो धोखाब्रह्मको झाँकिउ कहे देखिउ चुक्यो कि इहां कुछ बस्तुनहीं है औ साहबको ज्ञान न उपज्यो तौ कबीरजी कहै हैं कि मैं काको पुकारौं वहतौ बड़ो अज्ञानी है बूड़िगयो जो प्रत्यक्ष देखो नहीं मानैहै कि यह शून्यही है यामें कछू न मिलैगो तो मेरो कह्यौ कैसे सुनैगो ॥ १११ ॥

मानुष जन्महिं पायकै, चूकै अबकी घात ॥
जायपरै भवचक्रमें, सहै घनेरी लात ॥ ११२ ॥

चौरासीलाख योनिनमें भटकत भटकत ऐसो मानुष शरीरपायकै अबकी जो घातचूक्यो साहबको न जान्यो तौ संसारचक्र में परैगो और यमकी घनेरी लातैं सहैगो ॥ ११२ ॥

ज्ञान रतनको यतन करु, माटी का शृंगार ॥
आया कबिरा फिरिगया, झूठा है हंकार ॥ ११३ ॥

साहबके ज्ञानरतनको यतनकरु जाते साहब को ज्ञानहोय यहजो माटीकहे शरीरको शृङ्गार करै है सो अनित्यहै कबिराकहे कायाको बीर जीव यह संसारमें आया और फिरिगया तबशरीर पराय जाताहै यह जो अहंकार करताहै कि हम शरीरहैं हमब्राह्मणहैं क्षत्रियहैं वैश्यहैं शूद्रहैं सोसब झूठेहैं औ जो फीका है संसार यह जो पाठहोय तौ यह अर्थ है कि साहब के ज्ञानरतनको जो यतन करै है ताको या संसार फीकै लगै है जो कोई दाखको खानवारो है ताको महुवा फीकै लगै है ॥ ११३ ॥

मनुष जन्म दुर्लभ अहै, होय न दूजीवार ॥
पक्का फल जो गिरिपरा, बहुरि न लागैडार ॥ ११४ ॥

यह मानुष जन्म तिहारो बड़ो दुर्लभहै जोन अबैहो तौन फिरि न होउगे पक्काफल गिरिपरै है तौ पुनि वह डारमें नहींलगै है अबै साहबके जानिबेको समयहै सो साहबको जानिलेउ ॥ ११४ ॥

बांह मरोरे जातहौ, मोहिं सोवत लियो जगाय ॥
कहै कबीर पुकारिकै, यहि पैंडे ह्वैकै जाय॥ ११५ ॥

मुसलमाननमें जे साहबके भक्त होयहैं ते जब भजन न करै हैं तब उनको पीर दस्तते दस्त मिलावै है सो दस्तमिलायकै साहब को बताइ देइहैं पास पहुँचाय देयहैं तिनसों जीव कहै हैं कि हमारी बांहमरोरे चले जाउहौ हम संसारमें सोवत रहे सो जगाय लियो तब उनके पीर जे हैं कबीर ते कहै हैं कि यहि पैंड़े ह्वैकै-जाउ या कहिकै साहबके जायबेको राहबताय देइहैं तब उनके परमगुरु जे हैं महम्मद आदिदैकै पैगम्बर तिनके इहां पहुँचाय देय हैं तब उनके चेला वह राहचलि महम्मद के पास पहुँचै हैं तब महम्मद साहबके पास पहुँचावै हैं औ हिंदुनमें जे श्रीरघुनाथजी को स्मरणकरै हैं ते गुरुद्वारा ह्वैकै सुमिरनकरै हैं ते गुरु परमगुरुको मिलावै हैं परमगुरु आचार्यको मिलावै हैं ते साहब को मिलाय देइहैं जैसे रामानुज मतवारे आपने गुरुको प्राप्तभये औ गुरु शठकोपाचार्यको प्राप्तभये औ वे विष्वक्सेनको प्राप्तकियो जीवको औ वे संकर्षणको प्राप्तकियो औ वे जानकीजी को प्राप्त कियो जानकीजी श्री रामचन्द्रको प्राप्त कियो कबीरजी रामानन्दके सम्प्रदायके हैं तेहिते यह सम्प्रदाय संक्षेपते लिखि दियो है ऐसे सब आचार्य लोग आपने आपने चेलनको साहबमें लगाय देइहैं ॥ ११५ ॥

और[1] औरे प्रतिमें इसके पश्चात एक औरि साखी है पर इसमें नहीं दिया।

बेरा बांधिन सर्पको, भवसागरके माहि ॥
छोड़ै तौ बूड़त अहै, गहै तौ डसिहैवाहि ॥ ११६ ॥

पंचमुखी सर्प अहंकार ताके पांचमुखन में पांचमकारकी बाणी निकरी है प्रथममुख विश्वहै ताते कर्मकांड निकरा औ दूसरामुख तजस ताते योगकांड़ निकरा औ तीसरामुख प्राज्ञ ताते उपासनाकांड निकरा औ चौथामुख प्रत्यगात्मा

---

१ दूसरी प्रतियोमें यहाँ पर यह साखी है । पूरन साहबकी टीकाकी ११७वीं साखी है ।

"साखि पुलंदर ढहि परे, बिवि अक्षर युगचार ।
रसना रम्भन होत है, कै न सकै निरुआर"

तातें ज्ञानकांड निकरा औ पाचोंमुख निरंजन तातें अद्वैतविज्ञान निकरा सो ऐसे पंचमुखी सर्पमें बेराको बांध्यो आपने मनसे कल्पिकै भवसागर अनुमानकियो ताको मान्यो तब ये नरदेहमें पंचमुखी सर्प अहंकार उठा तौने अहंकारको पहिरिकै वामें सब जीवचढ़े भवसागरपार होनके वास्ते सो अब जो बिचार करिकै छोड़ाचाहै तौ भवसागरकी भय लागै है कि बूड़ि जायँगे औ धरे रहे हैं तौ सर्पडसै हैं सो पंचशरीराहंकार सर्पको बेराबने पर सब वाहीमें आरूढ़ हुये बेरा समुद्रकै पार नहीं जायसकै हैं तीरहीमें रहिगये सो न बेराको गाहिसकै न बेराको छोड़िसकै संसारसागरमें बूड़ते उतराते हैं ॥ ११६ ॥

कर खोरा खोवा भरा, मग जोहत दिन जाय ॥
कबिरा उतरा चित्तसों, छाँछ दियो नहिं जाय ॥ ११७ ॥

गुरुमुख—जे साहबके जनहैं ते कौनी भांतिते जाने जायहैं कि पूरहैं सर्वत्र साहब को देखै हैं हाथमें खोवा भरा कटोरा लीन्हे राह जोहै हैं कि कोई आवै खाय सो सर्वत्र तो साहिबैको देखै हैं ताते जोई आयकै खायहै ताको साहबै जानै है औ साहिबै मानिकै आदरकरै हैं औ खोवा खवावै हैं औ कबहूं पुरुषबचन नहीं बोलैहैं ते जीव साहबके प्यारे हैं औ जिनसों मारै दौरै हैं ते कबीर कायाके बीर जीव साहबके चित्तते उतरि जाय हैं अर्थात् वे मुक्ति कबहूं नहीं पावै हैं संसार हीमें परे हैं। अथवा यह साखी गुरुमुख है ताते यह अर्थ है साहबकहै हैं कि खोवा भरा कटोरा हाथमें लियेहौं रामनाम उपदेश करौहौं यह कैसो है कि कहतमें सरल है फिरि कायाको कलेश कौनौ न करनपरै औ सबको अधिकार है जैसे खोवा खातमें न कौनो अरसाहै न कौनौ श्रमहै ऐसे रामनाम रूपी खोवा उपदेशरूप लियेहौं जो कोई याको खाय अर्थात् स्मरणकरै तो मैं वाको संसारतें छोड़ायदेउँ जो मेरे पास आवै तौनेको। सोहे कायाके बीर कबीरजीव ! जो नहीं ग्रहणकरै हैं तेमेरे चित्तमें उतारि जायहैं उनको छाँछऊ मोसों दियो नहीं जाय अरु ज्ञानादिक कर्मादिक के फलतौ मैं देउहौं सो उनके उत्तम कर्महूके फलमोसो नहीं दिये दे जायँ अर्थात मेरो चित्तनहीं चाहै है कि छाँछ जे हैं ज्ञानादिक ते उनके उत्तम कर्मादिकके फलदेउँ सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि अबै साहब समुझावै

हैं सो मानिकै रामनाम कहिकै संसार छोंड़िदें फेरि जब यमके सोंटा लैगेंगे तब न कहो कहि जायगो तामें प्रमाण॥"बहुरि न बनि है कहत कछु जब शिरलगिहै चोट॥ अबहीं सब यकठौरहै दूधकटोराटोट" ॥ ११७ ॥

एक कहौं तौ है नहीं, दोय कहौं तो गारि ॥
है जैसा तैसा रहै, कहै कबीर विचारि ॥ ११८ ॥

साहब कहै हैं कि हेजीव! जोमैं तोको एककहौं कि ब्रह्मई है सब तैंहीं है तौ वेदमें लिखे है कि॥"सत्यं ज्ञानमनंतं ब्रह्म इति श्रुतिः"॥ब्रह्म तो ज्ञानमयहै सो जो ब्रह्म हो तो तौ मायामें बद्ध ह्वैकै कैसे संसारी होतो औ जो दोय कहौं कि तैं काहू ईश्वरकोदास है तौ गारी तोको परैहै काहेते कि तैं तो मेरो अंशहै सो हेकबीर कायाके बीर जीव बिचारिकै देखु तो तैं सनातनको मेरो अंश है दासहै औरको नहीं है तामें प्रमाण ॥ "ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः" ॥ औ मैं मालिक एकईहौं दूजो नहीं है तामें प्रमाणचौरासीअंगकीसाखी ॥ "साईं मेरा एक तू और न दूजा कोइ ॥ जो साहब दूजा कहै, सो दूजा कुलको होइ ॥ ११८ ॥

अमृत केरी पूरिया, बहु बिधि लीन्हे छोरि ॥
आप सरीखा जो मिलै,ताहि पिआऊं घोरि ॥११९॥

साहब कहै हैं कि अमृतपुरिया जो या रामनाम सो मैं बहुत भाँतिते छोरे लीन्हेहौं । और जो दीन्ही पाठहोय तौ यह रामनामकी पुरिया छोरि दीन्ह्यो है कहे बहुतविधिते प्रकट करिदीन्ह्यो है कि यही संसारते छोड़ावनवारो है दूसरो नहीं है सो आपसरीखा जो मोको मिलै ऐसी भावना करतहोय किं मैं साहब को अंशहौं दासहौं सखाहौं दूसरेको नहींहौं ताको मैं रामनामकी पुरिया घोरिकै पिआइदेउँ कहे अर्थ समेत बताय देउँ औ पुरिया रामनामकी दैकै संसाररोग-मिटायदेउँ औ रामनाम औषध है तामेंप्रमाण ॥ "राम नाम एक औषधी सत-गुरु दिया बताय ॥ औषध खावै पथकरै, ताकी वेदन जाय ॥ ११९ ॥

अमृत केरी मोटरी, शिरसे धरी उतारि ॥
जाहि कहौं मैं एक हौं, मोहिं कहै द्वै चारि ॥ १२० ॥

साहबकहै हैं कि अमृतकी मोटरी जो रामनाम ताको तौ शिर ते उतारि धरचो कहे वाको तौ कोई बिचारकरै है नहीं जासों मैं कहौहौं कि एक मालिक महींहौं सो मोको दुइचारि बतावै हैं कहे छःबतावै हैं अर्थात् पञ्चांगोपासना औछठौं ब्रह्म सबको मालिक जो मैंहौं ताको भूलिगये कोई देवीको कोई सूर्यको कोई गणेश को कोई विष्णुको कोई महादेवको मालिक कहै हैं ॥ १२० ॥

जाको मुनिवर तपकरैं, वेद पढ़ैं गुण गाय ॥
सोई देव सिखापना, नहिं कोई पतिआय ॥ १२१ ॥

जाके हेतु मुनिवर तपस्या करै हैं परन्तु नहींपावै हैं औ जाको चारों वेदगावै हैं परन्तु गुणको पारनहीं पावै हैं तौनेन साहबको श्रीकबीरजी कहै हैं कि मैं सिखापनदैकै बताऊंहौं कि उनहींके रामनामको जपौ तबहीं संसारते छूटौगे ताहू में मोको कोई नहीं पतिआयहै अथवा वोई जौन सिखापन दियो है कि मेरो नाम जपै तौ संसारते उद्धारह्वैजाय तौनै मैं सिखापनदै बताऊं हौं परन्तु पतिआय नहीं है सो महामूढ़है ॥ १२१ ॥*

एक शब्द गुरुदेवका, ताको अनँत विचार ॥
थाके पण्डित मुनि जना, वेद न पावैं पार ॥१२२॥

एक शब्द जो है रामनाम ताको अनन्त विचार है अर्थात् ताहीते वेद शास्त्र पुराण नानामत सबनिकसे हैं सो हमारे राममन्त्रार्थ में लिखो है तौनें रामनामको अर्थ करतकरत पंडित मुनिवेद थकिगये पार न पाये अर्थात् अनन्तकोटि ब्रह्मांड में वेद शास्त्र सब याहीते निकसे हैं ये कैसे पारपावैं॥ १२२॥

राउर को पिछवारकै, गावैं चारो सेन ॥
जीव परा बहु लूटमें, ना कछु लेन न देन ॥१२३॥

राउर जो है साहबको धाम ताको पिछवारे कैदिये हैं चारोसेन जे चारोवेद तिनके श्रुतिनको नाना उपासनामें नानामतमें लगायकै तिनहीं मतनको उपास-

---

* अन्य प्रतियों में इस साखीके आगे यह साखी है सो यहां छोड दिया है। साखी "एकते हुआ अनन्त,अनन्त एकैह्वै आया । परचे भई जब एकते, एके माहिं समाया" ॥

नाकरि जीव लूटमें परयो न कछु लेनहै न कछुदेनहै अर्थात् कछुबस्तु हाथ-नहीं लगै है ॥ १२३ ॥

चौ गोड़ाके देखते, व्याधा भागा जाय ॥
अचरज हो यक देखौ, सन्तौ मुवा कालको खाय १२४॥

चौगोड़ा जोहै जीवात्मा ताके चारिगोड़ जेहैं मन बुद्धि चित्त अहङ्कार इनहींते जीवचलैहै तौनेके देखते कहे जब अपने स्वरूपको चीन्ह्यो कि मैं साहबकोअंशहौं तबव्याधा जो है काल सो भागि जायहै निकट नहीं आवै है सो हेसन्तौ! एकबड़ो अचरजहै जब जीवात्मा स्वरूपको जान्यो तबतो काल भागतहीं भर है औमुंवा कहे मन बुद्धि चित्त अहङ्कार जे चारो गोड़ तिनको औ पांचोशरीरछोड़्यो तब कालखायही जाय है कहे कालकी भयनहीं रहि जायहै हंसशरीरमें बैठिकै साहबकेपास जायहै उहाँकालकीभय नहीं है तामें प्रमाण ॥ " नयत्रशोकोनजरानमृत्युर्नार्त्तिर्नचोद्वेगऋतेकुतश्चित् । यच्चित्ततोदःकृपयानिदंविदांदुरंतदुःखप्रभवानुदर्शनात् ॥ इतिभागवते ॥ यस्यब्रह्मचक्षत्रञ्चउभेभवतओदनम॥ मृत्युर्यस्योपसेचनं क इत्थावेद यत्र सः ॥औ वा लोकमें कौनौ शोकनहीं हैं तामेंप्रमाण

धर्म्मदासजीको पद नामलीलाग्रंथको ॥

" जहाँ पुरुष सतिभाव तहाँहंसनकीबासा । नहींयमनको नाम नहींह्वां तृष्णआसा ॥
हर्षशोकवावरनहीं नहींलाभनहिंहानं । हंसापरमअनन्दमें धरै पुरुषकोध्यान ॥
नहिंदेवी नहिंदेव नहीं ह्वांवेदउचारा । नहिं तीरथ नहिंबर्त्त नहींषट्कर्म्मअचारा ॥
उतपतिपरलयह्वांनहीं नहीं पुण्य नहिं पाप। हंसापरम अनंदमें सुमिरैसतगुरुआप ॥
नहिंसागर संसारनहीं ह्वां पवनहुँ पानी । नहिं धरती आकाश नहीं ह्वांऔर निशानी ॥
चाँद सूर वा घरनहीं नहीं कर्म नहिं काल।मगन होय नामै गहै छूटि गयो जंजाल ॥
सुरति सनेही होइतासु यम निकट न आवै।परमतत्त्व पहिचानि सत्य साहब मनभावै॥
अजर अमर बिनशै नहीं परम पुरुष परकास। केवल नामकबीरका गाय कहै धर्मदास

तीनि लोक चोरी भई, सबका सरवस लीन्ह ॥
बिना मूड़का चोरवा, परा न काहू चीन्ह ॥ १२५ ॥

तीनिलोकमें चोरीहोत भई सबको सर्वस्वलैलियो सो ऐसो जो बिना मूड़को चोर निराकार ब्रह्म सो काहू को न चीन्हिपर्‍यो अथवा बिनमूड़को चोर छिन्नमस्ता देवीके उपासक ते अपनेहूं को भावना करै हैं कि, हमारो मूड़ नहीं है काहेते कि ॥ "देवो भूत्वा देवं यजेत्" ॥ यह लिखै है ते शाक्त काहूको नहीं चीन्हिपरै हैं मायामें डारिकै सब जीवको भरमाइ देइ हैं ॥ १२५ ॥

चक्की चलती देखि कै, नयनन आया रोइ ॥
दो पट भीतर आयकै, साबित गया न कोइ॥ १२६ ॥

पुण्य औ पाप दूनों चक्की हैं कहे चकरी हैं तामें द्वैत जो है हम हमार सो किल्ली है तैंने चक्कीके दूनों पटके भीतर आयकै साबित कोई नहीं गया है पीसिही गयो है जो कोई साहबको सर्वत्र चिदचित् रूपते देखै है सोई बाचै है तामें प्रमाण ॥ "पापपुण्य दुइ चक्की कहिये खूँटा द्वैत लगाया है । तेहि चक्कीं तर सबै पीसिगे सुरनरमुनि न बचाया है" ॥ और प्रमाण **सायर बीजकको ।**

" चक्की चली राम की, सब जगपीसाझारि ॥
कह कबीर ते ऊबरे, जे किल्ली दियो उखारि " ॥ १२६ ॥

चारि चोर चोरी चले, पग पनहींउतारि ॥
चारो दर थून्हीं हनी, पण्डित कहहु बिचारि ॥१२७॥

चारि चोर जे हैं विश्व तैजस प्राज्ञ तुरीय ते चोरीको चले आपनी आपनी पनहीं जो है बिचार ताको उतारिकै कहे छोड़िकै औ चोर चलै है तब पनहीं उतारिकै चुपाजाय है तैसे येऊ चलै हैं सो विश्वाभिमान कर्म्मकाण्डकी थून्हीं गाड़ी औ तैजस अभिमान उपासनाकाण्डकी थून्ही गाड़ी औ प्राज्ञाभिमान योगकी थून्ही गाड़ी औ प्रत्यगात्मा तुरीय अभिमानने ज्ञानकाण्डकी थून्ही गाड़ी सो ताहीं को बिचार पण्डितजन करने लगे। अथवा चोर जो है मन बुद्धि चित् अहङ्कार ते बिचार रूप पनहींको उतारिकैं चोरीको चले सो मन सङ्कल्प बिकल्पकी थून्ही गाड़ी औ चित्त अनुसंधानकी थून्हीगाड़ी औ बुद्धि निश्चयकी थून्ही गाड़ी औ अहंकार अहंब्रह्मकी थून्हीगाड़ी सो ताहीको सब पण्डित बिचार करने लगे सो कहै हैं । मनतो सङ्कल्प बिकल्प करने लग्यो कि संसार कौनी भांति ते छूटै, औ

चित्त अनुसंधान औरे औरे ईश्वरनपर करने लग्यो, औ बुद्धि औरे औरे ईश्वर नपर निश्चय करनलागी औ अहंकार अहंब्रह्मको बिचार करने लग्यो कि मैं ब्रह्म हौं । सो हे पण्डितो ! बिचार तौ करो ये चारो जे हैं ते चारोदरमें थून्ही गाड़ दिये बिचार रूप पनहीं उतारिकै कहे साहब को बिचार न करत भये साहबके बिचारको पनहीं काहेते कह्यो कि पनहीं पदत्राण कहावै हैं पांयकी रक्षा करै हैं सो बिचार रूप पनहीं उतारि डारयो ताते जैसे कांटा बेधि जाय है तैसे नाना मत नानाप्रकारके भ्रमबेधि गये ॥ १२७ ॥

बलिहारी वहि दूधकी, जामें निकसै घीव ॥
आधी साखि कबीरकी, चारि वेदका जीव ॥ १२८ ॥

वहदूध जो है चारो वेद अथवा और जे भक्तिशास्त्र तिनकी बलिहारी है जामें घीव रामनाम निकसै है आधी साखी जो है कबीरकी रामनाम सो चारो वेदका जीव है काहेते जीव है कि चारों वेद याही ते निकसे हैं औ आधी साखी रामनामै को कह्यो है तामें प्रमाण ॥ " रामनामलैउचरीबाणी " । सबको आदि रामनामही है ॥ १२८ ॥

बलिहारी तिहि पुरुषकी, पर चित परखनहार ॥
साईं दीन्ह्यो खांड़को, खारी बूझ गवाँर ॥ १२९ ॥

कबीरजी कहैहैं कि परचित कहे सबते परे चिद्रूप जो साहब ताको परखन- हार जो अणुचित् पुरुष है ताकी बलिहारी है औ जे साई कहे बयाना तो खांड़को दीन्ह्यो कि वेदनमें श्रीरामचन्द्रको बूझै ताको छोड़ि खारी जोहैं नाना मत तिनको वेदन में बूझै हैं वोई मतनकी उपासना करै हैं ते गँवार हैं खारी जो बहुत खाय तौ पेट काटि देइ है सो नाना मतनमें परिकै नाना दुःख सहै हैं ॥ १२९ ॥

बिषके बिरवा घर किया, रहा सर्पलपटाय ॥
ताते जियरै डर भया, जागत रैनि बिहाय॥ १३० ॥

बिषको बिरवा जोहै संसार तामें जीव घरकियो जामें कालरूपी सर्प लप- टाय रह्योहै तेहिते जाके हृदयमें डरभयोहै जागि कै साहबको जान्यो ताको

मोहरूपी निशा बिहाय जायहै औ जे नहीं जागे हैं तिनको कालडसिखायहै सो-जिनको रामोपासना सिद्धह्वै गईहै ऐसे जे भक्तहैं तिनके शरीर नहीं छूटे हैं सो हनुमान् कबीरजी प्रकटे हैं ॥ १३० ॥

जो ई घर है सर्पका, सो घर साधु न होइ ॥
सकल संपदा लै भई, विष भर लागी सोइ॥ १३१ ॥

जो घर सर्पकोहै सोघर साधुको न होइ अर्थात् सर्पको घरबेमौरहै तामें बहुतछिद्र होइहैं सो या शरीरौ बहुत छिद्रकी बाँबी है तामें काल बसैहै सो बेमोरमें जो जीव जायहै तिनको सर्प खाय लेइहै औ जे या शरीर में कौनौ जीव बसैहै तिनको काल खाइलेइहै ॥ १३१ ॥ *

मन भरके बोये कवौं, घुंघुची भर ना होइ ॥
कहा हमार मानैं नहीं, अन्तहु चले बिगोइ ॥ १३२॥

शरीरमें जो घुँघुची भर बासना उठै तौ मन भर की ह्वैजातीहै कहे मनसंकल्पविकल्पकारिकै और बढ़ाइ देइहै मनमें वही भरि रहती है औ मनभर उपदेशकरै तौ घुँघुची भर ज्ञाननहीं रहै यह मननीचे में जायहै ऊंचेको नहींजाय सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि, हम केतौ उपदेश करैं परंतु कोई नहीं मानैहैं ताते अन्तमें बिगोइकै कहे बिगरिकै मरिकै नरकमें जायहैं ॥ १३२ ॥

आपा तजो औ हरि भजो, नख शिख तजो बिकार ॥
सब जिउते निरबैर रहु, साधु मता है सार ॥ १३३ ॥

श्रीकबीरजी कहै हैं कि जबभर तैं यहि शरीरको आपनो मानैगो तब भर तेरो जनन मरण न छूटैगो ताते "अहंशरीरः" मैं शरीर हौं यह जोहै आपा ताको छोड़िदे तैं तो साहबको पार्षदस्वरूपहै तामें टिकि तिनको भजनकरु औ नख शिखमें तेरे कामक्रोधादिक बिकारई देखे परैहैं तिनको छोड़दे औ चिदचित

---

* इसके आगे की यह साखी छोड़दी है।
"घुंघुची भर जो बैं इया, उपजपसेरि आठ। डेरा परा काल घर, सांझ सकारे बाठ"

बिग्रहते सर्वत्र साहिबहीहैं यह भावना करिकै सब जीवनते निबैंररहु साधु मतकों यही सारांशहै सब साहबके शरीरहैं तामें प्रमाण ॥ "खं वायुमग्निं सलिलंमहीञ्च ज्योतींषि सत्त्वानि दिशोद्रुमादीन् । सरित्समुद्रांश्च हरेःशरीरं यत्किञ्चभूतं प्रण-मेदनन्यः । " चित् जो है जीव सोऊ शरीरहै तामें प्रमाण ॥ "यश्चात्मनि तिष्ठ न्यमात्मानं वेद यस्य आत्मा शरीरम्" ॥ १३३ ॥

पक्षा पक्षी कारणे, सब जग रहा भुलान ॥
निरपक्षे ह्वै हरि भजैं, तेई संत सुजान ॥ १३४ ॥

और तो सबमायैमें भुलानहै जिनके कछू समुझहै ते आपने आपने मतको पक्ष कीन्हे हैं आनको पक्ष खण्डन करि डारै हैं सो ज पक्षापक्षी छोड़िकै साहबको भजै हैं तेई सुजान सन्तहैं ॥ १३४ ॥

माया त्यागे क्या भया, मान तजा नहिं जाय ॥
जेहि माने मुनिवर ठगे, मान सबनको खाय ॥ १३५ ॥

सन्तलोग जो मायाको छोड़िउ दिये तौ कहा भयो मान बढ़ाई तौ छोड़िबे न कियो याही चाहै हैं कि, हमारो मान होय सो जौने मानमें मुनिवर ठगिगये हैं सोई सबको खाये लेइहै सो हम पूछै हैं कि जो तिहारो बड़ो मान भयो बड़ी बड़ाई भई कि फलानेके समान उपासनामें कोई नहीं है ज्ञानमें विद्यामें कोई नहीं है तौ यासों कहाभयो जाके निमित्त घरछोड़्यो सोतो मिलबइ न भयो तेहितें जो कोई साहबके मिलिबे की संसार छूटिबेकी बात कहै तौ मानिलेइ चाहै आपने मतको होइ चाहै बिराने मतको होइ काहेते कि साधुको मत यही है कि संसारछूटै साहब मिलैं औ मानै प्रतिष्ठा भये साधुकहावै या कौने शास्त्रमें-लिखाहै तेहिते साधु वही है जो साहबको जानै ॥ १३५ ॥

घुंघुची भरजो बोइया, उपज पसेरी आठ ॥
डेरा परा काल घर, सांझ सकारे बाठ ॥ १३६ ॥

— यहशरीररूपी क्षेत्रकैसो है कि जो घुँघुची भर बोइ जाय अर्थात् उठै तौ आठ पसेरी कहे मन उत्पत्ति होयहै कालके घरमें डेरा पर्यो है तेहिते यहशरीरको

कहूंसांझ होइ है कहूं सकार होइहै अर्थात कबहूं मरिजायहै कबहूं उत्पत्ति होइहै औ बाठकहावै बरेठ सो मनमायामें मिलो जो आत्मा सो बरेठ होइगयो बरेठमें तीनलहर होयहैं यामें त्रिगुणात्मिका माया बारिगई है सो एककैतिपुण्यकी गैलहै जप यज्ञ दानते खैंचिकै स्वर्गको लैजायहैं औ एककैति पापकी गैलहैं कामक्रोधादिकते खैंचिकै नरकमें डारिदेइ हैं जब बरेठ टूटिजायहै तब ख्याल गुलह्वैजायहै अर्थात मुक्ति ह्वै जाय है ॥ १३६ ॥

बड़े ते गयो बड़ापनो, रोम रोम हंकार ॥
सतगुरुकी परिचय बिना, चारचो बर्ण चमार॥१३७॥

सबते बड़े को हैं साधु जे संसारको त्याग कीन्हे हैं तिनमें और दोषतो हई-नहीं हैं काहेते कि संसारको छोडे हैं परन्तु ये चितअचित् रूप साहबको नहीं देखै हैं सर्वत्र ते आपने बड़ापनहीं में गये कि हमारी बराबरीको साधु कोई नहीं है या अहङ्कार रोमरोम बेधि गयो सो सतगुरुतो पायोइ नहीं जो रामनामको बतायदेइ जाते साहब याकी रक्षा करैं सो साहबके जाननवारे जेसाधु तिनके बिना परिचय चारिउ बर्ण चमारके तुल्यहैं ॥ १३७ ॥

मायाकी झक जग जरै, कनक कामिनी लागि ॥
कह कबीर कस बाचिहौ, रुई लपेटी आगि ॥ १३८ ॥

झकवाकोकहै हैं कि जैसे या कहै हैं कि भूतकी झकलगी है सो कनक कामिनी में लगि मायाकी झकमें बैकलायकै जरै है सो श्री कबीरजी कहै हैं कि कनक कामिनीरूप रुई में लपटिकै बिषय आगिसेवन करौ हौ सोकैसे बाचिहौ अर्थात् जारिही जायगो ॥ १३८ ॥

माया जग साँपिनि भई, बिष लै बैठी बाट ॥
सब जग फंदे फंदिया, गया कबीरा काट ॥ १३९ ॥

संसारमें माया साँपिनिभई है सो बिषलैकै संसार की जे हैं सबराहै तन धन कर्म्म तिनमें बैठी है सो सम्पूर्ण जग वाके फंदे में फंदिगयो जोई कबीर कहे जीव वे राहनमें चलै है सोई काटा जाय है अथवा कबीरजी कहै हैं कि

मैं जौनजौने राहनमें वहसाँपिनि बैठी रहीं है तौने तौने राहनको काटिकै कहें बरायकै औरे राह ह्वै चलो गयो ॥ १३९ ॥

सांप बीछिको मंत्र है, माहुर झारे जाय ॥
विकट नारिके पाले परा, काटि करेजा खाय॥१४०॥

साँपबीछीको बिषमंत्रन ते झारे जायहै औ वह विकट नारि जो माया है ताकेपाले जो परचो ताको करेजा काटिकै खायलेइ है अर्थात् साहबके ज्ञानादिक जे अंतःकरणमें हैं तिनकोखाय है सोई मायाको रूप कहै हैं ॥ १४० ॥

तामस केरे तीन गुण; भौंर लेइ तहँ वास ॥
एकै डारी तीन फल, भाँटा ऊँख कपास ॥ १४१ ॥

आदितामस जो है अज्ञान मूल प्रकृति तामें रजोगुणी तमोगुणी सतोगुणी तीनफल लगेहैं सो सतोगुणी ऊँखहै जो ऊँखचुह्यो तौ पंहिले रस पान कियो कहे यज्ञादिक कर्म्म कियो स्वर्ग्ग में जायकै अप्सरानके साथ सुखकियो जब पुण्यक्षीणभयो तब फेरि संसारमें परे सो यहै हाथमें लग्यो फिरि चौरासीमें भटकनलग्यो । औ रजोगुणी कपास है कपासकोलियो कपरा विनायो पंहिरचो ह्याँई फटिगयो तैसे रजोगुणी कर्म्म कियो तामें राजाभयो सुख भोगकियो दियो लियो बड़ो यश कियो फेरि फेरि मरिकै जैसो कर्म्मकियो तैसो भयोजाय । औ तमोगुणी कर्म्मभाँटाहै टोरचो तब कांटालग्यो औ जब खायो तब पुरुष शक्ति की हांनि ह्वैगई अखाद्य लिखै हैं द्वादशी त्रयोदशी इत्यादिक दिनमें जो खायो तो नरक को गयो ऐसे तमोगुणी कर्म्मते काहूको मारचो तौ मरिगयो औ पापलग्यो राजाबाँधिकै शूली दियो मारो गयो दुःख पायो सो इहां दुःख पायो औ वहां नरकमें दुःखपायो ॥ १४१ ॥

मन मतंग गैयर हनै, मनसा भई सचान ॥
यंत्र मंत्र मानै नहीं, लागी उड़ि उड़ि खान॥ १४२ ॥

मनरूपी जो हाथी है मतवार सो गैयर कहे आपने अरतेकहे हंठते गवा जो है जीव अर्थात् साहबको भूलिगयो जो है जीव अथवा गैयर कहे बड़ा जो है

जीव ताको हनै है सो जब जीव मारे परचो तब मनसा जो है मनोरथ सोई सचानभयो है कहे शार्दूल भयो सो उड़ि उड़ि याको खायहै अर्थात् जब मरन-लागै है तब जहैं मनोरथ जायहै तहैं जीव जायहै सोई खायबो है औ यन्त्र मन्त्र जों नाना उपदेश वेदशास्त्र कहै है सो नहीं मानै है ॥ १४२ ॥

मन गयंद मानै नहीं, चलै सुरतिके साथ ॥
दीन महावत क्या करैं, अंकुश नाहीं हाथ ॥ १४३ ॥

मनरूपी जो मतंगहै सो नहीं मानै है सुरतिरूपी जो हाथिनी है ताके साथ चलै है महाउत जो है जीव सो कहाकरै अंकुश जो नामका ज्ञान सो याके-हाथई नहीं है ॥ १४३ ॥

या माया है चूहरी, औ चूहरकी जोइ ॥
बाप पूत अरुझायकै, संग न काहुकी होइ ॥ १४४ ॥

या माया चूहरी कहे चाण्डालिनी है औ चूहरैकी जोइहै कहे जीवकी जोइ हैकै जीवहूको चूहर बनायलियो अर्थात् आपने वश कैलियो सो यह माया काहूकी सँगनहीं है । मन जो है बाप, पूत जो है ब्रह्म ताको पतिजो है जीव तासों अरुझाय दियो है ॥ १४४ ॥

कनक कामिनी देखिकै, तू मति भूल सुरंग ॥
बिछुरन मिलन दुहेलरा, केचुलि तजै भुजंग ॥ १४५ ॥

साहब कहै हैं कि कनक कामिनीरूप मायाको देखि तू मतिभुलाय तैं तो सुरङ्गहै साहब कहै हैं कि मेरे अनुरागमें रंगनवारो है सो आपने स्वरूप तो बिचारु यह कनक कामिनीरूप जो मायाहै तौनेमें जो रँग्योहै ताको जो छोड़िदे तौ जैसे भुजंग केचुलि छोड़ि देइहै तब वाको स्वरूप निकरि आवै है तैसे तेरे चारो शरीर छूटि जायँ तब हंसशरीरपाय मेरे पास आवै ॥ १४५ ॥

मायाके वश सब परे, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥
नारद शारद सनक औ, गौरी सुत्त गन्नेश ॥ १४६ ॥

अर्थ याको स्पष्टही है ॥ १४६ ॥

पीपर एकजो महँगे मान । ताकर मम न कोऊ जान ॥
डारलफायनकोऊखाय।खसमअछतबहुपीपरजाय॥१४७॥

एकपीपरके बृक्षको सबै महँगे मानिलियो है सो वह ब्रह्महै अनुभवगम्य है वाको मर्म कोई नहीं जानै है कि पीपरको डार लफायकै कोई नहीं खायहै अर्थात् वा अलखहै कैसेमिली वातो कथनमात्रही है सो साहब कहै हैं कि जीवनको खसम अछत मैं बनैहौं ताको तौ नहीं प्राप्ति होय वहपीपरजो ब्रह्म ताहीमें सब चलेजातेहैं सो वह ब्रह्म झाँई है तामें प्रमाण मूल रमैनीको ॥

" निर्गुणअलख अकह निरबाना । मन बुधि इन्द्री जाहि न जाना ॥
बिधिनिषेध जहँवाँ नहीं होई । कह कबीर पद झाँई सोई ॥
पहिले झाँई झाँकते, पैठो सन्धिककाल ।
झाँईकी झाँई रही, गुरुबिन सकैको टाल" ॥ १४७ ॥

शाहू ते भो चोरवा, चोरन ते भो जुज्झ ॥
तब जानैगो जीयरा, मार परैगो तुज्झ ॥ १४८ ॥

प्रथम शाहु रहे कहे शुद्धरहेहौ सो ब्रह्ममाया मनचोरहैं तिनमें लगिकै तैंहू चोर ह्वैगये अर्थात् उपदेश करिकै जीवन के साहब को ज्ञान चोराय लियो काहूको कह्यो कि ब्रह्म तूही है काहूको कह्यो कि आदिशक्तिको भजु जगत्को कर्त्ता वही है काहूको कह्यो जो मनमें आवै सो करु बन्धमोक्षको कारण मनै है याही रीति गुरुवाचोरन ते जुज्झ भयो सो तुज्झ कहे तोहीं तबहीं समुझि परैगो जब यमको सोंटा शीशमें लगैगो तब तब जानैगो कि रक्षकको भुलाय दियो ॥ १४८ ॥

ताकी पूरी क्यों परै; गुरु न लखाई बाट ॥
ताको बेरा बूड़िहैं, फिरि फिरि अवघट घाट ॥१४९॥

जाको गुरुने साहब के पास पहुँचिबे की बाट नहीं लखाई ताकी पूरि कैसे परै ताकी बेरा जो है ज्ञान सो अवघटघाटमें बूडि जाइगो अर्थात् जब उनके शरीर छूटिजायँगे पुनि पुनि जनम मरण होइगो तब वा ज्ञान भूलिजायगो१४९॥

जाना नहिं बूझा नहीं, समुझि किया नाहिं गौन ॥
अन्धेको अन्धा मिला, राह बतावै कौन ॥१५०॥

मनमायादिक जो जगतहै ताको न जान्यो कि यह जड़ है मैं इनको नहीं हौं इनते भिन्नहौं वा ब्रह्मको न बूझ्यो बिचारई करत रहिगये अपने स्वरूपको न जान्यो कि मैं साहबको अंशहौं समुझिकै नाना मतनमें गौन न किये कि ये नरक लैजानवारे हैं सो आँधर जे जीव तिनको आँधरै गुरुवालोग मिलें साहब के यहाँकी राह कौन बतावै ॥ १५० ॥

जाको गुरु है आँधरा, चेला कहा कराय ॥
अंधे अंधा ठेलिया, दोऊ कूप पराय ॥ १५१ ॥

याको अर्थ स्पष्टही है ॥ १५१ ॥

मानस केरी अथाइया, मति कोइ पैठै धाय ॥
एकइ खेते चरत हैं, बाघ गदहरा गाय ॥ १५२ ॥

या संसारमें मनुष्यकी अथाई है तामें धाय कै कोई मति पैठे काहेतें कि एकइ खेत जो है संसार तामें बाघ जो है जीव औ गदहा जो है मन औ गाय जो है माया सो एकई संग चरै हैं गदहा मनको कह्यो सो कर्मको बोझा याहीमें लादिजायहै औ जीव बाघहै समर्थ जो साहबको जानै तौ गायजो है माया ताको खायजाय अर्थात् नाशकर देइ ॥ १५२ ॥

चारि मास घन बरसिया, अति अपूर्व शरनीर ॥
पहिरे जड़तर बख्तरी, चुभै न एकौ तीर ॥ १५३ ॥

कबीरजी कहै हैं कि घन जोहौं मैं सो चारि मास जेहैं चारियुग तामें अतिअपूर्व जो है शरकहे बाणरूपी नीरज्ञान ताको बरसत भयो कहे उपदेश करतभयो सबजीवनको परन्तु ऐसो जड़तरकहे जड़ौते जड़ बख्तर पहिरे है कि तीरकहे एकौ ज्ञान नहीं चुभै है अथवा चारिमास हैं चारिउ वेद ते घनकहे बहुतज्ञानकी बर्षा कियो कहे सबजीवनको उपदेश कियो परन्तु साहब को

कोई न समुझत भयो वेदको अर्थ औरईमें लगाय दियो सब शब्द को सार राम नाम न जाने सब नरकको चलेगये तामें प्रमाण ॥ " नाम लिया सो सब किया, वेद शास्त्रको भेद ॥ बिनानाम नरकै गये, पढ़ि पढ़ि चारो वेद" ॥ १५३ ॥

गरुके भेला जिव डरै, काया छी जन हार ॥
कुमति कमाई मन बसै, लागु जुवाकी लार ॥ १५४ ॥

कबीरजी कहै हैं कि गुरुके भेलेमें जिउ डरै है वहगुरुकी भेली कैसी है कि काया जे हैं पांचौ शरीर तिनको छीजनकहे छोड़ायदेन वारी है सो ये संसारी जीवनके मनमें कुमतिकी कमाई लगी है ताते जुवाकी लार मानुष शरीर में लागै है न कर्म करतबन्यो तौ नरकगयो कर्म करत बन्यो तौ स्वर्गगये कर्म छूटनको उपाय नहीं करै हैं लारसंगको कहै हैं पश्चिमकी बोली है ॥ १५४ ॥

तन संशय मन सोनहा, काल अहेरी नित्त ॥
एकै डाँग बसेरवा, कुशल पुछौ का मित्त ॥ १५५ ॥

साहब कहै हैं संशय जो मन सोई तनमें सोनहाहै जीवन को शिकारखेलै है औ एक यह काल अहेरी है अर्थात् जब कालमारै है तब मनकी सुरति जहां मरतमें जायहै तहां आत्मा जात रहै है तौनै शरीर धारण करै है सो मन सोनहा काल अहेरी जीव सावज ये तीनों एकैडांग जो शरीर तामें बसै हैं सो हे मित्र! तुमतौ हमारे सखाहौ मूलिकै यहडाँग जो शरीर तामें कहाँ बसेहौ चारौ शरीरन का छोड़ि हंसशरीरमें बैठि मेरे पास आवो ॥ १५५ ॥

शाहु चोर चीन्है नहीं, अंधा मतिका हीन ॥
पारिख बिना विनाशहै, करि विचार हो भीन ॥ १५६ ॥

हे अंधा ! हेज्ञाननयनकोहीन तैंतो शाहुरह्यो है चोरजौ है मन ताको तैं न चीन्हें ताते तैहूं चोर ह्वैगये सो बिचार न कियो कि पारिख बिना बिनाशहै सो पारिखतो करु तैंतो चित्है औ यह मन जड़हैं तेरो वाको साथ नहीं बनिपरै है सो जैसे तैं अणुचित्है तैसें साहब विभुचित्हैं चितचितको साथ होइहै सो बिचारकरि यहि मनसे भिन्नह्वै मेरे पास आउ ॥ १५६ ॥

गुरु सिकिली गर कीजिये, मनहि मसकला देइ ॥
शब्द छोलना छोलिकै, चित दर्पण करिलेइ ॥१५७॥

जो कहौ मनते हम कौनी भाँतिते भिन्नहोइँ तौ गुरु सिकिलीगरहै आत्मा तरवारि है मनादिकनकी काटनवारी है तामें साहबको ज्ञानरूपी मसकलादै रामनाम छोलनाते अज्ञानरूपी मुरचाछोलि प्रेमकी बाढ़िधरि मनादिकनके काटिबेको समर्थ करिदेइ अर्थात्चारिउ शरीरको छोड़ि स्वरूपरूपी दर्पण में आपनो हंसशरीर जानिलेइ कि मैं साहबको अंशहौं ॥ १५७ ॥

मूरुखके समुझावते, ज्ञान गाँठिको जाय ॥
कोइला होइ न ऊजरो, नौ मन साबुन खाय॥१५८॥

यहसाखी को अर्थ प्रसिद्धै है ॥ १५८ ॥

मूढ़ करमिया मानवा, नख शिख पाखर आहि ॥
बाहनहारा का करै, बाण न लागै ताहि ॥ १५९ ॥

मूढ़कर्मी कहे मूढ़ है औ कर्मी है कर्म्म त्यागको उपाय नहीं करै है ऐसो जो ह मानुष्य सो नखशिखलौं अज्ञानरूपी पाखरपहिरे है । औ जो मूढ़कर्मी पाठहोय तौ बानरकी नाई बाँध्यो है हठ नहीं छांड़ै ॥ १५९ ॥

सेमर केरा सूवना, सिहुले बैठा जाय ॥
चोंच चहोरै शिर धुनै, यह वाहीको भाय ॥ १६० ॥

सेमरका सुवा जोसिहुले कहेमदारेमें बैठिकै चोंच मार्यो जब घुवा निकर्यो-तब शिर धुनै है या कहै है कि या वहीको भाई है अर्थात् जीव संसार मुख लागि-रह्यो जब कुछ न पायो तब ब्रह्म सुखमें लग्यो कि मोको ब्रह्मानन्द होयगो सो वहौ बिचार करत जब अठई भूमिकामें गयो तब अनुभवौ न रहिगयो तब जान्यो कि जैसे संसारी सुख मिथ्या है तैसे ब्रह्मसुखौ मिथ्या है कुछु नहीं रहि जाय है अथवा घरछोड़िकै बैरागी भये महन्ती लिये मठ बाँधे चेला भये सो घरमें एकै मेहरी रही एकै बेटा रहो इहां बहुत चेली भई बहुत चेला भये

बहुत घर भये न गृहस्थीमें बन्यो न बैराग्यमें बन्यो तामें प्रमाण चौरासी अङ्गकी साखी ॥

" घरहु ताजिनि तौ अस्थल बाँधिनि अस्थल तजिनि तौ फेरी ॥
फेरी तजिनि तौ चेला मूड़िनि यहि बिधि माया घेरी " ॥ १६० ॥

सेमर सुवना बेगि तजु, घनी बिगुर्चन पाँख ॥
ऐसा सेमर जो सेवे, हृदया नाहीं आंख ॥ १६१ ॥

हे सुवा जीव संसार रूप सेमर को तैं छोड़िदे तैं तो पक्षी है तेरे मेरे पास आवनको पक्ष है कहे तेरे स्वरूपमें मेरे पास आवनको ज्ञान बनो है जो संसारी ह्वै जायगो माया ब्रह्म में लगैगो तौ मेरे पास आवनेको तेरे पखना बिगुर्चन ह्वै जायंगे कहे घुवा ऐसो चोंथि डारैंगे नाम नाना ज्ञानमें लगाय देइँगे वाज्ञान न रहि जायगो सो ऐसे संसाररूपी सेमरको सेवै है जाके हृदयमें आंखी नहीं हैं मेरो ज्ञान नहीं है ॥ १६१ ॥

सेमर सुवना सेइये, दुइ ढेढीकी आश ॥
ढेढी फुटी चटाक दै, सुवना चले निराश ॥ १६२ ॥

हे सुवना! जीव संसार सेमरकी दुइ ढेढीकी आश सेवै है सेमरकी दुइ ढेंढी कौनि हैं एक फूलकी है एक फलकी है औ या संसारमें एक तौ संसारी सुख है एक परलोक सुख है सो सेमरमें रसकी चाह कियो जब चोंच चहोरचो तब ढेढी चटाकदै फूटिगई घुवा निकस्योसुवा निराश ह्वैकै चले गये रसकी प्राप्ति न भई तैसे तैं संसारमें परचो जनन मरण छुटावे के वास्ते धोखा ब्रह्ममें लाग्यो परन्तु जनन मरण न छूट्यो ॥ १६२ ॥

लोग भरोसे कौनके, जग बैठि रहे अरगाय ॥
ऐसे जियरै यम लुटै, जस मेढ़ै लुटैं कसाय ॥ १६३ ॥

अरे लोगो यहि संसार में कौनके भरोसे अरगायकै कहे चुपाय कै बैठि रहे हौ ज्ञान करिकै कि मैहीं ब्रह्महौं अथवा या मानिकै कि मैहीं जीवका मालिक हौं अथवा योग करिकै कुंडलिनी के साथ प्राणको चढ़ायकै ज्योतिमें मिलायकै औ

चुप ह्वैके बैठि रहे सो हम पूछै हैं कि तुम कौनके भरोसे बैठि रहे साहबको तौ जानि बोई न कियो जब उत्पत्ति भई तब ब्रह्मते माया तुमको धरिलै आई औ पुण्यक्षीण भई तब स्वर्गादिकनते उतरि आये औ जब समाधि छूटी तब जीव उतरि आयो पुनि जसके तस ह्वैगये औ आपनेहीं को मालिक मान्यो तौ जब शरीर छूट्यो तब यम खूब लूट्यो जैसे मेढ़ाको कसाई लूटै हैं तैसे बिना रक्षक कौन बचावै ॥ १६३ ॥

समुझि बूझि दृढ़ ह्वैरहे, बल तजि निर्ब्बल होय ॥
कह कबीर ता संतको, पला न पकरै कोय ॥ १६४ ॥

सर्वत्र साहबको समुझिकै औ साहब को रूपबूझिकै कि या भांतिको है जड़वत ह्वै रहे कि जो करै है सो साहब करै है ऐसे साहब को जो जानै है ताके बहुत सामर्थ्य ह्वै जायहै जो चाहै सो करिलेइ तौने आपने बलको छपाय कै आपको निर्ब्बलै मानै है कि हम कहा करै हैं जौन काम करै है तौन साहिबै करै है वे समर्थ हैं सो श्री कबीरजी कहै हैं कि ऐसे संतको पला कोई नहीं पकरै है कहे बाधा कोई नहीं करिसकै है सब साहिबै करै हैं तामें प्रमाण कबीरजीके ज्ञान संबोधनकी साखी ॥

"पाप पुण्य फल दोय, सबै समर्पै समरथै ॥
निज मन शक्ति न होय, मनसा बाचा कर्मणा" ॥ १६४ ॥

हीरा वही सराहिये, सहै घननकी चोट ॥
कपट कुरंगी मानवा, परखत निकसा खोट ॥१६५॥

हीरा जो है साहबका ज्ञान सोई सराहा जायहै जो घन चोट सहै कहे नानामत करिकैकोई बादीखंडन न करिसकै औमानुष जे कपटकुरंगी कहे हरिणी ह्वै रहे हैं अर्थात् चंचल ह्वै रहे हैं सो जब घनकी चोंटलगी कहे गुरुवालोग आपनोमत समुझायो तब हृदय फूटिगयो साहबको ज्ञान तो जानो न रहै तामेंप्रमाण कबीरपरिचयकी साखी ॥

"झूंठ जवाहिरको बनिज, तब लगि परि है पूर ।
जबलगि मिलै न पारखी, घने चढ़ा नहिं कूर" ॥
सो या मायाके रंगवारे मानुष परखतमें खोटही निकसै हैं ॥ १६५ ॥

हरि हीरा जन जौंहरी, सबन पसारी हाट ॥
जब आवै जन जौंहरी, तबही रोकी साट ॥ १६६ ॥

हरि जे हैं तेई हीरा हैं औ जन जेहैं तेई जौंहरी हैं कहे जाननवारे हैं सो सब जीव हाट लगावन लगे कहे साहब को जानन लगे ज्ञान कथनलगे गुरुवालोग आपने मतमें खैंचिगये सो जब साहबके जाननवारे जनाय देनवारे साहब जन जौंहरी आये तब सबके मत खंडन करि हीराके—समीप कनी जे जीव तिनको पहुँचाय देतभये अर्थात् जीवनको या जनाय दिये कि तुम साहबके हौ साहब में लगौ या हीरा के साटको अर्थ है और मतनमें परे जननमरण न छूटैगो ये कनफुका संसारही को लैजायगो तामेंप्रमाण॥ "कनफुका गुरु हद्का बेहदका गुरु और ॥ बेहदका गुरु जो मिलै, तब पावै निज ठौर ॥ १६६ ॥

हीरा तहां न खोलिये, जहँ कुंजरोंकी हाट ॥
सहजै गांठी बांधिकै, लगो आपनी बाट ॥ १६७ ॥

जहां कुंजरों की हाट है तहां हीरा न खोलिये काहेते कि वे भांटा खीराके बेंचनवारे हीराको भेद कहांजानैं अर्थात् जहां आपने आपने मतमें काउ काउ करि रहे हैं तहां साहबके ज्ञानरूपी हीरा न खोलिये साहब में मनलगाये एकान्त बैठि रहिये यही आपने बाटमें लगे रहिये ॥ १६७ ॥

हीरा परा बजारमें, रहा छार लपटाय ॥
बहुतक मूरख चलि गये, पारिख लिया उठाय ॥ १६८ ॥

हीरा जो है रामनाम जेहिते साहबको ज्ञान होइहै । सो बजारमें पराहै कहे सब संसार के लोग कहे हैं छारमें लपटाय रह्यो है । अर्थात् नानामत नाना-ज्ञान रामनामहीते निकसे हैं, औ सब मत रामनामही ते सिद्ध होय हैं यह राम नाम साहबको बतावै है ते कोई नहीं जानै हैं । या नहीं जानैं ते ऐसे जे

मूरख ते केते संसार बजारमें चलिगये पै जाते साहब को ज्ञान होई ऐसो जो रामनाम हीरासो न लीन्हे अर्थात् यह रामनाम साहबको बतावन वारो है सो कोई न समझ्यो। सो जाते साहबको ज्ञान होयहै ऐसो रामनाम हीरा ताके जे पारखी रहे ते राम नाम हीराको जानिकै उठायो जाते साहबको पहिंचानिकै मुक्त ह्वै गये। अथवा रामनाम ऐसो हीरा बजार में कहे संसार में परि छार में लपट्यो है अर्थात् ज्ञान कांड, कर्म कांड और योग कांडमें लग्यो है और राम नाम में नहीं लग्यो हैं, जो साहब को बतावनवारो है जाते मुक्ति ह्वै जाई छार में कहा लपटो है? कि, ज्ञान काण्ड कर्म काण्ड आदि कर्मनमें राम नामई को मानै हैं याही ते काहू को नहीं जानि परै है। राम नाम को और और सिद्धिन में लगाई देइ हैं तामें प्रमाण श्रीगोसाईं जीको।

नाम जीह जपि जागहिं योगी। विरति बिरंचि प्रपंच वियोगी॥
ब्रह्म सुखहि अनु भवहि अनूपा। अकथ अनामय नाम न रूपा॥
जाना चहै गूढ मत जोऊ। नाम जीह जपि जानहिं तेऊ॥
साधक नाम जपहिं लै लाये। होइ सिद्ध अणि यादिक पाये॥
जपहिं नाम जन आरत भारी। मिटहि कुसंकट होंहि सुखारी॥
सो येही रामानामको लैकै सब साहबको जान्यो है तामें प्रमाण॥

श्रीकबीर जीको रेखता।

रामको नाम चौ मुक्तिका मूल है निञ्चोर रस तत्त्व छानी।
रामको नाम षट शास्त्रमें मथलिया राम षट दर्शमें है कहानी॥
रामको नाम लै ध्यान ब्रह्मा किया ररंकारे धुनि सुनि मानी।
कहैं कब्बीर अवगाह लीला बड़ी रामको नाम निर्बाण बानी॥
रामको नाम लै विष्णु पूजा करैं रामको नाम शिव योग ध्यानी।
रामको नाम लै सिद्ध साधक जियो जियो सनकादि नारदहु ज्ञानी॥
रामको नाम लै राम दीक्षा लिया गुरु वाशिष्ठ मिलि मंत्र दानी।
रामको नाम लै कृष्ण गीता कथी मथी पारत्थ नहिं ममजानी॥१६८॥

हीराकी ओबरी नहीं, मलयागिरि नहिं पांति॥
सिंहनके लेहड़ा नहीं, साधु न चलैं जमाति॥१६९॥

सबको मालिक साहबएकही है औ साहब के जाननवारे बिरलेसाधुहैं जे रामनाम को जपै हैं वेसब साधुनके शिरमौरहैं तामें प्रमाण ॥ " साधु हमारे सब खड़े, अपनी अपनी ठौर । शब्द बिबेकी पारखी, सो माथेको मौर" ॥ तामें या दृष्टान्त है जैसे मलैगिरी चन्दन एकहै, सिंहएकहै तैसे हीरा जो राम नामहै तेहिते साहब को ज्ञान होयहै सो एकही है औ ताके जाननवारे साधु एकही हैं वे जमाति में नहीं चलै हैं ऐसेतो सब साधुही कहावै हैं औ राम नाम वस्तु खोयकै औरेमें लागै हैं ते गँवारहैं तामें प्रमाण ॥ " वह हीरा मतिजानिये, जेहिलादै वनजार ॥ यह हीरा है मुक्तिको, खोये जात गँवार ॥ १६९ ॥

अपने अपने शीश की, सबन लीन है मानि ॥
हरिकी बात दुरंतरी, परी न काहू जानि ॥ १७० ॥

जौनजाकोमतनीकलाग्यौ सोतौनेनमतको शीशचढ़ाय मानि लीन्ह्यो हरिकी जो दुरंतरी बातहै सबते दूरकहेपरे सो काहूको न जानिपरी कि सबके रक्षक साहबै हैं ॥ १७० ॥

हाड़ जरैं जस लाकड़ी, तनवा जरै जस घास ॥
कबिरा जरै सो राम रस, जस कोठी जरै कपास ॥ १७१ ॥

कबीर जे जीवहैं तिनके रामरसजो है रामभक्ति सो कैसे उनके अंतःकरणमें जरै है जैसे कोठीमेंकपास भितरैजरै है याहीते उनके हाड़बार लकड़ी घासकी नाईं जरै हैं ॥ १७१ ॥

घाट भुलाना बाट बिन, भेष भुलाना कानि ॥
जाकी माड़ी जगत में, सो न परा पहिचानि ॥ १७२ ॥

घाटकहे सत्संग बाट जो है बिचार ताके बिना भूलिगयो अर्थात् साहबको तौ जान्यो न अपनेहीको ब्रह्म माननलग्यो बिचारभूलि गयो सत्संग काहेको करै आपने गुरुवनकी कानिमानि भ्रमवारे मत न छाड़तभये भेषवारे साधु सबभुलायगये सो जाकी माड़ी कहे माया जगत्में पूरिरही ऐसेजो साहब सो न पहिचानिपर्यो माड़ी मायामें भूलिगये ॥ १७२ ॥

मूरुख सो क्या बोलिये, शठसों कहा बसाय ॥
पाहनमें क्या मारिये, चोखा तीर नशाय ॥ १७३ ॥

मूरुख कौन कहावै है कि साधुनके समुझायेते सूझै परन्तु बूझै नहीं है तासों क्याबोलिये। शठकौनकहावैहै कि चाहे नीकौ कोऊ बतावै परन्तुछाड़ै न हठकीन्हे वाहीमें लागरहै है। जौन गुरुवा लोग पहिले बतायनिहै चाहै कूपौमा गिरिपरै पै छाडै न सोऐसेलोगन ते कहा बसाय उनको ज्ञानदीन्हे ज्ञानौ खराब होयगो पाहनके मारे तीरही टूटैगो शठ मूरुख नहीं समुझै तामें प्रमाण ॥ "पानी कोपाषाण, भीजै तौ बेधै नहीं ॥ त्यों मूरुखको ज्ञान, सूझै तौ बूझै नहीं" ॥ १७३ ॥

जैसे गोली गुमजकी, नीच परे ढुरि जाय ॥
ऐसे हृदया मूर्खके, शब्द नहीं ठहराय ॥ १७४ ॥

जैसे गुम्मजमें जो गोलीमारिये तौ ऊँचेपरे ढरकिजायहै ऐसे मूरुखके हृदयमेंशब्द रामनाम केतौ उपदेशकारिये परन्तु ठहराय नहीं है एकघरीभर तौ ज्ञानरह्यो फिरि ज्योंकोत्यों ह्वै गयो ॥ १७४ ॥

ऊपरकी दोऊ गई, हियकी गई हेराय ॥
कह कबीर चारिउगई, तासों कहा बसाय ॥ १७५ ॥

ऊपरकी आँखिनते यादेख हैं कि साहबको भजिकै हनुमानादिक अजर अमर ह्वैगये जिनकी पूजा देवता करै हैं सब सिद्धिको प्राप्तहैं कालशक्र बिष्णु सबते अधिकहैं औ हियेकी आँखिनते देखै हैं कि हाथिनको पति ऐरावतहै पक्षिनको पति गरुड़है भक्तनमें महादेवपाति हैं मनुष्यनमें भूपति है ऐसे सब ईश्वरनके मालिक श्रीरामचन्द्र हैं तिनको नहीं भजन करै है सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि जाकीभीतरौबाहरकी आँखिफूटिगई तासोंकहाबसाय ॥ १७५ ॥

केते दिन ऐसे गये, अन रूचे को नेह ॥
बोये उसर न ऊपजै, जो घन वरसै मेह ॥ १७६ ॥

जैसे ऊसरमें बोवै घन बहुतौ बरसैं परन्तु जामै नहीं है तैसे निराकार धोखामेंलग्यो फलकछू न हाथलग्यो वातो कुछ बस्तु ही नहीं है अनरुचेको नेह है अर्थात् धावड़ी प्रीतिकियो वातोप्रीति ही नहीं करै ॥ १७६ ॥

मैं रोऊं सब जगतको, मोको रोवैं न कोइ ॥
मोको रोवै सो जना, जो शब्द विवेकी होय ॥ १७७ ॥

साहब कहे हैं कि मैं सब जगतपर दया करिकै रोऊँहौं कि मेरो अंश जीवमोको भूलिगयो ताते जगत्में जनन मरणरूपी दुःखसहै है औ जीवमोको नहीं रोवै है कि हम अपने मालिकको भूलिगये नाना मालिक मानि नाना दुःख पावै हैं सो मोको सो जन रोवै है जो शब्द जो रामनाम ताको विवेकीहोय कि रकारके समीप मकार शोभित होइहै मैं साहबको हौं ॥ १७७ ॥

साहब साहब सब कहैं, मोहिं अँदेशा और ॥
साहबसों परिचय नहीं, वैठगा केहि ठौर ॥ १७८ ॥

कबीरजी कहे हैं कि साहब साहब तो सब जीव कहे हैं अर्थात आपने आपने इष्टदेवताको सबते पर कहे हैं कि येई सबके मालिकहैं सो येतो सब एक एक मालिक बनाये हैं पै मोको या और अन्देशाहै कि जौन रामनाम साहबको बतावै है तौने रामनामको जानि साहबते परिचयतो करिबै न कियेये कौने ठौर बैठैंगे काके पास जायँगे अर्थात जनन मरण न छूटैगो ॥ १७८ ॥

जिव बिन जिव बाचै नहीं, जिवका जीव अधार ॥
जीव दया करि पालिये, पंडित करहु विचार ॥ १७९ ॥

या जीव बिना जीव कहे सतगुरु बिना नहीं बाचै है जीवको जीव जो सतगुरुहै सोई आधारहै सो जीवपर दया करि अर्थात् सतगुरुके शरणह्वै जीव उद्धारकरो हे पंडित ! तुम बिचारकर देखो तो बिना सतगुरु संसार पार न होउगे ॥ १७९ ॥

हमतो सबहीकी कही, मोको कोइ न जान ॥
तबभी अच्छा अच्छा अबभी, युग युग होउँनआन १८०

साहब कहै हैं कि हमतो सबके अच्छेकी कही जाते कालते बाचिजायँ परंतु मोको कोई न जानत भयो सो तब भी अच्छा है अबभी अच्छाहै काहेते कि युगयुगमें मैं आन नहीं होउँहौं वहीवही बनोहौं जो अबहूं मोको जानै तौ मैं कालते बचायलेउँ तामें प्रमाण गोसाईंजीको ॥

दोहा ॥ "बिगरी जन्म अनेककी, सुधरै अबहीं आज ॥
होय रामको राम जपि, तुलसी तजि कुसमाज" ॥

औ कबीरजीने कह्यो है ॥

"कह कबीर हम युग युग कही । जबही चेतो तबहीं सही" १८०

प्रकट कहौं तौ मारिया, परदा लखै न कोइ ॥
सहनाछपापयारतर, को कहिवैरी होइ ॥ १८१ ॥

श्रीकबीरजीकहै हैं कि जो मैं प्रकट कहौहौं कि तुम साहबके हौ और के नहीं हौ तौ मारन धावै है अर्थात् बादबिवाद करै है औ जो परदे सों कहौ हौं तौ कोई समुझतै नहीं है काहेते नहीं समुझै है कि सहना जो है मन जौन संसारको रचिलियो है सो शरीर जो पयार तामें छपा है साहबको नहीं जानन देइ है पयार शरीर याते कह्यो कि सार जो साहबको ज्ञान सो निकसि गयो है सो याको कहिकै बैरी होइ ब्रह्म बादिनते औ सहना वो कहावै है जो सरका-रते पयादा आवै है सो ब्रह्म मायाके साथ या मन आयो है साहबका ज्ञान छिदेहै साहबको जानन नहीं देइहै या मनहीं सब संसार रचिलियो है तामें प्रमाण ।

कबीर जीको पद ॥

संतो या मन है बड़ जालिम ।

जासों मनसों काम परो है तिसही ह्वैहै मालुम ॥
मन कारणकी इनकी छाया तेहि छायामें अटके ।
निरगुण सरगुण मनकी बाजी खरे सयाने भटके ॥
मनहीं चौदह लोक बनाया पाँच तत्त्व गुण कीन्हे ।
तीनि लोक जीवन बश कीन्हे परे न काहू चीन्हे ॥

जो कोउ कहै हम मनको मारा जाके रूप न रेखा ।
छिन छिनमें केतनौ रँग ल्यावै जे सपनेहु नहिं देखा ॥
रासातल यकईश ब्रह्मण्डा सब पर अदल चलावै ।
षट रसमें भोगी मन राजा सो कैसे कै पावै ॥
सबके ऊपर नाम निरक्षर तहँ लै मनको राखै ।
तब मनकी गति जानि परै यह सत्य कबिर मुख भाखै ॥१८१॥

देश विदेशन हौं फिरा, मनहीं भरा सुकाल ॥
जाको ढूंढ़त हौं फिरौं, ताको परा दुकाल ॥ १८२ ॥

देशकहे संसार बिदेशकहे ब्रह्म तौने में फिराहै सो ये दूनों मायाको सुकालभराहै अर्थात् वह ब्रह्म मनहीं को अनुभवहै औ संसार मनहीं को कल्पनाहै जौन बस्तु को मैं ढूंढ़त फिरौं हौं जो मन बचनके परे है ताको दुकालपरचो वा न ब्रह्ममें है न संसार में है ॥ १८२ ॥

कलिखोटा जग आंधरा, शब्द न मानै कोइ ॥
जाहि कहौं हित आपना, सो उठि बैरी होइ ॥ १८३ ॥

जगत् तो आँधराहै ज्ञानदृष्टि याके नहीं है कुछ समुझै नहीं है तौने में या कलिखोटा प्राप्त भयो सो जाको शब्द जो राम नाम मैं बताऊँहौं सोई बैरी होइहै कहे शास्त्रार्थ करै है मानै नहीं है ॥ १८३ ॥

मसि कागद तो छुवों नहिं, कलम गहो नहिं हाथ ॥
चारिहु युग माहात्म्य जेहि, करिकै जनायो नाथ १८४

गुरुमुख ॥ चारिउ युग में है माहात्म्य जिनको ऐसे जे नाथ रघुनाथहैं तिनको कबीरजी सबको जनायो न कलमगही न कागद लियो न मसि लियो मुखहीतें कह्यो ये तो सरल करिकै कह्यो कि जामें एकौ साधन न करनपरै सो साहब कहै हैं कि जो मोको जानिलेइ तौ संसारते तरिजाय जो कहो कबीर जी मुखही तें कह्यो है ग्रन्थकैसे भये हैं तौ कबीर जी कहते गये हैं शिष्यलोग लिखते गये हैं ॥ १८४ ॥

फहमै आगे फहमै पाछे, फहमै दहिने डेरी ॥
फहमै परजो फहम करत है, सोई फहम है मेरी॥१८५॥

गुरुमुख।

फहमजो है ज्ञानस्वरूप ब्रह्म सोई आगे है सोई पाछे है सोई दहिने है सोई डेरी कहे बायें है अर्थात् सर्वत्रपूर्णहै सो यहजोफहमहै ज्ञानस्वरूप ब्रह्म तौनेके ऊपर ब्रह्मयाहूके परे साहब है फहम करै है कि वह ज्ञानरूप उनहींको प्रकाश है याहूके परे साहब हैं तौन फहम मेरी है कहे वहज्ञान मेरोहै ॥ १८५ ॥

हद चलै सो मानवा, बेहद चलै सो साध ॥
हद बेहद दोनों तजै, ताको मता अगाध ॥ १८६ ॥

हद जो चलै है सो मानवाहै कहे उनको मान कहे प्रमाण है अर्थात् जो जौने देवता की उपासना कियो सो तौने देवता के लोकगये वाको वहैभर प्रमाणहै वतनैज्ञान होइहै औ जे बेहद चलै हैं ब्रह्ममें लगै हैं ते साधुहैं जो ब्रह्मको साधन करिकै सिद्धि करिलेइ सो साधु सो हद जो है सगुणसंसार औ बेहद जोहै निर्गुण ब्रह्म ये दोनोंको जे तजिकै निर्गुण सगुणके परे परम पुरुष श्री रामचन्द्र के सेवक ह्वैरहे हैं ऐसे जे रामोपासक हैं तिनहीं के मत अगाधहैं ॥ १८६ ॥

समुझैकी गति एकहै, जिन समुझा सब ठौर ॥
कह कबीर जे बीचके, बल कहि औरै और ॥१८७॥

जे रामोपासक निर्गुण सगुणको समुझिकै ताहूते परे साहब को जान्यो तिनकी गति एकहै कहे एक साहबहीको सबठौर निर्गुण सगुणमें समुझै हैं कबीरजी कहै हैं कि जे बीचकेहैं ते और और उपासना करै हैं और और ज्ञानकरै हैं औ आपने आपनेदेवतनमें बलकै हैं कि येई सबके मालिकहैं॥ १८७॥

राह बिचारी का करै, पथिक न चलै बिचारि ॥
आपन मारग छोड़िकै, फिरहि उजारि उजारि॥१८८॥

पथिक जो विचारिकै न चलै तौ राह बिचारी कहाकरै वेद पुराण शास्त्र येई सब राहे हैं तिनको तात्पर्य्य यही है यहजीव साहबको अंशहै उनहींके जानें संसारते छूटै है सो रामनाम को जपिकै साहबको ह्वैरहै यह जो है आपनो मारग तौनेको छोड़िकै उजारि उजारि कहे कोई ब्रह्ममें कोई ईश्वरमें कोई नाना देवतन की उपासनामें फिरै हैं सोउनके जननमरण रूप कण्टक लागिबोई चाहैं नरकरूप खोह गिरैचाहै औ जीवसाहबको अंशहै तामें प्रमाण ॥ "ममैवांशो-जीवलोके जीवभूतः सनातनः" ॥ औ ब्रह्ममाया ईश्वर जगत् इनको विचारकरै तौ भ्रमभारैहै कछु इनते जीवको उद्धारनहीं होयहै तामें प्रमाण ॥ "ब्रह्मजीव ईश्वरजगत ईसब अनमिलसैन ॥ निरबारे ठहैर नहीं भाखत झाई बैन" ॥ १८८ ॥

मूआहै मरि जाहुगे, बिन शर थोथे भाल ॥
परे कल्हारे वृक्षतर, आजु मरै की काल ॥ १८९ ॥

अरेजीवो ! तुम केतनो बार मरतआये हौ औ मरिजाउगे बिना शरकाहेते कि तुम्हारे भालेमें थोथे लिखे हैं बिना फलके बाणसों तुम यहि संसार वृक्षतरे जो बोलते बताते हौ सो परे कल्हारते हौ आजु मरिजाउ कि कालिहमरिजाउ बाकी कछू नहीं है ॥ १८९ ॥

बोली हमारी पूर्व्वकी, हमैं लखा नहिं कोइ ॥
हमकोतो सोई लखै, धुर पूरबका होइ ॥ १९० ॥

हमारी जो पूर्व्वकहे पहिलेकी बोली जो साहबकोरूप उपदेश करिआये जीवको स्वरूप बतायआये सो कोई नहीं लखै है न हम को लखै है सो हमारी-बाणीको तो सोई लखै है जो कोई पूरबको कहे शुद्धजीव ह्वैजाय जस पूर्व्वैहो रह्यो है ॥ १९० ॥

जेहि चलते रवदे परा, धरती होइ बिहार ॥
सोइ सावज घामें जरै, पण्डित करो बिचार ॥ १९१ ॥

जेहि जीवके चलतकहे निकसतमें यहशरीर रवदे कहे धूरिमें मिलिजाय है पुनि वहैजीव जो कहूं अवतरै है तब यहै शरीर को पाइकै धरती में बिहा-

रकैरहै औ वहै सावज जो है जीव सो शरीरनको पायके आधिदैविक आधिभौतिक आध्यात्मिक जे तीनों तापहैं तेई घाम हैं तिनहींमें जरै है सो हे पण्डित तुम बिचारकरिकै असारको त्यागकरायकै सार जे साहब श्रीरामचन्द्रहैं तिनकोबताओ तौ तीनों तापते जीव छूटै ॥ १९१ ॥

पायँन पुहुमी नापते, दरिया करते फाल ॥
हाथन परबत तौलते, तेहि धरि खायो काल॥ १९२॥

जे हाथनते पर्वत तौलते रहे औ पायँनते पुहुमी नापते रहे औ समुद्रको एकफाल करते रहे हिरण्याक्षादिक तिनहूँको काल खायलियो ॥ १९२ ॥

नव मन दूध बटोरिकै, टिपका किया बिनाश ॥
दूध फाटि कांजी हुआ, भया घीव का नाश ॥१९३॥

नवमन कहे नवीन नवीन जामें होते आये मन ऐसो कै तौ देह धरे अब यहदूध मनुष्यशरीर पायो सो कांजीका टिपका जो धोखाब्रह्ममें लागिबो ताते दूध जो मनुष्य शरीर सो कांजी भया कहे पशुतुल्य भया घीवजो साहबकोज्ञान रहै ताको नाशह्वै गयो ।

अथवा—ऊपरकी साखीमें बड़ेबड़े पराक्रमीको कालखाइ जाइ है ते कहि आये हैं । अब या साखीमें कहै हैं हे दूध जीव ! तैं या शरीरको अभिमान करिकै कहा नाना विषयन कहे मतनमें लागि गये । तो हे दूधजीव ! तैं कहा नौ मनको बटोरचो,अर्थात् नौ कहिये नवीन मन कहिये ननकी मानी हुई मनते तैं नाना प्रकारके नवीन मतनको गुरुवनते सुनिकै वाहीमें लगिकै मन जो है कांजीकाटिपका (बिन्दु) ताको आश्रय करचोपर वही मुझको मारि डारचो अपने में मिलायलियो तूहू मनमें मिलिकै मन ह्वै गयो । ताते जौन मनमें साहबको मिलनकी शक्ति होती घीवसो नाश ह्वै गई। सो आगे तैं शुद्धरहे स्वच्छ रहे तेरो संग कियो सब जीव सुधरि जाते रहे हैं अर्थात् शुद्धरूप आपनो जानिकै जीव साहबको होते रहे हैं सो तोको गुरुवालोग नाना मतनमें लगायकै काजी (पानी) बनाई डारचो । अथवा जो छाछको घास पेटनमें डारिदेई तौ घास जरि जाइ है तैसे तेरो संगकरिकै जीव जरि जाइहै कहे

साहबको ज्ञान त रहित ह्वै जाइहै । सोतैं ऐसो बिगारि गयो है कि जो अब दूध भयो चाहै तो आपने किये ते कौने हू भांति न होइ सकै है फिर जो होन चाहै तो होइ कैसे ताको या युक्ति है कि, जाको वा छाछ है ताहीको पियाई देइ तौ फिर वा दूध बनि जाइ है । तैसे जौने साहबको तू है तिनको जो रूप गुरु बताइ देइ और तैं ओई साहब श्रीरामचन्द्रमें लगि जाई तौ पुनि तैं शुद्ध जीव ह्वै जाइ ॥ १९३ ॥

केत्यो मनावैं पायँ परि, केत्यो मनावैं रोइ ॥
हिन्दू पूजै देवता, तुरुक न काहुक होइ ॥ १९४ ॥

श्रीकबीरजी कहै हैं कि केतन्यो हिन्दू ते देवतनके पायँ परि मनावै हैं कि हमारी मुक्ति ह्वैजाय औ नाना देवतनको पूजते हैं औ केतन्यो जे मुसलमान तिनको हाल आवती है औ साहब के इश्कमें रोवते हैं औ मानते हैं कि साहब बेचून बेचिगून बेसुवा बेनिमून निराकारहैं सो जे देवतनको मनावतेहौ पाँय परिकै तिनहीं की मुक्ति नहीं भई तिहारी मुक्ति कैसे होयगी देवता तो सब सगुणहैं बिष्णु सतोगुण के ब्रह्मा रजोगुणके रुद्र तमोगुणके अभिमानी हैं मुक्त नहीं भये तौ तुमको कैसे मुक्त करेंगे सो जौन तीनों देवतनको अधिकार दिये हैं सबको मालिक श्रीरामचंद्र तिनको भजनकरु तब मुक्ति पावैगो तहां प्रमाण गोसाईंजीको॥ "हरिहि हरिता बिधिहिं बिधिता शिवहि शिवता जिन दयो। सो जानकी पति मधुर मूरति मोदमय मंगल भयो" ॥ और मुसलमानौ ! तुम निराकार तौ मानौ हौ इश्क काकेपर करौ हौ सो जो साहबको रूप न मानौगे तौ इश्क तुम्हारा झूँटा ठहरि जायगा ताते बिचारौ तौ साहब रूप न होता तौ मूसा पैगम्बर को छिगुनी कैसे देखावता ताते उसके रूपहैं परंतु मायाकृत पाञ्चभौतिक नहीं हैं दिव्यरूपहैं याते निराकारकहै हैं सगुण निर्गुणके परे जो साहब श्रीरामचंद्र ताको बन्दाहोउ आपनेको जो मालिक मानौगे तौ बड़ी मार सहौगे तामें प्रमाण ॥ "स्वामी तो कोई नहीं स्वामी सिरजन हार ॥ स्वामी ह्वै जो बैठिहैं घनी परैगी मार" ॥१॥ औ साहब निर्गुण सगुणके परे हैं तामें प्रमाण ॥ सर्गुणकी सेवाकरौ निर्गुणका करुज्ञान ॥ निर्गुण सर्गुणके परे तहैं हमारा जान ॥ १९४ ॥

मानुष तेरा गुण बड़ा, मांस न आवै काज ॥
हाड़ न होते आभरण, त्वचा न बाजन बाज ॥१९५॥

हे मानुष! जो तैं देहको अभिमान करै है सो नाहक करै है यह देह तेरी कौने कामकी है तेरो मांस काम नहीं आवै कोई नहीं खायहै हाड़नके आभरण नहीं होते हैं त्वचाके बाजन नहीं बाजते हैं सो तेरे एकगुण है या देहते साहब मिलते हैं सो मिलिबे की यतन करु ॥ १९५ ॥

जौलगि ढोला तबलगि बोला, तौलगि धनव्यवहार ॥
ढोलाफूटाधनगया, कोई न झांकै द्वार ॥ १९६ ॥
सबकी उतपति धरणिमें, सब जीवन प्रतिपाल ॥
धरती न जानै आपगुण, ऐसा गुरूदयाल ॥ १९७ ॥

एकको अर्थ प्रकटै हैं एकको कहै हैं दुःखसुख नीकनागा सबकी उत्पत्ति धरतीहीते है कहे शरीरहीते है जौने ज्ञानते सब जीवनको प्रतिपाल है ऐसे ज्ञानको तू जान अपने गुणको धरती जो शरीर ताको न मानु ते पांचो शरीर ते बाहिरे हैं ऐसे गुरु दयालुहैं साहब छुड़ावन वारे ताको जानु तैं अंशहै साहब अंशी हैं ॥ १९६ ॥ १९७ ॥

धरती जानतआपगुण, तौ कधी न होतअडोल ॥
तिलतिलहोतोगारुवा, ह्वैरहत ठिकौकीमोल ॥१९८॥

धरती जो शरीर ताके धरैया जो जीव धरती सो आपनो गुण नहीं जानत कि मोमें साहबकी प्राप्ति होयबो यही गुणहै उत्पत्ति जो करौहौ सो साहबकी शक्तिते मेरीशक्ति नहीं है तौ कधी डोल न होतो अर्थात मनादिकनको उत्पत्ति करि संसारी न होतो शुद्धै बनो रहतो धरती जीव आपनो गुण कहा जानै जो आपनो गुण साहबको प्राप्त होइबो जानते तो तिल तिलमें गरुई होतजातो कहे तिलतिल वह ज्ञान बाढ़तौ औ ठीक जो है शुद्ध साहबके जनैया जीवात्मा ताके मोल ह्वै जातो कहे यही अमर ह्वै जातो जे साहबसों मेल किये रहे हैं शरीरहू

सांचह्वै जायहै तामें प्रमाण ॥ श्रीकबीरजीकी साखी "जाकी सांची सुरति है, सांची साखी खेल ॥ आठ पहर चौंसठ घरी, है साहब सो मेल ॥ १९८ ॥

जहिया किरतिम ना हता, धरती हतो न नीर ॥
उतपति परलय नाहती, तबकी कही कबीर ॥१९९॥

कबीरजी कहै हैं कि जब येरहवै नहीं भये तबकी कहै हैं ॥ १९९ ॥

जहांबोलअक्षरनहिंआया,जहँअक्षरतहंमनहिंहढाया ॥
बोलअबोलएकहैसोई, जिनयालखासोबिरलाहोई२००

जहां बोल जो शब्दभया तहां अक्षर आपही जायहै जब अक्षर भया तब मन हढ़ावही करै है कहे मनकी उत्पत्ति होतही है सो तब तो आकाशही नहीं रह्यो शब्द कहांते निकसा सो प्रथम जो बाणी रामनाम लैके उचरी सो अबोलहै कहे अनिर्बचनी य है सोई कहे तौने जो है रामनाम सोई बोलहै कहे वहीते सब अक्षर निकसे हैं सो वही अबोलहै कहे अनिर्वचनीयहै सो यह बात कोई बिरला जानै है काहे ते कि जब कुछ नहीं रहे तब एक साहबही रहे है तिनहीं ते सबकी उत्पत्ति भई है वहतो सबको मूलहै वाको कोई कैसे कहिसके जब यह साहब को ह्वै जाय और आशाछोड़ देइ तब साहबही प्रसन्न ह्वैकै सब बनाय लेइहैं तामें प्रमाण साहबकी उक्ति ॥ "जानै सो जो मही जनाऊं । बांह पकारि लोकै पहुंचाऊं॥यही प्रतीति मानु तैं मेरी । यह सुयुक्ति काहू नहिं हेरी॥ सत्य कहौ तो सो मै टेरी । भवसागरकी टूटै बेरी" ॥ २०० ॥

जौ लौं तारा जग मगै, तौ लौं उगै न सूर ॥
तौलौं जिय जग कर्म वश, जौलौं ज्ञान न पूर ॥२०१॥

जौलौं सूर्य नहीं उगै हैं तौ लगि तारा जग मगायहैं ऐसे जौलौं साहबको पूरो ज्ञान नहीं होयहै तौ लौं जीव नाना कर्मनके बश ह्वै नांना मतनमें लागे हैं जबजीव साहबको जान्यो औ साहब को ह्वैगयो तब साहबै अपनो ज्ञान देयहै कर्म छूटि जाय है ॥ २०१ ॥

नाम न जानै ग्रामको, भूला मारग जाय ॥
काल गड़ैगा कांटवा, अगमन कस न खोशाय ॥ २०२ ॥

अरे साहबके तो नगरको नामही नहीं जानै है औरे मतन मारगमें काहे भूला जायहै यह काल रूप कांटा तेरे गड़ैगा काल तोको मारि डारैगा तेहिते अगमन कहे आगे वह खोरिकहे राहमें आवै जेहिते कालते बचिजाय ॥ २०२ ॥

संगति कीजै साधुकी, हरै और की व्याधि ॥
ओछी संगति क्रूरकी, आठौं पहर उपाधि ॥ २०३ ॥

जो साधुकी संगति करिये जे साहबको जनाय देनवारे हैं तौ साहबको जानिकै औरकी व्याधि हरै औजो क्रूर जे असाधु तिन की संगति करै तौ आठौ पहर उपाधिही लगी रहै है ॥ २०३ ॥

जैसी लागी औरकी, तैसी निबहै थोरि ॥
कौड़ी कौड़ी जोरिकै, पूज्यो लक्ष करोरि ॥ २०४ ॥

और ते जो थोरहूथोर साहबमें लगै भक्ति करै औ तैसे छोरलों निबहिजा यहै तो जो थोरऊ थोर साहबमें लगै औ साहबकी भक्तिकैर तौ जैसे कौड़ी कौड़ी जोरे केतो करोरि ह्वै जायहै ऐसे वाकी भक्ति हू ह्वैजायहै अनेक जन्मकी संसिद्धिते मुक्तह्वै जायहै ॥ २०४ ॥

आजु कालिह दिन एकमें, अस्थिर नहीं शरीर ॥
केते दिनलों राखिहौ, काचे बासन नीर ॥ २०५ ॥

आजु कालिह यहि कलिकालमें एको दिनमें शरीर स्थिर नहीं है केतनोबेरधौं शरीर छूटिजाय आगे तो प्रमाण रह्यो है कि येती आयुर्दाय मनुष्यकी है अबतो कछू प्रमाणै नहीं है केती बेर शरीर छूटिजाय तेहिते साहब को भजन करो कच्चे बासन शरीरमें केते दिन नीर राखौगे ॥ २०५ ॥

करु बहियां बल आपनी, छाडुबिरानी आस ॥
जाके आंगननदीब है, सो कसमरै पिआस ॥ २०६ ॥

अरे औरे औरे मतनमें जो लगेहै तिनमें न लागु बिरानी आशा छोड़िदें तैं काहूके छुड़ाये न छूटैगो आपनी बहियांको बल करु तेरे उद्धार करिबेको तेरी बंहियां श्रीरामचन्द्रहैं सो आगे कहिआये हैं कि मोटे की बाँहले औ जाके आँगन में नादिया है सो का पिआसन मरै है तेरा तो साहब ऐसो रक्षकबनोहै तैं काहे साहब को भूलि औरे औरे मतनमें लगे है ॥ २०६ ॥

बहु बन्धनते बाँधिया, एक बिचारा जीव ॥
का बल छूटै आपने, जो न छुड़ावै पीव ॥ २०७ ॥

कबीरजी कहै हैं कि ये बिचारे जीव तें बहुत बंधन ते बंध्यो है बहुत गरीबहैं सो जो तैं आपने बिचारते छूटा चाहै तौ तैं न छूटैगो बिना श्रीराम-चन्द्रके छोड़ाये वोई तेरे पीउ हैं उनकी या प्रतिज्ञा है कि जो एकहू बार मोको जीव गोहरावै तौ मैं वाको छुड़ाय लेवहौं ताते तैं साहबकी शरण जाय जाते संसार ते छूटि जाय जे साहबकी शरण जाय हैं ते कालहूके माथ पै लात दै चले जाय हैं तामें प्रमाण श्रीकबीरजीको ॥

काळके माथे पग धरी; सतगुरुके उपदेश ।
साहब अङ्क पसारिकै, लैगे अपने देश ॥ १ ॥
गगन मँडल दृग महलमें, द्वै घाटीके ईश ।
नाम लेत हंसा चले, काल नवावें शीश ॥ २ ॥

औ जे राम नाम नहीं लेइ हैं ते नहीं मुक्त होय हैं तामें प्रमाण ।

यहि औतार चेतो नहीं, पशु ज्यों पाली देह ।
रामनाम जान्यो नहीं, अन्त परा मुख खेह ॥ २०७ ॥

जिवमति मारहु बापुरा, सबका एकै प्राण ॥
हत्या कबहुँ न छूटि है, कोटि न सुनै पुराण ॥२०८॥
जीव घात ना कीजिये, बहुरि लेत वह कान ॥
तीरथ गये न बाचिहौ, कोटि हिरादे दान ॥ २०९ ॥

तीरथ गये सो तीन जन, चितचंचल मन चौर ॥
एकौ पाप न काटिया, लादे दशमन और ॥ २१० ॥

इनके अर्थ स्पष्टई हैं ॥ २०८ । २०९ । २१० ॥

तीरथ गये ते बहि मुये, जूड़े पानी न्हाय ॥
कह कबीर संतौ सुनौ, राक्षस ह्वै पछिताय ॥ २११ ॥

तीर्थ में जे जाय हैं ते तीर्थके जूड़े पानी में नहायकै बहि मुये कहे खराबह्वै मुये काहे ते कि जौन तीर्थजाबे नहाबेकी विधि है सो एकौ न किये काहूको धक्का मारचो काहूपै कोप कियो सो कबीरजी कहै हैं कि हे सन्तौ सुनौ ते नर राक्षक होइकै पाछिताय हैं कि हम सों न बनी ॥ २११ ॥

तीरथ भै बिष बेलरी, रही युगन युग छाय ॥
कबिर न मूल निकन्दिया, कौन हलाहल खाय ॥ २१२ ॥

तीरथ कहे तीन हैं रथ जाके सतरजतम ऐसी जो त्रिगुणात्मिका माया सो विष बेलरीभै चारिउयुगमें छाय रही है कबिरन मूलनिकन्दिया कहे मूल जो रामनाम है ताको कबिरा जे जीव हैं ते निकन्दिया कहे न ग्रहण करते भये जो कोई कहबौकियो ताहूको खण्डि डारत भये सो या नाना कुमति रूप हलाहल खाय जीव क्यों न नरकै जाय जाबेही चाहै ॥ २१२ ॥

हे गुणवन्ती बेलरी, तव गुण बरणि न जाय ॥
जर काटेते हरि अरी, सींचेते कुंभिलाय ॥ २१३ ॥

हे गुणवंती बेलरी माया बाणी तेरो गुण बरणि नहीं जाय है कहांलौं वर्णन करैं जब तेरी जर काटन चलैं हैं तीर्थ करिकै अहंब्रह्मास्मि कैकै तौ अधिक हारिअरी होय है महीं ब्रह्महौं या अभिमान बढ़्यो अधिक हरि अरी भई तामें प्रमाण ॥ “ कुशलाब्रह्मवार्तायां वृत्तिहीनाः सुरागिणः ॥ तेपि यान्तितमोनूनं पुनरायान्तियान्ति च ” ॥ २१३ ॥

बेलि कुढंगी फलबुरो, फुलवा कुबुधि बसाय ॥
मूल विनाशी तूमरी, सरोपात करुआय ॥२१४॥

यह मायारूपी जो बेलि है सो कुढंगी है काहेते कि याको दुःख रूपी फल बुरो है औ कुबुधि जो है सोई फूलहें वाकी नाना वासना जे हैं सोई बास बसायैहै सो यह मूल विनाशीहै अर्थात् मिथ्याहै याको मूल नहीं है आपहीते उत्पत्ति भई है औ जेते भर मायिक पदार्थ हैं ते पातहैं तिनमें सबमें करुआई है अर्थात साँचे सुख नहीं हैं ॥ २१४ ॥

पानीते अति पातला, धूवाँते अति झीन ॥
पवनहुँते अति ऊतला, दोस्त कबीरा कीन ॥२१५॥

पानिहुँते पातर धूमौं ते झीन औ पवनौंते चंचल ऐसो जो छुद्रमन ताको कबीराजे जीव ते दोस्त किये हैं सो चौरासी लक्षयोनिमें डारदियो ॥२१५॥

सतगुरुवचनसुनौहोसन्तौ, मतिलीजैशिरभार ॥
होहजूर ठाढ़ाकहौं, अबतैं समर संभार ॥ २१६ ॥

साहब कहै हैं सतगुरु जो कबीर तिनको वचन सुनिकै हे संतौ आपनेमें मनको भारा मति लेहु तुमसों समर ह्वै रह्यो है सो मनको जीति लेहु मैं हजूरमें ठाढ़कहौं हौं अर्थात् दूरि नहींहौ जो तुम मनको जीतौ तौ मैं अपनायलेहुं २१६

ये करुआई बेलरी, औ करुवा फलतोर ॥
सिंधुनाम जब पाइये, बेलबिछोहा होर ॥ २१७ ॥

हे कल्पनारूपबेलि! तेरा फल बहुतकडुवाहै जो कल्पना करै है सो नरकहीको जायहै सो तब सिंधुनाम पावैगो जौने जगतमुख अर्थवेद शास्त्रमाया ब्रह्मजीव सब जगत्भरोहै तौनेको जब पावैगो तब साहबमुख अर्थ जानिकै साहब रतको पावैगो तब कल्पना बेलि को बिछोह ह्वै जायगो ॥ २१७ ॥

परदे पानी ढारिया, संतौ करहु विचार ॥
शरमी शरमा पचि मुआ, काल घसीटन हार॥२१८॥

गुरुमुख ॥ परदेते पानी ढरियाकहे गुरुवालोग नये मंत्र वनायकै परदे परदे उपदेशकियो औ सिखापनदियो कि काहूसों काहियो नहीं सब वेदशास्त्र झूठे हैं जीवात्मै सत्य है ताही मानो या समुझायदियो सो वही धरे धरे जीव नरकको गये जो साँचो राम नामहै ताको न जान्यो वही गुरुवनको बताओ मंत्र ताहीके भरोसे सब पूजापाठ धर्मकर्म सब झांडिदियो कहैहै हमनिष्कर्म हैं और यहबात नहीं जानैं है कि भगवान् पूजादिक ये कर्मनमें नहीं हैं तामें प्रमाण श्रीकबीरजीको॥"और कर्म सब कर्म हैं भक्ति कर्म निष्कर्म।कहैं कबीर पुकारिकै भक्तिकरौ तजि भर्म"॥सो देखो तो भाजीके लियेतौ बाजारमें मूड़फोरै हैं भगवान्‌कीभक्ति करिबेको कहैहैं हम निष्कर्म हैं पिसानकै चौकडारि मालपुवा धरिकै चौकाकरै हैं आरतीकरैं हैं औ भगवान्‌की आरती करिबेको कहै हैं हमहीं मालिक हैं हमारी आरती सब जने करते जाउ सो हे सन्तौ! विचारते तौ जाउ यह अपने शरमा शरमीमें षचिमुवाहै या कहैहै कि हम गुरुवन को उपदेश न छाड़ैंगे या नहीं जानै हैं कि या शरम में हमको औ हमारे गुरुवौ को यम घसीटिडारैंगे नरकमें डारि देयहैं तब मालिक ह्वै कै न बचौगे तब कौन रक्षा करैगो साहबको तो जनबै न कियो । जिन साहबको जान्यो है हनुमान् अंगद कबीरतें अबलौंबने है तेहि ते साहबको भजन करो जेहिते कालते बचिजाउ नहीं तो शरमा शरमीमें नरकमें पचिमरौगे । औ तुम भगवान्‌को नहीं मानौहौ भगवान्‌के पाछे नहीं चलौहौ सो ब्रह्म राक्षस होइगो तामें प्रमाण ॥ "नानुव्रजति यो मोहाद्व्रजन्तं जगदीश्वरम् । ज्ञानाग्निदग्धकर्मापि स भवेद् ब्रह्मराक्षसः" ॥ इति पुरुषोत्तम माहात्म्ये॥औ सब झूँठा है साहबको भजन साँचा है तामें **प्रमाणकबीरजीको॥**

"कञ्चन केवल हरि भजन, दूजी कथा कथीर ।
झूँठा आल जंजाल तजि, पकरो साँच कबीर ॥ १ ॥
जो रक्षक है जीवको, नाहिं करो पहिंचान ।
रक्षकके चीन्हे बिना, अंत होइगी हान" ॥ २ ॥

तेहिते तुम साहबको भजनकरो जाते साहब के लोकैजाउ जहां कालकी गम्यनहीं है तामें प्रमाण ॥

" जहां कालकी गमि नहीं, मुआ न सुनिये कोई ।
जो कोइ गमि ताको करै, अजर अमर सो होइ " ॥ १ ॥

साहबते बिमुख करनवाले गुरुवालोग यम दूतहैं तामेंप्रमाण ॥"॥ नानारूपधरा दूता जीवानांज्ञानहारका: ॥ कालाज्ञांसमनुप्राप्य विचरन्तिमहीतले "॥२॥ औ कबीरजी चौकामेंरघुनाथजीकी पूजा षोड़शही प्रकारकी लिख्यो है तामें प्रमाण ॥

चौकाविधानका शब्द ।

अगर चंदन घसि चौक पुरावा सत सुकृत मन भावा ॥
भर झारी चरणामृत कीन्हा हंसनको बरतावा ।
पूरन मौज और रखवारा सतगुरु शब्द लखावा ॥
लौंग लायची नरियल आरति धोती कलश लसावा ।
श्वेत सिंहासन अगम अपारा सो अति बर ठहराया ॥
छांड़े लोक अमृतकी काया जगमें जोलह कहाया ।
चौरासीकी बंदि छोड़ाया निर अक्षर बतलाया ॥
साधु सबै मिलि आरति गावैं सुकृत भोग लगाया ।
कहै कबीर शब्द टकसारा यमसों जीव छुड़ाया ॥ १ ॥
पूरण मासी आदि जो मङ्गल गाइये ।
सतगुरुके पद परशि परम पद पाइये ।
प्रथमै मँदिर झराय कै चँदन लिपाइये ॥
नूतन बस्त्र अनेक चँदोवा तनाइये ।
तब पूरण गुरु के हेतु तौ आसन बिछाइये ॥
गुरुके चरण परछालि तहाँ बैठाइये ।
गज मोतिनकी चौक सु तहां पुराइये ॥
तापर नारियल धोती मिष्टान्न धराइये ।
केला और कपूर तौ बहु बिधि ल्याइये ॥
अष्ट सुगंध सुपारी लो पान मँगाइये ।
पलौ सहित सो कलश सँवारिकै ज्योति बराइये ॥

ताल मृदङ्ग बजाइकै मङ्गल गाइये ।
साधु सङ्ग लै आरति तबहिं उतारिये ॥
आरति करि पुनि नरियल तबहिं मोराइये ।
पुरुषको भोग लगाइ सखा मिलि खाइये ॥
युग युग क्षुधा बुझाइ तौ पाइ अघाइयें ।
परम अनंदित होइ तौ गुरुहि मनाइये ॥
कहै कबीर सत भाय सो लोक सिधाइये ।

इहांपूजा के मंत्रनहीं लिख्यो सो पुरुष सूक्तनके मंत्र हैं ताते नहीं लिख्यो है॥

"दशौ दिशा कर मेटौ धोखा । सो कड़हार बैठही चोखा ।
दशौ दिशा कर लेखा जानै। सो कड़हार आरती ठानै ॥
दशइंद्रीकै पारिख पावै । सो कड़हार आरती गावै ।
जो नहिं जानै एतिक साजै। चौका युक्ति करै क्यहि काजै॥
हिंसै कारण करहिं गुरुआई । बिगरै ज्ञान जो पंथ पराई ।
पद साखी अरु ग्रंथ दृढ़ावै। बिन परखन उत्तम घर पावै ॥
शब्द साखीसिखिपारस करहीं।होय भूत पुनि नरकहि परहीं।
विना भेद कड़हार कहावै। आगिल जन्म श्वानको पावै ॥
पद साखी नहिं करहि बिचारा । भूंकि२जस मरै सियारा ।
पद साखी है भेद हमारा । जो बूझै सो उतरहि पारा ॥
जबलग पूरा गुरू न पावै।तब लग भवजल फिरिफिरि आवै।
पूरा गुरु जो होय लखावै । शब्द निरखि परगट दिखलावै॥
एक बार जिय परचौ पावै। भव जल तरै बार नहिं लावै ।

साखी–शब्द भेद जो जानहीं, सो पूरा कड़हार ॥
कह कबीर धूमक्ष है, सोहं शब्दहि पार ॥ २१८ ॥

आस्ति कहो तो कोइ न पतीजै,बिना आस्ति को सिद्ध॥
कहै कबीर सुनो हो सन्तौ, हीरै हीरा विद्ध ॥ २१९ ॥

कबीरजी कहै हैं कि आस्तिकमत जो मैं सबको बताऊंहौं तो कोई नहीं पति आयहैं काहेते कि गुरुवा लोगनकी बाणी मानि उनको सिद्धजानै हैं या नहीं जानै हैं कि ये आस्तिकनहीं हैं साहब को नहीं जानै हैं इनते संसार न छूटैगो साहबके जाननवारे जे सांचे साधु हैं तिनहीं ते संसार छूटै है काहेते हीरा ही रेते बेधि जाय है ॥ २१९ ॥

सोना सज्जन साधु जन, टूटि जुरै सौ बार ॥
दुर्ज्जन कुम्भ कुम्हारके, एकै धका दरार ॥ २२० ॥

सज्जन साधुजन जे हैं ते सोना है जो सैकरनवार टूटै फिरि फिरि जुरिजायहै औ दुर्जन जे हैं कुम्हारके कुम्भ कहे घड़ा जो फूटा तो फिरि नहीं जुरै है अर्थात् जो साधुजन कहूं मार्गमें भूलिहूजायँ परंतु फिरि समझाये वाहीमें लगिजायहैं खोटी राह छांड़ि देइ हैं औ दुर्जन जे हैं ते घड़ासे फूटिजायहैं अर्थात् जौने कुसंगमें परे तौनेहीके भये फिरि नहीं बूझै हैं ॥ २२० ॥

काजर केरी कोठरी, बूड़न्ता संसार ॥
बलिहारी तेहि पुरुषकी, पैठिकै निकसन हार ॥ २२१ ॥

यह काजरकै कोठरी मायाहै तौने में यह संसार बूड़िगयो सो वह जीवकी बलिहारी है जो मायामें आय निकसि जाय ॥ २२१ ॥

काजरही की कोठरी, काजरहीका कोट ॥
तौभी कारा ना भया, रहाजो ओटहि ओट ॥ २२२ ॥

गुरुमुख ।

साहबकहै हैं कि यह माया काया काजरकी कोठरी है याके काजरहीके कोट बनेहैं नाना आशा नानामत माने हैं सो यद्यपि ऐसेहू रह्यो परंतु मोको रक्षक माने रह्यो मेरी भक्तिकी ओट ही ओट बचि गयो अर्थात् मायाते बचिगयो २२२

अर्बखर्ब लौं दर्ब है, उदय अस्तलौं राज ॥
भक्ति महातम ना तुलै, ये सब कौने काज ॥ २२३ ॥

अर्बखर्बलौं द्रव्यभई अथवा अर्बखर्बलौं विद्याको पढजाता भयो साखी शब्द चौपाई दोहा कंठ भये सब शास्त्र कंठभये औ उदय अस्तलौं राज्यभयो बड़ो बादशाह भयो सबको अपने बश कैलियो अथवा महंत भयो पंडित भयो सबको उदय अस्तलौं चेला करिलियो औ शास्त्रार्थ करिकै जीतिलियो औ मन न जीत्यो तौ कहा कियो भक्तिके माहात्म्यको नहीं तुलैहै ॥ २२३ ॥

मच्छ बिकाने सब चले, ढीमरके दरबार ॥
रतनारी आँखियांतरी, तूं क्यों पहिराजार ॥ २२४ ॥

मनमें लगिकै सबजीव मच्छमायाको अनुभव ब्रह्म है ताहीके हाथ जीव बिकाय गये औ ढीमरके दरबार सब चले जायहैं अर्थात् काल मनरूपी जालमें सबको फँदायलेइहै ताहीके दरबार सब चलेजायँहैं अर्थात् मायाके मारिबेको सब उपायकरै हैं कि माया को नाशकैकै ब्रह्महैजायँ मनरूपी जालमें फन्दे मछरी जो मायाको अनुभव ब्रह्म ताही के साथ बिकाय गये अर्थात् वही में लीनभये ताहूपै कालते न बचे सो साहब कहै हैं कि तैतो मेराहै तेरे ज्ञान नयन रतनार रहेहैं कहे मोमें तेरो अनुराग रह्यो है तैं काहे मनरूपी जालमें परिकै कालके दरबार चलो जायहै जामें मेरो अनुरागहै वे आपनो ज्ञान नयन खोलु मेरी निर्गुण भक्ति छा गुणवारी है सो करु मेरे पास आइकै मन माया कालते बचि जायगो ॥ २२४ ॥

पानी भीतर घरकिया, शय्या किया पतार ॥
पांसापराकरमको, तबमैं पहिरा जार ॥ २२५ ॥

जीवमुख ।

जीवकहै हैं कि मैं बाणीरूप पानीमें घरकियाहै गुरुवालोग बाणीको उपदेश करिकै वही बाणीरूप पानीमें डारि दियें औ संसाररूपी जोपतारहै बन तामें शय्याकिया तब कर्मको पांसापरयो तामें मनरूपी जाल मैं पहिरयो अर्थात् मनरूपजाल में फँदिगयो ॥ २२५ ॥

मच्छ होय ना वाचिहो, ढीमरतेरे काल ॥
जेहि जेहि डावर तुम फिरौ, तहँ तहँ मेलै जाल२२६॥

हे जीव ! जो तुम मच्छ जोहै मायाको अनुभव ब्रह्म सोई ह्वैकै जो बाचाचाहौ तौ न बाचौगे तेरो फँदावनवारो ढीमर जो है मन सोई कालहै सो तुमको फँदायकै कालके घर पहुँचाय देइगो अर्थात् जो ज्ञानकरि ब्रह्महू ह्वैजाउगे तबहूं माया धरिही लै आवैगी अथवा समाधि करिकै प्राणको ब्रह्मांड में पठायकै ज्योति में लीनौ होउगे तबहूं माया धरिलै आवैगी तेहिते जौने जौने मत जे डावर तामें फिरौगे कहे मतमें लागौगे तहाँतहाँ या मनरूपी ढीमर जाल फेंकिकै तुमको धरिही लै आवैगो तेहिते मन वचनके परे जो भक्तियोग तौनेको जानौ तब वह कालते बचौगे सो भक्तिके गुण पाछे कहिआये हैं औ भक्तियोग मन बचनके परे है तामें प्रमाण कबीरजीके शब्दावली ग्रन्थको ॥

शब्द ।

अबधू ऐसा योग बिचारा । जो अक्षरहू सों है न्यारा ॥
जौन पवन तुम गङ्ग चढ़ावो करौ गुफामें बासा ।
सोतो पवन गगन जब बिनशै तब कह योग तमासा ॥
जबहीं विनशै इंगलापिंगला बिनशै सुषुमन नारी ।
जो उनमुनि सो नाड़ी लागी सो कह रहै तुम्हारी ॥
मेरु दण्डमें डारि दुलैचा योगी आसन ल्याया ।
मेरु दण्डकी खाक उठैगी कच्चे योग कमाया ॥
सोतो ज्योतिगगनमें दरशै पानीमें ज्यों तारा ।
बिनशो नीरनसों जब तारा निसरौगे केहि द्वारा ॥
द्वैतलाग बैराग कठिन है अटके मुनि जन योगी ।
अक्षरलौं सब खबरि बतावै जहँलौं मुक्ति बियोगी ॥
सोपद कह्यो कहे सो न्यारा सत्य असत्य निबेरा ।
कहै कबीरताहि लखुयोगी बहुरि न करिये फेरा ॥ २२६ ॥

बिन रसरी गरसब बँध्यो, तामें बँधा अलेख ॥
दीन्हो दर्पण हाथमें, चशमविना क्यादेख॥२२७॥

गुरुमुख।

बिनरसरी सबकेगर बाँधिलियो ऐसो जो है धोखाब्रह्म तामें अलेख जे जीव हैं ते बँधे हैं साहब कहै हैं तिनके हाथमें दर्पणदियो रामनाम बताइ दियो सो चशम तो हैं नहीं कहे रामनामको ज्ञानतो है नहीं आपनोरूप कैसे देखैं किमैं साहबको अंशहौं मकार स्वरूपहौं जब आपनोरूप न जान्यो तब मोको कहा जानै ॥ २२७ ॥

समुझाये समुझै नहीं, परहथ आप विकाय ॥
मैंखैंचतहौं आपको, चला सो यमपुर जाय ॥ २२८ ॥

साहब कहै हैं कि मैं बहुत समझाऊंहौं कि तैं मेरो है मेरे पास आउ आनके हाथ कहां बिकान जायहै नानामतनमें लागै है ब्रह्ममें लागै है कि आपहीको मालिक मानै है सो मैं वहुत खैंचौहौं आपनी ओर कि तैं मेरे पास आउ यह यमपुरहीको चलोजायहै ॥ २२८ ॥

लोहे केरी नावरी, पाहन गरुवा भार ॥
शिरमें विषकी मोटरी,उतरन चाहै पार ॥ २२९ ॥

या काया लोहेकी नाव संसारसमुद्र पारजाबेको है मन पाहन ताको गरुवाभार भरो है तापर विषयरूप बिषकी मोटरी शिरपर लीन्हे है सो जीव कैसके पारजाय ॥ २२९ ॥

कृष्णसमीपी पाण्डवा, गले हेवारहि जाय ॥
लोहाको पारसमिलै, काई काहेक खाय ॥२३० ॥

कृष्णसमीपके बसनवारे पाण्डवा ते हेवारमें गलेजाय सो कृष्णचन्द्रको जो वे जानते तो हेवारमें काहेको जाते काहेते जो पारसमें लोहा छुइ जातो है तामें काई नहीं लगै है अर्थात सोनाह्वै जायहै साहबको जाननवारो पारसही ह्वै जायहै

यांमें या हेतुहै कि जे नीकी तरह साहबको जानै हैं ते यही दे है जायहैं सो गोपी याही देहै गई हैं सो ब्रह्मवैवर्तक में प्रसिद्ध है सो गोपिका नीकी प्रकार जान्यो है ॥ २३० ॥

पूरबऊगै पश्चिम अथवै, भखै पवनको फूल ॥
ताहूको तो राहुगरासै, मानुषकाहेकभूल ॥ २३१ ॥

पूरबते सूर्य उगै हैं औ पश्चिम अथवै हैं पवनको फूलभखै हैं अर्थात् प्रबल पवन चलै है वाही भ्रमतरहै हैं ऐसे सूर्य हैं तिनहूं सूर्य को राहुगरासै है अरे मनुष्य जो तैं भूलै है कि पवनतेमैं आत्माको चढ़ाय लेउँगो हजारन वर्षपवनै खाय जिवोंगो मुक्त ह्वै जायगो सो तैं केतेदिन पवनखायगो जे सूर्य केतौदिन पवनखायो ताहूको कालराहु गरासै है तैं कैसे कालते बचौगे ॥ २३१ ॥

नैनके आगे मन बसै, पलपलकरै जो दौर ॥
तीनि लोक मन भूपहै, मन पूजा सब ठौर ॥ २३२ ॥

ज्ञाननयनके आगे मनहीं बसै है वह धोखाब्रह्म मनहीं को अनुभव है पलपलमें दौरै है नयन बिषयनमें लगै है नाना मतनमें लगै हैं नानाज्ञान बिचारकरै हैं तीनि लोकमें या मनहीं भूपहै मनहीं की पूजा सब ठौर होइहै अर्थात मनहीं ब्रह्म ह्वै पुजावै है मनहीं जीवात्माको ज्ञान करै है कि मैहीं मालिकहौं जो मनके परे साहब हैं ताको कोई नहीं जानै हैं ॥ २३२ ॥

मन स्वारथ आपहि रसिक, बिषय लहरि फहराय ॥
मनके चलतै तन चलत, ताते सरवसुजाय ॥ २३३ ॥

या आपनो स्वारथ मनहींको मानिलियो मनको रसिक आपही भयो अर्थात् मनको रस आपही लेइ है मनके किये जे पाप पुण्य तिनको भोगैया आपही बन्यो है याही हेतुते याके बिषय लहरि फहरायरही है सोई बिषयनको जब मनचल्यो तब जीवहु चल्यो मनके चलते तनहूं चल्यो जाय है बिषय करनको ताते सरबसुहानि या जीवकी होती है अर्थात् बिषय लिये पापादिक कर्मकियो नरकको गयो औ येई बिषयन लिये अप्सरनको भोगकरै है नानायज्ञादिक कियो

स्वर्गको चलो गयो सो सर्बसु याको साहबहै तिनके ज्ञानकी हानि ह्वैगई पाण्डवनके दृष्टांतते उपासनाकाण्ड औ सूर्यके दृष्टांतते योगकाण्ड औ मनके अनुभवके दृष्टांतते ज्ञानकाण्ड औ बिषय लहरिके दृष्टांतते कर्म काण्ड कह्यो सो इनमें लगिकै नित्यबिहारी साकेत निवासी जे श्रीरामचंद्र तिन को जीव भूलिगये याहीते जीवनको जरा मरण नहीं छूटै है ॥ २३३ ॥

ऐसी गति संसारकी, ज्यों गाड़रकी ठाट ॥
एक पराजो गाड़में, सबै जात तेहिबाट ॥ २३४ ॥

या संसारकी ऐसी गति है जैसे गाड़रकी पाँति जो एक गाड़में गिरै तौ वाहीराह सिगरी गिरती जायहैं सो या संसारको भेड़ियाधसान यही है एक जो कौनौ मत गहै तौ सिगरे वा मतगहैं नीकनागा को बिचार न करैं ॥२३४॥

वा मारगतो कठिनहै, तहँ मति कोई जाय ॥
जे गै ते वहुरे नहीं, कुशलकहै को आय ॥ २३५ ॥

वामार्गतो महाकठिन है जे साहबके पास जायहैं ते नहीं लौटै हैं उनको जनन मरण नहीं होयहै इहां फिरि आइकै वा मार्गकी खबरिको कहै अर्थात् कुशल को बतावै रहिगे कुसंगी तिनको संग करिकै जीव नरक को चले जाय हैं साहबको न जाने ॥ २३५ ॥

मारी मरै कुसंगकी, केराके ढिग वेर ॥
वह हालै वह अँगचिरै, विधिने संगानिबेर ॥ २३६ ॥

केराके साथ बैर जामै है तौ जैसे बैरके हाले केराको अंग फटिजाय है वाके काँटाते तैसे कुसंगकीन्हे साहबको ज्ञान जातरहै है गुरुवन के वचनजे हैं तेई काँटाहैं गुरुवालोग बेरहैं ॥ २३६ ॥

केरा तबहिं न चेतिया, जब ढिगलागी बेरि ॥
अबके चेते क्या भया, काँटन लीन्हो घेरि ॥ २३७ ॥

गुरुमुख ।

साहब कहै हैं कि अरेकेरा ! अरेजीवौ तैंतो बड़ोकोमळ है तब न चेतकियो अब तेरे समीप बैरलागी अर्थात् गुरुवा लोग उपदेश करनलगे अब तैरे चेते कहाभयो अबतो उपदेश रूप काँटा तोको घेरिलियो मेरे ज्ञानको फारिडारयो अब कहा चेते है तामें प्रमाण ॥ "आछेदिन पाछे गये कियो न हरिसोंहेत" ॥ अब क्या चेते मूढ़तैं, चिड़िया चुनिगइँ खेत ॥ २२७ ॥

जीव मरण जानै नहीं, अंधभया सब जाय ॥
बादीद्वारेदादिनाहिं, जन्मजन्मपछिताय ॥ २३८ ॥

सो कबीरजी कहै हैं कि साहब या प्रकारते उपदेश करै हैं पै जीवको कोई मरण नहीं जानै है कि हम मरि जायँगे हमारो जनन मरण न छूटैगो सो एकतौ आंधरही रहे साहबको ज्ञान नहीं रहो तापै गुरुवनको उपदेश भयो आँधरते आँधर होत जायँ हैं बादीके द्वारे दादि नहीं पावै अर्थात् जासों पूछै हैं कि हम कौनके हैं हमारो जनन मरण कैसे छूटै नरकते कौन हमारी रक्षा करै तौ वेतौ बादी हैं साहबको कैसे बतावैं और और मतमें लगाय दियो फिरि यादिहू किये साहबको न पायो तातें जगतमें २ पछितायहैं जनन मरण न छूट्यो गुरुवासाहबको ज्ञान भुलाय दियो तामें प्रमाण ।

बिप्रम तीसीको ।

बिन परशन दरशन बहुतेरे द्वै हैं ब्रह्म ज्ञानी ।
बीज बिना बिज्ञान कथैगो धोखाकी सहिदानी ॥
कृतिम उपासी कर्म्म बिलासी जायँ ते जन यमद्वारं ।
हम करता भाजि करता ह्वैरहे औरै के उपकारं ॥
राम कहैगा सो निबहैगा उलटि रहै जो गाड़ा ।
धोखा दुंदुर बहुत उठैगा राम भक्तिके आड़ा ।
हिंदू तुरुक दोऊ दल भूले लोक बेद बटपारं ॥
सत गुरु बिना सिद्धि नहिं कोई खिरकी केन उघारं ॥ २३८ ॥

जाकोसतगुरुनामिल्यो, व्याकुलचहुँदिशिधाय ॥
आँखिनसूझैवावरा, घरजारैघूरबुताय ॥ २३९ ॥

गुरुमुख ।

जाको सतगुरु नहीं मिलै हैं सो व्याकुल ह्वैकै चारों ओर धावै है कहूंब्रह्ममें कहूंनाना ईश्वरनमें नानामतनमेंलागे है कि हमारी मुक्ति ह्वैजाय सो अरे बावरे तेरी आंखिनमें नहीं सूझै है और और मतनमें निश्चय करै है सो घूरहै ताको कहा बुतावै है मेरोरूप औ आपनोरूप ताको तौ जानु या घरतो जरोजाय है ताको-बुताउ जातें जनन मरण छूटै घूर बुताये कहा है ॥ २३९ ॥

अनतवस्तुजोअनतैखोजै, केहिविधिआवैहाथ ॥
ज्ञानीसोईसराहिये, पारिखराखैसाथ ॥ २४० ॥

श्रीकबीरजी कहै हैं कि अनतकी बस्तु अनतै खोजै है कहेयह जीव साहबको अंशहै सदाको दास है तौनेको कहै हैं कि ब्रह्म को है देवतनको है ईश्वरनको दासहै सो जौने साहबको दासहै ताको तो जानबही न कियो आपनो स्वरूप कौनी रीतितें जानै सो हम तो सोई ज्ञानीको सराहते हैं जो पारिख अपने साथ राखै है कि हम साहबके हैं दूसरे के नहीं हैं न ब्रह्मके न मायाके न ईश्वरन के हैं सोई साँचे ज्ञानीको हम सराहते हैं ॥ २४० ॥

सुनिये सबकी, निबेरिये अपनी ॥
सिन्धुरको सेंदोरा, झपनीकी झपनी ॥ २४१ ॥

जहाँ जहाँ सुनिये तहाँ तहाँ साहबहीकी बात निबेरि लीजिये और मत खण्डन करि डारिये काहेते कि वेदशास्त्र सोई है जामें साहबको परत्वहोइ जोकहूं वेदशास्त्रक-रिकै साहबको न जान्यो ताको उपदेश यहि रीतिते जैसे सिंधुर जो हाथी ताको सेंदुर शृङ्गारकियो वे शुण्डते धूरिभरियो झपनीकी झपनी कहे जैसे रज झपिगई तैसे जबलौं उपदेश सुन्यो तबलो ज्ञानरह्यो ।फिरि नहींरहै जौने वेद शास्त्रमें साहबको परत्वहोइ सोई अर्थ । तामें प्रमाण चौरासी अंगकी साखी ॥ "राम नाम निज जानिले, येही बड़ा अरत्थ॥काहेको पढ़ि पढ़ि मरै,कोटिन ज्ञान गरत्थ"॥२४१॥

बाजनदेवायंत्ररी, कलिं कुकुरी मति छेर ॥
तुझे बिरानी क्या परी, तू आपनी निबेर ॥ २४२ ॥

जे और और बातें सबकहे हैं सो या शरीर यंत्रकहे बीणा है जैसो बजवैया बजावै है तैसोबाजै है ऐसे या शरीरमनके आधीन है जहां चलावैहै तहां चलै है कहूं बक बक करावै है कहूं ब्रह्ममें लगावै है नानामतनको सिद्धांतकरै है सो वा यंत्रको बाजनदे मन बैकलकुकुरिया है वाको विष जो तेरे चढ़ैगो तै तुहूं बैकलह्वैमरि जाइगो अर्थात् चौरासी योनिमें परैगो सो तोको बिरानी कह परी है तैं आपनी निवेरु जो तेरे यन्त्र बाजै है सुरति कमलमें गुरु राम नाम ध्वनि उपदेश देइँ हैं ताको ध्यान करु राम नाम शब्द सब शब्दतें अलगहै सोई साँचहै और सब मिथ्याहै सो तैं राम नाम ते सनेहकरु राम नामको सनेही मरत नहीं है तामें प्रमाण कबीरजीको ॥ "शुन्य मरै अजपा मरै अनहदहू मारि जाय ॥ राम सनेही नाम मरै, कह कबीर समुझाय" ॥२४२॥

गावैं कथैं बिचारैं नाहीं, अन जानैको दोहा ॥
कहकबीरपारसपरशेबिन,ज्योंपाहनबिचलोहा ॥२४३॥

नाना पुराण नाना शास्त्र नाना मत गावै हैं औ उनको कथनी करै हैं और औरको समुझावै है परन्तु सर्व शास्त्रको अर्थ साहबही हैं यह नहीं बिचारै हैं जैसे शुक चित्रकूटी राम कहि दिये न चित्रकूटको अर्थ न रामको अर्थ जानै है आनै में आन साजै है रसाभाव करि देयहै ऐसे सब शास्त्रको सिद्धांत जो जो साहब पारस रूप तिनको तो जानतही नहीं है कौनी रीति जीव लोहा कञ्चन होइ अर्थात् जब स्पर्श होय उनको जानि उनमें लगै भजन करै तब कन्चन होय ॥ २४३ ॥

प्रथमैं एक जो हौं किया,भयासो बारह बाट ॥
कसत कसौटी ना टिका, पीतर भया निराट ॥२४४॥

प्रथममें यह जीवको एक कियो कहे एक राहमें लगायो कि मेरी भक्ति करैगो तौ संसारते छूटि जायगो औ यह बारह बन भयो कहे आपने रूपी बाणको

बारह लक्षमें लगायो अर्थात् छःशास्त्रके सिद्धांतमें छःदरशनमें लगाय दियो बारह बाट भयो मोको न जान्यो सो जब ज्ञानरूपी कसौटीमें कस्यो कि साहब को ज्ञानहै कि नहीं तब पीतरही ह्वैगयो जगत्मुखै ठहरयो साहबमुख न ठहरयो सहाबको ज्ञान सोना न ठहरयो ॥ २४४ ॥

कबिरन भक्ति बिगारिया, कंकर पत्थर धोय ॥
अन्दरमें बिषराखिकै, अमृत डारै खोय ॥ २४५ ॥

कबिरा जे जीव हैं ते भक्ति को बिगारि डारयो कंकर जो है जौने को पत्थर जो है मन तामें धोयकै॥"पाहन फोरि गंगयक निकरी चहुँदिशि पानी पानी॥" या पदमें पाहन मनको लिखि आये हैं सो पाषाणमें जो कंकरधोवै तौ और चूरचूरह्वै जाय सो मेरे भक्तिरूपी जलमें आपने अणुजीव कन्करको तैं नहीं धोये पाथरमें धोये ताते चूरचूरह्वै नानामत नानादेवमें लागे आपने स्वरूपको न जाने अन्दरमें बिषयरूपी बिषराखि अमृतरूप साहबको ज्ञानताको खोइ डार्‌यो॥२४५॥

रही एककी भई अनेककी, बेश्या बहुत भतारी ॥
कहकबीर काके सँगजारिहै, बहुत पुरुषकी नारी २४६॥

गुरुमुख।

साहब कहे हैं कि हैं जीव! तैं तो मेरो रह्यो है सो तैं अब बहुत मतनमें लगिकै बहुत मालिक मानन लग्यो सो कौन तेरो उद्धार करैगो बहुत भतारी बेश्या काके काके साथ जैरेगी ॥ २४६ ॥

तनबोहित मन कागहै, लखयोजन उड़ि जाय ॥
कबहीं दरिया अगमबह, कबहीं गगन समाय ॥२४७॥

ये चारिउ शरीर बोहित कहे नावहैं तामें मनरूपी काग बैठाहै सो लख योजनलौं उड़ि जायहै कबहूं संसार समुद्रमें बहत रहैहै औ कबहूं पँचवां शरीर जो कैवल्य चैतन्यकाश अगम जायबे लायक नहीं तामें महाप्रलयादिकनमें समायहै सो जे हरिकी शरण जायहैं ते यहि संसार समुद्रको गोखुरकी तुल्य उतरि

जाय है तामैं प्रमाण ॥ "इच्छाकर भवसागर बोहित राम अधार॥ कह कबीर हरि शरण गहु गोबछ खुर बिस्तार ॥ २४७ ॥

ज्ञान रत्नकी कोठरी, चुपकरि दीन्हो ताल ॥
पारखि आगे खोलिये, कुंजी बचन रसाल ॥ २४८ ॥

ज्ञान रत्नकी जो कोठरी है तामें चुपको तारा दीन्हे ही रहिये जो कोई समुझनेवारो पारखीहोइ ताहीके आगे रसालबचन कुंजीते चुपको तारा खोलिकै ज्ञानको प्रकटकरिये काहेते कि जे नहीं समुझै हैं तिनके आगे न कहिये साहबको ज्ञानरत्न वे कहाजानैं ॥ २४८ ॥

स्वर्गपतालके बीचमें, द्वैतुमरीयकबिद्ध ॥
षटदर्शन संशयपरो, लखचौरासीसिद्ध ॥ २४९ ॥

यह स्वर्ग पतालरूपी वृक्षमें जीव ईश्वररूप दुइतुमरीलगी हैं तामें जीवरूपी तुमरीबेधी है कहे जीवहीते नानाशब्द निकसै हैं शरीर सारी हैं सो येई जे जीवहैं षट्दर्शनआदिदैकै तिनको नाना मतकरिकै संशयपरो है साहबको नहीं जानै हैं एक सिद्धांत नहीं पावै हैं तिनको चौरासी लाख योनि सिद्धि बनी हैं भटकतही रहै हैं ॥ २४९ ॥

सकलौदुरमतिदूरिकरु, अच्छाजन्मबनाउ ॥
कागगवन बुधिछोड़िदे, हंसगवनचलिआउ ॥ २५० ॥

साहब कहै हैं कि अरे जीव ! तेरो जो सकलहै शरीर सोई दुर्म्मति है सो पांचौ शरीरनको छोड़िदे औ आपनो अच्छो जन्म बनाउ कागबुद्धि को त्यागु मेरो दियो हंस शरीर तामें टिकिकै मेरे पास आउ ॥ २५० ॥

जैसीकहै करै जो तैसी, रागद्वेष निरुवारै ॥
तामें घटै बढ़ै रतिऔ नहिं, यहिविधिआपसँभारै॥ २५१॥

गुरुमुख ।

साहबक कहै हैं कि जैसो उपाय मैं तेरे छूटिबेको कहि आयों है तैसोकरै औ संसारमें नाना रागद्वेष करिराखे हैं ताको निरुवारै मोमें प्रीति रत्तिउभर घटै न पावै एकरसही आवै ॥ २५१ ॥

द्वारे तेरे राम जी, मिला कवीरा मोहिं ॥
तूतो सबमें मिलि रहा, मैं न मिलौंगा तोहिं ॥ २५२ ॥

साहब कहै हैं कि हे जीव! तेरे मुखद्वारमें मेरो राम अस नाम बनो है ताको भजन करि हे कबीर! जीवौ मोको मिलौ जो कहौ कि साहब दयालु हैं वोई मिलिबेकी सामर्थ्य देइँगे सो सत्यहै तेरी दया मोको लगै है परन्तु तैं सबमें मिलिरहा है ताते मैं तोको न मिलूंगा तैं सब छोड़िदे तो मैं तोको आपसे मिलौं आइ ॥ २५२ ॥

भर्मपरातिहुँलोकमें, भर्मबसा सब ठाउँ ॥
कहहि कबीर पुकारिकै, वसै भर्मके गाउँ ॥ २५३ ॥

कबीरजी कहै हैं कि हे जीव! साहब को तैं कैसे मिलै काहेते कि तीनों लोकमें कर्म भर्म जो है धोखाब्रह्म सो भरो है तिनमें भर्म बसो है भरमहीमें सब मिलिरहे हैं भरमके पार जे साहबहैं तिन को तो जानबेही न कियो ॥२५३॥

रतन लड़ाइ[1]निरेतमें, कङ्कर चुनिचुनि खाय ॥
कहकवीरयहअवसरवीते, बहुरिचलेपछिताय ॥२५४॥

रतन जो है साहब को ज्ञान ताको रेतमें लड़ाय कहे लगाय दियो अति-कठोर जो है कङ्कर ब्रह्मज्ञान तामें आत्माको लगायो चुनिचुनि खानलग्यो सो कबीर जी कहै हैं कि जब या अवसर बीति जायगो अर्थात् शरीर छूटिजायगो तब पछितायगो वा धोखाब्रह्म में कुछ न मिलैगो ॥ २५४ ॥

जेते पत्रवनस्पती, औ गङ्गाकी रेणु ॥
पण्डतबिचारा क्याकहै, कबिरकहै मुखबेणु ॥२५५॥

सारासारके बिचार करनेवारे पण्डित तोको केतो समुझावैंगे कबीरजी कहैहै हैं कि जेतो मैं समुझायो है कि बनसपती पत्र गिनि जायँ औ गंगाकीरेणु गनी-गनिजायँ परन्तु मेरे मुखके बैन गने नहीं गिनिजायहैं तऊ न तुम बूझ्यो॥२५५॥

---

१ पुरानी प्रतियोंमें इस शब्दके लिये "रमाइन" लिखाहै ।

हमजान्यो कुलहंसहौ, ताते कीन्हो संग ॥
जो जनत्यों बकबरणहौ, छुवन न देत्योंअंग ॥२५६॥

कबीरजीकहै हैं कि हमतो तुमको हंसके कुलमें जानते रहे हैं ताते तुमको उपदेश कियो तुम्हारो सङ्ग कियो है जो तुमको बकै के बर्ण जानते कि हंस नहींहो तो एकौ अंग छुवन न देत्यों अर्थात् उपदेशकी बातहू न चलावतो उपदेश को कौन कहै ॥ २५६ ॥

गुणिया तो गुणको गहै, निगुर्ण गुणहि घिनाय ॥
वैलहि दीजे जायफर, क्या बूझै क्या खाय ॥ २५७ ॥

गुणियाकहे जोसगुणहोय है सो गुणको गहै है सत रज तमको जो धारण करै है सो अशुद्धई रहै है ते मायाते नहीं छूटै हैं औजो निर्गुण उपासकहोइ है सो सगुणको घिनाय है सो निर्गुणौवाले सगुणवाले साहबके गुणको कहाजानैं वेतो सगुण निर्गुणके परे हैं मायाकृत गुणते रहित हैं दिव्यगुण सहित हैं काहेते कहै हैं कि बैलके आगे जो जायफर धरिदीजिये तौ कहा बूझै क्याखाय ऐसे वे साहबके गुणको कहाजानैं ॥ २५७ ॥

अहिरहु तजि खसमहु तज्यो, विना दाँतको ठोर ॥
मुक्तिपरी बिललातिहै, वृन्दावनकी खोर ॥ २५८ ॥

बिनादाँतको ठोरजो है बूढा गाय बैल ताको अहिरौ चराइबो छाँड़िदेइ है और खसम जो है बैलको मालिक सोऊ छोड़ि देइ है अर्थात् बूढाजानिकै कि मेरे कामको नहीं है तब वह बैल बृन्दाबनकी खोरि बिललानलग्यो ऐसे जब मनरूपीदाँत उखारिडारचो तब अज्ञानअहिर याको छोड़िदियो औ याको खसम जो है माया सबलित ब्रह्म सो जब मन न रहिगयो तब याहू छांड़िदियो तब आपहीआप मुक्त ह्वै गयो सर्वत्र साहबहीको देखन लग्यो जैसे वृन्दावनमें डारमें पातमें कृष्णदेखिपरै हैं मुक्ति परी बिललाइहै काको मुक्तकरै ऐसे यहू सर्वत्र साहबको देखनेलग्यो मुक्तही ह्वैगयो मुक्तिकाको मुक्तकरै तामेंप्रमाण ॥ "सबनदियाँ गङ्गाभई, सब शिल शालिग्राम ॥ सकलौ बन तुलसी भयो, चीन्ह्यौ आतमाराम" ॥ २५८ ॥

मुखकी मीठी जे कहैं, हृदयाहै मति आन ॥
कहकबीर तेहिलोगसों, रामौ बड़े सयान ॥ २५९ ॥

जो या भाँतिते मनको त्यागिकै सर्वत्र साहब को देखै हैं तिनको साहब सर्वत्र देखिपरै हैं औ जिनके मनमें औ मुख में आनैआन है तिनको कबीरजी कहै हैं कि रामऊ बड़े सयानहैं अर्थात् उनते दूरिरहैं हैं ॥ २५९ ॥

इतते सबतौ जातहैं, भार लदाय लदाय ॥
उतते कोइ न आइया, जासों पूंछौं धाय ॥ २६० ॥

नानाकर्म्मके नाना उपासनाके नानाज्ञानके भार लदाय-लदायइतते सबजात हैं परंतु उहांते ऐसाकोई न आया जासों धायकै उहांकी खबारिपूंछौ कि कौनफल-पाया सो आपनेहींजन्मकी खबरि नहींजानै साहबकी खबरि कहाजानै॥२६०॥

भक्तिपियारीरामकी, जैसी प्यारी आगि ॥
सारा पाटन जरिगया, फिरि फिरि ल्यावैमाँगि ॥२६१॥

यहभक्ति साहबकी बहुतपियारी है जैसे आगि पियारीहोइ है कि आगि लगी औ सारापाटन कहे शहर जरिजाय पुनि आगीकी चाहना बनीहीरहै है पुनि पुनि मांगिलैआवै है आपनी करै है काम लोग ऐसे साहबकी भक्ति केतौलोग साहबकी भक्तिकरि संसारते पारह्वै गये परंतु अबतक जो कोई भक्ति करै है सो पिआरै होत जाय है संसारते उतरिजाय है ॥ २६१ ॥

नारिकहावै पीउकी, रहै और सँग सोइ ॥
जारमीत हिरदै बसै, खसमखुशीक्या होइ॥२६२॥

नारितौ अपने मीतमकी कहावै है औ आनपति लैकै सोइ रहै है तौ खसम कैसे खुशी होय ऐसे यह जीव साहब को अंश है और और मतमें लग्यो कहीं ब्रह्म में कहीं माया में सो साहब कैसे खुशी होय ॥ २६२ ॥

सज्जनतौ दुर्जनभया, सुनि काहूकोबोल ॥
काँसाताँबाह्वैरहा, नहिं हिरण्यका मोल ॥ २६३ ॥

सज्जन शुद्ध जीव हैं ते गुरुवालोगन के बोल सुनिकै दुर्जन ह्वैगये सो जो हिरण्यका मोल है सो जातरहा काँसा ताँबाकी तुल्य ह्वैरहा है ॥ २६३ ॥

बिरहिन साजी आरती, दर्शनदीजै राम ॥
मुयेते दरशनदेहुगे, आवै कौने काम ॥ २६४ ॥

कबीरजी कहै हैं कि जे श्रीरामचन्द्रके बिरही जीवहैं ते आरतीसाजे खड़े हैं कि जो रामजी मिलैं तौ आरतीकरैं संसार छाँड़ि एक तुम्हारे मिलिबेकी आशा किये हैं सो हेसाहब ! दर्शनदीजै मुयेते दर्शनतो देवही करोगे परन्तु औरे जीवन के काम न आवोगे काहेते वेतौ उपदेश करही न आवैंगे साहब बिरहीको मिलै है तामें प्रमाण चौरासी अङ्गकी साखी ॥ "बिरहिन जरती देखिकै, साईं आये-धाय ॥ प्रेमबुन्दते सींचिकै, हियमें लई लगाय"॥ २६४ ॥

पलमें परलयबीतिया, लोगन लगी तमारि ॥
आगिल शोच निवारिकै, पाछे करो गोहारि ॥ २६५ ॥

पलभरेमें प्रलयतेरी होती जायहै आयुक्षीण होती जायहै यही तमारि लोगनके लगी है फिरि वा घरी नहीं मिलै ताते आगिल शोच छाँड़िदेव जौन धन जोरि जोरि स्त्री लरिकनहेत धरयोहै पाछिल गोहारिकरौ साहब को जानो जाते जनन मरण छूटै ॥ २६५ ॥

एकसमाना सकलमें, सकलसमाना ताहि ॥
कबिरसमाना बूझमें, तहाँ दूसरा नाहि ॥ २६६ ॥

एक जो ब्रह्महै सो सब जीवनमें समाय रह्यो है औ कबीरजी कहै हैं कि मैं बूझमें समान्यो है ब्रह्मके प्रकाशी औ सब जगत् के अन्तर्य्यामी ऐसे जे श्रीरामचन्द्र तिनको जब बूझ्यो तब वही बूझमें समायरह्यो है सर्वत्र साहबही को देखनलग्यो दूसरा न देखत भयो मुक्तह्वै सांचा दासभयो तामें प्रमाण कबीरजी को ॥ "जीवन मुक्तै ह्वैरहै, तजै खलककी आस॥ आगे पीछे हरिफिरैं, क्यों दुखपावै दास "॥ २६६ ॥

यकसाधे सबसाधिया, सबसाधे यकजाय ॥
उलटिजो सींचै मूलको, फूलै फलै अघाय ॥ २६७ ॥

एक जो साहबकी भक्तिहै ताके साधे सब सधिजायहै अर्थात् लोकौ परलोक बनिजायहै और सब साधेते अर्थात् नानामतनमें लागेते एक जो साहबकी भक्ति सो जातरहै है औ ऊपरते वृक्षके जलमें डारिराखै तौ पत्ता फूलफल सरिजायहैं औ जो वृक्ष को मूलते सींचै तौ फूलैफलै अघायकै ऐसे सबके मूल साहबहैं तिनकी भक्ति कीन्हे सब फूलैफलै है दूसरेकी चाह नहीं रहिजायहै दूसरे की उपासना में संसार नहीं छूटै है ॥ २६७ ॥

जेहि बन सिंह न संचरै, पक्षी नहिं उड़िजाय ॥
सोबन कबिरन हीठिया, शून्यसमाधि लगाय ॥२६८॥

जेहि बाणी रूप बनमें कहे जेहि बाणीतें ब्रह्म ज्ञानौ कथै है तौनी बाणीमें सिंहजे हैं शुद्धजीव साहबके जाननवारे ते नहीं संचरै हैं कहे नहीं जायहैं औ पक्षी जे हैं नानामतवारे नानाशास्त्रवारे ते आपने आपने पक्षकारि ब्रह्मको विचारकरै हैं उड़ै हैं पार कोई नहीं पावै हैं सो तौने बनको कबीर जे हैं जीव सोहीठिया कहे हीठत भयो वही शून्य समाधि लगायकै साहबकी प्राप्ति न भई तामें प्रमाण चौरासी अङ्गकी साखी ॥ " शून्य महलमें सुन्दरी, रही अकेले सोइ । पीउ मिल्यो ना सुखभयो, चली निराशा रोइ " ॥ २६८ ॥

बोली एकअमोलहै, जो कोइ बोलै जानि ॥
हिये तराजू तौलिकै, तब मुख बाहर आनि ॥ २६९ ॥

सो वे शून्य समाधि लगायकै शून्य ब्रह्ममें जायहैं तिनको कहि आये अब ज्ञान कारिकै जे ब्रह्ममें लीनह्वै हैं तिनको कहै हैं कि वह बोली सोहं अमोल ताको जो कोई जानिकै हियेके तराजूमें तौलिकै मुखके बाहर लैआइकै बोलै कहे श्वास श्वासमें यही जपै जातमें सो आवत में हृदय तराजूमें यही तौलै कि सो पार्षदरूप हंस साहब को है ॥ २६९ ॥

वोहूतौवैसाहिभया, तू मतिहोइ अयान ॥
तूगुणवंता वे निरगुणी, मतिएकैमें सान ॥ २७० ॥

श्रीकबीरजी कहै हैं कि योगी तौ समाधि करिकै शून्यमें गये औ वहू जे हैं वह ज्ञानी सहजसमाधिवारे तौनौ ज्ञानकारिकै वैसभये कहे वही शून्यमें समाय रह्यो तू मति अयान होय कहे अज्ञानी होइ तूतो गुणवंता कहे दिव्यगुण सहित जे साहब हैं तिनको है दिव्यगुण तेरेहूहै निर्गुण जो धोखा ब्रह्म तामें तू काहे सानै है तू मतिसान साँचाहैकै तू असाँच काहे होइहै ॥ २७० ॥

साधू होना चहहुजो, पक्काके सँगखेल ॥
कच्चासरसों पेरिकै, खरी भया नहिं तेल ॥ २७१ ॥

जो तुम साधु होना चाहो तौ पक्के जे साहबके जाननवारे तिनके संग खेल कहे सत्संगकरौ जो तुम और नाना देवता नाना मतनमें लगौगे तौ तुम्हारो न लोकै बनैगो न परलोकै बनैगो जैसे कच्चे सरसों को पेरनो न तेलै भयो न खरी भई ॥ २७१ ॥

सिंहैकेरीखालरी, मेढ़ा ओढ़े जाय ॥
बाणीते पहिंचानिया, शब्दहि देत बताय ॥ २७२ ॥

सिंहकी खालरीकहे शुद्ध जीवनको वेष गुरुवालोग संसार में बनाये कण्ठी छापा टोपी दीन्हें हैं सबलोग जानैं कि बड़े साधुहैं जैसे सिंहकी खालरी मेढ़ाको बढ़ायदेइ अर्थात् मढ़िदेइ तो सब सिंहैकी नाईं जानै हैं परंतु जब भ्याँ भ्याँ बोलन लग्यो तब बाणी ते जानि परेउ कि सिंह नहीं है मेढ़ाहै ऐसे जब गुरुवनको सत् सङ्गकीन्ह्यो तब बाणीते जानिपरे कि ये साहबको नहीं जानै हैं बेषैभरि बनाये हैं इनते संसार न छूटैगो तामें प्रमाण चौरासी अङ्गकी साखी ॥ “ स्वामी भया तो का भया, जान्यो नहीं बिबेक ॥ छापा तिलक बनायकै, दग्धै जन्म अनेक ॥ १ ॥ जप माला छापा तिलक, सरै न एकौ काम ॥ मन कांचे नाचे वृथा, साँचे राचे राम ” ॥ २७२ ॥

ज्यहि खोजत कल्पनभया, घटहीमें सो पूर ॥
बाढ़ेगर्बगुमानते, ताते परिगो दूर ॥ २७३ ॥

जौने मुक्तिको खोजत खोजत कल्पैभयो अर्थात् कल्पनाकरत करत कल्पना रूप ह्वैगया ब्रह्ममें लीनभया मुक्तिको मूल जो रामनाम सो तेरे घटही में है ताको अहंब्रह्मास्मिके गर्बते तोको दूरि परिगयो अबहूं समुझ तौ तेरे समीपही हैं ॥ २७३ ॥

दश द्वारेका पीपरा, तामें पक्षी पौन ॥
रहिबेको आश्चर्य है, जायतो अचरज कौन ॥२७४॥
रामहि सुमिरहिं रणभिरैं, फिरैं औरकी गैल ॥
मानुषकेरीखालरी, ओढ़िफिरतहैं बैल ॥ २७५ ॥

२६७। रामनामको तौसुमिरै है परन्तु रामनामजापिबे की बिधिगुरुते नहीं पाये बादबिवाद करत साधुनते भिरतफिरै हैं साहबको नहीं जानै हैं ते मानुषकी खाल ओढ़ेतौ हैं परंतु बैलहैं अर्थात् पशु हैं जानै नहीं हैं ॥ २७५ ॥

खेत भला बीजौ भला, बोइये मूठीफेर ॥
काहे बिरवा ऊखरा, या गुणखेतै केर ॥ २७६ ॥

खेतौ तो नौ कई है परंतु तृणादिकनके जरको कारण वामें बनो है त्यहिते बिरवा उठै नहीं पावै तृणछाय जायहै सो या गुण खेतै को है ऐसे खेत अंतःकरणमें नाना बासनारूप तृण जानिरहे हैं तामें रामनामरूपी बीज फेरि फेरि बोवै हैं परंतु तृण बासननके मारे लगै नहीं पावैं साहबमें प्रीति नहीं होय देइ जब सत्संग करि कै निराय डारै तौ तृणऔ रामनामरूप अंकुर दृढ़ ह्वैजाय साहब को जाननलगै संसार छूटिजाय पापजारेमें नामकी बड़ी शक्ति है तामें प्रमाण ॥ "यावती नाम्निवै शक्तिःपापनिर्दहनेहरेः ॥ तावत्कर्त्तुंनशक्नोति पातकम्पातकीजनः" ॥ २७६ ॥

गुरु सीढ़ीते ऊतरै, शब्द बिमूखा होइ ॥
ताको काल घसीटिहै, राखिसकै नाहिं कोइ ॥ २७७ ॥

गुरुके बताये साधनसीढ़ीमें चढ़ो फिर उतरि और और साधनमें लगो राम नामते बिमुख ह्वैगयो ताको कालनरकमें घसीटिकै डारिही देइगो कोई नहीं राखिसकैगो ॥ २७७ ॥

आगि जो लगी समुद्रमें; जरै सो कांदौ झारि ॥
पूरब पश्चिम पण्डिता, मुये बिचारि बिचारि ॥२७८॥

या संसार समुद्रमें अज्ञानरूपी अग्नि लगीहै सोपूरबपश्चिमके पंडित कहे उदय अस्तके पण्डित बिचारि बिचारिमरे परंतु अज्ञान रूपी अग्नि न बुतानि उपासना करिकै ज्ञानहू करिकै संसार समुद्र सूखि हू गयो परंतुवामूल अज्ञानरूप कांदौमें फँसेजरे जायहैं ॥ २७८ ॥

जो मोहिं जानै त्यहिमैं जानौं।लोक वेदका कहा न मानौं ॥
भूभुरघाम सबै घटमाहीं।सबकोउबसै शोककी छाहीं२७९॥

गुरुमुख ।

अज्ञानरूपी घामते अंतःकरणरूपी भूमि सबकै तपिरही है शोकरूपीजे नाना उपासना तिनकी छाया चाहै है परंतु वहीते और तप्त होयहै शीतल नहीं होइहै सो मोको तो जानतही नहीं हैं मैं वाको कांहेको जानौं जो कोई मोको जानै तौ मैं वाको जानौं जानबही करौं लोकवेदतो कहतही है कि जो जाको है सो ताहूको जानै है सो या लोक वेदको कहा मानबहीकरौं अथवा कैसो पापी होइ जो मेरी शरण आवै तौ मैं लोक वेदका कहा न मानूं वाको शरणमें राख बई करौं वाके सम्पूर्ण पापमैंहीं छुड़ाय देउँ तामें प्रमाण ॥ " सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च या चते ॥ अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद्व्रतम्मम " ॥ २७९ ॥

जौन मिलासो गुरुमिला, चेलामिला न कोइ ॥
छइउलाखछानबे रमैनी, एकजीव परहोइ ॥ २८० ॥

श्रीकबीरजी कहै हैं कि एकजीवके उपदेशपर मैं छः लाखछानबे रमैनी युगयुग कह्यो पै मेरो कह्यो कोई न समझ्यो जो मिलो सो गुरुही मिलो चेला कोई न मिलो जो मेरो कहो बूझै साहबको जानै संसारते छूटै छानबे रमैनी में प्रमाण ॥ " सहसछानबे और छःलाखा ॥ युगपरमाण रमैनी भाखा॥२८०॥

जहँ गाहक तहँहौं नाहिं, हौं जहँ गाहक नाहिं ॥
विनबिवेकभटकताफिरै,पकरिशब्दकीछाहिं ॥ २८१ ॥

गुरुमुख ।

जहां नाना ईश्वर नाना उपासना नाना ज्ञान इन एकहूको जहां गाहकहै तहां मैं नहीं हौ अथवा जहां कौनिहूं बस्तुकी चाहहै तहां मैं नहीं हौं जहां कौनिहूं बस्तुकी चाह नहीं है तहांमैं हौं सो बिना बिबेक कहे बिना सांच असांचके जाने अर्थात् सांच जो रामनाम ताके बिना जाने गुरुवालोगनके शब्दकी छांह पकरिकै संसार भटकत फिरै है जनन मरण नहीं छूटै है जब रामनाम जानै तब संसारते छूटै तामें प्रमाण "सप्तकोटि महामन्त्राश्चित्तवि भ्रम कारकाः ॥ एक एव परो मन्त्रो राम इत्यक्षरद्वयम् ॥ २८१ ॥

शब्दहमाराआदिका, इनते बली न कोइ ॥
आगे पाछे जोकरै, सो बलहीना होइ ॥ २८२ ॥

गुरुमुख ।

साहब कहै हैं कि शब्द जो है हमारो रामनाम सो आदिकाहै अर्थात् राम नामहीं ते सबकी उत्पत्ति भई है सो या रामनामते बली कोई नहीं है यह आदि शब्द जो रामनाम ताके जपिबेमें जो आगे पीछे करै है अर्थात् याको बल छोड़ि और देवतनको बल मान है सो बलहीन होइहै अर्थात् मुक्ति होनेको बल नहीं रहि जाय ॥ २८२ ॥

नगपषाणजगसकलहैं, लखिआवै सब कोइ ॥
नगते उत्तमपारखी; जगमें बिरला कोइ ॥ २८३ ॥

या जगमें नग जो है तिहारो मन सो पाषाण ह्वै रह्यो है त्यहितें तुमहूं पाषाण मैगयो मनमें मिलिकै जग ह्वैगये सो वहीमें आवै है वहीमें जाइहै सो नग जो हे मन त्यहितें उत्तम जे पारखी जीव हैं अर्थात मनते न्यारे जे जीव हैं तीन जक्तमें कोई बिरलाहै औ मनको माणिक पीछे बेलिमें कहि आयेहैं॥२८३॥

ताहि नकाहिये पारखी, पाहनलखै जो कोइ ॥
नग नल या दिलसों लखै, रतनपारखी सोइ ॥२८४॥

जो कोई पाहनरूपी मनको देखै है अर्थात् जब भरम जाके मन बनो रहै ताको पारखी न काहिये औ जो कोई नर आपनो आत्मारूप जो है नग स्वस्वरूप सो आपने दिलमें रामनाममें देखै है अर्थात् मकार स्वरूप जो है आपनों स्वस्वरूप ताको रकार रूप जे हैं साहब तिनके समीप देखै सोई पारखी है जब नग मुन्दरी मे जड़ि जाय है तबहीं शोभा होयहै नहीं तो पाहनै है ॥ २८४ ॥

सारीदुनियाँ बिनशती, अपनी अपनी आगि ॥
ऐसा जियरा नामिला, जासों रहिये लागि ॥२८५॥

सारी दुनियाँ आपनी आपनी आगिमें कहे कोई ब्रह्ममें लागिकै कोई नाना देवतनमें लागिकै कोई नाना मतनमें लागिकै बिशेषते बिनशि रहे है साहब को नहीं जानै हैं सो कबीरजी कहै हैं ऐसा जियरा कहे रामोपासक सन्त कोई न मिला जासों लागि रहै अर्थात् सत् सङ्ग करौं कहे जे साहब को नहीं जानैं ते बिनशि जायहैं तामें प्रमाण॥ "यश्चरामंनपश्येतयंचरामोनपश्यति ॥ निंदितः सर्वलोकेषु स्वात्माप्येनंविगर्हते ॥ २८५ ॥

सपने सोया मानवा, खोलि देखै जो नैन ॥
जीव परा बहु लूटमें, ना कछु लेन न देन ॥ २८६ ॥

जो मानुष आपनी आँखि खोलिकै देखै तो सब स्वप्नै है यह जीव बहुत लूटमें परचो है नाना मतनमें नाना उपासननमें लग्यो है साहब को नहीं जानै ताते न कछु लेन है न देन है याते या आयो कि इनमें बृथै लागे हैं मुक्ति काहूकी दई नहीं दैजायहै या सब स्वप्न है तामें प्रमाण **गोरख गोष्ठीको कबीरजी** को गोरख पूछै हैं ॥

कर्ताको स्वरूप कौन! अण्डका स्वरूप कौन! अण्ड पार बसै कौन?नादबिन्दुयोग कौन ? जीव ईश्वर भोग कौन ? भूमी अवतार कौन ? निराकार पार कौन ? पाप पुण्य करै कौन ? वेद औ बेदान्त कौन ? बाचा औ अबाचा कौन ? चंद्र सूर्य भास कौन ? पश्चमें प्रपंच कौन ? ओहं औ सोहं कौन ? स्वर्ग नरक

बसै कौन ? पिण्ड औ ब्रह्मांड कौन? आत्म परमात्म कौन ? जरा मरण काल कौन ? गुरु शिष्य बोध कौन ? क्षर अक्षर निरक्षर कौन ? तबकबीरजीबोले।

नाद बिंदु योग स्वप्न, जीव ईश्वर भोग स्वप्न, भौमी अवतार स्वप्न, निराकार स्वप्न है।

पाप पुण्य करै स्वप्न वेद औ बेदान्त स्वप्न बाचा औ अबाचा स्वप्न चंद्र सूर स्वप्न है ॥ इत्यादिक बहुत बाक्यहैं ॥ २८६ ॥

नष्टैका यह राज्यहै, नफरक वरतै छेक ॥
सारशब्द टकसारहै, हिरदयमाहिं विवेक ॥ २८७ ॥

नष्टजो है धोखा ताहीको यहराज्यहै अर्थात् अहंब्रह्मास्मि कहिकै सब नष्टभये औ नफरजो है काल ताही को छेक संसार बरत रह्यो है अर्थात् सब संसारको काल छेकिछेकि खाये जायहै सारशब्दजो रामनाम टकसार ताको हृदय में कोई कोई विवेक करतभये अर्थात् कोई साहिबको न जानतभये संसारते न छूटतभये ॥ २८७ ॥

दृष्टमान सब बीनशै, अदृष्टलखै ना कोइ ॥
हीनकोइ गाहकमिलै, बहुतैसुख सो होइ ॥ २८८ ॥

जहांभरदृष्टमानहै सो सबबिनशै है नाशहोयहै औ मनबचन के अगोचर जो ब्रह्महै ताकोतौ कोई देखतै नहीं है धोखही है सो दृष्ट अदृष्ट के परे हीन कोई कहै कोई हीनहोइ अर्थात् दीन होइ ताको गाहक ऐसे जे साहब श्रीराम· चन्द्रते मिलैं जो जीवको तौ बहुतसुख सो होय अर्थात् जननमरण छूटिजाय साहबके समीप सेवामें बनोरहै तामें प्रमाण ॥ गोसाईजीकोदोहा ॥ " पदगहि कहति सुलोचना, सुनहु बचनरघुवीर ॥ तुमहिं मिले नहिं होइ भव, यथा सिन्धु-करनीर " ॥ २८८ ॥

दृष्टिहि माहिं विचारहै, बूझै बिरला कोइ ॥
चरमदृष्टि छूटै नहीं, ताते शब्दी होइ ॥ २८९ ॥

जोकहो साहबको देखै कैसे हैं तौ दृष्टिही में बिचारहै साहब को देखै है या चर्मदृष्टिकरिकै साहबको नहीं देखै या बात कोई बिरला बूझै है या जीवकी

हंसजीव बसै है सो या जीवठौरमें न लग्यो कहे साहबके पास न गयो वहीमन-
के ओटमें रहिगयो अर्थात् मनरूपी सरोवरैमें रहिगयो ॥ २९७ ॥

मधुरबचनहैं औषधी, कटुकबचनहैं तीर ॥
श्रवणद्वार ह्वै संचरैं, शालैं सकल शरीर ॥ २९८ ॥

कटुकबचन तीरहैं औ अधुरबचन औषधहैं ते ये दोऊ श्रवण द्वारह्वैकै सञ्चरै
हैं कहे जाइहैं औसिगरे शरीरमें शालै हैं कहे व्याप्त ह्वैजायहैं जो कोई मीठ बचन
कह्यो तौ वासों रागभयो औ जो कोई कटुकबचन कह्यो तौ वामें द्वेषभयो औ
मधुरबचन ते जहां राग कियो जहांमन लग्यो तहँ जन्मतभयो औ कटुकचचन
सुनि कोप करि बधादिक कियो तेहिते आयु हानिभई मरतभयो याते मधुर
बचन कटुबचन दोऊ बरोबर शालै हैं ॥ २९८ ॥

ई जगतो जहडेगया, भया योग ना भोग ॥
तिलतिलझारिकबीरलिय, तिलठीझारैलोग ॥२९९॥

या जगतो जहडेगयो कहे ह्वैगयो काहेते कि न याको योगही सिद्ध भयो
न भोगही सिद्धभयो कैसेउ हजारन वर्षलों योगकै जिये महाप्रलय भररहे
आखिर नाशही ह्वैजाइहै जो धर्मकरि दिविको भोगकियो तौ जब पुण्यक्षीण
ह्वैजाइहै तबतौ मृत्युही लोकको आवै है याते न भोग सिद्धभयो न योग सिद्ध-
भयो सो तिलजो है रसरूपाभक्ति साहबकी ताको तो श्रीकबीरजी कहै हैं कि मैं
झारिलियो तिलेठी जो है नानाउपासना तिनकी और लोग झारै हैं नामकरै हैं
जामें रस नहीं है ॥ २९९ ॥

ढाढसदेखुमरजीवको, धसिके पैठिपताल ॥
जीवअटकमानैनहीं, गहिलैनिकर्‌यो लाल ॥ ३०० ॥

मरजीवते कहावै हैं जेसमुद्रमें पैठिरत्न निकारै हैं ताको ढाढस देखो ढाढस
करिकै पातालमें पैठै हैं जीवको अटक नहीं मानै हैं समुद्रते लालगहि लैआवै हैं
तैसे जीव तेहूं मनादिकनको त्यागिदे मरिबेको नडेराय विश्वासकरिकै साहब
रसरूपसागरमें पैठु ॥ ३०० ॥

येमरजीवाअमृतपीवा, काधसिमरैपताल ॥
गुरुकीदयासाधुकीसंगति,निकसिआउ यहिकाल२०१

ये मरजीवा कहे तैं तो अमृतको पीवनवारो पातालमें धसिकै कहे संसार में परिकै कहामरै है औ जियै है नरकको चलाजाइ है सो गुरूकी दयातें साधुनकी संगतिते तू यहीकालमें संसारते निकसिआउ जो तैं साहबके जाननवारे साधुनकी शरणहोइ वाही चालचलै ॥ २०१ ॥

केते बुंद हलफे गये, केते गयो बिलोइ ॥
एक बुंदके कारणे, मानुष काहेको रोइ ॥ ३०२ ॥

हा इति कष्टमें है सो कबीरजी कहै हैं कि हाय केतन्यो जीव लफेकहे नैगये अर्थात् दरकि गये अर्थात् साहबके मार्गचले साहबकी उपासनाकियो पै गुरुवालोग जो नानामत लखायो तिनहींमें लफेकहे नैगये सो केतौ तौ याभका-रसों गये औ केतौ पहिलेहीते बिगोयगये कहे बिगरिगये सो हे मानुष! श्रीराम-चन्द्रको जो आनन्दसमुद्र ताके एकबुन्दके कारण हे संसारीजीव ! तैं काहेरोवै है धोखाब्रह्मको छांडि साहबको जानु जाते जननमरणछूटै ॥ २०२ ॥

आगिजो लगीसमुद्रमें, टुटिटुटि खसै जो झोल ॥
रोवै कबिरा डिम्भिया, मोरहीरा जरै अमोल॥३०३॥

या संसारसमुद्रमें अज्ञानरूपी आगिलगी कर्मरूप झोल जे शरीरके कारणहैं ते या देहते टुटिटुटि वा देहमें गये या देह जारिगई याही रीतिते नानादेह धरै हैं संसार नहीं छूटैहै सो कबीर जी रोवै हैं कि दम्भीह्वैकै मोर अमोल हीरा-जीव ते अज्ञानरूपी अग्निमें जरेजायहैं ॥ २०३ ॥

साँचे शाप न लागिया, साँचे काल न खाय ॥
साँचेसाँचे जो चलै, ताको कहा नशाय ॥ ३०४ ॥

कबीरजी कहै हैं कि दम्भकरिकै काहे अज्ञानरूपी आगिमें जरे जाउहौ जोसांचे साहबमें लगिकै सांचे साधुहोउ तौ वे सबते जबर होइहैं न वाकोशापलागै न वाकोकाल खायहै सो जाम्बवंतहनुमानादिक अबतकबने हैं ॥ ३०४ ॥

पूरासाहब सेइये, सबविधि पूरा होइ ॥
ओछे नेह लगाइये, मूलौआवै खोइ ॥ ३०५ ॥

पूरा साहब जे सर्वत्र पूर्ण हैं तिनको जो सेइये तौ सबबिधि पूरोहोइ औ ओछे जेहैं नानामत धोखा तौने में जो लगाइये तो नफाकी कौनचालै मूलौकी हानिह्वैजाय है ॥ ३०५ ॥

जाहुबैद्य घरआपने, बात न पूछै कोइ ॥
जिन यहभार लदाइया, निरबाहै वा सोइ ॥ ३०६ ॥

कबीरजी कहैं हैं कि हे बैद्य ! गुरुवालोगौ तुम आपने घरको जाहु तुमको बात कोई नहीं पूछै है जिन यह संसाररूपी भारलदाया है कहे संसार उत्पत्ति कियाहै तौनै निर्बाहैगा अर्थात् न निर्बाहैगा येतो सबमायिकहैं अधिक बाँधनेवारे हैं छुड़ावनेवारे नहीं हैं ॥ ३०६ ॥

औरनके समुझावते मुखमें परिगो रेत ॥
राशि बिरानी राखते, खाये घरको खेत ॥ ३०७ ॥

औरनको उपदेश करत करत तुम्हारे मुखमें रेतकहे धूरिपरिगई अर्थात कुछु न तुमसों बनिपरयो बिरानी राशि तो तुम राखतेहौ कहे औरे औरेको उपदेश करिकै समुझावतेहौ आपने घरको खेत जो स्वरूप ताको नहीं ताकतेहौ काल खाये लेइहै सो तुम्हारो स्वरूपखेततौ ताको नहीं रहै औरकी राशिकहे आत्मा तुमकैसे ताकौगे ॥ ३०७ ॥

मैं चितवतहौं तोहिंको, तुम कह चितवै और ॥
नालत ऐसे चित्तको, चित्त एक दुइ ठौर ॥ ३०८ ॥

गुरुमुख ।

साहब जीवसौं कहै हैं कि मैंतो तेरी ओर चितवौ हौं सदा सन्मुख बनेरहौ हौं औ तू कहा और और में चित्त लगावै है सो ऐसे तेरे चित्तको नालति है कि एक आपने चित्तको माया में औ ब्रह्ममें दुइठौर लगाये है ॥ ३०८ ॥

तकत तकावत तकिरहे, सके न बेझामारि ॥
सबै तीर खालीपरे, चले कमानी डारि ॥ ३०९ ॥

साहब कहै हैं कि जेजीव!मोको तके हैं अर्थात् मेरे सन्मुख भये हैं तिनको माया कालादिक जे हैं ते काम क्रोधादिकनते तकावै हैं कि जबहीं संधिपावैं तबहीं मारिलेइँ औ आपहू ताके रहै हैं परन्तु जे जे मोको तके रहे चारयो युग तिनको ये कबहूं न बेझा मारिसकै हैं सो जबसबैतीर खाली परे माया कालादिकनते तब कमानी डारिकै चलेगये अर्थात् मोको जे हंसजीव जानै हैं तिन में माया कालादिकनको जोर नहीं चलै है ॥ ३०९ ॥

जस कथनी तस करनियो, जस चुम्बक तस नाम ॥
कह कबीर चुम्बक विना, क्यों छूटै संग्राम ॥ ३१० ॥

जस साधुनकी कथनी कहे कहै हैं तस करनिउहै कैसे जैसे चुम्बक श्रीरामचन्द्रहैं तैसे उनको नामहूं है सो कबीरजी कहै हैं कि रामनाम चुंबकबिना कामादिकनको संग्राम याको कैसे छूटै जैसे लोहेकोकना धूरिमें मिलोरहै है जब चुम्बक देखावो तौ वाही में लपटि आवै है धूरिमें नहीं रहै ऐसे या जीव साहबको है साहबको नाम लेइहै तबहीं संसारते छूटै है नहीं भटकते रहै है॥ ३१०॥

अपनी कहै मेरी सुनै, सुनि मिलि एकै होइ ॥
मेरे देखत जगगया, ऐसा मिला न कोइ ॥ ३११ ॥

गुरुमुख।

साहब कहै हैं कि आपनी शंका मोसों कहै पुनि जौन मैं वेदशास्त्रादिकनमें कह्यो है ताको सुनै औ वह मेरे वाक्यमें मिलावै देखैतो कोई शंका रहिजाती है अर्थात् न रहिजायगी तब एकै मत ह्वैजाय एकैजो मैं हौं ताहीको जानिलेइ और सब छोड़ि देइ सो ऐसा मोको कोई न मिला जो मेरे देखत जगगया होइ कहे जगतते दूरि भया होइ ॥ ३११ ॥

देशदेशहमबागिया, ग्रामग्रामकी खोरि ॥
ऐसाजियराना मिला, जोलेइफटकिपछोरि ॥ ३१२ ॥

कबीरजी कहै हैं कि मैं देशदेश गाउँ गाउँ खोरि खोरि बाग्यो परन्तु ऐसा जियरा मोको कोई न मिला कि जो मैं कहौ हौं ताको फटकि पछोरि लेइ॥ ३१२॥

लोहे चुम्बक प्रीति जस, लोहा लेत उठाय ॥
ऐसा शब्द कबीरको, कालते लेइ छुड़ाय ॥ ३१३ ॥

लोहेकी औ चुम्बककी प्रीतिहै जो लोहको चुम्बक देखै है सो उठाय लेइहै ऐसे कबीर जो है कायाको बीर जीव ताको या शब्द रामनामहै जौन जीवनको कालते छुड़ाय लेयहै जैसे चुम्बक लोहे के किणकाको आपने में लगाय लेइहै ऐसे रामनाम जीवको में लगाय लेइहै ॥ ३१३ ॥

गुरू विचारा क्या करै, शिष्यहिमेंहैचूक ॥
शब्द बाण बेधै नहीं, बाँसबजावैं फूंक ॥ ३१४ ॥

कबीरजी कहै हैं कि गुरू जो है साहब सो विचारा कहा करै शिष्य जो है जीव ताहीमें चूकैहै कौन चूकैहै यासों कि रामनामरूपी जो शब्दबाण ताके साथ छइउजेचक्रैहैं तिनको बेधिकै सातों चक्र जे हैं सुरतिचक्र ताको बेधिकै उहां जो गुरूबतावै हैं मकरतारडोरि ताही चढ़िकै रामनाम रूपीबाणके साथ साहबके पास जायबो न जान्यो वहै निर्गुण ब्रह्म जो है झूरबाँस ताहीमें लगिकै फूंकि-फूंकि बजावै हैं अर्थात् वोहीको ज्ञानकथै हैं ॥ ३१४ ॥

दादाबाबाभाई कै लेखै, चरनहोइगे बंधा ॥
अबकी बेरिया जोना समुझ्यो, सोईसदाहै अंधा ३१५॥

मानुष शरीर पायकै दादा बाबा भाई सब साहिबैको मानै है सोई साहबके चरणको बंधा होइहै कहे साहबके चरणमें सदा लगे रहै हैं सो अबकी बेरिया कहे या मानुष शरीर पायके साहबको न जान्यो सोई सदाको अंधाहै॥ ३१५॥

लघुताई सबते भली, लघुताइहिसबहोइ॥
जसद्वितियाकोचन्द्रमा, शीशनवै सबकोइ॥ ३१६॥

लघुताई सबते भली है लघुताइन ते सब होइहै सर्वत्र साहब को देखै आपनेको दासमानै तौ वाकी प्रीति साहबमें बढ़ते जाय है औ सब माथनावै हैं तामें प्रमाण कबीरजीको॥ "लघुताते प्रभुता मिलै, प्रभुताते प्रभु दूरि॥ चींटीलै शक्करचली, हाथी के शिरधूरि" ॥ ३१६॥

मरतेमरते जगमुवा, मरण न जानै कोइ॥
ऐसा ह्वै के नामुवाजो, बहुरि न मरना होइ॥ ३१७॥

मरते मरते सब जग माराजायहै मरण कोई नहीं जानै है ऐसा ह्वैकै कोई न मुवा जाते फेरि मरण न होय अर्थात् इंद्रिनते मन ते शरीरते भिन्न ह्वैकै साहबमें न लगे जाते पुनि जनन मरण नहीं होय॥ ३१७॥

वस्तुअहै गाहकनहीं, वस्तु सो गरुवामोल॥
बिनादामको मानवा, फिरै सो डामाडोल॥ ३१८॥

वह गुरुवा मोलको जो साहबहै सर्वत्र पूर्ण है परंतु वाको गाहक कोई नहीं मिलै है औ बिना दामको कहे बिना मोलको यह जीव साहबके ज्ञान बिना डामाडोलमें फिरै है अर्थात् जैसे बाजार में गयो औ सब साज उहां बनी है औ हाथमें दाम नहीं है तौ डामाडोल फिरै है लै नहीं सकैहै तैसे साहब सर्बत्र पूर्ण हैं परंतु सतगुरुको उपदेश रूप दाम नहीं है डामाडोल फिरै है॥ ३१८॥

सिंह अकेला बनरमै, पलकपलककैदौर॥
जैसा बनहै आपना, तैसा बनहै और॥ ३१९॥

बन जो है शरीर तामें सिंह जो है जीव सो अकेला रमै है औ पलक पलकमें दौरकरिकै गुरुवनसों पूछै है सो असनहीं बिचारै है कि जैसा बन कहे शरीर मेरोहै तैसे औरहूको है जैसे मोको अज्ञानहै तैसे इनहूंको अज्ञानहै येई नहीं संसारते छूटे हमको कैसे छड़ावैंगे॥ ३१९॥

मरतेमरते जगमुवा, बहुरि न किया बिचार ॥
एकसयानी आपनी, परबशमुवा संसार ॥ ३२० ॥

मरत मरत सबजग मरिगया औ मरत चलोजायहै पै बहुरि कै कहे उलटिकै कोई न बिचार कियो कि काहेते मरे जाय हैं आपनी आपनी सयानी ते एकएक खाविंद खोजि लियो साहब को न जान्यो जे जीवके मालिक हैं तेहिते काल के बशह्वै सब मरे जायँ हैं ॥ ३२० ॥

पैठाहै घर भीतरे, बैठाहै साचेत ॥
जब जैसी गति चाहता, तब तैसीमति देत ॥ ३२१ ॥

साहब जो है सो सब के घटमें पैठाहै औ साचेत बैठाहै जब जैसी गति जीवचाहै है तबतैसीमति जीवको देइहै जीव अणुचैतन्य है साहब बिभुचैतन्यहैं सो जीव जौनेकर्मको सम्मुख होइहै तब चैतन्यता बढाय देइहै तैसेमति बढ़ाय देइहै औ बिना साहब के समर्थ जीव कछुनहीं करिसकै तामें प्रमाण ॥ "कर्तृत्वं करणत्वं च स्वभावश्चेतनाधृतिः ॥ यत्प्रसादादिमे संति न संति यदुपेक्षया॥ इतिश्रुतेः " ॥ ३२१ ॥

बोलतहीपहिंचानिये, चोरशाहुके घाट ॥
अंतरकी करणी सबै, निकसै मुखकी बाट ॥ ३२२ ॥

जे साहब में लगे हैं ते औ जे धोखाब्रह्म में लगे हैं ते इनको कैसे पहिंचानिये तौ उनके बोलते अन्तरकी करणी मुखकी बाट निकसै है तबहीं चोर शाहु पहिंचाने परे हैं इहां चोर जो कह्यो सो यह जीव साहबको है तिनको चोराइकै कहे छोड़िकै धोखामें लग्यो ताते चोरकह्यो है तामें प्रमाण ॥ " नारिकहावेपीउकी, रहै और सँग सोइ॥ जारपुरुष हिरदे बसै,खसमखुशीक्योंहोइ"॥ ३२२॥

दिलकामहरमकोइनमिलिया, जो मिलियासोगरजी ॥
कहकबीरअसमानैफाटा, क्योंकरिसीवै दरजी॥३२३॥

मन दिलका महरमी कहे निःकामह्वै साहब में लगैया कोई न मिल्यो जो मिल्यो सो गरजवाला मिल्यो ताको तेतनै मँजूरी दैकै साहब अनृण ह्वैजाय हैं

सो कबीरजी कहै हैं कि जो जीव साहबको है तौ जौन जौन बस्तु साहबकी ह तौनतौन बस्तुजीवहूकी है पै आपनेको असफाटा कहे जुदाजुदामानै है कि साह-बसों मांगै है कि फलानी बस्तु मोको देउ या मूर्ख नहीं समुझै है कि साहबकी शरणभये कौनौ बातकोटोटो न रहिजायगी सो दरजी जो साहबहै सो कहांतक सीवै कहे आपने में मिलावै ॥ ३२३ ॥

बनाबनायामानवा, बिनाबुद्धि बेतूल ॥
कहा लाललै कीजिये, बिनाबासका फूल ॥३२४॥

यह मानवा जो है मनुष्य सो बनै बनावा औ बेतूल है कहे कौनौ देवता याकी बराबरीको नहीं है पै बिना बुद्धिको है याही ते सबते नीच ह्वैरह्यो है बिनाबासको कहे बिना सुगंधको लाल फूल लैकै कहाकरै ऐसे जीव बहुत सुंदर भयो औ साहबको न जान्यो औरे मतनमें लगिकै लालह्वैरह्यो वा बुद्धिनहीं जाते साहबको बूझै तौ कहाभयो तामेंप्रमाण ॥ "कहाभयो जो बड़कुल उपजे बड़ीबुद्धि है नाहिं ॥ जैसे फूलउजारिके वृथालालझरिजाहिं ॥ ३२४ ॥

साँच बरोबर तप नहीं, झूठ बरोबर पाप ॥
जाकेभीतरसाँचहै, ताके भीतरआप ॥ ३२५ ॥

या साखीको अर्थस्पष्ट है ॥ ३२५ ॥

करतैंकियानविधिकिया, रविशशिपरीनदृष्टि ॥
तीनलोकमें है नहीं, जानतसकलौसृष्टि ॥ ३२६ ॥

कर्त्ता पुरुष भगवान् नहीं किया न करतार किया न रबि शशि दृष्टि परी-न तीन लोक में खोजेमिलै परंतु सबसृष्टि जानै है सो कबीरजी कहै हैंकि या झूठ कहांते आई है ॥ ३२६ ॥

आगे आगे दव बरै, पीछे हरियर होइ ॥
बलिहारी वा वृक्षकी, जर काटे फल होइ॥ ३२७ ॥

कर्त्ता जगत्को बनायो सो कैसो है ताको कहैहैं आगे आगे दव बरै आगे शरीर सबके जरत जायहै औ पीछे हरियर होयहै कहे नये नये शरीर धारण होत हैं

सो ऐसे संसाररूपी बिटपकी बलिहारी है जामें जरकाटे फलहोइ है अर्थात् जौने जीवको संसार निर्म्मूल ह्वैगयो तौने जीवको साहब रूपी फल मिलै है ॥ ३२७॥

सरहर पेड़ अगाध फल, अरु बैठा है पूर ॥

बहुत लाल पचि पाचि मरे, फल मीठा पै दूर ॥३२८॥

या शरीर रूपी सरहर वृक्ष बड़ा ऊँचाहै सरलहूहै सबको मिलै है और शरीर वृक्षको फल कहा है साहबको जानै सरअगाध है औ सर्वत्र पूर्ण है अन्तर्यामी रूपते सबके हियेमें बैठाहै सो ऐसो साहबको ज्ञानरूपी फल मीठाहै परन्तु दूरि है बहुत लाल कहे बहुत जे जीव हैं ते पचिपचि मरे पै पाये नहीं अथवा साहबको ज्ञानरूपी फल सरहरहै कहे चीकनहै चढ़ने माफिक नहीं है खसिलि परै है तामे प्रमाण कबीरजी को ॥

बहुतकलेगचढ़े बिनभेदा देखाशिख गहिपानी ।
खसिलां पाउं ऊर्ध्वमुख झूले परेनरककीखानी ॥

औशरीरकोफल साहबको भजनहै तामें प्रमाण गोसाईंजीको ।

देहधरेको या फलभाई, भजोराम सबकाम बिहाई ॥ ३२८ ॥

बैठ रहै सो बानियाँ, खड़ा रहे सो ग्वाल ॥

जागत रहे सो पाहरू, तिनहुंन खायो काल॥३२९॥

बनियां बैठ रहे हैं दुकान लगाय ते गुरुवालोगहैं जे जौने देवताको मन्त्र मांगै हैं ताको तौनहीं मन्त्र देइहैं औ ग्वालखड़े गौवनको चरावै हैं तेवे हैं जे आत्मैको मालिक मानै हैं इन्द्रिनको चरावैं हैं जौने विषय चाहे हैं तौने भोगैं हैं दूसरो लोक नहीं मानै हैं शरीरहीको मानै हैं औ जे जागत रहै हैं ते पाहरू हैं आपनी बस्तु ताकै हैं ते योगी हैं आपनी इन्द्रीको ताके रहै हैं समाधि लगाये सदा जागतरहैहैं सोये तीनों साहबको न जान्यो ताते तिनहुंनको काल धरिखायो॥ ३२९॥

युवा जरा बालापन बीत्यो, चौथि अवस्थाआई ॥

जस मूसवाको तकैबिलैया, तस यम घातलगाई॥३३०॥

तीनिउं अवस्था बीत गैई चौथि अवस्था आय गई जैसे मूसको बिलारी ताकें है ताको घात लगायेहै तैसे यम तोको घातलगाये हैं सो अजहूं साहबको चेतु ३३०

भूलासो भूला बहुरिकै चेतु ॥
शब्दकी छुरी संशयको रेतु ॥ ३३१ ॥

गुरुमुख ।

साहब कहै हैं कि हे जीव! तैं भूला सो भूला भला यह संसार ते बहुरि कहे उलटिकै तौ चेत करौ सारशब्द जो रामनाम छूरी तेहितें आपनी संशय रेत डारु कहे काटिडारु अर्थात् रामनामको अर्थ तो बिचारु तैं मेरोई है और पदार्थ छोड़िदे तामेंप्रमाण॥ "यक रामनाम जाने बिना भव बूड़िमुवा संसार" ॥ ३३१ ॥

सबही तरुतर जायकै, सबफल लीन्हो चीखि ॥
फिरिफिरि मांगत कबिरहै, दर्शनहींकी भीखि ॥ ३३२ ॥

सबही तरुतर जायकै कहे शरीर धारण कारिकै सुख दुःखरूप फल सब चाख्यो नाना उपासना योगज्ञान बैराग्य सब कैचुक्यो शरीरधरेको फल कोई न पायो सो शरीर धरे को फल साहब को दर्शन है सो फिर फिर कबीर मांगै है ॥ ३३२ ॥

श्रोता तो घरही नहीं, बक्ता बदै सो बाद ॥
श्रोता बक्ता एकघर, तब कथनीको स्वाद ॥ ३३३ ॥

श्रोतातो घरहीमें नहीं है अर्थात् सुनतै नहीं है औवक्ता आपनो मत बादि-बादिबदै है श्रोताको समुझावै है सो जब श्रोतावक्ता एक घरहोइ कहेएकै उपासनाहोइ एकै मतहोय तब कथनीको स्वाद है कहे कथाको स्वादतबहीं मिलै है जैसे याज्ञवल्क्य भरद्वाज इत्यादिक तामें प्रमाण ॥ "इष्ट मिलै अरु मन मिलै, मिलै भजन रस रीति । तुलसिदास सोइ संतसों, हठ कारि कीजै प्रीति" १॥ दूसरो प्रमाण राम सखेजीको॥ "शिष्य सांच गुरु सांचहै, झूंठन जियत न मान॥बध्यो शिष्य साची प्रकृति, छोरत गुरुदै ज्ञान" ॥ २ ॥ औ कबीरहूजीको प्रमाण। साखी चौरासी अंगकी। "नाम सत्य गुरु सत्यहै, आप सत्य जब होइ ॥ तीन सत्य प्रकटैं जबै, गुरुका अमृत होइ" ॥ ३३३ ॥

कंचन भो पारस परसि, बहुरि न लोहा होइ ॥
चंदन बास पलास बिधि, ढाक कहै नहिं कोइ॥२३४॥

पारसको परसिकै कंचनभयो जो लोह है सो फिरि लोहा नहीं होइहै औ चंदनके बासते पलाश जो छिउल है सो बेधिगयो ताको ढाख कोई नहीं कहै है चंदनै कहै है ऐसे जोजीव साहबको ह्वैगयो साहब के पासगयो ताको जीव नहीं कहै है पार्षद रूप कहन लगे है ॥ २३४ ॥

बेचूनै जग राचिया, साईं नूर निनार ॥
तब आखिरके बखतमें, किसका करौ दिदार ॥२३५॥

बेचून निराकार जौन जगत्को रचिसि है सो साईं के नूरते कहे प्रकाशते निनारहै जुदा है अर्थात् साहबको प्रकाश न होइ वा नूरही अल्लाह है ऐसा जो मानो तो हे मुसल्मानौ मैं पूछता हौं कि आखिरके बखतमें कहे क्यामतिके बखतमें वह इनसाफ करैगा ऐसा कुरानमें लिखता है सो उसको बेचून मानते हौ निराकार मानते हौ तौ भला वा किसतरहसे इनसाफ करैगा औ किसका दीदार करौगे अर्थात् किसकी सूरति देखौगे भावयाहै कि वा निराकार नहीं है साकार है तुमको भ्रम भया है सो या बात सत्ताईस रमैनीके मूलमें ह साहबको नूरजो है प्रकाश सो सबके भीतर बाहर भराहै कोई जगह उससे खाली नहीं है औ साहब औ साहबकी सामग्री औ साहबको लोक सब नूरही-नूर काहै वहां बहुतसा नूर समिटिकै एकसल देखि परै है जिसतरहकी मिसाल कि जैसा साहबहै तैसासाहबै है दृष्टांतकाकोदेइ सो कबीरजी पूछै हैं कि भला तुमहूँ तो विचारिदेखो कि जो उसके हाथै पांउ न होते तौ जगत्को कैसे रचतो सो साहबसाकार है तुमको निराकारकी भ्रमभई है तामें प्रमाण ।

कलिमा बाँग निमाज़ गुज़ारै । भरम भई अल्लाह पुकारै ॥
अजब भरम यक भई तमासा । ला मकान बेचून निवासा ।
बे निमून वै सबके पारा । आखिर काको करौ दिदारा ॥
रगैरै महजिद नाक अचेता । भरमाने बुत पूजाहोता ।
बावनतीसबरण निरमाना । हिन्दूतुरुक दोऊ परमाना ॥

भरमिरहे सब बरणमहँ, हिन्दुतुरुक बखान ।
कहै कबीर बिचारिकै, बिनगुरुकी पहिंचान ॥
भरमत भरमत सब भरमाना, रामसनेही बिरला जाना ॥ ३३५ ॥

साईं नूरदिल एकहै, सोई नूर पहिंचानि ॥
जाके करते जगभया, सो बेचून क्यों जानि ॥ ३३६ ॥

साईं जो है साहब श्रीरामचन्द्र ताहिको एक नूर सबके दिलमें है सोई नूर तैं प्रकाश पहिंचानु जौनेके करते जग सब उत्पन्न भया है ऐसो जो साहब ताको तू बेचून कहे निराकार न जान वे साहब साकारहैं औनिर्गुणसगुणके-परे हैं । तामें प्रमाण कबीरजीको साक्षी ॥

श्रूप अखण्डित व्यापी चैतन्य श्चैतन्य ।
ऊंचे नीचे आगे पीछे दाहिन बायँ अनन्य ॥
बड़ा ते बड़ा छोटते छोटा मीहीते सब लेखा ।
सबके मध्य निरन्तर साईं दृष्टि दृष्टि सों देखा ।
चाम चश्मसों नजरि न आवै खोजु रूहके नैना ॥
चून चगून बजुद न मानु तैं सुभा नमूना ऐना ।
ऐना जैसे सब दरशावै जो कछु वेष बनावै ।
ज्यों अनुमान करै साहबको त्यों साहब दरशावै ॥
जाहि रूह अल्लाहके भीतर तेहि भीतरके ठाईं ।
रूप अरूप हमारि आश है हम दूनहुंके साईं ॥
जो कोउ रूह आपनी देखै सो साहबको पेखा ।
कहैं कबीर स्वरूप हमारा साहबको दिल देखा ॥ ३३६ ॥

रेख रूप जेहि है नहीं, अधर धरो नहिं देह ॥
गगन मँडलके मध्यमें, रहता पुरुष बिदेह ॥ ३३७ ॥

कैसो साहब है कि जाके रूप रेखा नहीं है औ बिशेषिकै देह धारण कीन्हे है अर्थात् रसहीरस देह धारण किये है पाञ्चभौतिक नहीं है । औ अधर जो आकाश तामें देह कबहूं नहीं धरै अर्थात् जो कबहूं न रहै तब न देह धारै

वातो सर्वत्र पूर्ण है गगनमण्डल के मध्यमें कहे तीन आकाश हैं एक नीचे एक मध्यमें एक ऊपर सो तीनों आकाशमें वा विदेह पुरुष पूर्ण है ॥३३७॥

धर्यो ध्यान वा पुरुषको, लाये बज्र केवाल ॥
देखिकै प्रतिमा आपनी, तीनों भये निहाल ॥३३८॥

वह परम पुरुष साहब जे श्रीरामचन्द्र हैं, नव दूर्बा दल जिनको रसरूप शरीर है तिनको ध्यान धरो जो कहो आनन्द को रूप तो सपेदको ह्वै है नव दूर्बादल श्याम कैसे कहौ हौ तो जहां बहुत श्वेताई है तहां हरित रंग देखही परै है जो कहो यह कैसे अनुभव होइ तो सुनौ सब ते श्वेत स्वच्छ गंगाको जल है सो जहां गंगाहूमें बहुत जल है बड़ी गहिराई है तहां हरितई देखि परै है । जो कहौ साहबको कैसे जानैं सो वज्र कपाट लगाइबेकी बिधि आगे लिखि आये हैं जलन्धर बन्ध लगायकै झटकादैकै वज्र कपाट लगायो सुरति कमलमें जो रकारको उद्धार ओङ्कारै है सो सुनि परी है तब वही रकार को जो ध्यान करै तब सो ध्यान किये साहब आपही प्रकट होय है । यही ध्यान करिकै तीनों ब्रह्मा विष्णु महेश आपनी आपनी प्रतिमा देखिकै निहाल भये हैं अर्थात् साहबके समीप हजारन ब्रह्मा विष्णु महेश देखिकै या निहाल भये कि धन्य हमारी भाग्य है कि श्रीरामचन्द्रके द्वारमें हमहूं हैं यहां तो कोटिन ब्रह्मांडके ब्रह्मा विष्णु महादेव मोजूद हैं ठाढ़े स्तुति करै हैं ॥ ३३८ ॥

यह मनतो शीतल भया, जब उपजा ब्रह्म ज्ञात ॥
जेहि बैसन्दर जग जरै, सो पुनि उदक समान ॥३३९॥

जब ब्रह्मज्ञान भयो तब यह मन शीतल ह्वैगयो अर्थात् संकल्प विकल्प छोड़ि दियो तपिबो मिटि गयो सो जौने बैसन्दरते कहे ब्रह्म ज्ञानते मनको संकल्प विकल्प छूटि गयो जग जरि गयो अर्थात् न रह्यो तौन जो ब्रह्म ज्ञान सो उदक जो साहबकी प्रेमा भक्ति तामें समान अर्थात् जब साहबकी भक्ति भई तब वा ब्रह्माग्नि न रहि गई यामें ते या आयो कि ज्ञानको फल साहबकी भक्ति है तामें प्रमाण ॥ " ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न कांक्षति ॥ समः

सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिंलभते पराम् ॥ १ ॥ **भक्तिमेंछागुण हैं ॥** " क्लेशघ्नी शुभदामोक्षलघुताकृत्सु दुर्लभा । सांद्रानन्दविशेषात्मा श्रीकृष्णाकर्षणी मता" ॥ भक्तिमें छे गुण हैं ।१। एक तो सम्पूर्ण क्लेशको दूर कर देइ है । अर्थात् संसार दूर करि देइ है । फिर भक्ति कैसी है २ कि शुभदा है कहे सम्पूर्ण शुभ गुण दिव्य गुण देई है । और३ अपने आनन्द ते मोक्षके सुखको लघु करि देई है। और ४ दुर्लभा है अर्थात् जब ब्रह्म ह्वैगयेह्व के ऊपर होइ है। और सान्द्रानन्द विशेष आत्मा है कहे परमानन्द रूपा है और श्रीकृष्ण को आकर्षण करिलै आवै है कहे जाकी भक्ति होइ है तो श्रीरघुनाथजीको दर्शन होइ है । सो श्री-कबीरजी भक्ति को सिद्धान्त राख्यो है कि, बिना भक्ति रघुनाथजी कोई प्रकार से मिलि सकते नहीं हैं और जहां भक्त पहुंचै है तहां दूसरो पहुंचि सकै नहीं है । सब ते ऊंची भक्तिकी सीढी है । बिना भक्ति साहब नहीं मिलैं तामें प्रमाण श्रीकबीरजीको भवतरण ग्रन्थको ॥ " सुनु धर्मदास भक्ति पद ऊंचा । तिन सीढ़ी नहिंकोउ पहूंचा ॥ वर्त एक है भक्तिको पूरा । और वर्त सब कीजै दूरा ॥ और वर्त सब जमकी फाँसी । भक्तिहि वर्त मिलैं अविनासी ३३९.

जासों नाता आदिको, विसरि गयो सब ठौर ॥
चौरासीके वश परे, कहत औरको और ॥ ३४० ॥

जौनें साहबको आदिको नातारहै कहे जाको सदाको दास अंश तौने राम चन्द्रको भक्ति बिसरी गयो मायामें परि चौरासी लाख योनिके वश ह्वै और को और कहै हैं अर्थात् कहूं कहै हैं कि वा ब्रह्म मैंहीं हौं कहूं आत्मैको मालिक मानै हैं कहूं नाना देवतन को स्वामी मानै हैं परंतु संसार काहूको छुड़ायो न छूट्यो ॥ ३४० ॥

---

१ अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश यही पाँच क्लेश हैं अनित्य पदार्थोंमें नित्य बुद्धि अनात्म पदार्थोंमें आत्म बुद्धिका नाम अविद्या है तात्पर्य यह कि अज्ञान जन्य जो २ कार्य हैं सब अविद्या कृत है । मैं राजा, मैं पण्डित मैं ज्ञानी मैं कुलीन इत्यादि अहङ्कार युक्त कार्यको अस्मिता कहते हैं । प्रिय वस्तुमें प्रीति होना राग । और अनिष्ट पदार्थमें अप्रीतिका होना द्वेष । एवं विना विचारे किसी कार्यको एक प्रकारका मान कर उस में आग्रह बुद्धिको अभिनिवेश कहते हैं ।

लीन्ह्यो फटकि पछोरि यह साखी भर सब पोथिनको पाठ मिलि आवा है औ लोहे चुंबक प्रीति जस यह साखीते चौरासीके वश यह साखी भी उन्तिस साखी एक पोथीके क्रमते ह्वै आवा अब एक पोथीमें अट्ठाइस साखी औरई और हैं तिनहूंनको अर्थ लिखे हैं ॥

बूझौ शब्द कहांते आया, कहां शब्द ठहराय ॥
कह कबीर हम शब्द सनेही, दीन्हा अलख लखाय ३४१

यह शब्द जो रामनाम है सो बूझौ कहे बिचारौ कहांते आयाहै औ कहा ठहरायहै सोहम वही शब्दके सनेही हैं वाशब्द तुम नहीं बूझते हौ कैसो है शब्द कि साहब के इहां ते आयो है ॥ रामनामलै उचरीबाणी ॥ यह रमैनीमें लिखि आये हैं सो जब कुछु नहीं रह्यो तब रामनामहीतें सबकी उत्पत्ति भई है सो राम नाम मंत्रार्थ जो मैं बनायो है तामें बिस्तारते लिखि दियो है । इहां संक्षे-पते जनाये देउँहौं "अ इ उ ण् ऋ ऌ क् ए ओ ङ् ऐ औ च् हयवरट् लण् ञ मङण-नम् झभञ् घढधष् जबगडदश् खफछठथचटतव् कपय् शषसर् हल्ये ॥ सबबर्ण चौदह सूत्रमें पाणिनि लिखिदियो॥ आदिरन्त्येन सेहता । अन्त्येने ता सहित आदि मध्यगानां स्वस्यच संज्ञास्यात्" यहि सूत्र करिकै अकार आदिकालीन औलकार अंतकालीन तब अल् प्रत्याहारकीन तेहितें बीच के वरण सब आयगये ।सो अल् प्रत्याहार रामनामको एकदेश ते निकसै है सो रामनामके रकारको बर्ण विपर्यय कियो तब अकारको यह कैतिलै औ रकारको वह कैतिलै गये तब अर भयो सो रकार लकारको अभेदहै तेहिते अलभयो तेहिते राम नामके एक देश ते सब निकसि आये तेहिते सबको आदि राम नाम है । सो राम नामको अर्थ साहिबैके ठहरायहै, अर्थात् राम नाम साहबही को बतावै है । सो श्री कबी-रजी कहै हैं कि, हम वही शब्दके सनेही हैं । कैसो है शब्द कि, अलखहै वा सबको लखावै है वाको कोई नहीं लखै है जैसे आंखीते सबको देखै औ आंखी आपनी कोई नहीं देखै है । जो कहो कबीर कैसे कहै हैं कि हम अल-खको लखायदियो तौ सुनो जैसे ऐना लैकै देखै तौ आपनी आंखीको प्रतिबिंब देखि परै है सो यह बीजकरूप ऐनाहै तामें अनिर्बचनीय जो राम नाम ताको

प्रतिबिंब बीजकमें दिखायो अर्थात् यह बतायदियो कि, रामनामहीते जगत मुख अर्थ में सबकी उत्पत्ति भई है । औ रामनामही साहबको बतावै है साहब मुख अर्थमें । औ अनिर्बचनीय साहबको रामनामही देखाय देइहै यह भी कबीरजी अलखके देखिबेको उपाय बताय दियो यही अलखको लखावनो है सो जब साहब को ह्वैजाय तब या लखै तामें प्रमाण सुखसागरको ॥ " अलख अपार लखै केहि भांती । अलखलखै अलखैकी जाती ॥ ३४१ ॥

बूझौ करता आपना, मानौ बचन हमार ॥
पंचतत्त्वके भीतरै, जिसका यह बिस्तार ॥ ३४२ ॥

तुम कहांते आये औ तुमको को कियो सो अपने कर्त्ताको तुम बूझौ वह साखी में तो बचन हम कहि आये ताको तुम मानौ तुम वह शब्द रामनामही ते भये हौ जिसका यह बिस्तार सब देखतेहौ औ जौन जौन मानिदी तुम मानिराखेहौ सो सब पंचतत्त्वकेभीतरहै एकवह रामनामही पंचतत्त्वके बाहिर है औ वही तुम्हारो आदि कर्त्ता है ॥ ३४२ ॥

हमकर्त्ताहैं सकल सृष्टिके, हम पर दूसर नाहि ॥
कहैं कबीर हमै नाहिं चीन्हें, सकल समानाताहि ॥ ३४३ ॥

हमहीं सम्पूर्ण सृष्टिके कर्त्ता हैं हम मालिक दूसर नहीं है हमहीं सबके मालिकहैं सबमेरेहीं में समानहै हमहीं ब्रह्महैं ऐसा कोई कोई कबीर कायाके बीरजीव कहै हैं ताको आपै खंडन करै हैं ॥ ३४३ ॥

सुतनाहिं मानै बातपिताकी, सेवै पुरुष बिदेह ॥
कहै कबीर अबहुँ किन चेतौ, छांड़ो झूठ सनेह ॥ ३४४ ॥

तैं सुतहै रामनाम प्रतिपाद्य जे साहबहैं ते तेरे पिताहैं तिन की बात तैं नहीं मानै है औ बिदेह पुरुष जो है ब्रह्म ताको सेवै है कहे आपही ब्रह्म ह्वै बैठै है सो अबहूं चेतकरु साहब कहि आये हैं कि॥ "अजहूं लेहुँ छड़ाय कालसों जो घट

सुरतिसंभारै''॥ सो ऐसे पिताकी बातमानु यह झूठसनेह छोड़िदे जो आपने को ब्रह्म मानिकै बैठे हैं कि महीं ब्रह्महौं यह ब्रह्मतो मनको अनुभवहै झूठा है जीव ब्रह्म कबहूं नहीं होयहै ॥ ३४४ ॥

सबै आशकरशून्यनगरकी, जहां न कर्त्ता कोई ॥
कह कबीर बूझौ जियअपने, जातेभरम न होई॥३४५॥

सबै वह शून्यनगरकी आशाकरै हैं जहां कोई कर्त्ता नहीं है सो वह तौ झूठाहै सो कबीरजी कहै हैं कि तुम आपने मनमें बूझौ तौ उहांतौ कर्त्ता हई नहीं है औ जगत् बनैहै तौ कौन जगत को कियो है तेहिते निराकार अकर्त्ता ब्रह्म कहनूति जो कहो हौ सो सब झूठी है सो यह तुम आपने जियमें बूझौ जेहिते ब्रह्मवालो भ्रम तुमको न होइ ॥ ३४५ ॥

भक्तिभक्ति सबकोई कहै, भक्ति न आई काज ॥
जहँको किया भरोसवा, तहँते आई गाज ॥ ३४६ ॥

भक्तिभक्ति सबकोई कहै हैं औरे औरे देवतनकी भक्ति करै हैं सो वा भक्ति कौनौ काज न आई जेहि जेहि देवको भरोसा कियो तहांते गाजआई कहे वे सब काल स्वरूपहैं सब याको मारिकै आपने लोक लैगये जब महाप्रलय भई तब इष्ट औ उपासक दोऊ न रहे पुनि जब जगत्की उत्पत्ति भई तब कर्म्मानुसार दोऊ उत्पन्न भये ॥ ३४६ ॥

समुझौ भाई ज्ञानियो, काहु न कहा सँदेश ॥
जेइ गये बहुरे नहीं, है वह कैसा देश ॥ ३४७ ॥

हे भाई ज्ञानिउ तुम समुझते जाउ तौन तुम ब्रह्म ब्रह्मकहौ हौ तहां को संदेश कोई न कह्यो कहे सब वेदांती ब्रह्मज्ञानी कहै हैं कि वाको तो हमकही नहीं सकैहैं धौंकेसाहै औ जे उहां गये ते बहुरिकै न आये जो बहां को सन्देश बतावैं अर्त्थात् कुछ न हाथ लग्यो ॥ ३४७ ॥

धोखे सबजग बीतिया, धोखे गई सिराइ ॥
स्थितिनाकरै सो आपनी, यहदुख कहा न जाइ३४८॥

धोखाही तें सम्पूर्ण जगत् व्यतीत होगया और धोखाही ते सिराय गया औ यह मन अपनी स्थिति नहीं पकरै है स्थिर नहीं होयहै सो आपनी भूल कासों कहै याद़ुःख काहूसों नहीं कह्यो ॥ ३४८ ॥

मायाते मन ऊपजै, मनते दश अवतार ॥
ब्रह्माँविष्णु धोखेगये, भरमपरा संसार ॥ ३४९ ॥

साहब औ साहबके पास पहुँचेहैं जे तिनको छोड़े और सब मनके फन्दमें परे हैं और अर्थ स्पष्टही है ॥ ३४९ ॥

रामकहतजगबीते सिगरे, कोई भये न राम ॥
कहकबीर जिनरामहिं जाना, तिनके भे सबकाम ३५०

हमहीं रामहैं हमही रामहैं या कहत कहत सब सब जग बीतिगये कहे मरिगये परन्तु कोई राम न भये औ कबीरजी कहैहैं कि जिन श्रीरामचन्द्रको मालिक जान्यो है तिनके सब काम ह्वैगये हैं ॥ ३५० ॥

यहदुनिया भै बावरी, अदृश्यसों बाँध्यो नेह ॥
दृश्यमानको छोड़िकै, सेवै पुरुष विदेह ॥ ३५१ ॥

यह दुनिया बावरी ह्वै गई अदृश्य जो निराकार ब्रह्म तासों नेहबाँध्यो है सो वातो धोखाहै काको मिलै जीव ब्रह्म होतही नहीं है सो दृश्यमान जे साहब श्रीरामचन्द्रहैं तिनको छोड़िकै वा बिदेह पुरुष निराकार ब्रह्मको सेवै है अर्थात् वाहीमें लागैहै ॥ ३५१ ॥

राजा रैयत ह्वैरहा, रैयत लीन्हीं राज ॥
रैयतचाहै सबलिया, ताते भया अकाज ॥ ३५२ ॥

राजा जो साहब है सो रैयत ह्वै रहा है अर्थात् वाको कोई जानतही नहीं है औ रैयत जो धोखाब्रह्म सो सब लेत भयो अर्थात् सब जगत् वाही में लगत भयो सो रैयत जो है अहम्ब्रह्मास्मि सो साहबको सब लियो चाहै है अर्थात् आपै ब्रह्म होन चाहै है ताते अकाज भयो माया के बश ह्वै आपनेनको मालिक मानन लग्यो ॥ ३५२ ॥

जिसका मंत्रजपैं सब सिखिकै, तिसके हाथ न पाऊं ॥
कहैकबीर मातुसुतकाही, दिया निरंजन नाऊं॥३५३॥

जिसका मन्त्र सब सिखिकै जैपै हैं प्रणव उसका अर्थ ब्रह्मही है जिसके हाथ पांउ नहीं हैं औ निरञ्जन जो है ब्रह्म ताको निरञ्जननाम मायैको धरायो है माया वा निरञ्जन ब्रह्मकी माता है काहेते कि या निरञ्जन नाम बचन में आवै है बिज्ञान करिकै अनुभव जो ब्रह्म होइहै सो मनका अनुभवहै मायै-को पुत्रहै वह माया मनमें मिलि इच्छारूपहै सो जाको तुम ब्रह्म कहौहौ सोई माया ते रहित नहीं है तुम कैसे अहम्ब्रह्म मानि माया ते रहित होउगे तामें प्रमाण कबीरजीके शब्दको ॥ "मनपरपञ्ची मनैनिरञ्जन मनही है ओङ्कारा। तीनलोक मनफांसिलियाहै कोई न मनते न्यारा ॥ ३५३ ॥

जनि भूलौरे ब्रह्मज्ञानी, लोकवेदके साथ ॥
कहकबीर यह बूझहमारी, सो दीपकलियेहाथ ३५४॥

कबीरजी कहै हैं कि रे ब्रह्मज्ञानी तुम जानि भूलौ लोक वेदके साथ लोकमें सरहना पायकै वेद में धोखाब्रह्ममें लगिकै अर्थात् तुम यामें न खराब होउ । सो कह कबीर यह बूझ हमारी कहे कायाके बीर जीवौ परमपुरुष जे साहब श्रीरा-मचन्द्र तिनमें तन मन ते लागो जो हमारी बूझहै सोई साहबके अनुराग रूप दीपकहाथमें लेउ जाते संसाररूप अन्धकारते पारहोउ ॥ ३५४ ॥

देव न देखा सेवकाहि, सेवक देवनदीख ॥
कहकबीर इन मरते देखो, यह गुरु देई सीख॥३५५॥

देवता आपने सेवकको सेवक आपने इष्ट देवताको न दीख तिनको कबी-रजी कहै हैं कि हम दूनों को मरते देखा है अर्थात् महाप्रलय में नहीं रहैं ताते हम गुरुकी सीख इनको देते हैं कि धोखा औ नाना मतको त्यागि साहब को जानो जाते जनन मरण छूटै या सीख देते हैं ॥ ३५५ ॥

तेरीगति तैं जानै देवा, हममें समरथ नाहीं ॥
कहकबीर यहभूल सबनकी,सबपरे संशय माहीं॥३५६॥

सब लोग या कहै हैं तुम्हारी गति तुम्हीं जानो हममें सामर्थ्य नहीं है जौन हमको गुरु बताय दियो है ताही मे लगें हैं :तिनको कबीरजी कहै हैं कि इन सबकी भूल ईश्वर तो बताबै न आवेंगे औ जीवका तो आपने साहबको जानबै चाही नाहक संशयमें परे हैं साहबको जानैं तौ साहब छुड़ाइ लेइँगे ॥ ३५६ ॥

खालीदेखिकै भरमभा, ढूंढ़तफिरै चहुँ देश ॥
ढूंढ़त ढूंढतमरगया, मिला न निर्गुणभेश ॥ ३५७ ॥

जौने संशयमें सब बूड़िगये हैं सो संशय कबीरजी देखावै हैं खाली कहे शून्य देखिकै सब जीवन को भरम भयो सो देवता परोक्षहै वाको अर्थ जानै नहीं हैं औ चारों देशमें ढूंढत फिरै हैं औ केते वा निर्गुण धोखाब्रह्म को ढूंढ़त ढढ़त मरि गये खोज न लाग्यो ॥ ३५७ ॥

बूझ आपनी थिररहै, योगी अमर सो होइ ॥
अब बूझै भरमै तजै, आपै और न कोइ ॥ ३५८ ॥
देखादेखी सबजग भरमा, मिला न सतगुरु कोइ ॥
कहै कबीर करत नितसंशय, जियरा डाराधोइ॥ ३५९॥

गुरुवा लोग कहै हैं कि जो बूझ थिर रहै तौ योगी अमर ह्वै जाय जो जगत्के नाना भ्रमछोड़िकै अबहूं बूझै तौ एक आपही है दूसरानहीं है मारैगा कौन ऐसे कहि कहि देखादेखी श्रीकबीरजी कहै हैं कि सबजगत् भरमि गयो सतगुरुकहे साहबके जाननवारे इनको कोई न मिलो हमहीं ब्रह्महैं यही संशय में डारिकै आपने जीवन को खोइ डारे अर्थात् नरकमें डारिदीन्हे ॥ ३५८॥ ३५९॥

ह्वांकी आश लगाइया, झूठी ह्वांकी आश ॥
गृहतजि बनखँड मानिया, युगयुग फिरै निराश॥ ३६०॥

वा ब्रह्म जो धोखा ताकीआश लगाये है सो आश तेरी झूठी है गृहत्यागिकै जाके हेत तुम बनखण्डमें टिकेहु सो युग युग निराश फिरैगो अर्थात् ठिकान न लगैगो वह मिथ्याहै बिना साहबके जाने संसारते न छूटैगो ॥ ३६०॥

नेइके बिचले सबघर बिचला, अब कछु नाहिं बसाइ॥
कहैकबीरजोअबकीसमुझै, ताकोकालनखाइ ॥ ३६१॥

कबीर जी कहे हैं कि नेइ जब बिगरि जायहै तब सगरौ घर बिगरि जायहै ऐसे नेइ जो है धोखाब्रह्म जौनेको गुरुवालोग समुझावे है सोई जब मिथ्या ठहरचो तब और सब लोकके देवता येई घरहैं ते बिगरिबोई चाहैं अर्थात् इनते अब कौन सांचफल मिलै सो श्री कबीर जी कहे हैं जो कोई साहब को समुझै अर्थात् तन मन ते लागै ताको काल नहीं खाय है और सब कालको कलेवा हैं ॥ ३६१ ॥

रामरहे बनभीतरे, गुरुकी पूजि न आश ॥
कहकबीर पाखंडसब, झूठे सदा निराश ॥ ३६२ ॥

बन जो है संसार तौनेके भीतर जब जीव भयो रामरहे कहे वह जीव रामते राहत भयो रामको पुनि बरिआई पावै है अथवा रामते रहित जब जीव भयो तब संसारी ह्वै जायहै और परमगुरु जे सुरति कमलमें बैठे रामनाम बतावै हैं तिनकी आश न पूजतभई वे रामनाम बतावै हैं यह नहीं सुनै हैं वे छुड़ावन चहै हैं सो नहीं छूटै हैं औ जे साहबको छोड़ि और औरमें लगावै हैं ते सब पाखण्डी हैं झूठे हैं औ पाखण्डी जे हैं और औरमें लागै हैं तिनकी मुक्ति कबहूं नहीं होइहै वे सदा निराशरहैं तामें प्रमाण चौरासी अङ्गकी साखी॥ "चकई बिछुरी रैनि की जाय मिली परभात ॥ जे जन बिछुरे रामते दिवस मिलैं नहिं रात"॥३६२॥

बिनारूप बिनरेखको, जगत नचावै सोइ ॥
मारै पांचौजोनहीं, ताहिडरै सबकोइ ॥ ३६३ ॥

जोमन जगत् को नचावै है सो बिनारूपको है औ बिनारेखको है आकाश वायु आदिक जेहैं तिनमें रूपनहीं है पै रेख देखी परै है औ बायुको स्पर्श होय है सोई रेखहै औ मनके रेखऊ नहीं है सो जे पांचौ पांचो ज्ञानेंद्रिय कर्मेन्द्रियको नहीं मारै हैं ऐसे गुरुवन को सबजने डेराते जाउ नहीं तौ तुमहूं को संसार में डारि देइँगे ॥ ३६३ ॥

डरउपजा जिय है डरा, डरते परा न चैन ॥
देखा रामहि हैनहीं, यहौ कहै दिनरैन ॥ ३६४ ॥

यही मनते डरउपजा कहे यहीके अनुभवते ब्रह्मभयो सो भूत ब्रह्मको सबै डेरा-यहैं सो यही ब्रह्मके डरमें जीव पराहै कहे हराहै सो यह ब्रह्मके डरते चैन न याको परा अर्थात् यह ब्रह्मको ढूंढ़तही रहिगये न पायो न ब्रह्म भयो न चैन भयो यह कहै हैं कि राम को कोई देखा है हमतो नहीं देखा जो कोई हमको देखाइ देइ तौ हम मानैं सो अरे मूढ़ौ तुमतो डरमें परेहौ तुमको कैसे देखाइदेइँ जाको साहब कृपाकरै हैं ताको देखाइ देइहौं ॥ ३६४ ॥

सुखको सागर मैं रचा, दुखदुख मेलो पांव ॥
स्थिति ना पकरै आपनी, चले रङ्क औ राव ॥३६५॥

श्रीकबीरजी कहै हैं कि मैंतो या बीजक ग्रन्थमें सुखको सागर रच्यो है कहे साहबको बताइ दियो है तामें नहीं लगै दुःखमें पाँउ मेलै है अर्थात् कहूं ब्रह्ममें कहूं ईश्वरनमें कहूं नानामत में लागै है जहां याकी स्थिति है साहबमें तिनको नहीं पकरै याही ते राजा रंक सब चले जायहैं कालखाये लेइहै ॥ ३६५ ॥

दुख न हता संसारमें, हता न शोक वियोग ॥
सुखहीमें दुखलादिया, बोलै बोली लोग ॥ ३६६ ॥

या संसार जो है सो चित अचितरूप साहबको है सो जो कोई साहबरूप करि संसारको देखै है ताको न दुःख न शोकहै न वियोगहै साहबतो सर्वत्रपूर्ण है ऐसो सुखरूप जो है संसार तामें मोर तोरमें परिकै दुखलादिया कहे दुःखभोगन लग्यो औ वही मोर तोरकी बोली लोग बोलै हैं साहबको नहीं जानै हैं॥ ३६६॥

लिखापढ़ीमें परे सब, यहगुण तजै न कोइ ॥
सबै परे भ्रमजालमें, डारा यह जिय खोइ ॥ ३६७ ॥

सब लिखापढ़ीमें परे हैं वेदशास्त्र तात्पर्य्य करिकै साहब को बतावै हैं सो तो न जान्यो वादविवाद पढ़िपढ़ि करनलगे नये नये ग्रन्थ बनाय लेनलगे लिखनलगे वेदशास्त्रको अर्थ फेरि डारनलगे साहब मुख अर्थ जौन तात्पर्य्य करिकै वेदशास्त्र बतावै हैं ताको छोड़ि अर्थ बदलै हैं या गुणको कोई नहीं छांड़ै याही ते सब भ्रमजालमें परे आपने जियको खोइ डारयो ॥ ३६७ ॥

बहु परचै परतीति दृढ़ावै सांचेको बिसरावै।
कळपत कोटि जन्म युग वागै दर्शन कतहुं न पावै॥
परम दयालु परम पुरुषोत्तम ताहि चीन्ह नर कोई।
तत्पर हाल निहाल करतहै रीझतहै निज सोई॥
बधिक कर्म कारि भक्ति दृढ़ावै नाना मतको ज्ञानी।
बीजक मत कोइ बिरला जानै भूलि फिरै अभिमानी॥
कह कबीर कर्त्तामें सबहै कर्त्ता सकल समाना।
भेद बिना सब भरम परे कोउ बूझै संत सुजाना॥ ३६१॥

इति श्रीकबीरजी विरचित बीजक तथा सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजा श्रीराजाबहादुरश्री सीतारामचन्द्रकृपापात्राधिकारिविश्वनाथसिंहजूदेवकृत-पाखण्डखण्डनी टीकासमाप्ता।शुभमस्तु।

बघेलवंशागमनिर्देश ।

दोहा-वंदौं वाणी वीण कर, विधिरानी विख्यात ॥
वरदानी ज्ञानी सुयश, हरि गानी दिन रात ॥ १ ॥
मदन कदन सुत मुद सदन, वारण वदन गणेश ॥
वंदतहौं अरविंद पद, मद उर बुद्धि विशेश ॥ २ ॥

सवैया-श्रीरघुनंदन श्रीयदुनंदन औध द्वारकाधीसविलासी ।
रावणकंस विध्वंस किये जिन अंश भयअवतारप्रकाशी
पारकयाभवसिंधु अपारको वोहितनामजासंतसुपासी ।
वंदत हौं तिनके पद द्वंद्व सुमै अरविंद अनंदकेरासी ॥

दोहा-शंकर शंकर पद कमल, वंदन करौं निशंक ॥
शिर मयंक शुचि वंक जेहिं, लसति शैलजा अंक ॥३॥
प्रियादास पद पद्म युग, पुनि पुनि करहुँ प्रणाम ॥
विश्वनाथ नरनाथ गुरु, हरि स्वरूप सुखधाम ॥ ४ ॥
सांच मकुंद स्वरूपजे, नाम मुकुंदाचार्य्य ॥
वंदौं नृप रघुराज गुरु, करन सिद्धि सब कार्य्य ॥ ५॥

रामभक्त शिरताज जे, महाराज विश्वनाथ ॥
करन अनाथ सनाथ पद, पुनि पुनि नाऊं माथ ॥ ६ ॥
सवैया-भूपशिरोमणिश्रीविश्वनाथतनैरघुराजअनाथनिनाथै।
श्रीयदुनाथकोभक्त अनूपमसेवी सदाद्विजसाधुनगाथै ॥
तेज तपै दिननाथसों जासु यशो निशि नाथ दिपै महिमाथै
तापद पाथजमें सुख साथ है जोरिकैहाथनवावतमाथै ॥ १ ॥
दोहा-पवनपूत जय दुखदवन, राम दूत सुखधाम ॥
शमन धूत सुकृपाभवन, बल अकूथ सब ठाम ॥ ७ ॥
जय कबीर मतिधीर अति, रति जेहिं पद रघुवीर ॥
क्षीर नीर सत असत कर, विवरण हंस शरीर ॥ ८ ॥
जय हरि गुरु हरि दास पद, पंकज मोहिं भरोस ॥
जाकी कृपा कटाक्षते, मिटत सकल अफसोस ॥ ९ ॥
संतत संतन भूसुरण, चरण कमल शिरनाय ॥
बार बार विनती करौं, सब मिलि करो सहाय ॥ १० ॥
रच्यो रामरसिकावली, ग्रंथ भूप रघुराज ॥
तामें बहु भक्तन कथा, वरण्यो भरि सुखसाज ॥ ११ ॥
भक्तमाल नाभा सुकृत, ताहीके अनुसार ॥
श्रीकबीरहू की कथा, तामें रची उदार ॥ १२ ॥
छप्पय-जो कबीर बांधव नरेश वंजावलि भाखी ॥
अरु आगमनिर्देश भविष्यहु जो रचि राखी ॥
सोउ समास सहुलास तासु मैं वर्णन कीनो ॥
सुनत गुणत जेहिं सुकवि संत संतत सुख भीनो ॥
तेहि तुम वरणौ विस्तार युत, शासन नृप रघुराज दियो ॥
कह युगलदास धरि शीश सो, वर्णन हों आरंभकियो ॥ १ ॥

घनाक्षरी ।

प्रथम कबीरजी सिधारि पुरी मथुरामें संतन सहित अति हरष बढ़ायकै ॥
तहां धर्मदास आय प्रभु पदपंकजमें बैठो बार बार शीश सादर नवायकै ॥

ज्ञान उपदेश ताको कीन्ह्यो श्रीकबीर तहां कह्यो सो न इतिं भीति विस्तर बुझायकै ॥
मानिकै यथारथ कृतारथ ह्वै धर्मदास चलि मथुरा ते पथ गौन्यो चिते चायकै ॥ १ ॥

दोहा-धर्मदास आवत भये, बांधौगढ़ सहुलास ॥
गुरु विश्वास दृढ़ वास किय, जासु हिये आवास॥ १३॥

पुनि कछु दिन बीते सुख छाये। श्रीकबीर बांधव गढ़ आये ॥
तहँ चौहट बजार मधिमाहीं। निरखि एक सेमर तरु काहीं ॥
तहाँ आठ दिन आसन कीन्ह्यो। सेमर तरु उड़ाय पुनि दीन्ह्यो ॥
निरखि लोग सब अचरज माने। भूपति सों सब जाय बखाने ॥
महाराज साधू यक आई। सेमरतरुको दियो उड़ाई ॥
गुणि अचरज भूपति अतुराई। प्रभु पद किय दंडवत सिधाई ॥
सादर नृप कर जोरि सुहाये। पूंछयो नाथ कहांसे आये ॥
तब प्रभु बचन कह्यो अभिरामा। हम कबीर निवसें यहि ठामा ॥

दोहा-तब राजा पूंछत भयो, कैसे जानैं नाथ ॥
देहु परीक्षा हमहिं जो, तौ लखि होयँ सनाथ॥ १४॥

होत अज्ञान नाश जेहिं तेरे। कहिय नाथ सो ज्ञान निबेरे ॥
देवी आदि वेदकी जोई। आदि निरंकारहु जो होई ॥
सादर पूंछत भयो भुआला। दियो बताय कबीरकृपाला ॥
राजाराम कह्यो पुनि बैना। कहिय जो आदि बघेल सचैना ॥
तब तुमको कबीर हम जानैं। अपनो जन्म सफल करि मानैं ॥
सुनि कबीर तब मृदु मुसक्याई। उत्पत्ति जौन बघेल सोहाई ॥
लागे कहन भूपसों सो सब। हम साकेत रहे निवसें जब ॥
तब मोसों कह श्रीरघुराई। तुम कबीर संसारहि जाई ॥

दोहा-जीवनको उपदेश करि, मेरो ज्ञान अशोक ॥
हमरे लोकपठावहू, जो प्रद आनँद थोक ॥ १५ ॥

छंद-द्वापर अंत आदि कलियुगमें कृष्ण प्रकाश अनूपा ॥
पूरुब दिशि सागरके तटमें धरिहै बोध स्वरूपा ॥

तहां जाय तुम प्रकट होउ यह रघुवर आयसु पाई ॥
प्रगटि बोडैसा जगपतिकेरो दरशन लीन्ह्यों जाई ॥ १ ॥
सागर तीर गाड़ि कुबरी पुनि बाँधि तासु मर्यादा ॥
पुनि परबोधि सिंधुको बहु विधि गमन्यों युत अह्लादा ॥
चलत चलत गुजरात आयकै नगर विलोक्यो जाई ॥
जहां सुलंक भूप बहु साधुन राखे रहो टिकाई ॥ २ ॥
भक्तिवान अति रही रानि अति नित सब साधुन केरो ।
दर्शन करिलै तिन चरणामृत निज घर करै बसेरो ॥
ते साधुनको दर्शन करिकै एक वृक्षतर जाई ॥
बसि आसन बिछायकै बैठ्यो हरिको ध्यान लगाई॥३॥
यक दिन रानी सब साधुनको भोजन हित बोलवाई ॥
पंगति दिय बैठाय गयो मैं नाहिं तहँवां हरषाई ॥
रानी तब मेरे आश्रममें आवतभै अतुराई ॥
महि तजि अंतरिक्ष आसन मम निरखि परम सुख पाई४
विनती किय प्रभु आपहु चलिकै मम घर भोजन कीजै ॥
मैं तब कह नहिं भूख प्यास मोहि हरि अधार गुलि लीजै।
रानी कह यकतो सुत विन मैं दुखित राज्य सब सूनी ॥
दूजे जो न आप पगुधारे तपी ताप तो दूनी ॥ ५ ॥
मैं कह सोच करै नहिं राजा द्वै सुत ह्वैहैं तेरे ॥
संतनको चरणामृत अबहीं लैआवे ढिग मेरे ॥
साधुन चरण धोय चरणोदक लैआई जब रानी ॥
दियो पियाय रानिको तब मैं निज चरणोदक सानी॥६॥
लहि मेरो वर साधुनकेरो बहु विधि करि सतकारा ॥
परम प्रमोद पायउर रानी गमनत भई अगारा ॥
कह्यो हवाल भूपसों सो सब सुनि नृप अति सुखपाई ।
लै फल फूल द्रव्य बहु सादर मम समीप द्रुत आई॥७॥

करि दंडवत प्रणाम विनय किय नाथ दया उर धारी ।
कछु दिन आप वास इत कीजै तौ मैं होहुँ सुखारी ॥
कुटी दियो बनवाय भूप तँहँ करतभयो मैं वासा ॥
कछु वासरमें गर्भवतीभै रानी सहित हुलासा ॥ ८ ॥

दोहा–ज्यों ज्यों रानीके उदर, बढ़चो गर्भ करि वास ॥
त्यों त्यों रानीके वपुष, बाढ़चो परम प्रकाश ॥१६॥

कछु दिन बीते सुदिन जब आयो । तब रानी दुइ सुत उपजायो ॥
भयो जो जेठ पुत्र तेहि आनन । होत भयो सम मुख पंचानन ॥
लहुरो तनय होत जो भयऊ । तेहि नर तनु अति सुंदर ठयऊ ॥
लखि रानी अति अचरज मानी । दिय देखाय भूपति कहँ आनी ॥
मानि शंक भूपालउदासा । कह कबीर आयों मम पासा ॥
सादर करि दंडवत मणामा । कीन्हीं विनय भूप मतिधामा ॥
नाथ भये मेरै सुत दोई । है अति कृपा आपकी सोई ॥
पै जो भयो जेठ सुत स्वामी । व्याघ्र वदन सों यह बदनामी ॥

दोहा--सो सुनि मैं वाणी कही, करिकै बहुत प्रशंस ॥
यह सुत वंश वतंसभो, रामलोकको हंस ॥ १७ ॥

व्याघ्र वदन परतो दृग जोई । नाम वघेल ख्याति जग होई ॥
याते वंश बयालिस ताईं । अटल राज्य रहि है महि ठाईं ॥
तेजवान यह होय महाना । पूरण भक्तिमान भगवाना ॥
वंश बयालिसलौं अभिरामा । चलिहै तुब बघेल कुल नामा ॥
यह वर लहि सों मेरे मुखते । भूपति आय महल अति सुखते ॥
द्विजन दान दै तोपन काहीं । दगवायो बहु बार तहाँहीं ॥
पुनि मोकहँ सो नृपति सुजाना । कारि बहु विनय लाय निजथाना ॥
ऊंचे आसन पर बैठाई । पूजन किय अति आनँद छाई ॥

दोहा–रानीलै दोउ पुत्रको, मेरे पग दिय डारि ॥
तब मैं पुनि देतो भयों, बहु अशीसचित धारि १८

कियो शङ्क नहि कोष न देशू । नहिं चाकर यह बड़ो अँदेशू ॥
चलिहै किमि जग नाम हमारो । नहिं कबीर वर मृषा विचारो ॥
करत करत यहि भांति विचारा । होतभयो जबही भिनसारा ॥

दोहा–सपदि भूप जयसिद्ध तब, जाय जनकके पास ॥
विनय कियो करजोरिकै, मोहिं यह परमहुलास २४

करि महि अटन तीर्थ सब करहूँ । परम प्रमोद हिये महँ भरहूँ ॥
करै न धर्म धरै धन जोरी । क्षत्री ह्वै करतो धन चोरी ॥
तेहि नृप तेजअंश घटिजाई । ताते धर्म करै मनलाई ॥
करै नीति रण पीठि न देई । सो नृप अनुपम यश महि लेई ॥
यह सुनि सब बघेल सुख पायो । पितु प्रसन्नह्वै वचन सुनायो ॥
जाहु हमारे पितुके पासा । कहौ करै जस हुकुम प्रकासा ॥
यह सुनिकै जयसिद्ध भुवाला । जाय पितामह निकट उताला ॥
शीश नवाय उभय कर जोरी । विनय कियो यह इच्छा मोरी ॥

दोहा–जात अहौं तीरथ करन, दीजै नाथ रजाय ॥
तब सुलंक नृप पौत्रसौं, कह्यो गोद बैठाय ॥ २५ ॥

कौन कलेश परचो तुमकाहीं । जो निज राज्य रहतहौ नाहीं ॥
यहं तुव सिगरी राज्य ललामा । का परदेश जानको कामा ॥
सुनि जयसिद्ध कही तब बाता । देहु राज्य दोउ पुत्रन ताता ॥
काम न मम तुव राज्यहि तेरे । करिये विदा यही मन मेरे ॥
तिहरो यश जगमें अति होई । नहिं निंदा करि है जन कोई ॥
तव कबीर वरदान प्रभाउ । गुणि सुलङ्क नृप भरि अति चाऊ ॥
युगल उतंग मतंग निवेरे । तीस तुरंग तबेले केरे ॥
तिनको नीकी भांति सजाई । द्रव्य ऊन्ट द्वै तुरत भराई ॥

दोहा–वीर महारणधीर जे, काल सरिस सरदार ॥
तिनको तिन सँग करत भे, औरहु चमू अपार २६

सुदिन शोधि जयसिद्ध नरेशा । पितु मातहिं किय खातिर वेशा ॥
पुनि रानी अतिशय बिलखानी । महूँ संग चलिहौं कह वानी ॥

जहां धर्म रहती तहँ माया । जहां रूप रहती तहँ छाया ॥
लै तिय सँग मोहिं शीश नवाई । मोसों बहुत आशिषा पाई ॥
दशराके दिन किय प्रस्थाना । पुरलोगनको करि सन्माना ॥
कह कबीर पुनि मो ढिग आई । कीन्ही विनय प्रमोद बढ़ाई ॥
प्रभु मोहिं जिमि दीन्ह्यो बरदाना । तिमि मम सँग कीजिये पयाना ॥
तब मैं सुनि यह ताकरि बानी । हँसिकै वचन कह्यो सुखमानी ॥

दोहा–तुम सेवा अति मम करी, दोउ जन्मके मोर ॥
भक्त अहौ ताते चलहुँ, संग तजौं नहिं तोर ॥२७॥
विजय मुहूरत अबहिं नृप, गुणि मम वचन प्रमान॥
मुदित निसान बजायकै, वेगिहिं करहु पयान॥२८॥

छंद–वर मानि मोर निदेश, जयसिद्ध नाम नरेश ॥
पितु पितामह ढिग जाय, बहु भाँति शीशनवाय॥१॥
स्वरदाहिनो नृप साधि,चढ़ि चल्यो हय सुख कांधि॥
तेहिं समय पुरजन यूह,जुरि दिय अशीस समूह ॥२॥
जस देश यह गुजरात, तसदेश लह्यो विख्यात ॥
तुव पर देवी मात, रक्षक रहै दिन रात ॥ ३ ॥
तिमि रानि भरि अति चाउ, परि सासु ससुराह पाँउ ॥
कह छोंड़ियो नहिं छोह, नहिं किह्यो कबहूं कोह॥४॥
पुनि रानि युत जयसिद्ध, यश जासु जगत् प्रसिद्ध ॥
मोहिं सहित साधु समाज, संग लै चमू छबि छाज ५॥
किय गवन मग रणधीर, तनु धरे मनु रसबीर ॥
बिच बीच पथ करि वास, पुरगढ़ा कोसहुलास ॥६॥
पहुँच्यो महीश सुजान, लिय भूप तहँ अगवान ॥
निज महल गयो लेवाय, दिय नज़र बहु सुख छाय ७॥
जयसिद्ध पुनि नरराय, सरि नर्मदामें जाय ॥
तिय सहित करि स्नान, धन अमित दीन्ह्यो दान ८॥

तुमहीं राजा अहौ हमारे । निशि दिन सेवन करब तिहारे ॥
भये खुशी केहरीसिंह सुनि । करि नवाबको अति खातिर पुनि ॥
भवन जानकी दई बिदाई । गयो सो बार बार शिरनाई ॥
नृप केहरीसिंह सहुलासा । कछु वासर तहँ कियो निवासा ॥
सरदारनको करि सन्माना । सब चकरनको सहित विधाना ॥
दिय चिट्ठा चाकरी चुकाई । बसे सबै सेवा मनलाई ॥

दोहा--तहां केहरी सिंहके, माल केसरी पूत ॥
होत भयो जाके वदन, वसी सरस्वता पूत ॥३७॥
उभय मल्लको जोर तनु, सुंदर तेज विधान ॥
कछु दिनमें तेहि व्याहकरि दीन्ह्यो दान महान ३८॥

फेरि व्यतीत भये कछुकाला । तनु तजि करि केहरी भुवाला ॥
वास कियो वासवपुर मांही । मालकेसरी सपदि तहांही ॥
विधि युतमृतकक्रिया पितुकेरो । करि दीन्ह्यो तहँ दान घनेरो ॥
मालकेसरी कछु दिन माहीं । उपजायो सुंदर सुत काहीं ॥
सारंग देव नाम तेहि भयऊ । सुयश प्रताप नाम तेहि ठयऊ ॥
भीमलदेव भयो सुत तासू । फैलि रह्यो जगमें यश जासू ॥
हरिगुरुको भो भक्त महाना । पाल्यो परजन प्राण समाना ॥
ब्रह्मदेव ताके सुत जायो । सो निज पितुसों वचन सुनायो ॥

दोहा–आप कीजिये भजन हरि, सुचित भौन करि बास ॥
मोहिं दीजिये फौज सब, करि उर कृपा प्रकाश ॥३९॥

कछु दिन सैर करौं महि माहीं । प्रकटहुँ नाम रावरे काहीं ॥
सुनि नृप भीमलदेव उदारा । ब्रह्मसूनु सों वचन उचारा ॥
मनमें यह विचार किय नीको । करै सुपूती सोइ सुत ठीको ॥
जगमें नहिं कुपूत कहवायो । अस करतूति करन मन लायो ॥
ब्रह्मदेव सुनि ये पितु वैना । करी तयारी भरि अतिचैना ॥
चतुरंगिनी चमू सँग लैकै । कियो पयान वीररस म्वैकै ॥
राज्य गहरवारनके आये । कछु वासर तहँ वसि सुख छाये ॥
पुनि सिधाय शिरनेतन देशू । तहँ विवाह किय ब्रह्म नरेशू ॥

दोहा-कछुक दिवस शिरनेतनृप, सेवा करि युत प्रीति ॥
ब्रह्मदेव सों समय गुणि, कह्यो विनयकी रीति ॥ ४० ॥

यक मम भाई देश हमारे । गनत न हमहिं भये बलवारे ॥
तिनको दंड दीजिये नाथा । तौ हम वसैं राज्य सुख साथा ॥
ब्रह्मदेव यह सुनि तेहिं वानी । कह नर पठैलेंहिं हम जानी ॥
पुनि नृप ब्रह्मदेव रिस छायो । पाती यक ऐसी लिखवायो ॥
ग्यारहसै नेजा सँग लीन्हे । आवत तुब दरशन मन दीन्हे ॥
हैं बघेल हम विदित जहाना । तुम शिरनेत अनुज बलवाना ॥
यह हवाल लिखि पत्री काहीं । दै पठयो यक मनुज तहाँहीं ॥
सो पाती दिय तिन कर जाई । बांचत गयो कोपमें छाई ॥

दोहा-तुरत जवाब लिखायकै, दीन्ह्यो तेहिं कर धारि ॥
आप दरश पावें जो हम, धनि धनि भाग्य हमारि ॥४१॥

सुन्यो न हम बघेलको नामा । निरखि होहिं अब पूरण कामा ॥
पाती असि लिखाय शिरनेता । बांध्यो युद्ध करनको नेता ॥
फौज जोरि आगे कछु जाई । ठाढ़े भये रोष अति छाई ॥
इतते ब्रह्मदेवकी सैना । काल समान गई कछु मैना ॥
भगी फौज शिरनेतन केरी । नृप शिरनेत बन्धु तहँ घेरी ॥
पकरि भूप शिरनेतहिं काहीं । सौंप्यो सो अतिहीं सुख माहीं ॥
ब्रह्मदेवको निज सब देशू । सौंपिदियो शिरनेत नरेशू ॥
तहँ नृप ब्रह्मदेव सहुलासा । करत भये कछु वासर वासा ॥

दोहा-ब्रह्मदेवके होतभयो, तनय सिंह जेहिं नाम
सिंहदेवके पुनि भये, वेणीसिंह ललाम ॥ ४२ ॥
भूपति वेणीसिंहके, नरहरिसिंह सुजान ॥
नरहरि हरिके होतभे, भैददेव मतिवान ॥ ४३ ॥

शिरनेतनके सहित उछाहा । भैददेवको कियो विवाहा ॥
भैददेवको परम प्रतापा । बाढ़यो रिपुन देत अति तापा ॥
भैददेव पुनि पितु ढिग जाई । सादर विनती कियो सुहाई ॥

सँग चलीसैन्य विशाल, सेनप लसे सम काल ॥
सुत सहित सैन समेत, विरसिंह नृप सुख सेत ॥ ९ ॥
नियरान चित्रहिकूट, तब सुन्यो शाह अटूट ॥
निज फौज दियो निदेश, तहँ भै तयारी वेस ॥१०॥
पयस्वनी सरिके पार, विरसिंह भूप उदार ॥
जब गयो हलकारान, किय विनय जोरे पान ॥११॥
सुनु खोदावंद हवाल, बड़ी सैन्य आवति हाल ॥
सुनि बादशाह उमाह, भरिबैठ तखतहिं माह ॥१२॥
विरसिंहदेव भुवाल, गजते उतरि तेहि काल ॥
ढिग शाह चलि अभिराम, बहुभांति कियो सलाम१३
समभानु पुनि विरभान, हयको उघाटि महान ॥
गजमस्त के परजाय, बैठत भयो सुख छाय ॥ १४ ॥
लिखि साह तब हरषाय, तेहि तुरत निकट बोलाय ॥
लिय तखत में बैठाय, बहु विधि सराहि सुभाय॥१५॥
पुनि कह्यो बाँकेवीर, तुम सम न निडर सुधीर ॥
तुम कहँके अहौ नरेश, काहे चल्यो परदेश ॥ १६ ॥

सोरठा—केहि कारण मम देश, लूट्यो सो नहिं नीक किय॥
शाह वचन सुनि वेस, वीरभानु बोलत भयो॥४९॥

हम क्षत्री बघेल हैं रूरे । वासी थल गुजरातहि केरे ॥
आप हमारे हैं सति स्वामी । हम चाकर राउर अनुगामी ॥
निज करतब देखायवे काहीं । आये हम यहि देशहिं माहीं ॥
जो रिपुता करि हमको मार्‌यो । ताको हमहूं सपदि सँहार्‌यो ॥
तुव देशहिको द्रव्य न खायो । निज कोषहिको वित्त उठायो ॥
जो नृप हमको तेज देखायो । ताहि दंडदै फेरि बसायो ॥
सो आपहिकी बदिकारि दीन्ह्यो । वृथाकोप हमपर प्रभु कीन्ह्यो ॥
यह सुनि बादशाह कह वानी । यहि बालक की बुद्धि महानी ॥

दोहा—पुनि कह विरसिंह देवसों, तुव सुत बड़ो निशंक ॥
रणरिपुगण जीतन प्रबल,बीर धीर अतिवंक ॥ ९० ॥

छंदहरिगीतिका—तुव पूत बड़ो सुपूत ह्वैहै वंशतिहरे माहिं॥
नृप द्वादशैको भूप होई अचल भूमिसदाहिं ॥
यह भाषि शाह उछाह भरि बारहोंनृपकी राजि ॥
दियवखशिसादर नानकाराहि कह्यो भाई भ्राजि ॥
गिरि विंध्य बाँधव दुर्गके तुम ईश होहु प्रसिद्ध ॥
नृप सकल महिके करहिं सेवा होयसिद्धि समृद्ध ॥
लिखिदियो विरसिंहदेवको पुनि भूप शाहसमेत ॥
चलि प्राग करि स्नान दिय बहुदान द्विजनसचेत ॥
तहँ भूप बहु सन्मानकरि कीन्ह्योनिमंत्रण शाह ॥
पुनि शाह दिल्लीको गयो प्रागहिं बस्यो नरनाह ॥
विरसिंहदेव विवाह किय सुत वीर भानुहिंकेर ॥
सब जमींदारनको निमंत्रण दियो आये ढेर ॥ ३ ॥
दिय दान द्विजन महानयुत सन्मान मोद अमान ॥
सरसान सकल जहान बिच किय गायकन बहुगान॥
गज बाजि धन मणिमाल बसन विशाल दै सब काह॥
करि मान किय सबकी विदा विरसिंह सहित उछाह॥

दोहा—जमींदार निज निज सदन, जातभये हर्षाय ॥
त्योंहीं याचक गुणीजन,गये अमित धन पाय ॥९१॥

करिकै सविधि क्रिया पितु केरी । विरसिंहदेव द्विजन बहु हेरी ॥
विविध विधान दान बहु दीन्ह्यो । युत सन्मान विदा बहु कीन्ह्यो ॥
कछु वासर करि वास प्रयागा । विरसिंहदेव भूप बड़ भागा ॥
बोलि ज्योतिषिन सुदिन शोधाई । चकरनको चाकरी देवाई ॥
करि खातिरी कह्यो तिनपाहीं । काल्हि सुदिन हमरो सुख माहीं ॥
चलो सबै बांधव गढ़ देखी । सुनत वीर है सयुग विशेखी ॥

कहें नाथ भल कौन सलाहा । हमरे उर महान उत्साहा ॥
पुनि विरसिंहदेव मुद भरिकै । वीरभानु युत मज्जन करिकै ॥

दोहा–वेणीमें बहु दान दै, युत सन्मान द्विजान ॥
लै सँग सैन्य पयान किय, विपुल बजाय निसान ५२॥

कवित्त ।

सोहत सवाव लाख संगमें सवार लोने युग लाख पैदरहु गौने जासु साथमें ॥
वेशुमारगज त्योंहीं सुतर अपार राजे योंहीं कूँच करि भरे आनँदके गाथमें ॥
बिच बिच पंथ वास करि बांधवदुर्ग, पास आय नीचे डेरा कियो धारे अस्त्रहाथमें॥
विरसिंहदेव जाय लषणकी पूजा तहां करि सविधान धाऱ्यो पद जल माथमें॥ १॥

स०–सादर साधुन विप्रनको नृप छिप्र भली विधि बोलिजेवायो
फेरिसबै जमींदारन औ भुमियानको आपने पास बोलायो ॥
ते सब आय सलाम किये दिये भेट कह्यो नृप वैन सोहायो ॥
डेरा करो सब जाय सुखी दियो दण्ड तेहीं जो बोलाये न आयो

दोहा–साँझ समय दरबारको, सादर सबहिं बोलाय ॥
कहरै यत तुम शाहकै, सुनहु सबै चित लाय ॥५३॥

कवित्त ।

शाह यह राज्य हमैं दियो है उछाह भरि प्रथम समीति वैन सबसों बखाने हैं॥
रीति या बघेलवंशकी है क्रोध ठानै नाहिं येतहुँ पै कोई जो न हुकुमको मानै हैं ॥
युद्ध करिबेको जो तयार होत ताको हम बाघही ह्वै क्रुद्ध ह्वैकै आसनको ठानै हैं ॥
ऐसे अवनीशवैन सुनि सुनि शीशनाय कहे हम रावरेके रैयत प्रमाने हैं ॥ १ ॥

सोरठा–ईश्वर आप हमार, हम सेवक हैं रावरे ॥
सुनि गढ़भूप उदार, आयो विरसिंहदेव ढिग॥५४॥

कवित्त ।

तेग धरि आगे विनय कियो अहैं बाल हम आपहैं हमारे पिता पालैं प्रीति ठानिकै॥
सुनि विरसिंहदेव बाहँ गहि पुत्र कहि लीन्ह्यो बैठाय उर महामोद मानिकै ॥
कह्यो पुनि तूतो वीरभानुके समान मेरे कह्यो पुनि सोऊ पाणि जोरि सुख सानिकै॥
महाराज किला चलि बैठैं राज्य आसनमें करों सोई दीजिये निदेश दास जानिकै १

दोहा-सुनत वयन विरसिंह नृप, बोलि ज्योतिषिन काह ॥
सुदिन शोधि गुरु साधु द्विज, आगे करि सउछाह ५५
चल्यो निसान बजायकरि, जायदुर्ग भरि चाय ॥
द्वारपालको देतभो, बहु इनाम बोलवाय ॥ ५६ ॥
पूजा करि सब सुरनकी, अति आदर युत भूप ॥
विप्रन साधुनको कियो, निवता महाअनूप ॥ ५७ ॥

बाजन बाजे विविध प्रकारा। तोपैं छूटतभई अपारा ॥
सुदिन शोधिसिंहासन पाहीं। विरसिंह भूप बैठ सुखमाहीं ॥
ज़मीदार भूमियन बोलाई। बिदा कियो दै तिन्हैं बिदाई ॥
रैयत साहु महाजन जेते। आयभेंट दिय नति करि तेते ॥
शिरोपाउदै तिन सब काहीं। खातिर करि किय विदा तहाँहीं ॥
राज्य करत बहु वर्ष बिताये। वीरभानु सुतयुत अति चाये ॥
नृप विरसिंहदेव यक वासर। कीन्ह्यो मन विचार यह सुखकर ॥
सुतहिं समर्पि राज्य यह सिगरी। भजन करौं चलि नहिं अब विगरी ॥

दोहा-बोलि साधु गुरुके सपदि, सुदिन शोधि नरराय ॥
वीरभानुको शुभ दिवस, दिय गद्दी बैठाय ॥ ५८ ॥

आप भजन करिवेके हेतू। माणिदै रानी-सहित सचेतू ॥
विरसिंहदेव प्रागमें आई। वास कियो तिरवेणि नहाई ॥
दिनप्रति ब्राह्मण साधुन काहीं। भोजन करवावै सुखमाहीं ॥
आनंद मग्न रहै वसुयामा। सुमिरण करत जानकी रामा ॥
वीरभानु बांधवगढ़में इत। पैठि राज्य आसन मन प्रमुदित ॥
राज्य कियो बहु दिवस समाजा। तासु सुवन तुमराज विराजा ॥
करहु निशंक राज्य सब काला। यह सुनि राजाराम निहाला ॥
बहु विधि स्तुति करिकै मेरी। मोसों विनती करी बहुतेरी ॥

दोहा-कह कबीर साहेब गुरू, तुम हमरे कुलकेर ॥
शिष्य कीजिये मोंहि प्रभु, अब न कीजिये देर ॥ ५९ ॥

यह सुनि तब मैं अति हर्षाई । राजारामहिं कह्यो बुझाई ॥
ह्वै है तुम्हरे दशयें वंसा । परमप्रकाशमान यक हंसा ॥
कथिहै सो मुख अनुभव वानी । मोर शब्द गहि है सुखमानी ॥
सोई तुव कुलको अवतंसा । बिजक ग्रंथको करी प्रशंसा ॥
ताको अर्थ अनूपम करि है । मम आश्रमहिं आय सुख भरि है ॥
यह सुनि रामभूप शिरनाई । करि प्रशंसा जनन सुनाई ॥
नंदपुराणिक तहँ सुख भीनी । करी दंडवत वंदना कीनी ॥
राजाराम महलमें जाई । रानीसों सब गयो जनाई ॥

दोहा–रानी सुवचन कुवँरिसों, किय यह विनय ललाम ॥
श्रीगुरुको लै आइये, महाराज निज धाम ॥ ६० ॥
श्रीकबीर गुरुको मुदित, सादर रामभुवाल ॥
लैआये निज भवनमें, करि बहु विनय रसाल ६१ ॥

कवित्त ।

रहै जहाँ आसन तहाँई श्रीकबीरजीको गुफा बनवायो प्रीतियुत राजारामहै ।
साज मँगवाय सब चौका कै कबीर शिष्य राजा अरु रानिहूंको कीन्ह्यो तेहिं ठामहै ।
औरो सब भूपके समीपी भये शिष्य सुखी पूजा जौन चढ्यो तहां अगणित दामहै ।
दियो भंडारा श्रीकबीर बोलि साधुनको जय जयरह्यो पूरि बांधवगढ़ धामहै ॥ १ ॥

दोहा–युगल गाँउ अरुगाँउ प्रति, रुपयाएक चढ़ाइ ॥
दिय कागज लिखवायकै, रामभूप हर्षाय ॥ ६२ ॥
होय जो हमरे वंशमें, भूपति कोउ उदार ॥
लेय न कबहूं शपथ तेहि, अर्पन कियो हमार ॥ ६३ ॥

श्रीकबीरजी ह्वै प्रसन्न अति । त्रिकालज्ञ पुनि कह्यो महामति ॥
औरहु कछु भविष्य मैं भाखों । सो तुम सति निज मन गुणिराखो ॥
दशयें वंश हंसको रूपा । तुमहीं प्रगट होहुगे भूपा ॥
सुवचन कुवँरि रानि तुव जोई । सो परिहार भूप घरहोई ॥
तोसों तासु होयगो व्याहा । हरि पद रति अति करी उछाहा ॥
ताके वीरभद्र सुत तेरो । जन्मिदेयगो मोद घनेरो ॥

सो तेहिते इग्यरहौ वंशा। होइहै नृपनमाहँ अवतंशा॥
बिच बिच और भूप जे ह्वै हैं। ते हरिभक्ति हीन ह्वै जै हैं॥

दोहा-ब्रह्मतेजते तपित अति, ह्वैहै कोउ नरेश॥
तजि यह बांधव दुर्ग को, बसिहै औरे देश॥ ६४॥

ते सब भूपन को जस नामा। शिष्य मोर लिखिहैं अभिरामा॥
दशै वंश तुव अंतहिकाला। संत वेषदै दरश विशाला॥
तोको रामधाम लैजैहौं। आवागमन रहित करिदैहौं॥
अस कहि श्रीकबीर भगवाना। परमधामको कियो: पयाना॥
श्रीकबीरके शिष्य सुजाना। धर्मदास भे विदित जहाना॥
तिनके शिष्य प्रशिष्य घनेरे। लिखे जे औरहुँ भूप बड़ेरे॥
तिनको नाम सुयश परतापा। कहिहौं मैं सुखमानि अमापा॥
कह्यो पूर्व जो संत कबीरा। वीरभानु नृप भो मतिधीरा॥

दोहा-राम भूप सुत तासु भो, इन दूनौं करतूति॥
प्रथम कछुक वर्णन करौं, जग प्रसिद्धमजबूति॥ ६५॥

दिल्ली रह्यो हुमायूं शाहा। मान्यो हुकुम सकल नरनाहा॥
शेरशाह दिल्लीमें आई। दियो हुमायूं शाह भगाई॥
दिल्लीमें करि अमल सुहायो। सदल आपनो अदल चलायो॥
शाह हुमायूं बेगमकाहीं। गर्भवती सुनिकै श्रुतिमाहीं॥
नरहरि महापात्र लिय मांगी। सब भूपन ढिगगे सुख पागी॥
राख्यो नहिं कोउ भूपति ताहीं। आयो वीरभानु ढिग माहीं॥
वीरभानु तेहिं भगिनी भाखी। पाटन शरह देतभयो राखी॥
बेगम सो दिल्लीपति जायो। अकबर शाह नामसो पायो॥

दोहा-आई बाधा नगरमें, शेरसाह की सैन॥
वीरभानु नृपसों कहे, लखि आये जे नैन॥ ६६॥
तहँते नृपति पयान करि, बांधवगढ़गो धाय॥
शेरशाह लिय छेंकि तेहिं, अमित सैन्य लै आय॥ ६७॥

छैंके रह्यो वर्ष सो बारा । खायो बोयो आम अपारा ॥
दुर्ग अटूट मानि सो हारा । लै सब सैना सपदि सिधारा ॥
वीरभानु वरवीर नरेशा । छीनिलियो दल लै निज देशा ॥
लै विलायती दल निज संगा । चलो हुमायूं सहित उमंगा ॥
इत अकबर यक दिवश उचारा । सुनिये बांधवनाह उदारा ॥
भाई रामसिंह सँग माहीं । बैठतहौ नित भोजन काहीं ॥
हमको क्यों बैठावत नाहीं । नृप कह आप खामिंदे आहीं ॥
पूँछिलेहु मातासों जाई । पूंछ्यो सो सब दियो बताई ॥

दोहा-खड्गचर्म लै हाथमें, सुनि अकबर सो हाल ॥
चल्यो कियो तिन संगमें, वीरभानु निज बाल ६८॥
अकबरसों तहँ राम कह, कोस कोस करि बास ॥
चलिये दिल्लीनगरको, जुरै फौज अनयास ॥ ६९ ॥
जुरी चमू चतुरंग संग, अमित तुरंग मतंग ॥
रँगो रामसिंह जंगके, रंग अभंग उमंग ॥ ७० ॥

नातनको लिखवायो पानी । चारों नृप आये मुदमानी ॥
तिन सँग रामसिंह यशवाला । जातभयो भो जंग विशाला ॥
हन्योशेरको तहाँ हुमाऊ । दिल्ली तख्त बैठ युत चाऊ ॥
इतै सुलेमैं राम सँहारी । दिल्लीको द्रुत गयो सिधारी ॥
ताकन तनय हेतु सुखधारी । चढ्यो हुमायूं ऊंचि अटारी ॥
मोद मगनसों गिरिगो नीचै । होत भयो तुरंत वश मींचै ॥
तनय हुमायूं अकबर काहीं । बैठायो तब तख्तहिं माहीं ॥
वीरभानु जब तज्यो शरीरा । रामसिंह नृप भो मतिधीरा ॥

दोहा-दिल्लीको पुनि राम नृप, गये अकब्बर शाह ॥
कीन्ह्यो अति सन्मानसो, अकस मानि नरनाह॥७१॥
औचक मारनको गये, ते नृप रामहिं काहँ ॥
फिरे मानि विस्मय सबै, निरखि चारु चौबाहँ॥७२॥

नापितसेन स्वरूप धरि, हरि जिनके तनु माहिं ॥
तेल लगायो राम सो, कहियेकेहिं नृप काहिं ॥७३॥
वीरभद्र तेहि सुत भयो, वीरभद्र कर संत ॥
आगे वर्णौं औरहू, भये जे नृप मतिमंत ॥ ७४ ॥
वीरभद्र सुतविक्रमा-दित्य भयो अवदात ॥
नामहिंके अनुगुण भयो,जेहिं गुण जग विख्यात ॥७५॥
लीन्ह्यो जायरिझाय जो, निज करतूतिहि माहिं ॥
ब्रह्मके मारे मरिलह्यो, सोन देव पुर काहिं ॥ ७६ ॥
अमरसिंह ताको सुवन, सरिस अमरपति भोज ॥
रीवां रजधानी करी, सींवा यश अरु वोज ॥ ७७ ॥
दिल्लीको गमनत भयो, चुक्यो खर्च मग माहिं ॥
लूटि दौलताबादको, गयो शाह ढिग पाहिं ॥ ७८ ॥
उमरावन चुगुली करी, शाह निकट द्रुत जाय ॥
बादशाह मान्यो नहीं, नृप पै खुशी बनाय ॥ ७९ ॥
अमरसिंह भूपालके, भो अनूपसिंह भूप ॥
भूपर जासु प्रताप यश, छायो परमअनूप ॥ ८० ॥
भावसिंह ताको तनय, भयो भानु सम भास ॥
दाता ज्ञाता वीरवर, ज्ञाता बुद्धि विलास ॥ ८१ ॥
जगन्नाथजी जायकै, मूर्त्ति लाय जगनाथ ॥
थापिव्यासके ग्रंथको, संच्यो भरि सुख गाथ ॥८२॥
राना घरमें व्याहभो, तहँते मूरति दोय ॥
लाये सरस्वति गरुड़की, थापित किय मुदमोय ॥८३॥
विप्रन दान महानदै, कीन्हे बहु सन्मान ॥
तिनके भे अनिरुद्ध सिंह,भूपति परम सुजान ॥ ८४ ॥
ताके भो अवधूतसिंह, जाहिर दान जहान ॥
ताके सुवन अजीतसिंह, दुवन अजीत महान ॥८५॥

जाके गौहरशाह बसि, जायो अकबर शाह ॥
सैन्य साजि जेहिं तख्तमें,बैठावत नरनाह ॥८६॥
जाजमऊलों जायकै, दिल्ली दियो पठाय ॥
अँगरेजहुँ अठवर्नको, दीन्ह्यो जंगभगाय ॥८७॥
तासु तनय जयसिंहभो, जयमें सिंह समान ॥
जाहिर दान कृपानमें, भक्तिवान भगवान ॥८८॥
दशहजार असवार लै, पूनाको हारोल ॥
आवतभो यशवंत तेहिं, हत्यो प्रताप अतोल ॥८९॥
गहरवार करि गर्व बहु, लीन्हे देश दबाय ॥
तिनको मारि भगाय दिय,बचे ते गिरिन लुकाय९०
देश आपने अमल करि, दै विप्रन बहु दान ॥
अंत समय तनु प्राग तजि,हरिपुर कियो पयान॥९१॥
विश्वनाथ नरनाथभो, तासु तनय यशगाथ ॥
रति अनन्य सियनाथपै, भई जासु महिमाथ ॥९२॥
सरि सर घर घर पुर पथन,छयो राम गुणगाथ ॥
कितो परीक्षित कै कियो, कलि कृतयुग विश्वनाथ९३
तासुतनय रघुराज भो, महाराज शिरताज ॥
राजत राज समाज मधि,जाको सुयश दराज ॥९४॥
श्रीकबीरजी कथित यह, है विचित्र नृप वंश ॥
नहिं असत्य मानै कोऊ, जानि संत अवतंश ॥९५॥
सतयुगमें सत नाम रह, अरु मुनींद्र त्रेताहिं ॥
करुणामय द्वापर रह्यो, अब कबीर कलि माहिं ॥९६॥

कवित्त ।

नृपति उदार केते भये अनुसार मति तिनकें अपार गुण यश कियो गानहै ॥
जनम करम भूप रघुराजको अनूप धरमको जूप दिव्य जाहिर जहानहै ॥
देख्यो निज नैन ताते भरो अति चैन उर करतहौं निज वैन सविधि बखानहै ॥
कहै युगलेश अहै झूठको नलेश कहूं मानि है विशेष सांच सोई बड़ो जान है ॥ १॥

छंद–कह्यो कबीर भविष्य राम नृप सुनि सुखराशी ॥
हंसिनि सुवचन कुँवरि रानि तू हंस प्रकाशी ॥
वीरभद्र तुव सुतहु हंस नित हरि ढिग वासी ॥
गुणगंभीर अति वीर धीर यश सुयश विलासी ॥
जब दशै वंश अवतंस नृप, प्रगट होयहै तू अवशि ॥
तब सति परिहरि नरेशकुल,जनमीयहतुबतियहुलसि१

दोहा–तासों तेरो होयगो, सुखप्रद प्रथम विवाह ॥
वीरभद्र यह तेहि उदर, वंश इग्यरहे माह ॥९७॥
जनमि देयगो तुमहि अति,परमप्रमोद विख्यात ॥
तेजवंत क्षिति छाय है यश अनंत अवदात ॥९८॥
समय विजय करसिंहतो, भो जयसिंह भुआल ॥
गंगलियो अगवान जेहि, तनु त्यागनके काल ॥९९॥
प्रगट भयो ताके तनय, हंस जो कह्यो कबीर ॥
विश्वनाथ तेहि नामभो, परमयशी रणधीर ॥१००॥
रघुपति भक्त अनन्य अति, अरु ब्रह्मण्य शरन्य ॥
अग्रगण्य क्षिति नृपनमें, तेग त्याग जेहिं धन्य ॥ १ ॥
तेहि आह्निक गुण तेज यश, औरहु अमित चरित्र॥
मैं विचित्र वर्णन कियो, ग्रंथ सोपरमपवित्र ॥ २ ॥
देखहिं श्रद्धावान जे, होवैं मनुज सुजान ॥
औरहु करहुँ बखान कछु, निजमतिके अनुमान ॥ ३ ॥
रानी सुवचन कुँवरिमै, पुरी उचहरा माहिं ॥
सुता भई शिवराज नृप, व्याहिगई तेहि काहिं ॥ ४ ॥
पढ्यो भागवत ताहिमें, दृढ़भो तेहिं विश्वास ॥
गुण यश अनुपम तासुभे, किय जो कबीर प्रकाश ॥ ५ ॥
विश्वनाथ नरनाथकी, तिय सों अति अभिराम ॥
कुँवरि सुभद्रा नाम जेहिं, सरिस सुभद्रा आम ॥ ६ ॥

छप्पय–वीरभद्र सुत रामभूपको हंस सुहायो ॥
श्रीकबीर आगम निदेश निजग्रन्थहिं गायो ॥
विश्वनाथ तेहिं तीय गर्भ जबते सो आयो ॥
तबते बाँधवदेश धर्म परमानँद छायो ॥
कहुँ रह्यो न अधरम लेश क्षिति विन कलेश पुरजन भयो
कलि वेश छयो कृतयुतधरम सतयुगलेशसो कहि दयो १

दोहा–रींवा घर घर सब प्रजा, सुखभरि करत उचार ॥
विश्वनाथके होय सुत, तौ धनि जन्म हमार ॥ ७ ॥

परमहंस जो ऋषभदेवसम । चतुरदास जेहि नाम शमन भ्रम ॥
फिरतरहे रींवापुरमाहीं । रामभजनमें मग्न सदाहीं ॥
डोलत मग औरही मुखबोलैं । निज हियकोअंतर नहिंखोलैं ॥
वर्षाऋतु धारैं शिरवर्षा । जाड़े जलमें वसैं सहर्षा ॥
ग्रीषम तपत उपलमें सोवैं । प्रेमते हँसैं कहूं क्षण रोवैं ॥
नृप रघुराज सुतासु चरित्रा । भक्तमालमें रच्यो पवित्रा ॥
परमहंस सो सहज सुभाये । सुविश्वनाथ जन्मदिन आये ॥
लगे बजावन मुदित नगारा । कहि मुख हंस लेतु अवतारा ॥

दोहा–यह हवाल जयासह नृप, मनि सुनि त्यों पितु मात ॥
क्षण क्षण अति हरषातभे, हियमें सो न समात ॥८॥
अष्टादशसै असीको, साल सुकातिक मास ॥
कृष्णपक्ष तिथि चौथ शुभ, वासरदानि हुलास॥ ९ ॥

वीरभद्र नृप हंसस्वरूपा । भयो भूप रघुराज अनूपा ॥
कृष्णचंद्रको प्रिय अधिकारी । शर्मद धरा धर्म धुरधारी ॥
नाम भागवतदास दुलारा । करहिं मातु पितु सदा उचारा ॥
बालहिंते भो ज्ञाननिधाना । भक्तिवान पूजक भगवाना ॥
कछुदिनमें जननी मतिवारी । तनु तजि पुरवैकुंठ सिधारी ॥
पिता पितामह निकट सकारे । लैनित जाहिं खेलावन वारे ॥
तिनसों कहि कहि सुंदर बानी । कथै ज्ञान मानहु बड़ ज्ञानी ॥

जगत शरीर अनित्यहि जानो । मरत सो जीव नित्य ध्रुव मानों ॥
अजर अमर तेहि गावत वेदा । वृथा करत तेहि हित नरखेदा ॥

दोहा–सुनि सुनि कहे प्रसन्न मन, ते अति हिय हर्षात ॥
हैं ये पुरुष पुरानकोउ, पाल रूप दर्शात ॥ ११० ॥

कछु दिनमें पुनि जाय प्रयागा । नृप जयासिंह तुरत तनु त्यागा ॥
श्रीविश्वनाथ राज पद पायो । रघुराजहु युवराज कहायो ॥
रहे उर्मिलादास सुसंता । भक्त अनन्द उर्मिलाकंता ॥
चालि चालि तिनके आश्रम माहीं । दर्शन तिनको करै सदाहीं ॥
मंत्र लेनको बड़े उमाहा । विनय कियो तिनसों सउछाहा ॥
प्रभु मोहिं मंत्र कृपाकरि दीजै । मेरो जन्म सफल जगकीजै ॥
नाथ कह्यो तबअति हरषाई । मेरे रूप संत यक आई ॥
देहैं तोहिं मंत्र सहुलासा । ह्वैहै सिगरे जगत् प्रकासा ॥

दोहा–तोहिं देनको मंत्र मोहिं, है नहिं लखन नियोग ॥
मेटिहै तुव भव सोग सोई, ध्रुवलखिहैं सब लोग ११ ॥

छंद–स्वामि मुकुंदाचार्य्य शिष्य यक संत रह्यो अभिरामा ॥
नाम जासु लक्ष्मी प्रपन्न ढिग विश्वनाथ निष्कामा ॥
मंत्र लेनकी इच्छा गुणि मन श्रीरघुराजहि केरो ॥
भाषि गयो भूपतिसों निज गुरु भक्ति प्रभाव घनेरो १ ॥
आश्रम परम मनोहर तिनको ब्रह्मशिला तट गंगा ॥
प्रियादास जे गुरू आपके तिनको रह सतसंगा ॥
भक्ति ग्रंथ पढे तिनके बहु वाल्मीकि रामायन ॥
श्रीभागवत भागवत पूरे पढ़त निरंतर चायन ॥ २ ॥
लायक गुरू विशेष होनेते नरनायक सुत केरे ॥
आयसु होय बोलिलै आऊं ऐहैं विनती मेरे ॥
विश्वनाथ कह आप सरिस शिष जिनके जगत सोहाहीं
जो कहिसकै महामहिमा तिन कोहै अस महि माहीं ॥
श्रीरा।ना जमानसिंह जासों लियो मंत्र उपदेशू ॥

ऐसे शिष्य आप जिनकेहैं तेतो संत विशेशू ॥
जौलौं स्वामिहिं इतै न लावो तालौं मम सुतकाहीं॥
भक्तिभेद तुमहीं दरशावो करी सुकृपा उरमाहीं ॥४॥
पुनि सुत श्रीरघुराज नामको एक बाग लगवायो ॥
लक्ष्मण बाग सुनाम तासुको युत अनुराग धरायो ॥
अति उतंग आयत विचित्र हरि मंदिर यक अभिरामा॥
निरखत मद मुद दाम जननको बनवायो तेहिं ठामा५॥
श्रीरघुराज सुदिवस माहँ पुनि उर उछाह अति धारी॥
थापित किय सिय राम लषणकी मूरति तहँ मनहारी॥
औरहु अमित देवको प्रमुदित सादर तहँ बैठायो ॥
दान महान द्विजन दै संतन करि सतकार सोहायो ६॥
विश्वनाथ पितु पद शिरधरि पुनि विनयकियोकर जोरी
पूरणभो प्रसाद यह तिहरे अब यह इच्छा मोरी ॥
पठइय प्रभु लक्ष्मी प्रपन्नको ब्रह्मशिलामें जाई ॥ ७ ॥
बोलिलै आवैं सपदि स्वामिको लेहुं मंत्र हरषाई ॥
वैन सुनत सुतकें सचैन ह्वै विश्वनाथ नरनाथा ॥
कह लक्ष्मी प्रपन्नसों, सादर जोरे दोऊ हाथा ॥
ब्रह्मशिला सुरसरि समीप जहँ स्वामि मुकुंदाचारी ॥
वास करत तुम जाय आशु तहँ लावहु तिन्हैं सुखारी ८॥

दोहा–महाराज विश्वनाथके, सुनत वयन सुख पाय ॥
द्रुत लक्ष्मीपरपन्न तब, ब्रह्मशिलागो धाय ॥ १२ ॥

प्रभु ढिग चलि करि दंड प्रणामा । कुशल पूँछि पायो सुखधामा ॥
विनय कियो पुनि दोउ कर जोरी । पुरवहु नाथ कामना मोरी ॥
बांधवेश विश्वनाथ नरेशा । रीवाँ रजधानी जेहिं वेशा ॥
राम अनन्य भक्त जगवीनो । राम परत्व ग्रंथ बहु कीनो ॥
प्रियादास भे संत महाना । तासु शिष्य सो विदित जहाना ॥

भक्ति ग्रंथ ते बहुत बनाये । ते सब आप वदन निज गाये ॥
सो विशुनाथ तनय मतिवाना । है रघुराजसिंह जग जाना ॥
आप सों मंत्र लेनके हेतू । कीन्हे प्रण मन कृपानिकेतू ॥

दोहा-ताहि समाश्रय कीजिये, चलि रीवामें नाथ ॥
प्रभु कह मैं नहिं जाहुँ कहुँ, तजि तट सुरसरि पाथ॥१३॥

यह थल जो विहाय उत जैहौं । तौ अब परममोद नहिं पैहौं ॥
किय पुनि विनय सेव बहु ठानी । नाथ कह्यो पुनि सोई वानी ॥
सुनि लक्ष्मीप्रसन्न पुनि बोल्यो । निज अंतरको अंतर खोल्यो ॥
जो प्रभु रींवानगर न जै हैं । तौ सति मोहिं जिवत नहिं पै हैं ॥
सुनिहँसिकै कह दीनदयाला । जो अस तेरो अहै हवाला ॥
तौ अब आसु सुदिवस विचारी । तहां जानकी करैं तयारी ॥
सुनि लक्ष्मी प्रपन्न हरषाई । गणक बोलि द्रुत सुदिन शोधाई ॥
सादर प्रभुसों वचन बखाना । सुदिन आजु भल करियपयाना ॥

दोहा-सुनत बयन प्रिय शिष्य बहु, ले संग संत अपार ॥
रीवांको गमनत भये, प्रभु हरि प्रेम अगार ॥ १४ ॥

म्यानामें प्रभु मध्य सोहाहीं । संत अनंत लसैं चहुँ घाहीं ॥
रामकृष्ण हरिमुख उच्चारत । चहूं ओरसों सोरपसारत ॥
जात जहां जहँ प्रभु पुर ग्रामा । होतं तहां तहँ शुचिजन ग्रामा ॥
यहि विधि आय स्वामि सुख छाकी । रीवां रह्यो कोस त्रय बांकी ॥
सुनि सुत युत नृप आगू लीन्ह्यो । हरिसम बहु सत्कारहि कीन्ह्यो ॥
पुनि रींवहिं लायो युत रागा । वास देवायो लछिमन बागा ॥
मंदिर निरखि मुकुंद। नारी । कह्यो रच्यो भल मंदिर भारी ॥
कछु वासर करिकै सुख वासा । पुनि मख ठान्यो कृपानिवासा ॥

दोहा-रंभ खम्भ गड़वाय कारि, हरिमनु द्विजनजपाय ॥
सुदिन सोधाय सचाय प्रभु, अति उतसव सरसाय॥१५॥

विश्वनाथ नरनाथ समेतू । बोलि कुँवर रघुराज सचेतू ॥
नारायण मनु किय उपदेशा । हर्‍यो सकल कलिकलुष कलेशा ॥
भई समाश्रय तासु तिया सब । पूरि रह्यो पुर पर प्रमोद तब ॥

तीरथ चित्रकूट जे नाना। तहां पठै कारि द्रव्य महाना॥
सविधि कियो साधुन सत्कारा। ते सब जय जय किये अपारा॥
लियो मन्त्र जबते युत प्रीती। तबते चलन लग्यो यह रीती॥

दोहा–पाठ गजेंद्रहि मोक्ष अरु, मूल रमायण ख्यात॥
कारि नारायण कवचको, पाठ उठैं परभात॥ १६॥

पण्डित जे नव कृष्ण निबेरे। बसनहार कलकत्ता केरे॥
तिनहिं लाटसों कहि बोलवायो। विश्वनाथ नरनाथ सोहायो॥
सौंपिदियो निज सुत रघुराजै। विद्या सुखद पढ़ावन काजै॥
तिनसों श्रीरघुराज सुजाना। अङ्गरेजी पढ़ि बहु सुख माना॥
मुग्धबोध व्याकरण विशाला। पुनि पढ़ि लियो थोरहो काला॥
फेरि अयोध्यावासि महन्ता। जग जाहिर रामानुज सन्ता॥
सौंप्यो तिन्हैं पढ़ावन हेतू। नृप विश्वनाथ धर्मको सेतू॥
तिनसों वाल्मीकि रामायन। श्रीरघुराज पढ़्यो अति चायन॥

दोहा–सवालाख श्लोक जेहिं, महाभारत विख्यात॥
विन श्रम ताको पढ़ि लियो, कहि सबसों हरषात॥१७॥

कारि मज्जन विधियुत श्रीकन्ता। पूजन ठानि रोज सुखवन्ता॥
वाल्मीकि रामायण सादर। श्रीभागवत सुनावत सुखकर॥
वाल्मीकि भागवत विशोका। प्रति अध्याय जिते श्लोका॥
जेहिं आगे श्लोक जो होई। पूंछे बुधहि बतावत सोई॥
महाभारतमें जे इतिहासा। ते पुस्तक विन करत प्रकासा॥
अस सब भांति अलौकिक करणी। श्रीरघुराज केरि कवि वरणी॥
गति जो कविता रचन नवीनी। बालहिंते विरंचि तेहिं दीनी॥
संस्कृत और भाषहू केरी। कविता बहु विधि रची घनेरी॥

दोहा–विनयमालको प्रथम रचि, रुक्मिणि परिणय फेरि॥
पितुहिं सुनायो ते भये, अति प्रसन्न मुख हेरि॥ १८॥
चित्रकूट गमनत भये, एक समय रघुराज॥
रच्यो तहां सुंदर शतक, हनुमतचरित दराज॥ १९॥

जो कोउ वांचत पत्रिका, देखि पिठौता तासु ॥
वांचि आशु सबसों कहत, सुनि सब लहत हुलासु १२०
लिखन शक्ति लखिनाथकी, विदित लिखारी जोउ ॥
दीखन नृप अस चखन कहि, सिखन चहतहै सोउ२१॥
कहूं चढ़ैती तुरंगकी, दरशावत सबकाहिं ॥
कहूं मतंग सवारह्वै, सुरपति सरिस सोहाहिं ॥ २२ ॥
कहूं दुनाली धनुष लै, गोली तीर चलाय ॥
हनै निसाना रोपिकै, तुरतहि देहिं गिराय ॥ २३ ॥
कहूं तेगको घालिकै, करहिं टूक चौरंग ॥
सुनि लखि पितु विश्वनाथ नृप,होत मनहिं मन दंग २४॥
कहुँ वन जाय अहेरको, मारिशेर वनजीव ॥
देखरावहिं निज तातको, होहिं ते खुशी अतीव ॥२५॥
बहु वनराजनको हन्यो, वनहिं सिंह रघुराज ॥
ते दराज विस्तर भयहि, वरण्यो नहीं समाज ॥२६॥

कवित्त ।

एक समय राना श्रीजमानसिंह हिंद भान गया करिवेको कीन्ह्यो देश या पयानहै ॥
जाय विश्वनाथ चित्रकूट मुलाकात करि रींवहि लेवायलाये करि सन्मानहै ॥
भाई लछिमनसिंह कन्या तिन्हैं व्याहि दीन्ह्यो चीन्ह्यो विश्वनाथै भलोभक्तभगवानहै
तासु सुत रघुराज तिलक चढ़ायआसु जातभे हुलास भारि उदैपुर थानहै ॥ १ ॥

दोहा–कछु दिन माहि जमानसिंह, गे वैकुंठ सिधारि ॥
रानाभो सरदारसिंह, तेंउगे स्वर्ग पधारि ॥२७॥
भूपति भयो स्वरूपसिंह, तेग त्याग समरथ्य ॥
राज काजमें निपुण अति,चल्यो सुनीति सुपथ्य ॥२८॥
निज भगिनिनिके व्याह हित,करि सँदेह मनमाह॥
श्रीरघुराज सलाह करि, चलि ढिग पितु नरनाह॥२९॥
महापात्र अजवेशको, खतलिखाय यहि भांति ॥
पठयो वेगि उदयपुरै, नृप सुत अति मुदमाति १३०॥

आपसयान सुजान सुठि, को करिसकै बखान ॥
जहँकीजै अनुमान तहँ, हमहिं प्रमाण न आन ॥३१॥
विश्वनाथ नरनाथ अरु, युवराजहु रघुराज ॥
वरनिदेशअजवेश लहि, सुकविनको शिरताज ॥३२॥
स०—चैन भरो चल्यो ऐनते वेगि गयो अजवेश उदैपुरमाहीं॥
राना स्वरूप अनूप जो भूप सुन्यो श्रुति आयो इते तेहिं काहीं॥
सादर बोलि सुप्रेमते क्षेमको पूँछि कह्यो ढिग बैठो इहांहीं ॥
बैठि स्वनाथको पत्रसो हाथ दियो लिय माथते धारि तहांहीं
दोहा—श्रीस्वरूप राना सुघर, सुनि हवाल खत केर ॥
कह्यो सुकवि अजवेश सों,लहि प्रमोद उर ढेर ॥३३॥
लिख्यो जो सुता व्याहके हेतू । सो हम अवशि बांधि हैं नेतू ॥
पै राना जमानसिंह रूरे । गया करनगे जब सुख पूरे ॥
तब रींवा गवने सउछाहा । तिनको तहां होत भो व्याहा ॥
राजकुँवर रघुराज सुहायो । ताको तहँ ते तिलक चढ़ायो ॥
वीतिगये बहु दिवस सुजाना । इतको ते नहिं कियो पयाना ॥
सो अब ऐसी करहु उपाई । जाते इहौ वहौ सधिजाई ॥
महापात्र आपहु लिखि पाती । पठवहु द्रुत आवहिं जोहिं भाती ॥
हमहु लिखावतहैं खत आसू । आवहिं राजकुँवर सहुलासू ॥
दोहा—काज होय रघुराज इत, हमरहु कारज होय ॥
जहँ को संमत देहिंगे, तहँको करबै सोय ॥३४॥
महापात्र सुनि भल कहि दीन्ह्यो । नाथ विचार भलो यह कीन्ह्यो ॥
अस कहि वेगि सुकवि अजवेशा । पत्र लिखतभो इतको वेशा ॥
रानहु इतको खत लिखवायो । बोलि प्रठायो सो इत आयो ॥
खत सुनि विश्वनाथ नरनाथा । सुतसों कह्यो मानि सुख गाथा ॥
रानाको यह खत सुनिलेहू । लियो सो करहु वेगि युत नेहू ॥
तब रघुराजहु खत सुनि सोई । कहत भयो पितुसों मुद मोई ॥
यह हवाल मैं सब सुनि लीन्ह्यो । मोहिं बोलावनको लिखि दीन्ह्यो ॥
सो जस प्रभु मोहिं देहिं रजाई । सोइ करों सोइ नीक जनाई ॥

दोहा—विश्वनाथ नरनाथ तब, कह्यो भरे उत्साह ॥
जाहु उदयपुर व्याह हित, मेरो इहै सलाह ॥ ३५ ॥
बोलि ज्योतिषिन तुरत पुनि, गमनन सुदिन बनाय ॥
कह्यो सुवनसों यह भली, साइत दियो बताय ॥ ३६ ॥

सुनि रघुराज कह्यो हर्षाई। दीजै सब तदबीर कराई ॥
कौन देवान जान सँग योगू। ताकहँ दीजै नाथ नियोगू ॥
कौन कौन सरदार सुजाना। मेरे सँगमें करहिं पयाना ॥
नाथ कृपा करि सादर सोई। देहिंबताय सिद्धि सब होई ॥
भाष्यो महाराज सुख पाई। सभा सदनको सपदि सुनाई ॥
वीर धीर अरु होय उदारा। राज काजमें चतुर अपारा ॥
धर्मवान पूजक भगवाना। द्विज साधुनमें प्रीति महाना ॥
स्वामिहि मानै प्राण समाना। ये लक्षणहैं विदित देवाना ॥

दोहा—ते लक्षणयुत सांच अब, दीनबंधु तुव पास ॥
लेहुसाथ तिनको अवशि, तिनते सकल सुपास ॥ ३७ ॥
हैं सरदार सुजान सब, सावधान तुव सेव ॥
तिनको सबको लेहु सँग, जे जानत रणभेव ॥ ३८ ॥

सुनि रघुराज जनकके बैना। दीनबंधु कहँ बोलि सचैना ॥
पुनि सरदारन निकट बोलाई। चतुरंगिणी चमू सजवाई ॥
सैनप दीनबंधुको करिकै। व्याह पोशाक किये सुखभरिकै ॥
बाजिरहे चहुँ ओर नगारा। वंदीजन वर विरद उचारा ॥
लहि रघुराज प्रमोद अपारा। भयो उतंग मतंग सवारा ॥
औरहु सखा वृद्ध सरदारा। चढ़ि चढ़ि हय गय रथनमँझारा ॥
हरि गुरु गणपति हनुमतकाहीं। सुमिरि सुमिरि सब निज मनमाहीं ॥
गहि गहि अस्त्र शस्त्र निजहाथा। गमनत भये सबै यक साथा ॥

दोहा—जे मगमें भूपति परे, तिनसों लहि सतकार ॥
निकट उदयपुर जब गये, राना सुन्यो उदार ॥ ३९ ॥

कवित्त ।

करिकै पेसवाई महाराना श्री स्वरूपसिंह उदैपुर आनि मुदै उरकै दराजको ॥
सकल सुपास जहाँ दीन्ह्यो जनवास तहाँ कीन्ह्यो सन्मान दे हुलास त्यों समाजको ॥
लखि लखि नारी नयन नृपति किशोर सारी मैन वस भई छोंडी ऐन काज लाजको ॥
कहैं ठाम ठाम कैधौं काम सुखधामधाम काम त्यागि जो हैं जन ग्राम रघुराजको १ ॥
लगन विचारि कह्यो जादिन गणक गण तादिन पधारयो रघुराज द्वारमाह है ॥
देखिकै वरात शोभा पुरजनवातलोभा रानहुको भा अथाह भारी उतसाह है ॥
व्याह भयो छोनीमें उछाह छायो महा तहाँ याचक उमाह भरो यांचिभो अचाहहै ॥
राह राह कहत न ऐसो नर नाह कहूं सुन्यो सांच शाहनको करन पनाहहै ॥

दोहा-रहस बहस युत होत भो, पुनि उदार जेवनार ॥
सरदारन युत फेरि भो, दरबारहुँ दरबार ॥ १४० ॥

कवित्त ।

जेते ऐंडदार राजा राजत पछाह माहँ शाहन सों अकस जे कीनीहै बनायकै ॥
कलम विनाही लिखें हिम्मति न रही काहू महाराना सुता जो विवाहै सुख छायकै ॥
महाराज विश्वनाथ सुत रघुराज सिंह अचरज कीनी करतूति तेज छायकै ॥
सुनि सुनि ते वैन नरराय पछितायमहा हाथ मींजिरहे शरमाय शीशनाइकै ॥

दोहा-शिव यकलिंग प्रसिद्ध तहँ, तिनके दर्शन हेत ॥
जातभयो रघुराज पुनि, मंत्री सैन्य समेत ॥ ४१ ॥
हय गय अरु मुद्रा सहस, सादर तिनहिं चढ़ाय ॥
दर्शन लीन्ह्यो सरस उर, सरस हरस सरसाय ॥ ४२ ॥
महाराज विश्वनाथ सुत, श्रीरघुराज उदार ॥
फेरि नाथजी दरशहित, गयें साथ सरदार ॥ ४३ ॥
साजि वाजि गज वसन वर, मोहर शत सुख साथ ॥
माथनाय अर्पण कियो, पद पाथज श्रीनाथ ॥ ४४ ॥

घनाक्षरी।

सन्मुख बैठि छवि निरखन लागे चख अंग अंग केरी उर हरष बढ़ायकै ॥
ताही समै नाथजीको हाथ लै पुजारी ऐना लग्यो दरशावै मोद गाथ हिये पाइकै॥
ग्रीवानाय हरि तब बदन लखन लागे लखि रघुराजसिंह अचरज छायकै ॥
रण दवनसिंह सों कह्यो या तू देखी कला भाष्यो तिन होहूं लख्यो नैन टक लायकै १॥

दोहा-कृपानाथजी आपके, ऊपर करी महान ॥
सुनत पुजारीहूं कह्यो, यहां प्रगट भगवान ॥ ४५ ॥
राम सागराह्निक अहै, विश्वनाथ कृत जौन ॥
बखतावर गायक लगे, गावन तिन ढिग तौन ॥ ४६ ॥
गावत सन्मुख निरखिकै, तहां पुजारी कोय ॥
आयकह्यो अस बैठिबो, रानहुको नहिं होय ॥ ४७ ॥

कवित्त।

दीन्ह्यो सो उठाय बखतावर विचारि यह हरिसर्वत्रअहै और ठौर जायकै ॥
प्रेम पूर पागे लागे गावै राग सागरको प्रभु को रिझाय लियो सुरनको छायकै ॥
उघरे कपाट सबै आपही सो ताही समै टेरिकै पुजारी कह्यो बाहेरहि आयकै ॥
नाथको निदेश अहै लेहू वह गायकको इतही बोलाय बैठि गावै हरषाइकै ॥

दोहा-कह पुजारि तुम्हरे उपर, रीझेहैं ब्रजराज ॥
सुनि बखतार कह्यो सति, यह प्रभाव रघुराज॥ ४८ ॥

सहितचमू चतुरंगिनि भाई। पुनि रघुराज शिविर निजआई ॥
कछु वासर किय सुख युत वासा। राना मान्यो परम हुलासा ॥
सीखदेन अवसर जब आयो। तब राना निज निकट बोलायो ॥
श्रीरघुराज समाज समेतू। गमनत भयो तहां मति सेतू ॥
लै आगू राना चलि धामै। बैठायो गद्दी अभिरामै ॥
कीन्ह्यो सकल भांति सत्कारा। दीन्ह्यो हय गय वसन अपारा ॥
भूषण बहु पुनि दिये अमोले। ज्योतिमान मणि मोतिन नोले ॥
विश्वनाथ नरनाथ कुमारा। राना सो पुनि वचन उचारा ॥

दोहा-आप सुजान सयान हैं, मेरे पिता समान ॥
दीजै संमत तासु प्रभु, जो मैं करौं बखान ॥ ४९ ॥

स. द्वै भगिनी मम व्याहन योग्य जहां तिन व्याहन योग्य उचारी ॥
होय विवाह तहां तिनको ध्रुव जानत आप सबै बड़वारी ॥
राना स्वरूप सराहि कह्यो सुनिहै हमहूंको खँभार या भारी ॥
सो सम्बध कियो हम ठीक हियो महँ जयपुर नाह विचारी ॥ १ ॥

घनाक्षरी ।

नाम जाहि रामसिंह रूप अभिराम जाको तिलक चढ़ायो जोधपुर नाह सुता व्याह ॥
पठवै वकील हमौ ढील नहीं ह्वैहै काज आपहूको रीवां जात जयपुर परैगो राह ॥
महाराज विश्वनाथसिंहको कुमार रघुराज सिंह बोल्यो सुनि भलो या कियो सलाह ॥
सहित उछाह कृपा करिकै अथाह अब दीजै सीख काह यहीहै उमाह मनमाह ॥ १ ॥

दोहा—सुनि राना सुख पायकै, सुंदर दिवस शोधाय ॥
सीख दियो रघुराज को, दै बहु धन समुदाय ॥ १९० ॥
भूप स्वरूप अनूप सुनि, निज भगिनी हर्षाय ॥
विदा कियो धन अमित दै, शिबिका रुचिर चढ़ाय ९१ ॥
संग रहे सरदार जे, औ जे बंधु अपार ॥
यथा उचित सब फौजको, कीन्ह्यो अति सत्कार ॥ ९२ ॥

महाराज विश्वनाथ किशोरा । अति प्रसन्न युत चमू अथोरा ॥
विजय मुहूरतमें सुख छाई । हरि गुरु गणपति पद शिरनाई ॥
सैन्य सहित द्रुत कियो पयाना । बाजे बहु गहगहे निसाना ॥
चलत चलत जैपुर नियरान्यो । महाराज जयपुरको जान्यो ॥
कोश भरेते लै अगुवाई । डेरा दिय देवाय पुर लाई ॥
सैन्य समेत शिबिर पुनि आये । रामसिंह भूपति सुख छाये ॥
श्रीरघुराज उदार अपारा । विविध भांति कीन्ह्यो सत्कारा ॥
सो लहि जयपुरको नरनाहा । लह्यो ससैन्य प्रम उतसाहा ॥

दोहा—फौज साजि पुनि मौज भरि, युत समाज रघुराज ॥
जयपुरके महाराजपै, गमन्यो प्रभा दराज ॥ ९३ ॥

निरखि निरखि जयपुर नर नारी। पावतभे उर आनँद भारी॥
कछु दूरीते जयपुर राजा। आगू लै आवत रघुराजा॥
महल जाय गद्दी बैठायो। आपहुँ बैठि परमसुख पायो॥
विविध भाँति सत्कारहि कीन्ह्यो। पाय सो येऊ अति सुख भीन्यो॥
सैन्य सहित पुनि शिबिर सिधाई। बात होन संबंध चलाई॥
ठहरिगयो सो विनहिं प्रयासा। गुन्यो कृपा यह रमा निवासा॥
रसम व्याह पूरब जो होई। सो दै करि सादर मुदमोई॥
वृन्दावन तीरथ करिवेको। बढ़ी लालसा वसु दीवेको॥

दोहा-सादर सब सरदारसों, अरु देवानहु पाहिं॥
कहहिं सफल होतो जनम, लखि वृंदावन काहिं॥ ९४॥

सुदिन शोधाय ज्योतिषिन तेरे। श्रीरघुराज मोद लहि ढेरे॥
श्रीहरि गुरु पदपंकज सौंरी। सैन्य सहित वृन्दावन ओरी॥
कीन्ह्यो होत प्रभात पयाना। बजे फौजमें अमित निसाना॥
बीच बीच वीथिन करि वासा। पहुँचत भये जबै व्रज पासा॥
सादर करिकै दंड प्रणामा। जातभये तुलसीवन ठामा॥
वृन्दावन मधुपुर दर्शना। नंदगाँव जो विदित जहाना॥
मुख्य चारि तीरथ ये करिकै। दर्शन करि साधुन मुद भरिकै॥
पुनि चौरासी कोशहु केरी। किय प्रदक्षिणा लहि मुद ढेरी॥

दोहा-हरिमंदिर जेते रहे, दर्शन किय पद जाय॥
हय गय वसन अमोल अरु, मोहर अमित चढ़ाय ९५
राधा राधारमणकी, मूरति पुनि पधराय॥
रागभोग हित गाँव यक, दीन्ह्यो तहां चढ़ाय॥ ९६॥

पुनि विश्रांतघाटमें जाई। सुवरण तुला चढ्यो सुख छाई॥
सो सुवरण व्रजमंडलं वासी। जेते रहे विप्र सुखरासी॥
तिनको दै कीन्ह्यो अति तोषू। ते माने सब भांति सँतोषू॥
तिमि याचक जे रहे घनेरे। तिन्हैं हेम बहु दिये निवेरे॥
नारी रोंकि रोंकि मंगमाहीं। कहि कहि लला लेहिं गहि बाहीं॥
तिनको मनवांछित धन दीन्हे। शीशनाय बहु मानहि कीन्हे॥

देश देशके याचक आये । भये प्रसन्न हेम बहु पाये ॥
व्रजमंडलमें नर औ नारी । सब थल ऐसो परयो निहारी ॥

दोहा–लहि लहि अमित हिरण्यको, भाषहिं ते कहि धन्य ॥
यह नवीन परजन्य नृप, बरस्यो व्रजहिं हिरन्य ॥९७॥

कवित्त ।

दीन्हे हैं द्विजान पंडितान हेम महादान रघुराजसिंह वृन्दा कानन मँझारी है ।
सुयश महान शीत भानुसों प्रकाशमान सुकवि प्रधानमें वखान जासु भारी है ।
मानिन अमानद अमानिनको मानदान ज्ञानिन प्रदान ज्ञान दीन त्राणकारी है ।
दान सनमानमें जहानमें न आन ऐसो भानुवंशमें निशान ज्ञान ध्यान धारी है ॥ १ ॥

दोहा–"सुदिवश व्रजते कूच करि, चलि मगमें दरकूच ॥
रीवांनगर पहूंचिगो, संयुत सैन्य समूच" ॥

सोरठा–उधहि वंध यक चित्र, जामें यही चरित्र सब ॥
सो रचि चात विचित्र, लिखे देत चरचैं सुकवि ॥ १ ॥

पारसीके बैतका अर्थ–तन् सरा कहे तन उसके तईं पैरहन जो कपरा सो भी उरियाँ कहे नंगा नहीं देखताहै तातें जो कपरै उसके अंगको नहीं देखताहै तो और कोई उसके अंगको नहीं देखताहै यह कहा कहिबेको यह काव्यार्थापत्ति अलंकार व्यंजित भयो कपरौ उसके अंगको कैसे नहीं देखताहै बुर्जा दर-तन् कहे जैसे जान जो है जीव सो बीचनके है व तन दरकहे तनके बीच रहिहू कै जान जो है जीव सो नहीं देखाता है यह उपमालंकारतें स्वकीया नायिका व्यंजित भई ॥

अंगरेजीके दोहाका अर्थ–दी कहे प्रसिद्ध अमनि प्रीजंट कहे सर्वव्यापी जो है गाड कहे ईश्वर ताकी अन कहे पृथ्वी अर्थ कहे ताके ऊपर आई कहे हम प्रे कहे प्रार्थना करे हैं न्यारो कहे सूक्ष्म माई कहे हमार है हरट कहे चित्त ताके अन कहे ऊपर डीवाइन कहे दिव्य मर्थ कहें आनंद वृं कहे ल्यावने को अर्थात् जामें दिव्य आनंद जो है ब्रह्मानंद सो मेरे चित्तमें होय याके लिये मैं प्रार्थना करौहौं इहां सर्वव्यापी ईश्वरको कह्यो ताते मैं ईश्वरहीके भरोसे सर्वदा रहौंहौं यह मेरे मनकी जानतई होयँगे यह व्यंजित कियो ॥

दोहा–कछु दिनमें आवत भयो, जयपुरको नरनाह ॥
शाहन करन पनाहभे, भूपति जेहिं कुलमाह ॥ ५८ ॥
भगिनि उभय रह जानकी, कृष्ण कुवँरि जिन नाम ॥
व्याहि विदा कीन्ह्यो तिन्हैं, दै बहु धन अभिराम ॥५९॥
पुनि बीते कछु काल श्री, विश्वनाथ नरपाल ॥
है वश काल निवास किय, पास अवधपति लाल १६० ॥

श्रीरघुराज तनय तेहि केरो । हरिइच्छा गुणि बिन अवसेरो ॥
मानि राज्य सब यदुपति केरी । कामदार सों कह्यो निवेरी ॥
राजाराम राज्यके एकू । तिनकी कृपा न भय मोहिं नेकू ॥
स्वामि धर्मरत जन हितकारी । करिहैं कबहूँ न काम विगारी ॥
सुदिन अबै न राज अभिषेकू । कह्यो ज्योतिषी सहित विबेकू ॥
ताते मो मन भावत येहू । करो यज्ञ संमत करिदेहू ॥
सुनि दिवान कह बहुत सराही । प्रभु भल कह्यो ऐसहीं चाही ॥
तब रघुराज परम सुख पाई । आशु बनारस मनुज पठाई ।

दोहा–विप्र वेद वित छिप्र बहु, रीवां नगर बोलाय ॥
सुदिन शोधाय सचाय गो, लछिमनबाग सिधाय ६१ ॥

तहँ किय कठिन कायको नेमा । पगो परम यदुपति पद प्रेमा ॥
मज्जन करि गायत्री जापा । प्रथम करै नितहरै जो पापा ॥
पुनि षोडश प्रकार भरि चायन । पूजन करै रमा नारायन ॥
पुनि नारायण अष्टाक्षर मनु । बीसहज़ार जपैं निश्चल मनु ॥
यही भांति विप्रनहुँ जपावै । रहै यकांत अनत नहिं जावै ॥
पुरश्चरण सौ दिन करि यहि विधि । कृष्ण कृपा पात्रता लही सिधि ॥
कह्यो स्वप्नमें आय मुरारी । राज्य करै है मम अधिकारी ॥
लहत मनहिं मन परमहुलासा । कोहुसों कबहुँ न कियो प्रकाशा ॥

दोहा–जप अष्टाक्षर मंत्रको, बीस हजारहिं केर ॥
जौलौं रहै शरीर जग, किय संकल्प करेर ॥ ६२ ॥

रमा द्वारकाधीशकी, त्यों बलकी करि सूर्ति ॥
हेम रजत रचवायकै, परम मनोहर मूर्ति ॥ ६३ ॥
वेद विहित करवायकै, आसु प्रतिष्ठा वेश ॥
बांधवेश विश्वनाथ सुत, पूजन करत हमेश ॥ ६४ ॥
करन लगै जप जेहिं समय, तब भारि मोद अनंत ॥
भजन सुनै भजनीनसों, निर्मित निज बहु संत॥ ६५ ॥
सुदिन राज्य अभिषेक को, आयो जब मुदवान ॥
सब तदवीर महान भै, वेद विधान प्रमान ॥ ६६ ॥

श्रीरघुराज जाय मखशाला । वसु मंत्रिनते सहित उताला ॥
रघुपति यदुपति मूरति काहीं । थिति कै हेमसिंहासन माहीं ॥
महाराज अभिषेक कराई । अभिषेकित भो आप सोहाई ॥
श्रीकृष्णहिके कृपापात्र कर । अधिकारी भो विदित अवनिपर ॥
कर परताप छयो परतापा । सज्जन सुखप्रद सुयश अमापा ॥
पितु सम पालत प्रजन समीती । नीति रीति करि मेटि अनीती ॥
सुनि सुनि शाहहु जाहि सराह्यो । आय अजंट लाट भल चाह्यो ॥
राज्य करत बीत्यो कछु काला । दर्शन हित जगदीश कृपाला ॥

दोहा–करि लालसा विशाल लै, संग चमू चतुरंग ॥
रानिन युत जगपति पुरी, गमन्यो सहित उमंग ॥ ६७ ॥

बीच बीच वीथिन करि वासा । श्रीरघुराज राज सहुलासा ॥
शतक संस्कृत यक जगदीशा । विरच्यो मैं निज आँखिन दीसा ॥
भाषा शतक कवितमें दूजो । विरचन लग्यो सो उमग पूजो ॥
पर्यो अमर कंटक मग माहीं । गमनत भयो नाथ तहँकाहीं ॥
मेकल गिरिते कढ़ि तहँ प्रगटी । शिव प्रिय रेवा सरि अघ निघटी ॥
तहँ मज्जन करि दै बहु दाना । रेवा अष्टक रच्यो सुजाना ॥
शिवअष्टक पुनि रच्यो तहांहीं । सिंहवलोकन छंदहिं माहीं ॥
रहें जे संत विप्र तहँ वासी । तिनको देत भयो धन राशी ॥

दोहा-सहित सैन्य चतुरंगिणी, तहँते करि सु पयान ॥
सेवरी नारायण निकट, जातभयो मतिमान ॥ ६८ ॥

सेवरीनारायण करि दर्शन । किय सहस्र मुद्रा कहँ अर्पन ॥
तहँते प्रभु पयान करि आसू । पहुँच्यो साक्षिगोपालहि पासू ॥
मुद्रा सहस गयंद सुहायो । दर्शन लैकै तिन्हैं चढ़ायो ॥
दै सबको तिमि द्रव्य महाना । सादर चढ़वायो भगवाना ॥
पंडा गाड़िन लादि प्रसादा । लाय दिये लै युत अहलादा ॥
महाराज सबको विरताई । खायो स्वाद अपूर्व सुनाई ॥
श्रीरघुराज परमसुख भीनो । तहँते पुनि पयान द्रुत कीनो ॥
जगन्नाथ मंदिरके ऊपर । नीलचक्रपरश्यो जब अघहर ॥

सोरठा-करि दंडवत प्रमाण, कीन्ह्यो पुरी प्रवेश प्रभु ॥
डेरा किय गुरुधाम, रानिन सहित हुलास भरि ॥

दोहा-तहँते गमनतभो तुरत, दर्शन हित जगदीश ॥
अरुण खम्भ ढिग द्वारमें, जात भयो अवनीश ॥ ६९ ॥
रकबा चारयो दिशि बन्यो, मंदिर मध्य उतंग ॥
लसत दुर्ग सो उदधि तट, तकत करत अघ भंग ॥ १७० ॥
प्रथम अकेले आपहीं, युत भाइन सरदार ॥
सादर भीतर द्वारके, जाय नरेश उदार ॥ ७१ ॥

घनाक्षरी ।

जगपति मंदिरके चारों ओर देवनके मंदिर सुखद तिन दरशकै सुखकारि ॥
सहित समाज परदक्षिणकै चारि फेरि मंदिर सिधारि शिरनाय खम्भ पन्नगारि ॥
जाय कछु निकट सुभद्रा बलभद्र युत सछवि मुरारि वार वार नैन सों निहारि ॥
वारि मन प्रथम सँभारि तनु सुधि फेरि पलक नेवारि हेरि रहे धन वारि वारि ॥

स० आजुभयो सफलो मम जन्म गुन्यो यह जन्ममें पुण्य बढ़ायो
जानि लियो कियो पूरव जन्महुँ पुण्य महान विशेषि सुहायो ॥

सत्य कहै रघुराज हौं आज अनेकन जन्मके पाप नशायो ॥
जो बलभद्र सुभद्रा सुदर्शन औ जगनाथको दर्शन पायो ॥
लोचन सामुहे होत जबै तब देखनकी नहिं चाह सिराती ॥
आनँद बाढ़ै जितो उरमें मिति तासु न मोसों कछू कहि जाती ॥
को रघुराज बखानि सकै जगदीशकी शोभा त्रिलोक विजाती ॥
ज्यों ज्यों समीप ह्वै हेरै त्यों त्यों क्षणहीं क्षणमें सरसै दरशाती ३

घनाक्षरी ।

कन्चनको छत्र उभय चौर विजनादि नोल भूषण वसन त्या अमोल मोतिमालको ॥
मोहर अमित मुद्रा द्वै गयन्द त्यों तुरङ्ग प्रभुहिं समर्पि पायो परम निहालको ॥
भूप रघुराज त्योंहि दैकै सबहीको वसु नजर देवायो तहां देवकीको लालको ॥
पंडा आ पुरीके भये परमसुखारी पाय पाय धन भारी गाये सुयश विशालको ॥

सोरठा–कहत मनहिं मन नाथ, सो मैं करौं प्रकाश अब ॥
को समान जगनाथ, है कृपालु यहि जगतमें ॥ १ ॥
विविर जाय सुख पाय, पायो महाप्रसादपुनि ॥
तहँके तीर्थ निकाय, जाय जाय सादर कियो ॥ २ ॥
रानिहु सब सुखपाय, त्योंहीं नजर निकाइकै ॥
जगपति दरश सोहाय, करि मान्यो सफलै जनम ॥ ३ ॥

दोहा–बेखटका अटका अमित, चटकै दियो चढ़ाय ॥
मटका मटका लै गये, कोऊ सटका खाय ॥ ७२ ॥

महाराज रघुराज उदारा । अरुणखम्भ ढिग पुनि पगु धारा ॥
देश देशके जन बहु आई । जुरे पुरीके जन समुदाई ॥
पेखि अनूप भूपकी शोभा । सबहीको बरबस मन लोभा ॥
तहँ नृप नायक परम सुजाना । हेम तुला चढ़ि वेद विधाना ॥
सुवरण वृष्टि करी मन भाई । मानौ मघा मेघ झरिलाई ॥
रह्यो न पुरी कोउ द्विज बाकी । जो न सुवर्ण लहै सुख छाकी ॥
रानिहुँ त्यों सिगरी तहँ आई । रजत तुला चढ़ि चढ़ि सुख छाई ॥

दोहा--भये अयाचक पुरी के, रहे जे याचक वृंद ॥
पाय पाय सुवरण रजत,गाय सुयश मुदकंद॥ ७३ ॥

घनाक्षरी ।

शतक बनायो जाय आपहि सुनायो सुनि जगदीश बलहु सुभद्रा मोद भीने हैं ॥
शिरते सुमनमाल तुरत खसाय रीझि अभिराम सादर इनाम करिदीन्हें हैं ॥
कहै युगलेश वेश दौरि बांधवेश तब सम्भृत कलेशहारी धन्य मानि लीन्है हैं ॥
महाराज रघुराज भक्तिको प्रभावपुरी प्रगट देखानो जानो भक्तराज वीनेहैं ॥

दोहा-लखि प्रभाव तेहि ठाँव यह, कहैं लोग भरिचाय ॥
भक्ति भाव रघुरावसति,कस न द्रवैं यदुराय ॥७४॥

श्रीरघुराज मोद भो जेतो । यक मुख सों कहिसकत न तेतो ॥
माने सब जन अरु सरदारा । पूर्व पुण्य कछु कियो अपारा ॥
जाते वश अस नृप ढिग माहीं । हरि प्रभाव निरखे चख माहीं ॥
परदेशी अरु पुरी निवासी । अरु जे रहे भूप सँग वासी ॥
चढचो रोज नृप अटकाजोई । ताते सबको भोजन होई ॥
एक गावँ जगदीश चढ़ायो । पन्डा पाय परमसुख पायो ॥
पुरी सवाउ मास किय वासा । सबको सब विधि देत हुलासा ॥
युत समाज हरिमन्दिर जाई । लिय त्रिकाल दर्शन नृपराई ॥

दोहा-अर्द्धरात्रि नित जाय नृप, त्योंहीं दर्शन लेय ॥
पाय सुमहाप्रसादको, सबको सादर देय ॥ ७५ ॥
फागुनकी पूर्णिमाको, फूलडोल गोपाल ॥
झूलत निरखि निहाल ह्वै, को न तज्यो जगजाल॥७६॥

छंद-शुभदिवस तहँते गौन करिकै गया तीरथको गयो॥
करि श्राद्ध वेद विधान सो बहु दान विप्रनको दयो ॥
द्विज पाय धन समुदाय वांछित करत भये बखानहैं॥
जस गया कीन्ह्यो बांधवेश न नरेश कीन्ह्यो आनहैं ॥
तहँ सुन्यो नौकरहूंनके गे बिगरि कारन पायके ॥

अगरेजके सब देश लूटे हनेगो रण धायके ॥
ढिग वेगि बहु बागीन काहँ नरेश आसु मँगायकै ॥
यक्कमें चढ़ायो द्वारकेसहि वेश प्रीति बढ़ायकै ॥
पुनि नाथ साहित समाज ह्वै असवार बहुबागीनमें ॥
चलिदियो परम निशंक परम प्रवीन परम प्रवीनमें ॥
मिरजापुरै ढिग भूप आयो आय बागी वै तवै ॥
बहु विनय कीनी आप करहिं सहाय तो सुधरै सबै ॥
तब नाथ ऐसो कह्यो तिनसों हाथ यह यदुनाथहै ॥
सब भांति मोहिं भरोस जाको जो अनाथन नाथहै ॥
सुनि गये ते सब महाराजहुँ आय रींवापुर बसे ॥
यक्क रच्यो नगर गोविंदगढ़ तहँ जायकै कबहूं लसे ॥
अँगरेजके बागी तिलंगा बागि सिगरे देशको ॥
वश कियो कोहु नरेशको रहे डरत कोहुँ नरेशको॥
मैहर विजय राघवहुके गे विगरि तिनके दावते ॥
मग रोंकि गोरनको हने बहु जोर जुलुम जमावते ॥
तब आय बहु अँगरेज रींवा नगर कियो निवासहै ॥
महाराज श्रीरघुराज तिनको कियो परम सुपासहै ॥
डर मानि रींवा नगर को नहिं आय बागी कोउ सकै॥
मतिवंत अति श्रीवंत गुणि सब संत नृपको सुखछकै
अंगरेज लखि वर तेज भाष्यो वोधवेश नरेशसों ॥
लै खर्च हमसों राखि लीजै और सैना वेशसों ॥
मैहर विजय राघवहुके बागी उपद्रव करत हैं ॥
चलि मारि तिन्हैं निकारि दीजै दुरग लीजै हम कहैं॥
सुनि भूप तैसहि कियो सैनप दीनबंधु दिवानकै ॥
लिय घेरि मैहर प्रथम तोप लगाय आसु पयानकै ॥
भगि गये तहँके यूह योगी वेगि कारि तहँ थानहैं ॥

पुनि विजयराघव घेरि लीन्हो संग सैन्य महानहैं ॥
तेउ भये बांगा करत भै करी थान तहँऊ करि लियो ॥
महराज श्रीरघुराज सुख भरि सौंपि अंगरेजहि दियो ॥
यह कृपा गुणि यदुराजकी रघुराज परम उदारहै ॥
निज राजधानी आय कछु दिन वस्योसुखित अपारहै ॥

दोहा–रींवा ते जे कढ़ि गये, बहु सरदार सुखारि ॥
वागी भे रण रारि कर, तिन मिसि नृपहुँ विचारि ॥७७॥
कोपित ह्वै जरनैल बहु, लै सँग सैन्य अपार ॥
चढ़ि आयो रींवानगर, गोरा कइक हजार ॥७८॥
हुकुम दियो महराजको, करि दुष्टता विचार ॥
देखन हेतु कवाइदै, आवै आजु हमार ॥७९॥

सुनत कह्यो रघुराज उदारा । देखन चलिहैं कछु न खँभारा ॥
हमरे सति सहाय यदुराई । का करिहैं अरि सैन्य महाई ॥
तब रीवांके लोग सुजाना । रह्यो जो और देवान पुराना ॥
वरज्यो विनती करि बहु भांती । उचित न जाब प्रबल आराती ॥
तहँ यक दीनबंधु जेहिं नामा । रह्यो दिवान वीर मतिधामा ॥
कहत भयो सो प्रण करि भारी । चलिये आप न कछू विचारी ॥
क्षत्री ह्वै जो समर सकानो । कुलकलंक तेहिं पावर जानो ॥
यह रिपु करिहै कहा हमारो । करिहै रोष जायगो मारो ॥

दोहा–दीनबंधु दीवानके, वचन सुनत नरनाथ ॥
जात भयो रणसाज सजि, लिये सैन्य बहु साथ ॥१८०॥

भूप संग बहु सैन्य करेरी । सो जरनैल नयन निज हेरी ॥
भय अति मानि देखाय कवाइत । गमन्यो हारि मानिकै निजचित ॥
महाराज रघुराज सचैनै । कृपा कृष्ण गुणि आयो ऐनै ॥
सुधि करि दीनबंधुकी वानी । ह्वै प्रसन्न बहु विधि सनमानी ॥
दीन्ह्यो गाँव अनेक इनामा । गुणि मतिवान दिवान ललामा ॥

सुखयुत बीतिगये कछु काला । लाट हूनपति जौन विशाला ॥
लै बहु सैन्य कानपुर आयो । सब राजनको खत लिखवायो ॥
आवहिं इतै भेटके हेतू । सुनि सुनि सब नृप गये सचेतू ॥

दोहा-महाराज रघुराजको, लिखत भयो खत सोइ ॥
मुलाकात मम करनको, आवै इत मुद मोइ ॥ ८१ ।

तहाँ चलन नृप कियो तयारी । बरजे तबहुँ इतै नर नारी ॥
दीनबंधु तबहूं मतिवाना । कह्यो पैज करि वचन प्रमाना ॥
चलिये भूप संदेह न कीजै । विना चलेहीं भय गुणि लीजै ॥
सत्य विचारि वचन तिनकेरे । काहूके दिशि तनक न हेरे ॥
लै कछु सैन्य चैन भरि भूरी । चल्यो कानपुर यद्यपि दूरी ॥
मगमें बहु जन किये निवारण । लाटबोलाये है कछु कारण ॥
गुणि हरि उर भरोस नृप भारी । काहू ओर न नेकु निहारी ॥
दीनबंधुके मग ज्वर भयऊ । सो न मानि कछु नृप सँग गयऊ ॥

दोहा-जाय सैन्य युत कानपुर, डेरा सुरसरि तीर ॥
करत भयो सुनि हूँनपति, भयो मुदित मतिधीर ॥८२।

दगी मुकामी फेरि सलामी । बँधी पंचदश जौन मुदामी ॥
पैदर अरु असवारन काहीं । दिय नृप अरुण पोशाक तहांहीं ॥
फूलसिरी अरुणै गज भासी । सूही साज वाजिगण गासी ॥
सरिस वसंत सैन्य सुठि सोही । लखि लाखि भूपहु गे मन मोही ॥
लाट लखनऊ ह्वै जब आयो । मुलाकात हित नृपहि बोलायो ॥
मुख्य अमात्य जौन अभिरामा । दीनबंधु है जाको नामा ॥
श्रीरघुराज ताहि लै संगै । गये सैन्य युत भेट उमंगै ॥
यक साहेब लैकै अगवाई । साहर भूपहि गयो लेवाई ॥

दोहा--शिविर हूँनपतिके निकट, पहुँचे जब रघुराज ॥
पाय लाट साहेब खबरि, आगू लै महाराज ॥ ८३ ॥

करि सलाम दोउ परस्पर, पूंछतभे कुशलात ॥
कहे कुशल सब भांति दोउ, बार बार हरषात ॥८४॥

वाम हाथ गहि दहिने हाथै । गयो लेवाय लाट सुख साथै ॥
तख्त उपर द्वै कंचन कुरसी । धरवायो जु हूँनपति हुलसी ॥
तामें अपने दहिने ओरै । नृप बैठाय बैठ सुख बोरै ॥
नीचे तख्त सैकरन कुरसी । धरवावतभो साहेब विलसी ॥
तिनमें काशी चरकहरीके । रहे जे और भूप अवनीके ॥
औरहु ज़मींदार सरदारन । बोलि पठायो आये तेहिं छन ॥
तिनको तुरत तहां बोलवाई । दै ताजीम सबै सुखदाई ॥
क्रम क्रमते दीन्ह्यो बैठाई । बैठे ते सब शीश नवाई ॥

दोहा--मंत्री मुख सरदार जेहिं, दियो अजंट लिखाय ॥
नृप सँग चलि तेहिं क्रमहिते, कुरसी बैठे जाय॥८५॥
निकट हूँनपतिके जबै, भई सभा यहि भांति ॥
अति प्रसन्न रघुराज पै, भयो लाट मुदमाति ॥८६॥

तेहि पितु किस्ती जे लगि आई । तिनते अधिक तीनि लगवाई ॥
भूषण बसन विचित्र अमोले । तिनमें धरि धरि दियो अतोले ॥
पूर्व सलामी पंद्रह जोई । लाट हुकुम दिय दशवसु होई ॥
साजु नवीन भांति बहु साजी । दीन्ह्यो यक गयंद वियवाजी ॥
परगन दिय सोहागपुर नामा । होत लाख मुद्रा जेहिं ठामा ॥
जानि भूपको मुख्य सचिव चित । कियो पराक्रम गुनि हमरे हित ॥
दीनबंधु पै है प्रसन्न अति । खिलत तोपयुत दियो हूँनपति ॥
पद दीवान बहादुर केरो । दियो लाट करि मान घनेरो ॥

दोहा—पुनि नृप सँग सरदार जे, गये तासु दरबार ॥
यथा उचित तिन सबनको, दीन्ह्यो लिखित अपार ८७
क्रमते पुनि सब नृपनको, दीन्ह्यौ खिलत सराहि ॥
ते शिर धरि धरि लेत भे, है मन परम उछाहि ॥८८॥

पुनि रघुराज भूप मतिवाना । मुदित लाटसों वचन बखाना ॥
हम अस जहँ तहँ सुन्यो हवाला । लेन हेतु सबको करवाला ॥
आवत लाटसो हम पहिलेहीं । सौहीं देहिं आप लैलेहीं ॥
सुनि सौहीं लै लाट उवाही । देखि भली विधि कह्यो सराही ॥
यह सौहीं केहिं देशहि केरी । कह नृप अहै फिरंग करेरी ॥
सुनत हूँनपति मन मुसक्याई । सौहीं दै वाणी यह गाई ॥
तुव हथियारहि केवल तेरे । सदा रहैं हम बिन अवसेरे ॥
पुनि भूपति रघुराज उदारा । करि सलाम डेरै पगु धारा ॥

दोहा–सब भूपहुं पुनि नाय शिर, गमने शिविर मझार ॥
इतै हूँनपति सैन्ययुत, है करि सपदि तयार ॥ ८९ ॥
महाराज रघुराजके, आये शिविर सिधारि ॥
होत भयो जेहिं विधि सदा, तेहिते अधिक विचारि १९०
करत भये सत्कार नृप, भो खुशलाट अपार ॥
वर्ण्यो इत संक्षेपते, भीति ग्रंथ विस्तार ॥९१॥
महाराज रघुराज पुनि, कूच तहाँ ते कीन ॥
सैन्य सहित रीवां नगर, आय सबै सुख दीन ॥ ९२ ॥
लाड़ अठारहको दियो, लाट विशेष निदेश ॥
दगै सलामि हमेश सो, आवत जात नरेश ॥ ९३ ॥
कछु दिनमें अरजंट पुनि, चलि सोहागपुर काहिं ॥
भू ाहि अमल कराय दिय, सुयश छाय जगमाहिं ॥ ९४ ॥

सवैया–एक समय पगमें व्रणभो न अधीर भयो भई पीर महाई॥
जाप करैं मनु बीस हजार करैं तिमि राजको काज सदाई ॥
हारि गये सब देश विदेशके वैद्य हकीम मिटी न मिटाई ॥
दूरि व्यथा भै जबै रघुराज दियो शतकै रचि शम्भु सुनाई ॥

दोहा–औषध किय प्रह्लाद द्विज, तासु अयोध्या सून ॥
पायो मुद्रा शतसहस, गावँ उभय नहिं ऊन ॥९५॥

ज्वर विकारते यक समय, नृप किय विपुल उपास ॥
तज्यो न तबहूँ जप करब, पूजन रमानिवास॥९६॥
बालहिते कविता मन लायो । चित्रकूट अष्टकहि बनायो ॥
ग्रंथ रच्यो रघुनंद बिलासा । हनुमत शतक कियो सहुलासा ॥
लीन्ह्यो मंत्र केर उपदेशू । तब जे ग्रंथ रच्योहै वेशू ॥
तिनको अब मैं देत सुनाई । विनयमाल दिय प्रथम बनाई ॥
रुक्मिणि परि पय विरच्यो ग्रंथा । जामें विदित काव्यकी पंथा ॥
व्यासदेव जो रच्यो पुराना । श्रीभागवत प्रसिद्ध जहाना ॥
भाषा विरच्यो भूप उदारा । अहै बयालिस जौन हज़ारा ॥
पुनि जगदीश शतक किय भाषा । जामें कवित बिचित्र सुराषा ॥
दोहा-रच्यो संस्कृत ग्रंथ विय, एक शतक जगदीश ॥
कियो सुधर्म विलास यक, श्रीरघुराज महीश ॥९७॥
तिलक बनायो तासु बुध, रंगाचारी वेश ॥
भजन कवित औरहु अमित, सादर रच्यो नरेश ९८॥
सोरठा-कानन जात शिकार, खेलत मारत शेरको ॥
और जे जीव अपार, तिनहिं बचावत करि दया॥१॥
कवित्तघनाक्षरी ।
फेरत न आनन जो ऐसे उच्च वारनपै ह्वैकरि सवार जाय नेर वेर वेरहै ॥
ढेर सरदार पै न सकत उठायकोऊ ऐसो लै रफल्ल घालि करै बाघ जेरहै ॥
कहैं युगलेश गेर गेर कहूँ टेर टेर ह्वांई ठहराय जहां हौंकत करेरहै ॥
हेर हेर मारै लगे देर नहीं दौरिमेर भूप रघुराजसिंह शेरन पै शेरहै ॥ १ ॥
सोरठा-चलि पहाड़ महराज, बागि बागि जेहिं बारिमें ॥
हने जिते मृगराज, ते गोकुल बुध पहँ लिखे ॥ १ ॥
दोहा-महाराज रघुराजको, औरहु चारु चरित्र ॥
युगलदास वर्णन करत, जेहि यश छयो विचित्र ॥९९॥
शाह विलायतको दियो, सुक्का यक पठवाय ॥
लाट वजीर हमारसो, तकमा देहै आय ॥२००॥

माधौगढ़गे यक समय, तहँते आगू लाय ॥
सुनि हवाल भे अति खुशी, सभा मध्य बँचवाय ॥ १ ॥
खत लिखि पठयो लाट पुनि, जहाँ आप मन होय ॥
चलि लीजै तकमा तहाँ, बड़ी बड़ाई जोय ॥ २ ॥
नृप लिखि पठयो काशिको, सोउ लिख्यो है वेश ॥
बांधवेश वर सैन्य युत, गो महेशपुर देश ॥ ३ ॥
मुलाकात दरबार जन, भयो कानपुर माहिं ॥
तस भो काशी लाट दिय, कह्यो सो तकमा काहिं ॥ ४ ॥

छंद–भूषण सितारैहिंदको दीन्ह्यो किताबी एकहै ॥
सुबहादुरी भूषण दियो यक जटित रतन अनेकहै ॥
अति ह्वै प्रसन्न सुशाहजादी दियो रतनहारहै ॥
सो दियो नृप रघुराजको वरहूंनपति करि प्यारहै ॥ ५ ॥
किय कूच फेरि परेटते रघुराज भूप उदारहै ॥
जन यूह भये प्रसन्न अति लखि सैन्य तासु अपारहै ॥
चलि असी सुरसरि संगमें तट वास करि सुखछायकै ॥
मणिकार्णिका अरु गंगमें सउमंग जाय नहायकै ॥ २ ॥
यक गाउँ औ गो सहस भूषण वसन नोल अमोलहै ॥
उपरोहितै दिय दान करि सन्मान प्रीति अतोलहै ॥
पुनि दरश किय विश्वेशको दिय गावँएक चढ़ाइहै ॥
अरु सहस मुद्रा वसन भूषण अर्पणै किय चाइहै ॥ ३ ॥
अन्नपूरणा अरु बिंदुमाधव जाय निकट गोपालहै ॥
पद पंचशत शत अर्पि मुद्रा लियो दरश विशालहै ॥
पुनि कालभैरव ढुंढिपाणिहि और सिगरे देवको ॥
शत शत सु मुद्रा अर्पिकै दरशन लियो करि सेवको ॥
पुनि पंचगंगा आदि जेते घाट रहे महानहै ॥
करिमज्जनै तिनमें कियो जो दान करो बखानहै ॥
गज तुरंग गोशत वसन भूषण अन्नकी बहु राशिहै ॥
लहि विप्र काशि निवासि सब दिय आशिषैसहुलासिहै ॥

दोहा–महाराज रघुराज पुनि, दारु तुला मँगवाय ॥
यक पलरामें देतभे, सुवरण मनन धराय ॥ ५ ॥

ढाल कृपाण पाणि निज लैकै। निज भूषण वसनहुँ ढिग धैकै ॥
यक पलरामें सहित उछाहा। बैठ्यो बांधवेश नरनाहा ॥
सुवरण पलरा नीच लख्यो जब। दिय नरेश सुनि देश आशु तब ॥
अपनो गरू रफल्ल मँगाई। निज समीपही लियो धराई ॥
तबहुँ सो पलरा नीच लखाना। तबहुँ नृपति अस वचन बखाना ॥
द्वै थैली ये मोहरन केरी। उलदि देहु न करहु अब देरी ॥
कामदार ते सुनि सहुलासा। उलदि दियो मोहर अनयासा ॥
सुवरण पलरा महि लगि गयऊ। पलरा ऊँच भूपको भयऊ ॥
तुला चढ़े अस लखि नृपकाहीं। किये प्रशंसा लोग तहांहीं ॥
उतरि तुलाते नृप हरषाई। दशहजार मुद्रा मँगवाई ॥
दीनबन्धु दीवानहु भपा। यक पलरा बैठाय अनूपा ॥
यक पलराते रुपयन रूरे। दियो धराय मोद सों पूरे ॥

दोहा–भयो न ऐसो नृपति कोउ, कामदारको जोइ ॥
तुला चढ़ावै रजतमें, चढ़े हेममें सोइ ॥ ६ ॥
बढ़्यो शोर सुनि जननको, तहाँ भूप शिरमोर ॥
कह्यो करै नहिं शोर कोउ, कहो वचन यह मोर ॥ ७ ॥
पाँडे नंदकिशोर कह, सो सुनि भरि मुद थोक ॥
बंद न हल्ला होत यह, छयो तीनिहूंलोक ॥ ८ ॥

राज राज पुनि श्रीरघुराजा। मानि मोद उरमाहिं दराजा ॥
निज नामाहिं सुश्लोक बनाई। सो द्वै सहस आशु छपवाई ॥
प्रथम पंडितनको विरताई। भोर कमक्षा सपदि सिधाई ॥
काशिराजको तहां मकाना। अति आयत रह विदित जहाना ॥
तहँ मज्जन करि पूजन नीके। बोलि सहस द्वै विप्रन जीके ॥
द्वै द्वै मोहर दिय सबकाहीं। विविध भांति सन्मानि तहांहीं ॥

ते सब सुयश भूपको गावत । निज निज गृह गवने सुख छावत ॥
फेरि आपने शिबिर सिधारी । महाराज रघुराज सुखारी ॥
रहे जे बाकी औरहु पंडित । सकल शास्त्रमें अतिही मंडित ॥
सादर तिनको निकट बोलाई । करि सन्मान सभा बैठाई ॥
दुइ दुइ मोहर और दुशाले । देतभयो युत प्रीति विशाले ॥
त्यउ सब गावत सुयश भुआला । दै अशीश गृह गये उताला ॥

दोहा—कहत परस्पर बात यह, जात पंथ हरषात ॥
सभा न किय अवदात असि, कोउ नृप व्रात विख्यात॥९॥
रहे घाटिया विप्रजे, काशी कइक हजार ॥
सुवरण तनु तिनके किये, सुवरण वितरि अपार॥२१०॥
हाट हाट हाटक विपुल, भयो बनारस सस्त ॥
रस्तन रस्तन बागते, पंडित मोहर मस्त ॥ ११ ॥
रहे जे संत महंत तहँ, संन्यासी विख्यात ॥
सादर तिनको दरश लिय, दे धन बहु सहुलास ॥१२॥
देहरी बीस हजारहैं, काशी विप्रन केरि ॥
नृप तिनके सत्कार हित, नीके मनहिं निबेरि ॥१३॥
पांडे नंदकिशोर सिंह, ईश्वरजीत बघेल ॥
तिमि शाहिजादहुँ सिंहसों, कह्यो धर्मको वेल ॥१४॥
हम अब रींवहिं जातहैं, रुपया बीसहजार ॥
लै देहरी सब द्विजन दै, अइयो निजहिं अगार ॥१५॥
अस कहि भूपति भोरही, तहँते तुरत पधारि ॥
निज पुरको आवतभयो, करि दरकूँच सुखारि ॥ १६ ॥
उत तीनों जन काशि बसि, विप्रन सहित विवेक॥
दीन्ह्यो गनि देहरीनको, फरक पर्‍यो नहिं नेक ॥ १७ ॥

कवित्त ।

राना राठि उरहाडा बडे कछवाह राजा आय आय कीन्ही सभा दैकै धन राशी है॥
दक्षिणके सूबा जे करोरिनके राज्यवारे आय तेऊ सभाकै सुकीरति प्रकाशी है ॥

सुवरण वृष्टि पै न कीनी कोऊ आजु तक जैसे करे वारि वृष्टि भादौं मेघ खासी है॥
भूप विश्वनाथको अनूप तनय रघुराज जैसी जातरूप वृष्टि कीनी पुरी काशी है १
घर घर वाट वाट गंगाजूके घाट घाट हाट हाट भाटहीं सों भाषैं जन राशी है॥
पंडित अखंडित की कीनीसभा मंडित ना ऐसी कोऊ भूपति उदंडित विकाशी है॥
कहैं युगलेश रहि गयो ना कलेशलेश याचक अशेषको विदेश देश वासी है ॥
हम तुला भासी महाराज रघुराज यशी खासी कीर्ति अतुला प्रकाशी पुरी काशी है२
भूपर घनेरे एक एकते बडेरे भूप भये हैं अनूप पै न ऐसी कोउ कीनी है ॥
जैसी करी महाराज विश्वनाथ तनय यह महाराज रघुराज मोद उर भीनी है ॥
काशीपुरी असी गंग संगम निकट तट चढ़िकै हिरण्य तुला पुण्यकै अक्षीनी है॥
कहे युगलेश देश देशके नरेशनकी जाईवो महेशपुरी राह रोकि दीनीहै ॥ ३ ॥
केते भूमिपाल भये भारी राज्यवारे भूमि केतको दिवान बड़े दानी सत्यसिन्धहैं ॥
आय आय काशीपुरी लाय लाय द्रव्य भूरी दैकै विप्र वृन्दनको पोष्यो पंगु अंधुहै॥
पै न ऐसो भयो जौन हेम रौप्य तुला चढ़ि दान अतुलाकै छावै सुयश सुगन्धुहै ॥
राजा रघुराज राजै की तो या जमाने मध्य की देवान ताको श्रीदिवान दीनबंधुहै४॥

कुंडलिया—सुवरण वृष्टि करी उतै, काशी नृप रघुराज ॥
तेहि प्रभाव तिहिं देशघन बरसे वारिदराज ॥
वरसे वारिदराज सकलमें भयो सुभिक्षै ॥
रह्यो न लेश कलेशवेश मिटिगो दुर्भिक्ष ॥
भिक्षै माँगत रहे रंक जे घर घर कुवरन ॥
तेऊ पाय अनाज भूरि ह्वैगे तनु सुवरन ॥ १ ॥

दोहा—महाराज रघुराजको, दृढ़ विश्वास य [illegible]
तेहि प्रभाव सुखसाज सज, सुकर दराजहु काज ॥१८॥

कवित्त ।

जोधपुर महाराज राज्यहै दराज जाहि राज काज ऐशही में बीत दिनरैन है ॥
साहिबी सुरेशसी धनेश ऐसी मौज समै तेजमें दिनेश वेश विलसति सैनैहै॥
मैनकीसी मूरति मनोहर तखतसिंह बखत बुलन्द निरखत करै चनैहै ॥
जाके उर ऐने युगलेशकहूं लेस भैन देखे बनै नैन वैन कहत बनैनहै ॥ १ ॥

दोहा–राना नृप कछवाह अरु, हाडा भूप विहाय ॥
जेती लसत पछाहमें, भूपन की समुदाय ॥ १९ ॥
तिनके भेजि कटारजो, करत आपनो व्याह ॥
ऐसो प्रथित पछाहँमें, जोधपुरी नरनाह ॥ २२० ॥
पुरुषनते संबंध गुणि, तख्तसिंह नरनाह ॥
रींवा करन विवाह को, कीन्ह्यो परम उछाह ॥ २२१ ॥

रानिन सुतन समेत भुवाला । निजपुरते किय गमन उताला ॥
जेठो कुँवर तासु रह जोई । चतुरङ्गिणी फौजलै सोई ॥
आवत भयो आगरे जबहीं । मिल्यो नृपति जयपुरको तबहीं ॥
ताकी तासु मित्रता भारी । तासों ऐसी गिरा उचारी ॥
जेहिं कन्याको तिलक चढ़ौ तुव । सो ह्वैगई कालके वश ध्रुव ॥
जो रघुराजसुता अब अहई । सो तुव भयऊ नृप घर रहई ॥
तासों तुव नहिं उचित विवाहा । रीवां जान न करहु उछाहा ॥
हमरे सँग जयपुर पगु धारो । सुनि सो कह यह भलो उचारो ॥

दोहा–ह्वै सवार बग्घी तुरत, जयपुरको नरनाह ॥
ताको संग चढ़ाय कै, लैगो जयपुरकाह ॥ २२ ॥
महाराज रघुराजकी, जेठि सुता वश काल ॥
होत भई तबइताहिंते, सुमति दिवान उताल ॥ २३ ॥

लिख्यो जोधपुरको यह पाती । जहँ अजवेशर है विख्याती ॥
जासु तिलक जेठेको चढ़ेऊ । सो नृपकी दुहिता जिय कढ़ेऊ ॥
ताते यह नृपसुता जो अहई । तासु व्याह जेठको चहई ॥
तामें पक्काइत कारिलीन्यो । तब तुम इतै पयानहिं कीन्ह्यो ॥
यह पाती ळहि कवि अजवेशा । सो पक्काइन करि लियवेशा ॥
नृप दिवान कहँ पत्र पठायो । हम यह पक्काइत करि भायो ॥
सों आगरे सुरति विसरायो । जेठ कुँवरको नहिं लै आयो ॥
तख्तसिंह नृप रेल चढ़ाई । सबको तीरथपति नहवाई ॥

दोहा-सबको करिदीन्ह्यो बिदा, ते ह्वै रेल सवार ॥
रानी सुत सब सैन्यगे, निजपुरको विनवार ॥ २४ ॥
छरे संग सरदारलै, युग रानी सुत दोय ॥
तख्तसिंह आवतभये, रींवाको मुद्मोय ॥ २४ ॥

नृप रघुराज मोद उर छाई । शिविर करायो ले अगुवाई ॥
सुदिवसमें त्रय भयो विवाहा । छायो घर घर परमउछाहा ॥
जो पितृव्यकी सुता सयानी । तख्तसिंह व्याह्यो सुखमानी ॥
तख्तसिंह ल्याये सुत दोई । तिनमें जेठ कुँवर रह जोई ॥
ताको सुता आपनी व्याही । महाराज रघुराज उछाही ॥
तेहिते लहुरे कुँवरहिं काही । सुता विमातृ भागिनि कहँ व्याही ॥
दायज देन जु रह्यो करारा । पंचलक्ष दिय द्रव्य उदारा ॥
हय गज भूषण वसन अमोले । दियो तिन्हैं रघुराज अतोले ॥

दोहा-मेवा सकल मँगायकै, अरु मिठाइ बहु भांति ॥
कैयो दिन सादर दियो, ऊंच नीच सब जाति ॥ २६ ॥
चारि रोजको नेम जग, राखि मास लों बरात ॥
पूरी साज सबै जनन, पूरी सुख सरसात ॥ २७ ॥
रत्न जटित सुवरण कटक, अरु बहु मोती माल ॥
निजसरदारनको दियो, छायो सुयश विशाल ॥ २८ ॥

कवित्त ।

एक समै बांधवेश महाराज रघुराज छरे सरदारन औ संगलै देवानहै ॥
रेलमें सवार कलकत्ताको पयान कीनो हरिहर क्षेत्र आदि तीरथ महान है ॥
परेमग तहँकै नहान दै द्विजान दान तीजे रोज जब कलकत्ता नगिचानहै ॥
हूनपति आज्ञा पाय हून मुख्य आगू आय लै गयो लेवाय डेरा देतभो मकान है॥ १॥

दोहा-डेरा आयो लाट पुनि, देखि भूपको रूप ॥
रूप न अस कोहु भूपको, भूपर गन्यो अनूप ॥ २९ ॥

मुद्रा सहस रसोंई काहीं । शिविर जाय पठयो सुखमाहीं ॥
दूजे दिन पुनि नृपति उदारा । सादर लाट शिविर पगुधारा ॥

सो आगूलै उच्च जो कुरसी । बैठायो तामें अति हुलसी ॥
विविधभांति कीन्ह्यो सत्कारा । सो कहँलों कवि करै उचारा ॥
बड़कीमतिकी उभय दुनाली । देत भयो शत्रुनको शाली ॥
फेरिलाट असि गिरा उचारी । ईजा लही आप मग भारी ॥
यहि पुर होत कलैते कामा । याते कलकत्ताहि नामा ॥
द्वै चारिक चलि ठौर विशेषी । लेहिं आपहू आंखिन देखी ॥

दोहा–पांचलाख मुद्रा नितहिं, बनत कलैते ख्यात ॥
तूल सूत बिनिबो वसन, होत कलैते व्रात ॥ २३० ॥
शहर फनूस बरै बुतै, निशि कलते यक साथ॥
इत्यादिक बहु औरऊ, निरखि नंद विश्वनाथ ॥ ३१ ॥

कह्यो लाट साहेब सों जाई । यहि पुर कला अपूर्व लखाई ॥
तकन तोपखानै पुनि भूपा । गये लखे युग तोप अनूपा ॥
रहैं अठारै पंनी केरी । तिनहि सराहतभो नृप ढेरी ॥
सो यक मनुज लाटसों कहेऊ । लाट खुशी ह्वै हुकुमहि दयऊ ॥
महाराज ऐसी युगतोपा । तुमहिं देतहैं हम भरि चोपा ॥
अहैं माग सो लेव मँगाई । दिये देत हम अहैं रजाई ॥
द्वैशत फेरि तिलंगन काहीं । पथरकला दीन्ह्यो सुखमाहीं ॥
पुनि कह तुव दिवान सरदारा । वीर बड़े अरु सुघर अपारा ॥

दोहा–बहुत रोज आये भये, अहै रुजी यह देश ॥
याते अब निज पुरीको, कीजै गमन नरेश ॥ ३२ ॥
लाट वचन तब भूप सुनि, ह्वै द्रुत रेल सवार ॥
मग नृप बहु सन्मान लहि, आयो पुरी मँझार ॥ ३३ ॥
दंडहु भरको हुकुम नहिं, तहँ असि लै सब ठाम ॥
इनके जन बांगै वचैं, और कसूरी नाम ॥ ३४ ॥
अरज कियो जो लाट सों, सो सब पूरण कीन ॥
कह्यो आपना राज्यमें, करो जो चहो प्रवीन ॥ ३५॥

चारि अश्व बग्घीनमें, चढ़त लाट नहिं कोय ॥
चढ़ै जो कोऊ धोखेहूं, देइ दंड ध्रुव सोइ ॥ ३६ ॥
सो पठयो महराज पै, गुणि सो निजहिं समान ॥
चढ़ि भूपति रघुराज तब, गुन्यो कृपा भगवान ॥ ३७ ॥
मान्यो यह रघुराज नृप, सब यदुराज प्रभाव ॥
और येक आगे चरित, वरणों भरि चित चाव ॥ ३८ ॥
विजयनगर है नामजेहिं, ईजानगर विख्यात ॥
तहँको गजपतिसिंहहै, भूपति मति अवदात ॥ ३९ ॥
सादर सहित कुटुंब सो, बस्यो बनारस आय ॥
ताके भै यक कन्यका, रति सम सुंदर काय ॥ २४० ॥

तेहि व्याहन हित सो उत्साहन । भेज्यो जन पछाह नरनाहन ॥
ते सब दूरिदेश बहु मानी । अपनो जाब अगम मन जानी ॥
ताते ते न कबूलहि कीने । मुद्रा लाखनहूंके दीने ॥
तब सो ईजानगर भुवाला । मनमें कीन्ह्यो शोच विशाला ॥
पुनिकीन्ह्यो अस मनहिं विचारा । रीवां को है बड़ो भुवाला ॥
तेहिते जो ममसुता विवाहू । होय तो होवै महाउछाहू ॥
एक समय रघुराज उदारा । भेंट करन जयपुरहिं भुवारा ॥
मिरजापुरको कियो पयाना । तहँ नृप ईजानगर सजाना ॥

दोहा-मुलाकात करि नजरदै, बहु विधि कीन्ह्यो सेव ॥
पुनि जब तकमा लेनको, गयो काशि नरदेव ॥ ४१ ॥
तबहूं बहुविधि सेव करि, सुता व्याहके हेत ॥
विनयकियो बहुभाँति सों, सो नृप बडो सचेत ॥ ४२ ॥

नाथ कह्यो वकील करिदीजै । ज्वाब स्वाल तेहि मुख नृप कीजै ॥
सुनि प्रसन्न गजपति नृप भयऊ । सादरनिजवकील करि दयऊ ॥
भयो जवाब स्वाल युगवरषा । पैरिनयको टीको कछुनरषा ॥
पूंछ्यो प्रभु तेहि नृपकी आदी । भाषतभे वकील अहलादी ॥

राना विदित उदयपुर केरे । तिन भाई करि लेहिं निबेरे ॥
सुनत उदयपुर खत लिखवायो । रानाजी लिखि तरत पठायो ॥
ईजानगर भूप जो रहई । सो हमरो भाई सति अहई ॥
सुनि खत बांधवेश महराजा । कह वकील सों वचन दराजा ॥

दोहा–लै आवहु द्रुत तिलक इत, लै आये ते जाय ॥
टिके रहे बहु मासलों, तिलक न चढ़त जनाय॥ ४३ ॥
रामराजसिंहको तिलक, चढ़नको कहै वकील ॥
भूप कहैं नाहिं बनत उन, कहैं ज्योतिषी ढील ॥ ४४ ॥
कतहुँ न तुव संबध तोहिं, तुव संबंधी माहिं ॥
याते इत सब जन कहैं, व्याह योग उत नाहिं ॥४५ ॥

अति मतिवंत भूप रघुराजू । गुन्यो वृथा सब करत अकाजू ॥
पांचलाख मुद्रा यह देई । तिलक माहिं अति आनँद भेई ॥
उभय लाख द्वारे महँ दे हैं । उभय लाख सँग सुता पठै हैं ॥
हय गय भूषण वसन अमोला । और उपरते देइ अतोला ॥
दोषहु यामें कछु न जनाई । रानाको प्रसिद्धहै भाई ॥
यह करि ठीक मनहिं मतिवाना । कलकत्ता जब कियो पयाना ॥
तहँ किय लाट अग्रते ठीको । रामराजसिंह परिनय नीको ॥
दाइज लेन रही जो चाहा । ताहूको करि दियो निबाहा ॥

दोहा–रीवामें द्रुत आय प्रभु, कह पितृव्य सुत पाहिं ॥
साहेब ढिग सिद्धांत भो, तिहरो व्याह तहाँहिं ॥४६॥

कहत रहे जे होवे नाहीं । तेउ चुपभये न कछु बतराहीं ॥
नृप वकील ते कहि घर शाहू । पांच लाख धरवाय उछाहू ॥
रामराजसिंहको लै संगै । साजि बरात चल्यो सउमंगै ॥
काशीको जब गये निराई । डेरा दिय सो लै अगुवाई ॥
तहँईसो पुनि तिलक चढ़ायो । हय गय भूषण वसन मँगायो ॥
मुद्रा सहस पचास मँगाई । गजपति सिंह दियो सुख छाई ॥

होत भयो पुनि सविधि विवाहा। पूरि रह्यो काशी उतसाहा॥
तहँ गजपति नरेशकी रानी। रूप भूप रघुराज लोभानी॥

दोहा–कहत भई निजनाहसों, सो उरभरी उछाह॥
महाराज रघुराजको, कस नहिं कियो विवाह॥ ४७॥
सो कह जब तुमसों कह्यो, तब तुम मान्यो नाहिं॥
अब न सोच संबंध जेहिं, पूरब होत तहाँहिं॥ ४८॥

चारि रोज तहँ रही बराता। कीन्ह्यो सो सत्कार अघाता॥
पुनि सादर जब कियो बिदाई। मुद्रा दिय द्वै लाख मँगाई॥
हय गय भूषण वसन जमाती। बड़े मोलके दिय बहु भांती॥
पुनि सरदारन और वकीलन। मुद्रा दिय पठाय धरि पीलन॥
नृप रघुराज फेरि सुख छाई। रुपया मोहर अमित मँगाई॥
सादर रामराजासिंह काहीं। तुला चढ़ाय गंग तट माहीं॥
सब विप्रनको दियो देवाई। जय जय ध्वनि काशी महँ छाई॥
राम निरंजन संत महाना। बसे बनारस विदित जहाना॥

दोहा–सकल शास्त्रमें निपुण अरु, कामादिकते हीन॥
राम निरंजन सो न अब, कतहूं संत प्रवीन॥ ४९॥

महाराज रघुराज उदारा। तिनके दरश हेतु पगु धारा॥
भूपहि आवत जानि दुवारा। चालि सेवक अस वचन उचारा॥
नाथ दरशहित बहु नृप आवैं। दरशि दूरिते सपदि सिधावैं॥
सो आपहु दर्शन करि आवैं। बैठन कहैं बैठि तो जावैं॥
सुनि बोल्यो रघुराज नरेशा। बैठब तबहिं जो होइ निदेशा॥
अस कहि प्रभु ढिग चलि सुखधामा। वार वार किय दंड प्रणामा॥
दै अशीश बहु बैठन कहेऊ। बैठि यामलों नृप सुख लहेऊ॥
कह प्रभु नृप विशुनाथ समाना। रामभक्त नहिं भयो जहाना॥

दोहा–सब विद्यनिमें निपुण तिमि, दानी विदित महान॥
तासु तनयतैसहि तुमहुँ, सम अबहूँ ना आन॥२५०॥

शम्भुशतक जगदीशहु शतकै । विरच्योतुमसुनि जेहिं बुधसुछकै ॥
जस तुम भक्त अहौ नारायण । तस ईश्वरीप्रसाद नरायण ॥
जस पूरण सुख तुमते भयऊ । तैसहि उनहूँ ते सुख ठयऊ ॥
नृप पछाहियनमें कछु रूरो । बूँदी नृपति जानते पूरो ॥
तेहिंके आये भो सुख आधो । तुम सम कोउ न कृष्ण अवराधो ॥
अति प्रसन्न करि दण्ड प्रणामा । गमन्यो पुनि भूपति सुखधामा ॥
सकल देव संतन गृह जाई । यथा योग बहु द्रव्य चढ़ाई ॥
रामनगर गो सुरसरि पारा । गो लेवाय सो नृपति उदारा ॥

दोहा-रामराजासिंहकोसतिय, घर दिय पठै ससैन ॥
आपरेल चढ़ि आयकै, मिरजापुरहिसचैन ॥ ५१ ॥
पुनि बग्घी असवार ह्वै, सैन्यसहित सुख पाय ॥
रीवांको आवत भयो, लै संपति समुदाय ॥ ५२ ॥
बंधु कसौटाको विदित, वंशपती महराव ॥
महाराज सों यक समय, विनय वचन मुखगाव॥५३॥
नाहक हमें अशुद्ध जग, कहत अहैं सब लोग ॥
विमुख आपते जो भये, यहां बड़ो उर सोग ॥ ५४ ॥

स.-आपहिके हमहैं करुणानिधि आप जो लीजिये मागहिपानी
तौ अहिती हमरे जे अहैं जे असत्य बतात तिन्हैं परै जानी॥
दीजिये भात कृपाकारिकै सुधरै मम लीजिये सत्य या मानी ॥
श्रीरघुराज कह्यो हँसिकै यदुराज सुधारिहैं है सति वानी॥१॥

दोहा-भात देत सुनि नृपहिको, बरजे बहु जन वृंद ॥
महाराज कह मानिहैं, कहिहैं जस गोविंद ॥ ५५ ॥
अस कहि यक कागज लिख्यो, यह अशुद्धहै नाहिं ॥
अशुद्ध अहै यह यक लिख्यो, धरि दीन्ह्यो हरि पाहिं५६
नयन मूँदि जगदीश ढिग, पंडा तुरतहिं जाय ॥
लै आयो कागज सोई, यह अशुद्ध नाहिं आय ॥ ५७ ॥

नृप जगदीश निदेश लहि, शुद्ध मानि विख्यात॥
वंशपतीको करिलियो, भातहिमें अवदात ॥ ५८ ॥
पंडा तुलसीरामको, अग्निहोत्र करवाय ॥
कियो अग्निहोत्री विदित, रह्यो सुयश जग छाय॥ ५९ ॥
दशहजार मुद्रा अउर, दो हजारको ग्राम ॥
दै गोविंदगढ़ वास दिय, दै शुभ धाम अराम ॥२६०॥

छप्पय-श्रीरघुराज सुवाजपेयि किय रह यश छाई ॥
याचक सोइ सोइ वस्तु लही जोई मुख गाई ॥
विप्र जे याज्ञिक रहे लहे ते द्रव्य हजारन ॥
भूषण वसन अमोल हेत असवारी वारन ॥
कवि वेश कहै युगलेश चलि, देशन देश नरेश मधि ॥
है विन कलेश मुख गाय यश, भये धनेश सुरेश सधि १

कुंडलिया-सबनरनाहनते अधिक, बादशाह कियमान॥
महाराज रघुराजसों, कौन सुजान जहान ॥
कौन सुजान जहान, सुकवि करि सकै बखानै॥
जो बखश्यो वसु वसन, जननकहँ वे परमानै ॥
मानै निज लखि तजे भूप कलकत्ते महँ तब ॥
युगलदास यह कृपा जानि लीजै सँतिके सब ॥ १ ॥

कवित्त घनाक्षरी।

बाजिन सवार राज राजिन कराय तहां निज असवारी साथ शाह सोधवायो है ॥
लाट कोठि कुरसीमें बांधवेशको बैठाय निज असवारीको जलूस दरशायो है ॥
देखि सब भूप लेखि निजते अधिक मान शरमाय शीशते बिशेषिहीं नवायोहै ॥
सांच यदुराज कृपा जानै रघुराज परजौन सब राजनते अधिक बनायो है ॥१॥

दोहा-लाख लाय मुद्रा नज़र, देनचहे नरनाह ॥
तिनको लियो न मानि तृण, शाह सहित उत्साह॥६१॥
मुद्रा सहस पचासकी, दियो अँगूठी नाथ ॥
लै सराहि रघुराजको, पहिरिलियो निज हाथ ॥ ६२ ॥

शम्भुशतक जगदीशहु शतकै । विरच्यो तुम ... जेहिं बुधसुछकै ॥
जस तुम भक्त अहौ नारायण । तस ईश्वरीप्रसाद नरायण ॥
जस पूरण सुख तुमते भयऊ । तैसहि उनहूँ ते सुख ठयऊ ॥
नृप पछाहियनमें कछु रूरो । बूँदी नृपति जानते पूरो ॥
तेहिंके आये भो सुख आधो । तुम सम कोउ न कृष्ण अवराधो ॥
अति प्रसन्न करि दण्ड प्रणामा । गमन्यो पुनि भूपति सुखधामा ॥
सकल देव संतन गृह जाई । यथा योग बहु द्रव्य चढ़ाई ॥
रामनगर गो सुरसरि पारा । गो लेवाय सो नृपति उदारा ॥

दोहा-रामराजसिंहकोसतिय, घर दिय पठै ससैन ॥
आपरेल चढ़ि आयकै, मिरजापुरहिसचैन ॥ ९१ ॥
पुनि बग्घी असवार ह्वै, सैन्य सहित सुख पाय ॥
रीवांको आवत भयो, लै संपति समुदाय ॥ ९२ ॥
बंधु कसौटाको विदित, वंशपती महराव ॥
महाराज सों यक समय, विनय वचन मुखगाव॥९३॥
नाहक हमें अशुद्ध जग, कहत अहैं सब लोग ॥
विमुख आपते जो भये, यहां बड़ो डर सोग ॥ ९४ ॥

स.-आपहिके हमहैं करुणानिधि आप जो लीजिये मागहिपानी
तौ अहिती हमरे जे अहैं जे असत्य बतात तिन्हैं परै जानी॥
दीजिये भात कृपाकरिकै सुधरै मम लीजिये सत्य या मानी ॥
श्रीरघुराज कह्यो हँसिकै यदुराज सुधारिहैं है सति वानी॥१॥

दोहा-भात देत सुनि नृपहिको, बरजे बहु जन वृंद ॥
महाराज कह मानिहैं, करिहैं जस गोविंद ॥ ९५ ॥
अस कहि यक कागज लिख्यो, यह अशुद्धहै नाहिं ॥
अशुद्ध अहै यह यक लिख्यो, धरि दीन्ह्यो हरि पाहिं९६
नयन मूँदि जगदीश ढिग, पंडा तुरतहिं जाय ॥
लै आयो कागज सोई, यह अशुद्ध नाहिं आय ॥ ९७ ॥

नृप जगदीश निदेश लहि, शुद्ध मानि विख्यात॥
वंशपतीको करिलियो, भातहिमें अवदात ॥ ५८ ॥
पंडा तुलसीरामको, अग्निहोत्र करवाय ॥
कियो अग्निहोत्री विदित, रह्यो सुयश जग छाय॥ ५९ ॥
दशहजार मुद्रा अउर, दो हजारको ग्राम ॥
दै गोविंदगढ़ वास दिय, दै शुभ धाम अराम ॥२६०॥

छप्पय-श्रीरघुराज सुवाजपेयि किय रह यश छाई ॥
याचक सोइ सोइ वस्तु लही जोई मुख गाई ॥
विप्र जे याज्ञिक रहे लहे ते द्रव्य हजारन ॥
भूषण वसन अमोल हेत असवारी वारन ॥
कवि वेश कहै युगलेश चलि, देशन देश नरेश मधि ॥
ह्वै विन कलेश मुख गाय यश, भये धनेश सुरेश सधि १

कुंडलिया-सबनरनाहनते अधिक, बादशाह कियमान॥
महाराज रघुराजसों, कौन सुजान जहान ॥
कौन सुजान जहान,सुकवि करि सकै बखानै॥
जो वखश्यो वसु वसन,जननकहँ वे परमानै ॥
मानै निज लखि तजे भूप कलकत्ते महँ तब ॥
युगलदास यह कृपा जानि लीजै सँतिके सब ॥ १ ॥

कवित्तघनाक्षरी।

वाजिन सवार राज राजिन कराय तहां निज असवारी साथ शाह सोधवायो है ॥
लाट कोठि कुरसीमें बांधवेशको बैठाय निज असवारीको जलूस दरशायो है ॥
देखि सब भूप लेखि निजते अधिक मान शरमाय शीशते बिशेषिहीं नवायोहै ॥
सांच यदुराज कृपा जानै रघुराज परजौन सब राजनते अधिक बनायो है ॥१॥

दोहा-लाख लाय मुद्रा नज़र, देनचहे नरनाह ॥
तिनको लियो न मानि तृण,शाह सहित उतसाह॥६१॥
मुद्रा सहस पचासकी, दियो अँगूठी नाथ ॥
लै सराहि रघुराजको, पहिरिलियो निजहाथ ॥ ६२ ॥

कवित्त ।

महादेवजीके सम देव नर दानवमें भयो ना त्रिलोकी माहिं राम भक्ति धारीहै ॥
सीय बेष कीन्ही सती ताहि त्यागि दीन्ह्यो जौन दक्षकी सुता जो रही प्राणनते प्यारीहै
अब कलिकालतो कराळ या कलुषमयो तामें वैसोहोय नहिं परत निहारी है ॥
महाराज विश्वनाथ तनै रघुराज वैसो भयो युगलेश कछु कहत उचारी है॥ १॥
छीतूदास भगत पधारे एक समै रीवां कातिकते फागुनलों रहे सुख छायके ॥
फगुवाके रोज रैन निकसे बजार मग राम सिय लषणको गजमें चढ़ायके ॥
दीनबंधु धाम ढिग एक बनियाको घर रह्यो तासु सुत लै खेलौनादी चलायके॥
चौंकि उठयो गज झूल जरी डोलि उठे द्रुत कोऊ जन जाय कह्यो नृपको सुनायके२

दोहा–भोर होत तेहिं वणिकको, भूपति लियो लुटाय ॥
द्वै हजारको वसनतेहिं, लीन्ह्यो तुरत मँगाय ॥ ६३ ॥
आधे आधे सो दियो, मोहन दशरथ काहिं ॥
दीनबंधु सो सुनि कियो, वणिक सहाय तहाँहिं॥ ६४ ॥
वणिक पुत्र भगिजातभो, छीतूदासहि पास ॥
आय भक्त महराज ढिग, शासन दिय सहुलास ॥६५॥
क्षमि आगस यहि वणिकको, दीजै लूटि देवाय ॥
कुटी सिधारव कालिह हम, सुनि बोल्यो नरराय ॥६६॥
वह भगवत भागवतको, कियो महा अपराध ॥
याको देन न काहिय प्रभु, और न होई बाध ॥६७॥
यहि अपराधी वणिकको, कीन्ह्यो जौन सहाय ॥
उचित दंड सोउ पायहै, यह प्रभु देहि सुनाय ॥६८॥

सुनि जिन कुटी भक्त पगु धारे । महाराज उर अति मुद धारे ॥
परममित्र मंत्री यशवारा । रह्यो जौन प्राणनको प्यारा ॥
मुख्य देवान कह्यो जेहिं काहीं । लाट खिलत दीन्ह्यो मुदमाहीं ॥
ताहूको गुणि वणिक सहाई । कामकाजते दियो छोड़ाई ॥
रहे जे कामकाजि तेहि संगा । तिनहुँ छोड़ाय दियो सउमंगा ॥
दाक्षण देउरा नगर ललामा । तहँ जेहिं थान अहै सरनामा ॥

लालशिवबकशसिंह तेहि नामा। धीर वीर अतिहीं मतिधामा ॥
तासु अनुज भगवतसिंह तैसे। वचन जासु अंगद पग कैसे ॥
तेहिं शिवबकश सिंह सुत रूरो। लालरणदवनसिंह गुण पूरो ॥
कैयक अनुज तासुके जानो। तिनमें दिग्गजसिंह सुजानो ॥
लालरणदवनसिंह पर प्रीती। करि रघुराज मीत गुणि नीती ॥
सकल बघेलखंड जो राजी। कियँ मुखतार परम ह्वै राजी ॥

दोहा–माधवगढ़ ढिग पार सरि, काछिया टोला गावँ ॥
नावँ जासु दिलराजसिंह, मालिकहै तेहिं ठावँ ॥ ६९॥
अमरसिंह कल्याणसिंह, तासु सुवन गुणग्राम ॥
महाराज परसन्न ह्वै, तिनहूंको दिय काम ॥ २७०॥
बांकेधौवा सिंहको, कोष काम करिदीन ॥
देशी परदेशी बहुत, काम दियो सुखभीन ॥७१॥
तिन सबको मुखतारके, भूपति किय आधीन ॥
ते सब अबलों करतहैं, काम लोभते हीन ॥७२॥

छंद–यक काल अकाल कराल पर्‌यो ॥
विन अन्न दुखी बहु जीव मर्‌यो ॥
माहिमें कँगला सहसान जुरे ॥
सारि औसर राहन रोज फिरे ॥ १ ॥
बहु पर्गन बांधवदेश ठये ॥
विन अन्न दुखी सब जीव भये ॥
रघुराज गरीबनेवाज महा ॥
दिय अन्न तिन्हैं मुदमें उमहा ॥ २ ॥
अंगरेजहु जौन निदेश कियो ॥
रुपया तेहिं पंचसहस्र दियो ॥
जोहिं औरेहु देशनके कँगला ॥
विन अन्न न शोक लहैं अचला ॥ ३ ॥

दोहा-झूर अन्न केतेन दियो, केतेन दै पक्वान ॥
केतेनको पैसा दियो, केतेन मुद्रादान ॥ ७३ ॥

सोरठा-जौलौं रह्यो अकाल, लाखन रुपया खर्च करि ॥
किय दीनन प्रतिपाल, को कृपालु रघुराज सम ॥ १ ॥
कौन गरीबनेवाज, महराज रघुराज सम ॥
छायो सुयश दराज, समुद्रांतलौं अवनि तल ॥ २ ॥

सवैया-तीक्षण जासु प्रताप दिनेशको आतप तेज महीप सरै ॥
तापित ह्वै रिपु तासु महेश कलेशित वासु अरण्यकरै ॥
भाषतहै युगलेश सही यह मानै उरैमें विशेष नरै ॥
श्रीरघुराज नरेशके देशन शीतको पेस करै पसरै॥१॥

महाराज रघुराज सपूती । है अपूर्व जिनकी करतूती ॥
पितुते अधिकै राज्यबढ़ायो । पितुते अधिकै द्रव्य कमायो ॥
पितुते अधिक कोष किय भारी । भूपति श्रीरघुराज सुखारी ॥
एक अनूपम शहर बसायो । गोविंदगढ़ तेहिं नाम धरायो ॥
रीवांमें जस रहे मकाना । तिनते अधिक तहां निरमाना ॥
ताल विशाल एक बनवायो । विश्वनाथ नृप नाम सुहायो ॥
जाके तीर तीर सरमांहीं । विरचायो बहु मंदिर काहीं ॥
तिनमें रघुपति यदुपति मूरति । पधरायो परिकर युत अति रति ॥

दोहा-प्रति उत्सव जो करतहैं, साधुन सेवा वेश ॥
सीयव्याह उत्सव तहां, करत नरेश हमेश ॥ ७४ ॥
छीतूदास सुसंत यक, सादर तिनहिं बोलाय ॥
करत व्याह उत्सव सुखद,अगहन मास सोहाय॥ ७५ ॥

संत महंतहुँ विप्र अपारा । जुरैं नारि नर कइक हजारा ॥
तिनको विविध भांति सन्मानी । वांछित अशन देत रति ठानी ॥
मांडव* रुचिर रचाय उछाहा । सीय रामको करत विवाहा ॥
सबको मंडप तर बोलवाई । सादर विदा करत हरषाई ॥

मुद्रा अमित दुशालन जोरी। कोहुंको देत हाथ युग जोरी॥
कोहूको पट और बनाता। मुद्रन सहित देत हरषाता॥
कोहुको लोइया और रजाई। देत रुपैयन युत सुखदाई॥
रुपिया और उपरना रासी। कोहुको भूपति देत हुलासी॥

दोहा–देत रुपैया सबनको, बचै न कोउ नर नारि॥
सुख छावत गावत सुयश, जात अयन पशु धारि॥ ७६॥
भरत लषण रिपुदवन युत, सीय रामको फेरि॥
भूषण वसन अमोल दै, विदा करत छवि हेरि॥
छीतूदास सुसंतको, साधुन सेवा हेत॥
द्वादशसै मुद्रा वसन, अमित मोद युत देत॥ ७७॥
जनकपुरी मम सोपुरी, समय सो जनक प्रमोद॥
जनक सरिस नृप जनकहैं, चलि चलि मग चहुँ कोद ७८

स०–औधपुरी मुद औध किधौं, किधौं वृंदावनै दिपै मंदिर भारी।
जानकीरामकीझांकीकहूँकहूँराधिका माधवकीमनहारी॥
झालरी शंख बजै चहुँ ओर बसैं जहँ संत अनंत सुखारी॥
भूप रच्यो है गोविंदगढ़ सो अनूपम मैं निज नैन निहारी॥ १॥

दोहा–छन छन छन घन ध्यान मन, तनक न तन धन भान॥
धन धन धन जन ज्ञान पन, कन कन वनकनसान ७९॥

छ	छ	छ	घ	ध्या	म	त	क	त	ध	भा
न	न	न	न	न	न	न	न	न	न	न
ध	ध	ध	ज	ज्ञा	प	क	क	व	क	सा

सोरठा–जेहिं गोविंद गढ़माहिं, दुखहीको दुखदेखिये॥
डर परलोक सदाहिं, जहँ सब लोगन को अहै॥ २८०॥

दंडनीय जहँ एक निसाना । रागरागिणी भेद विधाना ॥
क्रोध जहां क्रोधहिं पर होई । लोभ करै यशको सब कोई ॥
जहां अधर्महिं को है त्यागा । निज तियसों ठानब अनुरागा ॥
जहँ गृह चित्र करैं चित चोरी । बंधन जहां पशुनको जोरी ॥
बचन असत्य कहत रोजगारी । सुताब्याह गावहिं तिय गारी ॥
चलत कुपथं जहां गज माते । कुटिल धनुष जहँदृग दरशाते ॥
सुभटनके अँग जहां कठोरा । कर्कश जहँ झिल्ली गण शोरा ॥
जहां निर्द्धनी यती निहारी । वारि नीचि गति जहां निहारी ॥

दोहा–कंपध्वजामें देखिये, बँधे धौरहर धौल ॥
शोभा सब संसारते, बसी भूप पुर नौल ॥ ८१ ॥

सोरठा–कहुँ गोविंदगढ़ माहिं, कबहूँ रीवाँ नगरमें ॥
श्रीरघुराज सोहाहिं, सब राजनके मुकुट मणि ॥ १ ॥

कबित्त घनाक्षरी ।

बंदी जे न ताकत मुसद्दी कामकाजी सबै बैठे दुहूंओर दर्दी दीननको दिलराज ॥
कद्दी दीहवारे औ अमद्दी सरदार आगे बैठे अरिकरनं गरद्दी रणकै गराज ॥
देवनदी कैसी किति दिपन्ति विसद्दी जासु युगलेश साहिबी बिहद्दी मनो देवराज ॥
रद्दी कर दुर्जन अनंदी कर सज्जनको राजै राजगद्दी पर महाराज रघुराज ॥ १ ॥
देन समै जोई जोई याचि राख्यो याचकहै सोई सोई देत सांच लगत न वारहै ॥
भूषणअमोल गाँव बसन अमोल म्याना वाजि गज नोल मुद्रा कैयक हजारहै ॥
कहै युगलेश ऐसी रीतिहै हमेश केरी देखत न देश कोष नेकुकै विचारहै ॥
राजनके राज महाराज रघुराज ऐसो आजु तौन दूजो राजा राजत उदारहै ॥ २ ॥
पटु सब विद्यन में हटत न काहूसों है निपट निशंक बुद्धि नेकु न हलति है ॥
चटपट जानिलेत अटपट बात सब बात कपटीनकी न कैसहू चलतिहै ॥

महाराज रघुराज निकट परवंडी कोटि कुटिलऊ सटपटै थिति उसलति है ॥
कवि नटखटनकी कूर बहुकटढनकी चुगुल चवाइनकी दाल ना गलतिहै ॥ ३ ॥
सुमति गणेश लसै साहिबीमें त्यों सुरेश धनमें धनेश शत्रु नाशनमहेशहैं ॥
तेजमें दिनेश मुदजनन प्रजेश प्रजापालनमें वेश सम राजत रमेशहैं ॥
गावत नरेश दीह निजहिं निवेश सभा सुयश विशेष जासु छाजै देश देशहैं ॥
भन युगलेश रघुराजसे सुमतधारी सुत बांधवेश औ परेससेवा पेसहै ॥ ४ ॥
करयुग जोरि कमलापतिसों कमलाजी कहै युगलेश बार बार कहैं वैन कल ॥
रावरो भगत विश्वनाथ तनै रघुराज जन्यो तन्यो जासु यश चारु स्वच्छभल ॥
असित पदारथ ते सित ह्वैगये हैं सबै परत पिछानि नाहिं जाय जहांजौने थल ॥
वसिये निरंतर की ताहि ऐके अंतरकी उदधिको अंतर न छोंडि जैये छोनी तल ५
भागवत पढ्यो भागवत को विश्वास मान्यो जननि सुभद्रा श्रीसुभद्रारूप जानिये॥
रामभक्त परमअनन्य महा भागवत विश्वनाथसिंह जासु जनक बखानिये ॥
भागवतदास नाम तिनहीं सों पायो भयो भागवत रूप कंठ भागवत गानिये ॥
भागवत सेवी रघुराजसिंह भागवत जाके उर भौन भगवंत भौन मानिये ॥ ६॥

सवैया–याचक वृंद मलिंदनको गण पाय सुपास अनंदित हीमें॥
आय मनोरथ पूरणकै यश गान करैं चहुँ ओर महीमें॥
भाषतहैं कवि देशनि जाय नरेशनके दरबारनहीमें ॥
दान करीके कपोलनमें कीहरी रघुराजके हाथनहींमें७

दोहा–महाराज रानी सबै, गौरी सम महिमाथ ॥
लसैं पतिव्रत धर्मरत, तजैं न कबहूं साथ ॥ ८२ ॥
महाराज रघुराजके, अमित चरित्र अनूप ॥
युगलदास वरण्यो कछुक, निजमतिके अनुरूप ॥ ८३॥
जामें सूचित चरित सब, ऐसो अष्टक वेश ॥
विरचतहै युगलेश यह, सुखप्रद सुकवि विशेष ॥८४॥

अष्टक नृप रघुराज कृत, युगलदास मुदकंद ॥
सार्थ गतागत चंद्र ऋषि, सिंहवलोकन छंद ॥८५॥

अथगतागत सवैया ।

तो यश शीश मही सरसाय यसारस हीम शशी सजतो ॥
तोमह तेज भसो विरमाहि हिमा रवि सो भजते हमतो ॥
तो जग नैरव सोहत चारु रुचा तहँ सो वरणै गजतो ॥
तो रघुराज भजै नहिं लोग गलोहिनजै भज राघुरतो ॥१॥

अर्थ–हेरघुराजसिंह तिहारो श्रीवृंदावन अरु श्रीजगन्नाथपुरीमें सुवर्णतुलादानादि महादानरूप जो यह यशहै शीश मही कहे महीके शीशमें अथवा सब राजनके यश ते शीश कहे शिरा मही कहे पृथ्वीमें सरसाय कहे अधिकायके सारस हीम शशी सजतो. कहे सारस जो है कमल अरु हिम जोहै पाला अरु शशी जो है चंद्रमा ताको सजतो कहे आपनी शोभाते साजेहै कहै शोभित करै है यह प्रतीपालंकारते सारस अरु हिम अरु शशिकी शोभा सब ऋतुमें सब कालमें एकरस नहीं रहै है कमल झरिजाय है हिम गलिजाइहै शशी क्षीण ह्वैजाइहै अरु सकलंकहै अरु तिहारो यश सब कालमें एक रस रहै है अरु निःकलंकहै याते उन सबनते अधिकहै यह व्यतरेकालंकार व्यांजित भयो, अरु तोमह तेज भसो विरमाहि. कहे तिहारो जो महातेजहै सो वीर जे हैं बड़े २ राजा तिनमें भसो कहे भासितहै ताते तिहारे तेजते तेऊ शंकित रहै हैं कि हमारी राज्य न लैलें यह सुंचितभयो अथवा विरमाहि कहे सब जगमें तिहारो तेज विशेषकै रमैहै ताते तुम्हारे तेज करिके सब राजा निस्तेज ह्वैगये यह ध्वनित भयो याहीते, हिमा रविसो भजते हमतो. कहे आपने हियमें हम तो तुम्हारे तेज को रवि सों कहे सूर्यसे भजै हैं कहे भजन करै हैं अर्थात् वर्णन करै हैं यह उपमालंकारते सूर्य कमलनको आनंद देइहैं अरु तम नाश करै हैं अरु सबको सुधर्ममें प्रवृत्त करै हैं ॥ अरु आपको तेज सज्जनके हृदयकमलको आनंद देइहैं औ सब राजनके वीरताके मदको, अज्ञानको नाश करै हैं अरु

सबके अधर्म नाश करि सबको धर्ममें प्रवृत्त करै हैं यह अनुभया भेद रूप-कालंकार ध्वनित भयो अरु, तोंजग नै रव सोहत चारु. कहे जगमें तिहारो जो है नै कहे नीति ताको जो रव कहे शोरकि रघुराजसिंह बड़े नीतिमान्हैं सो चारु कहे सुंदर सोहतहै अरु रुचा तहँ सो वरनै जगतो, तहाँ कहे तौने जगमें सो नीतिको रव सबको रुचाहै कहे सबको नीक लगै है अर्थात् नीतिको बखान जो कोई करत सुनै है सो तहैं खड़ो रहिजाइहै अरु वरनै गजतो कहे सोऊ जन गजत कहे गर्जनाको करत अर्थात् बड़ो शोर करत सर्वत्र वर्णन करै हैं कि रघुराजसिंह बड़े नीतिमान्हैं ॥ ताते आपके नीतिके सुनिबेते सबको उत्कंठा अतिशयरूप वस्तु व्यंजित भयो इससे जैसी आपकी नीतिहै तैसी आपहीकी नीतिहै यह अनन्वयालंकार ध्वनित भयो ताते आपकी राज्यम अनीति नहीं है यह वस्तु सूचित भयो अरु गर्जत वर्णन करै है ताते इनके बरोबर ऐसो नीतिवारो पृथ्वीमें कोई नहीं है याते निःशंक " यह हेतु व्यंजित भयो ताते, रघुराज भजै नाहिं लोग गलोहि. कहे या भांतिके जे तुम रघुराजसिंह हौ तिनको जो कोई लोग गलोहि कहे गलते अरु हियते नहीं भजै हैं कहे नहीं भजन करै हैं अर्थात् तुम्हारे नामको मुखते उच्चारण करत जाको गल नहीं चलै है अरु जो तुम्हारे नामको हियमें नहीं धारण करै हैं ॥ नजैभजरा कहे ताको जरा कहे नेक कबहूं जै नहीं भयो, अर्थात् वह सबसो हारिही गयो है अरु घुरतोकहे घुरिजातहै अर्थात् वह नाश ह्वैजाइहै यह। प्रस्तुत करि प्रस्तुत प्रगट प्रस्तुत अंकुर नाम यह प्रमाण करिकै प्रथम प्रस्तुत कहे वर्णनीय जे हैं आप तिनते दूजे प्रस्तुत जे हैं श्रीरघुनाथजी तिनको वर्णन कवित्तके चारिहूं तुकमें विदितई है यह प्रस्तुतांकुर अलंकारते आपकी श्रीरघुनाथजीकी उपमा व्यंजित भई ॥ १ ॥

दोहा—जन्मअष्टमी आदिदै, उत्सव जे भगवान ॥
तिनमें वितरत जननको, मुद्रा पट सहसान ॥ ८६ ॥

अथ सिंहावलोकनके उदाहरण ॥

सवैया-वीरनमें जे गने अवनी अवनीके गुनेते चुने रणधीरन॥
धीरन में जसहैहुलसीलसीसो तसहै जसमें जनभीरन ॥
भीरनतेयुगलेश सुनै सुनै प्रीतिजगीनहिंदानअजीरन ॥
जीरनसोंनहिंभौते भजै भजैजोहियरोनित श्रीरघुवीरन ॥ १ ॥

जाकरजागैप्रतापदिवाकरवाकरतोप्रतिपाल प्रजाकर ॥
जाकर तेज संऊगोसुधाकर धाकरमाये मनैवसुधाकर ॥
धाकरहूंवसुपाइकैताकरताकरआननताकेसुखाकर ॥
खाकरहैदुखको कहै काकर काकर तार करै घर जाकर ॥२ ॥

कामनमेंअहै आलसनामन नामनमें चहतोपरवामन ॥
वामन बोलत बैननसामन सामननैसो तजै केहुँजामन॥
जामनमेंवसतोअभिरामनरामनसो तेहिंमानैसदामन ॥
दामनदै रघुराजकै ठामन ठामन सेवत संत अकामन ॥ ३ ॥

कीरतिरंभाकिधौं हैशची शचीजामेंअछेहकविंदनकीरति ॥
कीरतितौ तिन्होकी इती द्युति कौनि अहैमति मेरि ऊंचीरति॥
चीरति यासिलधारे खरी खरी गर्व भरी चहूँ छाचि खहीरति॥
हीरति पूरतिहै महि माहिमें जानि परे रघुराजकी कीरति ४

शाह सराहतभोजाहि भूपर भूप रहो कितहूं अब ना अस॥
ना अस ते मुख भाषत वैनहैं वैनहैं त्रासन तामस राजस॥
राजसमाज विराजत वासव वासव सो निगुणी गुणी पारस ॥
पार सबै करतो जु भवै भवै सो रघुराज भजो कर साहस॥५॥

सोहत भावसों क्रीट शिरै दिये दीपत जासु शिषचु विमोहत॥
मोह तमै को विनाश करै करै कांति भूवाय हगानिसों जोहत॥

जोहत भाग ह्वै जात सभाग सभागतसों सब सोच विछोहत॥
छोहत तापै सबै जगहै गहजो रघुराजपगे अजसोहत ॥ ६ ॥

घनाक्षरी।

शारद शशीसों कोई शारद पयोदहीसो हीसो गुनि कहै कोई लस्यों सम पारद ॥
पारदरशाति नहिं कहि कहि काहु मति मति कहे कोई घनसारहुकी पारद ॥
भार दरशात पेन्हे भूप मोती हीरा हार हार गई द्युति भाषै कविवृंद मारद ॥
नारदकोहुते है बेहद रघुराज जस जस मही तस स्वर्ग गावती है शारद ॥१॥

दोहा–अष्टक कष्ट करै न जग, जगत पार धन नष्ट ॥
नष्ट नहीं चित पुष्ट कवि, कवित तुष्टकर अष्ट ॥ ८७ ॥

सवैया–भूप अजीत२भयो लियो जीत रिपून नहीं कोउ बाचो॥
तासु तनय नृप जयासिंह जयासिंह होत भयो रणरंगमें राचो॥
तासुत श्रीविश्वनाथ भयो विश्वनाथहू दान कृपानमें सांचो॥
तासुत जो रघुराज समै रघुराज भो तौन अचंभव सांचो॥१॥

कवित्त।

जाहि जपि पतितहू पावन परम होत होहिंगे भये हैं गये केते हरिधामको ॥
जाको यश गावत न पावत सुकवि पार सबको अधार जो देवैया मन कामको ॥
जाके बल शंकर विरंचि सनकादि ऋषि जागत रहत जग यामिनि त्रियामको ॥
चिरंजीव होवे महाराज रघुराज सदा याचे युगलेश वेश सोई राम नामको ॥ १ ॥
अंगनि सुछबिकोटि वारिने अनंग जासु कालको विहाल करै शोर धनु घोरको ॥
मार्तंड पावको प्रताप जासु ताप करै शशिहूको शीतल करैत यश ठोरको ॥
चारित अशेष जासु शेषहु न अशेष लहै नाम कहै पामर पुनीत होत जोरको ॥
चिरंजीव होवै महाराज रघुराज सदा याचै युगलेश सोई कोशल किशोरको ॥ २ ॥
जोलों राम निज नाम धाम गुण ग्राम राखौ कीबो काल कर्महु प्रपंच पंच भाषिये ॥
जौलौं विधि आदि सिधि देवनको अधिकार नित प्रीतिको विचार कीबे अबलाखिये॥

जोलौं दीनबंधु दृग देखो दाया दीह दास तोलौं युगलेश विनय मोरि यश साखिये॥
राज्यश्रीअखंड सुखयुत संयुत सुधर्मसाज भूप रघुराज महाराज आप राखिये॥ २॥

सोरठा–ग्रंथ भयो जब पूर, उचित मंगलाचरणपर ॥
श्रीहरि गुरु सुख पूर, चरण कमल वंदन करूं ॥ ५४ ॥

कवित्त ।

निरत जासु नाम हरिदास हरिरूप सीय राम सेव हीमें जिन्हैं जात रैन दिन ॥
कोहू सों न कहै देखि संत निज आश्रमै सादर करत सत्कार आयो छिन छिन॥
कहैं युगलेश मान रजोगुणि वाहननि चढैं नहिं कबों या स्वभाव रह्यो सब दिन॥
कहों हरिरूप पर हरिते सरसरूप लिये ह्वै अनूप श्री है येतो रहै तेहि विन॥ १॥

दोहा–धरयो सर्प यक को विछी, यक को दुःखित कीन्ह ॥
हरिचरणामृत पाय तहँ,द्रुत निर्विष करिदीन्ह ॥ ८८ ॥
ऐसे चरित अनेक हैं, को कह आनन एक ॥
नेक कृपा लहि नाथ मैं, वर्ण्यों है सविवेक ॥ ८९ ॥
जो करताहै ग्रंथको, सोउ वरणै निज वंश ॥
युगलदास याते करत, कछु निज मुख परशंस ॥२९०॥

कवित्त ।

देश गुजरात ते नरेश संग आये यहां पुस्तिबहु तिन्हैं कहां लौं गिनाइये ॥
चैनसिंह भे दिवान अति मतिमान खास कलम सुवंश राय तिनको सुनाइये ॥
लल्लू खास कलम कहाये नाम मंशाराम भूपति अजीत बहु मान्यो सो जनाइये॥
कायत प्रसिद्ध साधु सुमति अगाध तासु वंश गिरिधारी लाल नाम जासु गाइये१

दोहा–महाराज विश्वनाथ तेहि, मान्यो करि अति प्यार ॥
सोय खास कलमहि कियो,लखि तिहि बुद्धि अपार९१

भोदूलाल दिवान सुजाना । रहेतें अस मन किये अमाना ॥
यह संकोच पुरुषतें भारी । करौ न हमरौ हुकुम सुखारी ॥

अस विचारि नरनाथहिं पाहीं। कह्यो सुघर इनही सुख माहीं ॥
इन्हे खास कलमी रघुनाथी। दै राखिये निकट कर साथी ॥
सुनि विश्वनाथ हियेकी जानी। राख्यो अपने ढिग सुखमानी ॥
ग्रंथ अनूपम अमित बनायो। सादर तासों मुदित लिखायो ॥
तेहि सुत युगलदास मम नामा। विश्वनाथ नृप ढिग अभिरामा ॥
रह्यो बालते जे किय ग्रंथा। लिख्यो अहै जिनमें हरिपंथा ॥

दोहा–महाराज रघुराजके, अब निवसों नित पास ॥
तासु हुकुम लहि ग्रंथ यह, विरच्यों सहित हुलास॥९२॥
नृपचरित्र यह ग्रंथको, कियो नाम अभिराम ॥
बाँचि सुकवि सज्जन सुमति, लहैं सदा सुखधाम॥९३॥
ग्रंथ रामरसिकावली, रच्यो जो नृप रघुराज ॥
तहँ कबीर इतिहास में, यहै ग्रंथहै भ्राज ॥ ९४ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकारी श्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते श्रीरामरसिकावल्यां ग्रंथान्तर्गत श्रीयुगलदासकृत बघेलवंशवर्णनं नाम आगम निर्देश ग्रंथसमाप्तः ॥

सूचना।

बीज सूक्ष्म कारण जिसे, गावत हैं बुध वेद ।
तेहि जानन को युक्तिसो,बीजक नाम अखेद॥
बीजक लीन्हा हाथमें, पाया धन सोइ शोध।
ताते बीजक नाम है, भया सबन को बोध ॥
बीजक लीन्हे हाथमें, सूझे नहीं धन धाम ।
मुक्ता धन पाये बिना, बीजक सबै निकाम ॥
याकी टीकानेकहैं, बहु विधि कथ्यो सिद्धान्त।
विश्वनाथ नृप रामरत, जान्यो यह वृत्तान्त ॥
राम प्रत्यय टीका करी,बहु पाण्डित्य तेहि माँहि।
पढ़े विचारे जाहि को, राम भक्ति जन पाँहि ॥
चिन्तामणि अरुकल्पतरु,शब्द जगतके माँहि ।
अपनी अपनी भावना, सबही पावत जाँहि ॥
राम उपासना दृढहुते, रीवाँ नरेश सुभूप ।
अपनी मनकी भावना, वर्णन कीन्ह सुरूप ॥
तेहि ग्रन्थको शुद्ध करि, कहुं २ टिप्पण दीन ।
युगलानन्द मोहि कहत हैं, क्षमियो परम प्रवीन ॥
संदिग्ध ठौर जेते रहे, टिप्पणी करी बनाय ।
बाकी अब कछु होयजो, लीजो संत सजाय ॥
गुरु थल हाता जानिये, शिवहर जन्म स्थान ।
भारत पथिक मोहि कहत हैं, पंथ कबीर न आन ॥
श्रीवेङ्कटेश प्रेसवर, प्रसिद्ध सकल जहान ।
तामें छप्यो या ग्रन्थ है, सबको सुखद समान ॥

इति श्रीकबीर साहब कृत बीजककी पाखण्ड खण्डनी टीका
रसीदपुर (शिवहर) वाले स्वामी युगलानन्द कबीर पंथी
भारत पथिक द्वारा संशोधिता समाप्त हुई ।

क्रय्यपुस्तकें-(भाषा काव्य.)

नाम.	की. रु. आ.
रामरसायन रामायन-रसिकविहारीकृत	४-०
रसिकप्रिया सटीक	१-४
रामचंद्रिका सटीक कवि केशवदास प्रणीत	२-०
काव्यनिर्णयभाषा छन्दबद्ध [भिखारीदासकृत] मनहरण छन्दोंमें कठिन (अलंकार) वर्णन...	१-४
जगद्विनोद [पद्माकरकृत नायकाभेद]...	०-६
रसराज [मतिरामकृत नायकाभेद]	०-६
व्रजविलास बड़ा मोटेअक्षरका टिप्पणीसहित	५-०
व्रजविलास मध्यमअक्षर टिप्पणी सहित विलायती जिल्द ग्लेज	२-०
तथा रफ् कागजका	१-८
व्रजविलास छोटा अक्षर ग्लेज	१-०
” ” रफ्...	०-१२
व्रजचरित्र (श्रीराधाकृष्णजीकी सर्वलीला सुगम दोहा चौबोलोंमें वर्णित हैं)...	३-०
प्रेमसागर बडा ग्लेज कागजका...	१-८
प्रेमसागर बड़ा रफ्	१-४
भक्तमाला रामरसिकावली बड़ी रीवाँधिपति महाराज रघुराजसिंहकृत अत्युत्तम छन्दबद्ध जिसमें चारोंयुगोंके भक्तोंकी भिन्न २ कथा हैं और यह द्वितीयावृत्ति उत्तर चरित्र समेत अत्युत्तम नई छपी है	४-०
रामस्वयंवर श्रीमहाराजारघुराजसिंहकृत (काव्यदेखनेयोग्य) ...	४-८
रुक्मिणीपरिणय-महाराज श्रीरघुराजसिंहजूदेव प्रणीत	१-८
भक्तमाल नाभाजीकृत सटीक (छन्दबद्ध)	१-४
महाभारत भाषा सबलसिंहकृत-तुलसीदासजीके रामायणकी रीतिसे दोहा चौपाईमें १८ अठारहोंपर्व	३-८

नाम.	की. रु. आ.
दादूरामोदय संस्कृत–दादूपंथी साधुओंको	०–१०
श्यामकामकेलि	०–४
परमेश्वरशतक	०–६
भक्तिप्रबोध	०–२
भावपंचाशिका कविवृंदजीकृत	०–२
प्रेमशतक	०–४
मदनमुखचपेटिका भाषाटीका	०–४
प्रेमवाटिका भाषा (रोचक भजन)	०–२
हनुमत्पताका छन्दबद्ध (वीररसके रोचककवित्त)	०–३
नामप्रताप छन्दबद्ध (श्रीरामनाम माहात्म्य)	०–१॥
शृंगारांकुर भाषा–छन्दबद्ध (रसकाव्य)	०–२
जगन्नाथशतक–इसमें रघुराजसिंह रीवाँधिपतिके बनायेहुये १०० कवित्त विनयके हैं	०–३
नैषधकाव्य मनहरणछन्दोमें राजा नल दमयन्तीका सम्पूर्ण उदाहरणों समेत चरित्र	१–०
सुन्दरीतिलक (शृंगाररसके चुहचुहाते हुए कवित्त भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्रजी संगृहीत)	०–६
विक्रमविलास (छन्दबद्ध वैतालपचीसी)	०–८
मसलानामा (मसलोंके उदाहरणमें शिक्षावर्णन)	०–२
काव्यसंग्रह (प्राचीन रोचक कवित्त सवैया)	०–८
काव्यरत्नाकर (एक २ समस्यामें रोचकता पूर्वक अनेक कवियोंकी चातुरीके कवित्त)	०–८
आरती संग्रह २९ आरतीका	०–१॥
हनुमानसाठिका (हनुमानजीके ओजवर्द्धक ६० कवित्त) ...	०–१॥
भाषाभूषण (नायकाभेद मधुर छंदबद्ध)	०–२
अनुरागरसभाषा (नारायणस्वामीकृत) पद्योंमें....	०–३

जाहिरात।

नाम.	की. रु. आ.
प्रेमपुष्पमंजरी (अच्छे २ भजन व पंजाबदेशके भी पद हैं....	०—२
कृष्णचरितावली (कृष्णकी छोटी२लीला)	०—४
प्रेमपचासा (चित्रकाव्य)	०—३
सुदामाचरित्र अत्युत्तम छंदबद्ध	०—३
होलीचौताल संग्रह	०—४
सुदामाकी बाराखड़ी	०—१
द्रौपदीकी बारामासी	०—१
दुर्गाचालीसी	०—१
माता पिता पूजनविधि	०—१
बारामासी संग्रह	०—१॥
हरदेवकी बाराखड़ी कलियुगका चरित्र	०—२
छन्दरत्नमाला [पिंगल]	०—२
गोपीवियोगकी बारहखड़ी [लालाशालिग्रामकृत दत्तलालकी बाराखडी सहित]	०—२
नशाखण्डनचालीसी ४० कवित्तोंमें सब नसोंका खण्डन... ...	०—२
मिलामदर्पण (मेलमिलाप शिक्षा)	०—२
श्राद्धदर्पण (श्राद्धमण्डन)	०—२
ब्रह्मज्ञानदर्पण	०—२
पंजाबपंकजपराग [महन्त रघुवीरदासकृत]	०—४
प्रेमपुष्पलता (उत्तमभजन)	०—८
कबीरउपासनापद्धति—(साधारणतःसर्वसाधारणको और विशेषतः कबीर पंथियोंको सदाचार बतानेवाली अद्वितीय पुस्तक) ...	०—१०

संपूर्ण पुस्तकोंका " बड़ा सूचीपत्र " अलग है मँगालीजिये.

पत्ता—खेमराज श्रीकृष्णदास,

" श्रीवेङ्कटेश्वर " (स्टीम्) प्रेस—बंबई.